

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेछुं अने श्रीश्रुतकेवलीभद्रबाहुरचित नियुक्तिसहित)

॥ आचार्याङ्गसूत्रम् ॥ भाग बीजो

(मूल अने शीलान्नाचार्ये रचेली टोकाना भाषांतरसहित)

जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ आमजीना स्मरणार्थ
हृषीकेश प्रसिद्ध करनार—पंडित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाला)

पहतर किंमत रु. २-८-०

श्रीजैनभास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छाप्युं जामनगर.

संवत् १९८९

पृति २००

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ श्रीआचारंगसूत्रम् ॥

(मूल अने शीलांकाचार्ये रचेली टीकातुं भाषान्तर)

(भाग बीजो)

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगर)

निष्प्रपञ्चायतायिने ॥ १ ॥

नमः श्रीवर्द्धमानाय, वर्द्धमानाय पर्ययैः । उक्ताचार प्रपञ्चाय,
श्री वर्धमान स्वामीने नमस्कार थाओ जेओ पर्याय (आत्माना उत्तम गुणो) वडे निरंतर वधेला हे. तथा आचारनो विस्तार

जेमणे कळो हे तथा संसारी प्रपंच (रागद्वेष) थी सर्वथा मुक्त हे अने सर्व जीवोना रक्षक हे.

शास्त्रपरिज्ञाविवरणमतिगहनमितीव किल वृत्तं पूज्यैः । श्रीगन्धहस्तिमिश्रैर्विदुणोमि ततोऽहमवशिष्टम् ॥ २ ॥

शस्त्रपरिज्ञा नामतुं पहेछुं अध्ययन जे धणुं गंभीर छे, तेतुं विवरण गंधहस्तिनामना श्रेष्ठ आचार्य कहैछुं छे तेमांथी हुं कइकविशेष खुलासो करं छुं. ते पहेछुं अध्ययन पूर्व कही गया. हवे बीजुं अध्ययन कहेवाय छे. तेनो आवीरितनो संबंध छे.

आ संसारमां मिथ्यात्व-उपशम-क्षय क्षयउपशम ए त्रणमांथी कोइपण सम्यक्तव प्राप्त थयेला ज्ञानी साधु गुरुषने अत्यन्त ए-कान्त वाधा रहित परमानंदरूप स्वतत्त्वतुं सुख जे आवरण रहित ज्ञान दर्शन (केवलज्ञान केवलदर्शन) प्राप्त थयेलाने मोक्षनुंज कारण छे. अने आश्रवनी निरोध अने निर्भरानी प्राप्ति छे. तथा मूल-उत्तर एवा वे भिन्न गुणो छे एतुं चारित्र छे अने बीजा वधा त्रतोनी वृत्ति (निर्वाह) नो कल्प उत्पन्न करेल छे, तथा निर्विदने वधा प्राणिने संघटन परित्ताप अपद्रावण विरोधेथी दुःख न देवारूप जे सर्वोत्तम चारित्र छे. ते चारित्रनी सिद्धि माटे आ अध्ययन छे.

मरणना अभावना प्रसंगथी पांचभूत रहित (चेतनरूप) आत्मानो धर्म केवलज्ञाननी प्राप्ति छे, जेथी एवा चारित्रनी तथा आत्मानी तथा आत्माना गुणज्ञाननी तथा मोक्षनी प्राप्ति माटे आ सत्वतुं अध्ययन छे ते बताव्युं छे—

“ उपरना वाक्यथी ज्ञान प्राप्ति ” तेथी बृहस्पतिना नास्तिक मततुं खंडन कर्युं, कारण के ते पांच भूत माने छे ते भूतो जड छे अने आत्मा चेतन छे. तेनो गुणज्ञान छे ते बताव्युं छे. आ प्रमाणे सामान्यथी जीवतुं अस्तित्व स्वीकारी विशेषणथी जीवतो मोक्ष वताववाथी बौद्ध विगोरे मततुं खंडन थयुं. कारण के जीवत्रणे कालमां होय तो तेना मोक्षनो संभव थाय.

एकेन्द्रिय पृथ्वी, पाणी, अग्नि, पवन, वनस्पति विगोरे भेदवाळा जीवोने बतावी अनुक्रमे समान जातीयवाळा पत्थरनी शीला

विगेरेनी उत्पत्ति हरस मसा जे मांसना अंकुरा छे, तेनी माफक पृथ्वीकायनी उत्पत्ति छे.

अविकारवाळी (पडतर) जमीन खोदवाथी देडकानी माफक पाणीनी उत्पत्ति छे, तथा विशेष उत्तम आहारथी वधुं; अने विपरित आहारथी हानि थवी. तेज ममाणे अर्भक (बाळक) ना शरीरनी माफक अभिनी तुलना छे.

बीजानो भेरेळो अटक्या विना अनियत (एक सरखी नहि) एवी तिरछी गतिवाळो गाय घोडानी माफक पवन वताव्यो अळ-
ता (स्त्रीओना शणगारमां वपरतो लाल रंग) थी, तथा झांझरथी शणगारेली जुवान स्त्रीनी लताथी विकार पापता कामीपुरुषनी
माफक वनस्पति खीले छे. ए प्रमाणे अनेक प्रयोगो छे, तथा ऊंचा अभिप्रायथी माथुं उघाडीने (खुलसाथी) सूक्ष्मवादर—एकेन्द्रिय
वे अण चार इन्द्रियवाळा, तथा पांच इन्द्रियवाळा संज्ञी तथा असंज्ञी तथा पर्यासा तथा अपर्यासा विगेरे जीवोना भेदो वतावी; तथा तेमना
शस्त्र स्व अने परकायवाळां वतावी तेना वधमां बंध, अने कर्मथी छुटवा विरति वतावी, तेनेज चारित्र वताव्युं; एटले जीवनी रक्षा
करवी; तेज चारित्र छे, अने जीवरक्षा करनारज चरित्रने अनुभवे छे, तेवुं पहेला अध्ययनमां वताव्युं छे अने आ बीजा अध्ययनमां
वताव्युं छे के:—

शस्त्रपरिज्ञा नामना अध्ययनने सूत्रअर्थथी भणोला साधुने अध्ययनमां वतावेला पृथ्वीकाय विगेरे जीवोना भेदने मानतो तेनी
रक्षाना परिणामवाळो सर्व उपाधिथी शुद्ध, अने तेना उत्तम गुणथी रंजीत थइ; गुरुए वडीदीक्षारूप पंचमहाव्रत जेने अर्पण कर्यो छे
तेवा साधुने जेम जेम रागादिकपायवाळा लोक, अथवा शब्दादि विषयलोक (रागद्वेषमां, अथवा इन्द्रियोना विषयमां रंजीत थयेला

જીવો) નો વિજય થાય છે. અર્થાત્ જે સાધુ રાગદ્વેષ, તથા શ્નિદ્રિયોની રમણાતામાં રાગી ન થાય. તેણે લોક જીત્યો કહેવાય; તે આ અધ્યયનમાં વતાવ્યું છે.

ટીકાકાર કહે છે કે:—જેહું હું કહું છું, તેજ પ્રમાણે નિયુક્તિકારે પણ અધ્યયનનો અર્થાધિકાર શસ્ત્રપરિજ્ઞામાં પૂર્વે કહેલો છે, તે સૂત્ર આ છે.

“લોઓ જહ વડ્ઝાઇ જહ ય તં વિજાહિયટ્વં”

આ પદવદે સૂત્રવ્યું છે કે, “લોક (સંસારી—જીવો) જેમ વંધાય છે, તેમ સાધુન વંધતાં તે વધાનાં કારણને હોડવાં જો ઇણ;” તેથી પૂર્વે પહેલા અધ્યયનમાં વંધ વતાવ્યો; તેમ આ વીજ્ઞા અધ્યયનમાં વંધને હોડાવાનું સૂત્રવ્યું; ઇટલે શસ્ત્રપરિજ્ઞામાં વંધ, અને લોકવિજયમાં વંધથી છુટવાનું વતાવ્યું છે તે સંવંધ છે.

તેના ચાર અનુયોગદ્વાર છે. તેમાં સૂત્ર અને અર્થનું કહેવું, તે અનુયોગ છે, તેમાં ચાર દ્વાર (ઉપાયો, વ્યાખ્યાંગ) કહેવાં તે ઉપક્રમ, નિક્ષેપ, અનુગમ, નય છે. ઉપક્રમ એ પ્રકારે છે. શાસ્ત્ર સંવંધી, શાસ્ત્રીય અને લોક સંવંધી તે લૌકિક છે.

નિક્ષેપા ત્રણ પ્રકારના છે. ઓષ, નામ અને સૂત્રાલાપક નિષ્પન્નનિક્ષેપ ઇમ ત્રણ ભેદ છે. અનુગમસૂત્ર, અને નિર્ચુક્તિ ઇમ એ પ્રકારે છે, નયોનૈગમ વિનોરે છે.

શાસ્ત્રીય ઉપક્રમ,

આ ઉપક્રમમાં અર્થ અધિકાર એ પ્રકારે છે. અધ્યયન અને ઉદ્દેશાનો અર્થ અધિકાર છે, તેમાં અધ્યયનનો અર્થ અધિકારશસ્ત્ર

परिज्ञाणां में कल्यो छे, अने दरेक उद्देशानो अधिकार निर्युक्तिकार पोते कहे छे.

सयणे य अददत्तं, वीयगंमि माणो अ अर्थसारो अ । भोगेसु लोगनिस्साइ, लोगे अममिज्जया चैव ॥१६३॥

पहेला उद्देशाना अर्थ अधिकार (विषय) मां मातापिता विगेरे संसारी—सगाणां साधुए प्रेम न करवो. (न करवो, ए सूक्त सूत्रमां नथी; ते उपरंथी लीधुं हे,) ते प्रमाणे आगळ सूत्र आवशे के, मारी माता, मारा पिता इत्यादि साधुने न जोइए.

बीजा उद्देशाणां संयममां अददपणुं (डीलापणुं) न करवुं; पण विषय अने कषाय विगेरेमां साधुए अददपणुं करवुं; अने तेज सूत्र कहे छे के, अरतिमां बुद्धिमान पुरुष आसक्ति न करे.

बीजा उद्देशाणां मान ए अर्थसार नथी; कारणके, जाति विगेरेथी उत्तम साधुए कर्मवशथी संसारनी विचित्रता जाणीने बधा मदनां ठेकाणामां पण मान न करवुं. कहुं छे केः—कोण गोत्रनो वाद करनारा? कोण माननो वाद करनारा छे ?

चोथा उद्देशाणां कहे छे के भोगमां प्रेम न धारवो कारण के सूत्रमां कहेशे, स्त्रीओथी लोकमां दुःख पावशे. अने तेनो मोह छोडे तो तेथा तेमां भोगीओने भविष्यमां थलां दुःखो बतावशे.

पांचमां उद्देशाणां साधुए पोतानां सगां धन मान अने भोग त्याग्या छलां संयमधारक साधुए शरीरनी प्रतिपालना माटे गृहस्थोए पोताना माटे करेला आरंभथी वनेली वस्तु लेवानी निश्चाए विचरवुं. तेज सूत्र कहेशे के समुस्थित अणगार होय विगेरे ज्यां सुधो निर्वाह करे विगेरे छे. छट्टा उद्देशाणां लोकनिश्चामां विचरता साधुए ते लोको साथे पहेलां के पछीनो परिचय थयो होय

જીવો) નો વિજય થાય છે. અર્થાત્ જે સાધુ રાગદ્વેષ, તથા इन्द्रियोनी રમણાતામાં રાગી ન થાય. તેણે લોક જીત્યો કહેવાય; તે આ અધ્યયનમાં વતાવ્યું છે.

ટીકાકાર કહે છે કે:—જેવું હું કહું છું, તેજ પ્રમાણે નિયુક્તિકારે પણ અધ્યયનનો અર્થાધિકાર શસ્ત્રપરિજ્ઞામાં પૂર્વે કહેલો છે, તે સૂત્ર આ છે.

“લોઓ જહ વડ્ઝહ જહ ય તં વિજાહિયટ્વં”

આ પદવડે સૂચવ્યું છે કે, “લોક (સંસારી—જીવો) જેમ વંધાય છે, તેમ સાધુણ ન વંધાતાં તે વધાનાં કારણને હોડવાં જો ઇચ્છે;” તેથી પૂર્વે પહેલા અધ્યયનમાં વંધ વતાવ્યો; તેમ આ વીજા અધ્યયનમાં વંધને હોડાવાનું સૂચવ્યું; ઇટલે શસ્ત્રપરિજ્ઞામાં વંધ, અને લોકવિજયમાં વંધથી છુટવાનું વતાવ્યું છે તે સંબંધ છે.

તેના ચાર અનુયોગદ્વાર છે. તેમાં સૂત્ર અને અર્થનું કહેવું, તે અનુયોગ છે, તેમાં ચાર દ્વાર (ઉપાયો, વ્યાખ્યાંગ) કહેવાં તે ઉપક્રમ, નિષ્કેપ, અનુગમ, નય છે. ઉપક્રમ વે પ્રકારે છે. શાસ્ત્ર સંબંધી, શાસ્ત્રીય અને લોક સંબંધી તે લૌકિક છે.

નિષ્કેપા ત્રણ પ્રકારના છે. ઓષ, નામ અને સૂત્રાલાપક નિષ્પન્નનિષ્કેપ ઇમ ત્રણ ભેદ છે. અનુગમસૂત્ર, અને નિર્ચુક્તિ ઇમ વે પ્રકારે છે, નયોત્તૈગમ વિગેરે છે.

શાસ્ત્રીય ઉપક્રમ,

આ ઉપક્રમમાં અર્થ અધિકાર વે પ્રકારે છે. અધ્યયન અને ઉદ્દેશાનો અર્થ અધિકાર છે, તેમાં અધ્યયનનો અર્થ અધિકારશસ્ત્ર

परिश्रमां में कल्लो छे, अने दरेक उद्देशानो अधिकार निर्युक्तिकार पोते कहे छे.

सयणे य अददत्तं, वीयगंमि माणो अ अरथसारो अ । भोगेसु लोगनिससाइ, लोगे अममिजजया चैव ॥१६३॥

पहेला उद्देशाना अर्थ अधिकार (विषय) मां मातापिता विगेरे संसारी—सगामां साधुए भेम न करवो, (न करवो, ए मूळ सूत्रमां नथी; ते उपरथी लीधुं छे,) ते प्रमाणे आगळ सूत्र आवरो के, मारी माला, मारा पिता इत्यादि साधुने न जोइए.

बीजा उद्देशापां संयमपां अददपणुं (डीलापणुं) न करवुं; पण विषय अने कषाय विगेरेमां साधुए अददपणुं करवुं; अने तेज सूत्र कहे छे के, अरतिमां बुद्धिमान पुरुष आसक्ति न करे.

बीजा उद्देशापां मान ए अर्थसार नथी; कारणके, जाति विगेरेथी उत्तम साधुए कर्मवशथी संसारनी विचित्रता जाणीने वथा मदनां ठेकाणामां पण मान न करवुं. कहुं छे के:—कोण गोत्रनो वाद करनारा ? कोण माननो वाद करनारा छे ?

चोथा उद्देशापां कहे छे के भोगमां भेम न धारवो कारण के सूत्रमां कहेरो, स्त्रीओथी लोकमां दुःख पापरो. अने तेनो मोह छोडे तो तेथो तेमां भोगीओने भवियमां थतां दुःखो बतावरो.

पांचमां उद्देशापां साधुए पोतानां सगां धन मान अने भोग त्याग्या छतां संयमधारक साधुए शरीरनी प्रतिपालना माटे गृहस्थोए पोताना माटे करेला आरंभथी बनेली वस्तु लेवानी निश्राए विचरवुं. तेज सूत्र कहेरो के समुत्स्थित अणगार होय विगेरे ज्यां सुयो निर्वाह करे विगेरे छे. छट्टा उद्देशापां लोकनिश्रामां विचरता साधुए ते लोको साथे पहेलां के पछीनो परिचय थयो होय

अथवा परीचय न थयो होय तो पण ममत्व न करवो एदळे कमळ पाणीमां उत्पन्न थया छतां निर्लेप रहे छे, तेम साधुए ते गृहस्थोथी गोचरी विगोरेनो संबंध छतां पण तेनाथी लेपनाळा थवुं नही. ते सूत्र कहेशे आ मारो छे ते मारपणुं मूके तेज साधु छे विगोरे तात्पर्यवाहुं सूत्र आगळ कहेशे.

आ अथयननुं नाम लोक विजय छे.

हवे लोक अने विजय एवा वे पदना निक्षेप करवा जोइए, तेमां सूत्रा आलापक निष्पन्न निक्षेपमां निक्षेपने योग्य जे सूत्रपदो छे तेमना निक्षेप करवा, अने सूत्रपदमां वनावेल मूलशब्द (लोक) नो अर्थ कषाय नामनो कह्यो छे तेथी लोकने वदळे कषायना निक्षेप करवा जोइए ते प्रमाणे नामनिष्पन्ननिक्षेपमां वतावेला सामर्थ्यथी आवेला निक्षेपमां जे वतावनाहुं छे ते निश्चितिकार गाथाने एकठी करीने कहे छे—

लोगस्स य विजयस्स य गुणस्स मूलस्स तह य टाणस्स । निरुत्थेवो कायवो जंमुलागं च संसारो ॥ १६४ ॥

लोकानो विजयतो, गुणतो, मूलतो, स्थानतो, ए प्रमाणे पांच शब्दजो निक्षेपो करवो जोइए. अने जे मूल छे ते संसार छे तेथी तेनो निक्षेपो करवो जोइए. ते संसारहुं मूल कषाय छे. कारण के नरकना जीवो तिर्थचना जीवो तथा मनुष्य अने देवता ए चार गतिरूप संसार वृक्षतुंज स्कंध (थड) छे, तथा गर्भ निषेक कल्ल अर्बुद (वीर्य अने लोहीथी वंधाहुं शरीर) मांसनी पेशी विगोरे तथा जन्म जरा (बुढापो) अने मरण आ संसारझाडनी शाखा (डाळीओ) छे, अने द्राहिद विगोरे अनेक दुःखोथी उत्पन्न थयेला

पादद्वानो समूह छे. वळी वहालांनो वियोग, अप्रियनो संबंध, पैसानो नाश, अनेक व्याधि विगेरे रूप सेंकडो फुलोनी समूह छे, तथा शरीर अने मन संबंधी अत्यन्त पीडाजनक दुःखनो समूहरूप-फळ छे. आ बधुं संसाररूप-झाडनुं वर्णन कर्युं; ते संसार-झाडनुं मूळ कषायो छे. कारणके, कष एटले संसार. अने आय एटले लाभ. जेनाथी संसारनो लाभ थाय छे, ते कषाय छे. आ प्रमाणे ज्यां ज्यां नामनिष्पन्ननिक्षेपामां तथा सूत्र आलापक निक्षेपामां जे जे पदनो संभव थरो (जरूर पडरो) त्यां त्यां ते ते पदो निर्मुक्ति-कार साचा मित्र बनीने विवेकथी कहेरो.

लोगोत्ति य विजअत्ति य अडझयणे लक्खणं तु निष्फणं । गुणमूलं टाणंति य, सूत्तालावे य निष्फणं १६५

लोकविजय, अध्ययन, लक्षण, निष्पन्न, गुण, मूल, स्थान, तथा सूत्रालापकमां निष्पन्न विगेरे दुकमां जे कहुं; तेनुं विवेचन करे छे; उद्देश प्रमाणे निर्देशनो न्यायछे, ते प्रमाणे लोक, अने विजयनो निक्षेपो कहे छे.

लोगरस य निकस्वेवो अट्टविहो छविहो उ विजयसत्त । भावे कसायलोगो अहिगारो तस्स विजएणं ॥१६६॥

लोकनो निक्षेपो आठ प्रकारे तथा विजयनो छ प्रकारे छे. भावमां कषाय लोकनो अधिकार छे, अने तेनो विजय करवानो छे ते कहे छे. जे देखाय ते लोक सूत्र प्रमाणे लुक्क धातुनो लोक शब्द थयो छे.

लोकनुं वर्णन.

धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकापथी व्यस्र थयेहुं तमाम द्रव्यना आधारभूत, वैशाखस्थान एटले, कमरनी बे बाजुए वने हाथ दइने पण. पद्दोळा करी उभा रहेळा पुरुषनी माफक जे आकाश, खंड रोकायो छे, ते लेवो; अथवा धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, पुद्गल ए

पांच अस्तिकाय. (पदेशનો समूह) છે, તે લેવો. તે લોકનો આઠ પ્રકારે નિષ્કેષો છે. નામ, સ્થાપના, દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ, ભવ, માવ, પર્યવ. एम आठ भेद છે, અને વિજય, અભિભવ પરાભવ, પરાજય एम पर्यायो છે, તેનો નિષ્કેષો છ પ્રકારે છે. અહિયાં લોકના આઠ પ્રકારના નિષ્કેષા છતાં માવ નિષ્કેષમાં માવ લોકનો અધિકાર છે. તે છ પ્રકારનો ઔદાયિક માવ વિગેરે છે. તે ઔદાયિક માવવાલા કષાય લોકવ્રદે અધિકાર છે; અને તે સંસારનું મૂલ છે.

શિષ્યનો પ્રશ્ન—આ વધું શા માટે કહું ?

उत्तर—तेनो एदले औदयिक भाव कषाय लोकनो पराजय करवो. (क्रोध विगेरे थाय तो तेने दावी देवा) लोकना निक्षेपा पळी विजयना छ प्रकारे निक्षेपा છે તે કહે છે—

लोगो भणिओ दवं खित्तं कालो अ भावविजओ अ । भव लोग भावविजओ पगयं जह वड्झई लोगो ॥

લોક દ્રવ્ય ક્ષેત્ર, કાલ, અને માવ, વિગેરેનું વર્ણન કરે છે.

चतुर्विंशति स्तव—(चोवीस भगवानतुं स्तवन जेतुं बीजुं नाम लोगस्स) છે, તે વીજો આવશ્યક છે. તેનું આવશ્યક સૂત્રની નિશ્ચિત્તિમાં વિસ્તારથી વર્ણન કરેલું છે.

શિષ્યની શંકા—આ વાચાની કહ જાતની શુક્તિ છે ? કે લોકોનું ત્યાં વર્ણન કરેલું છે. અને અહીં તેનો શું સંબંધ છે ?

उत्तर—अहीआं अपूर्वकरण (आठुं गुणस्थान) थी अनुक्रमे चढी क्षपकश्रेणि (केवणज्ञान पामवातुं ध्यान जेमां मोहनो सर्वथा

नाश थाय छे.) ए चदनारा पुरुष जेम अग्रि लाकडाने बाळे तेम पोते कर्मरूपी लाकडाने ध्यानरूपी अग्रिवहे वाली मूक्याथी आवरणरूप कर्म नाश थतां निर्मळ(केवल) ज्ञान प्राप्त थतां देवताओतुं आसन कंपतां तेओना आववाथी केवल ज्ञानी पूज्य पुरुष तरीके पूजाय छे, अने तेज पुरुष ज्ञान बहे सर्व जीवोतुं हीत थवा उपदेश आपे ते तीर्थ छे. तेने करवाथी तीर्थकर नामकर्म उदयमां आवे; अने तेमने सामान्य लोकथी विशेष एवा चोत्रीस अतिशयो प्राप्त थया एवा अंतिम तीर्थकर वर्धमानस्वामीए (लगभग पचीस्सो वर्ष उपर) त्यागवा योग्य अने गृहण करावा योग्य पदार्थनो खुलासो करावा देव अने मनुष्यनी सभामां आचारांगसूत्रनो विषय कळो. अने ते सांभळी तेमना महान् बुद्धिवाला गणधरो. जेओ अर्चित्य शक्तिना प्रभाववाळा हता. तेवा गौतम इंद्रभूति विनोरेए ते प्रवचन (महान् उपदेशना वाक्यनो समूह) ने सर्वे जीवोना उपकारमाटे तेनी सूत्र रचना करी तेनुं नाम आचारांग तरीके पसिद्ध थयुं. अने आवश्यकनी अंदर रहेलुं चतुर्विंशति स्तवनी निर्मुक्ति तो त्यारपळी हमणांना काळमां थयेला भद्रबाहुस्वामीए कहुं छे तेथी ते अयुक्त छे कारण के पूर्व काळमां वनेलुं आचारांगतुं व्याख्यान करतां पाळ्ळथी थएल चतुर्विंशति स्तवनो अधिकार जोवानुं अथवा कहेवानुं क्यांथी आवे ! आतुं कोइ कोमळ बुद्धिवाळा शिष्यने शंकातुं स्थान थाय तेनुं आचार्य समाधान करे छे के आमां कंइ दोष नथी कारण के आ निर्मुक्तिनो विषय छे. अने भद्रबाहुस्वामीए प्रथम आवश्यकनी निर्मुक्ति करी, त्यारपळी आचारांगनी निर्मुक्ति करी तेथी तेम थाय. तेमज कहुं छे सूत्र—

“ आवरसयस्स दसकालियस्य तह उत्तरउत्तमायारे ”

आवश्यक—दश वैकालिक—उत्तराध्ययन तथा आचारंगनी निर्युक्ति छे विंगेरे जाणवुं—

विजयना निक्षेपा नामस्थापना छोडीने द्रव्यमां ह शरीर विंगेरे सिवाय व्यतिरिक्तमां द्रव्यवहे द्रव्यथी अथवा द्रव्यमां विजय ते छे, के कडवो तीरवो कसाएखो विंगेरे औपथयी सर्व्वेवम विंगेरे रोगनो विजय थाय, अथवा राजा के महन्नो विजय थाय ते द्रव्य विजय छे. क्षेत्र विजय ते छ खंडने भरत विंगेरे चक्रवर्तिथो जीते छे. अथवा जे क्षेत्रमां विजय थाय ते क्षेत्र विजय छे काळवहे जे विजय थाय छे, ते जेमेके भरते साठ हजार वर्षे आखो भरतखंड जीत्यो ते काळ विजय छे कारण के तेमां काळनुं प्रधानपणुं छे. अथवा भूतक (भरवाना) काममां एणे मास जीत्यो अथवा जे काळमां विजय थयो ते पण काळ विजय छे—

भाव विजय ते औदयिक विंगेरे एक भावनुं बीजा भावमां बदलावना वहे एटले औपशमिक विंगेरेथी यता विजयनुं स्वरूप वतावीने चालु वातमां जे उपयोगी छे ते कहे छे.

अहीं भाव लोक मूलसूत्रमां लीखे छे तेशी भाव लोकज कह्यो छे (छंदमां मात्रा वथवाथी भावने वदले भव लीथो छे) (ते प्रमाणे कहुं छे. निर्युक्ति गाथा १६६ ना छेछा बे पदमां कहुं छे के भावमां कषाय लोकनो अधिकार छे विंगेरे जाणवुं) ते औदयिकभाव कषाय लोकनो औपशमिक विंगेरे भाव लोक वहे विजय करवो (कषायो मोहनीय कर्मना उदयथी छे, तेने सांत करवा—क्षय करवा ते कहे छे.) चालु विषयमां तेज जाणवाहुं छे टीकाकार तेज कहे छे. “आठ प्रकारनो लोक अने छ प्रकारनो विजय ए वनेनुं स्वरूप पूर्वे कहुं. ते वनेमां भाव लोक अने भाव विजयथीज अहीथां प्रयोजन छे.” आठ प्रकारना कर्म वहे लोक

(जीवोनो समूह) बंधाय छे. अने धर्म करवाथी मूकाय छे. ते पण आ अध्ययनमां बतावुं छे. ते भाव लोक विजय बडेज भुं फळ छे ते बतावे छे.

विजिओ कसायलोगो सेयं खु तओ नयतिउं होइ । कामनिय तमई खलु संसारा मुच्चई खिप्यं ॥ १६८ ॥

जेणे कषाय लोकनो विजय कर्यो, ते संसारथी जल्दी मुकाय छे. तेथी कषायथी दूर रहेवुं. तेज कल्याणकारी छे. (खु अव्यय “ ज ” ना अर्थमांज छे.)

प्रश्न—कषाय लोकथीज दूर रह्यो. तेज संसारथी मूकाय छे के बीजा कोइ पापना हेतुओ छे. के जे दूर करवाथी मोक्ष मळे ? उत्तर—काम एटले संसारी विषयनी जे खोटी बुद्धि छे ते पण निवारण करवाथीज मोक्ष मळे छे ?

नाम निष्यन्न निक्षेपो पुरो थयो. दवे सन्न आलापक निक्षेपाने कहे छे तेने माटे सन्न जोइए ते सन्न निर्दोष उच्चारवुं जोइए ते आ छे मूळ सूत्र—

“ जे गुणे से मुलहाणे जे मूलहाणे से गुणे ”

जे गुण छे ते मूल स्थान छे अने जे मूल स्थान छे ते गुण छे. एना निक्षेप निर्मुक्ति अनुगम बडे दरेक पदे निक्षेपो कराय छे. तेमां गुणनो पंदर भेदे निक्षेपो छे. ते कहे छे.

दवे खिते काले फल पज्जव गणण करण अटभासे । गुणअगुणे अगुणगुणे भव सील गुणे य भावगुणे ॥१६९॥

નામ ગુણ, સ્થાપના ગુણ, દ્રવ્ય ગુણ, ક્ષેત્ર ગુણ કાલ ગુણ ફલ ગુણ, પર્યવ ગુણ, ગણના ગુણ, કરણ ગુણ, અભ્યાસ ગુણ, ગુણ—અગુણ, અગુણ ગુણ, મત્ર ગુણ, શીલ ગુણ, માત્ર ગુણ દમ પંદર મેદ યથા તે ઠુંકાંણમાં કહું. હવે સૂત્ર અનુગમ વડે સૂત્ર ઉચ્ચારતાં નિષ્કેપ નિર્શુક્તિના અનુગમ વડે તેના અવયવનો નિષ્કેપો કરતાં ઉપોદ્યાત નિર્શુક્તિનો અવસર છે—તે ઉદ્દેશા વિગેરેના દ્વારની વે ગાથા વડે જાણવા. હવે સૂત્રને સ્પર્શ કરનારા નિર્શુક્તિનો અવસર છે, તે નામ સ્થાપના સુગમને છોડીને દ્રવ્યાદિકને કહે છે.

દ્વગુણો દ્વં ચિય ગુણાણ જં તંમિ સંभवो होइ । सच्चित्ते अचिचित्ते, मोसंमि य होइ द्द्वंमि ॥ ૧૭૦ ॥

દ્રવ્યગુણ તે દ્રવ્ય પોતેજ છે. પશ્ચન્શા માટે ? ઉત્તર—ગુણોનો ગુણપદાર્થમાં તેજરૂપે સંभव થાય છે.

શંકા=દ્રવ્ય અને ગુણમાં લક્ષણ અને વિધાનના મેદથી મેદ છે. તેજ કહે છે. દ્રવ્ય લક્ષણ ગુણપર્યાયવાહું દ્રવ્ય છે. વિધાન પળ ધર્મ, અધર્મ, આકાશ, જીવ, પુદ્ગલ વિગેરે છે. દ્રવ્યની વ્યાख्या કહી; અને ગુણની વ્યાख्या કહે છે. દ્રવ્યને આશ્રયી સાથે રહેનારા ગુણો છે, અને તેનું વિધાન જ્ઞાન, ઇચ્છા, દ્વેષ, રુપ, રસ, ગંધ, અને સ્પર્શ વિગેરે છે, તે પોતાનામાં રહેલા મેદે કરીને જુદા છે. આચાર્યનું સમાધાન—૯ દોષ નથી; કારણકે, દ્રવ્યો સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર મેદથી જુદાં છે, તેમાં ગુણ છે તે, તેજસ્વરૂપે રહ્યો છે, તેમાં અચિત્ત દ્રવ્ય વે પ્રકારે છે. અરુપી અને રુપી તેમાં અરુપી દ્રવ્યમાં ધર્મ, અધર્મ, અને આકાશ. દમ ત્રણ મેદે કરીને જુદા છે. લક્ષણો અનુક્રમે ગતિ સ્થિતિ અને અત્રગાહ આપવાનું છે અને દમો ગુણ પળ અમૂર્ત છે અને અગુસ્ત્રલયુ પર્યાય-લક્ષણવાહું છે તેમાં ત્રણેનું અમૂર્તપણું છે તે પોતાના રુપમેદ વડે વ્યવસ્થાવાહું નથી. (અમૂર્તપણામાં મેદ નથી) તેમ અગુસ્ત્રલયુ પર્યાય પળ છે તે તેના પર્યાય-

पणाशीज हे जेमके माटीनो पींड (गोळो स्थास कोश कुथूल पर्यायो) माटीनो घडो बनावतां चाक उपर जुदा जुदा आकारो बने छे ते) रुपवाली माटी छे. एटले माटीथी आकारो जुदा नथी, तेज प्रमाणे रुपी द्रव्यपण स्कंध देश प्रदेश परमाणु भेदोवाळुं छे तेना गुणो रुप विनोरे छे ते अभेदपणे रहेलाछे अर्थात् एमां भेदवडे प्राप्ति थती नथी जेमरुप पदार्थथी जुहुं पडे तेवो संभव नथी. जेम पोतानो आत्मा पोताना ज्ञानगुणथी जुदो पडे ते अत्रक्य छे तेम बीजाओमां पण समजवुं.

तेज प्रमाणे सचित्त एवुं जीवद्रव्य उपयोग लक्षणवाळुं छे एटले उपयोग राखे. तोज जीवने वस्तुहुं के पोताहुं भान रहे छे ते आपणा आत्माथी जुदा ज्ञान विनोरे गुण नथी. कोइ जुदा माने तो जीवने अचेतनापणानो प्रसंग आवे.

वादीनी शंका ते प्रमाणे मानतां तो तेना संबंधथी जीवने अजीव पणुं थरो. ?

आचार्यनो उत्तर—तमारं वचन गुरुनी सेवा कर्या विनाहुं छे, कारण के जेने पोतानामां शक्ति नथी तेने बीजानी करेली केवी सीते थाय ? दाखला तरीके सेंकडो दीवानो संबंध थाय तो पण आंधळो रुप जोवाने शक्तिवान न थाय. एज प्रमाणे मिश्र द्रव्यमां पण गुण साथे एकपणानी योजना पोतानी बुद्धि ए करी लेवी.

आ प्रमाणे द्रव्य अने गुण तेने एकान्तथी एक पणे स्वीकारे छते त्रिज्य कहे छे. शुं वचने ने वीलकुल भेद नथी ?

उत्तर—तेवो एकांत अर्भेद नथी, कारणके जो सर्वथा अभेद मानीए तो एकज इंद्रिय वडे बीजा गुणोहुं पण उपलब्धि (प्राप्ति) थइ जाय अने बीजी इंद्रिओ नकामी थाय. जेमके केरीहुं रुप जोवामां चक्षु काम लागे' अने तेना साथे एकपणुं मानीए तो गुण-

वाळुं द्रव्य एकपणे होवाथी आंखणीज रस पण खाटां—मीठो परखावो जोइए, कारणके रूप देखाय तेम रस पण जणावो जोइए, एटले रूप अने रस साथे देखाय. तो सर्वथा अभेदपणुं छे, पण तेम तथी. रस पारखनामां जीभजुंज काम छे माटे कंइ अंशे घट अने वख जेम जुदा छे तेम कंइ अंशे गुण आत्माथी जुदा छे. आ प्रमाणे भेद अने अभेद एम वे बताववाथी शिष्य गभराइने आचार्यने पूछे छे के वने रीते मानवामां दोष आवे छे. तो केम मानीए आचार्य कहे छे—एटला माटेज दरेकमां कंइ अंशे भेद अने कंइ अंशे अभेद मानवुं सासुं छे एटले अभेद पक्षमां द्रव्य पोतेज गुणछे. अने भेद पक्षमां भाव गुण जुदो छे. तेज प्रमाणे गुण अने गुणी पर्याय अने पर्यायी सामान्यने विशेष अत्रय अने अत्रयरीनो भेद अने अभेदनी व्यवस्था बताववा वढेज आत्मभावनी सदभाव थाय छे. कहुं छे के—

दवंं पञ्चवित्तुयं, दव विउत्ता य पञ्चवा णरिथ । उत्पायद्विभंगा, हंदि दवियलक्षणं एयं ॥ १ ॥

द्रव्य ते पर्यायी जुदुं छे. अने द्रव्यथी जुदापर्यायो छे एहुं कयांय नथी. पण उत्पाद, स्थिति अने नाश एवा पर्यायोवाळुं द्रव्यलक्षणजाणवुं नयास्तव स्यात्पदलांछिता इमे, रसोपविद्धा इव लोहधातवः । भवन्त्यभिप्रेतफला यतस्ततो, भवन्त-

मार्याः प्रणता हितैषिणः ॥ २ ॥

हे भगवंत ! तमारा कहेला नयो स्यात् पदे करीने शोभे छे. जेम लोह धातु रसे करीने व्याप्त थयेली (सोहुं वनेली) इच्छित फळने आपनारी छे. तेथी उत्तम पुरुषो जे हितना वांछको छे तेओ नमस्कार करीने आपने आशरे रहेला छे. स्यादनाद मतने

स्वीकारे हे. आहुं द्रव्य गुणुं स्याद्वाद स्वस्वने वतावनार आपणां आचार्योए वयुं लखुं हे माटे वचारे कहेता नथी. तेज निर्मुक्तिकार कहे हे के वधा द्रव्यमां प्रधान एवा जीव द्रव्यमां गुण भेद वडे रहेल हे ते कहे हे.

संकुचियवियसियतं, एसो जीवस्स होइ जीवगुणी । पुरेइ हंदि लोणं, बहुएएसेचणगुणेणं ॥ १७१ ॥

जीव हे ते संयोगि वीर्थवाळो जतां, द्रव्य पणे प्रदेश संहार विसर्ग वडे आधारना वश पणायी दीवानी माफक संकोच अने विकास पामे हे. जीवनो आज गुण आत्मानी साथे आत्मभूत थइ रहेल हे. आम भेद विना पण छट्टी विभक्तियो संबंध थाय हे. जेम के राहुतुं माथुं. शिला पुत्रक (दस्तो. या वाटा) तुं शरीर विगोरे हे. तेज भवमां सात समुद्र्यात (आत्मानुं वधुं घटवुं ते) ना परवशपणायी आत्मा संकोच विकोच पामे हे, तेज कहे हे. वरोवर रीते चारे बाजु जोरथा हणवुं. अने आत्म प्रदेशोने आमतेम फेकवुं. ए समुद्र्यात हे, ए सात समुद्र्यातनां नाम वतावे हे. कषाय; वेदना; मारण अंतिक, वैक्रिय, तैजस, आहारक, अने केवल्लि समुद्र्यात हे. तेमां प्रथमतो कषाय. समुद्र्यात. अजतानुबंधी क्रोध विगोरेथी, जेवुं चित्त (ज्ञान) नाश पाम्युं हे, तेओ पोताना आत्माना प्रदेशने आम तेम फेके हे. तथा अतिशय वेदना थतां नाडीओ तूटतां वेदना समुद्र्यात थाय अने मरवानो अणीमां जीव आम तेम उत्पन्न थवाना प्रदेशमां लोकना अंत सुधी आत्म प्रदेशोने षोते वारंवार फेके हे. अने संकोची हे हे. वैक्रिय समुद्र्यात वैक्रिय लडिववाळो, नहुं वैक्रिय शरीर वनाववा माटे, आत्म प्रदेशोने बहार काहे हे, तेज प्रमाणे तेजस शरीर वनाववा तथा तेजोलेख्यानी लडिववाळो तपस्वी तेजोलेखया फेकवा वलते तेजस समुद्र्यात करे हे तथा आहारक शरीर

वनाववा चौद पूर्व धारी आहारक लडिवाला साधु कोइपण वखत संदेह दूर करवा तीर्थकर पासे पोताहुं शरीर मोकलवा आहारक शरीर वनाववा वहारना प्रदेशोने लेवा आत्माना—प्रदेशोने वहार फेंके छे, अने केवलि समुद्ध्यात समस्त लोकव्यापी छे एटले तेनी अंदर वधा समुद्ध्यात छे, एहुं निर्युक्तिकार पोतेज कहे छे. चौद राज लोक प्रमाण आकाश खंड छे तेमा व्यापे छे कारणके बहु प्रदेशतुं गुण पणुं छे. आ केवलि समुद्ध्यात केवल ज्ञान थया पछी केवल ज्ञानी प्रभु जुए छे के माहं आयुष्य थोडुं छे, अने कर्म वधारे भोगववानां छे तेथी दंड कपाट मंथन आंतरा पूरवा, ते प्रमाणे संकोचमां पण जाणहुं एटले पहेले समये उपर नीचे दंड समान बीजे समये वने छेडे कपाट समान बीजे समये मथनी (रवैया) ना आकारे तथा चोथे समये आंतरा पूरे छे; ते प्रमाणे पाहुं चार समयमां मूल शरीर करी नाखे छे. आ द्रव्य गुण छे हवे क्षेत्र गुण विगोरे कहे छे.

देवकुरु सुसमसुसमा, सिद्धी निबभय दुगादिया चैव । कल भोअणूञ्जु वंके जीवमजीवि य भावंमि ॥१७२॥

क्षेत्र ते देव कुरु विगोरे जुगलीआना क्षेत्र छे. त्यां सदाए कल्प वृक्ष रहे छे, काल गुणमां सुखम सुखम विगोरे नामना आरा जाणवा, जेमां काले करीने वस्तुमां फेरफार थाय छे. फळ गुणमां सिद्धि गति छे. पर्यंत्र गुणमां निर्भजना (निश्चित भेद) छे. गणना गुणमां वे त्रण चार विगोरे तुं गणहुं छे. करण गुणमां कळार्कोशल्य छे, अभ्यास गुणमां भोजन विगोरे छे. गुण अगुणमां सरळता छे, अगुण गुणमां वक्रता छे, भवगुण अने शीलगुणनो भावगुणनो विषय लेवाथी जीवतुं ग्रहण लेवाथी तेमां समावेश थइ गयो छे, तेथी गाथासां जुहुं वलावुं नथी. भावगुण ते जीवनो नारक विगोरे भव जाणवो, शीलगुणमां जीवनो क्षमा विगोरे गुण शुक्त आत्मा

केचो, अने भावगुण ते जीव अने अजीवनो जाणवो, आ प्रमाणे थोडामां बतावी तेनी विशेष व्याख्या करे छे.

क्षेत्र गुण.

देवकुरु, उत्तरकुरु, हरी वर्ध, रय्यक, हेमवत, हैरण्यवत आ छ युगलिकनां क्षेत्र छे. ते सीवाय छपन अंतर द्वीप छे. तेमां पण युगलिक छे, तेओने खेती विभेरे कृत्य करा वीना जे जोइए ते कल्प वृक्षमांथी मली शक छे, तेथी ते अकर्म भूमि कहेवाय छे. आ क्षेत्रने आश्रयी गुण जाणवो, बली त्यां जन्मेला मनुष्यो देव कुमार जेवा सुंदर रूपवाला सदा जुवानी भोगवनारा पुरे आयुष्ये मरनारा अनुकूल सुंदर पांचे इन्द्रियुं विषय सुख भोगवनारा स्वभावथीज सरळ कोमळ स्वभाववाळ। अने भद्रक भावना गुणथी देव लोकमां जनारा होय छे (साथे स्त्री पुरुषहुं जोहुं जन्मे अने ते नरमादा तरीके रहे तेथी ते युगलिक कहेवाय)

काळ गुण.

भरत औरवत आ वे क्षेत्रमां प्रथमना त्रण आरामां एकान्त सुखवाळा वखतमां युगलिकोनी स्थिति सदा सुंदर रूपवाली अने यौवनवाली रहे छे.

फळ गुण.

फळ तेज गुण, ते फळ गुण कहेवाय; अने ते फळक्रियाने आश्रयी छे, ते क्रिया सम्यक्दर्शन ज्ञानचारित्रि विना आ लोक अथवा परलोकने आश्रयी जे करावामां आवे; ते एकांत अनंत सुखने आपनारी नहोवाथी तेनो फळगुण मळ्या छतां अगुण जेवो छे, पण

सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्र साथे मळी तेने अनुसार जं क्रिया थाय; ते एकांत अंतंत वाधारहित संपूर्ण सुख आपनार सिद्धि (मोक्ष) फळ आपनार छे, तेज फळगुण मेळवाय छे, तेथी एम कहुं केः—सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्रवाळी क्रिया मोक्षफळ आपनारी छे, अने ते शिवायनी क्रिया संसारीक सुखफळना आभास मात्र (वनावटी) छे. माटे ते निष्फल छे. एटला माटे मोक्षार्थिष् फळगुण तेनेज कहेवो के जेमां सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्र विगेरेनी प्राप्ति थाय.

पर्यायगुण

पर्याय तेज गुण, ते पर्यायगुण छे, एटले गुण अने पर्याय, ए वंनेनो नयवादना अंतरपणार्था अभेद स्वीकार्यो छे, अने ते निर्भजनारूप छे. निश्चितभजना एटले, निश्चितभाग जाणवो. जेमके, स्कंधद्रव्य छे, तेने देशप्रदेश वडे भेद पाडतां परमाणु सुधी भेदो पडे छे. (पुद्गल द्रव्य ज्यारे आरुं होय; त्यारे स्कंध कहेवाय; अने तेनो एक भाग लइए तो देश, अने सौथी वारीक भाग लइए; तो प्रदेश कहेवाय अने ते प्रदेश छुटा पडे तो परमाणुं छे.) परमाणु पण एक गुणो काळो वे गुणा काळा साथे मेळवतां अनंता भेदवाळो थाय छे. आ वथा पर्यायगुण छे.

गणना गुण

वे त्रण चार विगेरे, घणी मोटी राशि होय; ते गणना गण वडे निश्चय कराय छे के, आटळं एतुं ममाण छे.

करण गुण.

कळाकौशल्य ते, पाणी विगेरेमां इन्द्रियोने कुशलता माटे, (कसरत माटे) नहावा, तरवा विगेरेनी क्रिया कराय छे.

अभ्यास गुण.—भोजन विगेरे संबंधी छे. जेमके, ते दिवसे जन्मेको बालक पण ते पूर्वभवना अभ्यासणी मालातुं स्तन विगेरे पोताना मोहामां छे छे, अने रोतो बंधथाय छे, अथवा अभ्यासना वक्षथी अंधारं होय; तोपण कोळीओ मोहामांज मुके छे, तथा आकुल चित्तवाळी पण दुःखवाळी जग्यायेज शरीरने पंपाळे छे विगेरे छे—

गुणअगुण—गुणज कोइने अगुणपणे परिणामे छे. जेमके, कोइ माणसने सरळगुण. कपटीने अवगुण करनारो थाय छे.

“ श्राढ्यं ह्रीमनि गणयते वतरुचौ, दममःशुचौ कै तवं । शूरेनिर्दुणता ऋजौ विमतिता दैन्यं प्रियाभाषिणि ॥

तेजस्विन्यवतिरपता सुखरता वसुर्दशक्तिः रिशुरे । तरको नाम गुणो भवेत सविदुषां, योदुर्जनैर्नाङ्कितः॥१॥

लज्जावाळी बुद्धि होय; ते श्राठपणामां माने. वतनी रुची दंभपणे माने; पवित्रताने कैतव (मक्करीपणे) माने; शूरेने निर्दयता, शरळताने बेलापणुं, मीठुं बोलतां दीनता माने; तेजस्वीने, अंहकारां, सारुं बोलनारने, सुखरता (वाचाळपणुं) माने; स्थिरमां बोलवाने अशक्त माने. आथी कोइ सारां कवि कहे छे केः—पंडितोमां एवो क्यो गुण होय के, दुर्जनो तेने कळंकित न बनबे ? आनो अर्थ ए छे केः—हितने माटे कहेछुं वचन पण निर्भाष्यने अगुणपणे परिणामे छे.

अगुण गुण.—कोइने अगुण—वचन पणे गुणकारीपण थाय छे. जेमके, वक्र विषय संबंधी छे. ते जेम, गोथो गळीयो होय; अने तेने किण स्कंध (कांध) थयो न होय; तो गो गणमां सुखेथी बेसे छे.

ગુણાનામિવ દૌર્જન્યાદ્દુષ્ટિ ધુર્થો નિયુજ્યતે । અસંજાતકિણસ્કન્ધઃ, સુખં જીવતિ ગૌર્ગલિઃ ॥ ૧ ॥

જેમકે:—દૌર્જન્ય (કુટીલતાથી) ગુણોત્તુજ ધુર્થિમાં ધુર્થપુ યોજાય છે. જેમકે, અસંજાત ઇટલે, જેને કિણસ્કંધ ન થયો હોય; તેવો ગલીયો વલ્લદ સુરેથી જીવે છે.

ભવગુણ—ભવગુણ ઇટલે, નારકાદિ ભવવાલો જીવ તે તે સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય; ત્યાં તેને તેવો ગુણ મળે; તે જીવને આશ્રયી છે. જેમકે નારકિમાં જીવ ઉત્પન્ન થાય; તેને અતિત્રય વેદના, તથા દુઃસ્વેથી પીડા સહન થાય; તેવી તે ભોગવે; તથા તેના શરીરને તલ તલ જેવડા ટુકડા કરીનાંસ્ત્રે; તોપણ જોડાઈ જાય; તથા અવધિજ્ઞાનવાળા હોય છે. આ નારકભવનો ગુણ કહેવાય એ પ્રમાણે તિર્થંચમાં ઉત્પન્ન થયેલા તેના ભવગુણ પ્રમાણે સત્ અસત્ના વિવેકરહિત હતાં આકાશગમનની લઙ્ઘિવાળા હોય છે, તથા ગાય વિગેરેને ઘાસ વિગેરે સ્વાણું શુભ અનુભવ વડે મળે છે, તથા મનુષ્યભવમાં મોક્ષપાપિ વધાં કર્મોનો ક્ષયરૂપ છે, તે મળે છે, તથા દેવોને સર્વ શુભ અનુભવ છે. આ ભવનો ગુણ છે.

શીલગુણ.—વીજાએ આક્રોશથી કહેવા હતાં પોતે સ્વમાવથી શાંત રહીક્રોધ ન કરે; અથવા શબ્દાદિક વિષય સારા—માઠા પ્રાપ્ત થતાં; પોતે તત્વનો જાણ હોવાથી મધ્યસ્થપણું રાસે તે શીલગુણ છે.

માવગુણ—માવગુણ તે દેદાધિક વિગેરે છે, તેનો ગુણ તે, માવગુણ છે. તે જીવ અને અજીવ આશ્રયી છે. તે જીવ વિષય ઐદધિક વિગેરે છે પ્રકારે છે. તેના વે મેદ છે, ઇટલે તીર્થંકર, તથા આહારક શરીર વિગેરે સંબંધી પ્રશસ્ત છે, અને શબ્દ વિગેરેમાં વિષયની

वांच्छना, तथा हास्य रति अरति, विगेरे निदवा योग्य हे, तथा औपशमिक ते, उपशम श्रेणीए चढेला आयुष्यना क्षयशी तेज समये अनुत्तर विमानने प्राप्त करे हे, तथा सारं कर्म उदयमां न आत्रवारूप हे, ते औपशमिक हे. क्षयिकभाव गुण चार प्रकारे हे. (१) सात मोहनीयकर्मनी प्रकृति क्षय यथा पड्डी करीथी मिथ्यात्वमां जाय (२) क्षीण मोहनीय कर्मवाला जीवने अवश्ये बाकीनां त्रण घातीकर्म दूर थरो (३) क्षीण घातीकर्मने आवरण रहीत ज्ञानदर्शन प्रगट थरो (४) वधां घातिअघाती कर्म दूर थतां फरीथी जन्म लेवो न पडे; तथा अत्यंत एकान्त बाधा रहीत परमानंदवाला सुखनी प्राप्ति हे, ते हे, क्षय उपशमथी थयेल क्षायोपशमिक दर्शन विगेरेनी प्राप्ति हे अने परिणामिक ते भव्य अमव्य, विगेरे हे, तथा संनिपातिक ते औदयिक विगेरे पांच भावतुं एक काळे साथे मळवुं ते आ प्रमाणे हे. जेमके मनुष्य गतिना उदयथी औदयिक भाव हे त्यां पांच इंद्रियोनी प्राप्ति थवाथी ते समये ज्ञान संबंधी क्षय उपशमथी क्षायोपशमिक हे अने दर्शन मोहनियकर्मनी सात प्रकृतिना क्षयथी क्षयिक हे अने चारित्रमोहनीयना उपशम भावमां औपशमिक हे अने भव्यपणथी परिणामिकभाव हे एम जीवना भावगुण वताव्यो (आहुं वधारे वर्णन चोथा कर्मग्रंथमां हे त्यांथी जोहुं.) हवे अजीव भावगुण कहे हे ते औदयिक अने पारिणामिकना संभव हे. पण बीजानो नथी औदयिक पटले उदयमां थयेल अने अजीवना आश्रयी हे ते विवक्षायी अजीवलीथो जेमके केटलीक प्रकृतिओ पुद्गल विपाकीज होय हे. प्रश्न-तेकड हे ? उत्तर-औदा-रिक विगेरे पांच शरीर, छ संस्थान त्रण अंगोपांग छ संहनन, पांच वर्ण, वे गंध, पांचरस, आठ स्पर्श, अगुरुल्लु नाम, उपघातनाम, परा-घातनाम, उद्योत आतपनाम, निर्माण, प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ आ वधी प्रकृतिओ सुद्वल विपाकिनी हे, कारणके, जीवतुं संबंधपणुं छतां पुद्गल विपाकिपणे तेओ हे. परिणामिकभाव, अजीवगुण वे प्रकारे हे. अनादि परिणामिक ते धर्म-अधर्म

આકાશનો અનુક્રમે ગતિ, સ્થિતિ, અને અગ્રાહ લક્ષણરૂપ છે; સાંદિ, (આદીવાલો) પરિણામિક દેલાવમાવ તે, આકાશમાં વાદલાહું
 હંદ્રધનુષ્ય વિગેરેનો દેલાવ છે, તથા પરમાણુઓનું રૂપ વિગેરેમાં વીહું ગુણપણું વદલાય છે. હવે આ પ્રમાણે ગુણ કહીને મૂલનો નિષ્કેપો કહે છે.
મૂલે હ્રસ્વકં દ્વે ઓદદ ડવણ્ત જાદ્મૂલં ચ । સ્થિતે કાલે મૂલં માવ મૂલં ભવે તિવિહં ॥ ૧૭૩ ॥

મૂલ શબ્દનો છ પ્રકારે નામ, સ્થાપના, દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ અને માવ એમ નિષ્કેપા છે. નામ સ્થાપના જાણીતા છે.
 દ્રવ્યમૂલ.

દ્રવ્યમૂલમાં ત્ર શરીર, મન્યશરીર, અને તે ત્રિવાય (૧) ઔદાયિકમૂલ, (૨) ઉપદેશમૂલ, (૩) આદિમૂલ. એમ ત્રણ પ્રકારે છે.
 દુક્ષના મૂલપણે જે દ્રવ્ય પરિણમે તે ઔદાયિકમૂલ જાણવું; તથા વૈદ્ય રોગોને તેનો રોગ દુર કરવા જે મૂલનો ઉપદેશ કરે; તે ઉપદે-
 શમૂલ—પિપરીમૂલ વિગેરે જાણવાં; આદિમૂલ દુક્ષોનાં મૂલની ઉત્પત્તિમાં જે પહેલું કારણ છે તે જેમકે, સ્થાવરનામ ગોત્ર પ્રકૃતિના
 સંબંધથી તથા મૂલ નિર્વર્તન ઉત્તર પ્રકૃતિના પ્રત્યયથી જે મૂલ ઉત્પન્ન થાય; તેનો માત્રાર્થ કહે છે, તે મૂલનો નિર્વાહ કરનાર પુદ્ગ-
 લોના ઉદય આવતાં કર્મણ શરીર છે, તે ઔદારિક શરીરપણે પરિણમતાં પહેલું કારણ છે.

ક્ષેત્રમૂલ—જે ક્ષેત્રમાં મૂલ ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા જે ક્ષેત્રમાં મૂલનું વર્ણન થાય તે જાણવું.
 કાલમૂલ—ક્ષેત્રમૂલ પ્રમાણે એટલે જે કાલમાં ઉત્પન્ન થાય; અથવા વર્ણન કરાય; તે કાલ મૂલ છે. માવમૂલ ત્રણ પ્રકારે છે.
 માવમૂલ.

ओदइयं उचदिद्वा आइ तिभं मूलभाव ओदइअं । आयरिओ उचदिद्वा विणयकसायादिओ आई ॥१७४॥

उपदेशक मूल—भावमूल औदायिक—भावमूल, अने आदिमूल प्रथमनुं कहे छे. नाम गोत्रना कर्मना उदयथी वनस्पतिकायनुं मूल-
पणुं अनुभव करतो “ मूल जीवज ” औदायिकभाव मूल छे, अने उपदेशकमूलमां जैन आगम जाणनारा आचार्य जे उपदेशक छे,
ते जाणवा आदिमूलमां प्राणीओ जे कर्म वडे उत्पन्न थाय छे, ते प्राणीओनुं मोक्ष अथवा संसारनुं जे प्रथम भावमूल छे, तेने उपदेश
करे ते जाणनुं. जेमेके, आ गाथाना चोथा पदमां कहुं के:—“ विनय कषाय विगेरे आदि छे.” मोक्षनुं आदि कारण ज्ञानदर्शन-
चारित्र, तप अने औपचारिक एम पांच प्रकारनो विनय छे, तेनाथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे.

विणया णाणं णाणाउ दंसणं दंसणाहि चरणं तु । चरणाहिंसो मोक्खो सुक्खे सुक्खं अणावाहं ॥ १ ॥

विनयथी ज्ञान, अने ज्ञानथी दर्शन, (श्रद्धा), श्रद्धाथी चारित्र, चारित्रथी मोक्ष अने मोक्षमां वाधारहित सुख छे.

विनयफलं शुश्रूषा गुरुशुश्रूषाफलं श्रुतज्ञानम् । ज्ञानस्य फलं विरतिर्विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥ २ ॥

संवरफलं तपोबलमथ तपसो निर्जरा फलं दृष्टम् । तस्मात्क्रियानिवृत्तेरयोगित्वम ॥ ३ ॥

विनयनुं फल गुरुनी सेवा. तेनाथी श्रुतज्ञान, तेनाथी चारित्र, तेनाथी आश्रव, (पाप) नो अटकाव, तेनाथी संवर, संवरनुं फल, तप.

तेनाथी निर्जरा, तेनाथी क्रियानो अंत तेनाथी योगीपणुं छे.

योगनिरोधाद्भव सन्ततिक्षयः सन्ततिक्षयान्मोक्षः । तस्मात् कल्याणानां सर्वेषां भाजनं विनयः ॥ ४ ॥

अयोगिपणार्था भवसंततिनो क्षय संज्ञार्थी मोक्ष छे, माटे ते वधां कल्याणोतुं मुख विनय छे. (माटे विनय संपादन करवो.) जेम विनय मोक्षतुं कारण छे, तेज प्रमाणे विषय (इन्द्रियोनो स्वाद,) तथा क्रोध, मान विगोरे कषायो संसारतुं मुख छे.

मुखतुं वर्णन कर्युं. हवे स्थानना पंदर प्रकारे निक्षेपा बतावे छे.

पासंठवणाद्विष् खितद्धा उहु उवरई वसही । संजस पगह जोहे अयल गणण संवणाभावे ॥ १७५ ॥

नामस्थापना द्रव्य, क्षेत्र, काल, विगोरे छे, ते कहे छे नामस्थापना सुगम छे. द्रव्यमां न शरीर विगोरे छोडीने द्रव्यस्थानमां सचित्त अचित्त अने मिश्रद्रव्यतुं जे स्थान, (आश्रय) छे ते लेवुं. क्षेत्रस्थानमां भरत विगोरे छे, अथवा ऊंचे नीचे अथवा तिरछा (त्रांसा) लोकमां जे क्षेत्र छे ते क्षेत्रस्थान छे अथवा जे, क्षेत्रमां स्थानतुं व्याख्यान थाय ते लेवुं. अद्धा (काल) तेनुं स्थान वे प्रकारे. (१) कायस्थिति, (२) भवस्थिति छे. कायस्थिति, ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायुमां असंख्यात, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणीनो काल छे, तथा वनस्पतिकायनो अनंतकाल छे.

वे इन्द्रिय विगोरे विकल्तेन्द्रियनीकाय स्थितिसंख्याता हजार वर्षनी छे. पंचेन्द्रिय, तिर्यंच, तथा मनुष्यनी कायस्थिति सात आठ भव छे.

पण ते वधानी भवस्थिति नीचे सुजब छे:—

पृथ्वीनी बावीस हजार, पाणीनी सात हजार, वायुनी त्रण हजार, वनस्पतिनी दश हजारवर्षनी उत्कृष्टि स्थिति छे. अग्निकायनी त्रण राजीदिवस छे. वे इन्द्रिय शंख विगोरेनी, बार वर्षनी छे, त्रण इन्द्रिय कीडी विगोरेनी स्थिति ओगणपचास दिवसनी छे, चार इन्द्रिय भमरा विगोरेनी छ मासनी छे पांच इन्द्रिय तिर्यंच, तथा मनुष्यनी त्रण पत्योपमनी छे, देव, तथा नारकीनी स्थिति भवसंवंधी

तेजीस सागरोपमनी छे. अने एकवार त्यां उत्पन्न थया पछी लागलागट उत्पत्ति नथी; माटे कायस्थिति एकज भवनी गणाय. आ उपर जे स्थिति बतावी छे, ते कायसंबंधी तथा भवसंबंधी वन्ने प्रकारे उत्कृष्ट जाणवी जयान्यथी तो क्याओनी स्थिति अंतमुहूर्तनी छे, पण नारकी, देवतानी भवस्थिति दश हजार वर्षनी छे. आ वधुं कालने आश्रयी कहुं; अथवा अद्वास्थान ते सपय आवलिका- मुहूर्त अहोरात, पक्ष, मास, ऋतु, अयन संवत्सर, युग, पत्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसरर्पिणी, पुद्गलपरवर्तन, अतीव्र, अनागत, एम क्या कालरूपे जाणवुं.

उर्द्धस्थान ते, कायोत्सर्ग विगेरे छे, अने एना उपलक्षणथी निषण्णा (बेसवुं) विगेरे पण जाणवुं. उपरतिस्थान ते, विरति छे. तेनुं स्थान एटले, साधुपणुं, अथवा श्रावकपणुं जाणवुं; पण साधुनी सर्व विरति अने श्रावकनी देश विरति छे.

वसतिस्थान एटले, जे स्थानमां गाम अथवा घर विगेरेमां अमुक काल रहेवावुं थाय; ते वसति छे. संयमस्थान सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्धि तथा सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, एम पांच प्रकारे संयम छे. ते दरेकनां स्थान असख्यात छे.

प्रश्न—असंख्यातनी संख्या केदली छे?

उत्तर—अति इन्द्रियपणानो विषय होवाथी साक्षात् देवाडवाने शक्तिवान् नथी, तेथी सिद्धांतमां आपेखी उपमा प्रमाणे कहीए डीए. एक समयमां सूक्ष्म अग्निकायना जीवो असंख्येय लोककाश प्रदेश प्रमाण उत्पन्न थाय छे तेनाथी असंख्यात गुण अग्निकाय पणे परिणमेळा छे तेनाथी पण ते कायस्थिति असंख्येय गुणी छे. तेनाथी पण अनुभाग बंध अद्यवसाय स्थान असंख्येय गुणाछे

આટલાં સંયમનાં સ્થાન સામાન્યથી કલાં. હવે વિશેષથી કહે છે—

સામાયિક હેતોપસ્થાપનીય પરિહાર વિશુદ્ધિ—૯ ત્રણની દરેકનાં અસંખ્યેય પ્રદેશ લોકાકાશ તુલ્ય સંયમ સ્થાન છે અને સૂક્ષ્મ સંપ-
રાયની અંતરસુહૃત્તપાની સ્થિતિ હોવાથી અંતરસુહૃત્તના સમય વરોવર અસંખ્યેય સંયમ સ્થાન છે. યથારહ્યાત ચારિત્રનું જવન્ય ઉત્કૃષ્ટ
સીવાંચ એકજ સંયમ સ્થાન છે, અથવા સંયમ શ્રેણિની અંદર રહેલા સંયમ સ્થાનોને લેવાં, તે આ ક્રમે છે—

અનંત ચારિત્ર પર્યાયથી વનેહું એક સંયમ સ્થાન છે. અસંખ્યેય સંયમ સ્થાનનું વનેહું કંઠક છે. તે અસંખ્યાત કંઠકથી ઉત્પન્ન થયેલ
હ સ્થાનનું જોઠકું છે, તેથી અસંખ્યેય સ્થાનરૂપ શ્રેણિ છે.

પ્રગ્રહ સ્થાન—પર્યાયી જોનું વચન લેવાય (માનનીય થાય) તે પ્રગ્રહ વાક્યવાલો નાયક (નેતા) જાણવો. તે લૈકિક અને લોકો-
ત્તર ણ વે પ્રકારે છે તેનું સ્થાન તે પ્રગ્રહસ્થાન છે. લૈકિકમાં માનનીય વચનવાલા રાજા શુવ્રરાજ મહત્તર (રાજાનો હિત શિક્ષક)
અમાત્ય (પ્રધાન) રાજકુમાર છે. લોકોત્તરમાં ણ આચાર્ય ઉપાધ્યાય મદ્વતિ (પવર્તક) સ્થવિર ગણાવચ્છેદક છે.

યોથ સ્થાન—આ ણ પાંચ પ્રકારે આલેહ—પત્યાલીહ—વૈશાલ મંડલ સમપાદ ૯ રીતે છે—

અચલ સ્થાન—આ સ્થાન ચાર પ્રકારે છે, તેના સાદિ પર્યંચ સ્થાન વિનોરે છે તે વતાવે છે. પરમાણુ વિનોરે દ્રવ્યનો એક પ્રદેશ વિનો-
રેમાં જવન્યથી એક સમય સાદિ સપર્યવસાન અવસ્થાન છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી અસંખ્યેય કાલ છે. અને સાદિ અપર્યવસાન સ્થાન સિદ્ધોનું
પવિચ્ચના કાલરૂપ છે. સિદ્ધોનું મોક્ષમાં જવું તે આદિ અને ત્યાંથી કોહણ વચ્ચે રહસવાનું નથી. માટે અનંત છે.

અનાદિ સપર્યવસાન સ્થાન અતીત અહા રૂપનું ચૈલેચી અવસ્થાના અંત સમયમાં કાર્મણ અને તૈજસ શરીર ધારનારા જો મવ્ય જીવ

હે તેને આશ્રયી જાણવું (તૈજસ અને કાર્મણ શરીર મધ્ય જીવ સાથે અનાદિ કાલથી જોડાણલાં છે. અને જીવ મોક્ષમાં જતાં તે વંને જીવથી જુદાં પહે છે તે અનાદિસાત કહેવાય છે.)

અનાદિ અર્પયસાન તે ધર્મ અધર્મ આકાશના સંધી છે. (તેમની સ્થિતિ પૂર્વની જેવી છે, તેવીજ હરમેશાં રહે છે.)

ગણના સ્થાન—એક વેથી માંડીને શીર્ષ મહેલીકા સુધી જે ગણત્રી છે. તે લેખી. (જૈભમાં પરાધ ઉપરાંત સંખ્યા છે તે અનુયોગદ્વાર સૂત્રમાં બતાવેલો છે, ત્યાંથી જોવી.)

સંધાન સ્થાન—તે બે પ્રકારે છે. દ્રવ્યથી અને માવથી છે. દ્રવ્યથી હિન્ન અને અહિન્ન ઇમ બે મેદે છે. તે સ્ત્રીની કાંચકી વિગેરેના ટુકડા કરીને સાંધવાવું છે. અને અહિન્ન સંધાનમાં પશ્ચ ઉત્પચ્ચમાન તંતુ વિગેરેનું જોડાણ છે (તાળો વાળો કપડામાં જોડાય તે.)

માવ સંધાન પ્રશસ્ત અને અપ્રશસ્ત ઇમ બે મેદે છે તેમાં પ્રશસ્ત અહિન્ન માવ સંધાન ઉપશમ ક્ષપક શ્રેણિષ્ ચઢતા મનુષ્યને અપૂર્વ સંયમસ્થાન એક સરલાંજ હોય છે. પળ વચમાં તુટક પડતી નથી અથવા શ્રેણિ સિવાય. પ્રવર્ધમાન કંઠકનાં લેવાં. હિન્ન પ્રશસ્ત માવસંધાન માવથી ઔદયિક વિગેરે વીજા માવમાં જરૂને પાછા શુદ્ધ પરિણામવાલા ચરૂને ત્યાં આવતાં થાય છે.

અપ્રશસ્ત અહિન્ન માવ સંધાન ઉપશમ શ્રેણિથી પઢતાં અવિશુદ્ધમાન પરિણામવાલા મનુષ્યને અનંતાનુબંધિ મિથ્યાત્વના ઉદય સુધી જાણવું—અથવા ઉપશમ શ્રેણિ સીવાય કષાયના વશથી વંધ અધ્યવસાય સ્થાનોને ચઢતાં ચઢતાં અવગાહ માન કરનારાને હોય છે. અપ્રશસ્ત હિન્નમાવ સંધાન તે ઔદયિક માવથી ઔપશમિક વિગેરે વીજા માવમાં જરૂને પાછા ત્યાંજ ઔદયિક માવમાં આવે તે છે. આ દ્વારનું જોડકું સાથેજ કહું ષ્ટલે સંધાનસ્થાન દ્રવ્ય વિષયવું પહેલું છે, અને પછીનું માવ વિષયવું છે અથવા માવસ્થાન જે કષા-

घोटुं स्थान है, ते अहीं क्युं कारणके तेओनेज जीतवापणानो अधिकार है.

पक्षः—तेओतुं कयुं स्थान है के जेने आश्रयीने ते थाय है

उत्तर—शब्दादि विषयोने आश्रयीने ते थाय है ते बतावे है.

पंचसु कामगुणसु य सद्गफरिसरसरूवगंधेसुं । जसस कासाया वटंति मूलदृष्टां तु संसारि ॥ १७६ ॥

अहीं इच्छा अनंरूप जे काम है. तेना गुणोने—आश्रयी चित्तनो विकार है; ते बतावे है. ते विकारो शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध एम पांच है. ते पांचे व्यस्त अथवा समस्त—विषय संबंधी जे जीवतुं विषय सुखनी इच्छाथी अपरमार्थने देखनार संसार पेपी जीवने राग द्वेषरूप अंधकारथी आंखनुं तेज हठी जवाथी सागा—माठा पदार्थ प्राप्त यतां कपायो थाय है ते मूलनुं संसार झाड थाय है तेथी शब्दादि विषयथी उत्पन्न थए कायो संसार संबंधी मूल स्थानज है—एनो भावार्थ आ है के राग विगेरेथी जामाडोळ थएल चित्तयालो जीव परमार्थने न जाणवाथी आत्माने तेनी साथे कंइ संबंध नथी छतां विषयने आत्मरूपे मानीने आंधळाथी पण वधारे आंधळो वनी कामी जीव रमणीय विषयो जोइने आनंद पासे है तेथी कहुं है—

दृश्यं वस्तु परं न पश्यति जगत्पन्थः पुरोऽवस्थितं, रागान्धस्तु यदस्ति तत्परिहरन् यन्नास्ति तत् पश्यति ॥

कुन्देन्दीवरपूर्णचंद्रकलशश्रीमल्लतापल्लवा, नारोप्याशुचिराशिषु प्रियतमा गात्रेषु यन्मोदते ॥

आंधळो है ते जगतमां जोवा जेवी वस्तु जोइ शक्तो नथी पण रागथी आंधळो थएलो पोते आत्मा है ते आत्म भावने जोडीने अनात्म भावने जुए है जेमके छती वस्तु कुंद (फुल) इन्दीवर (कमळ) पूर्णचंद्र कळस श्रीमत् लतापल्लवो जेवानी गंदकीना दगळा

रूप प्रिय स्त्रीना शरीरने उपमाओ आपीने तेमां कापी आनंद माने छे. (साक्षात् उत्तम वस्तुओ छोडीने दुर्गंधधी भरेका स्त्रीना गंदा रीरमां आनंद माने छे) अथवा कर्कश शब्दो सांभळीने तेमां द्वेष करे छे तेथी मनोहर अथवा अणगमला शब्द विगेरे विषयो कषायोतुं मूळस्थान छे. अने ते कषायो संसारतुं मूळ छे.

पश्च—जो शब्दादि विषयो कषाय छे तो तेनाथी संसार केवी रीते छे? उत्तर—कारण के कर्म स्थितिंतुं मूळ कषाय छे अने कर्म स्थिति संसारतुं मूळ छे. संसारीने अवश्य कषायो होय छे, ते कहे छे—

जह सवपायवाणं भुमीए पइडियाइं मूलाइं । इय कम्मपायवाणं संसारपइडिया मूला ॥ १७७ ॥

जेम सर्व झाडोनां मूळो पृथ्वीमां रहेलां छे तेज प्रमाणे कर्मरूप दृक्षना कषायरूपे मूळो संसारमां रहेलां छे.

शंका—आ अमे केवी रीते मानीए के कर्मंतुं मूळ कषाय छे? उत्तर—मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग, ए बंधना हेतु छे. आगममां पण कहुं छे के—

“जीवे षं भंते! कतिहिं टाणेहिं पाणावरणिजं कम्मं बंधइ? गोयमा, दोहिं टाणेहिं, तं जहा—रगणेण व दोसेण व । रगेदुविहे—माया लोभे य, दोसे दुविहे । कोहे य माणे य, एएहिं चउहिं टाणेहिं वोरिओ वगूहिएहिं पाणावरणिजं कम्मं बंधइ ॥

हे भगवंत, जीव केदलां स्थान वढे ज्ञानआवरणीय कर्म बांधे छे. उत्तर—हे गौतम! राग अने द्वेष ए वे स्थान वढे बांधे छे अने

ए राग; माया ने लोभ एम वे भेदे छे, तथा द्वेष पण क्रोध अने मान, एम वे भेदे छे. ए चार स्थान बडे वीर्य, उपगूढ, (जोडावा) थी ज्ञानावरणीय कर्म बांधे छे. ए प्रमाणे आठे कर्मने आश्रयी जाणतुं अने ते कर्मायो मोहनीय कर्मनी अंदर रहेला छे. अने आठे प्रकारना कर्मतुं मूल कारण छे. काम गुणतुं मोहनीयपणुं बतावे छे—

अद्विविहकस्मस्त्वला सवे ते मोहणिज्जमूलानां । कामगुणमूलानां वा तस्मूलानां च संसारो ॥ १७८ ॥

पूर्वे कहुं के कर्म पादप विगरे तेनी व्याख्या करे छे. तेमां कर्मपादप क्या कारणवालां छे. तेनी उत्तर—आठ प्रकारना कर्मरूप वृक्षां छे. तेमनुं मूल मोहनीय कर्म छे. एदले एकला कर्मायो न लेवा. पण काम गुणो मोहनीय मूलवाला छे. जे वेदना (संसार भोगवाना इच्छा) उदयशी काम थाय छे. ते लेवा. अने वेद छे ते मोहनीय कर्ममां समावेश थाय छे. तेथी मोहनीय कर्म जे संसारतुं मूल कारण छे. ते संसार लेवो.

तेज प्रमाणे संसार कर्माय, क्रामोतुं परंपराए मोहनीय कर्म कारणपणथी प्रधान भावने अनुभवे छे. (तेज कर्म बंधनमां अग्रेसर छे.) ते मोहनीय कर्मनो क्षय थवाशी बीजा कर्मनो अवश्य क्षय थशे तेज प्रमाणे. कहुं छे.

“ जह मरथयसुईए हयाए हस्मए तलो । तहा कस्माणि हस्मंति मोहणिजे स्वयं गए ॥ १ ॥

जेम ताडना झाडनी. जे सह मथाके रहेली छे. ते नाश करतां ताडतं झाड नाश पासे छे, तेज प्रमाणे मोहनीय कर्म नाश पासतां बीजां कर्मो नाश पासे छे.

आ मोहनीय कर्म दर्शन मोहनीय अने चारित्र मोहनीय एम वे भेदे छे, ते बतावे छे.

દુવિહો અ હોદ મોહો દંસણમોહો ચરિત્તમોહો અ. ૧ કામા ચરિત્તમોહો તેણહિગારો ઇહં સુત્તે ॥ ૧૭૬ ॥

દર્શન મોહનીય અને ચારિત્ર મોહનીય એમ બે ભેદે કહું. અને બંધના હેતુનું પણ બે પ્રકાર પણ છે તે વતાવે છે.

અર્હત (જિનેશ્વર) સિદ્ધ, ચૈત્ય, તપ, શ્રતગુરુ, સાયુ, સંઘના પ્રત્યનીક (જિનેશ્વરથી સંઘ સુધી જે પદો છે, જેમાં ગુણ અને ગુણી એ બંને આવે છે તેમના યજુ) પણ જે વર્તે તે દર્શનમોહનીય કર્મ વાંધે છે. અને જેના વર્દે જીવ અનંત સંસારરુપ સમુદ્રના મધ્યમાં પડે છે તથા તીવ્ર કષાય બહુરાગ દ્વેષરુપ મોહથી વેરાણ્ણો વની દેશ વિરતિ અને સર્વ વિરતિને હણનારો ચારિત્રમોહનીયકર્મ વાંધે છે. તેમાં મિથ્યાત્વ, સમ્યગ્ મિથ્યાત્વ (મિશ્ર) અને સમ્યક્ત્વ એમ ત્રણ ભેદે દર્શન મોહનીય-કર્મ છે, તથા સોલ પ્રકારના કષાય છે. નવ નોકષાય છે. એમ પચ્ચીસ ભેદે ચારિત્રમોહનીય છે. (પહેલા કર્મગ્રંથમાં મોહનીય કર્મ જુઓ.) તેમાં કામ એ શબ્દ વિગેરે પાંચ વિષયો ચારિત્રમોહ જાણવા; તેના વડે અર્હી સૂત્રમાં અધિકાર છે, કારણ કે, ચાહ્ય વિષયમાં કષાયોનું સ્થાન છે; અને તે શબ્દાદિ પાંચ ગુણરુપ છે. અને ચારિત્રમોહનીય પૂર્વે કર્હેલી ઉત્તર પ્રકૃતિ જે સ્ત્રીવેદ પુરુષવેદ નપુંસકવેદ તથા હાસ્ય રતિલોભથી આશ્રીત કામ આશ્રયવાલા કષાયો સંસારનું મૂલ છે અને કર્મમાં પ્રધાન કારણ એ છે તે વતાવે છે.

સંસારસ્સ ડ મૂલં, કર્મમં તસ્સવિ હુંતિ ય કસ્સાયા ॥

સંસાર તે નરક, તિર્યંચ, મનુષ્ય, દેવ એમ ચાર પ્રકારે ગતિરુપ સંસારનું અમણ છે. તેનું મૂલ કારણ આઠ પ્રકારનું કર્મ છે. તે કર્મનું પણ મૂલ કારણ કષાયો છે. તે ક્રોધ વિગેરે સંસારનું નિમિત્ત છે, અને તે પ્રતિપાદિત શબ્દ વિગેરે સ્થાનોનું પચુરસ્થાનપણું વતાવવા ફરીથી સ્થાન વિશેષ અઢથી ગાથા વડે કહે છે.

ते सयणपेसअथाइएसु अउझरथओ अ टिआ ॥ १८० ॥

पहेलां अने पछी परिचयवाळां माता, पिता, सासु, ससरा विगेरे जे स्वजन (सगां) छे. तथा नोकर विगेरे मेळ्य छे अने धन धान्य कुच्य (तांबु—पीत्तल विगेरे) वास्तु (घर) रत्न ए अर्थ कहेवाय छे (ते स्वजन विगेरेनो इंद्र समास करवो.) आ बयाने अंगे कषायो विषयपणे रह्ला छे, अने आत्मायां प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी माफक विषयीपणे छे; तेम एकेन्द्रिय विगेरेने ण कषायो छे. आ प्रमाणे कषायनुं स्थान बताववा वढे सूत्रपदयां लीयेछुं छे. स्थान समाप्त करीने जीतवा योग्य विषयोवाळा कषायोना निक्षेपा कहे छे. **णामंठवणाद्विए उपत्ती पट्चए य आएसो । रसभावकसाए या तेण य कोहाइया चउरो ॥ १८१ ॥**

कषायना निक्षेपा—जेवो छे तेवो अर्थ न बतावे; ते निरपेक्ष अभिधान मात्र ते नाम कषाय छे अने सद्भाव (तदाकार चित्र विगेरे) असद्भाव (तदाकार नही.) जेम इंट विगेरेना देव वनावे; ते वे प्रकारे स्थापना निक्षेप छे. जेमके, भयंकर भूकृति (आंखनी अमर) क्रोधशी चढावी कषाळयां त्रण सळ पाडी त्रीशूळ साथे मोडुं तथा थांख लाल करी होठ दांत पीसतो परसेवाना पाणी विगेरेशी संपूर्ण क्रोधनुं चित्र पुस्तक अथवा अक्ष वराटक विगेरेयां रहेल ते स्थापना कषाय छे. (क्रोध जीवने आश्रयी छे, अने क्रोधनां चिन्ह जेने प्रगट थयां होय; तेवा क्रोधीनुं चित्र पुस्तक अथवा वीजायां चित्र पाडे; ते कषायनुं चित्र होवाशी; स्थापना कषाय छे.) द्रव्यकषायोयां ज्ञ शरीर तथा भव्य शरीरशी व्यतिरिक्त कर्मद्रव्य कषायो तथा नोर्कर्मद्रव्य कषायो छे, तेयां प्रथम जे उदीर्णियां न आवेला; अथवा उदीर्णियां जे पुद्गलो आवेला होय; ते पुद्गलो द्रव्यना प्रधानपणाशी कर्मद्रव्य कषायो जाणवा. विभितक विगेरे

नो कर्मद्रव्य कषायो छे तथा उत्पत्ति कषायो शरीर उपधि क्षेत्र वास्तु स्थाणुं विगेरे उत्पत्ति कषायो छे, एटले जेने आश्रयीने कषायोनी उत्पत्ति शाय; ते उत्पत्ति कषाय जणवा; तेवुंज शास्त्रमां कहुं छे:—

किं एत्तो कट्टयरं, जं मूढो थाणुअस्मि आवडिओ । थाणुस्स तस्सरुइ, न अट्पणो दुप्पओगस्स ॥ १ ॥

कोहने स्थाणुं (झाडनुं हुंहुं) विगेरे वाणतां मूढ माणस पीतना प्रमादनो दोष न काढतां; तेज स्थाणा उपर क्रोध करे छे, एनाथी वधारे दुःखदायक वीजुं थुं छे ?

प्रत्ययकषाय.—कषायोना जे प्रत्ययो एटले बंधनां कारणो छे ते अहियां सुंदर अने खराब, एवा भेदवाळा शब्द विगेरे लेवा; कारणके एनाथीज उत्पत्ति तथा प्रत्ययनुं कार्य तथा कारणरूपे—भेद रहेलाछे.

आदेश कषाय.—वनावटी भ्रमर विगेरे चढाववी ते छे.

रसकषाय.—रसथी एटले कढवा तीखा एम पांच प्रकारना रसनी अंदर रहेला छे ते लेवा—

भावकषाय—शरीर, उपधि, क्षेत्र, वास्तु, स्वजन, प्रेक्ष्य, अर्वा विगेरे निमित्तथी प्रगट थएला जे शब्द विगेरे काम गुण कारण कार्थभूत कषाय कर्मना उदयरूप आत्माना परिणाम विशेष ते क्रोध मान माया लोभ एवा चार कषाय छे. ते दरेकना अनंतानुबंधी अपत्याख्यान प्रत्याख्यान आवरण तथा सडवलन, एवा चार भेद वढे गणतां सोळ भेद वाला भाव कषाय छे. तेओनुं स्वरूप तथा अनुबंधनुं फल गाथाओ वढे करे छे.

जलरेणुपुढविपवयरार्द्धसरिसो चउविहो कोहो ॥ तिणिसलयाकड्डियसेलरथंभोवसो माणो ॥ १ ॥

पाणीमां रेतीमां जमीन उपर अने पर्वत उपर जे फाट पडवा जेवो देखाव थाय छे तेवो चार प्रकारनो क्रोध छे. (रेतीमां काढेली लीटी. पवनथी सुरत मली जाय. तेवो संज्वलन क्रोध जाणवो. एम अनुक्रमे दरेक कथारे कथारे प्रमाणमां जाणवो) तथा तिनिस लता लाकडुं हाडकुं पत्थरनो थांभलो ए चारनी उपमावाळुं मान छे. (तिनिस लता झट वळे तेम संज्वलन मानवाळो मान सुकी झट नमे वाकीना मानवाला कठणाइथी नमे पण पत्थरनो थांभलो नमे नही तेम अनंतानुबंधी मानवालो नमे नही)

सांयावलेहिगोसुत्ति मंडासिंगयणवंसमूलसमा । लोभो हलिदकदमखंजंणकिमिरायसासाणो ॥ २ ॥

अवलेखी (नेतर विगेरेनी छाल) गोसुत्रीका वेदानुं शीणडुं अने वांसनुं थडीडं, आ चारनी उपमां वाली माया छे. (संज्वलन माया वालो जेम नेतरनी छोल वाळेली होय तोषण सीधी थइ जाय छे. तेम आ माया वालो मायाने दूर करे छे पण छेवटनी मायावाळो वांसना थडीया माफक कशीषण कपट छोडतो नथी.) तथा लोभ हलदर कादव खंजन अने कुमिना रंग जेवो छे. (संज्वलनना लोभवाळो जेम हलदरनो रंग झट जतो रहे तेम आ लोभीने झट संतोष याय. पण कुमि रागथी रंगेला कपडा जेवा लोभीने मरतां सुधी संतोष न थाय.

पक्खचउमासवच्छर जावजीवाणुगामिणो कमसो । देवगार तिरियणारयगइसाहणहेयवो भणिया ॥ ३ ॥

ते कषायो संज्वलन विगेरेनी स्थिति एक पक्खवाडीडं तथा चार मास, एकवर्ष अने छेवटना अनंतानुबंधीनी आखी जीदगी

સુધીની છે. અને તેઓની સંજ્વલનવાલાની દેવ ગતિ તથા વાકીના ત્રણની અનુક્રમે મનુષ્ય તિર્થંચ અને નરક ગતિ છે. અર્થાત્ ए क-
 षायो वाला जीवो ए गतिने पाये છે. एष कषायो ते गतिना साधनना हेतुश्चो क्त्वा, आ कषायना नाम विगरे आठ प्रकारे निक्षेपा
 क्त्वा. तेने कया नयवालो शुं इच्छे છે. તે કહે છે.

નૈગમ નયવાલો સામાન્ય વિશેષ રુપણાથી તથા તેનું ઇકગમપણું નહોવથી તેના અભિપ્રાય પ્રમાણે વધાए निक्षेपा नाम विगरे
 आठ माने છે. અને સંગ્રહવ્યહવાર નયવાલા કષાય સંબંધના અભાવથી આદેશ અને સમુત્પત્તિ ए वे निक्षेपाने इच्छता नथी. स्रु-
 त्तवालो वर्तमान अर्थने इच्छतो होवाથી આદેશ, समुत्पत्ति અને સ્થાપના નિષ્કેપાને इच्छतो, नथी शब्द नयवालो नामनो ण कथं-
 चितभावनी अंदर रहेला भावशी नाम અને भाव, एवा वे निक्षेपानेज इच्छे છે આ પ્રમાણે કષાયો કર્મના કારણપણે ક્ત્વા. અને તે
 कर्म संसारतुं कारण છે. हवे संसार केटला प्रकारनो છે તે વતાવે છે.

द्ववे खित्ते काले, भवसंसारे अ भवसंसारे । पंचविहो संसारो, जरथे ते संसरंति जिआ ॥ १८२ ॥

દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ, ભવ, અને ભાવ, એમ પાંચ પ્રકારનો સંસાર છે, જેમાં સંસારી જીવો ઝમણ કરે છે (નામ સ્થાપના યુગમ
 होवाशी निर्मुक्तिकारे लीया नथी एम जणाय છે.) દ્રવ્ય સંસારમાં જ શરીર ભવ્ય શરીર હોદીને દ્રવ્ય સંસારરુપ આ સંસારજ છે.
 અને ક્ષેત્ર સંસાર જે ક્ષેત્રોમાં દ્રવ્યો આમ તેમ સંસારે (સ્વસે) તે છે. કાલ સંસાર તે જેમાં સંસારનું વર્ણન થાય અને નરક વિગેરે ચાર
 ગતિમાં અનુપૂર્વીના ઉદયથી એક ભવથી બીજા ભવમાં જવું, તે ભવ સંસાર છે. અને ભાવ સંસાર ઇટલે સંસારનો સ્વભાવ તે ઐદયિક

વિગેરે ભાવની પરિણતિરૂપ છે, તેમાં પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ, અને પ્રદેશ એમ ચાર પ્રકારના કર્મના બંધના પ્રદેશ વિષાકનું ધોગવતું છે. આ પ્રમાણે દ્રવ્યથી લઈ માત્ર સુધી પાંચ પ્રકારનો સંસાર છે અથવા દ્રવ્યાદિક ચાર પ્રકારનો સંસાર છે તે આ પ્રમાણે અશ્વથી હાથી. ગામથી નગર. અને વસંતથી ગ્રીષ્મ. તથા ઔદયિકથી ઔષ્ણિક એમ ચાર પ્રકારે થાય છે, એમ બંને પ્રકારે સંસાર વતાવ્યો છે, આસંસારમાં કર્મને વશ થણા જીવો આમ તેમ મમે છે. તેથી કર્મનું સ્વરૂપ વતાવે છે.

પામંઠવણાકર્મમં, દ્વવકર્મમં પઓગકર્મમં ચ । સસુદાણિરિયાવહિયં આહાકર્મમં તત્તોકર્મમં ॥ ૧૮૩ ॥

કિદ્ધકર્મમ ભાવકર્મમં, દલવિહ કર્મમં સમાસઓ હોદ્દ ।

નામ કર્મ—તે કર્મ વિષયથી શૂન્ય. એવું નામ માત્ર છે. સ્થાપના કર્મ પુસ્તક અથવા પાત્ર વિગેરેમાં કર્મ વર્ણનાતું સદ્ભાવ. અ-સદ્ભાવ એમ બે રૂપે જે લક્ષેહું કે ચિત્તરેહું હોય કર્મ છે તે સ્થાપના કર્મ છે.

દ્રવ્ય કર્મમાં—જશરીર. મવ્યશરીર સીવાય વ્યતિરિક્ત બે પ્રકારે છે-દ્રવ્ય કર્મ અને નો દ્રવ્ય કર્મ, તેમાં દ્રવ્યકર્મ તે કર્મ વર્ણનાના અંદર રહેલા પુદ્ગલો જે બંધને યોગ્ય, અને વંધાતા અને વાંધેલા જે ઉદીર્ણિમાં ન આવેલા હોય તે છેવાનો દ્રવ્યકર્મમાં કૃષીવલ (સ્વે-હુત.) વિગેરેનાં કર્મ જાણવાં (જેનાથી વીજા જીવોને દુઃખ થાય તેવાં સંસારી કૃત્ય અહીં છેવાં)

પશ્ચ—કર્મવર્ણનાની અંદર રહેલા પુદ્ગલો દ્રવ્યકર્મ છે એવું કહ્યું તે વર્ણના કદ્દ છે ?

ઉત્તર—સામાન્ય રીતે વર્ણના ચાર પ્રકારની છે, દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ અને માત્ર, એમ ચારખેદ છે. તેમાં દ્રવ્યથી એક બે વિગેરેથી

संख्येय, असंख्येय, अनंत, प्रदेशवाली छे. तथा क्षेत्रधी जे क्षेत्र प्रदेशमां अवगाढ करी रहेल द्रव्यना एक वेशी संख्येय, असंख्येय, प्रदेशरूप क्षेत्र प्रदेशो जेनाथी रोकाम, ते क्षेत्र वर्णणा छे, अने काळधी एक वेशी मांडीने संख्येय, असंख्येय, समय स्थितिमां रहल वगणा लेवी अने भावधी रूप, रस, गंध, स्पर्श, तथा तेनी अंदर रहेला भेदोरूप सामान्यधी भाव वर्णणा जाणवी, अने विशेषी हवे कहे छे.—

(१) परमाणुओनी एक वर्णणा छे. एज प्रमाणे एक एक परमाणुना उपचय (वधारा) थी संख्येय प्रदेशवाला स्कंधोनी संख्येय वर्णणाओ छे. तेज प्रमाणे असंख्येय प्रदेशवाला स्कंधोनी असंख्येय वर्णणा जाणवी आ वर्णणाओ औदारिक विगरे परिणामने योग्य थइ सकती नथी तथा अनंत प्रदेशनी बनेली अनंती वर्णणाओ पण ग्रहण योग्य नथी. तेवी वर्णणाओने उलंधीने औदारिक ग्रहण योग्य थाय छे. ते अनंती अनंत प्रदेशरूप अनंती वर्णणाओज छे एटले पूर्व कहेली अयोग्य उत्कृष्ट वर्णणानी अंदर 'एक' एक मेळववाथी औदारिकशरीर ग्रहण योग्य जघन्य वर्णणाओ थाय छे एय एक एक प्रदेश वधारतां वधेली औदायिक योग्य उत्कृष्ट वर्णणा ज्यांसुधी अनंती थाय त्यांसुधी लेवी.

प्रश्न—जघन्य उत्कृष्टानो भुं भेद छे ?

उत्तर—जघन्यधी उत्कृष्ट विशेष अधिक छे, तेमां विशेष आ छे के औदारिक जघन्य वर्णणानो अनंतसो भाग जे छे तेना अनंता परमाणुपणाथी एक एक प्रदेशना उपचय थएथी औदारिक योग्य वर्णणानो जघन्य उत्कृष्ट मध्यवर्तीनी वर्णणाओदुं अनं-

तपणुं छे, तेमां औदारिक योग्य उत्कृष्ट वर्णामां एकरूप (संख्या) उमेरवाथी अयोग्य वर्णना जघन्य थाय छे. ए प्रमाणे एक एक प्रदेश वथतां उत्कृष्ट अंतवाकी अनंती थाय छे.

प्रश्न—एमां जघन्य उत्कृष्ट वर्णानो शुं विशेष छे ?

उत्तर—जघन्यथी असह्येय गुणी उत्कृष्टी छे, अने ते बहु प्रदेशपणाथी अने अति सूक्ष्म परिणामपणाथी औदारिकने अनंति वर्णना पण ते अग्रहण योग्य छे, तेम अल्प प्रदेशपणाथी अने बादर परिणामपणाथी वैक्रिय (शरीर) ने पण अयोग्य छे, ए प्रमाणे जेम जेम प्रदेशनो उपचय थाय; तेम तेम विश्रसा परिणामना वशथी वर्णनाओहुं अतिशय सूक्ष्मपणुं जाणहुं; तेज उत्कृष्ट उपर एकरूप नाखवाथी योग्य अयोग्य विनोरे वैक्रिय शरीर वर्णनाओहुं जघन्य उत्कृष्टहुं विशेष लक्षण जाणहुं; तथा वैक्रिय—आहारक ए वन्नेना वचमां रहेली अयोग्य वर्णनाओहुं जघन्य उत्कृष्ट विशेष असंख्येय गुणपणुं छे वकी पूर्वे कखा प्रमाणे अयोग्य वर्णना उपर एकरूपना प्रक्षेपथी जघन्य आहारक शरीर योग्य वर्णनाओ थाय छे. ते प्रदेश दृद्धिथी वथतां उत्कृष्ट अनंत सुधी थाय छे.

प्रश्नः—जघन्य उत्कृष्टहुं केदछुं अंतर छे ?

उत्तरः—जघन्यथी उत्कृष्ट विशेष अधिक छे.

प्रश्नः—विशेष केदलो छे ?

उत्तरः—जघन्य वर्णनानोज अनंत भाग छे, तेहुं पण अनंत परमाणुपणुं होवाथी आहारक शरीर योग्य वर्णनाओहुं प्रदेश उत्तरथी वथती वर्णनाओहुं पण अनंतपणुं छे, ते उत्कृष्ट वर्णनामांज एकरूप उमेरवाथी जघन्य आहारक शरीरने अयोग्य वर्णनाओ थाय

હે ત્યારપછી પ્રદેશ દ્વિદિષ વધતી ડયાંસુધી ઉત્કૃષ્ટ અનંત થાય; ત્યાંસુધીજ આહારકશરીરના સૂક્ષ્મપણાથી અને વહુ પ્રદેશપણાથી તેને અયોગ્ય વર્ગાઓ છે, તેમ વાદરપણાથી અને અલ્પ પ્રદેશપણાથી તૈજસ શરીરને પળ અયોગ્ય છે.

પ્રશ્ન:—જયન્યઉત્કૃષ્ટને અર્ધી કેટલું અંતર છે ?

ઉત્તર—જયન્યથી ઉત્કૃષ્ટ અનંતગુણા છે.

પ્રશ્ન—કયા ગુણાકાર વદે ?

ઉત્તર—અમવ્યથી અનંતગુણા અને સિદ્ધથી અનંતમે ભાગે છે.

તેના ઉપર એકરૂપ નાત્વવાથી તૈજસ શરીરને યોગ્ય વર્ગાણા જયન્ય છે, તે પ્રદેશદ્વિદિષ વધતી ઉત્કૃષ્ટસુધી અનંતી થાય છે.

પ્રશ્ન—જયન્ય ઉત્કૃષ્ટનું અંતર કેટલું છે !

ઉત્તર—જયન્યથી ઉત્કૃષ્ટ વિશેષ અધિક છે, અને વિશેષ તે જયન્ય વર્ગાણાનો અનંત ભાગ છે, તેને પળ અનંત પ્રદેશપણું હોવાથી જયન્ય ઉત્કૃષ્ટની વચમાં રહેલી વર્ગાણાઓનું અનંતપણું છે, તૈજસની ઉત્કૃષ્ટ વર્ગાણાના ઉપર એકરૂપ નાત્વવાથી વધેલી જે વર્ગાણા તે તૈજસ શરીરને અગ્રહણ યોગ્ય થાય છે એમ એક એક પ્રદેશ વધતાં ઉત્કૃષ્ટ અંતવાલી અનંતી વર્ગાણાઓ છે, તે તૈજસ શરીરને તેના જયન્ય ઉત્કૃષ્ટનું અનંત ગુણપણાથી વિશેષ છે અને તે ગુણાકાર અમવ્યથી અનંતગુણા અને સિદ્ધોથી અનંતમે ભાગે છે તે અયોગ્ય ઉત્કૃષ્ટ વર્ગાણામાં એકરૂપ નાત્વવાથી જયન્ય ભાષા દ્રવ્યવર્ગાણા થાય છે, તેની પળ પ્રદેશ દ્વિદિષ ઉત્કૃષ્ટ વર્ગાણા સુધી અનંત

स्थान छे. जवन्य उत्कृष्टनु विशेष आ छे, जवन्य वर्णाना अनंतमेभागे अधिक उत्कृष्ट वर्णना छे. अहीआं पण अनंत भागनुं अनंत परमाणुपणुं जाणवुं तेषी आ एक विगेरे प्रदेश दृष्टिना प्रक्रमथी अयोग्य वर्णनाओनुं जवन्य उत्कृष्टपणुं विगेरे जाणवुं. अहीआं विशेष आटछुं छे के जवन्य उत्कृष्टनो भेद अहीआं अभव्यथी अनंतगुणो अने सिद्धोथी अनंतमे भागे छे, ते वर्णनाओनुं पण पूर्व हेतु कदंबक (समूह) थी भाषा द्रव्य अने आनापान (धासोच्छवास) द्रव्यनुं अयोग्य पणुं जाणवुं. अने अयोग्य उत्कृष्ट वर्णनामां एक रूप नांखेथी आनापान वर्णना जवन्य थाय छे. तेनाथी एक एक रूपे वधतां उत्कृष्ट वर्णनाओना अंतवाली अनंती थाय छे. जवन्यथी उत्कृष्टा जवन्यथी अनंत भाग अधिक जाणवा तेना उपर एक रूप वधतां जवन्य उत्कृष्ट भेद वडे अग्रहण योग्य वर्णना छे. पण विशेषमां अभव्योथी अनंत गुण अने सिद्धोथी अनंतमे भागे छे. फरीथी अयोग्य उत्कृष्ट वर्णना उपर प्रदेशथी मांडीने दृष्टि करतां जवन्य उत्कृष्ट भेदवाली मनोद्रव्य वर्णना छे. जवन्य वर्णानो अनंतमो भाग विशेष छे. फरीथी प्रदेशना वधता क्रमथी अग्रहण वर्णना छे. विशेषमां अभव्यनो अनंत गुण विगेरे छे. अने ते वर्णनाओ प्रदेशना बहु पणाथी अने अति सूक्ष्म पणाथी मनोद्रव्यने अयोग्य वर्णनाओ छे, तथा अल्प प्रदेशपणाथी अने बादरपणाथी कार्मर्ण शरीरने पण अयोग्य छे, तेना उपर एक रूप नांखेथी जवन्य कार्मर्ण शरीरनी वर्णना छे, वकी एक एक प्रदेशनी दृष्टि करतां उत्कृष्ट अनंत सुधी छे.

प्रश्न—जवन्य उत्कृष्टनो भुं विशेष छे. ?

उत्तर—जवन्य वर्णानो अनंतमो भाग अधिक ते उत्कृष्ट वर्णना छे, अने ते अनंत भाग अनंता अनंत परमाणुरूप होवाथी

अन्त भेदशी भिन्न कर्म द्रव्यनी वर्णणाओ छे, अने अहीं तेमनुं प्रयोजन छे. कारण के द्रव्य कर्मना व्याख्याननी अहीं बात चाले छे, अने हवे पछीनी वर्णणाओ क्रमे आवेली छे, ते शिष्यना उपर उपकारनी बुद्धिशी कहेवाय छे.

वली उत्कृष्ट कर्मवर्णणा उपर एक रूप नांखवाथी जघन्य उत्कृष्ट भेदशी भिन्न ध्रुव वर्णणा छे, ते जघन्यथी उत्कृष्टी सर्व जी-वोर्था अन्त गुणी छे, तेना उपर एक रूप नांखवाथी क्रमवदे अनंतीज जघन्य उत्कृष्ट भेदवाली अध्रुव वर्णणा छे. अध्रुव पणाथी अध्रुव छे, कारण के तेना विरुद्ध पक्षवाली ध्रुवना सद्भावथी तेनुं अध्रुवपणुं छे. अहीं जघन्य उत्कृष्टनो भेद हमणा उपर कहेलो तेज छे—ते उत्कृष्टना उपर एक एकनी वृद्धि करतां जघन्य उत्कृष्ट भेदवाकी अनंतीज शून्य वर्णणाओ थाय छे, अने जघन्य उत्कृष्टनो विशेष पूर्व माफक छे. तेओनो संसारमां पण अभाव छे, तेथी तेनुं नाम शून्यवर्णणा राख्युं छे. तेमां एम कहुं छे के:—अध्रुववर्णणाना उपर प्रदेशनी वृद्धिए अनंतीनो पण संभव थतो नथी. एवी प्रथम शून्यवर्णणा छे. तेना उपर एकरूप विगेरेनी वृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाकी मत्येक शरीरनी वर्णणा थायछे. जघन्यथी क्षेत्रपत्योपमना असंख्येय भागना प्रदेश जेटला गुणी उत्कृष्ट छे, तेना उपर एक एकरूपनी वृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाकी अनंतीज शून्य वर्णणाओ थाय छे.

जघन्य वर्णणाथी उत्कृष्टी असंख्य भाग प्रदेशगुणी छे, तेनो असंख्येय भाग पण असंख्येय लोकाकाशरूप छे. आ प्रमाणे बीजी शून्यवर्णणा छे, तेना उपर एकरूपादि वृद्धिए बादर निगोद शरीरनी वर्णणा जघन्यथी छे, अने क्षेत्र पत्योपमना असंख्येय भाग प्रदेश-गुणी उत्कृष्टी छे, तेना उपर एकरूप विगेरेनी वृद्धिथी जघन्य उत्कृष्ट भेदवाकी बीजी शून्यवर्णणा छे. जघन्यथी असंख्येय गुणी उत्कृष्टी छे.

प्रश्नः—गुणाकार कयो छे ? उत्तरः—आंगळना असंख्येय भाग प्रदेशनी राशिना आवलिका काळना असंख्येय भाग समय प्रमाणे वारंवार वर्गमूळना करवाथी असंख्येय भाग प्रदेश प्रमाणे छे, तेना उपर एक एकरूपनी वृद्धि जवन्य उत्कृष्ट भेदवाळी सूक्ष्म निर्गोद शरीरनी वर्गणा छे, जवन्यथी उत्कृष्टि आवलिकाना काळना असंख्येय भाग समयना गुणाकार जेटली छे.

तेना उपर एक एक रूपनी वृद्धि जवन्य उत्कृष्ट भेदवाळी चोथी शून्यवर्गणा छे. जवन्यथी उत्कृष्टी चोखुणो करेलो लोकनी असंख्येय श्रणिओ जेटली छे, अने ते प्रतरना असंख्येय भाग बराबर छे, तेना उपर एक एकरूपनी वृद्धि जवन्य उत्कृष्ट भेदवाळी महास्केय वर्गणा छे, जवन्यथी उत्कृष्ट क्षेत्र पत्योपमना असंख्येय अथवा संख्येयगुणा छे.

आ प्रमाणे संक्षेपथी वर्गणाओ कही छे, विशेष जाणवा इच्छनारे कर्मप्रकृति नामनो ग्रंथ जोवो जोइए,

हवे प्रयोग कर्म कहे छे—वीर्यांतरायना क्षय उपश्रमथी पगट थएल वीर्यावाला आत्माथी प्रकर्ष करीने योनाय ते प्रयोग छे. ते मन वचन अने कायाना लक्षणवालो पंदर प्रकारे छे तेनी विगत.

मन योगमां—सत्य, असत्य, मिश्र, तथा न सत्य न असत्य एम चार प्रकारे छे, तेमज वचन योग पण चार प्रकारे छे अने काया योग सात प्रकारे छे, ते वतावे छे. (१) औदारिक (२) औदारिक मिश्र (३) वैक्रिय (४) वैक्रिय मिश्र (५) आहारक (६) आहारक मिश्र (७) कार्मण योग एम पंदर भेद थया तेमां मनयोग मनपर्यासिथी पर्यास थएला मनुष्य विगोरेने छे. वचन योग—वे इन्द्रिय विगोरे जीवोने छे. औदारिक योग तिर्यच तथा मनुष्यने शरीर पर्यासिनी पछीथी छे. त्यार पहलां मिश्र जाणवो अथवा

કેવલી ભગવંતને સમુદ્ઘાતની અવસ્થામાં વીજા છઠ્ઠા અને સાતમા સમયમાં છે. વૈક્રિયકાય યોગ દેવ નારક અને વાદર વાયુકાયને છે, અથવા વીજા કોઈ વૈક્રિય લ્થિવાલાને હોય છે. તેનો મિશ્ર યોગ દેવતા નારકિને ઉત્પત્તિ સમયે છે અથવા નહું વૈક્રિય શરીર બનાવનાર વીજાને પળ હોય છે, આહારક યોગ ચૌદ પૂર્વી સાધુ યારે આહારક શરીરમાં સ્થિત હોય છે ત્યારે છે અને તેનો મિશ્ર-યોગ નિર્વર્તના (બનાવવા) ના કાલમાં હોય છે.

કાર્મણ યોગ—વિગ્રહ ગતિમાં અથવા કેવલિ સમુદ્ઘાતમાં ત્રીજા ચોથા પાંચમા સમયમાં છે.

આ પ્રમાણે પંદર પ્રકારના યોગવદે આત્મા આઠ પ્રદેશને છોડીને તપેલા વાસણમાં ઉછકતા પાળીની માફક ઉદ્વર્તમાન સર્વ આરથાના પ્રદેશોવદે આત્મા પ્રદેશની અવબ્ધવ આકાશ ભાગમાં રહેલ કાર્મણશરીરને યોગ્ય કર્મદલને જે વાંધે છે તેને પ્રયોગકર્મ કરે છે. કહું છે કે—

“ જાવ ણં એસ જીવે એયં, વેયં, ચલં, ફંદર્યાદિ તાવ ણં અદ્વિહંધમ્, વા સત્ત્વિહંધમ્, વા હ્વિહંધમ્ વા ણગ્વિહંધમ્, વા નો ણં અંધમ્ ” ।

ડયાં સુધી આ જીવ હાલે છે. વધારે હાલે છે. ચાલે છે. ફરકે છે. ત્યાં સુધી આઠ પ્રકારના કર્મનો વંધક સાત પ્રકારના છ પ્રકારના અથવા એક પ્રકારના પળ કર્મનો વંધક છે, પળ તે અંધક હતોજ નથી.

સમુદાન કર્મ—(સમુદાન શબ્દની ઉત્પત્તિ સં. તથા આ ઉપસર્ગ સાથે દા. ધાતુ જે દેવાના અર્થમાં છે, તેનું લ્યુટ અંતથી પુષોદર વિગેરે

પાઠ વહે આકારનો ઉકાર આદ્રેશ થવાથી સમાદાનને વદહે સમુદાન શબ્દ યંયો છે.) તેમાં પ્રયોગ કર્મવહે એક રૂપ પણે ગ્રહણ કરેલી કર્મ વર્ણનાઓની સમ્યક્ મૂલ ઉત્તર પકૃતિ સ્થિતિ અનુભાવ અને પ્રદેશ વંધવાલા મેદવહે આ ઉપસર્ગ (જેનો અર્થ મર્્યાદા છે તે.) વહે દેશ (થોડો) સર્વ ઉપઘાતી રૂપ વહે તેજ પ્રમાણે સ્પૃષ્ટ નિશ્ચિત્ત નિકાચિત્ત ઈવી ત્રણ અવસ્થા વહે જે સ્વીકાર કરવો તેજ સમુદાન છે, અને તે કર્મનું નામ સમુદાન કર્મ છે.

તેમાં મૂલ પકૃતિનો વંધ જ્ઞાનઆવરણીય વિગેરે આઠ પ્રકારે છે, અને ઉત્તર પકૃતિનો વંધ જુદો જુદો છે, તે વતાવે છે. જ્ઞાન આવરણીયના પાંચ મેદ છે. મતિ શ્રુત અવધિ મનપર્યાય તથા કેવલ એમ પાંચ મેદે જ્ઞાન છે. તેનું આવરણ કરનાર સર્વ ઘાતી પ્રકૃત કેવલજ્ઞાનનું છે.

અને વાકીના ચારનાં આવરણ દેશઘાતિ અથવા સર્વઘાતિ છે. દર્શનાંવરણીય કર્મ નવ પ્રકારે છે. તેમાં પાંચ પ્રકારની નિદ્રા તથા ચાર પ્રકારનું દર્શન. તેને આવરણ કરનાર જાણવું. નિદ્રા રંચક છે. તે મેલ્લવેલા દર્શનની લલિધ તેના ઉપયોગને ઉપઘાત કરનાર છે, અને દર્શન ચતુષ્ટય તે દર્શનલલિધની પ્રાપ્તિનેજ આવરણ કરનાર છે. અહીંયાં પણ કેવલ દર્શનઆવરણ સર્વઘાતિ છે. વાકીના દેશથી છે.

વેદનીયકર્મ, સાતા અને અસાતા એમ બે મેદે છે. મોહનીયકર્મ, દર્શનચરિત્ર મેદથી બે પ્રકારે છે. તેમાં દર્શનમોહનીય મિથ્યાત્વાદિ ઉદયમાં આવતું ત્રણ મેદે છે, અને વંધમાં તો એક પ્રકારે છે.

चारित्रमोहनीय सोळ कषाय, तव नोकषाय एम पक्षीस प्रकारे छे.

अर्हियां पण मिथ्यात्व, मोहनीय, तथा संज्वलन कषाय छोडीने चार कषायो सर्वघाति छे, अने बाकीना देशघाति छे.

आयुष्यकर्म चार प्रकारे छे. ते नारकादि भेदवाळां छे. नामकर्म वेताळीस भेदे छे, तेमां गति विगोरे भेद छे. वाळी उत्तर पकृतिशी ताणुं (९३) भेद छे, तेनो खुलासो कहे छे. गति नारक; विगोरे चार भेदे छे. जाति एकेन्द्रिय विगोरे पांच छे. शरीसो औदारिक विगोरे पांच छे. औदारिक वैक्रिय, अने आहारक. एम त्रण शरीरनां अंगोपांग त्रण छे.

निर्माणनाम सर्वजीव शरीरनां अत्रयत्रुं निष्पादक (वनावनार) होवाशी एक प्रकारे छे.

बंधननाम औदारिक विगोरे कर्मवर्णाणां एकपणुं करनार पांच प्रकारे छे, तथ संघातनाम औदारिक विगोरे कर्मवर्णाणी रचना विशेषकरीने स्थापनार ते पांच प्रकारे छे. संस्थाननाम समचतुरस्र (बधी वाजु सरसुं) विगोरे छ प्रकारे छे.

संहनननाम वज्ररुपभनाराच विगोरे छ प्रकारे छे. रसार्था आठ प्रकारे छे. रस पांच प्रकारे छे. गंधवे प्रकारे छे अने वर्ण पांच प्रकारे छे—
अनुपूर्वी नारक विगोरे चार प्रकारे छे.

विहायोगति प्रशस्त तथा अपशस्त एम वे भेदे छे. अशुक्लधु उपघात पराघात आतप उद्योत उच्छ्वास मरत्येक साधारण त्रस स्थावर शुभ अशुभ सुभग दुर्भग सुस्वर दुःस्वर सूक्ष्म वादर पर्याप्तक अपर्याप्तक स्थिर अस्थिर आदेय अनादेय यज्ञ कीर्ति अपयज्ञ कीर्ति तीर्थकरनाम आ बधी पकृतिओ दरेक एकज प्रकारनी छे (आनु वधारे वर्णन पहेला कर्म ग्रंथमां नाम कर्मनी पकृतिमांजुओ)

गोत्र कर्म—ते उंच अने नीच एम वे भेदे छे.

अंतराय कर्म—दान, लाभ, भोग उपभोग, वीर्य एम पांचने अंतराय करनार पांच भेदे छे. आ प्रमाणे मूळ तथा उत्तर प्रकृति बंधनो भेद वलाव्योछे.

हवे प्रकृतिबंधना कारणो वलावे छे.

“ पडिणीयसंतराइय उवघाए तएओस णिणहवणे ॥ आवरणहुंगं बन्धइ भूओ अच्चासणाए य ॥ १ ॥

ज्ञानआवरणहुं तथा दर्शनआवरणहुं कर्म केम बांधे ते वलावे छे. ज्ञान भणनारहुं ब्रह्मणुं करे, अंतराय करे उपघात करे, द्वेष करे भणावनारनो गुण भूले अथवा ज्ञानी अथवा ज्ञाननी आशातना (निंदा) करे ज्ञान दर्शन ए बन्ने प्रकारहुं आवरण बंधाय छे. भूयाणुकंपवयजोगउज्जुओ खंतिदाणगुरुमत्तो । बंधइ भूओ सायं विवरीए बंधई इयरं ॥ २ ॥

जीवोनी दया व्रतयोगमां उद्यम करे क्षमा राखे दान आपे सद्गुरुनो भक्त होय आवो जीव सातावेदनीय कर्म बांधे, अने तेनाथी उलटो एटले जीव हिंसा करनार विगेरे दुर्गुणवाळो जीव असातावेदनीयकर्म बांधे.

अरहंतसिद्धचेइयतव सुअगुरुसाधुसंधपडिणीओ । बन्धइ दंसणसोहं अणंतसंसारिओ जेणं ॥ ३ ॥

तीर्थंकर सिद्ध चैत्य, तप, श्रुत, गुरु, साधु, संग आज्ञे धर्मना पोषको छे तेमनो मत्तनीक (ब्रह्म) थाय तो ते पापवढे दर्शन मोहनीयकर्म अने अनंत संसार अमणहुं कर्म बांधे.

तिव्वकसाओ बहुमोह परिणतो रागदोससंजुत्तो । बंधइ चरितमोहं दुविहंपि चरितगुणघाई ॥ ४ ॥

तीव्र कषायवालो (घर्षो क्रोधो विभेरे) बहु मोहवालो रागद्वेषथी भरेलो ते जीव वने प्रकारनो चारित्र मोह जे चारित्र गुणनो घातक छे तेने बांधे छे.

मिच्छद्विद्वी महारंभपरिमगहो तिवलोभ णिरसीलो । निरआउयं निबंधइ पावमसी रोइपरिणामो ॥ ५ ॥

मिथ्याहृष्टि महान आरंभ परिग्रहवालो, घर्षो लोभोनिःशील, (दुराचारी.) जीव पापनी बुद्धिवालो होवाथी तथा मनमां रौद्र (दुष्ट) परिणामवालो होवाथी नरकनुं आयुष्य बांधे छे—

उरुमगदेसओ मगणासओ गूढहियय माइह्यो । सढसीलो, अ ससह्यो, तिरिआउं बंधई जीवो ॥ ६ ॥

उन्मार्ग (कुमार्ग) मां दोरनार सुमार्गनो नाशक गूढ हृदयवालो, कपटी शठता करनारो, बल्यवालो ते जीव तिर्यंचनुं आयुष्य बांधे छे. पगतीए तणुकसाओ द्राणरओ सीलसंजमविहूणो । मडिसमगुणेहिं जुत्तो, मणुयाउं बन्धई जीवो ॥ ७ ॥ स्वभावथीज क्रोधादि ओछा होय, दानमां रक्त होय, शील संयममा ओछाशवालो होय, मध्यम गुणे करीने युक्त होय, ते जीव मनुष्यनुं आयुष्य बांधे छे.

अणुवयमहवएहि य बालतवोऽकामनिजराए य । देवाउयं णिबंधइ, सममद्विद्वी उ जो जीवो ॥ ८ ॥

अणुव्रत, महाव्रत, पाले, तथा बाल तप करे—अकामनिर्जरा करे अने सम्यक् दृष्टि होय. ते जीव देवनुं आयुष्य बांधे छे—

मणवयणकायवंको माइह्यो गारवेहिं पडिवह्यो । असुभं बंधइ नामं तएपडिपकवेहिं सुभनामं ॥ ९ ॥

मन वचन कायाथी वक्र होय, अहंकारमां चहेलो होय. आ दुर्गुणोथी अशुभनामकर्म बांधे छे, अने तेनाथी उलटो एटले मन वचन कायाथी सरळ होय, निष्कपट होय; एवा महगुणवाळो शुभनाम कर्म बांधे छे.

अरिहंतादिसु भक्तो सुतरई पयणुमाण गुणपेही । बन्धइ उच्चागोयं विवरीए बन्धई इयरं ॥ १० ॥

जिनेश्वर विगरे पंच परमेषुिनो भक्त होय; सूत्र भणवानी रूचीवाळो होय; अहंकारी न होय; गुणोना रागी होय; ते उंच गोत्र बांधे छे. अने तेनाथी उलटा गुण (दुर्गुणवाळो) नीच गोत्र बांधे छे.

पाणवहादीसु रतो, जिणपूयामोक्खमगविभवयरो । अजेइ अंतरायं, ण लहइ जेणिल्लयं लामं ॥ ११ ॥

पाणवध (जीवहिंसा) विगरे पापमां रक्त जिनेश्वरनी पूजा तथा मोक्षमार्गनां जे कृत्य तेमां विघ्न करनारो होय; ते अंतराय कर्म बांधे छे, अने ते कर्मना प्रतापथी इच्छित वस्तु मेळवतो नथा.

स्थितिवन्ध—मूळ अने उत्तर प्रकृतिओतो उत्तुष्ट अने जघन्य (सौथी थोडो) एवा बे भेद छे, तेमां छत्कृष्टथी मूळ प्रकृति ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय वेदनीय अंतराय ए चार कर्मनी ३३ कोडाकोडी सागरापम स्थिति छे. अने जेटली कोडाकोडी स्थिति होय; तेदला सेकडा वर्षो सुधी अवाधा होय; त्यारपडी प्रदेक्षथी अथवा विपाकथी कर्मनो अनुभव (भोगवधुं) थाय ए प्रमाणे दरेक कर्मनी स्थितिमां जाणवुं.

मोहनीयकर्मनी ७० कोडाकोडी सागरोपम છે. નામ અને ગોત્રની ૨૦ કોડાકોડી સાગરોપમ છે. આયુષ્યકર્મની ફક્ત ૩૩ સા-
ગરોપમની છે, તેમાં પૂર્વકોડીનો ત્રીજો ભાગ અનાથા કાઠ છે.

હવે જયન્યથી કહે છે—જ્ઞાનદર્શનનાં, આવરણ, મોહનીય, અંતરાય, ए चार कर्मना जयन्यवन्धनी स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी છે. નામ-
ગોત્રની આઠ સુહર્તની છે વેદનીયકર્મની ૧૨, અને આયુષ્યની જે સૌથી શુદ્ધક (નાનો) ભવ છે—તે નિરોગી મનુષ્યના ધ્વાસોધાસના
કાઠના લગભગ ૧૭મે ભાગે છે. (શુવાન માણસના एम ध्वासोधासमां निगोदना जीवना ૧૭ ભવ લગભગ થાય છે.) હવે વદને ઉ-
ત્ક્રુષ્ટ જયન્ય વન્ધને ઉત્તર પ્રકૃતિ આશ્રયી કહે છે.

મતિ શ્રુત અવધિ મનઃપર્યાય કેવલ આવરણ નિદ્રા પંચક ચશુ દર્શન વિગેરે ચતુષ્ક અસાતા વેદનીય તથા દાન અંતરાય વિગેરે
પાંચ આ વધીની ઇટલે ૨૦ ઉત્તર પ્રકૃતિની ૩૦ કોડાકોડી સાગરોપમ છે. સ્ત્રીવેદ સાતા વેદનીય મનુષ્ય ગતિ તથા અનુપુર્વી ए
चार प्रकृतिनी ૧૫ કોડાકોડી સાગરોપમ છે.

મિથ્યાત્વ મોહનીયની ૭૦ની છે. અને ૧૬ કથાયની ૪૦ કોડાકોડી સાગરોપમ છે.

(૧) નપુંશક વેદ (૨) અસ્તિ (૩) શોક (૪) મય (૫) જુગુપ્સા (૬) નરક (૭) તિર્યંચ ए वे गति तथा (૮) एकेन्द्रिय (૯)
પંચેન્દ્રિય જાતિ (૧૦) ઔદારિક (૧૧) વૈક્રિય શરીર તથા તે (૧૨-૧૩) વલ્લેનાં અંગોપાંગ તથા (૧૪) તૈજસ (૧૫) કાર્મણ (૧૬)
હુંદક સંસ્થાન (૧૭) હેહુ સંહનન (૧૮) વર્ણ, (૧૯) ગધ (૨૦) રસ. (૨૧) સ્પર્શ. (૨૨) નરક. (૨૩) તિર્યંચ અનુપુર્વી (૨૪)

अगुरुलघु(२५) उपघात [२६] पराघात [२७] उच्छ्वास [२८] आतप [२९] उद्योत. [३०] अपशस्त विहायोगति [३१] त्रस [३२] स्थावर [३३] वादर [३४] पर्याप्तक [३५] प्रत्येक [३६] अस्थिर [३७] अशुभ. [३८] दुर्भंग. [३९] दुःस्वर. [४०] अनादेय (४१) अयश कोर्ति,(४२) निर्माण. (४३) नीच गोत्र. ए प्रमाणे ४३ प्रकृतिनी २० कोडाकोडी सागरोपम छे.

(१) पुंवेद. (२) हास्य (३) रति (४) देवगति तथा (५) अनुपूर्वी ए वे तथा. ६, पहेछं संस्थान ७, संहनन ८, प्रशस्त विहायोगति ९, स्थिर १०, शुभ. ११, सुभग १२, सुस्वर १३, आदेय १४, यश कीर्ति १५, उंच गोत्र ए १५ उत्तर प्रकृतिनी १० कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे. न्यग्रोध संस्थान वीजुं संहनन ए वेनी १२ कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे.

त्रीजुं संस्थान नाराच संहनन ए वनेनी १४ तथा कुञ्ज संस्थान अर्धनाराच संहनननी १६ तथा १, वासन संस्थान २, क्रीलिका संहनन तथा ३, वे ४, त्रण ५, चार इन्द्रि जाति तथा ६, सूक्ष्म ७, अपर्याप्तक ८, साधारण ए ८ प्रकृतिनी १८, तथा आहारक शरीर तथा अंगोपांग तथा तीर्थकर नाम ए त्रणनी एक कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे. अने ते दरेकनी अवाधा भिन्न अंतर्मुहूर्त काळनी छे. देव नारकिनुं आयुष्य ३३ सागरोपम छे अने त्रिंयंच मनुष्यनुं आयुष्य त्रण पत्योपम छे. अने पूर्व कोडीनीो त्रीजो भाग अवाधा छे. आ प्रमाणे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध कह्यो.

हवे जपन्ध स्थितिवन्ध कहे छे—मति विगेरे ५ तथा चक्षु दर्शन आवरण विगेरे ४, संजवलन लोभ दानादिक अंतराय पंचक ए १५ प्रकृतिजो अंतर्मुहूर्त स्थिति बन्ध छे. अने अवाधा पण अंतर्मुहूर्त छे.

નિદા પંચક તથા અસાતા વેદનિય ૫ હરું એક સાગરોપમના સાતમા ભાગના ત્રણ લેવા ૧×૬) તે સાગરોપમથી પલ્યોપમનો અસંલ્યેય ભાગ ઓછો લેવો.

સાતા વેદનીપનો કાલ ૧૨ મુહુર્ત છે, અને અંતર્મુહુર્તની અવાધા છે. તથા મિથ્યાત્વની સાગરોપમમાં પલ્યોપમથી અસંલ્યેય ભાગ ઓછો લેવો.

પહેલા ૧૨ કષાય તે સાગરોપમના ઃ લેવા અને પલ્યોપમથી અસંલ્યેય ભાગ ઓછો લેવો.

સંજ્વલન ક્રોધની વે માસ છે. માનની એક માસ, માયાની અઢધો માસ; પુંવેદની આઠ વર્ષ સ્થિતિ છે. આ વધામાં અંતર્મુહુર્તની અવાધા છે. વાકીના કષાય મનુષ્ય તિર્થેચ ગતિ પન્વેન્દ્રિય જાતિ ઔદારિક તથા તેનાં અંગોપાંગ તથા તૈજસ કાર્મણ હ સંસ્થાન તથા સંહ-
નન વર્ણ, ગંધ, રસ. સ્પર્શ, તિર્થેચ, મનુષ્ય, અનુપૂર્વી, અશુરહુ, ઉપધાત, પરાધાત, ઉચ્છવાસ આતપ ઉદ્યોત, પ્રશસ્ત, અપશસ્ત વિહાયોગતિ, યશઃ કીર્તિ. હોડીને ત્રસ આદિ ૨૦ પશુતિ નિર્માણ નીચગોત્ર દેવગતિ અનુપૂર્વી. મલીને ૨ તથા નરકગતિ અનુપૂર્વી. ૨ વૈક્રિય શરીર તથા અંગોપાંગ ૫મ ૬૮ ઉત્તર પશુતિની સ્થિતિ ઃ સાગરોપમ અને પલ્યોપમનો અસંલ્યેય ભાગ ઓછો છે. તેમાં અંતર્મુહુ-
ર્તની અવાધા છે. વૈક્રિય પટ્કની હજાર સાગરોપમના ઃ ભાગ લેવા. તેમાં પલ્યોપમનો અસંલ્યેય ભાગ ઓછો છે. તેમાં અંતર્મુહુર્તની અવાધા છે. આહારક શરીર તેહું અંગોપાંગ તથા તીર્થેકર નામની સાગરોપમ કોટીકોટી સ્થિતિ છે. મિત્ર અન્તર્મુહુર્ત અવાધા છે.

પ્રશ્ન—ઉત્કૃષ્ટ પળ પટલીજ સ્થિતિ કહી ત્યારે જવન્ય સાથે તે શું ભેદ છે ?

उत्तर—उत्कृष्टी संख्येय, गुणहीन जघन्य छे. यश, कीर्ति तथा उंच गोत्र ए वनेनी स्थिति आठ मुहुर्त्त छे, अने अन्तर्मुहु-
र्त्तनी अवाधा छे. देव अने नारकिनुं आयुष्य, दशहजार वर्षनुं छे. अने अंतर्मुहुर्त्तनी अवाधा छे. तिर्यंच मनुष्यना आयुष्यनी स्थिति,
क्षुल्लक भव अने अंतर्मुहुर्त्तनी अवाधा छे. वन्यन, संयात, ए वनेनी औदारिक विगोरे शरीरनी साथे रहेवाथी तेनी अंदरज उत्कृष्ट ज-
गन्य भेद जाणवो स्थितिवन्य कहाो

हवे अनुभव वन्य कहे छे—तेमां शुभ, अशुभ, प्रयोग कर्मथी उत्पन्न थएल प्रकृति, स्थिति, अने प्रदेशरूप, कर्म प्रकृतिनुं तीव्र भेद
अनुभवपणे जे अनुभवाय (भोगवाय) ते अनुभव (रस) छे, ते रस एक बे त्रण चार स्थान भेद वढे जाणवो.

तेमां अशुभ प्रकृतिनुं कोपातकी ना उकाळला रस जेवो तेमां अडधो रहे. त्रीजो भाग रहे. चौथो भाग रहे ते अनुक्रमे तीव्र
अनुभव जाणवो. [कडवा पदार्थना रसने उकाळतां पाणी जेम ओलुं रहे तेम कडवास वधारे थाय छे, तेम अशुभ कर्मनुं दळ जेम
वधारे चीकणुं थाय तेम वधारे दुःख भोगववुं पडे छे.]

हवे भेद अनुभव कहे छे—भेद रसनो अनुभव ते जाइ [फुल] रसमां एक बे त्रण चारराणुं पाणी वधारे नाखवाथी रसनी सुगंधी
ओली थइ जाय छे, ते प्रमाणे कर्मनी पण चीकणस ओली होय तो ओलुं दुःख भोगववुं पडे छे.

शुभ प्रकृतिनो रस दुध तथा शेरडीना रस जेवो मीठो जाणवो. तेमां पण पूर्व माफक योजना करवी, एटले कोषातकी तथा
शेरडीना रसमां पाणीनुं एक बिंदु विगोरे नाखवाथी अथवा रस वधारे नाखवाथी तेना भेदोनुं अनंतपणुं जाणवुं. अहीं आयुष्यमां

चार प्रकृतिओ भवविपाकीनी छे. (ते भवमां गया पछी भोगवाय छे. तथा चार अनुपूर्वीओ क्षेत्रविपाकीनी छे.) तें क्षेत्रोमां जतां उदयमां आवे छे.

शरीर, संस्थान, अंगोपांग, संघात, संहनन, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, उद्योत, आतप, निर्माण, म-त्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ तथा अशुभ रूपवाळी छे, ते वधीए पुद्गलविपाकीनी छे, अने बाकीनी ज्ञान आवरण विगेरे जीवविपाकीनी छे, एम अनुभाव बंध कसो.

हवे प्रदेशबंध कहे छे—ते एक प्रकार विगेरे बंधकनी अक्षेपाए थाय छे, तेमां कोइ एक प्रकारे कर्म बांधे, ते बरवते प्रयोग कर्म वढे एक समयमां ग्रहण करेला पुद्गलओ सातावेदनीयना भाववढे विशेषे करीने परिणमे छे, पण छ प्रकारनुं कर्म बांधनारने आयुष्य तथा मोहनीयकर्म छोदीने छ कर्मनो बंध जाणवो; तथा सात प्रकारे बांधनारने आयुष्य छोदीने सात प्रकारे जाणवो; तथा आठ प्रकारनां कर्म बांधनारो ते आठ प्रकारे जाणवो; तेमां पहैला समयमां ग्रहण करेलां पुद्गलो समुदानवढे, बीजा विगेरे समयमां अल्प बहुप्रदेशपणे आ कर्मवढे स्थापे छे.

तेमां आयुष्यनां थोडां पुद्गलओ छे, तेथी विशेष अधिकनाम गोत्रना प्रत्येकना छे, ते बने (वरावर) दुल्य छे, तेथी विशेष अधिक ज्ञानदर्शन—आवरणना तथा अंतरायना देरेकना छे, तेथी विशेष अधिक मोहनीयकर्मना छे.

प्रश्नः—तेथी विशेष अधिक एम निर्द्धारणमां पांचमी विभक्ति छे, ते पा. २-३ ४२ सूत्र प्रमाणे कराय छे, एटखे एनो अर्थ

ણવો છે કે, વિભાગ તે વિષત્ક તેમાં પાંચમી વિષત્કિ લેતાં; જેમાં અત્યંત વિભાગ હોય; તેમાંજ થાય છે. જેમકે મથુરા નગરીના ર-
હેવાસીથી પાટલીપુત્રના રહેવાસી વધારે સ્વવાલા છે, પણ અહીં કર્મ પુદ્ગલોતું સદા એકપણું છે, તે પ્રમાણે અવસ્થાઓનુંજ બુદ્ધિ પ્રમાણે
બહુપદેશ વિગેરેના ગુણવહે પ્રથક્ કરવાતું વતાવ્યું; તેમાં છટ્ટી અથવા સાતમી વિષત્કિ વાપરવી ઠીક છે. જેમકે ગાયોના અથવા
ગાયોમાં આ કાલી ગાય વધારે દુધવાલી છે.

ઉત્તર:—તમે વતાવેલો દોષ ચંરાવર નથી. જેમાં અવધિ (મર્યાદા) અને અવધિવાલો સામાન્યવાચક શબ્દ યોજીય, ત્યાં છટ્ટી
સાતમી વિષત્કિ હોય છે, અને જ્યાં નિર્દારિણ પાં. ૨-૩-૪ આ સૂત્રવહે કરાય છે. જેમ ગાયોમાં કાલી ગાય સૌથી વધારે દુધવાલી
છે. મનુષ્યમાં પટનાના રહેવાસી વધારે પૈસાદાર છે. તેમ કર્મવર્ગણાના પુદ્ગલો વેદનીયકર્મમાં વહુ વધારે છે, પણ જેમાં વિશેષ
વાચીશબ્દ અવધિપણે લક્ષ્ય ત્યાં પાંચમી વિષત્કિજ વપરાય જેમકે—સંહ, મુંહ, શબલ, શાબલેય, ધવલ ધાવલેય આ વ્યત્કિઓથી
કાલી ગાય વધારે દુધવાલી છે. અહીંયાં તેવો વિભાગ પોતે કારણ નથી અથવા વિભાગ વિના છે. જેથી મથુરા પાટલીપુત્રકાદિ વિ-
ભાગ વહે વિષત્કોતું સામાન્ય મનુષ્ય વિગેરે શબ્દ ઉચ્ચારણમાં છટ્ટી સાતમી વિષત્કિ થાય છે. પણ જ્યાં મથુરાના રહેવાસી વિગેરેમાં
કાંઈ પણ વિશેષ અવધિપણે લેવાય તેમાં કાર્યવશથી એક સ્થાનમાં પણ પાંચમી વિષત્કિજ લેવાય, તેજ પ્રમાણે અહીંયાં કર્મવર્ગણાના
એકપણામાં તેના વિશેષના અવધિપણે ઉપાદાન કરવાથી પાંચમીજ વિષત્ક યોગ્ય છે. તેથી વિશેષ અધિક વેદનીયમાં છે. આ પ્રમાણે
પદેશવંધ કહ્યો. તથા સમુદાન કર્મ પણ કહ્યું.

हवे इर्थापथिक कहे छे—इर, धातुनो अर्थ गति अने प्रेरणा छे, अने भावमां य प्रत्यय लागवाथी स्त्रीलिंगे इर्था शब्द थाय छे, तेनोपंथ ते इर्था पंथ छे तेनो आश्रय थाय ते इर्थापथिक जाणवी. प्रश्न—इर्थानो रंथ क्यो छे ! के जेने आश्रयी पथिकी थाय छे ? उत्तर—आ व्युत्पत्ति (उत्पन्न भवाने) निमित्त छे कारण के ते उभा रहेनारने पण थाय छे. पण प्रवृत्ति निमित्त तो स्थितिनो अभाव छे, अने ते उपशान्त क्षीणमोह तथा सयोगीकेवलीने होय छे कारण के संयोगीकेवलीओ बठेला होय तोपण निश्चयथी सूक्ष्म गोत्रना संचारवाला होय छे.

“केवली णं भंते ! अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हरथं वा पायं वा ओगाहिता णं पडिसा-
हरेजा, पभु णं भंते ! केवली तेसु चेवागासपदेसेसु पडिसाहरित्तए ? णो इणढे समढे, कहं ?, के-
वलिरसणं चलाइं सरीरोवगरणाइं भवंति, चलोवगरणत्ताए केवली णो सञ्जाएति तेसु चेवागा स-
पदेसेसु हरथं वा पायं वा पडिसाहरित्तए”

प्रश्न—हे भगवंत ? जे समयमां केवलज्ञानीए जे आकाश पदेशोमां हाथ अथवा पग पहेलां मुकीने पाछो ते जग्याए लइ शके ? उत्तर—हे गौतम. ते समर्थ नथी. प्रश्न—शा माटे. ? उत्तर—केवलज्ञानीना पोतानाशरीरना भागो चलायमान होय छे, तेथी करीने जे भागमां प्रथम हाथ पग सूक्या होय त्यांथी पाछा लेतां सहेजसाज वांकुं भइ जाय. एटले थोडो फेर पडी जाय.

आप्रमाणे कथारे सूक्ष्म शरीरना संचाररूप योगवहे जे कर्म बंधाय ते इर्थांमां थएल होवाथी इर्थापथिक छे. कारणके तेमां

ગતિનોજ હેતુ છે, અને તે બે સમયનો છે એટલે પહેલા સમયમાં વાંધે અને બીજા સમયમાં મોગલ્લે અને તે કર્મની અપેક્ષા પ્ત્રીજા સમયમાં અકર્મતા થાય છે.

પશ્ચ—કવી રીતે ? उत्तर—जे प्रकृतिथी सातावेदनीय છે, તે કષાય વિનાનું છે, અને તેથી સ્થિતિનો અભાવ છે, તેથી વંચાવવાની સાથે સ્વરી પદે છે, અનુભાવથી અનુત્તર વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયેલ દેવતા અતિશય સુલ્લભને મોગલ્લે, તે પ્રદેશથી સ્થુલ હુલ્લવા ધોલા વિગેરે વહુ પ્રદેશવાલા છે. કહું છે કે—

अप्यं वायरमउयं बहूं च लुकखं च सूविकलं चैव । मंदं महवतंतिय साताबहुलं च तं करमं ॥ १ ॥

સ્થિતિથી અલ્પ છે, કારણ કે ત્યાં સ્થિતિનો અભાવ છે, પરિણામથી વાદર છે, અને અનુભાવથી મુદુ (કોમલ) અનુભાવ છે, પ્રદેશથી વહુ છે, અને સ્પર્શથી હુલ્લનું છે, વર્ણથી શુક્લ (ધોલું) છે લેપથી મંદ છે જેમકે કરકરી શૂકીની મુટી મરીને પાલીસ કરેલી મીત ઉપર નાસ્તાં જેમ અલ્પ (નહીં જેવો) લેપ થાય, તેમ મહાત્વયે કરેલું તે એક સમયમાંજ વધું દૂર થઈ જાય છે, સાતાવેદનીના ઘણાપણથી અનુત્તર વિમાનના દેવતાનું સુલ્લભનું ઘણાપણું છે (સુલ્લ મોગલ્લવા હતાં તેમને અલ્પમોહથી નવાં અશુભ કર્મ વંચાતાં નથી) ઇર્યાપથિક કહું.

હવે આધા કર્મ કહે છે—जे निमित्तने आश्रयी पूर्वे कहेला आठे प्रकारना कर्म वन्थाय; તે આધાકર્મ છે, અને તે શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, સ્પ, અને ગંધ વિગેરે છે, જેમકે શબ્દ વિગેરે કામ ગુણના વિષયનો રસીયો સુલ્લભની ઇચ્છાથી મોહમાં જેની વુદ્ધિ ઠણાઈ ગઈ છે,

एवो जीव स्वरीरिते ते विषयोमां सुखं नथी, इतां तेषां सुखनो खोटो आरोप करीने तेने भोगवे छे, तेथी कहुं छे:—

“दुःखात्मकेषु विषयेषु सुखाभिमानः, सौख्यात्मकेषु नियमादिषु दुःख बुद्धिः । उत्कीर्णवर्णपदप-
ङ्कित रिबान्धरूपा, सारूढ्यमेति विपरीतगति प्रयोगात् ॥ १ ॥” (वसंत तिलका)

दुःस्वरूप—विषयमां सुखतुं अभिमान करीने स्वरा सुखरूप नियम विगोरेमां जे मूर्ख माणस दुःस्वरूप माने छे, ते माणस कोत-
रेला अक्षरपदनीश्रेणी माफक अन्यरूपे इतां ते स्ववाळी विपरित गतिना प्रयोगथी तेने स्वरापणे माने छे. एतो भावार्थ आ छे के,
कर्म निमित्तथी शयला मनोहर अथवा कठोर शब्द विगोरेज आधाकर्म छे (एटले रागद्वेष करवाथी चीकणा कर्म वंथाय छे).

हवे तपकर्म कहे छे—ते आठ प्रकारना कर्मने बांधेला स्वर्ग शयेला निधत्त (मळीगयेला), निकाचित (एका जोदायेला), एवा
एकरूपे शयला कर्मने पण निर्जरा करनार ए तप छे, ते बाह्य अने अश्वंतर एम वे भेदे वार प्रकारे छे ते तपकर्म छे,
हवे कृतिकर्म कहे छे—तेज आठ कर्मने दुर करनार अहंत्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय संबंधी नमस्कार विगोरे छे,
हवे भावकर्म कहे छे—अबाधाने उलंघी पोताना उदयमां आवेलां; अथवा उदीरणा करवा वडे उदयमां लावेला जे पुद्गला

छे, ते पदेश तथा विपाकवडे भव, क्षेत्र, पुद्गळ, जीवोमां अनुभाव करावे; ते भावकर्म शब्दना नामे ओळवाय छे. आ प्रमाणे
नाम विगोरे दश प्रकारना निक्षेपावडे कर्मनी व्याख्या कही; पण अर्हियां समुदान कर्मथी ग्रहण करेला आठ प्रकारना कर्म वडे अ-
धिकार छे; ते नीचली अदधी गाथावडे बतावे छे.

अद्विविहेण उ कर्मसेण, एरथ होई अहीगारो ॥ १८४ ॥

आठ प्रकारना कर्मवडे अहीं अधिकार छे अने एज प्रमाणे सूत्र अनुगमवडे सूत्र वरोवर उच्चारतां निक्षेप नियुक्ति अनुगमवडे दरेक पदमां नामादि निक्षेप करीने व्याख्यान कर्युं. हवे ते उत्तरकालना सूत्रनुं विवरण करे छे.

जे गुणे से मूलद्राणे, जे मूलद्राणे से गुणे । इति से गुण्ठी महया परिधावेणं पुणो पुणो रसे पमत्ते पिथा से माया मे भजा मे पुत्ता मे धुआ मे पहुसा मे सहिसयणसंगथसंशुआ मे, विविचुवगरण-परिव्रटणभोयणच्छायणं मे । इच्चरथं गट्टिए लोए अहो य राओ य परितप्पमाणे कालाकालसमुद्दाई, संजोगट्टो अट्टीलोभोआलुंपेसहसाकारे, वेणिविट्टा चित्ते, एरथ सरथे पुणो, पुणो अप्पं च खल्लु आ-उयं इह मेगेसिंमाणवाणं तंजहा ॥ ६२ ॥

पूर्वना सूत्र साथे तथा ते अगाउना सूत्रो साथे ६२ मा सूत्रनो संबंध बताववो ते आ प्रमाणे छे, गया सूत्रमां कहुं हतुं केः—“से-हुमुणि” इत्यादि. ते मुनि परिज्ञातकर्मा छे, जेने आ मूल गुण विगोरे मळ्ळा छे.

परंपर सूत्र संबंध आ प्रमाणे छे. ‘सेजं पुण’ विगोरे एटले जे पोतणी बुद्धिवडे अथवा तीर्थंकरना उपदेशथी, अथवा तीर्थंकर शिवाय बीजा आचार्य पासेथी सांभळीने जे नाणे; अने तेनो विचार करे; ते जे गुणु छे, ते मूल स्थान छे, एमःबीजां सूत्रो साथे

संबंध है, तथा पहला सूत्र साथे आ संबंध है. “सुधमेआडसंतेणं” इत्यादि में भगवान पास आ प्रमाणे सांभळ्युं विगेरे है.

पश्च—में शुं सांभळ्युं ? उत्तर—जे गुणो सेमूळ ठाणे इत्यादि जे गुजरातीमां सर्वनाम है, ते एक वचनमां है. ते एम सूचवे है के जेना वडे गुणाय भेदाय अथवा विशेष बतावे ते गुण है अने अहीं ते शब्द, रूप, रस, गंध, अने स्पर्श, विगेरे है, अने मूळ षट्ठे ते निमित्त कारण है, अने प्रत्यय ते पर्यायो है, ते जेमां रहे ते स्थान है. मूळमां स्थान ते मूळस्थान है, अने ते वा-क्यातुं विवेचन करनार है, तेथी ते न्याये जे शब्दादिक काम गुण है, तेज संसाररूप चार गति नारक तिर्यंच, मनुष्य, देवतुं मूळ है, ते मूळ कारण कषायो है, तेओतुं स्थान षट्ठे आश्रय है, ते आश्रय ज्यारे सुंदर अथवा कठोर शब्द विगेरे प्राप्त थाय त्यारे कषायनो उदय थाय है अने तेथी संसार है.

अथवा मूळ ते कारण अने तेज आठ प्रकारनां कर्म है तेतुं स्थान आश्रय ते काम गुण है.

अथवा मूळ ते मोहनीय कर्म अथवा तेनो भेद काम (संसारी इच्छा) है, तेतुं स्थान शब्द विगेरे विषय गुण है अथवा मूळ ते शब्दादिक विषय गुण है, तेतुं स्थान इष्टअनिष्ट विषय गुणना भेदवडे व्यक्स्थामां रहेलो गुणरूप संसारज है.

अथवा आत्मा पोते शब्दादि उपयोगथी एक पणे होवाथी ते गुण है अथवा मूळ ते संसारमां तेना स्थान रूप शब्द विगेरे है, अथवा कषायो है, तथा गुण पण शब्दादिक अथवा कषायथी परिणत थएलो आत्मा संसारतुं मूळ है, तेतुं स्थान शब्दादिक है, अने गुण पण तेज है, तेथी वधी सीते सिद्ध थयुं के जे गुण तेज मूळ स्थान है.

प्रश्न—सूत्रमां वर्तन क्रियाने नथी लीधुं छतां शा माटे प्रक्षेप कर्ता छो ?

उत्तर—ज्यां कोइ विशेष क्रिया लीधी न होय त्यां पण सामान्य क्रिया होय छे, तेथी पहेलांनी क्रियाने लइने वाक्य समाप्त कराय छे, ए प्रमाणे वीजे पण ज्यां साक्षात् क्रिया न लीधी होय त्यां पण पूर्वनी सामान्य लेवी अथवा मूळ ते आद्य (प्रथम) अथवा प्रधान छे, अने स्थान ते कारण छे, तेमां मूळ अने कारण ए वेनो कर्मधारय समास करीए; तो एवो अर्थ थाय के जे शब्दादि-गुण छे, तेज मूळ स्थान संसारनुं प्रधान कारण छे वाकी वहुं पूर्व माफक लेवुं. ते गुण अने मूळ स्थाननुं नियम्य (दोर-ववा योग्य) तथा नियामकभाव बतावतां तेना तेना स्वीकारेला विषय कषाय विगेरेनां बीज अने अंकुरना न्यायवहे परस्पर कार्य-कारणभाव सूत्रवहेज वतावे छे, एटले संसारनुं मूळ अथवा कषायोनुं स्थान आश्रय ते, शब्दादि गुण पण आज छे, अथवा कषाय मूळ शब्दादिकनुं जे स्थान छे, ते कर्म संसार छे, अने ते ते स्वभावनी प्राप्तिथी गुण पण तेज छे, अथवा शब्दादिक कषाय परिणाम मूळ जे संसार अथवा कर्मनुं जे स्थान मोहनीयकर्म छे, ते शब्दादि कषायथी परिणामवाळो आत्मा छे, तेना गुणनी प्राप्तिथी गुण पण तेज छे, अथवा संसारकषाय मूळ जे आत्मा, तेनुं स्थान विषयोना अभिळाष ते पण शब्दादि विषयपणाथी गुणरूपज छे, अने अहीया विषयना लेवाथी विषयीना पण आक्षेपथी, अने सुचन मात्र करवाथी सूत्रनुंपण. एम जाणवुं के, जे जीव गुणमां, अथवा गुणोमां वर्ते छे, ते मूळ स्थानमां अथवा मूळ स्थानोमां वर्ते छे, अने जे मूळस्थान विगेरेमां वर्ते छे, तेज गुणोमां वर्ते छे.

जे जीव पूर्व वर्णवैला शब्दादिक गुणोमां वर्ते; तेज संसार मूळ कषाय आदि स्थान विगोरेमां वर्ते छे, अने तेज बीजा सूत्रनी अपेक्षावडे व्यत्यय करवाथी पूर्व भाफक योजवुं; कारणके सूत्रनुं अनंतगम अने पर्यायपणुं छे.

वळी आ पण जोवुं. जे गुण तेज मूळ स्थान छे, अने जे मूळ तेज गुण. स्थान पण तेज छे अने जे स्थान तेज गुण अने मूळ पण तेज छे. आ प्रमाणे बीजा विकल्पमां पण योजवुं अने विषयना निर्देश (बलाववा) मां विषयी पण बलावी दीथो छे. जे गुणमां वर्ते छे. तेज मूळस्थानमां वर्ते छे. ते प्रमाणे वधे जाणवुं. अहीआं सर्वज्ञनुं कहेछुं होवाथी सूत्रनुं अनंत अर्थपणुं जाणवुं ते आ प्रमाणे छे. अहीआं कषाय विगोरे मूळ वलावुं. अने क्रोध विगोरे चार कषायो छे. वली अनंतानुबंधी विगोरे चार भेदे क्रोध छे. अने अने अनंतानुबंधीनां असंख्येय लोकाकाश प्रदेश प्रमाण बंधना अथ्यवसायनां स्थान जाणवां तथा तेओना पर्यायो पण अनंता छे. तेथी प्रत्येकने स्थान गुणना निरूपणवडे सूत्रनुं अनंत अर्थपणुं थाय छे. छद्मस्य (केवल ज्ञानविनाना) जीवोने कथा आद्युष्यमां पण ते मेळवी न शक्याय तेथी अनंत पणाने लीये समजाववाने पण अशक्य छे. पण एम अहीं आ दिशावडे थोडासां दिगदर्शनरूपे वलावुं छे. अने कुशलग्र (तिक्षणं) बुद्धिवालाए गुण स्थानोनुं परस्पर कार्य कारण भाव विगोरेनी संयोजना करवी.

तेथी आ प्रमाणे जे गुण तेज मूळस्थान, अने जे मूळस्थान तेज गुण एम कहुं, तेथी शुं समजवुं ते कहे छे “इतिसे गुणटी” विगोरे अहीआं इति शब्द हेतुना अर्थमां छे. एटले जे शब्दादि गुणथी परीत. (व्याप्तं) आत्मा छे ते कषायना मूळ स्थानमां वर्ते छे. अने कथाए प्राणीओ गुणना प्रयोजनवाला छे. तथा गुणना रागी छे. तेथी गुणोबी प्राप्तिमां अथवा प्राप्त थदने नाश थतां

इच्छा अने शोक वढे ते घणा परिताप वढे शरीर तथा मनना संबंधी दुःखवर्ढे हारी जडने वारंवार ते ते स्थानमां उद्यम करे छे. अने त्यां प्रपत्त वने छे. अने प्रमाद छे ते रागद्वेषतुं स्वरूप छे. अने राग विना प्रायः द्वेष शतो नथी तथा राग पण उत्पत्तिथी मांडीने अनादि भवना अभ्यासथी माता पिता विगेरे संबंधी थाय छे. ते वतावे छे. कोडने “मायामे” एटले मांसंबंधी राग संसारना स्वभावथी माताए उपकार करवाथी तेना उपर राग थाय छे. अने तेवो राग शतां मारी मा भूख तरसथी न पीडाओ तेदला माटे तेनो दिकरो खेती, वेपार, नोकरी विगेरे वीजा जीवोने दुःख आपनारी क्रिया आरंभे छे, अथवा तेनो उपघात करवा वाली ते क्रियामां वर्त्ततां अथवा माता विगेरे अकार्यमां पवर्त्ततां द्वेष थाय छे. ते आ प्रमाणे छे.

जेमके. ‘ जमदग्नि’ रुषिनी स्त्री रेणुकामां अनंत वीर्य राजानो दुराचार जोइ परशुरामने द्वेष थयो (अने परस्पर महात अनर्थ कथो) एज प्रमाणे कोडने मनमां थायके आ मारो पिता छे. तेथी तेने ते संबंधी रागद्वेष थयो छे. जेमके तेज परशुरामने चाप उपर प्रेम होवाथी तेने हणनार उपर द्वेष लावीने सातवार क्षत्रिओने मारी नाल्या.

अने तेथी क्षत्रीय पुत्र सभूम चक्रवर्तिण. एकवीस वार ब्राह्मणोने मार्या

कोइ प्राणी वेनना माटे कलेश पामे छे. कोइ स्त्री माटे रागद्वेष करे छे, जेमके चाणाक्य नामना ब्राह्मणे वेन तथा वनेवी विगेरेए पोतानी स्त्रीतुं करेछुं अपमान सांभली तेनी प्रेरणाथी “ नंदराजा” पासे द्रव्य माटे जतां नंदराजाए तेतुं अपमान कथुं तेथी चाणाक्ये क्रोधमां आवी नंदतुं कुळ क्षय करी नाल्युं, (चाणाक्यनी स्त्री तेना वनेवीने त्यां गयेलो त्यां गरीवीथी तेतुं अपमान थयुं,

स्त्रीए पोताना पति चाणाक्यने वात करी. तेथी धन लेवा नंदराजा पासे गयो त्यां धनने बदले अपमान मळ्युं तेथी चाणाक्ये नं-
दराजाना कुलनो नाश कर्यो.)

कोइ विचारे छे के मारे पुत्रो जीवता नथी. ते जीवाढवा बीजा आरंभो करे छे, कोइ प्राणी मासी दीकरी दुःखी छे, एवा राग
अथवा द्वेषथी बेला जेवो बनी परमार्थने न जाणतो एवां एवां कृत्यो करे छे के जेनावडे आलोक परलोकमां नवां दुःखोने भोगवे छे.

जेमके “जरासंध” नामनो प्रतिवासुदेव. पोताना जमाइ कंसना मरणथी पोताना लश्करना अहंकारथी कंसने मारनार “वासुदेव”
(कृष्ण.) ना उपर कोप करीने तेना पाहळ जइने लडाइ करातां सेना साथे नाश पाभ्यो.

कोइ तो मारी पुत्रवधु जीवती नथी, तेथी आरंभ विगेरेमां वर्ते छे. कोइ मित्र माटे, कोइ स्वजन. (काका, दिकरा के साळा)
माटे क्लेश करे छे. के ए मारां वारंवार परिचयमां आवेला छे. अथवा पूर्वे मारा माता पिता उपकारी हता अने पाहळथी साळा विगेरे
उपकारी हता ते अत्यारे दुःखी छे. एम प्राणीओ कोइना कंडपण निमित्ते शोक करे छे. अथवा जुदां जुदां शोभायमान अथवा घणा हाथी
घोडा रथ, आसन, पलंग विगेरे जे उपकरणो छे तेनाथी बमणा, तपणा विगेरे वधारे राखीने बदले छे. तथा भोजन (लाडु विगेरे)
आच्छादन (पइ शुगम विगेरे वस्त्र मने मळशे, अथवा मारां नाश थयां एम रागद्वेष करे छे आ प्रमाणे प्राणीओ चेतन वस्तुमां गूंध
बनीने पूर्वे कहेला माता पिताविगेरेना रागथी आखी जीदंगी स्वथी प्रमादि रहे छे एटले ए मारां छे. अथवा हुं आ परिवारनो रक्षक
हुं, पोषण करनारो हुं एम प्रमता करीने मोहीत मनवालो थाय छे.

“ पुत्रा मे, भ्राता मे, स्वजना मे, गृहकलत्रवर्गो मे । इति कुतमेमेवशब्दं, पशुमिव मृत्युर्जनं हरति ॥१॥

मारा पुत्रो मारा भाइओ, मारां सगां मारांवर, तथा स्त्री समुदाय छे. आबुं पशुनी माफक मे मे 'बालता माणसने मृत्यु हरी जाय छे. पुत्रकलत्रपरिग्रहममत्वदोर्षनरो व्रजति नाशम् । क्रिमिक इव कोशकारः परिग्रहादुःखमाप्नोति ॥ २ ॥

पुत्र, स्त्रीहुं परणवुं तेथी तथा उपर ममता राखवी ए दोषोथी माणस नाश पासे छे जेपके कोशदानो वनावनार क्रिमि (रेचमनो) कीडो कोशदाना दुःखथी मरण पासे छे तेम संसारी मनुष्य स्त्रीपुत्रनी चिंतामां रीबी रीवीने मरे छे. आज सूत्र अर्थने मळतुं निर्युक्तिकार बे गाथा वडे कहे छे.

संसारं हेतुमणो कर्मसं, उन्मूलए तददृष्टाए । उन्मूलिज कसाया, तन्हा उ चइज सयणार्ई ॥१८५॥

नरक विगेरे चार गतिरूप संसार, अथवा माता, पिता, स्त्री विगेरे उपर प्रेम छे. ते संसार छे तेने जइमूलथी छेदवानी इच्छा वालो कर्मने मूलथी उखेडी नाखे तेदला माटे कर्महुं मूल कषायो छे, तेने दूर करे.

माया मेसि पिया मे, भगिणी भाया य पुत्रदारा मे । अर्थमि चैव गिद्धा, जन्मणसरणाणि पावंति॥१८६॥

अने ते दूर करवा माटे पूर्ये बताव्या प्रमाणे माता पिता विगेरेनो स्नेह छोडी दे. जो न छोडेतो माता पिता विगेरेनो संयोगना अभिलाषीओ तेमना सुख माटे रत्नकृपी (रसकृपी जेना वडे सोहुं वने छे ते) ना माटे गृध्र वनीने तेमां अनेक पाप करातां जन्म जरा अने मरण विगेरेना दुःखोने भोगवे छे ए प्रमाणे कषाय अने इन्द्रियोमां प्रमादि थएलो माता पिता विगेरे माटे धन

मेळववा तथा मेळवेलातुं रक्षण करवा फक्त दुःखनेन भोगवे छे, तेज मूळ सूत्रोमां वतावुं छे के अहो (दिवस) रात्रो (रात) मां, अने सूत्रमां “च” शब्द छे तेशी पक्षमासमां सारा धर्मना विचारो छोडीने बधी रीते चिंतामां बळतो रहे छे जेमके—

“ कइया वच्चइ सरथो० किं भण्डं करथ कित्तिया भूमो । को कयविक्रयकालो, निविसइ किं कहिं केण० ॥१॥

क्यारे आ सार्थ (वेपारीओनो समूह) उण्डरो ? शुं माल छे ? केदले दूर जवुं छे तथा लेवा वेचवाने कयो काल छे अथवा कयुं कयां कोना वडे आ चोकटुं बेसरो ? (कार्य सिद्धि थरो) विगोरे चिन्तामां बळतो रहे छे अने ते चिन्ताग्रस्त केवो थाय छे. ते कहे छे. काल (योग्य समय) अकाल (अयोग्य समय) मां उठीने एदले दिवसमां जे करवानुं होय ते काम रातना करे अथवा प्रभा-तनुं काम सांजना करे विगोरे अथवा काल अकाल ए वनेमां करे अथवा अवसरमां न करे, तेम बीजा वरतमां ए न करे, जेम कोइ धन विगोरेनी हानी थतां गांडो बनी गमे तेम करे पण तेने काल अकालनो विवेक नथी एम जाणवुं.

जेमके “चंद्रप्रद्योत ” नामना राजाए मृगावती नामनी राणी, जेनो पति “ शतानिक ” राजा मरण पाभेलो छे. तेना कहेबाथी मोहीत थइने जे काले किल्लो लेवानो छे ते काले न लेतां किल्ला विगोरे नवा सुधरावीने लेवानी इच्छ करी (पण लइ शक्यो नहिं.)

पण जे योग्य काले क्रिया करे छे. ते बाधा रहीत बधी क्रिया करे छे. कहुं छे के—

“मासैरष्टभिरहा च, पूर्वैण वयसाऽऽशुषा । तत् कर्त्तव्यं मनुष्येण, येनान्ते सुखमेधते ॥ १ ॥”

आठ मास तथा दिवसे तथा जुवानीमां पहेला आयुष्यमां माणसे कृत्य करी लेवुं एदले बार मासमां चोमासाना चारमासमां

पाणी कादव विगेरेनां दुःख न भोगवचं पढे माटे कमावुं के संग्रह करवो, ते आठ मासमां करवो, तथा रातना अंधारामां खराब माल न आवे स्वपरनी हिंसा न थाय माटे दरेक कार्य दिवसना करवुं तथा पहेली अवरथामां विद्या भणी धनउपार्जन करवुं तथा युवानीमां धर्म साधवो के जेथी पाछली वृद्धावरथामां दुःख भोगवचुं न पढे अने सुख मेळवे.

जेम मृत्युने आवतां अकाल नडतो नथी तेम धर्मनुं अनुष्ठान करतां पण अकाल नडतो नथी, त्यारे ज्ञा माटे काल अकालनो समुत्थायी थाय छे. ए माटे कहे छे. संजोगने माटे अर्थात् जेने प्रयोजन छे, ते तेने माटे करे छे. धन धान्य. सोनुं वे पगवालां दास दासी अने चार पगवालां घोडा विगेरे तथा राज्य स्त्री विगेरेनो संसारमां अमुक अमुक कारणे संयोग थाय छे. तेने माटे अ-थवा तो शब्दादि विषय तेनो संयोग अथवा माता पिता विगेरेना संयोगवडे तेने माटे संसारी जीवो कालमां अथवा अकालमां काम करणारा थाय छे.

कोड अर्थ एटले रत्नकृपि विगेरे अथवा कोड अत्यंत लोभने लीधे स्वार्थी वर्गी काल अकाल जोगा विना ममण शेट माफक करवा मंडे छे. ते ममण शेटनुं द्रष्टांत कहे छे आ शेटे अतिशय धन हतां युवावस्थामां (सुख भोगवचुं छोडीने) जळ स्थळने मार्गे जुदा जुदा देशांमां माल भरीने वहण गाडां उंटनी मंडली विगेरेना भारथी भरेलां मोकलीने (नफो मेळव्या हतां संतोष न पक-ड्यो) पछी भर चोमासामां सात रात्री सुधी मूशळ ममाण जळ धारा पडते वरसादथी वधा पाणी एक जग्याए स्थिर थया पण आ शेट संतोष न पकडतां पोताना शहरनी नजदीकमां रहेली महा नदीना पुरमां तणाइ आवेला लाकडां लेवानी इच्छावालो धननो उ-पभोग धर्म नकरतां वधा शुभ परिणामने छोडीने फक्त धन मेळवामांज तैयार थयो तेज कहुं छे.

“उपखण्ड खण्ड निहण्ड रक्षिं, ण सुअति दियावि य ससंको । लिपइ, टएइ, सययं, लंछियपडिलंछिय कुणइ धन लोभी उंचेथी खोदे छे तथा खाण खोदे छे तथा जीवोनी हिंसा करे छे, रात्रिमां सुतो नथी दिवसे पण चिन्तावालो होय छे. कर्मथी लेपय छे विचार करतो पडी रहे छे तथा हमेशां लांछित तथा पति लांछित (लज्जास्पद कृत्य पण करे छे.)”
भुंजसु न ताव रिक्को, जेमेउं नविय अउज मज्जीहं । नवि य वसीहामि धरे, कायव्वमिणं बहुं अज्जं । २ ।
 कोइ कहे खा तो पण पोतानो वेपार पूरो न थाय त्यां सुधी तेने खावातुं सुझतुं नथी तेथी कहे के हुं स्नान नही करं तेम धरमां रहीश नहीं अत्पारे मारे बहु काम छे. (अर्थात् लोभीओ कइं पण मुख छते धने भोगवतो नथी तेम दान पण आपतो नथी).
 वली लोभीना अशुभ वेपारो वतावे छे.
 मूल सूत्रमां आहुंप शब्द छे. तेनो अर्थ आ छे. ते लोभथी हणायला अंतःकरणवालो बधा कर्तव्य अकर्तव्यनो विवेक छो-
 डीने अर्थ लोभमां एक दृष्टि राखीने आलोक अने परलोकमां दुःख आपनारी कलंकरूप गळां कापवां तथा चोरी विगेरे कृत्य करे छे, एटले तेनी मति सर्वथा लोपइ गएली छे.

सहसककारे—आगळ पाळळतुं विचार्या विना दोष भूलीने एकदम. (सहसा) कार्य करी नांखे ते काम करनारो (पा. र. १२७ सूत्र प्रमाणे) सहसककार जाणवो जेमके लोभ अंधकारथी छवाइ गएली दृष्टिवालो “हाय रैसो” माननारो शकुंत पक्षी मा-
 फक तीरना घाने भूलीने मांसना अभिलाषथी सांधाना छेदनथी नाश पाये छे. (पक्षीने फसाववा धनुष्यमां मांसनो टुकडो बांधे छे.

अने ते पक्षी खावा जातां तीर छुटे छे. अने पक्षी मरी जाय छे.) तेज प्रमाणे लोभी धनमां लुब्ध मनवालो थड वीजा दुःखोने जोतो नथी. “विणि विड चिठे”—(विविध) अनेक प्रकारे (निविष्ट) रहेछु. पैसा मेळवंचा माटे चित्त जेतुं छे, ते माणस अथवा जे माणसने मातापिता विगेरेमां भेम रह्यो छे, अथवा जेने उत्तम गायन विगेरेनो रस लेवामां चित्त लाण्युं छे, अथवा सूत्रपाठमां चिन्तने बदले चिद्व लइए तो, कहे छे केः—ते माणस विशेषे करीने काय, वचन, अने मनना चचळणायी पैसो पैदा करवामां रातदिवस चित्त राखे छे, तेज प्रमाणे मातापिता विगेरेनो भेम धारण करी संसारवाळो छे, अथवा अर्थनो लोभी थडने पापथी लेपातो वगर विचारे-संसार-विषयमां एक चित्तवाळो बनीने हवे पळीथी शुं शुं करे. ते कहे छे.

आलोकमां मातापिता विगेरेमां, अथवा इंद्रिय-विषयमां लोलुपी बनी पृथ्वीकाय विगेरे जंतुने दुःख आपनारो ते पुरुष शस्त्र वापरवामां वारेवारे तैयार थाय छे, ए प्रमाणे वारंवार पृथ्वीकाय विगेरेनी हिंसा करी नवां कर्म बांधे छे. जीवोने दुःख आपनार शस्त्र वे प्रकारतुं छे, एटले खारा कुवातुं पाणी मीठा कुवामां नांखे; तो स्वकायथी हिंसा छे, अने अपि उपर पाणी नांखे तो, परकायथी हिंसा छे, (ते पहेलां अध्ययनमां बताव्युं छे.) आ प्रमाणे उपर कहा सुजब हिंसा करे छे. वकी मूल मूत्रमां एस्थ सस्थे ने बदले बीजी जग्याए एस्थ सत्ते पाठ छे, तेनो आ प्रमाणेनो अर्थ छे. के मातापितामां अथवा पोते गायननो रसिक लोभी लोभमां पढीने संक्त (शुद्ध) बनीने वारंवार तेमां एक चित्तवाळो थडने धर्मकर्म लोपीने विना विचारे काल-अकाल न जोतां पापमां भवतै छे. आ हालना जीवोने जो, अजरामरपद होय; अथवा लांबुं आयुष्य होय; तो ते करवुं घटे; पण टुंका आयुष्यमां, तथा मरण माथे भमतुं होवाथी भोगनी इच्छाए व्यर्थ पाप करे छे. कारणके, हालना कालमां मोटामां मोटुं आयुष्य निश्चयथी सो वरसनी

આસપાસ છે, અને નાતું આયુષ્ય શુલ્કક (નાના) ભવ આશ્રયી અંતર્મૂહર્ત માત્ર છે, અને વધારેમાં વધારે ત્રણ પલ્યોપમનું છે તેમાં પળ; સંયજીવિત (સાશુપણું) અલ્પકાલ છે, તથા અંતમૂહર્તથી લઈને થોડું ઓછું. પલું કરોડ પૂર્વનું આયુષ્ય છે. જેમાં સાશુપણું ઉદય આવે તે અપેક્ષા તે પળ થોડું છે, દૃઢ છે મમેતેદહું મનુષ્યનું આયુષ્ય હોય; તોપણ તે એક અંતર્મૂહર્ત હોદીને વાકીનું અપવર્તન (અકાલ મોત) થાય છે. તેથી કહું છે કે:—

“અદ્દા જોશુક્રોસે, વંધિતા મોગમૂમિણ્ણુ લહું । સત્વરપ્પજીવિય, વહજહ્ણુ ઉવ્વહિયા દોપહં ॥ ૧ ॥”

ઉત્કૃષ્ટ યોગમાં વંધના અધ્યવસાય સ્થાનમાં આયુષ્યનો જે વંધકાલ છે. તે ઉત્કૃષ્ટો કાલ વાંધીને જે જીવ દેવ ગુરુ વિગેરે મોગ મૂમીમાં યુગલિક તરીકે જન્મે છે. તેનું જલ્દીથી વધું આયુષ્ય હોદીને તિર્થેચ અને મનુષ્યનું અપવર્તન થાય છે. અને તે અપર્યાપ્ત અંતર્મૂહર્તનું અંતર જાણવું, ત્યારપછી અપવર્તન થાય છે, (જે આયુષ્ય ત્રણ પલ્યોપમનું છે, તે પળ કારણ વિશેષથી ઓછું થવા સંભવ છે.)

સામાન્યથી આયુષ્ય સોપક્રમ જીવોને સોપક્રમ છે, અને નિરુપક્રમઆયુષ્યવાલાને નિરુપક્રમ છે તે વતાવે છે. જ્યારે જીવને પોતાનું આયુષ્ય ત્રીજે ભાગે વાકી રહે છે. અથવા ત્રીજાનો ત્રીજો (૩) નવમો ભાગ વાકી રહે અથવા જઘન્યથી એક વે અથવા ઉત્કૃષ્ટથી સાત આઠ વર્ષે અથવા અંતકાલે કાલે અંતર્મૂહર્ત કાલના પ્રમાણથી જીવ પોને પોતાના આત્મપદ્ધોને નાહિકાના અંતરમાં રહેલા આયુષ્ય કર્મવર્ગણાના પુદ્ગલોને પ્રયત્ન વિશેષથી રચના કરે છે. તે વચ્ચે નિરુપક્રમ આયુષ્યવાલો થાય છે, અને વીજીવચ્ચે આયુષ્ય વાંધે તો ઉપક્રમ આયુષ્ય થાય છે. ઉપક્રમ તે ઉપક્રમણના કારણથી થાય છે. તે કારણો નીચે વતાવ્યાં છે.

“ दंडकससत्थरज्जु, अगो उद्गपडणं विसं वाला । सीउणहं अरइ भयं खुहा पित्रासा य वाही य ॥ १ ॥
दंड, चावलो, राख, दोरी, अग्नि, पाणी, पडी जयुं, झेर, साप, अती दंड, अती गरमी, अरति, भय, भूख, तरस, अने रोग (आ
घणा ममाणमां थाय. एटले दंड विगेरेशी मार पडे तो लांबु आयुष्य पण टुंका वखतमां समाप्त थाय, जेने लोकमां अकाल मोत कहे
छे, जेनाथी मोत थाय ते उपक्रम अने जेनुं मोत थयुं ते सोपक्रम मृत्यु कहेवाय छे. अने तेनुं जीवित पण पूहं न थवाथी सोप-
क्रम आयुष्य कहेवाय.

मुत्तपुरीसनिरोहे जिण्णाजिण्णे भोयणे बहुसो । वंसणवोलणपीलण आउस्स उवक्कमा एत्ते ॥ २ ॥

झाडो पीझाव रोकवाथी, भोजन जीर्ण थयां पहेलां वधारे स्वाय अथवा जीर्ण थया पळीथी पण वधारे स्वाय अथवा वर्पण.
(घसारे) अथवा घोलन. अथवा पीडन—(शरीरने गजा उपरांत वोजो अथवा श्रम पडे ते)थी आयुष्यनो अंत आवे छे. तेथी ते
उपक्रमो छे. वळी कहुं छे के.

स्वतोऽन्यत इतस्ततोऽभिमुखधावमानापदामहो निपुणता तृणां क्षणमपीह यज्जीव्यते ।

मुखे फलमतिक्षुधा सरसमल्पमायोजितं, कियच्चिरमवर्षितं दृशनसद्गुटे स्थास्यति ? ॥ १ ॥

पोतानाथी के बीजाथी आम तेम सागे दोडती आवती आपदाओवाला मनुष्यो छे. तेमां तेमनी निपुणता जुओ के. क्षण पण
अहींभां जे जीवे छे. मोढामां फळ छे. घणी भूख लागी छे. रसवाळुं अने थोडुं भोजन मलयुं छे. ते केटलो काल चवाशे अने ते

दांतना संकटमां पडेछु रहेशे. (माणसो विषय तृष्णाना लोभी वनी तेने माटे आम तेम दोडे छे. पण ते भोग प्राप्त करवा पहेलां कथारे काल झडपशे तेनी खबर पण नथी राखता ते आश्चर्यनी वात छे.) उच्छ्वासनी मर्यादावाला प्राण छे. अने ते उच्छ्वास पोते पवन छे अने पवनथी बीजुं कंइ वधारे चंचल नथी तो पण क्षणभरतु आयुष्य लोकोने मोह करावे छे. ते पण एक आश्चर्य छे.

उच्छ्वासावधयः प्राणाः, स चोच्छ्वासः समीरणः । समीरणाच्चलं नान्यत् क्षणमप्यायुरद्भुतम् ॥ २ ॥

आ प्रमाणे मनुष्यने मोह उतारवा कहु. वली जेओ लांवा आयुष्य वाला छे. तेओने पण उपक्रमण (आफत) ना अभावे आ-युष्य भोगवे छे. तेओ पण मरणथी पण वधारे पीडा करनार हुद्दापथी पीडाएला शरीरवाला सुखनी जींदगी अल्पमां अल्प भोगवे छे, ते हवे सूत्रकार बतावे छे.

तंजहा—सोषवरिणणोहिं, परिहायमाणोहिं, चक्रसुपरिणणोहिं, परिहायमाणोहिं वाणपरिणणोहिं प-रिहायमाणोहिं रसणपरिणणोहिं परिहायमाणोहिं फासपरिणणोहिं परिहायमाणोहिं, अभिकर्तं च खलु वयं स पेहाए तओ से एगदा मूढभावं जणयंति ॥ ६३ ॥

भाषास्ये परिणमेला गुद्गलोने जे सांभळे; ते श्रोत (कान) छे, अने तेनी आकार कदंचना झाडना फुल जेवो द्रव्यथी छे, अने भावथी तो जे भाषा द्रव्यने ग्रहण करवानी लविय, तथा तेनी उपयोगतो जे स्वभाव छे, ते जाणवुं. पूर्वे कहेलां श्रोत्र (कानवडे) चारे वाजुथी घटपट शब्द विगेरे विषयोहुं जे ज्ञान थाय; ते परिज्ञान छे, ते कानना परिज्ञानमां हुद्दापाना प्रभावथी जे सांभळवानी

शक्ति कमी (बहेराश) थाय तेथी ते प्राणी दुहापामां, अथवा तेवाज रोगना उदयना वरतमां मूढभावपणाने पांमे छे, जेथी करावा योग्य न करावा योग्य, विवेक जातां अज्ञानपणुं इंद्रियोनी शक्ति कम थतां आवे छे. अने तेथी हित पास करवुं; अने अहित छोडवुं; तेनो विवेक नाश पांमे छे. जेम कान संबंधी कळुं; तेम प्रमाणे आंखनु पण दुहापामां के रोगमां विज्ञान नाश पांमे छे.

प्रश्नः—आत्मा साथे जेम काननो संबंध छे, तेम आंख साथे पण संबंध छे, त्यारे आंखनी माफक कानथी केम देखातुं नथी? उत्तरः—तेम थवुं अशक्य छे, कारणके. तेना विनाशमां तेनो उपलब्ध (प्राप्त) अर्थनी स्मृतिनो भाव थाय छे, अने एवुं देखाय पण छे के, इंद्रियना उपघात (नाशमां) पण तेनो उपलब्ध अर्थनुं स्मरण थाय छे. जेमके, थोळुं घर. तेमां बेठेलो पुरुष पांच वारीओथी देखायलो जे कंइ पदार्थ होय; ते वारीमांथी कोइपण वारी दांकतां पूर्वे जोयळु; ते याद आवे छे, तेवीज रीते में कान-वडे, सांभळ्यो अथवा आंखवडे थीमो (धीमाशथी) पदार्थ जोयो; अने में आ कान, जाण्यो अथवा आंखथी स्फुट (खुळ्ळो) अने स्पष्ट पदार्थ जोयो, ते इंद्रियोनी करणपणानी अवगति (बोध) छे, तेथी आत्मा साथे दरेक इंद्रियोनो संबंध छे.

वादीनी शंका—जो, एम छे तो; वीजी पण इंद्रियो छे, ते केम न लीथी? (बीजी कइ इंद्रियो छे? एवुं पूछो तो नीचे बता-वीए डीए) जेवी के जीभ हाथ पग टटी अने पेशावनी इंद्रियो तथा मन ए केम न लीथी? जेमके वचन बोलवाथी ते पण जीभ इंद्रिय छे. तथा लेवा मुकवामां हाथ इंद्रिय छे. चालवामां पग इंद्रिय छे तथा मळ काढवामां टटीनी इंद्रिय छे. अने संसारी आनंद भोग-ववामां मुल इंद्रिय छे. तथा विचारकरवामां मन इंद्रिय छे. आ छ इंद्रियो पण आत्माने उपकार करे छे. तेथी तेमां पण करणपणुं घटे छे. अने करणपणाथी इंद्रियपणुं छे. तेथी वधी मलीने अगीआर इंद्रियो थाय छतां तमो पांच इंद्रियो केम बतावो छो?

जेनाचार्यनो उत्तर—एषां कंइ दोष नथी कारणके अही आत्माना विज्ञाननी उत्पत्तिमां जे विशेष उपकारक होय छे. तेज क-
रण (जेना वडे कार्य थाय ते) पणे लेवाथी पांचज इन्द्रियो छे. अने जीम हाथ पण विगेरे आत्मा साथे साधारण सीते एक पणे
होवाथी करण पणे वपराती नथी अने कंइ पण क्रियाना उपकारणाथी जो करण पणुं मानीए तो ते प्रमाणे “ञू” (पांपण) अथवा
उदर (पेट) विगेरे पण उंचेनिचे थवानो संभव होवाथी तेनामां पण करण पणुं थाय, वली इन्द्रियोना पोताना विषयमां निवत (चोक्स-
पणुं) होवाथी एकहुं काम बीजी करी शकवाने शक्तिवान नथी. तेज कहे छे केः—रूप जोवाना काममां आंख काम लागे पण आं-
खने वदले आंखना अंभावमां कानं विगेरे काम न लागे

पण जे रस विगेरे प्राप्त थतां थंडा विगेरे. स्पर्शनो लाभ थाय छे ते स्पर्शनु सर्व व्यापिपणुं होवाथी त्यां शंका न करवी के
जीमथी चाखतां खाया खाटा साथे ठंडो उनो पदार्थ लागेछे तेथी जीम जीमहुं पण काम करे छे तेम बीजी इन्द्रियनुं काम करे छे.
तेम न मानवुं पण जीमर्मा स्पर्श इन्द्रियनुं पण सर्व व्यापिपणुं छे एम जाणवुं.

अहींआं हाथ कापवा छतां तेनुं कार्य जे लेवापणुं छे. ते दांतथी पण लेवाय छे. तेथी हाथमां लेवाना कारणथीज ते इन्द्रिय-
पणुं मानवुं ते नकामुं छे. अने मनहुं सर्व इन्द्रियो उपर उपकारपणुं होवाथी. तेने अंतःकरणपणे असे इच्छिए छीएज, अने बाह्य
इन्द्रियोना विज्ञानना उपघात वडे ते छे. अने ते तेमां समाइ जवाथी मनने तेमां जुहुं लीधुं नथी. अने मत्येकहुं ग्रहण करवुं ते क्र-
मनी उत्पत्तिना विज्ञानना उपलक्षण माटे छे. तेज बतावे छे. जे इन्द्रियनी साथे मन योजाय छे तेज पोताना विषयनो गुण ग्रहण
करवा माटे वर्से छे. पण बीजो ग्रहण करवाने माटे नही.

પશ્ચ—વિર્ધ શક્તી. (તલપાપટ્ટી) સાચા વિગેરેમાં પાંચ ઇન્દ્રિયોનું વિજ્ઞાન થાય છે. અને તે સાથે અનુભવ થાય છે, તે કેવી રીતે છે? ઉત્તર—તેમ નથી. કારણકે. કેવળીને પળ વે ઉપયોગ સાથે નથી. ત્યારે વીજાનેતો આરાતીય (અલ્પમાત્ર) ભાગ જોનારને પાંચેને ઉપયોગ સાથે કર્યાંથી હોય આ વાવતમાં અમે વીજી જગ્યાએ વિસ્તારથી કહ્યું છે. તેથી અહીં કહેતા નથી અને જે સાથેના અનુભવનો આભાસ થાય છે. તે મનનું જલદી દોઢવાની ઘટ્ટિપણાનું છે. કહું છે કે—

“આત્મા સૈહૈતિ મનસા મન ઇન્દ્રિયેણ, સ્વાર્થેન ચેન્દ્રિયમિતિ ક્રમ ણ્ણ શીઘ્રઃ । યોગોઽયમેવ મનસઃ કિમગમ્યમસ્તિ ?, યસ્મિન્મનો વ્રજતિ તત્ર ગતોઽયમાત્મા ॥ ૧ ॥

આત્મા મનની સાથે જાય છે. અને મન છે તે ઇન્દ્રિય સાથે જાય છે. અને ઇન્દ્રિય પોતાના ઇચ્છિત પદાર્થમાં જાય છે. અને તે ક્રમ શીઘ્ર વને છે. આ મનનો યોગ શું અજાણ્યો છે કે જેમાં મન જાય છે ત્યાં આત્મા ગણ્યોજ છે.

અને અહીંઆં આ આત્મા, ઇન્દ્રિયોની લલિયવાલો શરૂઆતથીજ જન્મના ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં એક સમયમાં આહાર પર્યાપ્તિને નિપજાવે છે. ત્યાર પછી અંતર્મુહૂર્તમાં શરીર પર્યાપ્તિને નિપજાવે છે. ત્યાર પછી ઇન્દ્રિય પર્યાપ્તિને તેટલાજ કાલમાં નિપજાવે છે. અને તે પાંચ ઇન્દ્રિયો સ્વર્ગ રસ ઘ્રાણ ચક્ષુ અને શ્રોત્ર એમ છે. તે પળ દ્રવ્ય અને ભાવ એમ દરેક વે ભેદે છે. તેમાં દ્રવ્ય ઇન્દ્રિય નિર્હૃત્તિ અને ઉપકરણ એમ વે ભેદે છે. નિર્હૃત્તિ પળ અંતર અને વાહ્ય એમ વે ભેદે છે.

જેનાથી નિર્વાહ થાય તે નિવૃત્તિ છે. અને તે કોનાથી નિર્વાહ થાય છે.? તેનો ઉત્તર—કર્મવહે નિર્વાહ થાય છે.

તેમાં ઉત્સેધ (લોકમાં વપરાતું) માપ આંગળીનું) અંગુલના અસંખ્યેય भाग જેટલા શુદ્ધ આત્મ પ્રદેશના પ્રતિનિયત વશ્ચુ વિગેરે ઇન્દ્રિયોના સંસ્થાન વઢે જે વૃત્તિ અંદર રહેલી છે તે નિર્વૃત્તિ જાણવી.

તે આત્મા પ્રદેશોમાંજ ઇન્દ્રિયના વ્યપદેશને મજનાર જે પ્રતિનિયત સંસ્થાનવાલો નિર્માણ નામના પુદ્ગલ વિપાકવાલી (કર્મ-પ્રકૃતિવઢે) વર્દ્ધકિ (સુતાર માફક) વિગેરે વિશેષ રૂપવાલો (ઇન્દ્રિય વિભાગ) અને અંગોપાંગ નામના કર્મવઢે વનાવેલ જે છે તે વહારની નિર્વૃત્તિ જાણવી.

(આ ઉપર જે વર્ણન કર્યું તે શરીરની અંદર અને બહાર જ્યાં જે ઇન્દ્રિય રહેલી છે તેનું વંને પ્રકારનું વર્ણન વતાવ્યું છે, વહારની ઇન્દ્રિયો દરેકની દેશવાય છે પણ અંદરની તો આત્મજ્ઞાની જાણી શકે છે) ઉપરની વતાવેલી નિવૃત્તિ વે પ્રકારની કહી તેને જેના વઢે ઉપકાર કરાય છે તે ઉપકરણ છે અને તે ઇન્દ્રિયોના કાર્યમાં સમર્થ છે. વલી નિર્વૃત્તિ હોય અને હણાહ નહોય તો પણ મશુર (જેની દાઠ થાય છે) તેના આકાર વાલી નિર્વૃત્તિમાં તેને જો ઉપવાત થાય તો આંચ જોઈ શકતી નથી (આંચનો વહારનો આકાર મશુરની દાઠ જેવો છે, જોતે નાશ પામે તો અંદર આત્માની શક્તિ છે હતાં તે જોઈ શકતો નથી માટે વહારના આકારને ઉપકરણ કહું છે. તે પણ નિર્વૃત્તિ માફક વે પ્રકારે છે તેમાં આંચની અંદરનું કાઠું ધોઠું મંડક છે અને વહારનું પણ પાંદડાંના આકારે વે પાંપણ

વિગેરે છે, (તે સૌને જાણીતું છે.)

આ પ્રમાણે વીજી ઇન્દ્રિયોમાં પણ જાણી લેવું.

માવદ્દિય પણ લઙ્ઘિ અને ઉપયોગ ઇમ વે મેદે છે. તેમાં લઙ્ઘિ છે, તે જ્ઞાનદર્શન આવરણીય કર્મના ક્ષય ઉપશમરૂપ જેના સં-

નિધાનથી આત્મા દ્રવ્ય ઇન્દ્રિય નિર્વૃત્તિ તરફ જાય છે, અને તેના નિમિત્તથી આત્માનો મનના જોહાણથી પદાર્થનું ગ્રહણ કરવાનો ધ્યાન થાય; તે ઉપયોગ છે, તે આ હતી લલિપ્ત નિર્વૃત્તિ ઉપકરણ, અને ઉપયોગ છે, અને હતી નિવૃત્તિમાં ઉપકરણ અને ઉપયોગ છે, અને ઉપકરણ હોય; ત્યારે ઉપયોગ થાય છે. આ કાન વિશે વધી ઇન્દ્રિયોના આકાર અનુક્રમે નીચે મુજબ જાણવા.

કાનનો આકાર કદંબના ફુલ જેવો છે. આંત્રનો મથુર જેવો, અને તાકનો કલંબુકાના ફુલ જેવો છે, જીમનો કુરમ (ચરપો, તાવેલા)ના આકાર જેવો, તથા શરીરનો સ્પર્શ, ઇન્દ્રિયોનો આકાર જુદી જુદી જાતનો છે એમ જાણવું.

કાનનો વિષય. વાર યોજનથી આવેલા શબ્દને ગ્રહણ કરે છે, અને આંત્રનો વિષય. ઇકવીસ લાલ યોજનથી કંઈક અધિક દૂર હોય; અને તે પ્રકાશ કરનાર હોય; તે દેખાય છે.

પણ પ્રકાશ કરવા યોગ્ય હોય; તે ઇકલાલ યોજનથી કંઈક અધિક હોય; તેવા રુપને ગ્રહણ કરે છે, પણ વાકીની ઇન્દ્રિયોનો વિષય નવ યોજનથી આવેલો હોય; તેને ગ્રહણ કરે છે, અને જઘન્યથી તો, વધી ઇન્દ્રિયોનો વિષય આંગળના અસંખ્યેય ભાગ માત્ર છે. (નીચેના ટીપ્પણમાં સુલાસો કર્યો છે કે, વધી ઇન્દ્રિયોથી આંત્રનું જુદું છે, કારણ કે, આંત્રનો વિષય જઘન્યથી આંગળના સંખ્યેય ભાગ માત્રથી જાણવો અહીં સૂક્ષ્મત્રમાં શ્રોત્રના પરિજ્ઞાનથી હળાતાં, અથવા ઓછું થતાં ઇન્દ્રિયોની કેવી દશા થાય છે તે વતાવું. તેનો પરમાર્થ આ છે. અહીંયાં સંજ્ઞી પચેદ્વિય ળીવને ઉપદેશ આપવાનો અધિકાર હોવાથી ઉપદેશ છે તે કાનનો વિષય છે. (કાનની શક્તિ સારી હોય; તાજ ઉપદેશ સંબંધાય.) ઇટલા માટે તેની પર્યાસિમાં વધી ઇન્દ્રિયોની પર્યાસિ પળ સાથે સૂચવી.

(કાને સંબંધીને જીવરક્ષા માટે આંત્રથી જોડેને ચાલે; વિચારીને વોલે વિશેરે છે, તેથી વીજી ઇન્દ્રિયોનું પળ સ્વરુપ વતાવું છે.)

आ कान विगेरेनो आरुपानी साथे संबंध थतां; जे ज्ञान थाय छे, ते ज्ञान उमर वृद्ध थतां ओछुं थाय छे, ते हवे वतावे छे. मूळसूत्रमां कहुं छेके:-
 “अभिकंतं घ” विगेरे एटले उपर वताव्या प्रमाणे बुद्धाणमां शक्ति ओछी थइ जाय छे.

अथवा आरुा सूत्रनो आ प्रमाणे अर्थ लेवो के:-

कान विगेरे विज्ञानथी कमी थयेल कर्णभूत इन्द्रियो छतांपण अभिकंतं. विगेरेनो अर्थ आ थाय छे के:-जेम जेम उंमर वीते; तेम तेम बुद्धि-शक्ति ओछी थाय; तेमां प्राणीओने कालेकरेली शरीरनी अवस्था जेमां यौवन विगेरे वय (उमर) छे. तेने जरा अ-थवा मृत्युना सामे जवानुं छे. कारण के अहीथां शरीरनी चार अवस्थाओ छे, (१) कुमार (२) यौवन (३) मध्यम (४) वृद्धत्व छे, एम जाणवुं. ते शास्त्रमां कहुं छे. के:-

“प्रथमे वयसि नाथीतं, द्वितीए नाजितं धनम। तृतीए न तपस्तप्तं, चतुर्थे किं करिष्यति ? ॥ १ ॥

पहेली वयमां विद्या न भण्यो, बीजी वयमां धन न मेळवुं. त्रीतीमां तप न कर्यो. (एवो आळसु माणस इन्द्रियो थाकतां. चौथी अवस्थामां थुं करवानो छे !)

तेथी पहेली वे अवस्था जतां वृद्धावस्थाना सामे वय जाय छे, अथवा बीजीरीते त्रण अवस्थाओ छे. (१) कुमार (२) यौवन (३) वृद्धावस्था छे कहुं छे के:-

“पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने। पुत्राश्च स्थाविरे भावे, न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥ १ ॥”

બાલક પળામાં પિતા રક્ષા કરે છે. યૌવનઅવસ્થામાં ધર્મી વચાવે છે. અને દુદ્ધાવસ્થામાં દિકરા પાલે છે, પણ સ્ત્રીને કોઈપણ અવસ્થામાં સ્વતંત્રતા આપવી યોગ્ય નથી.

અથવા વીજી રીતે ત્રણ અવસ્થાઓ છે. (૧) બાલ (૨) મધ્ય અને (૩) દુદ્ધત્વ એમ છે. કહું છે કે—

આષોઢશાન્નવેદ્યાલો, યાવત્શીરાન્નવર્ત્તકઃ । મધ્યમઃ સસતિં યાવત્પરતો બુદ્ધ ઉત્પતે ॥ ૧ ॥

દુધ અને અન્ન જ્વાનાર (જન્મથી લઈને) સોલ વર્ષ સુધી બાલક કહેવો, અને સીત્તર વર્ષ સુધી મધ્યમ અને ત્યારપછી દુદ્ધ કહેવો, આ વધી અવસ્થામાં પણ જે ઉપચયવાલી (બલ વધે ત્યાં સુધી) અવસ્થા હોડીને આગલ ગણ્યો અતિક્રાંત વયવાલો જાણવો. (“વ” સમુચ્ચયના અર્થમાં છે.)

અહીંમાં કાન, ચક્ષુ, નાક, જીભ, અને સ્પર્શ ઈન્દ્રિયોના અસ્ત (નાશ) પામેલા સમસ્ત જ્ઞાનની વાત ફક્ત ન લેવી પણ તેની સાથે શરીરની વીજી શક્તિઓ પણ નાશ થતાં મૂઢપણું આવે છે. (આ કરવું આ ન કરવું. એવો વિવેક નહુ થાય છે.)

તેથી વય ઉલંઘતાં (શરીરની શક્તિ ઓછી થતાં) વિચારીને તે પ્રાણી (સંસારમાં મોહ રાજનારો પુસ્વ) નિશ્ચયથી વધારે મૂઢપણું પામે છે. (પણ ધર્મ આરાધતો નથી) તેથીજ મૂલ સૂત્રમાં કહું છે કે—“તઓસ” વિગેરે

અટેલે ધોલા બાલ જોઈને અથવા શરીરપર કરીચલીપહેલી જોઈને પોતે હુંબુદ્ધો થયો એમ જાણી વધારે સ્વેદ કરે છે; અને તેથી મૂઢતા પ્રાપ્ત કરે છે અથવા તે સંસારી જીવને કાન વિગેરેની શક્તિ ઓછી થતાં તેને મૂઢતા આવે છે; એ પ્રમાણે દુદ્ધાવસ્થામાં તે મૂઢ ભાવને પામીને

प्राय-लोकमां अवगीत (तीरस्कार करवा योग्य) थाय छे. ते बतावे छे.

जेहिं वा साद्धिं संवसति, ते वि षं एगदा णियगा पुड्विं परिवधंति, सोऽपि ते णियए पच्छा परिवएजा, णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा, से ण हासाय ण कि-
ड्वाए ण रतीए विभूसाए सु० ॥ ६४ ॥”

बीजा लोको तो दूर रहो पण जेनी साथे घरमां रहे छे. ते पोताना पुत्र स्त्री विगेरे छे ते स्त्री पुत्र विगेरे पण एकदा एटले वृद्धाव-
स्थामां तेना पोताना सगा छतां तथा पोते समर्थ अवस्थामां कमाइने तेमने पोख्या हाता ते स्त्री पुत्र विगेरे पण तेनो तीरस्कार करे
छे. अने बोले छे के. आ मरतो नथी अने खाटलो पण मुकतो नथी. अथवा “परिवदंति” एटले परामभव करे. (छोकराओ तेमनुं
अपमान करातां बोले छे के. “बेस बेस ढोकरा? तुं थुं समजे छे.” विगेरे अथवा परस्पर वातो करे छे के. इवे आ बुढानुं थुं काम
छे. ए सगाओनोज तीरस्कार खमंतो नथी पण पोतानो आत्मा पण पोताने निंदाया योग्य थाय छे. ते बतावे छे.

‘वलिसन्ततमस्थिदोषितं, शिथिलस्नायुधृतं कडेवरम। स्वयमेव पुमान् जुगुप्सते, किमु कान्ता कमनीयविग्रहा?’

सर्वत्र करोचलीओ पडी गएल अने हाडकां बाकी रहेल तथा ढीलां पडीगएल स्नायु (नाडीओ) ने धारण करनार.

आहाहा आ मारं आवुं शरीर रहुं! आवुं पोतानुं शरीर जोइने पुरुष पोतेज पोतानी निंदा करे छे. तो सुंदर शरीरवाली स्त्री
निंदा करे तो तैमां थुं नवाइ छे!

गोवालीओ बाळक तथा स्त्री विगेरे मंद बुद्धिवाळाना ताटे द्रष्टांत द्वाराए कहेलो विषय वधारे बुद्धिमां ठसे छे. तेदळा माटे उ-
पर बलावेल विषयने समजवा माटे कथा कहे छे. धना शेटनी कथा, कौसंबी नगरीमां घणुं धन अने घणा पुत्रवालो धनो नामनो
सार्ववाह (मोटो वेपारी) हतो. तेणे एक वरवत पोते एकजाए घणा उपयो वडे स्वापतेय (पोतानुं कमाएळुं धन) मेळवुं. अने वधां
दुःखी जे भाइ सगां मित्र स्त्री पुत्र विगेरे हतां तेमने माटे उपभोगमां लीधुं. त्यार पळी आ शेट उमरना परिपाकथी बुढो थयो, त्यारे
तेणे साचववापां होंशीयार एवा पुत्रोने वधा कार्यनी चिन्तानो भार सोंपी दीधो, ते पुत्रो पण विचारवा लाग्या के आ बुढाए अमने
आवी अवस्थामां मूक्या के जेथी वधा माणसोमां हसो अग्रेसर थया, तेनो उपकार मानता छता उत्तम कुळनी सज्जनता धारण करता
रहा. पण कोइ वरवते कार्यना मसगे तेओ दूर थया, तेथी पोतानी स्त्रीओने पोतानो अशक्त बाप सोंप्यो ते स्त्रीओ पण घरनी श्रीभिं-
ताइथी ते बुढाने तेल मर्दन तथा स्नान तथा भोजन विगेरेथी यथायोग्य कार्य संतोष पमाडवा करती हती.

त्यार पळी केटलोक काळ गयो. त्यारे घरमा पुत्र परिवार तथा माल मीलकत वधतां ए स्त्रीओ पोताना पतिनी संपदाथी अ-
हंकारमां आवी. अने ते बुढो परवश थएलो अने तेनुं आखुं अंग कंपतुं हतुं. शरीरनां वधां द्वार अंदरना मळ विगेरे नीकळवाथी
गंधाला हनां. तेथी ते बुढा तरफ घरनी स्त्रीओ धीमे धीमे योग्य उपचार करवामां प्रमाद करवा लागी.

आ डोक्यो पण पोतानी ओळी सेवा थती जोइ चिन्तना अभिमानवडे तथा कुदरती लागणीथी दुःखना सागरमां डुबेलो वनी
छोकरानी बहुओनी फरीआद छोकराओ पाखे करवा लाग्यो, ते स्त्रीओने पोताना पतिए ठपको आपवाथी वधारे खेदवाली वनी
(ससरानी उपर क्रोध लावी.)ने थोडी पण चाकरी करवी छोडी दीधी, अने ते दरेक बहुओ एक विचारवाळी वनीने पोताना पतिने कहेवा

लागी के अमो आवी सारी रीते रात दिवस जागीने डोशानी चाकरी करीए छीए, छतां आ डोशो बुढ़ापाथी विपरीत बुद्धिवालो वनीने गुणोनो चोर थाय छे, अने जो अमारा उपर पण तमोने विश्वास न होय तो जे कोइ विश्वासवाला होय तेने काम सोंपो, तेथी छोकराओए पण तेज प्रमाणे कर्युं, अने बीजी बहुओने काम सोंप्युं, पण बीजी बहुओए वयां कार्योंने वरावर योग्य अवसरे कर्यो, पछी पुत्रोए डोशाने पूछ्युं, त्तारे पहेलांथी रीसाएलो डोशो तेज प्रमाणे निंदा करवा लाग्यो, अने कहेवा लाग्यो के मारा कहेवा प्रमाणे आ बहुओ पण काम करती नथी. एटले छोकराओए खातरीवाळा माणसोना वचनथी खरी वात जाणीने विचार्युं के, आ डोशानी वरावर चाकरी करवा छतां दृढ़ावस्थाथी व्यर्थ रोदणां खे छे, तेथी छोकराओए पण तेनी उपेक्षा करी तेथी बीजाओ आ-गळ पण अवसर आवतां छोकराओ डोशानी निंदा करवा लाग्या. आ प्रमाणे छोकराओए तथा बहुओए पराभव करेलो तथा समां वहालांए तथा नोकरोए अपमान करेलो अने तेदुं वचन पण कोइ न मानतुं जोइने घरनां वयां सुखीओमां ते एकलो दुःखी बुढ़ो पाछली अवस्थामां वधारे वधारे दुःख नोवा लाग्यो.

ए प्रमाणे बुढ़पाथी अज्ञात थएल शरीरवाळो बीजो बुढ़ो माणस पण तरबळाने वांकुं वाळवामां असमर्थ जेवो थतां कार्यनेज चाहाता लोकोमां पराभव पासे छे. कहुं छे के—

“गात्रं संकुचितं गतिर्विगलिता दन्ताश्च नाश गता, दृष्टिर्भ्रश्यति रूपमेव हसते वक्त्रं च लालायते।
वाक्यं नैव करोति बान्धवजनः पत्नी न शुश्रूषते, धिक्कष्टं जरयाऽभिभूतपुरुषं पुत्रोऽप्यवज्ञायते ॥ १ ॥

शरीर संकोचाइ गयुं. टांटीआ लथडवा लाग्या. दांत पडी गया. आंखोनुं तेज गयुं. मोठांमांथी लाळ पडमा लागी. सगां वहाळां कहेळुं करतां नथी. अने पोतानी स्त्री पण जोहती मागणी स्वीकारती नथी. आ हाहाहा ! बुढा थएळ पुरुषने अशक्त थतां पुत्र पण अपमान करे छे. ते कष्टदाइ बुढापाने धिक्कार हो—(विगेरे जाणवुं.)

आ प्रमाणे बुढापथी हारेलाने सगां वहाळां निंदे छे.अने ते पण गभराएलो वेवाकळोवनीने बीजा लोको आगळ पोताना घरनी निंदा करे छे. मूळ सूत्रमां “सो वा” इत्यादि शब्दो छे. ते पहेलांनी अपेक्षाए बीजो पक्ष सूचवे छे. एटले एम जाणवुं के सगां वहाळां अपमान करे छे. अथवा पोते बुढो थतां दुःखने लीधे सगां वहाळांनी निंदा पारका आगळ पोते करे छे. अथवा पोते गभरापणथी सगांनुं अपमान करे छे.

कदाच कोट्टए पूर्व धर्म आराध्यो होय तेवानुं धर्मात्मा जीवो बुढापामां अपमान न करे तो पण तेनुं दुःख दूर करवाने तेओ समर्थ थता नथी तेवुं सूत्रकार कहे छे. “के तारा ह्योकरा तथा बहुओ तने तारवा माटे शक्तिमान नथी अथवा तने शरण आपवा योग्य नथी तेमज तुं पण तेओने तारवाने समर्थ नथी तेम शरण आपवा योग्य नथी (आपदाभांथी वचावे ते ज्ञाण छे) जेम महा श्रो-तवडे (पाणीजा पूरमां सारा नाक्किने आश्रयी जे नावमां वेसाय तो पार उतराय) जेनो आश्रय लड्ने बेसीए अने भय न आवे ते शरण छे किल्लो अथवा पर्वतने आश्रये वचे; अथवा शूर पुरुष गामने वचावे ते शरण छे.

“जनमजरामरणभयै, रभिद्भुते ढ्याधिवेदनाधस्ते । जिनवरवचनान्दन्यत्र, नास्ति शरणं क्वचिह्येके ॥ १ ॥”

जन्म जरा अने मरणना भयथी पीडाएळा अने रोगनी वेदनाथी बेराएळा पुरुषने जिनेश्वरजा वचनथी बीजुं कंइ शरण आ

लोकमां कथांय नथी. उलटुं ते पीडाएली अवस्थामां पोते कोइनी हांसी करवा योग्य रह्यो नथी. किंतु जगत तेनी हांसी करे छे. ! जेनी पारकाथी हांसी थाय ते केवीरीते हर्ष पासे (पोते पोताना समक्ष के पाछळथी हसी खुसीनी वात करवा योग्य नथी किंतु हांसी करवाने योग्य छे. तेम तेनी साथे ओळंगवा, कुदवाने, ताकी पाडवा के तेवो बीजो कोइ जातनो वात करवा विगरेनो आनंद पण करवा योग्य नथी तथा तेनुं रूप विगरे स्त्रीओने गमतुं नथी उलटुं स्त्रीओ तेनी निंदा करे छे. अने कहे छे के. “तुं तारा आत्माने जोतो नथी ! माथुं जोतो नथी ! के जे थोळा वाळ रूप राखथी लेपाएल छे ! हुं तारी दिकरी जेवी जुवान हुं अने तुं मारी साथे आनंद (लग्न) करवा इच्छे छे. आ दुनीयामां जाणीतुं छे के ते बुद्धो संसार सुखने योग्य नथी तेम शरीरनी शोभा करवाने पण योग्य नथी अने कदाच शोभा करे तो पण वगडी गएली अने करोचली पडेली चामडीवाखो बुद्धो शोभतो नथी. कहुं छे के.

न विभूषणमस्य शुच्यते न च हास्यं कुत एव विभ्रमः? । अथ तेषु च वर्त्तते जनो, भ्रुवमायाति परां विडम्बनां॥

तेने शोभा करवी योग्य नथी. तेने हर्ष नथी अने स्त्रीने खुश करवानो विभ्रम (चेष्टा) कथांथी होय अने ते जतां जुवान स्त्री-ओमां खेल्वा जाय तो निश्चये मोटा अपमानने पासे छे.

जं जं करेइ तं तं न सोहए जोठवणे अतिक्रंते ॥ पुरिससस महिलियाइ, व एककं धममं पमुत्तणं ॥ २ ॥

जुवानी जतां बुद्धो माणस जे कंइ करे ते शोभतुं नथी. एटले एक धर्मने छोडीने स्त्रीने खुशी करवा जे कंइ बुद्धो करे ते वधुं निरर्थक छे.

अपशस्त सूळ स्थान कहुं हवे पशस्त सूळ स्थान कहे छे.

इच्चैवं समुद्रिष्ट अहोविहाराष्ट अंतरं च खलु इमं सपेहाष्ट धीरे सुहुत्तमवि, णो पमायष्ट वओ अच्चैति
जोडवणं व. (सूत्र. ६५)

अथवा जे कारणथी ते वहालांओ संसार समुद्रथी तारवा के वीजाना भयथी रक्षण आपवा समर्थ नथी एवुं ज्ञानना उपदेसथी उत्तम पुरुषने समजाय तो तेणे श्रुं करवुं ते कहे छे (इति शब्दनो उपर कहेछो अर्थ छे) अपशस्त मूल गुणस्थान (संसारी विषय सुख) मां रात्रेला जीवने बुढापानी अशक्तिथी वेरतां हर्षना माटे के क्रीडाना माटे के भोगविलास माटे अथवा शरीरनी शोभामाटे योग्यता नथी (परंतु ते तेणे पहेलेथी समजवुं जोइए) के संसारमां जे कंडं सुख अथवा दुःख पडे छे. ते दरेक पोताना शुभ अशुभ कर्मनुं फळ वथा प्राणीओने भोगववाहुं छे. एवुं जाणीने ते समजेला प्राणीए पूर्वे कहेला पहेला अध्ययन शस्त्र परिज्ञामां वनावेल महाव्रतोमां स्थिर चित्तवाला वनीने साधुए विचारवुं के अहो (पारा पुन्य उदयथी आवुं निर्मळ चारित्र मल्युं छे. एम जाणीने) सुंदर विहार करावा योग्य छे.” जेमां ज्ञानमां कहेल संयम अनुष्ठान छे. तेना माटे योग्य विहारमां तत्पर वनी जरा पण प्रमाद न करे. वली तेणे विचारवुं जोइए के आर्य क्षेत्र उत्तम कुळमां जन्म वीतरागनाो धर्म तेना उपर श्रद्धा अने आवां सुंदर महाव्रतो विगोरेनो सारो अवसर मने मल्यो छे. तो केवीरीते प्रमाद थाय तेथी विनेय (शिष्ये) तप संयममां जरापण खेद न पामतां उपर कहेल उत्तम वस्तु आर्य क्षेत्र प्राप्तिथी आनंद पामीने गुरु श्रुं कहे छे ते समजे. गुरु कहे छे के आ तारो योग्य अवसर छे, अनादि संसारमां घणा भव भमतां तने धर्म प्राप्ति थवी घणी दुर्लभ छे. माटे हे धीर ! आ सारा अवसरने विचारिने तुं एक सुहूर्त (४८ मीनीटनी अंदरनो

वखत.) पण प्रमाद वश न थजे (मूळसूत्रमां अनुस्वारनो लोप थयो छे. अने ते प्रमाणे बीजुं. पण व्याकरण विरुद्ध आवे तो समजी लेवुं के. मागशीमां तथा संस्कृतमां कंस्क भेद छे.) अंतर्मुहूर्तनो वखत वताववानुं कारण ए छे के. केवलज्ञान विनाना जीवोने समय विगेरेतुं वारीक ज्ञान नथी तेथी तेदलो वखत वताव्यो. खरी रीते तो एक समय मात्र पण प्रमाद न करवो एवो सुगुरुनो उपदेश जाणवो. कहुं छे के.

“सम्प्राप्य मनुषरवं संसारासारतां च विज्ञाय । हे जीव ? किं प्रमादाद्वा चेष्टसे शान्तये सततम्? ॥ १ ॥
मनुष्य पणुं णामीने संसारनी असारता समजीने. प्रमादथी केम वचतो नथी तथा हे जीव शांतिना माटे महेनत केम करतो नथी ?
ननु पुनरिदमतिदुर्लभ मगाधसंसारजलधिविभ्रष्टम् । मानुष्यं स्वद्योतकतडिह्यताविलसितप्रतिभम् ॥

तुं जोतो नथी के आ अतिदुर्लभ संसार समुद्रमां भ्रष्ट थएला मनुष्यने आगीआना कीडाना प्रकाशवा जेवुं अथवा विजलीना श्वकारा जेवुं संसारी सुख छे.

वकी शास्त्राकार कहे छे के शामाटे प्रमाद न करवो? सांभळो. तारी वय (उंमर) दिवसे दिवसे व्यतीत थाय छे. जुवानी चाली जाय छे. ! (मूळ सूत्रमां वय अने जुवानी एक छतां जुवानीमां मोह थाय माटे ते जुदुं वतावेछुं छे.) जुवानीमां धर्म अर्थ अने काम त्रणे सथाय छे. माटे मोहमां न पडतां तेमां धर्म साथी लेवो गुरु कहे छे के हे शिष्य! ते जुवानी जल्दीथी जाय छे. कहुं छे के.
“नइवेगसमं चवलं च जीवियं जोडवणं च कुसुमसमं । सोक्खं च जं अणिच्चं तिणिणिवि तुरमाणभोजाइं” ॥

विगेरे मारीने त्रास आपनारा पण छे.

शिव्य पूछे छे. शामाटे आवी परने पीडा आपनारी क्रिया करे छे.?

उत्तर—बीजो तेवुं नथी करी शकतो पण हुं वहादुर हुं एवुं अभिमान लावीने पैसो मेळववा मारवा विगेरेनी पाप क्रियामां ते जीव वर्ते छे. वली ए प्रमाणे ते अतिशय क्रूरकर्म करनारो समुद्रने तरवाणी क्रिया पण करे छे. छतां तेना पापना उदयथी कंइ पण न मेळवेलो. गांठनुं गुमावी केवो थाय छे. (केवुं अपमान पामे छे.) ते वतावे छे के जेओनी साथे ते वसे छे, ते माता पिता सगां विगेरेनुं पूर्वे जेणे पोषण कर्युं छे. अने आ वरवते जो ते न कमाइ लाव्यो होय तो तेओ तेनुं रक्षण करता नथी अथवा संसारी दुःखथी पार उतारता नथी. कदाच कमाइने लावे अने सगाने गोबे तो तेओ तारं रक्षण करवा समर्थ नथी तेमज हुं तेमना आळो-कना रक्षण माटे के परलोक ना भजाना माटे समर्थ नथी. वली एम समजवुं के-महा कष्टथी मेळवेळुं धन पण साचवी राख्या छतां रक्षण आपवा योग्य नथी. ते वतावे छे.

उवाइयसेसेण वा संनिहिसंनिषओ किजई, इहमेगोसिं अंसंजयाण 'भोयणाए' तओ से एगया रोग-समुपयाया समुपजंति, जेहिं वा सळिं संवसइ ते वा णं एगया नियगा तं पुविं परिहरंति, सो वा ते नियगे पच्छा परिहरिजा, नालं ते तव ताणाए'वा'सरणाए वा, तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा सरणाए वा (सू.६७)
ते षणुं स्वायुं (भोगव्युं.) हवे तेमांतुं थोडुं वाकी छे. अथवा जे नथी भोगवायुं तेनो हुं संचय करे छे. अथवा उपभोग करवाने

माटे पुष्कळ सुख लेवा द्रव्यनो संचय करे छे. ते लोभीओ जीव आ संसारमां असंयत. (संसारसुखना चाहक.) ना माटे अथवा साधुनां वेश मात्र धारेल पण साधुगुणथी रहित एवाने जमाडवा माटे धन एकटुं करे छे. तेने गुरु कहे छे के ते तने अंतराय कर्मनो उदय आवतां तारी संपत्ति माटे सहायक नही थाय अथवा द्रव्य क्षेत्र काळ भावना निमित्तथी ज्यारे तने असातावेदनीयकर्मनो उदय थाय ल्यारे रोगो आवतां ताव विगेरेथी तुं पीडाय छे. (त्यारे ते धन के सगां कंड पण काम लगतां नथी) ते पापी ज्यारे तेना पाना उदयथी कोढ, क्षय रोग, विगेरेथी पीडाएलो ज्यारे तेहुं नाक झरे छे. अथवा हाथ पग गळे छे. (लथडे छे.) अथवा दम च-दवाथी अशक्त यतां जे सगां वहालां साथे पोते वसेलो छे ते तेना दुःखथी कंटाळी भयंकर रोग उत्पन्न यतां तेने त्यजे छे. (क्षय-रोगीना आश्रममां मोकळे छे.) अथवा सगांने यणो कंटाळो आपे तो ते सगां तेनी वेलाइथी तेनी उपेक्षा करे. एटले वधा सगां तजीदे. अथवा न तजे तोपण ते रोगोथी वचाववा के शरणुं आपवा समर्थ नथी ल्यारे रोगीए शुं करवुं! ते गुरु कहे छे के समताथी सहन करवुं.

जाणिस्तु दुक्खं पत्थेयं सायं (सू. ६८)

आ प्रमाणे बुद्धिमाने दरेक प्राणीहुं दुःख के सुख तेना पुन्य पापथी आवेळुं छे. ते विचारवुं एटले ताव विगेरेहुं दुःख आवतां पोताना करेलां कर्महुं फळ अवश्य भोगववुं पडजे. माटे हाय पीट न करवी कहुं छे के.

“सह कलेवर ! दुःखमचिन्तयन्, स्ववशता हि पुनस्तव दुर्लभा । बहुतरं च सहिष्यसि जीवहे! परवशो न च तत्र गुणोऽस्ति ते ॥ १ ॥”

હે શરીર! તું વીજો વિચાર કર્યા વિના દુઃસ્વને સહન કર કારણકે હાલ તને સ્વચક્ષતા મળી છે. તે દુર્લભ છે. પણ જો તું શાયપીટ કરીશ તો પરમવમાં ઘણાં દુઃસ્વ ભોગવવાં પડશે. ત્યાં પરવક્ષતા છે. તને ત્યાં વિશેષ લાભ નથી.

एथી ज्यां सुधी कान विगरेनी शक्ति न हणाय अने तारा सगा तने बुद्धो यतां न निंदे अने दया लक्ष्मीने तारं पोषण करवानो वरत न आवे तथा क्षयरोगी यतां घरमांथी न काढे त्यां सुधी तું तारो आत्मार्थ (परलोकतुं हित) साधी छे ते वतावे छे.

अणभिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए (सू. ६९)

(सूळ सूत्रमा “च” विशेष पणा पाटे छे. खलु शब्दनो अर्थ पुनः—थाय छे.) आ प्रमाणे पोतानी उमर जती मोहने संसारी जीव वेलो वने छे. एतुं पूर्वे कहेछुं छे. माटे ते पश्चात्ताप न करवो पडे तेथी जुवानअवस्थाમાં बुद्धिथी विचारिने आत्महित करे.

मश्र—शुं जुवनीमांज आत्महित करवुं.? के वीजी वरतमां पण करवुं!

उत्तर—वीजाए पण आत्महित ज्यारे समज्यो होय त्यारे करी लेवुं. अर्थात् बोध मळे त्यारे धर्म साधी लेवो ते वतावे छे.

खणं जाणाहि पंडिए (सू. ७०)

क्षण—ते धर्म करवानो समय छे. ते आर्यक्षेत्र उत्तम कुळ विगरे छे. अने निर्दायोय, पोषण करवा योय, तथा तज्जावाना दो-षयी दुष्ट छे. तेवा जरा (बुद्धाप) वालकपणुं अथवा रोग छे. ते न होय त्यारे गुरु कहे छे. हे पंडित हे आत्मज्ञ! तું बोध पाप्त अने आत्महित कर अथवा खेद पापता शिष्यने गुरु कहे छे. हे शिष्य! ज्यांसुधी तारी जुवानी वीती नथी अथवा निर्दापात्र थयो नथी

अथवा पूर्वे कहेला ऋण दोषथी रहित छे, त्यांसुधी हे पंडित शिष्य द्रव्य क्षेत्र काळ भावना भेदथी भिन्न अत्रसरने आ प्रमाणे तुं जाण बोध पास, ते वतावे छे.

द्रव्य-क्षण ते तुं जंगमपणुं पाभ्यो छे. पांच इंद्रियो छे. उत्तम कुळमां जन्म्यो छे. रूप बळ आरोग्य अर्ने आयुष्य साहं पाभ्यो छे आ प्रमाणे उत्तम मनुष्य भव पापीने संसार समुद्रथी पार उतारवा समर्थ चारित्रनी प्राप्तिने योग्य तने अवसर मत्थो छे अर्ने अनादि संसारमां भ्रमता जीवने आ अवसर मत्वो दुर्लभ छे. कारणके चारित्र मनुष्य जन्ममां छे. देव नारकीना भयमां सम्यक्त्व तथा ज्ञानना बोध रूप सामायिक छे. अर्ने तिर्यंचमां कोकनेज देशविरति (श्रावकनां व्रत.) होय छे.

क्षेत्र क्षण ते जे क्षेत्रमां चारित्र मळे ते सर्व विरति अधोलोकनागममां अथवा तिर्यंच क्षेत्रमांज छे तेमां पण अढीद्वीप अर्ने वे समुद्रमां छे. तेमांपण “१५” कर्म भूमिमां छे. तेमां पण भरतक्षेत्रनी अपेक्षाए “२५॥” देशमां चारित्रधर्म प्राप्त थाय छे. आ प्रमाणे क्षेत्ररूप अवसर दुर्लभ जाणवो बीजा क्षेत्रोमां पहेलां वेज सामायिक छे. बीजा घणा द्वीपो अर्ने समुद्रो छे. तेमां सम्यक्त्व अर्ने श्रुत सामायिक छे. तथा कोइकने देशविरतिनो संभव थाय छे.) काळक्षण—

काळरूप अवसर आ अवसर्पिणीमां ऋण आरा जे सुखम, दुखम, दुखम सुखम. तथा दुखम नामना ऋण आरामां धर्म प्राप्ति छे. तथा उत्सर्पिणीमां बीजा चोथा आरामां सर्व विरति सामायिकनी प्राप्ति छे. आ नवो धर्म प्राप्तता जीवआश्रयी कहुं पण पूर्वे धर्म पामेला तो तिर्यंक अथवा उर्द्ध तथा अधोलोकमां तथा वथा आरामां जाणवा. भावक्षण—

ते वे प्रकारे छे. कर्म भावक्षणनो कर्म भावक्षण कर्म भावक्षण ते कर्महुं उपशम थवुं. क्षय उपशम थवुं अथवा सर्वथा क्षय थवुं

ए त्रणमातुं कंइपण प्राप्त थाय ते अवसर जाणवो तेमां उपशम श्रेणीमां चारित्रमोहनीयउपशम यतां अंतर्मुहूर्त्त काल औपशमीक नामनो चारित्र क्षण थाय छे ते चारित्र मोहनीयनो क्षय यतां अंतर्मुहूर्त्तनोज उद्गमस्य यथाख्यातचारित्र नामनो क्षण थाय छे. अने क्षय उपशमवहे क्षायोपशमिक चारित्रनो अवसर छे ते उत्कृष्टथी थोडु ओहं एवो पूर्व कोडी वर्षनो चारित्र काल जाणवो. सम्यक्त्व क्षण ते अजयन्य उत्कृष्ट (मध्यम) स्थितिमां वर्तता आयुष्यवाळा जीवने छे.

अने बीजा कर्मोतुं पलयोपमना असंख्येय भाग ओहं एवा सागरोपम कोडाकोडी स्थितिवाला जीवने छे. तेनो अनुक्रम आ प्रमाणे छे. सम्यक्त्वतुं वर्णन.

श्रेणी—(मिथ्यात्वनी चीकणा कर्मनी बंधाएली गांठ) वाळा अभव्य जीवोथी अनंत गुणवाकी शुद्धिथी शुद्ध थाएल मति, श्रुत, विभंग ए त्रण ज्ञानमांथी कोइपण साकार उपयोग जे जीवने होय ते शुद्ध लेख्या (तेजु, पदम, शुक्ल) मांनी कोइपण लेख्यावालो जीव अशुभकर्मप्रकृतिनो चार टाणीओ रस तेने बे टाणीओ करीने अने शुभ प्रकृतिना बे टाणीओ (चासणीमां जेम वथारे रसना तार पडे ते प्रमाणे कर्मना भाव होय. अने आत्मा वेदे ते टाण कहेनाय छे.) ने चार टाणीआवाळो करी बांधनो तथा ध्रुव प्रकृतिने परिवर्त्तमान करतो भव प्रायोग्य बांधतो जीव जाणवो. हवे ध्रुव प्रकृति बतावे छे.

ज्ञानआवरणीय पांच; तथा दर्शनावरणीय नव—मिथ्यात्वनी एक—तथा सोल कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस कार्मण शरीर, वर्ण, गंध, रस स्पर्श अशुखलु उपघात—निर्माण अने पांच अंतराय ए वधी मलीने ४७ ध्रुव प्रकृति छे. ध्रुवनो अर्थ एवो छे के, ते हमेशां बंधाय छे. मनुष्य अथवा तिर्यंच आ बेमांथी कोइपण जीव ज्यारे प्रथम सम्यक्त्व मेळवे छे, त्यारे आ २१ प्रकृति परिवर्त्तनवाकी बांधे छे ते नीचे मुजव छे. देवगति तथा अनुपूर्वी मली बे. तथा पंचेद्रिय जाति वैक्रिय शरीर, अंगोपांग मली बे, तथा समचतुरस्रसंस्थान, पराघात, उ-

च्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, प्रशस्त त्रसादि दशक, शाला वेदनिघ उचंगोत्र मली २१ छे. पण दैव अने नारकिना जीव मनुष्यगति अने अनुपूर्वी मली वे. तथा औदारिक शरीर अंगोपांग मलीने वे. पहेळुं संवयण मलीने ए पांच सहीत शुभ वांधे छे.

तमतमा (सातमी नारकी.) वाला तिर्यंच गति तथा अनुपूर्वी मली वे तथा नीच गोत्र सहीत वांधे छे.

आ प्रमाणे तेना अथ्यवसाय उत्पन्न यतां आयुष्य न वांधतो प्रथम उपर कही गया ते जीव यथा पट्टिति नामना करणवढे ग्रंथीने मेळवीने अपूर्व करणवढे मिथ्यात्वने भेदीने अंतरकरण करीने अतिवृत्तिकरणवढे सम्यकत्व मेळवे छे.

त्यारपळी क्रमवढे कर्म ओड्यां यतां चढता भावना शुद्ध कंडक (शुद्ध भावना अंशने कंडक कहे छे.) मां देश विरति तथा सर्व-विरति (साधुपणा)नो अवसर आवे छे. आ प्रमाणे कर्म भाव क्षण कहीने नो कर्मभाव क्षण वतावे छे.

नो कर्मभावक्षण ते आळस मोह अवर्णवाद तथा स्थंभ (मान विभेरे)ना अभावे सम्यकत्व विभेरेजी प्राप्तिनो अवसर छे.

कारणके आळस विभेरेथी हणाएलो (प्रमादी जीव) संसारथी छुटवा समर्थ मनुष्य भव पापीने पण धर्म श्रद्धा विभेरे उत्तम गुणी मेळवतो नथी. कहुं छे के.—

“आलसस मोहऽवन्ना थंभा कोहा पमाय किविणत्ता भयसोणा अन्नाणा, विक्खेव कुऊहला रमणा ॥ १ ॥

आलस्य मोह अवरण (निंदा) स्थंभ (अहंकार) क्रोध प्रमाद, कृपणता, भय, शोक अज्ञान विक्षेप कुतूहल रमण आ १३ कारणो (१३ काठीआ)छे.

एएहिं कारणोहिं, लङ्घण सुदुहहं पि माणुस्सं । न लहइ सुइं हिअकरिं संसारत्तारणिं जीवो ॥ २ ॥

ते मळतां जीव पोते मनुष्यपणुं असूत्य छे. ते मेळवीने पण संसारने पार उतारनार हितकरानार गुरुवाणीने पासतो नथी. आ प्रमाणे चार प्रकारनो क्षण वताव्यो तेमां एम समजवुं के द्रव्यक्षणमां जंगमपणाथी श्रेष्ठ मनुष्यजन्म अने क्षेत्र क्षणमां अर्थक्षेत्र छे. काळ क्षणमां धर्म चरणनो काळ छे भाव क्षणमां क्षय उपशम विभेरे छे. आ प्रमाणे सारो अवसर पामीने धर्म आराधवो जोइए वली कहे छे के.

जाव सोयपरिणणा अपरिहीणा, नेत्रपरिणणा, अपरिहीणा द्याणपरिणणा अपरिहीणा जीह परिणणा फरि० इच्चेएहिं विस्वरुवेहिं, पणणाणेहिं अपरिहीणेहिं आयदुं संसं समणुवासिजासि (सू.७१) तिवेमि

ज्यांसुधी आ नाश पामनारी कायाना अपशद (निसकरामपणा)थी काननुं ज्ञान (सांभळुं ते) बुढापणाना के रोगना कारण ओछुं न थाय त्यांसुधी धर्म करी लेवो.

आप्रमाणे आंख कान जीभ स्पर्शना विज्ञाननी शक्ति पण पोतानुं काम करवामां निष्फल न थाय त्यांसुधी पण धर्म साधवो. जो पांच इंद्रियोनी शक्ति ओछी थशे तो धर्म नही थाय आ शक्ति ओछी थशे तो इष्ट अनिष्टपणे जुदा जुदा ज्ञानवढे काम नहि थाय माटे ज्यांसुधी शक्ति होय त्यांसुधी आत्मानो अर्थ ते सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्ररूप साधी लेवुं. आ त्रण सीवाय वाकी वयां अनर्थ समजवां अथवा आत्माने माटे जे प्रयोजन छे. ते आत्मार्थ छे. अने ते चारित्रनुं अनुष्ठान जाणवुं. अथवा “आयत” ते अपर्यवसान (अनंतपणा) थी मोक्षज छे. ते मोक्ष अर्थ छे. तेने साधी ले. अथवा आयत्त (मोक्ष.) तेज जेनुं प्रयोजन छे. एवा पूर्व कहेला सम्यक्

दर्शन ज्ञान चारित्र्य छे. तेमां निवास कर एटले शास्त्रोक्त रीतिए अनुष्ठान वढे तुं आराध, अने पछी पण वय न वीती होय ते विचारिने अवसर वेळीने कान विगेरेतुं ज्ञान ओहं थतुं जाणीने आत्मार्थने आत्माभां धारण करजे.

अथवा ते आत्मार्थ वढे एटले ज्ञान दर्शन चारित्र्य आत्मार्थ वढे आत्माने रंजित करजे. (तेमां आनंद मानजे.) अथवा आय-तार्थ जे मोक्ष छे. तेने करीथी संसारमां न आवतुं पढे ते माटे शास्त्रमां कहेली विधिए अनुष्ठान करीने आत्मावढे (मोक्षने) पामजे.

आ प्रमाणे सुधर्मस्वामी जंबूस्वामीने कहे छे. भे श्री वर्धमानस्वामी पासे अर्थथी जे सांभळ्युं. ते हुं तने सूत्र रचनावढे कहंहुं. आ प्रमाणे बीजा अध्ययननो पहेलो उदेशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेला उद्देशानो बीजा उद्देशा साथे आ प्रमाणे संबंध छे के विषय—कषाय तथा माता—पिता विगेरेनो प्रेम विगेरेथी जे बंधन ते लोक छे. तेनो विजय करवाथी अर्थात् राग द्वेषने छोडी समभाव धारण करवाथी मोक्षनी प्राप्ति छे. अने तेनो हेतु चारित्र्य छे. जेम संपूर्ण भावने अनुभवे छे, एवा रूपवाळो आ अध्ययननो अर्थ अधिकार पूर्वे कहो छे, तेमां मातापिता विगेरे लोकनो विजय करवाथी रोग अने बुद्धापानी अशक्तिया ज्यांस्तुथी अशक्त न थाय; ते पहेलां आत्मार्थ ते संयमने आराधवो; ए पहेला उद्देशाभां कहंहुं; अने आ बीजा उद्देशाभां पण ते संयमने पाळतां कदाच ते जीवने मोहनीयकर्मनो उदय थवाथी अरति थाय; अथवा अज्ञानकर्म विगेरे, तथा लोभना उदयथी पूर्वकर्मना दोषथी संयममां स्थिरता न रहे; तो उत्तम साधुए ते अरति विगेरेने दूरकरी जेम, संयममां दृढता थाय तेम करतुं. ते आ बीजा उद्देशाभां वतावुं छे. अथवा आठ प्रकारना कर्म जेम दूर थाय; ते आ अध्ययनना अर्थाधिकारमां कहंहुं

हे, ते केवीरीते कर्मक्षय थाय ते वतावे हे.

आचा०

॥३१५.

अरइं आउट्टे से मेहावी, खणंसि मुके (सू. ७२)

अरइं आउट्टे से मेहावी, खणंसि मुके (सू. ७२)
तेने सारी रीते पाळेते संय-
ममां कदाचित्तरति थाय; तेशी उपदेश आपे हे के, अरति न करवी; ते आ ७२ मां सूत्रमां वताव्युं हे.

पूर्वसूत्र साथे एनो संबंध कहेवो जोइए ते वतावे हे. ७१ मा सूत्रमां कहुं:—आत्मार्थ ते संयम हे. तेने सारी रीते पाळेते संय-
ममां कदाचित्तरति थाय; तेशी उपदेश आपे हे के, अरति न करवी; ते आ ७२ मां सूत्रमां वताव्युं हे.
तथा परंपर सूत्र संबंध आ प्रमाणे हे. “खणं गाणाहि पंडिए.” एटले चारित्रिनो क्षण (अवसर) मेळवीने अरति न करे; तथा
पथमना सूत्र साथे आ संबंध हे. “सुअं मे” इत्यादि में भगवान पासे आ सांभळ्युं हे के, “अरइं” इत्यादिके साधु अरति न करे.

आ अरति साधुने पांच प्रकारना आचारमां मोहना उदयथी कषाय, तथा प्रेमथी एटले मातापिता स्त्री विगेरेमां स्नेह थतां थाय
हे, ते समये संसारनो स्वभाव जाणेला बुद्धिमान साधुए ते मोहने दूर करवो. जो तेम करे तो चारित्र पळे नहिं तो शुं थाय? ते
कहे हे. जेम, कंडरीकने दुःख थयुं; तेम, संयममां अरति करनारने नरकगमन हे, तथा विषयवांच्छामां रति दूर करीने साधुनी दत्र
प्रकारनी गुरूनी आज्ञामां रहेवाख्य विगेरे समाचारीमां ते कंडरिकना भाइ हुंडरिकनी माफक रति थाय; तो संयममां अरति न थाय तेज कहे हे:-
साधु संयममां रति करे (आनंद माने) जेशी तेने कोइपण प्रकारनी बाधा (अहचण) न आवे; तथा आलोकमां पण संयम शि-
वाय बीजुं सुख हे, एवुं मनमां पण न लावे. कहुं हे के:—

स्थितितलशयनं वा प्रान्तभैक्षाशनं वा, सहजपरिभवो वा नीचदुर्भाषितं वा, महति फलविशेषे नित्य-

सभ्युद्यतानां, न मनसि न शरीरे दुःख सुरपाद्यन्ति ॥ १ ॥

पृथ्वीनां तळमां शयन छे तुच्छ भिक्षातुं भोजन, अथवा छुदरती लोकतुं अपमान, अथवा नीच पुरुषोनां महेणां सांभळनां; आ-
दळं छता उत्तम साधुओ मोटाफळ (मोक्षने) माटे निरंतर उद्यम करनारा छे. तेमने मनमां के, शरीरमां पूर्वे कहेलां कृत्य कंइपण
दुःख उपजावी शकतां नथी. (मोक्षार्थी—साधु तेने गणकारता नथी)

तणसंथारनिरनणोऽपि, सुणिवरो भद्र रागमयमोहो । जं पावइ सुत्तिसुहं, तं कत्तो चक्कवट्ठीवि ? ॥ २ ॥”

घासना संथारे बेटेलो जे सुनि छे, अने तेणे राग-मद, मोह त्यज्यां छे, तेवो सुनिज सुत्ति-सुख पामे छे, तेतुं सुख चक्रवर्ती पण कयांथी पामे!
अहीं चारिज मोहनीयकर्मना क्षय उपशमथी जे पुरुषने चारिज मळ्यु छे, तेने पाळो मोहनो उदय थतां घेर जवानी इच्छावाळाने आ
सन्नवडे उपदेव अपाय छे, अने ते संबंधमां जे कारणोथी संयममांथी भ्रष्ट थवाय छे, ते हेतुओने निर्युक्तिकार कहे छे.

विइउइसे अदढो उ, संजमे कोइ हुज्ज अरईए । अद्वाणकम्मलोभा, इएहिं अउझरथ दोसेहिं ॥ १९७ ॥

(पहेला उद्देशामां निर्युक्तिनी गाथा घणी कही; अने आ उद्देशामां आ एकज छे, तेथी भंदुद्धिवाळा शिष्यने आरेका (शंका)
थाय के, आ एक पण पहेला उद्देशानी हशे; ते शंका दूर करवा बीजा उद्देशो एतुं गाथामां लखवुं पड्युं छे) बीजा उद्देशामां वतावुं
के, कोइ कंडरीक जेवा साधुने १७ प्रकारना संयममां मोहनीयना उदयथी अरति थाय; अने तेथी संयममां ढीळापणुं थाय; अने ते
मोहनो उदय मनमां रहेला जे दोषो छे, तेनाथी थाय छे, ते दोषो अज्ञान, लोभ, विगरे छे.

एटले आदि शब्दथी इच्छा मदन काम विगेरे पण लेवा ते अज्ञान लोभ काम विगेरेथी साधुने अरति थाय छे. ते वतावुं. शंका—अरतिवाला बुद्धिवानने आ ७२ मा सूत्रवडे उपदेश अपाय छे के संयममां अरति थाय तो बुद्धिवान साधुए अरति दूर करवी परंतु संसारनो स्वभाव जाणेलो आबुं कहेवाथी ते अरतिवालो थाय नही अने जो अरतिवालो थाय तो संसारनुं स्वरूप जाणनारो विद्वान न कहेवाय आ वेने परस्पर विरोध होवाथी जेम एक जग्याए छाया अने तडको न रहे ते अहीं ते बुद्धिमान न कहेवो अथवा अरतिवालो न कहेवो. कहां छे के.

नज्ज्ञानमेव न भवति यस्मिन्नुदिते विभाति रागगणः। तमसः कुतोऽस्मिन् शक्तिर्दिनकरकिरणायतः स्थातुमः?”

जेना उदयथी राग गण (संसारप्रेम) उत्पन्न थाय छे. तेने ज्ञान न कहेवुं कारणके ज्यां सूर्यना किरणो प्रकाशीत थयां होय त्यां अंधाराने रहेवानी शक्ति कयांथी होय? विगेरे छे.

जे अज्ञानी जीव मोहथी चित्तमां विकल्प करे ते विषयसुखथी निश्चय (लक्की) रागद्वेष विगेरे सर्व जोडल्यां जे संयमना शत्रु छे, तेमां रति करे अने संयममां अरति करे.

अज्ञानान्धाश्चटुलवनितापाङ्गुक्षिपितास्ते; कामे सक्तिं दधति विभवाभोगतुङ्गार्जने वा; विद्वच्चित्तं भवति हि महन्मोक्षमार्गैकतानं, नाल्पस्कन्धे विटपिपिनि कषट्यंसभिर्द्धिं गजेन्द्रः ॥ १ ॥”

अज्ञानथी आंधला थएला, सुंदर स्त्रीओना अपांगथी डामाडोल थएला कामीओ काममां प्रेम धारण करे छे. अथवा वैभवना

विस्तारने मेलववा चाहे छे. पण जेथो विद्वान छे, तेनुं चित्त मोटा मोक्ष मार्गमां एकतान वाळुं छे. कारणके श्रेष्ठ हाथी नाना पा-
तळा थडवाला झाडनी साथे पोतालुं शरीर पसतो नथी.

आचार्यनो उत्तरः—अमे तेने जुहुं कहेता नथी. कारणके, चारित्रि पामेलाने आ उपदेश छे, अने चारित्रिप्राप्ति ज्ञान त्रिवाप्य नथी; कारण के चारित्र्यनुं कारण ज्ञान छे अने कार्यए चारित्र छे. तथा ज्ञान, अने अरति तेने विरोध नथी; परंतु रतिनो विरोधी अरति छे. तेशी संयममां जेने रति छे, तेनी साथे अरति बाधास्वरूप छे, परंतु ज्ञाननी साथे तेनो विरोध नथी; कारणके, ज्ञानीने पण चारित्रि मो-
हनीयना उपशमथी संयममां अरति थाय छे, कारणके, ज्ञान पण अज्ञाननुं बाधकज छे, पण संयमनी अरतिनुं बाधक नथी; तेज कहुं छेः-
ज्ञानं भूरि यथार्थ वस्तुविषयं स्वस्य द्विषो बाधकं, रागारातिशमाय हेतुमपरं युङ्क्ते न कर्तुं स्वयम् । दीपो
यत्तमसि द्यनक्ति किमु नो रूपं स एवेक्षतां, सर्वः स्वं विषयं प्रसाधयति हि प्रासङ्गिकोऽन्यो विधिः ॥१॥”

यणुं ज्ञान छे, ते यथार्थ वस्तुविषय संबंधी छे, ते पोताना शत्रु अज्ञाननुं बाधक छे. रागनो शत्रु, शम (शांतिने) माटे बीजो हेतु पोते जोडतो नथी. जेम दीवो छे ते पोते अंधारामां रूपने प्रगट करे छे, तेज अहंिया रूपने जुओ; कारणके, सर्व पासंगीक विधि पोतपोताना विषयने साथे छे. तथा आचार्य कहे छे केः—आ तमारा कानमां आवुं नथी.

‘बलवानिन्द्रियग्रामः, पण्डितोऽप्यत्र सुहृत्तीति’

इन्द्रियसमूह बलवान छे, अने तेमां पंडित पण शृंङ्गाय छे, एथी तमारुं कहेवुं कंइ विसातमां नथी.

अथवा जेने अरति प्राप्त न थइ होय; तेनेज एम कहेवाय छे, पण आ उपदेश संयम-विषयमां बुद्धिमान पुरुषने कहेवाय के, संयममां अरति न करवी; तथा संयममांथी अरति दुर करनारने केवा गुण मळे ते कहे छे:—

“स्वर्णं सि मुक्के” विगोरे वारीक काळने क्षण कहे छे. ते क्षण, जुनी साडी (वस्त्रने) फाडतां जेटली वार लागे; तेथी पण वारीक काळ सपय छे. आवा सूक्ष्म संयममां पण कर्म जे आठ प्रकारनां छे, अथवा संसारबंधन छे ते बंधन नथी, भरत महाराजा माफक मोह सूकी दे, तो तेनुं कल्याण थइ जाय. (केवलज्ञान पापीने मोक्षमां जाय;) अने जेओ उपदेश न माने; तेओ कंडरीक मुनि माफक चार गतिमां भ्रमण करे छे, अने दुःखसागरमां डुबे छे, तेज कहे छे:—

अपाणाय पुट्टावि एगे नियद्वति, संदा मोहेण पाउडा, अपरिगहा भविससामो, समुट्टाय लडे कामे

अभिगाहइ, अपाणाए मुणिणो पडिलेहंति, इरथ मोहे पुणो सद्दा नो हव्वाए नो पाराए (सूत्र-७३)

हित मानवुं अहित छोडवुं, ए जिनेश्वरणी आज्ञामां छे. तेथी विरुद्ध चालवुं ते अनाज्ञा छे, जे पुरुषो आज्ञावहार थइने परिषद अने ऊपसर्गथी कंटाळीने, अथवा मोहनीयकर्मना उदयथी कंडरीक विगोरे मुनिओनी माफक संयमथी भ्रष्ट थाय छे, ते जडपुरुषो जे-

मने करवा न करवानो विवेक नथी; तेओ मोहथी, अथवा अज्ञानथी बेरायला छे. कहूं छे के:—

“अज्ञानं खलु कष्टं, क्रोधादिभ्योऽपि सर्वपापेभ्यः। अथ हितमहितं वा न वेत्ति येनावृतो लोकः ॥ १ ॥”

खरेखर, क्रोध विगोरे बधां पापोथी पण अज्ञान मोडुं पाप छे, ते वणुं दुःख आपनार छे, ते अज्ञानथी बेरायलो माणस पोताना

हित-अहित पदार्थने जाणतो नथी.

आचा०

॥३२०॥

आ प्रमाणे मोहथी वेरायलो जडमाणस चारित्रि पासेलो छतां, कर्मना उदयथी, अथवा परिसहना उदयमां चारित्र धारण करेलो चारित्र मूकवा इच्छा करे छे अने बीजा साधुओ पोतानी रची प्रमाणे वृत्ति रचीने जुदा जुदा उपायोबडे लोक पासेथी पैसा ग्रहण करता छता कहे छे के:-अमे संसारथी खेद पासेला छीए; अने मोक्षनी इच्छावाळा छीए. तोपण, तेओ (अंतरंगत्यागी न होवाथी) जुदा जुदा आरंभमां, तथा विषय-अभिलाषामां वर्ते छे ते वतावे छे.

मन, वचन अने कायाना कर्मबडे जेनाथी वेराय ते परिग्रह छे. ते परिग्रह जेमानामां नथी; ते अपरिग्रहवाळा अमे थइशुं; एहुं बौद्धमत विगोरेना साधुओ माने छे, अथवा जैनदर्शनमां जे साधुओए साधुवेष पहेरेलो छे, तेओ पढी इच्छानुसार (भोळा माणसोने ठगीने) परिग्रह धारीने भोगो भोगवे छे. जे प्रमाणे निस्पृहता धारवी जोइए; तेज प्रमाणे बीजां महाप्रतो पाळवां जोइए; एटले जेनेतर मतवाळाए, अथवा पासस्थ (वेष मात्र धारी जैनसाधु) जेम परिग्रह धारेछे तेवीरीते मोडेथी कहे के, अमे सर्व जीवोना रक्षक (अहिंसक) छीए; छतां तेओ स्वार्थना माटे हिंसा करे छे, तेवीजरीते उपरथी कहे छे के:-अमे साचुं बोलीए छीए; अने खरीरीते तो, तेओ जुहुं बोले छे, जेम चोरी करता होय; छतां कहे के, अमे चोरी करता नथी; तेथी आवुं करनारा बौद्ध (ठगनी) मांफक बोलवाहुं जुहुं, अने करवाहुं जुहुं. एवा जगतने ठगनारा भोगनी इच्छाथीज वेष मात्रने धारे छे. कहु छे के:—

“स्वेच्छाविरचितशास्त्रः प्रव्रज्यावेषधारिभिः क्षुद्रैः । नानाविधैरुपायैरनाथवन्मुष्यते लोकः ॥ १ ॥”

सूत्रम्

॥३२०॥

पोतानी इच्छा मुत्रव शास्त्र वनावनारा, अने दीक्षायां वेव धारण करनारा शुद्र मनुष्योए जुदा जुदा उपायोथी अनाथने जेम छुटारो छुटे; नेम आ भोळा लोकोने आ साधुठगो छुटे छे, तेथी आ प्रमाणे वेवधारी साधुओ मेळवेला भोगोने भोगवे छे, अने तेवा बीजा भोगो मेळववा, तेवा तेवा उपायोमां वर्ते छे. ते कहे छे के:—

वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध पोतानी बुद्धिए मुनिना वेवने लजावनारा संसार सुखना उपायना आरंभयां चारंवार लागे छे. (मचेछे) आ विषयसुखना अज्ञानरूप भावमोहयां चारंवार कादवयां खुंवेला हाथी माफक बहार पोते पोताने काढवाने समर्थ नथी. जेम कोइ महा नदीना पूरयां वचयां जइने दुब्यो होय तो ते जल्दीथी तरवा के सामे किनारे आववा समर्थ नथी एज प्रमाणे कोइपण निमि- तर्था प्रथमयी घर स्त्री पुत्र धन धान्य सोतुं रत्न तांबु दास दासी विगरे वैभव छोडी त्यागवृत्ति स्वीकारिने आरातीयतीर (पाळो आववा के किनारे जवा ते समर्थ नथी ते) समान वरवासना सुखथी नीकळेला साधु थयो अने फरी ते वमेला भोगने पाळो ग्रहण करवा इच्छा करे तो संयम पण जाय तो मोक्षयां जइशके नहि तेम वरवालां षण संवरे नही पटले वने वाजुथी जुदी पहेली मुक- तोली माफक साधुपण जो संसार वांच्छना करे तो न ग्रहस्थ रहे तेम न साधु रहे तेथी ते वने प्रकारे अष्ट छे. कदां छे के.

“इन्द्रियाणि न गुप्तानि, लालितानि न च्चेच्छया । मानुष्यं दुर्लभं प्राप्य, न भुक्तं नापि शोषितम् ॥१॥”

जेणे इंद्रियोने कवजे लीधो नथी अथवा इच्छानुसार ते इंद्रियोने विषय सुखयां जोडी नथी तेणे मनुष्यपणुं पापीने न भोग भोगव्या न त्याग वृत्ति स्वीकारी (आ वधानो केहेवानो सार ए छेके साधुए साधु वेव धार्या पळी गमे तेदळां कष्ट आवे; तोपण धीरज राखी संयम पाळवुं.)

જેઓ ઉપર કહેલી અપહરણ (સંસારી વિષય સુલ) રવિથી દૂર થયલા છે, અને ઉત્તમ રવિ (ચારિત્રમાં પ્રેમવાલા) છે, તે કેવા હોય છે તે વતાવે છે.

વિસુત્તા હુ તે જણા, જે જણા પારગામિણો, લોભમલોભેણ દુશુંહમાણે લદ્દે કામે નામિ ગાહરૂ ૭૪

દ્રવ્યથી ઇટલે ધન સગાના અનેક રીતના પ્રેમથી મુકાયલા; અને આવથી વિષય કષાયથી પ્રત્યેક સમયે હુટતા સાધુઓ જે મ-વિલ્યકાલમાં વધારે વધારે નિર્લોભી વને છે, તે પુરુષો સર્વ પ્રાણિને સમાનભાવે ગણી નિર્મમત્વવાલા વની (સસારથી) પારગામી વને છે. પાર તે મોક્ષ છે, કારણકે, સંસાર—સમુદ્રના કિનારે જવાની વૃત્તિનાં કારણો જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર ઇ ત્રણ છે, તે ત્રણને પાર કહે છે. જેમ, લોકમાં સારા વરસાદને સોચાનો વરસાદ કહે છે. ઇટલે કારણને કાર્યમાં સમાવ્યું; તેથી તે પ્રમાણે જ્ઞાન દર્શન ચારિત્રનો પરે જવાનો આચાર જેમનો છે, તેઓ સંસારના મોહથી કે, વિષયકપાયથી મુક્ત થાય છે.

પશ્ચ:—તેઓ કેવીરીતે સંપૂર્ણ પારગામી થાય ?

ઉત્તર:—જોકે, આ લોકમાં લોભ છે, તે વધાને તજવો દુર્લભ છે. જેમકે ક્ષપક શ્રેણીમાં ચઢેલા મુનિને પણ ઓહો ઓહો કરતાં જરા જરાપણ લોભ રહે છે, તેવા જરા લોભને પણ ઉત્તમ સાધુ સંતોષવડે પૂર્વના લોભને નિંદતો; અને હોહતો સામે આવતા સુંદર વિલાસોને (લોકો પ્રાર્થના કરે; હતાં પણ) સેવતો નથી જેમ મહાત્મા પોતાના શરીરમાં પણ મહત્વ રહિત થયલો છે, તે પર વસ્તુના વિષયસુલમાં લુબ્ધ થતો નથી જેમકે, વ્રહ્મદસ, વક્રવર્ત્તિ ઇ પોતાના પૂર્વેયવના માહ ચિત્રમુનિને ઓહવીને પ્રાર્થના કર્યાં હતાં પણ,

तेणे भोगो न स्वीकार्या.

उपर प्रमाणे सुंदर भोगो जेणे त्याग्या; ते त्यागवाधी बीजुं पण त्यागेळुं जाणवुं ते आ प्रमाणे-क्रोधने क्षमाथी, तथा मानने कोमळताथी, मायाने सरळताथी, ए प्रमाणे बधा दुर्गुणोने निंदी उत्तम साधु छोडे छे.

सूत्रमां लोभ लेवानुं कारण ए छे के, ते बधा कषायमां मुख्य छे ते वतावे छे. ते लोभमां पहेलो साध्य असाध्यना विवेकथी शून्य छे तथा कार्य अकार्यना विचारथी रहितवनी ने एक धनमांज दृष्टि राखनारोज पापना मूळमां उभो रहीने सर्व क्रियाओ करे छे कहुं छे के.

“धावेइ रोहणं तरइ सायरं, भमइ गिरिणिजुंजेसुं । मारेइ बंधवंपिहु पुरिसो तो होइ धणलुद्धो ॥१॥

जे धननो लोभीओ होय ते पहाड चढे छे समुद्र तरे छे पहाडनी झाडीमां भमे छे बंधुओने पण मारे छे.

अडइ बहुं वहइ भरं, सहइ लुहं पावसायरइ धिडो । कुल सील जाइपच्चय, विदं च लोभदुओ चयइ॥२॥”

घणुं भटके छे घणोभार वहन करेछे भूवने सहे छे. पाप आचरे छे कुळ शील जाति विश्वास धीरज ए वधाने लोभथी पीडा-एलो घृष्ट पुरुष त्यजे छे.

तेथी आ प्रमाणे उत्तम साधुए प्रथमथी लोभ विगेरेथी दीक्षा लीधी होय अने तेवा भोग मळतां लालच थायतो पण मन दृढ करीने लोभ विगेरेनो त्याग करवो केटलाक लोभ विना पण दीक्षाले छे ते वतावे छे.

विणावि लोभं निवखम्म एस अकम्मं जाणइ पासइ, पडिलेहाए नावकंखइ, एस अणगारिचि पडुच्चइ, अहो थ राओ परितप्पमाणे कालाकालसमुद्दाइ संजोगढी अट्टा- लोभी आहुंणे सहकारे विणिविद्विचिंत्ते इरथ सरथे पुणो पुणो से आयबले से नाइबले से भित्तबले से पिच्चबले से देवबले से रायबले से चोरबले से अतिहिबले से कि- विणबले से समणबले, इत्थेएहिं विरुवरुवेहिं कज्जेहिं दंडसमायाणं संपेहाए भया कजइ, पावसुवसुत्ति मन्नमाणे, अट्टवा आसंसाए (सू० ७५)

भरतचक्रवर्ती विगेरे कोइ लोभना कारण विना पण दीक्षाने मेळवीने अथवा सूत्र पाठांतरमां विणइत्तुलोभं छे तेनो अर्थ संजवलन लोभने जडसूळथी दूर करीने पोते घाति कर्मनी चोकडीने दूर करीने आवरण रहित निर्मळ केवलज्ञान प्राप्त करी सर्व विशेषथी जाणे छे अने सामान्यथी जुए छे. अर्थात् जेणे पूर्वे वतावेळो अनर्थोहुं सूळ जे लोभ छे. तेने तज्यो छे तेनो लोभ दूर यतां मोहनीयकर्म क्षय यतां अवरुये घातीकर्मनो क्षय थाय छे अने निर्मळ केवलज्ञान प्रगट थाय छे तेथी बीजां कर्म जे भवउप ग्राहिक छे ते पण दूर थाय छे (जेनां घाती कर्म दूर थयां तेना अघाती कर्म सर्वथा स्वयं नष्ट थाय छे.) तेथी लोभ दूर यतां अ- कर्मां एतुं विशेषण सूत्रमां आयुं छे. आ पमाणे लोभतज्यो दुर्लभ अने तज्यथी अवरुय कर्मनो क्षय थाय छे तेथी शुं करतुं ते कहे

हे पति उपेक्षणा एतले गुण दोषनो विचार करी गुणोने ग्रहण करावा अने लोभ छोडवो अथवा लोभनां कडवां फळने विचारी तेना अभावमां जे गुण तेने चाहीने ते लोभने जे त्यजे तेनेज अणगार कहेवो.

अने जे अज्ञानवडे मनमां सुझाएलो हे ते अपरास्त मूळ गुण स्थानमां रही विषय कषाय विगोरेमां फसेलो होय ते दुःख पापे हे ए वधुं फरीथी सारो साधु याद करे के संसारी जीव अलोभने लोभ वडे निंदे अने विषयसुखमळतां तेने भोगवे अने लोभने छोडी साधु थइ पाछो लोभमां शुद्ध बनी वहोळा कर्मबालो. कइ पण जाणे नहीं तथा जुवे नहीं (कामान्ध जन्मथी आंधळा करतां पण वधारे आंधळो हे) अने हृदयमां चक्षु मीचावाथी विवेकरहित बनी भोगोने वांच्छे हे. अने पहेला उद्देशामां जे वताव्युं ते अहि जाणहुं.

आ प्रमाणे उत्तम साधु विचारे हे के लोभी रात दिवस दुख पापतो अकालमां उठतो भोग वांच्छुक अर्थ लोभी छंटारो विचार

बगरनो वेला जेवो वने हे अने पृथ्वी विगोरे जीवोने उपघात करी शत्रो वारंवार चलावे हे.

बली ते पोतानी शरीर शक्ति वधारवा जुदा जुदा उपायो वडे आलोक परलोकना सुखने नाश करनारी क्रिया करे हे ते नीचे सुजव हे.

मांसथी मांस वधे तथी पंचेन्द्रिय जीवोने हणे हे तथा चोरी विगोरे करे हे सूत्रमां बताव्युं हे एज प्रमाणे संसारी जीव स-
गाने शुष्ट करावा मित्रने शुष्ट करावा मथे हे एतले ते शक्तिबालां हशे तो हुं तेमनी मददथी आपदामांथी वचीश तथा भेल्य वळ व-
धारवा वस्त (वेडुं) विगोरेने ते हणे हे, तथा देववळ वधारवा (प्रसन्न करावा) रंधवा रंधावांनी क्रिया (नेवेय करे हे,) अथवा राजाहुं
वळ वधारवा राजाहुं इच्छित करे हे, अथवा अतिथीहुं वळ वधारवा चाहे हे, ते अतिथी निःस्पृह होय हे. कहुं हे केः—

“તિથિપર્વોરસવાઃ સર્વે, ત્યક્તા યેન મહાત્મના । અતિથિં તં વિજાનીયાઢ્ઢેષમભ્યાગતં વિદુઃ ॥ ૧ ॥”

જે મહાત્માણ તિથિના, તથા પર્વના વધા મહોસત્વો તજ્યા છે, તેને અતિથિ કહેવો; અને વાકીનાને અભ્યાગત કહેવો; તેનો સાર આ છે. તેના માટે પળ પ્રાણીઓને દુઃખ ન આપવું ણ પ્રમાણે કુળ-શ્રમણ વિગેરેને માટે પળ જાણવું જે સંસારીજીવ વીજાઓને માટે કે, પોતાનાં આલોકનાં સુખ છે, તેના માટે જુદી જુદી જાતનાં હિંસકકૃત્યો કરી; ણટલે પિંડદાન વિગેરે આપી વીજા જીવોને દુઃખ આપે છે, તેઓને અત્યલ્પને વદલે મહાત્મ દુઃખ મઢવું જાણીને ઉત્તમ પુરુષે તે પાપ ન કરવું જોઈ. છતાં, અજ્ઞાનથી, અથવા મોહથી હણાયલો મયથી તેવાં પાપ કરે છે, અથવા કુશુરના રોડા ઉપદેશથી પાપકર્મમાં પળ, ધર્મ માની દુષ્ટ કૃત્ય કરે છે, અથવા કાંઈપળ આજ્ઞાથી પાપ કરે છે, તે વતાવે છે. અગ્નિ જે હ જીવનિકાયતું યાત કરનાર રાસ્ટ્ર છે, છતાં તે અગ્નિમાં પીપલાતું, અરણીતું લાકડું હોમે છે, અથવા સમિતિ (ણક જાતતું લાકડું) લાડ્ય, (ધાણી) વિગેરે નાંચે છે, અને તેમાં ધર્મ સમર્જે છે, તથા વાપતું શ્રાદ્ધ કરવામાં ઘેડા વિગેરેતું માંસ રાંધીને દ્રાહ્મણોને જમાડે છે, અને વચેહું પોતે ચાય છે. (આ રીવાજ ગુજરાત વિગેરે દેશોમાં નથી; પળ વંગાલ દક્ષિણ વિગેરેમાં છે.)

તે આ પ્રમાણે જુદા જુદા ઉપાયોવડે અજ્ઞાનથી હણાયલી વુદ્ધી વલા પાપથી હુટવાના વહાને દંડ મેલવવારૂપ તે તે ક્રિયાઓ માણી ઓને દુઃખ આપનારી કરે છે. અથાત્ અનેક રાત કરોડની સંચ્યાના મવમાં મોગવવા હતાં પળ ન હુટાય તેવું અચોર પાપ કરે છે, અથવા પાપથી હુટવાતું માનીને અજ્ઞાનદશાથી નવાં પાપજ વાંચે છે.

अथवा न मेळवेछुं फरीथी मेळववानी इच्छाथी प्राणीओने दुःख आपी पोते दंड मेळवे छे ते आ प्रमाणेः—
 आ मने बीजा लोक्रमां, अथवा आलोकमां, पळीथी कांइ ऊंचपद अपावरो; एवी इच्छाथी ते पाप करवामां वर्ते छे.
 अथवा पोते धननी आत्ताथी मूढ वनीने राजानी सेवा करे छे, (अने राजाने खुशी करवा प्रजाने पीडवाना अनेक पाप करे छे.) कहुं छे केः—

आराध्य भूपतिमवाप्य ततो धनानि, भोक्ष्यामहे किल वयं सततं सुखानि;

इत्याशया धनविमोहितमानसानां, कालः प्रयाति मरणावधिरेव पुंसाम् ॥१॥

राजाने प्रसन्न करीने तेनी पासेथी धन मेळवीशुं अने पळी अमे रोज सुख भोगवीशुं. आवी आत्ताथी धनथी मोह पामेला मनवाला माणसेने आर्त्ती जीदगी सुधीकाल वीती जाय छे. (पण तेओ धर्म आराधी शकता नथी.)

एही गच्छ पतोत्तिष्ठ, वद मौनं समाचर । इत्याद्याशाग्रहप्रसृतैः, क्रोडन्ति धनिनोऽर्थिभिः ॥२॥

आव जा, पड, उठ, बोल, चुप रहे आ प्रमाणे बोलनारा धनवाला छे. ते धननी इच्छवाला गरीबोने वारंवार रमाडे छे. आ प्रमाणे सारा साधुए समजीने शुं करवुं ते शान्त्कार कहे छे.

तं परिणाय मेहावी नेव सयं एएहिं कजोहिं दंडं समारंभिजा नेव अन्नं एएहिं कजोहिं दंडं समा-

रंभाविजा, एएहिं कजेहिं दंडं समारंभंतंपि अन्नं न समणुजाणिजा, एस मग्गे आरिएहिं पवेइए,
जहेरथ कुसले नोवळिंपिजासि, त्तिवेमि, (सू० ७६) लीगविजयस्स वितिओ उइसेो ॥३॥

पहेला अध्ययनमां परिज्ञा वतावेली छे. तेमां वे प्रकारनां स्वकाय अने परकायवाळां दुःख देनारां शस्त्रने चलाववां नहीं अ-
थवा पहेला उद्देशामां वतावेल विषय तथा मातापिता संबंधी प्रेमसुं अपशस्त गुणमूळ स्थान समजीने तथा काल अकाले रखडवुं ते
समजीने अथवा अमूल्य अवशर तथा सुगुरुनो बोध तथा पांचे इन्द्रियोनुं विचक्षणपणुं तथा वृद्धावस्थामां तेनी हानी विगेरे समजीने
तथा आज उद्देशामां शरीर शक्ति वधारवा अथवा सगावहालांनुं वळ वधारवा दंडनुं लेवुं (नवा पाप वांधवानुं) जपरिज्ञावडे जाणीने
मर्यादासां रहेला सुनिए प्रत्याख्या न परिज्ञावडे पाप कृत्य छोडी देवा ते वतावे छे.

पोते जाते शरीर शक्ति वधारवानां के बीजां दुष्ट कृत्यो करवा वडे जीवोने दुःख न आपे तेम हिंसा जुठ विगेरे पाप कृत्य
बीजा पासे न करावे, अथवा पापीओने मन वचन अने कायाथी कोइ पण रीते सहायता के अनुमोदना न करे.

आवो सर्व जीवने अभयदान देवानो उपदेश तीर्थकरे कर्यो छे. तेवुं सुधर्मस्वामी जंबूस्वामीने कहे छे.

ज्ञान विगेरेथी युक्त भावमार्ग जेनाथी कोइ पण जातनुं दूषण के दंड के पाप लागवानां नथी ते मन वचन अने कायाए करी
करवो कराववो अने अनुमोदवो जोइए तेम करनारा आर्य पुरुषो छे. एटले जेटला पाप धर्म छे. तेमने छोडी सर्व प्रकारे उत्तम
मार्गमां जे जीवो जोडायला छे तेओ संसार समुद्रथी किनारे पहाँवेला अने घातीकर्मनो अंश पण नाश करनार जीवो संसारनी

अंदर रहेलां बधा भावोने जाणनारा सर्वत्र तर्ककर प्रभुए देव मनुष्यनी सभामां बधाए समजी राके तेवी तथा बधाना मनना संशय छेदनारी वाणिवहे आ मार्ग कहा छे. पोते ते प्रमाणे वर्तेला छे एवो आ मार्ग जाणीने उत्तम पुरुषे उपर बतावेलों पाप कृत्योने छोडीने बधां तत्व जाणीने पोतानो आत्मा पापोंमां न लेपाय तेम सर्व प्रकारे करहुं. आ प्रमाणे हुं कहुं छुं बीजो उदेशो समाप्त थयो.

हवे बीजो उदेशो कहे छे.

बीजा उद्देशानी साथे बीजानो आ प्रमाणे संबन्ध छे. गया उद्देशामां कहुं के संयममां दृढता करवी अने असंयममां उपेक्षा करवी अने ते बन्ने पण कषाय दूर करवाथी थाय तेमां पण मान उत्पत्तिना आरंभथी उंच गोत्रमां जन्मे छे ते उत्थापेलो (अहंकारी) थाय तेथी ते दूर करवा कहेवाय छे तेथी बीजा अने बीजानो आ संबन्ध छे के बुद्धिमान साधु राग द्वेषमां न लेपाय तेज प्रमाणे बुद्धिमान साधु उंच गोत्रना अभिमानमां पण न लेपाय शुं मानीने अहंकार न करवो ते सिद्धांतकार बतावे छे.

से असइं उच्चागोए असइं नीआगोए, नो हीणे नो अइरिसे नोऽपीहए, इय सखाय को गोयावाइ को
साणावाई? कंसि वा एगे गिउझा, तम्हा नो हरिसे नो कुप्ये, भूएहिं जाण पडिलेह सायं सू. ७७

आ संसारी जीव अनेक वार मान सत्कारने योग्य एवा उंच गोत्रमां आठयो छे तथा अनेकवार नीच गोत्रमां ज्यां लोको निंदे तेवामां पण पोते जनम्यो छे ते कहे छे. नीच गोत्रना उदयथी अनन्तकाळ तिरिचगतिमां संसारी जीव रहेल छे तयारपछी भट-कनो जीव नाम कर्मनी ९२ उत्तर प्रकृतिना कर्मबाळो बनीं तेवा तेवा अध्यवसाये उत्पन्न थयेलो आहारक शरीर तेहुं संघात बन्धन

अंगोपांग देवगति तथा अनुपूर्वी मली वे तथा नरकगति अने अनुपूर्वी मली वे ए वैक्रिय चतुष्टय (चोकडुं) ए १२ कर्म प्रकृतिने निर्लेप करीने (दूर करीने) बाकीनी ८० प्रकृतिवालो वनी तैजस अने वायुकायमां उत्पन्न थयो त्यारपडी मनुष्यगति तथा अनुपूर्वी मली वे ते दूर करीने उंच गोत्रने पत्न्योपमना असंख्येय भागवडे उद्वल करे छे. एथी तैजस वायुकायनो पहेलो भांगो थयो. ते आ प्रमाणे नीच गोत्रनो बन्ध, अने उदय पण अने तेज कर्मनी सकर्मता (सत्ता) छे. त्यांथी नीकलीने वीजी कायना एकेन्द्रियमां आवीने उपजे तो, तेज भांगो थाय; अने त्रसकायमां पण अपर्याप्तअवस्थामां पण तेज भांगो याय; अने ज्यासुथी उंच गोत्रनो निर्लेप न थाय; तो वीजो चोथो एम वे भांगा थाय ते वतावे छे. नीच गोत्रनो बंध, अने उदय, तथा तेज कर्मपणाथी सत्ताथी उभयरूपे वीजो भांगो थाय; तथा ऊंच गोत्रनो बन्ध नीच गोत्रनो उदय, अने सत्कर्मपणुं वने रूपे छे. ए चोथो भांगो छे, पण बाकीना चार भांगा नथीज थतां: कारणके:—तिर्यंचयोनिमां उंच गोत्रना उदयनो अभाव छे. तेज उंच गोलना (अहंकारथी) उद्वलन-वडे कलंकवाळा भावमां आवेलो जीव अनंतकाल सुथी एकेन्द्रियमां रहे छे, अथवा उद्वलन थया विना तिर्यंचमां अनंत उत्सर्पिणी, अने अवसर्पिणी रहे छे.

प्रश्न—आवलिकाना संख्येय भाग समय संख्यावाळा पुद्गल परावर्त एम जोइए; पण पुद्गलपरावर्त केम जोइए ?

आचार्यनो उत्तर:—जेओ औदारिक, वैक्रिय तैजस भाषाअनापान, (श्वासोश्वास) मन= (आ छ थाय छे, पण सात लखेक छे. आहारक ए टीकामां लखवुं रही गयुं छे.) कर्मसप्तकथी संसारना वचला भागमां पुद्गलो आत्मानी साक्षे एकमेकपणे परिणमेलाछे, ते

पुद्गल परावर्त है, एहुं केटलाक आचार्य कहे छे.

बीजा आचार्यनो मत एवो छे के, द्रव्य, क्षेत्र, काल, अने भाव, एम चार भेदे वर्णवे छे, अने आ पर्येक पण बादर, अने सूक्ष्म एम वे भेदे अनुभव छे, तथा द्रव्यथी बादर जे औदारिक, वैक्रिय, तैजस कार्मणना चतुष्टय (चोकडावडे) सर्व पुद्गलो ग्रहण करीने छांडी दीधा त्यारे थाय छे, अने सूक्ष्म छे, ते एक शरीरवडे वधा पुद्गलो स्पर्शवाला थाय त्यारे जाणवुं.

(२) क्षेत्रथी बादर ज्यारे क्रम, अने उत्क्रमवडे मरतां जीवने वधा लोकाकाशना प्रदेश स्पर्शवाला थाय त्यारे होय छे, अने सूक्ष्म तो त्यारेज जाणवो के एक विवक्षित आकाशखंडमां मरेखो, ज्यारे तेना पदेशोनी वृद्धि थाय त्यारे सर्वे लोकाकाशने व्याप्त थाय त्यारेज जाणवुं.

(३) कालथी बादर ज्यारे उत्सर्पिणी, अने अवसर्पिणीना जेटला समयो छे, तेटला क्रम, अने उत्क्रमवडे मरण पाप्रवावडे स्पर्श करे छे त्यारे जाणवुं; पण सूक्ष्म तो, उत्सर्पिणीना प्रथम समयथी आरंभीने क्रमवडे सर्व समयो मरनारा जीवे वधा स्पर्श कर्या होय त्यारे जाणवुं (४) भावथी बादर ज्यारे अनुभागना बन्धना अध्यवसायना स्थानो क्रम अने उत्क्रम वडे मरेला जीवथी व्याप्त थाय त्यारे कहे छे.

अनुभागना बन्धना अध्यवसायवुं प्रमाण प्रथम संयम स्थानना अवसरमां कही गया छीए अने सूक्ष्म तो जयन्य अनुभाव बंधना अध्यवसाय स्थानथी आरंभीने ज्यारे वधासां पण क्रमे करीने मरेखो थाय त्यारे जाणवुं तेथी आ ममाणे कलंकी भावने पाभेखो अथवा बीजो कोइ जीव नीच गोत्रना उदयथी अनत काल सुधी पण तिर्यचमां रहे छे. मनुष्यमां पण नीच गोत्रनाज उदयथी तेवा

નિંદનીય સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તથા કલંકવાલો જીવપણ વેદવિદ્ય વિગેરેમાં ઉત્પન્ન થયેલો પહેલા સમયમાં પર્યાપ્તિના ઉત્તર કા-
ળમાં ડંચ ગોત્ર વાંધીને મનુષ્યમાં અનેક વાર ડંચ ગોત્ર મેકવે છે. ત્યાં ત્રીજા ભાંગામાં રહેલો અથવા પાંચમા ભાંગામાં ઉત્પન્ન થ-
યેલો છે તે આ પ્રમાણે છે.

નીચગોત્ર વાંધે છે. અને ડંચગોત્રનો ઉદય હોય છે. અને કર્મપણું (સત્તા) વન્નેનું છે તે ત્રીજો ભાંગો અને પાંચમા ભાંગામાં ડંચ-
ગોત્ર વાંધે છે તથા તેનો જ ઉદય છે. અને સત્કર્મપણું (સત્તા) વન્નેનું છે હઠ્ઠો અને સાતમો ભાંગો તો જો વંધથી ઉપરત (દૂર) થયોહોય
તેને થાય છે અને તેનો વિષય ન હોવાથી તે વંનેનો અધિકાર નથી. તે વંને વંધના ઉપરમાં ડંચગોત્રનો ઉદય થાય છે અને સકર્મ
પણું વંનેમાં કાયમ છે તે હઠ્ઠો ભાંગો થયો અને સાતમો ભાંગો શૈલેશી અવસ્થામાં દ્વિચરમ (હેલા સમયના અગાડીના સમયમાં) નીચ-
ગોત્ર સ્વપાવે છે તે ડંચગોત્રનો ઉદય હોય તેને જ છે. અને સત્તા પણ ડંચગોત્રની છે. આપમાણે ડંચ નીચ ગોત્રમાં રહેલા જીવે અહંકાર
ન કરવો જોઈએ તેમ દીનતા પણ ન કરવી જોઈએ.

ડંચ અને નીચ તે વંને ગોત્રનો વંધ અધ્યવસાય સ્થાનના કંડકો સમાન છે. સૂત્રમાં વતાવે છે કે.

પો દ્વીણો, પો અદ્વિરિચ્ચે જેટલાં ડંચ ગોત્રમાં અનુભાવ વન્ધના અધ્યવસાયના સ્થાન કંડક છે તેટલાં જ નીચગોત્રમાં પણ છે
અને તે સર્વે અનાદિ સંસારમાં આ જીવે વારંવાર અનુભવેલાં છે. તેથી ડંચગોત્રના કંડકના અર્થપણે જીવ દ્વીણો પણ નથી તેમ વધારે
પણ નથી પણ પ્રમાણે નીચગોત્ર કંડકમાં પણ સમજવું તે સંવન્ધમાં “ નાગાહર્તુનીયા ” આ પ્રમાણે કહે છે.

“एगमेगे खलु जीवे अईअझाए असइं उच्चागोए असइं नीआ गोए, कंडगदुयाए नो हीणे नो अइरित्ते”

एक एक जीव भूतकालमां अनेकवार उंच नीच गोत्रमां आव्यो अने उंच नीचना अनुभाग कंडकनी अपेक्षाए हीन के अतिरिक्त नथी तेज कहे छे. उंच गोत्र कंडकनालो एक भक्ति अथवा अनेक भक्तिकर्मांथी नीच गोत्रना कंडको ओछां नथी तेम वधारे पण नथी. एहुं समजीने अहंकार के दिन्ता न करवी. (अर्थात् समाधि राखवी तेज साधुपणुं छे.) ते बतावे छे, कारण के उंच नीच स्थानमां कर्मना वशथी उत्पन्न थाय छे. तेज प्रमाणे वळ-रूप-लाभ विगरे मदना स्थानोहुं असमंजसपणुं (अस्थिरता) सजीने साधुए श्रुं करवुं ते कहे छे. जाति विगरेनो कोइ पण मद् साधु न वांच्छे अथवा तेवी इच्छा पण न करे कारणके उंच नीच स्थानमां आ जीव घणीवार उत्पन्न थयो, एहुं समजीने कोण गोत्रनो-के-माननो अभीलाषी थाय.! अर्थात् मारं उंच गोत्र वधा लोकोने माननीय छे. तेहुं बीजाहुं नथी. एहुं क्यो बुद्धिवान मनुष्य माने. !

में तथा बीजा जीवोए उंच अने नीच ए वधां स्थानोने अनेकवार पूर्व अनुभवेलां छे तेज प्रमाणे गोलना निमित्ते मान-वादी कोण थाय. अर्थात् जे संसारना स्वरूपने सारी शीते जाणे छे, ते अहंकारी न थाय वली अनेकवार ते स्थानो पूर्व अनुभवे छते हमणां एकाद् उंच गोत्र विगरे अस्थिर स्थानकमां आवतां राग विगरेना विरहथी गीतार्थ थएल कोण ममत्त्व करे !

एनो भावार्थ आ छे. के कर्महुं परिणाम जेणे जाण्युं छे तेवो मुनि आ सेवाने धारण करे. ब्रह्मपणाने क्यारे योजे के जो पूर्व तेणे तेहुंन मेळव्यं होय तो. पण खरीरीते तेणे वणी वखत उंचगोत्र विगरे मेळव्युं छे. तो ते उंचगोत्रना लाभथी के अलाभथी

अहंकार, दीनता, न करवां तैबुं सूत्रमां कहुं छे. कारण के अनादि संसारमां भटकता जीवे भाग्यने आधारे घणी वार उंच नीच गोत्रनां स्थान अनुभवेलां छे. तेथी कोइ वखत उंच नीच गोत्र मेळवीने डाह्यो पुरुष जे खराव तथा सारी वस्तुने ओळखे छे ते उंच गोत्र विगेरेथी अहंकार न करे. कहुं छे के:—

“सर्व सुखान्यपि बहुशः प्राप्तान्यटता मयाऽत्र संसारे । उच्चैः स्थानानि तथा, तेन न मे विस्मयस्तेषु ॥१॥
 वयां ए सुखोनेभे आसंसारमां भ्रमतां मेळव्यां छे. उंच स्थान पण मेळव्यां छे, तेथी हवे मने तेनामां कांइ आश्चर्य जोवामां आवतुं नथी. जइ सोऽवि णिजरमओ पडिसिद्धो अट्टमाण महणेहिं । अवसेस मयट्टाणा, परिहरि अवा पयस्सेणं ॥२॥

जो के, निर्जराने माटे उंच गोत्रना मदनी निषेध कर्यो छे, तोपण आठ मानने मथनारा साधुओए पयत्नवडे बीजां मदस्थान पण त्याणी देवां. तेजप्रमाणे नीच गोत्रमा के निंदनीक स्थानमां उत्पन्न थइने दीनता न करवी. तेज सूत्रमां कहुं छे के:—“नो-कुत्पे” भाग्यवशथी लोकमां निंदनीक जाति कुळ रूप वळ लाभ विगेरेमां ओछापणुं पामीने साधुए क्रोध न करवो मनमां विचारबुं के मारे नीच स्थान अथवा बीजाना हळका शब्द सांभळीने मारे दुःख शा माटे मानबुं, मे पूर्व तैबुं घणीवार अनुभव्युं छे तेथी दीनता न करवी कहुं छे के.

“ अवमानारपरिभ्रंशाद्भवन्नधनक्षयात् । प्राप्ता रोगाश्च शोकाश्च जात्यन्तरशतेष्वपि ॥ १ ॥

अपमानथी नीच दशा थवाथी अथवा वध वन्ध के धनना क्षयेथी माणसे खेद न करवो कारण के पूर्व आ जीवे रोग शोक

जुदी जातिमां संकडोवार भोगव्या छे.

जुदी जातिमां संकडोवार भोगव्या छे. संते य अविभ्हइउं असोइउं पंडिण्ण य असंते । सक्का हु दुमोवमिअहिअण्ण हिअं धरंतेण ॥ २ ॥

पंडित पुरुषे प्राप्तिमां आश्रयं न करवुं; अने अप्राप्तिमां नाखुश थदुं नहि. झाहनी उपमावाळा हृदयवदे हितने धारनारा पुरुषने शक्य छे. (झाह बधां दुःख सहै; पण त्यांशी खसे नहि; तेम हृदय स्थिर करी दुःखसुख सहैवां.)

होऊण चक्रवट्टी, पुहइवई विमलपंडरच्छत्तो । सो चैव नाम भुज्जो अणाहसालाओ होइ ॥ ३ ॥

चक्रवर्तिं के, पृथ्वीपति निर्मळ सफेद छत्रने धरनारो पहेलां पोते बन्धो; अने तेज पुरुष पोते रहेनारो (तेज जन्ममां) अनाथ आश्रममां भाग्यवशथी वने छे. अथवा एक जन्ममां जुदी जुदी अवस्थानी नीच-उंचपणानी स्थिति कर्मवशथी अनुभव छे, तेथी उंच-नीच गोत्रनी कल्पना मनमांथी कालीने तथा बीजा पण मनना विकल्प दूर करीने थुं करवुं ? ते कहे छे:—

जीवोने संसारमां आवां उंच-नीच पद हप्रण। थाय छे. पडीथी थवानां छे, अने पूर्वे यथां छे, एवुं विचारीने शिष्यने गुरु कहे छे के:—तारी तीक्ष्ण बुद्धिथी जाण के, जीवने कर्मवशथी सुख आवे छे, तेम दुःख पण आवे छे, तथा तेनां कारणो पण विचार, (जीवे जेवां पुन्य पाप कर्मां होय; तेवां सुखदुःख मळे छे.)

वकीअविगान पणे प्रणीओ सुखने इच्छे छे. अहीयां जीवजंतु प्राणी विगेरे शब्दोपयोग लक्षणवाळां द्रव्यना सुख्य शब्दोने छोदीने “ सत्तावाचि ” शब्द “ भूत ” शब्दने लेवाथी एम सूचवुं के, जेम आ उपयोग लक्षणवाळो पदार्थ अवश्य सत्ताने धारण

करे છે, તે સુखને વાંચ્છે છે, અને दुःखને धिकारे છે, सुख पुन्यता उदयधी છે, તેथी एम जाणवुं के, वधी पण शुभ प्रकृतिओ पु-
न्यता उदयधी છે जेथी शुभ नाम गोव आयुष्य विगरे कर्म प्रकृतिओने दरेक जीव चाहे છે અને अशुभने निंदे છે आ प्रमाणे છે
तो शुं करवुं ते कहे છે.

समिष्ट एयाणुपस्सी, तं जहा—अन्यत्तं बहिरत्तं मूयत्तं काणत्तं कुटत्तं खुज्जत्तं वडभत्तं सामत्तं सबलत्तं

सह पमाएणं अणेगरत्वाओ जोणीओ संघायइ विरुव्रत्त्वे फासे परिसंवेयइ (सूत्र ७८)

अथवा शुभ अशुभ कर्म वधा जीवोमां जोइने दाहा पुरुषे ते जीवोने अप्रिय होइ तेवुं कृत्य न करवुं एवो शालकारनो उपदेश
छे, आ संबन्धमां “ नागाज्जुनीया ” कहे छे.

“पुरिसिंणं खलु दुवखुव्वेअ सुहेसए”

जीव दुःखने काहवा तथा सुखने मेळववा इच्छे छे. तेथी जीवनी प्ररूपणा करवी अने ते पृथ्वी पाणी वायु अग्नि वनस्पती
सूक्ष्म वादर विकल पंचेन्द्रिय संज्ञी असंज्ञीपर्याप्ता अपर्याप्ता विगरे पहेला अध्ययनमां बताव्या छे अने ते दुःखने छोडवानी इच्छा-
वाला तथा सुखने मेळववानी इच्छावाला जीवोतुं पोतानी उपमाए मानता साधुए पोताना सुखना माटे जीवोने दुःख आपवान
हिंसा विगरे स्थान छोडवा इच्छता पुरुषे पंच महाव्रतोमां पोतानो आत्मा स्थापन करवो, अने ते महाव्रतो पूरां पाळवा माटे उत्तर
गुणो पण पाळवा जोइए तेज वात आ सूत्रमां लाव्या छे, ते कहे छे.

पांच समितिथी वनेलो हवे पछी कहेनाता। शुभ अशुभ कर्मनुं स्वरूप जाणे एटले अंधपणुं वहेरापणुं गुंणापणुं काणापणुं अने कुंटपणुं विगेरे कर्मनांज फळ हे. ते जीवोमां साक्षात् जोदने पोते समजे, के हुं दुःख वीजाने आपीश, तो ते मने पण भोगवचुं पदशे ते खुलासावार कहे हे.

हवे समितिनुं वर्णन कहे हे.

सम् उपसर्ग इ. धातु अने ति. प्रत्यय लगानाथी समिति शब्द वन्धो हे. अर्थात् सम्यक् वर्तन ते समिति हे. तेना पांच भेद हे. (१) इयां समिति ते जोइ विचारी पगळुं भरवानुं हे, जेथी बीजा जीवोनी तथा पोतानी रक्षा थाय, (जोदने चालेतो, पग नीचे कीडी विगेरे मरे नही, तेम टोकर पण न लागे) आ अहिंसा नामना पहेला महाव्रतने देको आपनार हे. तेथी अहिंसा बरोबर पळे हे. (२) भापा समिति ते असत्य अहितकारक वचन रोकवा माटे हे, अर्थात् साधुए वीजुं महाव्रत पाळुं जोइ विचारीने बोलुं. तथा (३) पृपणा समिति ते साधुने कोइनुं पण चोरीने के पूढ्या विना कांइ पण न लेवुं—ते त्रीजुं महाव्रत पाळवा माटे हे, एटले निर्दोष भोजन विगेरे दिवसना प्रकाशमां मालीकनी रजा लइ वापरवानुं हे. वाकीनी वे समितिओ. (४) आदान—एटले वस्तु लेवी—शुकवी ते समिति तथा [५] उत्सर्ग—एटले शरीरमांथी के मकान विगेरेमांथी नीकळतो मळ विगेरे योग्य स्थाने नांखवो के जेथी बीजाने पीडा न थाय, ते वधा महाव्रतमां सर्वोत्तम अहिंसा नामना पहेला महाव्रतनी सिद्धि माटे हे, आ प्रमाणे पंच महाव्रतो मेळवीने पांच समिति पाळता साधुने बीजा जीवांहुं सुख विगेरे देखाप हे, अथवा जे रीते पोते बीजानुं भळुं चाहनारो थाय हे ते सूत्र वहेज वतावे हे अंधपणुं विगेरे जे जे विरूप रूपोमां संसारी जीवो संसारमां भ्रमणा करता वणी अवस्थाओ भोगवे हे. ते वतावे हे.

तेमां एकेन्द्रिय बेण्ड्रिय अन्द्रिय ए आंख विनाना द्रव्य अने भाव अंधा छे (आपणी माफक तेमने आंखो जोवानी नथी) तथा चैरेन्द्रियवालाथी जोवानी आंखो छतां धर्माना अभावे मिथ्यादृष्टिओ भाव अंधा छे. (सारा माठानो तेमने विवेक नथी) कहुं छे के.

“एकंहि चक्षुरमलं सहजो विवेकस्तद्विरेव सह संवसतिर्द्वितीयम्;

एतद्वयं भुवि न यस्य स तत्त्वतोऽन्धस्तस्यापमार्गचलने खलु कोऽपराधः ॥१॥

जेने निर्मल चक्षु समान स्वभाविक विवेक छे अने तेवा विवेक साथे एमने सोवतरूप बीजुं नेत्र छे, आ बन्ने चक्षु जेमने नथी ते हृदयना आंखळा कुमार्गे जाय तो ते बीचारानो खरेखर श्रुं अपराध छे :

जे बीतराजनो धर्म पासेला छे तेओ सम्यक् दृष्टि छे. तेमने कोइपण कारणे आंखनुं तेज नाथ पायुं होय ते द्रव्यअंधा जाणवा पण खरा देखता कोने कहेवा के जे द्रव्यथी पण आंखळा नथी अने भावथी पण आंखळा नथी अर्थात् आंखे जुए छे, अने विवेकथी वर्ते छे. तेथी द्रव्य अने भावथी भिन्न एवुं बन्ने प्रकारतुं जेने अंधपणुं छे, ते एकान्तथी दुःख आपनारं छे. कहुं छे के.

“ज्वन्नेव मृतोऽन्धो, यस्मात्सर्वक्रियासु परतन्त्रः । निर्यास्तमितदिवाकर, स्तमोऽन्धकारार्णवनिमग्नः ।१।
जीवतांज मुवा जेवो आंखथी आंखळो छे. के ते बीचारो बधी क्रिधामां परतंत्र छे. जेने चक्षु नथी तेने हमेशां सूर्य अस्त थएखो छे. अने पोते अंधकारना समुद्रमां डुब्यो छे.

लोकद्रव्यव्यसनवह्निविदीपिताङ्गमन्धं समीक्ष्य कृपणं परयष्टिनेयम् ॥

को नोद्धिजेत भयकुलननादिवोप्राक्कृष्णाहिनेकनिचितादिव चान्धगर्तात्? ॥२॥”

आलोक परलोकमां दुःखना अग्निमां बलता अंगवालो तथा पारकानी लाकडीए दोराता दुःखी आंथळाने जोहने कोण खेद न पाये? अथवा भयने पमाडनार एवो भयंकर काळो साप अंधारानी खाडावाळी जग्यामां जे एक दृष्टि करडवानी इच्छावालो वेठेलो छे तेने जोहने तेना आगळ जतां जेवो भय लागे छे, तेवी रीते अंधपणना खाडातुं दुःख कोने भयंकर न लागे.?

जेम उपर आंथळतुं दुःख वताव्युं ते प्रमाणे केटलाक जीवो कर्मना वशथी वहेरापणुं भोगवे छे. अने जेने सारा के माठा विवेकतुं भान नथी ते आ लोक परलोकतुं जे साहं फळ छे तेनी क्रिया करवाने ते अशक्त छे कहुं छे के-

“धर्मश्रुति श्रवणमङ्गलवर्जितो हि, लोकश्रुतिश्रवणसंव्यवहारबाह्यः ॥

किं जीवतीह बधिरो? भुवि यस्य शब्दाः, स्वप्नोपलब्ध धन निष्फलतां प्रयान्ति? ॥१॥

धर्मनां वचन सांभळवाना कल्याणथी दूर थयेल तथा लोकना वचन सांभळवाना वहेवारथी बहार थएल छे ते वहेरो आ दुःखीमां केम जीवे छे.? के जेने कहेला शब्दो स्वप्नमां मेळवेल धननी माफक निष्फळताए जाय छे.

स्वकलत्रवालपुत्रकमधुरवयःश्रवणबाह्यकरणस्य । बधिरस्य जीवितं किं, जीवन्मृतकाकृतिधरस्य ॥२॥

पोतानी स्त्री तथा नाना पुत्रनां मधुर वचन सांभळवाथी विमुख एवां वहेरातुं जीवित जीवतो छतां, पण मरेलानो आकार धर-

नारतुं कंइ गणत्रीषां छे ? (नकासुं छे.)

आ प्रमाणे मुगांने पण एकांत दुःखनो समूह भोगववातुं छे. कहुं छे के:—

“दुःखकरमकीर्तिकर, मूकरवं सर्वलोकपरिभूतम । प्रत्यादेशं मूढाः कर्ममं कृतं किं न पश्यन्ति ? ॥१॥”

दुःखने करनार अपजशवाछुं सर्वलोकमां निंदा पात्र मुंगाणुं छे, ते पीतानाकर्षांतुं करेछुं फल बीजाने भोगवाताने मूढो केम जोला नथी ? (पीते पाप करशे तां, तेवु फल भोगववुं पइशे.)

तेज प्रमाणे काणापणुं पण दुःखरूपे छे. कहुं छे:—

“काणो निमश विषमोक्षतट्टिरेकः शक्तीविरागजनने जननातुराणाम् ॥

यो नैव कस्यचिदुपैति मनःप्रियत्वमालेख्यकर्मलिखिनोऽपि किमु स्वरूपः ?

विषमस्थानमां डुबेलो, जेने एरुज दृष्टि (आंख) छे. जे पीते काणो होवथी वैराग्य उत्पन्न करवामां शक्तिकान छे, अने जन्मदुःखीओमां ते छे पीते कोइनां पण मनने वहालो लागतो नथी. आलेखवा जोग कर्मथी लखायो छतां; जे बीजाने वहालो न लागे; तेनुं स्वरूप गइ गणत्रीतुं छे ?

आ प्रमाणे कुंटपणुं एटले, जेना हाथपग वांका होय; अथवा टीगणापणुं होय; अथवा जेनी पीठ वडनी (खुंथाना) आकारे होय; तथा रंगे कळो होय; तथा सबळपणुं होय. आवुं स्वाभाविक कदरुनुं बारीर होय अथवा पडवाडे कर्मना वजथी तेवो थाय;

तो, घणुं दुःख भोगवे छे.

वकी प्रमादथी एटछे, विषयक्रीडाना कारणे सारां काममां एटछे, धर्ममा प्रमाद करवाथी संकट, विकट शीत, उष्णं विगेरे, अनेक भेदवाकी योनीमां पोते भ्रमण करे छे, अथवा प्रथम वतावेळी चोराशीलाख जीवायोनीमां एकसरहुं भ्रमण करे छे. अने नवां नवां आयुष्यो बांधीने तेमां जाय छे. अने ते योनीओमां जुदी जुदी जातनां दुःखोने अनुभवे छे, तेज प्रमाणे उंचगोत्रनो अ-हंकार करवामां हणाएळा चित्तवाळो अथवा नीच गोत्रना कारणे दीन बनेळो, अथवा आंथळो बहेरो थवा छतां अज्ञानी जीव पोते पोतातुं कर्तव्य नथी जाणतो तथा पूर्व करेलां कर्महुं आ फळ छे, ते जाणतो नथी. तथा संसारनी बुरी दज्ञाने भूली जाय छे. अने हित-अहितने विसारे छे. तेमज उचित वातने गणतो नथी. ते तत्वने भुलेळो मूढ बनेळो होय तेज उंच गोत्र विगेरेमां अहंकार करे छे. तेज कहे छे—

से अबुंझमाणे हथो वहय जाईसरणं अणुपरियद्दमाणे, जीविचं पुढो पियं इहमेगेसिं
माणवाणं खिचवरथुममायमाणं आरत्तं विरत्तं मणिकुंडलं सह हिरण्येण इत्थियाओ प-
रिणिञ्जति, तस्थे व रत्ता, न इत्थ तवो वा दसो वा नियमो वा दिस्सइ, संपुणं बाले जी-
विडकामे लालप्पमाणे सुढे विप्परियास्समुवेइ ॥ (सू० ७९)

पूर्व कहेलां उंचगोत्रनां अभिमानां अथवा आंघळां, बहेरां विगेरेनां दुःखने भोगवतो; अथवा कर्मविपाकने न जाणतो हत उपहत हे एटले, जुदीजुदी जातना रोगशी शरीरे पीडातां हणायलो हे, तथा वधा लोकमां पराभव पामवाथी उपहत हे, अथवा उंचगोत्रना अहंकारशी उचित कार्येने छोडवाथी विद्वान पुरुषोना मुखशी, जेनां अपयश पडघो पडवाथी ते हणायलो हे, तथा अभिमान करवाथी अनेक भवमां अशुभकर्म वांधीने, नीचगोत्रना उदयने अनुभवतो उपहत हे, अने ते दुःखशी मूढ बने हे, ते दरेक लग्याए जोडवुं.

तेज प्रमाणे जाति (जन्म-मरण) ए वनेने “पाणी काढवाना रेटना न्याये” नवा नवा जन्म-मरणां दुःखसंसारना मध्यमागमां रहीने ते जीव भोगवे हे, अथवा क्षणेक्षणे क्षयरूप आवीचीमरणशी दरेक क्षणे जन्म तथा विनाशने अनुभवतो दुःखसागरमां हुवेलो सघळं नाशवंत जतां, तेने नित्य मानीने: जेमां हित थावातुं हे तेने पण अहित मानी विमुख थाय हे. (धर्म, जे सुखने आपनार हे, ते धर्मने छोडी दुःख आपनार विषयमां खेचाय हे.) कहुं हे के:—

आयुष्यने नित्य मानीने अथवा, असंभ्रमजीवित दरेक प्राणीने वधारे वहाळुं हे. एटले आ संसारमां अज्ञान अंधकारशी हणाएला चित्तवाला मनुष्यने तथा बीजा प्राणीओने विषय रसमां जीववुं वहाळुं हे, ते वतावे हे.

आयुष्य वधारवा माटे रसायण विगेरे क्रियाओ बीजा जीवोने जे दुःख करनारी हे तेने करे हे. तथा चोखा विगेरेतुं क्षेत्र खेडावे हे. थोळांघर (हवेलीओ) विगेरे बधावे हे. तथा आ मारां हे. एम मानीने तेना उपर वधारे प्रेम करे हे. तथा थोडां रंगोलां अथवा जुदी जुदी जातनां रंगोलां अथवा वगर रंगोलां वस्त्रो तथा रत्नोना कुंडळो तथा सोनुं तथा स्त्री विगेरे मेळवीने तेमां एटले उपर

कहेली रमणीय वस्तुओंमां शुद्ध थएला हे. ते मूढपुरुषो दुःख आवतां गभराय हे. अथवा तेमनी शरीर शक्ति बरोबर होय त्यारे तेओ धर्म विगेरेने उत्तम बोलता नथी पण तप ते अणसण विगेरे तथा “ इन्द्रियोनुं दमन तथा अहिंसानो नियम फळवाळो नथी एम तेओ उलटुं बोले हे. ते बतावे हे, तप नियम धारण करेला धर्मिं जीवने तेओ कहे हे. के” आ तप विगेरेनुं फळ भविष्यमां नथी. फक्त आलोकमां कायाने दुःख अने भोग विगेरेशी दूर रहेवुं ए तपने ठगवा माटे शुरुओए खोटुं बतावेळुं हे.

वली बीजा जन्ममां सुख मळशे. ए पण खोटो गुरुए भ्रम आपेलो हे. कारणके हाथमां आवेला भोगो तथा सुखो भोगवचां छोडीने भविष्यमां सुखनी आशा करवी ए वथारे पापरूप हे तेशी वर्तमाननुं सुख चहानार संसारी जीवो (शुस्ना वचनोने ऊंचा मूकी) भोग भोगवचमां एक पुरुषार्थ मानी अवसरे अवसरे संपूर्ण भोगोने भोगवतो अज्ञानी नीव लांबा आयुष्यने इच्छतो भोगोने माटे अतिशय कुवचन बोलती वचन दंडनुं पाप बांधे हे. एटले जे माणस एम बोले के तप तथा इन्द्रिय दमन अथवा अहिंसादिक नियम फळवाळुं नथी एवुं बोलनारो मूढ तत्वने न जाणनारो हत उपहत थएलो नवां नवां जन्म भरण करी जीवित क्षेत्र स्त्री विगेरेमां लो-
खुप वनी तत्वमां विमुख अने अतत्वमां तत्व मानीने हित अहितनी वाचतमां पण उलटो चाले हे. ते बतावे हे.

दाराः परिभवकारा बन्धुजनो बन्धनं विषं विषयाः । कोऽयं जनस्य मोहो ? ये रिपवस्तेषु सुहृदाशा ॥१॥

स्त्रीओ अपमानने करनारी, बंधुजनबंधन समान तथा इन्द्रियोना विषयो विष समान हे. छतां माणसने आ केवो मोह हे के जे खरेखरा भ्रु हे. तेमां मित्रपणानी आशा राखे हे. पण जेओ भुश कर्म उपार्जन करीने मोक्षनी इच्छावाला बनेला हे ते केवा हे ते बतावे हे.

इणमैव नावकंखति, जे जणा शुवचारिणो । जाइमरणं परिन्नाय, चरे संकमणे दंदे (१)
 नत्थि कालस्स पागमो, सर्वे पाणा पियाउया, सुहसाया दुक्खपडिक्कला अप्पियवहा
 पियजीविणो जीविउकामा, सर्वेसिं जीवेयं पियं, तं परिगिञ्झ दुपयं चउत्पयं अ-
 भिजुंजिया णं संसिंचिया णं तिविहेण जाऽपि से तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुया
 वा, से तत्थ गड्ढिए चिदइ, भोअणाए, तओ से एगया विविहं परिसिदं संभूयं महो-
 वगारणं भवइ, तंपि से एगया दायाया वा विभयंति, अदत्तहारो वा से अवहरति,
 रायाणो वा से विळुंपंति, नस्सइ वा से विणस्सइ वा से, आगारदाहेण वा से डञ्झइ
 इय, से परस्सऽट्टाए क्कुराइं कम्मदाइं बाले ठक्कमणे तेण दुक्खेण स मूढे विप्परिया-
 समुवेइ, सुणिणा हु एयं पवेइयं, अणोहंतरा एए नो य ओहं तरिच्च, अतीरंगमा
 झए नो य तीरं गमिच्चए, अपारंगमा एए नो य परं गमिच्चए, अयाणिज्जं च आ-
 थाय तंमि ठाणे न चिदइ, वितहं पप्पस्खेयन्ने तंमि ठाणंमि चिदइ (सू० ८०)

जेधो धुवचारी एटले मोक्षनुं कारण ज्ञान विगेरे छे तेने मेळववाला स्वभाववाला छे तेवा धर्मात्मापुरुषो उपर कहेला असार जीवितक्षेत्र धन स्त्री विगेरेने चहाता नथी.

अथवा धुतचारी एटले धुत ते चारित्रतेमां रमणता करनारा छे. अर्थात् चारित्रलइ तेने पूर्ण पाळी मोक्ष मेळवे ते संसारने चहाता नथी वली भोगना अथावे ज्ञान मेळवीने जन्ममरणना दुःखने जाणीने तेवा पुरुषे संक्रमण (चारित्र) मां रमणता करवी एवुं जिव्यने गुरु कहे छे के विश्रोतसिका रहित अथवा परिसह उपसर्ग आवतां तारे कंटाळवुं नही अथवा हे शिव्य तुं शंका रहीत मन-वालो थइ संयममां रहे एटले शिव्ये तप दमन नियम विगेरे आलोकमां जे कष्ट छे. ते परभवनुं अनंतु सुख आपणे एवुं निःशंकपणे मानीने धर्ममां आस्था राखे; अने ते तप नियम विगेरे करे; अने तेथीज पोते तपना प्रभावथो राजा—महाराजाओने पण पूजवायोग्य थाप छे. जेणे विषय कषायने जीत्या छे, तेवा तपस्वी शांत पुरुषने अहीं जे सुखरूप फल मळ्युं छे, तथा तेणे वधा जोडकांने दूर करी समभाव मेळव्यो छे, तेवा पुरुषने परलोक कदाच न होय; तोपण तेनुं कंइ बगळतुं नथी. (उपशमभावमां अहींज अनंतु सुख छे, तेने परलोकना सुखनी इच्छाज नथी. कहुं छे के:—

“संदिग्धेऽपि परे लोके, स्याज्यमेवाशुभं बुधः ! यदि नास्ति ततः किं स्यादस्ति चेन्नास्ति को हतः॥१॥”

परलोक छे के नहि ? एवी एवी शंकावाळा लोकमां पंडित पुरुषोए पापने जोडवुंज जोइए; जो परलोक नथी; तो, तेनुं शं व-गडवातुं छे ? अने परलोक छे तोपण, तेनुं शं बगडवातुं छे ? एथी परलोक न माननारो नास्तिक हणायो. अर्थात् पापने करनारो

सूत्रम

॥३४५॥

आलोकमांज नास्तिक केदमां पडो दुःख भोगवे छे, तोपण तेनी आशा पुराती नथी; अने आस्तिक भोगने रोग मानी तेनी आशा मुके छे, तो ते देवनी माफक पूजाय छे. तेथी गुरुमद्वाराज शिष्यने कहे छे के तमारि पोताता वचमां रहेछुं संयम सुख मेळववामां दृढ रहेवुं. पण आवुं न विचारवुं के थोडा वर्ष पछी अथवा दृढावस्थामां धर्म करीश. कारण के मृत्युनुं आवुं अनिश्चत छे के हमणा मृत्यु नहि आवे. कारण के सोपक्रम आयुष्यवाळा जीवने कोइ अवस्था एवी नथी के—जेमां कर्मरूपी अग्निमां पडनारा लखना गोळा माफक जीव पीगळी न जाय. कहुं छे के—

शिशुमशिशुं कठोरमकठोरमपण्डितमपि च पण्डितं, धीरमधीरं मानिनममानिनमपशुणमपि
 च बहुगुणाम् । यत्तिसयतिं प्रकाशमवलीनमचेतन मथ सचेतनं, निशि द्विसेऽपि सान्ध्य
 समयेऽपि विनश्यति कोऽपि कथमपि ॥१॥”

बाळक, जुवान, कठोर कोमळ, मूर्ख, पंडित धीर, अधीर, अहंकारी दीन गुण रहित, घणा गुणवाळो, साधु, असाधु, मका-
 शवाळो अपकाशवाळो, अचेतन, सचेतन, अर्थात् जेटला जीवो संसारमां छे. ते वधा काळ (मृत्यु) थी दिवसमां, रात्रीमां अथवा
 संख्याता समयमां पण कोइ रीते नाश पासे छे. तेथी मृत्युना सर्वेने कडवापणाने समजीने उत्तम पुरवे अहिंसा विगेरे महाव्रतोमां
 सावचेत थवुं जोइए. शा माटे ते कहे छे.

“ सत्त्वे पाणा पिपाडया ”

एटले सूत्रमां वताव्या प्रमाणे वथा जीवोने पोतानुं आयुष्य प्रिय छे.

शंका—सिद्धने आयुष्य प्रिय नथी, तेशी तमारो कहेवामां दोष आवशे.

उत्तर—एटला माटेज अमे सुख्य शब्द जीवने न वापरतां माण शब्द वापर्यो छे. अने तेशी माण धारण करनार संसारी जीवज लेवा. तेशी तमारो बांधो नकामो छे.

“ सत्त्वे पाणा पियायया ”

आ पाठ छे. एटले आयुष्यने वदले आयत शब्द छे अने तेनो अर्थ आत्मा छे.

कारण के ते अनादि अनंत छे. अने वधाने पोतानो आत्मा वहालो छे. अने सुखनी वांछा दुःखनो नाश करवानी अभिलाषा छे. कहुं छे के—

सुहसाया दुःखपडिकूला.

आनंदरूप—सुख छे, तेनो स्वाद करवो ते सुख भोगववानी इच्छावाला जाणवा. अने असाता ते दुःख. तेना द्वेषी जाणवा; तथा पोतानो घात करे; तो, पोते अप्रिय माने छे, तथा जीवितने प्रिय माने छे, एटले दीर्घ आयुष्य वांछे छे, अने ते पण असंयम जीवित वांछे छे. एटले दुःखमां पीडाइने पण, अंतदशायां पण जीववाने इच्छे छे कहुं छे के:—

‘, रमइ विहवीं विससे ठितिमित्तं शैव विरथरो महई । मगइ सरोर महणो, रोगी जीए च्चिय कयर्थो ॥१॥”

वैभववालो विशेष वैभवया रमे छे. शोडावालो पण रहेवाने इच्छे छे. निर्धन पण पोतनां शरीरने संभाले छे. रोगी पण जीव-

वासां कृतार्थं माने छे.

तैथी आ प्रमाणे सर्व प्राणी सुखना जीवितना अभिलाषी छे; अने संसारी-निर्वाह आरंभ विना नथी; अने आरंभ छे, ते प्राणीने उपघात करनार छे, अने प्राणीओने पोताहुं जीवित वधारे वहाछं छे, तैथी बारंवार गुरुमहाराज उपदेश आपे छे के—दरेकने सर्वथा इन्द्रियोना विषय बहाला छे, अनेतैथी विषयोने ध्यानमां राखीने थुं करे छे ? ते कहे छे. बे पगवाळा दास दासी चार पगवाळा गाय घोडा विगैरे उपभोगमां लइने; धननो संचय करीने मन, वचन, अने कायाथी करवुं बराबहुं; अने अनुमोदनावहे पोतानां मनुष्य-जन्ममां जे कइ जीदगी परमार्थमां गुजारवी जोइए; तेने बढले तेने आरंभमां एटले पापकर्ममां रोकीने व्यर्थ करे छे, ते बरवते अर्थमां मुद्धयपछो पोते कलेबाने गणतो नथी. धनने रक्षण करवानो परिश्रम विचारतो नथी; तथा तेनी चंचलताने ध्यानमां लेतो नथी, तेना नकामापणाने तिसरे छे. (धनना अपायो भूलोने लपज नजरे जुए छे, अने पापयां रक्त रहे छे.) कहुं छे के—

कुम्भिकुलचिचं लालाह्विनं विगन्धि जुगुप्सितं, निरुपमरसप्रोत्था खादन्नरास्थि निरामिषम ॥

सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं सदाङ्कितमीक्षते, न हि गण यति क्षुद्रो लोकः परिग्रहफल्युताम ॥१॥

इमिना समूहथी व्यास अने लालथी भरेछं दुर्गंधवाछं निंदनीक एवुं भांस विनाहुं हाडकुं मोढाभां ममरावतो अधिक स्ववाद तेमां मालतो कुतरो—पासे उभेला इन्द्रने पण संकाथी जुए छे. (के रखेने माहं हाडकुं इन्द्र लइ न जाय.) आ उपरथी निश्चय एम जणाथ छे के क्षुद्र जंतु छे. ते पोतानी संघरेली बस्तुनी असारना जाणतो नथी. ते पैसाने शा माटे चाहे छे, ते कहे छे. भोजनने माटे—

ઉપયોગને માટે—ધનને ઇચ્છી તેવી તેવી ક્રિયામાં વર્તે છે. એટલે અવલગન. (વીજાનો આશરો લેવા) વિનેરેની ક્રિયા કરે છે. તેમાં લાભાંતરાય કર્મના ક્ષય ઉપશમમાં જુદીજુદી જાતતું મેલેહું અને વાપરતાં વચેહું સાચવવા મહાન ઉપકરણ મેળાં કરે છે.

અને કોઈ પાપીને તેવા લાભનો ઉદય ન હોય, તો ધનની ઇચ્છાએ તે રંક મનુષ્ય સમુદ્ર ઓઝંબે છે, પહાડ વઢે છે. સ્વાળ સ્વોદે છે, ગુફામાં વેસે છે, પારાનો રસ વનાવી તેના વઢે સુવર્ણ સિદ્ધિ (કીમીયો) કરવા चाहे છે. રાજાનો આશ્રય લે છે, સ્ત્રી કરાવે છે, આ વધી ક્રિયામાં પોતાને અને પરને દુઃસ્વ આપવા વઢે પોતાના સુલના માટે મેલવેહું ધન પોતે કપ્પ કરેહું હોય છતાં કોઈ વચત તેના પાપના ઉદયથી તેના પીતરાહુઓ તેમાં ભાગ પઢાવે છે. અથવા દગાથી લે છે. ચોરો ચોરે છે. રાજાઓ દંદે છે. અથવા પોતે રાજના મયથી જંગલમાં નાસી જાય છે. અથવા તેતું જુતું ઘર પઢી જાય છે. અથવા અગ્નિથી વહતાં ધન નાશ પામે છે. હુંટાહ જાય છે; આવાં ઘણાં કારણોથી અર્થ નાશ પામવાનો છે. ણથી ઉપદેશ કરે છે કે, હે શિષ્ય ! અર્થનો મેલવનારો વીજાનાં ગહાં રેસનારો પાપ કરીને આજ્ઞાની જીવ તે ધનથી સુલ મોગવવાને વઢલે દુઃસ્વ મોગવતાં મુહ વનીને વેહો યાય છે. અને તેથી વિવેક નાશ થવાથી કાર્ય—અકાર્યને માનતો નથી. તેજ તેની વિરૂપતા છે. કહું છે કે—

“રાગદ્વેષમિમૃતરવા, ત્કાર્યાકાર્ય પરાહ્મુલ્લઃ । ણ મૂહ ઇતિ જ્ઞેયો, વિપરીતવિધાયકઃ ॥૧॥

રાગદ્વેષથી વેરાવાથી કાર્ય અકાર્યના વિચારમાં શૂન્ય ણો વિપરીત કાર્ય કરનારો મૂહ માણસ જાણવો.

આ પ્રમાણે મૂહપણાના અંધકારમાં હવાયાથી જેને આલોકના માર્ગતું જ્ઞાન નથી ણવા સુલના અર્થો છતાં દુઃસ્વને પામે છે.

તેથી સર્વજ્ઞ વચન રૂપ દીવાને વયા પદાર્થનું સ્વરૂપ સ્વરેલ્યં વતાવનાર જાણીને ગુરુ કહે છે. હે મુનિઓ તેનો આશ્રય તમે લ્યો. મેં આ મારી બુદ્ધિથી નથી કહ્યું. ઇહું સુધર્માસ્વામી જંબૂસ્વામીને કહે છે, ત્યારે કોણે કહ્યું ? તે કહે છે. ત્રણે કાલમાં જગત વિષયમાન છે. ઇહું જે માને તે મુનિ જાણવા અને તે ત્રણે કાલનું જ્ઞાન જેને હોય તે સર્વજ્ઞ તીર્થંકર છે. તેમણે કહ્યું છે. તેઓએ અનેકવાર પોતાના યુન્ય વલ્લથી ડુંચ ગોત્ર વિગેરે મેલવ્યું છે. અથવા પ્રકર્ષથી અથવા પ્રથમથી જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતાં જ વયા જીવો પોતાની ભાષામાં સમજે તેવાં વચનવડે તેમને ઉપદેશ કર્યો છે. તે કહે છે.

અનોષ-ઓષ વે પ્રકારે છે. દ્રવ્યઓષ તે નદીનું પૂર વિગેરે છે. અને ભાવઓષ તે આઠ પ્રકારનું કર્મ અથવા સંસાર છે. તે આઠ કર્મથી સંસારી જીવ અનંત કાલ મમેં છે. તે ઓષને જ્ઞાન દર્શન અને ચારિત્રરૂપી વહાણમાં બેઠેલા મુનિઓ તરે છે. અને જેઓ નથી તરતા તે અનોષતરારા છે, અર્થાત્ જેઓ મુનિ ધર્મ પાકે છે તેઓ તરે છે, અને જેઓ તે ધર્મને છોડી વિષયના લાલચુ વને છે, તે જૈનેતર અથવા જૈનમાં પતિત સાધુ છે. તેઓ જ્ઞાન વિગેરે ઉત્તમ વહાણથી ષ્ટ થવાથી તરવાનો ઉચ્ચમ કરે તો પણ સંસાર તરવા સમર્થ થતા નથી. તેજ સૂત્રમાં કહ્યું છે—

નોષ ઓહં તરિત્ત્વ,

જે સંસાર તરતા નથી તે અતીરંગમા છે, ઇટલે તીર તે સંસારનો પાર તેની પાસે જાવું. તે તીરંગમા છે અને જેઓ વિષય રસમાં પડે તેઓ કિનારે ન જવાથી અતીરંગમ છે. તે કોણ ? તે કહે છે. જૈનેતર અથવા પ્રથમ કહેલા ધર્મ ષ્ટ જૈન સાધુ—તે વતાવે છે.

तेओ वेष थारे छे छतां सम्यक् आचार न पाळवाथी सर्वज्ञना कहैला सन्मार्गथी दूर होवाथी किनारे जता नथी तेज प्रमाणे अपारंगम पण जे. अहीं पार एटले, सामेनो तट जाणवो. तेज प्रमाणे अपारगत पण जाणवा; एटले वितरगता उपदेशथी वीरुद्ध चालवाथी पारगमनमां सफळता मळती नथी. आ वधुं कहीने कहे छे के:—ते संसारना सुखइच्छको संसारमांज अनंतकाळ रहे छे. जोके, तेओ वेष धारवाथी के, स्वेच्छाचारथी थोडुंक कष्ट पण सहैता होय; तोपण सर्वज्ञना उपदेशथी विकळ, अने पोतानी इच्छानुसार बनावेला शास्त्रनी सीतिण चालनारा होवाथी संसारपार जवाने समर्थ नथी.

प्रश्न:—तीर, अने पारमां भुं भेद छे ?

उत्तर:—अहींआं तीर एटले मोहनीयकर्मनो क्षय लेवो. तथा वाकीनां बीजां त्रण घातीकर्म दूर भवाथी पार जाणवो; अथवा तीर एटले, चार घातीकर्मनो नाश अने पारमां वाकीनां अघातीकर्मनो पण नाश जाणवो.

प्रश्न:—जैनेतर अथवा, पतितसाधु केम मोक्षमां न जाय ?

उत्तर:—जेनाथी सर्व पदार्थो ग्रहण कराय; ते आदानीय ते श्रुतज्ञान जाणवुं. ते श्रुतज्ञानमां कहा प्रमाणे संयमस्थानमां जे न वर्ते ते मोक्षमां न जाय अथवा लोकोने प्रियएवां भोगनां अंग दास दासी चोपणां धन धान्य सोनुं रुपुं विगेरे ग्रहण करीने अथवा मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगवडे ग्रहण करवा योग्य कर्म ग्रहण करीने ज्ञानादिमय मोक्षमार्गमां अथवा सम्क उपदेशमां अथवा प्रशस्तगुण स्थानमां जे जीव पोताना आत्माने स्थिर नथी करतो ते संसारमां भमे छे.

बली ते धर्मभ्रष्ट पोते बीतरागना उपदेश स्थानमां स्थिर यतो नथी. पण तेने बदले अनुचित स्थानमां वर्तं छे. ते बतावे छे. वितथ ते असल् वचन दुर्गतिनो हेतु छे तेने पापीने अकुशल अथवा खेदने जाणनारो असंयम स्थानमां वर्तं छे. अथवा वितथ एटले ग्रहण करावा योग्य भोग नथी. जुटुं जे संयम स्थान “छे तेने पापीने खेदने जाणनारो निपुण साधु तेज स्थानमां एटले कर्मने ह-
णवापां तत्पर रहे छे अर्थात् पोताने सर्वज्ञ प्रभुनी आज्ञामां स्थापे छे. आ उपदेश जे शिष्य ज्यां सुधी तत्वनो बोध पाप्त्यो नथी तेने सुमार्गमां वर्तवा अपाय छे. पण जे तत्वनो जाण तथा हेय (त्यागवा योग्य) उपादेय (ग्रहण करावा योग्य) नुं विशेष जाणे छे, ते बुद्धिमान. पुरुष यथाअवसरे यथायोग्य करवुं, ते पोतानी मेळेज करे छे; ते बतावे छे.

उद्देशो पासगस्म नरिथ, बाले पुण निहे कामस्मपुन्ने असमियदुक्खे दुक्खो दुक्खाणमेव

आवहं अणुपरियद्दइ (सू० ८१) त्तिवेमि ॥ लोकविजये तृतीयोद्देशकः ॥

उद्देश उपदेश एटले सत् असत् कर्तव्य तेना आ देशने जे जाणे ते पश्य जाणवो तेज पश्यक छे. तेने आ उपदेशनी जरूर नथी. ते पोतेज समजे छे.

अथवा पश्यक ते सर्वज्ञ अथवा तेना उपदेश प्रमाणे चालनारो जाणवो.

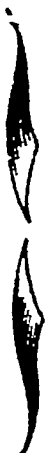
जे कहेवांच ते उद्देशो. ते नारकादि चार गति अथवा उंच नीच गोत्रनुं कहेवुं. ते उपर कहेला सर्वज्ञने अथवा उत्तम-साधुने

नथी. कारण के थोडाज वरतमां तेनो मोक्ष थवानो छे.

प्रश्नः—कयो माणस वीतरागना उपदेश प्रमाणे चालतो नथी ? ते कहे छे—

“बाल” राग विगेरर्थो मोहीत थएलो ते कषायो तथा कर्मोवडे अथवा परिसह उपसर्गोवडे हणाय छे. ते “निह” अथवा जे-नाथी स्नेह थाय ते स्नेहि ते जेने छे. जे स्नेह वालो रागी जाणवो. ते इच्छा संसार सुखनो अभिलाषी मनोहर भोगोतो रागी बनी कामनी इच्छावालो ते कामी वारंवार विषयनी इच्छा शांत न पडवाथी तेना दुःखथी दुःखीओ बनेलो शरीर अने मनमां दुःखोथी पीडितो रहे छे. कांटा तथा शस्त्रनो वा अथवा गुमडुं कोड विगेरर्थी शरीर दुःख भोगवे तथा वहालांनो वियोग अप्रियनो संयोग अनिष्टनो लाभ अने इच्छितनो अलाभ तथा दारिद्र दुर्भाग्यथी मननी पीडाओ भोगवे छे. अने तेनाथी वारंवार आर्त्तध्यान करतो वारंवार तेमां भमे छे. एटले दुःखना आवर्त्तमां डुबेलो संसारमां भमे छे. (आ बधानो सार ए छे के—जे अहंकार करे—दीनता करे ते संसारमां भमे अने जे मुनि सुख दुःखमां अहंकार दीनता न करतां चारित्रने समता भावे आराधे ते मोक्षमां जाय)

लोक विजयनो जीजो उदेशो समाप्त थयो.



तओ से षगया रोगसमुपयाया समुपजति जेहिं वा सार्द्धि संवसइ, ते व णं एगया नियया पुर्विं परिवयंति, सो वा ते नियगे पच्छा परिवइज्जा, नालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा तुमंषि तेसिं नालं त्राणाए वा सरणाए वा जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं,

भोगा मे व अणुसोयन्ति इहमेगोसिं माणवाणं (सू० ८३)

त्रीजा उद्देशो क्खा पछी चोथो उद्देशो कहे छे—

भोगोमां भेम न करवो. ए आ उद्देशांमां छे. जेथी भोगीओने शु दुःखो थाय छे, ते बतावे छे. पूर्वे पण तेज कहुं छे के भोगीओने कोह वखते रोग उत्पन्न थाय छे. पूर्वे बतावुं के संसारमां विपयी जीव परिभ्रमण करे छे. ते जीव आ दुःखोने पण भोगवे छे, आ प्रमाणे त्रीजा उद्देशानो संबंध छे. तथा एना पहेलांना सूत्रनो आ संबंध छे के बालक जेवो जीव भेममां पड्डीने काम भोग करे छे. ते काम दुःखरूपज छे. तेमां आसक्त थएला जीवने वीर्यनो क्षय भगंदर विगेरे रोगो थाय छे. तेथी कहे छे के कामना अभिलाषथी अशुभ कर्म वंधाय अने तेथीज सरण थाय छे, पछी नरकमां उत्पन्न थाय छे, अने नरकमांथी नीकळीने माना पेदमां वीर्यना वीदुमां उत्पन्न थइ कलक अर्बुद पेथी व्युह गर्भ प्रसव विगेरेनां दुःख भोगववां पढे छे. तयार पछी मोटो यतां रोगो थाय छे. आ वधुं अशुभ कर्महुं फल उदय आवतां थाय छे, ते रोगो बतावे छे, माथाहुं दुखवुं पेदमां शूक उठवी विगेरे रोगो थाय छे. आ रोग उत्पन्न यतां जेथी साथे ते वसे छे. ते सगां तेने निंदे छे, अथवा चाकरी न यतां सगांने ते निंदे छे, वली गुरु कहे छे, के हे शिष्य ! जे सगां उपर मोह राखे छे, ते सगां तेना प्राण रक्षणना माटे यतां नथी, तेम तुं पण तेना प्राण अरणना माटे थवानो नथी. एवुं जाणीने तथा जे कंर दुःख सुख आवे छे, ते पोताना कार्याहुंज प्राणीओ फल भोगवे छे, तेथी रोगोनी उत्पत्तिमां दिनता न लाववी; तथा सुंदर भोगोने याद करवा नहि, तेथी “ सूत्रमां कहुं छे के” शब्द रूप रस गंध अने स्पर्श ए पांच विषयनो

अभिलाष असे कोइ पण अवस्थामां भोगवीए एवी इच्छा न करवी, तथा पूर्व अमारी चढती अवस्थामां तेनो आनद न लीधो, एवुं पण याद न करवुं, “एटले इच्छा” संसारमां जेमणे विषय रसना कडवां फळ जाण्यां नथी तेवा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती विगोरेने थाय छे. पण वधाने तेवा भोगनी इच्छा थती नथी. जो तेम न मानीए तो सनत्कुमार चक्रवर्ती जेवाने पण दोष लग्गे ते वतावे छे—

ब्रह्मदत्त मरणांतिक रोगनी वेदनाथी पीडाएल्लो संतापना अतिशयथी प्रिय स्त्रीने स्पर्श करया माफक विश्वास थूमीमां मूर्खीने पायेलो तेने बहु मानतो तथा कोफडुं वली गएलो तथा विषमत्तानो विषयी वनेलो ग्लानीथी पीडाएलो दुःख तलवारथी घवाएलो, काळे बाथमां लीधेल्लो, अने पीडाथी पीडाएलो, नियतिए दुर्दशामां मूकेलो दैवे भाग्यहीन वनावेल्लो डेवदना उच्छ्वासमां पहींचेल्लो महा प्रवासना सुखमां पडेल्लो दीर्घ निद्राना द्वारमां पडेल्लो जीवित इज्ञ (जम) ना जीह्याप्रि आवेल्लो, बोलीमां गद गद वनेलो, शरीरमां विहळ वनेलो, शलापमां प्रचुर थएलो जृम्बिका (रोवा) वडे जीताएलो अर्थात् करेलां पापोथी दुर्गतिमां जवानी तैयारी करी रहेलो. छतां महा मोहना उदयथी सुंदर भोगोनी इच्छावाळो पासे वेठेली भार्या छे पोते पतिना दुःखनी भयंकर वेदनाथी पीडाइने आंखमांथी आंघु पाडती राती आंखोवाळी सामे वेठेली छे. तेने कहे छे के—हे कुरुमति हे कुरुमति हे कुरुमति एम वारंवार पोकरवा छतां (ते स्त्रीना दे-खतज) पोते सातमी नारकीए गयो.

त्यां पण अतिशय वेदना भोगवतो छतां वेदनाने न गणकारतो ते कुरुमतिने बोलावे छे. आ प्रमाणे भोगोनां प्रेम कोइक जीवोने बीजी गतिमां पण तजवो दुर्लभ छे. पण जे उदार सत्ववाला महान् पुरुषो छे. तेमने ते नथी जेमके जेणे आत्माथी शरीर

जुहुं जाणुं छे. एवा सनत्कुमार जेवा तत्वप्रेमीओने तेवो भयंकर रोग आववा छतां पण (हायपीट करवाने बदले) में पूर्वे पाप कर्यां छे. ते हुं भोगवुं छुं. एवो निश्चय करीने कर्म समूहने तजवा तैयार थएलाने (शरीर दुःख छतां पण) मनमां कलेत्र थतो नथी. कहुं छे के—
 “ उसो यः स्वत एव मोहसलिलो जन्मालवालोऽशुभो, । रागद्वेषकषायसन्ततिमहाद्भिर्विद्वबीजस्त्वया ॥
 रोगैरंक्रुरितो विपत्कुसुमितः कर्मसद्गुमः साम्प्रतं, । सोढा नो यदि सम्यगेष फलितो दुःखैरयोगामिभिः ॥१॥

उत्तम पुरुष पोताना आत्माने समजावे छे. के हे आत्मा जे मोहरूपी पाणीवालो अने अशुभ जन्मरूपी “आळवाल” (झाडने पाणी पावानो कपारो) वालो तथा रागद्वेष तथा कषायनो समूह तेना वडे निर्विद्वनपणे मोहुं बीज तें रोएणुं छे तथा ते हवे रोगे करीने अंकुरावाळुं थयुं छे. विपदाओ तेनां फुलां छे. एवुं कर्मरूपी मोहुं झाड तें तैयार करुं छे जो हवे तेने सारी रीते सहन नहींकरे तो नीच गतिमां लइ जनार दुःखोए करीने ते फलवालो थरो (जो तुं तेने लीधे हायपीट करीबा तो फरीथी दुःखो भोगववां पडथो.)

पुनरपि सहनीयो दुःखपाकस्त्वयाऽयं । न खलु भवति नाशः कर्मणा संचितानाम् ॥

इति सह गणयित्वा यद्यदायाति सम्यग् । सदस्दिति विवेकोऽन्यत्र भूयः कुतस्त्यः ? ॥२॥

जो हुं हायपीट करीबा तो तारे फरीथी पण दुःखनो पाक भोगववां पडथो. कारणके हायपीटथी वंध्यायेलां कर्मोनो नाश भोगववा विना थरो नहीं. आ प्रमाणे समजीने जे जे दुःख सुख आवे ते सहन कर. तेज विवेक छे, ते सिवाय बीजो विवेक कयांथी होय (विवेकनुं लक्षण ए छे के दुःख सुखमां हायपीट न करवी पण संतोषथी रहेवुं.)

भोगोक्तुं मुख्य कारण धन છે, તેથી તેનું સ્વરૂપન સૂત્રકાર કહે છે.

તિવિહેણ જાડવિ સે તસ્થ મત્તા ભવદ્ અપ્પા વા વહુગા વા, સે તસ્થ ગહિણ્ ચિદ્દહ,
ભોયણાણ, તઓ સે ણગયા વિપરિસિદ્ધં સંભૂયં મહોવગરણં ભવદ્, તંપિ સે ણગયા દા-
યાયા વિભયંતિ, અદત્તહારો વા સે હરતિ, રાયાણો વા સે વિહુંપંતિ, નસ્સદ્ વા સે
વિણસ્સદ્ વા સે, અગારહાહેણ વા સે હહ્હદ્ દ્વય, સે પરસ્સ અદ્દાણ્ કરાણિ કમ્મા-
ણિ વાલે પહુવ્વમાણે તેણ દુવચ્ચેણ મૂદે વિપ્પરિયાસમુવંદ (સૂ. ૯૩)

ત્રણ પ્રકારે ણદલે મન, વચન, અને કાયાથી તેની પાસે જે કંઈ મીલકત થોડી અથવા ઘણી છે. તેમાં ભોગી શુદ્ધ થઈને રહે છે. તે માને છે કે—આ મીલકત મારે ભવિષ્યમાં ભોગ ભોગવા કામ લાગશે. તેથી તેનું રક્ષણ કરવા મહાન ઉપકરણો રાखે છે. પણ જો તેનું ણકટું કરેલું ધન કોઈપણ રીતે નાશ મામે છે ણદલે પીતરાઈયો ભાગ પઢાવે, ચોરો ચોરી કરે, રાજાઓ હુંડે, નાશ પામે, વઠી-જાય વિગેરેથી પોતાને ભોગમાં ન આવવાથી દચ્છા પુરી ન થતાં તે વેલો વને છે. અને ધનને માટે કુર કર્મ કરતો અજ્ઞાની જીવ તેના દુઃખ વડે મૂઢ વને છે. આ વધું પૂર્વે કહેલું છે, તેથી સમજી લેવું. અહીં નથી કહેતા આ પ્રમાણે દુઃખના વિપાકવાલા ભોગોને જાણીને ઢાહ્યા મુનિણ્ શું કરવું તે કહે છે.

आसं च छन्दं च विर्गिंच धीरे ? तुमं चैव तं सहस्रमाहट्टु, जेण सिया तेण नोसिया,
इणमेव नाव बुद्धंति जे जणा मोहपाउडा, धीभि लोए पवहिए, ते भो ! वयंति ए-
याइं आययणाइं, से दुःबखाए मोहाए माराए नरगाए नरगतिरिक्खाए, सययं मुढे
धम्मं नाभि जाणइ, उआहु वीरे, अप्पमाओ महासोहे, अलं कुसलस्स पमाएणं सं-
तिमरणं संपेहाए, भेउरधम्मं संपेहाए, नालं पास अलं ते एएहिं (सु० ८४)

गुरु उत्तम शिष्यने कहे छे के—

तुं भोगोनी आशाओने तथा भोगोना अभिलाषोने छोड, धी. (बुद्धि) तेना वढे राजे. (शोभे) ते धीर गुरुव जाणवो.
तेवा उत्तम शिष्यने गुरुनो उपदेश लागे छे. तेथी कहे छे के हे शिष्य ! भोगमां दुःखज छे. अने तेमां सुखनी पासि नथी. (सु-
गतृष्णामां जळ नथी. पण जळनो खांटो आभास छे तेम भोगोमां सुख नथी.) आ पमाणे शिष्यने गुरु समजावे छे. अथवा पोते
आत्माने समजावे छे. के हे आत्मा तुं भोगनी आशा विगेरे शल्यने छोडीने परमशुभ संयम तेहुं सेवन कर. पण भोगोने विसरी जा
कारणके जे जे पैसा विगेरेना उपायथी भोग उपभोगनी आशा छे तेना वढे मळतो नथी. पढले जेना वढे भोगो मळे तेज धन विगेरेथी
कर्मनी परिणति विचित्र होवाथी धार्या करतां उलटुं थाय छे.

अथवा गुरु महाराज कहे छे के जेना वढे कर्म बंधन थाय ते कृत्य तारे न करवुं. एटले पापना काममां न वर्तवुं अथवा जेना वढे राजना उपभोग विभेरेनो कर्म वंध छे, ते न करवुं. (एटले संयमथी राज सुख न वांच्छवुं) अथवा जे साधुपणाथी मोक्ष थाय तेज साधु जो भोगमां पढे तो मोक्षने वढले संसार भ्रमण थाय (माटे साधुए दरेक जग्याए विवेकथी वर्तवुं.)

आ प्रमाणे अनुभवथी निश्चय करेछुं छतां मोहथी हारेला जीवो सत्य वातने समजता नथी. आज हेतुनुं विचित्रपणुं छे के जे पुरुषो तीर्थकर पशुना उद्देशथी रहीत छे. तेओनुं मोह तथा अज्ञान वढे अथवा मिथ्यात्वना उदयथी तत्व संबंधी ज्ञान बंधाएछुं छे. तेओ मोहनीय कर्मना उदयथी मूढ बने छे. अने तेओने स्त्रीओ भोगनुं मुख्य कारण छे, ते बतावे छे.

एटले युवान स्त्रीओना कटाक्ष अंगना चाला सुंदर देवाव हाथना लटकवा विभेरेथी आ लोक (ससारी जीव समूह) आशा अने अभिलाषथी हारेला जीवो क्रूर कर्म करीने नरक विपाक फलरूप शल्यने मेळवीने ते दुर्गतिना दुःखरूप फळने विसरीने मोहथी सुमति (अंतरात्मा) ने विसरेलो प्रकर्ष करीने पीडाएलो पराजित बने छे. एटले पोतेज परवश थाय छे. एटछुं नहीं पण बीजाओने पण वारंवार खोटो उपदेश आपीने दुर्गतिमां लइ जाय छे. ते मूढो आ प्रमाणे बोले छे. आ स्त्री विभेरे उपभोगने वास्ते आनंदमां स्थान वनावेलां छे. एना विना शरीरजी स्थिति नज थाय अने ते उपदेश तेओना दुःखना माटे थाय छे. एटले तेमना कहेवा प्रमाणे चालनारने पण शरीर तथा मननां दुःखो भोगववां पढे छे. अथवा मोहनीय कर्म बंधाय छे, अथवा ते अज्ञानी बने छे. अने वारंवार तेमने मरणनां दुःख थाय छे. नरकमां जवुं पढे छे, त्यांथी नीकलीने तिर्यंच थवुं पढे छे. आवधानो मूळ कारण स्त्रीमां मोह पामवाहुं

હે. ઇટલે સર્વ મોગોમાં મુલ્ય મોગનું સ્થાન આ સ્ત્રી છે. અને તેથીજ વધાં દુઃખ છે એમ વધી જાવ્યાં સંબંધ લેવો.

આ પ્રમાણે સ્ત્રીના દાવખાવથી તેના અંગ જોવામાં રસીઓ વનેલો ઉપર કહેલી યોનીઓમાં ભમતો હતાં આત્માના હિતને જાણતો નથી. તથા નિરંતર દુઃસ્વથી હારીને મૂઢ વનેલો ક્ષમા વિગેરે દશ પ્રકારના લક્ષણવાલા સાધુ ધર્મને જાણતો નથી. અને તે ધર્મ દુર્ગતિના અમળને રોકનાર છે. તેવું જાણતો નથી. આ તીર્થંકરે કહેલું છે કોણે કહું ? તે કહે છે.

જેણે સંસારનો ભય વિસાર્યો તે વીર પ્રથુએ કહું છે. હે શિષ્યો, તમારે મહા મોહમાં ઇટલે સ્ત્રીઓના દાવખાવમાં રક્ત થવું નહીં પણ સાવચેત રહેવું. તેજ મહા મોહનું કારણ છે. ઇટલે તે સ્ત્રીમાં જરાએ પણ રાગી ન થવું પ્રમાદ ન કરવો. આ નિપુણ બુદ્ધિવાલા શિષ્યને માટે આટલું વચન વસ છે. વલી મત્ર, વિષય, કપાય, નિદ્રા, વિકૃત્યા, એ પાંચ પ્રકારના પ્રમાદથી તમારે સાવચેત રહેવું કારણકે તે પ્રમાદ ઉપર કહેલાં દુઃખો આપવાને માટેજ છે.

પ્રશ્ન—શું આધાર લઈને પ્રમાદને હોદવો ?

ઉત્તર—શાંતિ ઇટલે શમન તે વધા કર્મનો નાશ જાણવો તે મોક્ષ તેજ શાંતિ છે.

પ્રાણીઓ વારંવાર ચાર ગતિના સંસારમાં મરણ જેના વઢે પામે છે, તે સંસાર છે. તે શાંતિ અને મરણ એ વન્નેને વિચારીને પ્રમાદ હોદવો. ગુરુ કહે છે કે હે શિષ્ય, એક વાજુ પ્રમાદીને વારંવાર જન્મ મરણનું દુઃખ છે. અને વીજી વાજુ અપ્રમાદીને જન્મ મરણના ત્યાગરૂપ અનંતું સુખ છે એ વન્નેને કુશલ બુદ્ધિવાલા શિષ્યે વિચારીને વિષય કષાયરૂપ પ્રમાદને ન કરવો.

अथवा शांतिवदे मरण एटले मरणसुधी जे फल थाय छे ते विचारीने प्रमाद न करवो. एटले जीवतां सुधी उत्तम पुरुष कोइपण साथे क्लेश न करवो. अने ते क्लेश प्रमादथी थाय छे माटे प्रमाद न करवो.

वकी विषय कषाय अने स्त्रीना विलासरूप जे प्रमाद छे ते शरीरना अंदर रहेलो छे. अने ते शरीर पोतानी मेले नात्र पामनारं छे. तो तेवा नाशवंत शरीरने विचारीने साधुए प्रमाद न करवो. (जे शरीरना माटे प्रयास थाय ते शरीर नाशवंत छे. धन अर्हीज रहेवातुं छे.) एटले भोगो भोगववा छतां पण तृप्ति थती नथी. तेम भोगो अभिलाषने संतोष प्रमादी शकता नथी. माटे हे शिष्य ! तारी बुद्धिवदे जो के दुःखना कारणवाला प्रमादरूप विषयोतुं भोगवतुं छे ते तस्मिने अथवा शांतिने आपता नथी. कहुं छे के—

“यस्योके द्राहियवं, हिरण्यं पद्मवः स्त्रियः । नालमेकस्य तत्सर्वमिति मत्वा शमं कुरु ॥ १ ॥
आ लोकना विषे द्रीहि, जव, सोतुं, पशुओ, स्त्रीओ, विगेरे बधुं पण एक माणसनी तस्मिना माटे समर्थ नथी एहुं समजीने तेनो मोह जोड, आत्माने शान्त कर.

उपभोगो पायपरो वांछति यः शमयितुं विषयतृष्णाम । धावत्याक्रमि तुमसौ, पुरोऽपराहे निजच्छायाम् ॥ २ ॥
उपभोगना उपायमां तत्पर थएलो जे विषय तृष्णाने शान्त करवा इच्छे छे तो फरीथी आंतरे पोतानी छायामां आक्रमण करवाने ते तृष्णा तैयार रहे छे (एक इच्छा पूरी करीके बीजी तैयारज छे. तृष्णानो अंत कोइ बलवत नथी) तेथी भोगना लालचुओने तेनी प्राप्तिमां के अप्राप्तिमां दुःखज छे ते बतावे छे.

एयं परस सुणी ! महबभयं, नाइवाइज्ज कंचणं, एस वीरे पसंसिए जे न निद्विजइ,
आयाणाए, न मे देइ न कुपिजा थोवं लहुं न खिसए, पडिसेहिओ परिणमिजा एयं
मोणं समणुवासिज्जासि (सू० ८५) ॥त्तिवेमि॥

गुरु सारा शिष्यने कहे छे के हे सुनि ! भोगनी आशारूप महा तापथी बेरायेजा पुरुषने कामदशानी अवस्थाना मोटा भयने तुं प्रत्यक्ष जो, कामीने डगले डगले बीजानो भय छे. तेथी मोटो भय तेज दुःख छे. अने भोग लंपटोने मरणहुं कारण छे. तेथी ते मोटो भय कह्यो, तेथी हे शिष्य ! आ लोक अने परलोकमां भय आपनार भोगोने जाण, तेथी शिष्ये थुं करहुं ते गुरु कहे छे.

माटे तुं ते भोगोथी तारा आत्माने दुर्गतिमां न नाखीश, तुं कोइ जीवोने दुःख न आपीश. तेज प्रमाणे बीजा कोइने जुहुं बोली न फसावीश तेभ चोरी पण न करीश विगरे पांचे पापेने त्यजजै.

जे भोगथी दूर रह छे अने जीव हिंसाथी दूर रह छे. ते महात्माने थुं गुण थाय छे ते बतावे छे. ते भोगोनी आशा अभिलाषा त्यागनार अपमादि साधु पंचमहाव्रतना भारथी पोतानो स्कंध नमावेलो अनेक कर्म विदारण करवाथी वीर पुरुष इंद्र विगरेथी स्तुति कराय छे.

पश्च—क्या पुरुषनी स्तुति थाय छे ?

उत्तर—जे महात्मा आत्माने ग्रहण करवा योग्य तत्वने ग्रहण करे छे एटले वथां घातीकर्म क्षय थावाथी वधी वस्तुनो प्रकाश करनार केवलज्ञान तेने प्रकट थावाथी अव्यावाय सुख मळे छे. ते ज्ञान मळवानुं सुख्य कारण संयमनुं अनुष्ठान छे. तेमां दीष ल-

गाढतो नथी. अथवा रेतीना कोलीआ खावा मुक्केल छे तेवुं संयम पाळवुं कठण छे छतां पाळे छे. एटले कोइ वखत गोचरी न मळे तोपण साधु संयमने मूके नहिं तेम मनमां दिनता पण न लावे.

अथवा आ गृहस्थ पोतानी पासे वस्तु छे छतां मने आपतो नथी. एवुं मानीने तेना उपर क्रोध न लावे. परंतु मुनिए एम मानवुं के आ मने अंतराय कर्मनो दोष छे. अने न मळवाथी तपनो लाभ थरो तेथी मने कांइपण नुकसान नथी. अथवा थोडुं आपे अथवा तुच्छ खोराक आपे तोपण दान आपनारने निंदे नही.

कोइ गृहस्थ ना पाडे तो त्यांथी रीखाया विना खसी जवुं. एकक्षण मात्र पण दृढ लइ उभा न रहेवुं. अथवा दान आपनारी बाइने कट्ट वचन न कहेवां जेमके तारा गृहस्थावासने धिक्कार छे ?

“दिद्व्याऽसि कसेरुमई ! अणुभूयासि कसेरुमइ ! । पीय चिय ते पाणिथयं वरि तुह नाम न दंसपं ॥१॥”

हे उदार बुद्धिवाली स्त्री ! तने जोइ ! हे उदार बुद्धिवाली ! तारो अनुभव कर्यो ! तारं पाणी पीजुंज ! तारं नाम सारं ! आ-टलुं वयुं छतां पण तारं दर्शन सारं नथी. (आवुं साधुए बोलवुं नहिं.)

कदाच ते आपेतो लइने रस्तो पकडवो. पण त्यां उपारहीने तीचा उचा वचन वढे तेनी स्तुति निंदा न करवी. अर्थात् भाटनी माफक तेनां खोटां भीतडां न गावां. आ वधानो सार कहे छे.

आ पत्रज्याना निर्वेदरूप (शांतिथी) दातार उपर न आपे तो पण कोप न करवो, थोडुं आपे तो निंदा न करवी. आपे तो ल-

इने चालता थवुं. आ मुनिनुं मौन छे. एटले मोक्षार्थि साधुनुं आ आचरण छे. तुं पण अनेक भव कोटिने भ्रमण करतां अमूल्य एवा संयमने पापीने सारी रीते पाळजे, आम गुरु शिष्यने समजावे छे. अथवा पोताना आत्माने उपदेश आपे छे. के तुं राण द्वेष न करजे.

चोथो उदेशो समाप्त भयो.



हवे पांचमो उदेशो कहे छे. तेनो आ संबंध छे आ लोकमां भोगोने तजीने संयम देह पाळवाने माटे लोकनी निश्चाए विहार करवो जोइए. ते आ उदेशामां वतावे छे.

आ लोकमां संसारथी खेद पामेला भोगना अभिलाष तजेला मोक्षानिलापिण पोतानामां गुरुए स्थापन करेला पंच महाव्रत भार बडे निर्बन्ध अनुष्ठान करनारा मुनिए दीर्घ संयमनी यात्रा माटे देहनुं परिपालन करवा लोकनी निश्चाए विहार करवो जोइए, कारण के आश्रय विना देहनां साधन क्याथी थाय ? अने देह विना धर्म क्याथी थाय ? कहुं छे के—

“धर्मं चरतः साधोर्लोकं निश्चापदानि पञ्चापि । राजा गृहपतिरपरः षट्कृत्वा गणशरीरे च ॥१॥”

धर्ममां चालनारा साधुने लोकमां पांच निश्चानां पद छे, राजा गृहस्थ लकाय साधु समूह तथा शरीर ए पांच जाणवां वरु, पात्र, अन्न, आसन, शयन, विगोरे साधनो छे. तेमां पण प्रायः निरंतर आहारनो मुख्य उपयोग छे. अने ते आहार गृहस्थ पासेथीज लेवानो छे. अने गृहस्थो जुदा जुदा उपायो बडे, पोताना पुत्र स्त्री विगोरे माटे आरंभमां प्रवर्तेला छे, तेमने त्यां साधुए संयम देहनी

रक्षामादे निर्वाहं कर्त्वा जोइती वस्तु शोधवी जोइए. ते बतावे छे—

जमिणं विरुवरुवेहिं, सरथेहिं लोणस्स 'कम्मसमारंभा' कज्जंति, तंजहा—अप्पणो से
पुत्ताणं, धूयाणं सुण्हाणं नाईणं, धार्ईणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्म
करीणं आएसाए पुढोपहेणाए सामासाए पायरासाए संनिहि संनिचओ कज्जई,
इहमेगेसिं माणवाणं भोगणाए (सु० ८६)

तत्त्वने जाणनारा पुरुषो सुख मेळववा तथा दुःख छोडवा माटे जुदांजुदां शस्त्रो जे प्राणीओने दुःख आपनारां छे, ते द्रव्य अने
भावथी बे प्रकारनां बताव्यां छे, तेनावडे पोताडुं शरीर पुत्र दीकरी छोकरानी बहु ज्ञाती विगेरेना निर्वाह माटे कर्मना समारंभो
करे छे, ते बतावे छे.

सुख मेळवडुं, दुःख छोडवुं, तेना माटे कायाथी अधिकरणवडे, अथवा द्वेषथी, परिताप उपजाववावडे, अथवा जीवथी शरीर
दूर करवावाली पांच पापनी क्रियाओ छे, अथवा खेतीवाडी व्यापार विगेरे कर्मना समारंभो छे, ते लोको करे छे.

आ समारंभ शब्द खेवाथी “संरंभ.” तथा आरंभ पण जाणी खेवा एटखे शरीर अने स्त्री माटे लोको संरंभ समारंभ अने आरंभो करे छे.
संरंभतुं वर्णन—इष्ट प्राप्ति अनिष्ट छोडवुं. तेने माटे प्राणातिपात विगेरे, संकल्पनो आवेश जाणवो.

समारंभहुं वर्णन—संकल्प कर्मां पढी तेनां साधन भेगां करां, तथा काया अने वचनना वेपारथी वीजाने परिताप विगेरेना लक्षणवालो छे, आरंभहुं वर्णन—त्रण दंड (मन वचन काया) ना व्यापारथी मेळवेळी तथा उपयोगमां लीधेळी जीव हिंसा विगेरेनी क्रिया चालु करवी, ते आरंभ छे, अथवा आठ प्रकारना कर्मना समारंभ, एटले जोइती वस्तुने मेळववाना उपायो करावा ते.

सूत्रमां लोक शब्द छे, ते लोक कयो छे, के जेना वहे आरंभो कराप छे ? ते बतावे छे.

आत्मा शरीरथी जोडाएलो छे, ते शरीर निभाववा लोको आरंभ करे छे, तेज प्रमाणे पुत्र दीकरी विगेरे माटे पण आरंभ कराय छे, एटले रसोइ विगेरे वनाववी पडे छे. तेवी रीते वीजा आरंभो पण करावा पडे छे एवुं पूर्व कहुं छे.

प्रश्न—शरीर लोकशब्दना अर्थमां केवीरीते वटे. ?

उत्तर—तमारं कहेवुं वरावर नथी, कारण के परमार्थ दृष्टिथी जोनाराओने ज्ञान दर्शन चारित्ररूप अत्मतत्त्वने छोडीने बाकीहुं शरीर विगेरे पण पारखुंज छे, कहुं छे के—वहारना पुद्गळहुं बनेहुं अचेतनरूप कर्महुं विपाकरूप पांचे शरीरो छे. तेथी शरीर आत्म पण लोक शब्दवडे बताव्यो, तेथी कोइ शरीर माटे पापक्रियाओ करे छे, वीजो कोइ दीकरा दीकरी माटे, तो कोइ दीकरानी वहुने माटे तो कोइ न्यात माटे, तेज प्रमाणे संबंधथी जोडाएलां सगां, थाव माला माटे, राजा माटे दास दासी माटे नोकर नोकरदी माटे आरंभ करे छे, कोइ परीणा माटे करे छे, कोइ जुदा जुदा पुत्र विगेरेने प्रहेणक माटे करे छे, कोइ रात्रिमां खावा रांधे छे. कोइ प्रयातमां खावा रांधे छे, ते आ वधायां कर्म समारंभ छे, वळी विशेष कहे छे—

जल्दी नाश पावे तेवी वस्तुओने राखी मूके छे, दहीं भात मेळवी राखे छे, तथा यणो काल रही शके तेवी वस्तुओनो संचय पण करे छे, ते बाल हरडे, साकर द्राक्ष, विगेरेने संघरे छे, आ बधु परिग्रह विगेरे आजीविकाना कारणे छे, अथवा धनधान्य सोडुं विगेरेनो संग्रह करे छे, आ बधुं शा माटे करे छे ते कहे छे:—

आ लोकमां परमार्थ बुद्धिवाळा मुनिओने जमादवा माटे करे छे, एटले कोइ स्वार्थ माटे, तथा कोइ परमार्थ माटे रात्रिमां, प्र-
भातमां के दिवसमां भोजन माटे के, निर्वाह माटे संसारी—पापक्रियाओ करे छे, अने विरूप रात्रोवडे बीजां जीवोने पीडा करे छे.
आ प्रमाणे लोकनी स्थिति होय; तो, साधुए श्रुं करवुं ते कहे छे:—

समुद्विष्ट अणगारे आरिष्ट आरियपन्ने आरियदंसी अयंसंधिति अदक्खु, से नाईए ना-

इयावए न समणुजाणइ, सत्तासगंधं परिज्जाय निरामगंधो परिववए (सु० ८७)

जे साधु सम्यक् रीते निरंतर संयम अनुष्ठानवडे वर्ते छे, ते जुदां जुदां रात्रोवडे यती पापक्रियाथी मुक्त थयलो छे, ते मुनिने घर नथी; तेम ममत्त्व पण नथी; तेथी ते अनगार छे, तेम तेने गृहस्थनी माफक दीकरा—दीकरी बहु विगेरेने पण पोषवां नथी. ते अनगार पोते बधां पापकर्मोथी दूर थयेल छे, तेथी ते आर्य छे, तेथी ते चारित्रने पाळवा योग्य छे. वळी जेनी बुद्धि उत्तम छे, ते आर्य प्रज्ञावाळो जाणवो; एटले सूत्र भण्णथी; जेनी बुद्धि परमार्थमां रथिलेली छे, तथा न्यायमां मन रहेछुं होवाथी ते न्यायने जुए तेथी ते आर्यदर्शी छे, एटले ते जुदा “ प्रहेणक ‘ इयामा ’ अज्ञान ” (पूर्वे परोणां विगेरे माटे राते रांघवुं; विगेरे तेनाथी मुक्त)

હે, તથા પોતે “ અયંસધિ ” હે, ઇટલે પોતાનાં દરેક કાર્ય યોગ્યસ્વતે કરનારો હે. હ્યારે જે કરવું હોય; તે પ્રમાણે કરે હે. કપડાં જોવાં; ધ્યાન રાખવું; સિદ્ધાંત ષણવો; ગોચરી જવું; પતિક્રમણ કરવું. વિગેરે દરેક ક્રિયા ઇકવીજાને ‘વાધા’ વિના સમયે સમયે કરે હે, તેજ પરમાર્થને જોનારો જાણવો. તથા તે સુતિ “ અદક્વું ” હે, ઇટલે જે આર્ય હે, આર્યબુદ્ધિવાળો હે. આર્યદર્શી હે, કાઠને જાણનારો હે, તેજ પરમાર્થને જાણનારો જાણવો. વીજી પ્રતિમાં સૂત્રપાઠમાં ખેદ હે, તે,

અયં સંધિમદક્વું હે—

તેનો અર્થ કહે હે:—પૂર્વે વતાવેલાં ઉત્તમ વિશેષણવાળો સાધુ કર્તવ્યકાઠને જાણે હે, ઇટલે જે પરસ્પર હિત-અહિત મેઠ્ઠવું, હોઠ્ઠવું; વિગેરે ક્રિયાને વાધા ન કરતાં; પ્રથમ અવસરને જાણે હે, અને તે પ્રમાણે કરે હે. તે પરમાર્થને જાણનારો હે.

માવસંધિ—જ્ઞાન દર્શન અને ચારિત્ર તેની દૃઢિ શરીર વિના ન થાય, અને શરીરનો નિર્વાહ આહારના કારણ વિના ન થાય, અને તેમાં પળ સાવચનો ત્યાગ કરવાનો હે. તેર્થો તે મિશુક જે ઉત્તમ સાધુ હે, તે પોતે દોષિત આહારને પ્રહણ ન કરે તેમ વીજા પાસે લેવઢાવે નહીં, અથવા કોઈ લેતો હોય તેને અનુમોદે નહીં, અથવા ડંગાલ દોષ, અથવા ધુમ દોષ, ન લગાડે, ઇટલે સારા આહારની સ્તુતિ ન કરે, તેમ સ્વરાવ આહારની નિંદા પળ ન કરે, તેજ પ્રમાણે વીજા પાસે તેવા દોષો ન લગવા દે, તથા તેવા નિંદા સ્તુતિ કરનારાની પ્રશંસા પળ ન કરે, તથા આમ મંથને હોઢે ઇટલે અશુદ્ધ આહાર વઢે દોષ ન લગાડવો જોઈ.

શંકા—પૂતિ શબ્દનો અર્થ અશુદ્ધ હે, તો આમ શબ્દ શા માટે વાપર્યો ?

उत्तर—अशुद्ध ते सामान्य शब्द छे, अने पूति शब्द लेवाथी अहीं आधाकर्म विगेरेनी अशुद्ध कोटि पण वतावी, अने तेनो मोटो दोष होवाथी तेतुं प्रधानपणुं वताववा फरी कहुं छे, तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे. गंध शब्द लेवाथी (१) आधाकर्म (२) औद्देशिकत्रिक (३) पूति कर्म (४) मिश्र (५) वादर प्राश्रुतिक्रा (६) अध्यय पूर्वक एम छ प्रकारना उद्गम दोष अविशुध्य कोटिनी अंदर रहेला छे, अने बाकीना विशुध्यकोटिमां छे ते आम शब्दवडे वताव्या छे, तथा सूत्रमां सर्व शब्द छे, ते वधा प्रकारोने सूचवे छे, तेथी एम जाणवुं के, कोइपण प्रकारे अपरिशुध्य, अथवा पूति होय; तो, ते दोषित भोजन विगेरे इ—परिज्ञावडे जाणीने पत्याख्यान, परिज्ञावडे निरागंधवाळा वने; एटले निर्दोष भोजन विगेरे लेनारो वर्ते; वने; तेथी पोते ज्ञान दर्शन—चारित्र नामना मोक्षमार्गमां सारीरीते वर्ते; अने संयम अनुष्ठानने पाळे.

आम शब्द ग्रहण करवाथी खरीद करेछुं साधुने न कल्पे; छातां, अल्पसत्त्ववाळा साधुने ओछुं समजाय; तेथी विशुध्यकोटिमां रहेल व्रतदोष छे, एम जाणीने ते छे, तेवी तेनी वृत्ति, न धार्थां; ते माटे फरीथी तेतुं नाम लइने निषेध करे छे. साधु माटे वेचाहुं आणेछु; पण साधुए न लेवुं ते वतावे छे:—

अदिससमाणे कयविक्रयेसु, से ण किणे न किणावए, किणंतं न समणुजाणइ, से भिक्खू कालझे बालन्ने मायझे खेयन्ने खणयझे विणयन्ने ससमयपरसमयन्ने भावन्ने परिग्गहं असमायमाणे कालाणुट्ठाई अपडिणो (सू० ८८)

लेवुं, वेचवुं, ते क्रय-विक्रय छे. ते पोते तेनाथी अदभ्य रहै; अर्थात् पोते साधु माटे खरीद करेली वस्तुने भोगवे नहि; एटले मोक्षवांच्छक साधु कर्म ऊपकरणोने पण खरीद न करे; वीजा पासे न करावे; तेम खरीद करनारने प्रशंसे पण नहि; अथवा नि-
रागंधवाळो वनी साधुपणुं पाळे. अहीयां पण आम शब्द ग्रहण करवाथी हननकोटिनी त्रिक छे, तथा गंधग्रहणवडे पचनत्रिक लेवी;
तथा क्रयणकोटित्रिक ते पोतानां स्वरूप बतावनारा शब्दवडे लीथी छे, एथी नवकोटि परिशुद्ध आहारने अंगार धूमदोषरहित साधु
'भोजन' करे अथवा वस्तुने भोगवे.

ए गुणथी उत्तम साधु केवो होय ते कहे छे, ते भिक्षुक (साधु) समयनो जाण होय छे. तथा वळने जाणनारो छे, एटले पो-
तानी शरीरशक्ति विचारिने ते प्रमाणे धर्मक्रिया करे छे, पण वळने छुपावी राखतो नथी, करवाना काममां प्रमाद करतो नथी,
तथा पोताने केदली वस्तु जोइशे, तेने जाणनारो छे. ते 'मात्रज्ञ' कहेवाय छे. तथा 'स्वेद' ते अभ्यास तेनावडे जाणनारो छे.
अथवा स्वेद एटले 'श्रम' के, संसारना भ्रमणमां आटळं दुःख छे, तेने जाणे छे. कहुं छे के—

“जरामरणदौर्गत्यध्याधयस्तावदासताम । मन्ये जन्मैव धीरस्य, भूयो भूयस्त्रयाकरम्” ॥१॥

जरा (बुद्धापो) मरण, दुर्गति, रोग, आ मोटी पीडा 'तो' 'दूर' रहो, पण धीर पुरुषने विचारतां माळुम पडशे के, जन्म वारे
वारे लेवो, ते जन्म वखतनी अवस्था पण निर्दनीक छे, एवुं हुं मावुं छुं.

अथवा क्षेत्रज्ञ शब्द लइए तो संसक्त (रागनुं कारण) विरुद्ध द्रव्य, परिहार्य, (तजवा योग्य) कुळ विगेरे क्षेत्रनुं स्वरूप जाणनारो

एटले आ जग्घाए जवाथी राग-थरो, आ जग्घाए जवाथी द्वेष थरो, अमुक जग्घाएथी अमुक वस्तु मळरो; आवां अष्ट क्षेत्रमां गोचरी लेवा योग्य नथी. विगेरे स्थिति जाणनार तथा “खण यत्”-एटले क्षण (अवसर) एटले अमुक कववते गोचरी जवुं ते जाणनारो मुनि होय छे, तथा ज्ञान दर्शन चरित्रने योग्य-रीते पाळवां, ते ‘विनय’ छे, तेने जाणनारो छे. तथा जैन तथा अन्य मताना तलने जाणनारो छे. एटले पोताना सिद्धांतानो जाण होवाथी गोचरी विगेरेमां गएलो मुखेथी गोचरीना दोषोने जाणे छे. ते दोषो नीचे मुजब छे.

सोळ उद्गर दोषो कहे छे—

१ आधाकर्मी (साधुना माटे रांधेळुं) २ औदशिक (अमुक मुनि माटे अमुक भोजन वनावेळुं) ३ पूतिकर्म (निर्दोष अन्नने आधा कर्म साथे मेळववुं) ४ मिश्र (साधु तथा पोताना माटे भेगु वनावेळुं) ५ स्थापना [साधुना माटे राखी मुकेळुं] ६ प्राथतिका [साधुना माटे वहेळुं मोडुं कार्य करवुं] ७ प्रकाशकरणं [अंधारमांथी अजवाळे वहार लावे. अथवा दीवी विगेरे करे ते. ८ क्रीत [वेचातुं लावेळुं.] ९ उग्रतरु [उग्रारे लावीने आपवुं ते.] १० परिवर्तित [बदली करीने लावे ते.] ११ अभ्याहत (सामे लावीने आपवुं.) १२ उद् भिन्न (लाख विगेरे शील तोडीने आपवुं.) १३ मालापहत (उपरथी नीचे लावीने आपवुं;) १४ अछेद्य (जोर जुलम करी वीजा पासेथी लइने आपवुं) १५ अनिसृष्ट [घणाओनी भेगी रसोइमांथी वगार गजाए एक माणस आपे ते.] १६ अथ्यव पूर्वक [साधुने आवता जाणीने तेमना माटे पूर्व रंधता अनाजमां थोडु-उमेरे ते.] आ उपरना सोळ दोषो बोहोरानार तरफथी साधुने लागे छे.

सोळ उद्गपाद दोषो कहे छे—

१ धत्रीपिंड. [गृहस्थना छोकरीने रमाडीने साधु ले ते.] २ दूतीपिंड-परदेशना समाचार आपीने गोचरी ले ते. ३ निमित्त-पिंड [ज्योतिषथी समजावी गोचरी ले.] ४ आजीवपिंड [पोतानो पहेलांनी अवस्था वतावी गोचरी ले ते.] ५ वनीपकपिंड (जैनेतर पाशे तेनो गुरु वनी गोचरी ले ते.) ६ चिकित्सापिंड (दवा करीने गोचरी ले ते.) ७ क्रोधपिंड (धमकावीने गोचरी ले ते.) ८ मानपिंड (पोतानी उंच जाति विगरे वतावीने गोचरी ले ते.) ९ मायापिंड (वेष बदलीने गोचरी ले ते.) १० लोभपिंड (स्वाद्विष्ट भोजन माटे वारंवार ते जाण्याए गोचरी लेवा जाय ते.) ११ पूर्व स्तवपिंड (पहेलांना सगणणनो परिचय करावचो) १२ पश्चात् संस्तवपिंड (तेना संबंधीना गुण गाडने गोचरी ले ते.) १३ विद्यापिंड छोकरा भणावीने गोचरी ले ते. १४ मंत्रपिंड कामण टुमणना मंत्र वतावीने गोचरी लेवी ते. १५ चुर्णयोगपिंड-वास क्षेप विगरे मंत्री आपीने गोचरी ले ते. १६ मूळ कर्मपिंड-गर्भ रहेवा संबंधी उपाय विगरे वतावीने गोचरीले ते. आ उपरना सोळ दोषो गोचरी लेनार साधुने पोताने लीवे थाय छे.

दश एषणा दोषो आपनार लेनारना भेगा थवाथी वने ते कहे छे.

१ शंकित-अशुद्ध आहारनी शंका छतां लेवुं ते २ झक्षित-अशुद्ध वस्तुथी खरडाएला हाथे लेवुं ते. ३ निक्षिप्त-सचिच वस्तुमां पडेली अचिच वस्तु मुकेली लेवी ते. ४ पिहित-अचिच वस्तु उपर सचिच वस्तु टांकेली होय ते अचिच वस्तु ले तो तेनो पण दोष लागो ५ संहत-बीजा वासणमां नाखीने आपे ते. ६ दायक-आपनारने भान न होय ते ले ते. ७ मिश्र-सचिचमां अचिच वस्तु मेळवीने आपे ते. ८ अपरिणत-अचिच थया विनानी वस्तु आपे ते. ९ लिप्त. लीट-बळखा विगरे गंदाहाथथी आपे ते. १० ऊज्जित-

છાંટા પાડતી આપે તે. હપરના દશ દોષો છેનાર તથા આપનાર, વલ્લેના મેળા થાય છે.

પર સમયજ્ઞ દોષાથી ઝનાઝના વર્ષોરે ચરા તડકાના તાપમાં તપેલા સૂરજથી પરસેવાના 'વિંદુ' દપકલા સાથુના મેલા શરીરને જોઈ કોઈ અન્ય ગૃહસ્થે પૂછ્યું કે, भाइ तमाराમાં वथा माणसोए उचित मानेछुं स्नान शामादे नथी करता ? त्यारे साधुए जवाव आयो के, हे वंशु ! सर्व साधुओंने जळतुं स्नान છે. તે કામ 'સ્ત્રીનો અભિલાષ' તેહું ઇક અંગ છે. તેથી નિષેધ કર્યો છે તે સાંખ્યોઃ—

“સ્નાનં મદ્દર્પકરં, કામાદ્દિં પ્રથમં સ્મૃતમ્ । તસ્મારકામં પરિત્યજ્ય, નૈવ સ્નાન્તિ દ્વમે રતાઃ ॥૧૧॥”

સ્નાન મદનો દર્પ કરાવનાર છે, તથા કામતું પહેલું અંગ છે. માટે કામને છોડનારા બ્રહ્મચારી, અને દમનમાં રત્ત થયેલા છે તેઓ સ્નાન કરતા નથી. આ મમાળે સ્વ અને પરસિદ્ધાંતને જાણનારો પરને ઉત્તર આપવામાં કુશલ હોય છે, તથા ભાવજ્ઞ ઇદલે, ચિત્તના અભિપ્રાયને જાણનારો છે કે આ 'દાન' આપનાર કે, વ્યાખ્યાન સાંખ્યનારનો આવો અભિપ્રાય છે. વલ્લો પરિગ્રહ તે, સંયમમાં જોહતાં ઉપકરણથી વધારે છે, તે ન છે, અને લેવાની પળ મનમાં ર્જ્જા ન રાસે; તેવા સાધુ કાઠજ્ઞ, વલ્લજ્ઞ, માત્રજ્ઞ, ક્ષેત્રજ્ઞ, સ્ત્રેદજ્ઞ, ક્ષણજ્ઞ, વિનયજ્ઞ, સમયજ્ઞ, ભાવજ્ઞ; હોય તે પરિગ્રહને ગ્રહણ ન કરતો યોગ્યસમયે યોગ્યક્રિયાનો કરનારો વને છે.

શંકા—પૂર્વે 'કાઠજ્ઞ' શબ્દમાં તે વાત આવી છે, અને અહીં પરીથી કેમ કહો છો ?

ઉત્તરઃ—ત્યાં શપરિશાવદે જાણવાતું છે, અને અહીંયાં કર્તવ્ય કરવાતું છે, વલ્લો કોઈપણ જાતતું નિયાળું ન કરે; તે અપતિજ્ઞ છે. જેમકે, ક્રોધના કારણે સ્કંદક આચાર્યે પોતાના ચિહ્વ્યોને ઘાળીમાં પીલેલા

जोइने प्रतिज्ञा करी के, जो मारं 'तप-तेज' होय; तो, बीजा भवमां लश्कर, वाहन, राजधानीसहित पुरोहित, जेणे मने दुःख दीधुं छे, ते वधानो नाश करीश. ते प्रमाणे पाछळथी देवता थइने नाश कर्यो, तेज प्रमाणे मानना उदयथी बाहुबलीए प्रतिज्ञा करी के, प्रथम दिक्षा लीथेला नाना भाइओने हुं केवीरीते नमस्कार करूं. कारण के तेओ केवळज्ञानी थया छे, अने हुं छदमस्य ज्ञानवाळो छुं. तेज प्रमाणे कपटना उदयथी मल्लिस्वामीना जीवे पूर्व भवमां वधारे उंचुं पद लेवा बीजा मित्र साधुओने ठगवा माटे कर्युं हतुं, एटले पेला मित्रोने खवदावीने पोते उपवास करेल हता ते, तथा लोभना उदयथी परमार्थ न जाणनारा वर्तमाननो लाभ जोनार यतिनो बेश राखनारा मास क्षण (महीना महीनाना उपवास) करनारा छतां प्रतिज्ञा (नियाणुं) करे छे, (अर्थात् क्रोध, मान, मायाना लोभथी चारित्र अष्ट न करवुं. ते वतावुं छे)

अथवा वसुदेव माफक संयमनुं अनुष्ठान करतो नियाणुं न करे के हुं आवता भवमां आवा भोग भोगवनारो थारुं अथवा गोचरी विगेरेमां गएलो एवी प्रतिज्ञा न करे के मने आबीज गोचरी मळवी जोइए, अथवा जैन मतमां स्याद्वाद प्रथान होवाथी जिन वचनमां एकांत पक्ष ग्रहण न करे, ते अपतिह जाणवो, जेम के मैथुन विषय छोडीने कोइपण जग्याए कोइपण नियमवाळी प्रतिज्ञा न करवी जेथी कहुं छे के:—

“न य किंचि अणुणायं, पडिसिद्धं वाचि जिणवारिदेहिं । मोतुं मेहुणभावं न तं विणा रागदोसेहिं ॥१॥”

जिनेश्वरे कंइपण कल्पनीयनी आज्ञा आपी नथी. अने कारण वडे कोइपण जातनो निषेध पण कर्यो नथी; पण तीर्थकरोनी आ

निश्चय वहेवार 'वे' नयने आश्रयी सम्प्रक आज्ञा मानवी के ज्ञानादि आलंबन 'ना' कार्यमां सत्यवदे सारां स्वभाववाळा साधुए थवुं; पण कपटशी कंइपण खोटी आश्रय न लेवो.

तार्त्वीकज्ञान विगोरेना आलंबननी सिद्धिशीज मोक्षमार्गनी सिद्धिवाळा बाह्य अनुष्ठाननी सिद्धि छे, कारणके, बाह्यअनुष्ठानमां अनेकांतवाद, अने अत्यंतपणुं न होवाथी समजवुं. आज प्रमाणे करवाथी द्रव्यत्वनी सिद्धि थाय छे, अथवा सत्य नाम संयमवुं छे, तेनावहे कार्य उत्पन्न थलां तेम नेम वर्तेवुं; अने तेवुं उत्सर्पण (वधवुं.) पण शक्तिने छुपाव्या विना निर्वाह करवो. अर्थात् शक्ति प्रमाणे संयम पाळनामां उद्यम करवो आना संबंधमां दृढत्वाव्यकार कहे छे:—

“ कर्जं नाणादीयं सच्चं पुण होइ संजमो णियमा । जह जह सोहेइ चरणं, तह तह कायवयं होइ ॥१॥ ”

ज्ञानादि कार्य ते सत्य ते; संयम छे, माटे जेम जेम चरण (चारित्र) निर्मळ रह; तेम वर्तन करवुं.

(उपर बतावेल टीकानां टीपणमां लीयुं छे,) पण टीकानी गायानो अर्थ नीचे मुजब छे. जिनेश्वरे मैशुन (स्त्रीसंग) छोटीने बाकीवुं जे कंइ कर्तव्य छे, तेमां कोइपण वातनी एकांत आज्ञा करवानी आपी नथी; तेम न करवानो निषेध पण कर्पो नथी. ए-दळे साधु शुद्ध बुद्धिए ज्ञानदर्शन—चारित्रनी दृढि माटे उपदेश आपे; अने पोते वर्ते. फक्त रागाद्वेष विना स्त्रीसंग थाय नही; माटे तेनोज निषेध कर्पो छे.

‘दोसा जेण निरुद्धंति जेण जिद्धंति पुव्वकम्ममाइं । सो सो मुखोवाओ. रोगावरथासुं समणं व ॥२॥’

जेनावडे दोषो दूर थाय अथवा न थाय; अने जेनावडे पूर्वनां कर्म क्षय थाय; ते ते मोक्षनो उपाय, एदळे अनुष्ठान साधुए करां. जेमके रोगमां ऊचित औषध आपवावडे, तथा पथ्य-भोजनवडे रोगनी शान्ति करे छे, तेज प्रमाणे साधुए उत्सर्ग-अपवादाने आचरवां; पण रागद्वेष न करवा अने कर्मो खपाववां.

वडी कोइ बरवत, तेज औषध उपयोगी होय छे, तेम कोइ बरवत, अन्उपयोगी पण छे, तेथी जरूर पडता अपाय तेज प्रमाणे साधुनां अनुष्ठानमां पण समजवाहुं छे. नीचे टीपणमां लखुं छे के:—

“ उपपद्यते हि साऽवस्था, देशकालामयान् प्रति । यस्यामकार्यं कार्यं स्यात् कर्मकार्यं च वर्जये ॥१॥ ”

ते अवस्था देशकालना रोगमत्ये छे. के जेमां, अकार्यं ते कार्यं थाय; अने कार्यं ते अकार्यं थाय; माटे देश, अने काळ विचारी रोगने वैद्ये औषध आपवुं.

“जे जत्तिया उ हेउ भवस्स ते चैव तत्तिया सुक्खे । गणणाइया लोया दुण्हवि पुण्णा भवे तुल्ला ॥३॥”

जेदळा हेतुओ भ्रमणना छे, तेदळाज हेतुओ मोक्षना पण छे, अने ते गणनीए गणाय तेवा नर्था; पण वने बराबर छे. आ बधानो परमार्थ ए छे के साधुए रागद्वेष कर्यां विना पोतानी शक्तिने अनुसार एकांत न पकडतां ज्ञानदर्शन-चारिज्यनी आराधना करवी.

उपर प्रमाणे “अयंसंधि” त्यांथी लइने “काळे अणुद्वाइ” सुथी अगीआर पिंडेपणा बतावी छे. आ प्रमाणे होय तो प्रश्न थाय छे, अप्रतिज्ञावाळो आ सूत्रवडे एम सिद्ध थयु के कोइए कयांय पण प्रतिज्ञा न करवी, त्यारे शास्त्रमां आवे छे के जुदा जुदा अभि-

પ્રશ્નો કરવા તેથી શું સમજવું ?

આચાર્યનો ઉત્તર—સૂત્રમાં આપેલ છે કે—

દુહઓ હેત્તા નિયાદ, વરથં પડિગહં કંબલં પાયપુંહણં, ઉમ્મહણં ચ્ચ કડાસણં ઇપ્પસુ ચેવ જાણિજ્ઞા (સુ૦ ૮૧)

રાગ અને દ્વેષ વડે જે પ્રતિજ્ઞા થાય છે, તેને હેત્તીને નિશ્ચયથી જે કરે તે નિયાતિ ઇટલે જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર, નામનોજ મોક્ષ માર્ગ છે, તેમાં અથવા સંયમ અનુષ્ઠાનમાં અથવા ખિન્નાદિમાં પ્રતિજ્ઞા કરે, ઇટલે રાગ દ્વેષ વિનાની પ્રતિજ્ઞા ગુણવાલી છે. અને રાગ દ્વેષવાલી પ્રતિજ્ઞા દુઃસ્વદાહ છે, દેવે તે સાધુ ઉપરના ગુણવાલો રાગ દ્વેષને હેત્તીને શું કરે તે કહે છે. પોતે જોહતાં વસ્ત્ર, પાત્ર, કંબલ, પાદપુંહન વિગેરે નિર્દોષ જાણીને છે, તેની વિધિ વતાવે છે.

પૂર્વ કહ્યા મુજવ જે દુહસ્થો પોતાના પુત્ર વિગેરે માટે આરંભમાં વર્તેલા છે. તથા પોતાને જોહતી વસ્તુનો સંગ્રહ કરનારા છે, તેમને ત્યાં જઈ લેવા યોગ્ય વસ્તુની તપાસ કરે ઇટલે શુદ્ધ ને છે. અને દોષિતને જોહી દે તે કેવી રીતે જાણે તે કહે છે.

વસ્ત્ર શબ્દ લેવાથી વસ્ત્રની ઇષ્ણા (શુદ્ધિ) વતાવી અને પાત્ર શબ્દ લેવાથી પાતરાંની શુદ્ધિ વતાવી. કંબલ શબ્દથી આંધિક પાતરાંનો નિયોગ મુચ્છા વિગેરે વતાવ્યા, તથા સ્વાર સાંજ કે રાતના કારણ વિશેષે સુછામાં નીકલ્લવું પડે. તો ઓહવાની કામલ પળ સૂચવી તેજ પ્રમાણે પાદ પુંહન તે સ્વોહરણ (ઓષો) જાણવો, આ સૂત્રોથી ઓષ ઉપધિ અને ઉપગ્રહીક ઉપધિ વતાવી તેજ પ્રમાણે વસ્ત્ર ઇષ્ણા તથા પાત્રેષ્ણા પણ સૂચવી.

अवग्रह कहे छे—

जेनी आज्ञा लइने क्षेत्रमां फराय; ते अवग्रह छे. ते पांच प्रकार छे. (१) इंद्रनो अवग्रह (२) राजानो अवग्रह (३) गामनामालीक पटेल विगेरेनो अवग्रह (४) घरवालयानो अवग्रह (५) पथम उतरेखा साधुनो अवग्रह आ ममाणे अवग्रहनी बधी प्रतिमाओ सूचवी; तेथी तेहुं पण समर्थन करुं, अने अवग्रहना कल्पहुं वर्णन आ सूत्रमां कहे छे—

कटासण कहे छे—

कट शब्दथी संथारो जाणवो. अने आसन शब्दथी आसंदक विगेरे बेसवानां आसन जाणवां, जेनामां बेसाय ते आसन छे. अने तेज शक्या छे. तेथी आसन शब्दथी शक्या पण जाणवी, तेहुं स्वरूप कहुं. उपर वताकेल साधुने उपयोगी सर्व वस्तु वख विगेरे तथा आहार विगेरे आरंभ करनारो ग्रहस्थ पासेथी मळता जाणवा अने तेमां आमगंध(दोषित) छोडीने निर्दोष जेम मळे तेम वर्ते मश—आवीरीते गृहस्थोने त्यां जतां जे मळे, ते छे के तेनी कइ हद छे ? ते वतावे छे.

लउं आहारि अणगारो मायं जाणिजा, से जहेयं भगवया पवेईयं लाभुत्ति न मज्जिजा अ-

लाभुत्ति न सोइजा, बहुंपि लउं न निहे, परिगहाओ अप्पाणं अवसक्किजा (सू० १०)

साधुने आहार मळतां विचारे के हुं लइश, तो पछी मारे खातर नवो आरंभ गृहस्थने करवो पदशे के नही तेहुं विचारीने छे, के जेथी नवो आरंभ न करवो पडे; तेवीजरीते वख—औषध विगेरेमां पण जाणी लेहुं; तथा नवो आरंभ न करवो पडे; पण

पोताने वधारे पण न आवे; ते ध्यानमां राखीने ले, आ हुं मारी बुद्धिची नथी कहेतो; परंतु जिनेश्वरे आ उद्दिशाथी मांडीने हवेप-
डीतुं वधुए वतावेळुं छे ते कहे छे:—

ते जिनेश्वर चोत्रीस अतिशययुक्त केवल ज्ञानीए अर्धमागधी भाषासां कहुं छे, अने वधी भाषावाळाजाणे, तेवा शब्दोभां देवता-
महु ध्यर्जा सभासां कहुं. आहुं सुधर्मस्वामी जंबूस्वामीने कहे छे:—

तथा वस्तु मळतां मने वस्त्र-आहारानो लाभ थयो. हुं लब्धिमाम हुं, एवो अहंकार न करे: तेम याचवा छतां मळे तो, दीन
पण वने; एटले वस्तु न मळतां खेद न करे के, मने धिकार छे ! हुं मंदभागी हुं ! के, सर्वने सर्व वस्तु आपनार दातार होवा
छतां, मने नथी मळतुं. तेथी साधुए लाभअलाभसां मध्यस्थपणुं राखवुं. कहुं छे के:—

“लभ्यते लभ्यते साधु, साधुरेव न लभ्यते । अलब्धे तपसो बुद्धिर्लब्धे तु प्राणधारणम् ॥१॥”

मळे तो सारुं, अने न मळे तोपण सारुं. कारण के, न मळे तो, न भोगववाथी तपशयानो लाभ थये; अने मळवाथी प्राणहुं धारण थये.

आप्रमाणे पिंडपात्र, वस्त्रोनी एषणा वतावी छे

हवे वधारे न संघरे ते कहे छे.

घणुं मळे तो मोह न करे; अने वधारे लडने राखी न मुके; एटले थोडो पण संग्रह न करे. जेम आहार वधारे न ले, तेम
संयम उपकरण करतां वधारे वस्त्रपात्र विगोरे न ले, ते सूत्रसां कहुं छे के:—

परिश्रह कहे हे—

धर्मउपकरणथी जेतळुं वधारे उपकरण लेवुं, ते परिश्रह हे, माटे वधारे मळतुं न ले, अथवा संयम उपकरणमां पण मूर्खीं करावधी परिश्रह हे. कहुं हे केः—

(तत्वार्थ 'ध. ८. सू. १') मूर्खीं परिश्रह हे, तेथी वधारे मळतुं छोटीने जोइतां लीधेलां उपकरणमां पण मूर्खीं न करे.

शंका—जे कंइ धर्मउपकरण विगेरेनो परिश्रह हे, ते पण चित्तनी मलीनता (राग) शिवाय थतो नथी कहुं हे केः—पोताने उपकार करानारमां राग थाय; तो उपघात करनार उपर द्वेष पण थाय; तेथी परिश्रह राखतां रागद्वेष नजीक आवे हे, अने नेनाथी कर्म बंध थाय हे, माटे तमो कहो छो के, धर्मउपकरण परिश्रह नही; ते केवीरीने मानीए ? कहुं हे केः—

“समाहमिति चैष यावदभिमामदाहज्वरः । कृतान्त मुखमेव तावदिति न प्रशान्त्युन्नयः ॥

यज्ञः 'सुख' पिपासितैरयमसावनर्थोत्तरैः, । परैरपसदः कुतोऽपि, कथमप्यपाकुष्यते ॥१॥”

आ माहं एवो ज्यां सुधी अभिमानरूप, दाहज्वर रहेलो हे, त्यांसुधी जमना मुखमां जवातुं हे तेम त्यां सुधी श्रांति पण नथी तेम उन्नति पण नथी.

माटे जस अने सुखना वांच्छकोए परिणामे आ अनर्थ हे एम जाणे हे, तेथी ते उत्तम पुरुषोए आ ममताना दुर्गुणने कोइपण रीते गमे त्यांथी खेची काढवो जोइए.

आचार्यनो उत्तर—तेवो दोष नथी, कारण के धर्मउपकरणमां साधुओने आमारुं छे, एवो परिग्रहनो आग्रह नथी. एज श्रावणमां कहुं छे के,

“अवि अप्पणोऽवि देहंमि, नापरंति ममाइहुं”

जे सुनिओने पोताना शरीरमां पण ममत्त्व नथी, ते बीजामां ममत्त्व केवी रीते करे ? (न करे.)

जे अहींआं कर्मबंधना माटे लेवाय तेज परिग्रह छे, पण जेनाथी कर्मनी निर्जरा थाय (कर्म ओछां थाय) ते परिग्रहज नथी, (साधुनो लेप करवाथी पूर्वना तेल विगेरेना लेपमां वधारी थतो नथी, पण तेलने खाह वख साफ बनावे छे. तेवी रीते जोइहुं उपकरण संयमनी रक्षा करे छे.) कहुं छे के—

अन्नहा णं पासए परिहरिजा, एस मगो आयरिएहिं पवेइए, जहिरथ कुसले नोवलिंषिजासि त्तिवेमि ॥

आ प्रकारे देखतो बनीने (विचार पूर्वक) परिग्रह जोडे जेम गृहस्थो तत्व नाण्या विना आ लोकना सुखना माटे परिग्रह सं-
 पारवा जुए छे, पण साधुओ तेंम करता नथी, तेनो आशय आ छे. आचार्यने आश्रयी आ वधाराहुं उपकरण छे पण मारुं नथी, जेमां रागद्वेषहुं मूळ छे; ते परिग्रहनां आग्रहनो योग अहीं निषेधवो परंतु धर्म उपकरणनो निषेध नं करवो, तेना विना संसार समुद्री पार जवाय नहीं. कहुं छे के—

साध्यं यथा कथञ्चित् स्वरूपं कार्यं महच्च न संयेति । ह्यनमृते न हि शक्यं, पारं गन्तुं समुद्रस्य ॥१॥

कोइ नातुं कार्य गमे तेम साधी जेवाय, पण मोडुं कार्य तेम सिद्ध न थाय. कदाच नातुं खाबोच्युं कुदीने जवाय पण नाव विना समुद्रनी पार जहुं शक्य नथी. जेओ धर्मोपकरणने पण परिग्रह माने छे, तेवा दिगंबर वंशुओ माटे आ संवंधमां मतभेद छे, तेथी अविश्वश्रित अर्थने तीर्थकरना अभिप्रायने अनुसारे साधवानी इच्छार्थो कहे छे, के “ एसमणे ” मूल सूत्रमां वताव्या प्रमाणे आ धर्मोपकरण परिग्रहने माटे नथी, एवु पूर्व कहुं, ते मार्ग तीर्थकरोए कहा छे, कारण के सर्व पापरूप “हेय” धर्मथी जेओ दूर छे. ते आर्यो, तीर्थकरो, छे, पण जेओ धर्मोपकरणने इच्छता नथी. तेवाओए पण कुंडिका, तडिका लंबणिका अश्ववाळधि, विगेरे इच्छानुसार उपकरण राखवानो मार्ग पोतानी मेळे बोधी काढ्यो छे, तेम अमारा उपकरणो नथी.

(वर्तमानमां श्वेतांबर साधुओ पासे रजोहरण सुहपत्ति विगेरे धर्मोपकरणो छे, त्यारे दिगंबर साधुओ पासे मोरनी पीळीतुं उपकरण विगेरे छे, अने टीकाकारना समयमां ते बलवते दिगंबर साधुओ जेम करता हशे. तेने उद्देशीने लख्युं छे, स्वरीरीते ते चर्चा करवा करतां परमार्थद्रष्टिण जनारा वने पक्षना साधुओ रागद्वेष रहित वनी जे भविष्यमां अने वर्तमानमां वधारे लाभदायी थाय तेवां धर्मोपकरण वापरी संयमनो निर्वाह करे अने सम्यक्ज्ञान दर्शन चारित्रनी आराधना करे.)

अथवा उपरनी चर्चा बौद्ध मतना भौगदलि तथा स्वाति पुत्र ए वनेथी बौद्ध मततुं जे मंतव्य छे. तेने आश्रयी कहे छे.

तेज प्रमाणे धर्मोपकरणतुं कोइ खंडन करतो होय. तो तेमने पण ते प्रमाणे समजावना.

कारण के जिनेश्वरे परोपकारना माटे रागद्वेष रहित धरने जे कहुं छे. तेना बहु मानना माटे आटळुं लखवुं पडरुं. अने

तेदला माटेज आ जिनेश्वरना कहेला मार्गमांज उत्तम साधुए उद्यमवाला थुं, तेज सूत्रमां कहे छे के आ कर्मभूमी छे. जेमां मो-
क्षना झाडना वीज समान सोधी (सम्भवत्त्व) तथा सर्व संवर रूप चारित्रि पापीने कर्ममां जेम लेप न थाय, नवां कर्म न बंधाय तेम
आ उत्तम मार्गमां वर्तुं, ते विदित वेद्य (पंडित) जाणवो, जो ते मार्ग उलंपीने बतावेळां धर्म अनुष्ठान न करे तो कर्मनो बंध थाय.
तेथी आ सत्पुरुषोनो मार्ग छे तेथी पोते चारित्रि लेतां प्रथम सर्व जीवने समाधि आप्णारूप प्रतिज्ञा करी छे, ते छेवटनो उच्छ्वास
लेता सुधी पाळवी जोइए. कखु छे के:—

“लज्जां गुणौघजननीं जननीमिवायामित्यन्तशुद्धहृदयामनु वर्त्तमानाः । तेजस्विनःसुखमसुनपि
सन्त्यजन्ति; सत्यस्थितिव्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम ॥१॥”

गुणना समूहनी माता तथा अत्यंत शुद्ध हृदय वनावनारी जे लज्जा छे, तेने श्रेष्ठ माता माफक मानीने तेनी पाळल चालनारा
तेजस्वी पुरुषो (साधुओ) सुखे करीने पोताता प्राण पण त्यजे छे, परंतु सत्य स्थितिने चाहनारा तेओ पोतानीप्रतिज्ञानो भंग करता
नथा. आपमाणे सुधर्मस्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के:—में उपर प्रमाणे जे कहुं ते महावीरप्रभुनां चरणसेवन करतां सांभळुं
छे, ते तने कहुं छे, माटे परिग्रहथी आत्माने दुर कर; एवुं जे कहुं छे, ते संसारी-वासनाना उच्छेद विना न थाय; अने ते संसा-
री-वासना पांच प्रकारना इन्द्रियोना विषयरसने अनुसरनारा अभिलाषो छे, अने ते तजवा मुश्केल छे. तेथी कहे छे के:—
कामा दुरतिक्रमा, जीवियं दुष्पडिवूहगं, । कामकामी खलु अयं पुरिसि, से सोयइ जूरइ तिष्पइ परितष्पइ

काम कहे छे:—

कामना वे भेद छे. (१) इच्छाकाम, (२) मदनकाम, तेषां, मोहनीयकर्मनाभेद हास्य (हांसी) रतिथी उत्पन्न थयेल इच्छाकाम छे, अने मोहनीयकर्मना वेदना उदयथी मदनकाम छे. ते वने प्रकारना कामोनुं मूल मोहनीयकर्म छे, तेना सदभावमां कामनो उ-
च्छेद करवो मुश्केल छे, एटछे तेनो विनाश करवो दुर्लभ छे, तेथी मुनिने एम समजावयुं के, तारे प्रमाद न करवो, आ काममां प्रमाद न करवो; पण जीवितमां प्रमाद न करवो. कारणके, क्षण क्षण जे ओही थाय छे, ते वृद्धि पाषवानी नथी; अथवा संयम—
जीवितनो संसारीवारनामां पडतां दुःखेकरीने निर्वाह थाय छे. अर्थात् संयम पाळवो मुश्केल थाय छे. कहुं छे के:—

“अगासे गंगसोडव, पडिसोडव दुत्तरो । बाहाहिं चैव गंभीरो, तरिअवो महोअही ॥१॥”

आकाशमां गंगा नदीनो प्रवाह छे, तेने साथे जहने तरहुं मुश्केल छे; अथवा महासागर हाथवडे तरवो मुश्केल छे.

बाहुगाकवलो चैव, निरासाए हु संजसो । जवा लोहमया चैव, चावेयवा सुदुकरं ॥३॥”

वेछ (रेती) ना कोळीआ मुश्केल छे. तेज प्रमाणे इन्द्रियोनो कोइपण जातनो स्वाद जेमां नथी; तेहुं संयम पाळवुं वणुं मुश्केल छे, अथवा लोढाना वनावेला जव चाववा मुश्केल छे. तेहुं संयम पाळवुं मुश्केल छे.

आ अभिप्राय प्रमाणे अभिलाष तजवा मुश्केल छे, ते वताव्या छतां वधारे खुलासा माटे कहे छे. कामकामी एटछे, इन्द्रिय—
विषयुरसनो लालचु जीव जे छे, ते शरीर, अने मन संबंधी घणा दुःखने भोगवसो ते वतावे छे.

पटले इच्छीत वस्तु न भळतां, अथवा तेनो वियोग यतां तेनो शोक करीने जेम ताव चढेलो वेलो माणस बके छे, तेम पोते पोव सूकीने रडे छे.

“गते प्रेमाबन्धे प्रणयबहुमाने च गलिते । निवृत्ते सद्भावे जन इव जने गच्छति पुरः ॥

तमुत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य प्रियसखि ? गतांस्तांश्च दिवसान्, न जाने को हेतुर्दलति शतथा यत्र हृदयम्? ॥१॥”

प्रेम नुं बंधन नाश पामतां, अथवा प्रणय (ब्रह्मला) नुं बहु मान ओळुं यतां अथवा सद्भाव ओळो यतां जतो नहेतां प्रेम, माणसमां माणसनी माफक आगळ जाय छे, तेने जोइ जोइने कोइ स्त्री पोतानी सखीने कहे छे के:-हे सखी ! ते गयेला दिवसोने ज्यारे याद करं छुं, त्यारे हुं नथी जाणती के; कयो हेतु मने सो प्रकारे दुःख आपे छे ? पण, ते मासं हृदय भेदतो नथी. (आ विलाप प्रेमी स्त्रीपुरुषांना वियोगमां अथवा, बन्नेने कंइपण कारणे भेद पडतां, वीरही बनेलां पोतानां हेतस्वी आगळ पूर्वनां सुखा याद करीने कहे छे):-

तेज नमाणे पोते हृदयथी हुरे छे.

“प्रथम तरमभेदं चिन्तनीयं तवासी-हृहृजनदयितेन प्रेम कृत्वा जनेन ॥

हतहृदय ! निराश ! ह्लीब ! संतप्यसे किं ? । न हि जडगततोये सेतुबन्धाः क्रियन्ते ॥१॥”

हे हृदय (पहेळुं आ तारे चिंतववुं जोइए के, तारो प्रेमीजन प्रेम करीने छुटो पडी गयो छे ! हे हृदय ! हे आशारहित ! हे न-

पुंषक ! तું हवे शामाटे खेद करे छे ! पाणी गया पछी पाळो वांधवी नकामी छे. (पोते पोतानां हृदयने ठपको आपे छे के, तारां वहालां संबंधीने जना केम दीधो ? अने हवे, गया पछी रोये शुं थाय ? पाणी ज्यारे जोइतुं हतुं; त्यारे पाळ वांधीने कां रोक्री न लीधुं ?) तथा जेनां घरमां मोत थाय; ते पोते मर्यादाथी भ्रष्ट थाय छे. एटले शरीर, अने मनमां दुःखोथी पीडाय छे. तथा तेज प्रमाणे घणुं वहाळं सभुं गुजरीगयुं होय; तो केटलांक लोको पश्चाताप करे छे के—हे वहाला पुत्र ! हे वहाली स्त्री ! तूं मने सुकीने केम जती रही ? इत्यादि. अथवा कोइ जग्याए कोष करीने गयेलो होय. अर्थात् नाशी गयेलो होय; अने वनेनो विगोष थाय तो पछीथी, कहे केः—में तारं कहेतुं गुरुसामां न मान्युं; तेथी तूं रीसाइने चाल्योगयो. इत्यादि व्यर्थ दुःखो भोगवे छे.

आ वधां दुःखो शोक विगोरे जे कहां छे, ते वधांए जे मनुष्यो विषय-विषना आश्रयमां अंतःकरणने राखे छे, तेमनी दुःखनी अवस्था सूचवे छे. (केटलीक स्त्रीओ रडी रडीने आंधळी थाय छे, कोइ छाली कुटीने पोतानां नानां वाळकोने अथवा, पोताना गर्भाशयने अथवा, गर्भमां रहेलां वाळकने दुःख आपे छे, केटलीक अज्ञान स्त्रीओ माथां कुटीने पीडाय छे.) अथवा शोक करे छे. एटले यौवन, धन, मद विगोरेना मोहथी वेरायला मनवाळो बिरुद्ध कृत्य करीने ज्यारे बुद्धापो थाय; त्यारे, मोतनो समय आवतां मोह दूर यतां परताय छे. के, में दुर्भागीए पूर्वमां वधा श्रेष्ठ पुरुषोए आचरेलो सुगतिमां जवाना एक हेतुरूप अने दुर्गतिद्वार अटकाववाने बारणांनी पाछली सुगलसमान धर्म न कर्यो. कहुं छे केः—

“भवित्री भूतनां परिणतिमनालोच्य नियतां । पुरा यद्यत् किञ्चिद्विहितमशुभं यौवनमदात् ॥

पुनः प्रयासन्ने महति परलोकैकगमने, । तदैवैकं पुंसां व्यथयति जराजीर्णवपुषाम् ॥१॥”

निश्चय करीने जीवोने भविष्यमां भनारी अवस्थाने विचार्या विना मे जुवानीमां जे जे अशुद्ध कृत्यो कर्मां छे, ते परलोकमां जवाना वरवते बुद्धापाथी जीर्ण थयेला शरीरवाळा पुरुषने खेद पमाडे छे. (के, में धर्म न कर्मां. हवे मारी शी दशा थशे ! तथा हवे पस्ताये थुं लाभ ?) तथा तेज प्रमाणे कडवां फळ अहीं भोगवतां, पापीवो पण झुरे छे, विभेरे उपर बलाब्या माफक लंपटोने दुःख पडे छे, ते बुद्धिमान वांचके विचारी छेवुं कहुं छे केः—

“सगुणमपगुणं वा कुर्वता कार्यजातं, । परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ॥

अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥१॥”

गुणवाळुं के अवगुणवाळुं कार्य करतां पहेलां बुद्धिमाने प्रयासथी विचारवुं के एवुं परिणाम थुं आवसो. कारण के उतावळमां करेला कार्यवुं फळ भोगवतां ते समये हृदयने बाळनारो शल्य समान पश्चाताप विपत्तिना माटे थाय छे—

आवुं कोण न शोचे ते बलावे छे. कहुं छे के—

आययच्चध्रुव लोगविपस्सी लोगस्स अहो भागं जाणइ उहुं भागं जाणइ, तिरियं भागं जाणइ गड्डिदए लोए अणुपरियदमाणे सांधं विइत्ता इह मच्चियहिं, एस वीरे पसंसिए

जे बरुं पडिमायइ जहा अंतो तथा बाहिं जहा बाहिं तथा अंतो, अंतो अंतो पूइ

देहंतराणि पासइ, पुढोवि सर्वताइं पंडिए पडिलेहाए ॥ (सू० १३)

जेने आ लोक अने परलोकना परिणामनां दुःख जोवामां (विचारवामां) विद्याळ दृष्टि (ज्ञान) छे. ते विद्याळ चक्षुवाळो बने छे. ते उपर कहेला भोगोने वणा अनर्थोनुं मूळ समजीने तेने छोडीने “शम सुख” (वीतराग दशा) ने अनुभव छे. तथा संसारी लोको जे विषय रसमां पडतां अतिशय दुःखी थएला छे. (एटले कुमार्गे जातां गुप्त इन्द्रि सहतां विसफोटकनो रोग यतां के क्षयथी मरतां जोइने) पोते तेवा कुमार्गेने इच्छतो नथी. तेथी प्रथम सुखने अनेक प्रकारे जुए छे. तेथी ते लोकविदर्शी छे. अथवा लोक एटले उर्द अथः तथा तिर्यक् (स्वर्ग पातळ अने मृत्यु) ए त्रण लोकमां चार गतिमां यतां दुःखो सुखोना कारणोने तथा त्यां भोगवाता आयुष्य विगेरेने जुए छे. ते बतावे छे.

लोकना अथो भागमां शुं छे ते जाणे छे. एटले धर्म अधर्म अस्तिकायथी व्याप्त आकाश खंडनो नीचलो भाग जाणे छे. तेनो सार आ छे के जीवो जे कर्मो वडे त्यां उत्पन्न थाय छे. तथा त्यां सुख दुःखनो विपाक केवो छे. तेने जाणे छे. (नारकीना जीवोने यतुं दुःख पोते जाणे छे तथा शुवनपति व्यंतरना देवोनुं सुख पण जाणे छे.)

तेज प्रमाणे उर्द तथा तिर्यक् लोकने पण जाणे छे. (उर्द लोकमां वैमानीक देव तथा मोक्षनुं सुख छे. ते जाणे छे. तथा तिर्यक् लोकमां ज्योतिषना देवतानुं सुख तथा धर्मी मनुष्यनुं सुख तथा पापी तथा तिर्यच प्राणीनुं दुःख जाणे छे.) अथवा लोक

વિદર્શી તે કામ મેલવવા પૈસો પેદા કરવા એક ધ્યાન રાखનારા પુન્ય પાપને થૂલી ગણ્યા અન્ય લોકોને પોતે જુદા છે. તે વતાવે છે. જે કામ વિગેરેમાં અથવા તેને પ્રાપ્ત કરવાના ઉપાયમાં લાગેલા છે. તેને વારંવાર આચરવાથી વન્ધાતા તથા અશુભ કર્મ વડે સંસાર ચક્રમાં ભમતા જોઈને પોતે વિશાલ ચશ્તુવાલા કામના અભિલાષથી દૂર થવા કેમ સમર્થ ન થાય ? (અર્થાત્ હાલો માણસ દુઃખ વિચારી પાપથી દૂર માતે.)

શુભ શિષ્યને કહે છે—હે શિષ્ય ! સંસારના મોંઘોમાં રાચતા અને તેથી દુઃખી થતા જીવોને તું જાં, વલી આ મનુષ્ય લોકમાં જે જ્ઞાનાદિક ભાવ સંધિ છે. તે મનુષ્ય લોકમાંજ સંપૂર્ણ પ્રાપ્ત થાય છે, (કેવલ જ્ઞાન યથાસ્થાત ચારિત્ર જે મોક્ષના હેતુઓ છે, તે મળવ્યનેજ છે. માટે મર્ત્ય લોકને લીધો છે,) અને જે હાલો છે તે પોતે ઉપર વતાવેલ તત્વને સમજીને વિષય કષાય વિગેરેને છોડે છે, તેજ વીર પુરુષ છે. તે સૂત્રકાર વતાવે છે એટલે જે આપત ચશ્તુવાલો છે. તથા લોકના વિભાગના સ્વભાવને યથાવસ્થિત પળે જાણે છે. તે ભાવ સંધિનો 'જાણ છે, અને વિષય તુષ્ણાને છોડનારો છે. તે વીર પુરુષ કર્મને વિદારણ કરવાથી વચ્ચળાયો છે. અર્થાત્ તત્ત્વ જાણનારા પુરુષોએ તેની પ્રશંસા કરી છે.

તે આ પ્રમાણે તત્ત્વજ્ઞાની વનીને વીજું યું કરે છે તે કહે છે—

“જે વહે” એટલે દ્રવ્ય ભાવ વંધન વહે વંધાણ્યા છે. તેમને પોતે શુક્ત વની વીજાને મુકાવનાર છે, તેજ દ્રવ્ય ભાવવંધનો વિમોક્ષક (મુક્તિ અપાવનાર) છે. તે વાચાની, શુક્તિ વહે વતાવે છે. જેવીરીતે પોતે અભ્યંતરથી મુકાણ્યા છે, તેવીરીતે વહારથી પળ મુક્ત છે, એટલે અંદર આઠ પ્રકારની કર્મની કેટી છે, તે છોડાવે છે. તથા પુત્ર, સ્ત્રી, વિગેરેને પળ છોડાવે છે. એટલે જેમ આઠ પ્ર-

कारणी कर्मनी वेढी છે. તેમ વહારતું સગાંતું બંધન છે, તે વંને મોક્ષ ગમનમાં વિદ્યતું કારણ છે, તે વન્નેથી મુકાવે છે—

અથવા આ કેવી રીતે મુકાવે છે. તે કહે છે. પોતે પોતાના વિશાલ જ્ઞાનવડે તત્વનો પ્રકાશ કરી બોધ આપવા વડે મુકાવે છે. બોધ આપતાં પોતે કહે છે કે આ કાયા વિષ્ટા, પિશાબ, માંસ લોહી, પરુ, વિગેરે મંદી વસ્તુથી ભરેલી અસાર છે. ઇટલે વિષ્ટાતું મરેલું માટલું અંદર પળ મંદું છે. અને વહારથી પળ તેવુંજ છે. તે પ્રમાણે આ કાયા, અંદરથી મંદી છે અને વહારથી લગાદેલા સારા પદાર્થને પળ મંદા વનાવે છે. કહ્યું છે કે—

“યદિ નામાસ્ય કાયસ્ય, યદન્તસ્તદ્દહિર્ભવેત્ । દ્વપ્દમાદાય લોકોઽયં, શુનઃ કાકાંશ્ચ વારયેત્ ॥”

આ કાયાની જેવી અંદરની મંદકી છે, તેવી સાક્ષાત્ વહાર જળાતી હોત તો લોકો હાથમાં દંડ લઈને કુતરાને અને કાગડાને વારતા હોત (વહારથી માંસના લોચા જોઈને કાગડા તુંથત, અને વિષ્ટાને જોઈને કુતરા બાહ્યત, તેથી લાકડી લઈને ઠાંકવા પડત.)

આપમાળે જેમ વહાર અસારતા છે. (પરસેવાની મંથ વહાર દેખાય છે. તે અનુમાને) અંદર પળ કાયા મંદી છે. તે ગાળે છે. વલી જેમ જેમ શરીરમાં હંડાળમાં તપાસે તેમ તેમ વિશેષ મંદી ઇટલે માંસ સ્થિર મેદ મડ્યા વિગેરે જળાય છે. તથા કોદ રક્તપીત વિગેરે રોગો આવતાં ઉપર કહી વધીૃ મલીનતા સાથે પ્રત્યક્ષ દેખાય છે,

અથવા શરીરનાં નવે દ્વારોથી ફરતી મંદકી છે, કાનનો મેલ આંસના પીયા વલ્લવો લાલ પિશાબ ક્ષાહો વિગેરે છે. તે સિવાય બીજી વ્યાધિથી ગુમડાં પાકતાં લોહી, પરુ, તથા રસીવાલા પદાર્થો વિગેરેથી મંદકી છે—

આ પ્રમાણે વધું જોઈને પંચિત પુસ્થ વિચારે છે કે દ્વારો વહે છે, ગુમડાં રોમે રોમે પીડા કરે છે. તે તત્વ સમજનારો તેનું સ્વ-

रूप जाणे तेज करे छे—

“संसदिरुहिरणहारावणद्धकलमलयमेव मजासु । पुण्णंमि चन्मकोसे दुग्गंधे असुइवीमच्छे ॥ १ ॥”

मांस, हाडकां, लोही, स्नायु, विचोरेथी बन्धाएला तथा मलीन मेद मज्या विचोरेथी भरेला अने अस्मिचिथी वीभत्स एवा दुर्गो-
धीवाला चामडाना कोथळारूपे कायापां

संचारिमजंनगलंतवच्चमुत्तसेअपुप्पंमि । देहे हुज्जा किं रागकारणं असुइहेउन्मि ? ॥२॥

तथा विष्टा पिशाव झरनारां यंत्रवाळा परसेवाथी भरेला शरीरमां ज्यां ज्यां अशुचिनो हेतु छे. तेमां रागनुं कारण केवीरीते
थाय ? आ प्रमाणे देहनी अंदरनी गंदको जाणीने तथा बहार पण झरतुं छे, ते जोइने डाहा माणसे थुं करतुं ते करे छे.

से मइमं परिन्नाय मा य हु लालं पच्चासी, मा तेसु तिरिच्छमप्याणमावायए, कासंकासे खलु अयं
पुरिसे, बहुमाई कडेण मूढे, पुणो तं करेइ लोहं वंरं वड्ढेइ अप्पणो जमिणं परिकहिज्जइ इमस्स
चेव पडिवूहणयाए, अमरा य महासड्ढी अइमेयं तु पिहाए अपरिणाए कंदइ ॥ (सु० ९४)

पूर्व कहेलो बुद्धिमान सायु जेनी सिद्धांत भणवाथी संस्कारवाली बुद्धि थएली छे, ते देहना स्वरूपने तथा कामना स्वरूपने
वे प्रकारनी प्रतिज्ञावदे थुं करे ते करे छे—

हे सायु—तुं ‘लाळ झरतां’ अने बळखा वारंवार पडता मोढानो अभिलाषि न थइश. एट छे जेम बाळक पोतानी पडती लाळने

विवेकना अभाव चोटे छे, तेम तुं तजेला भोगीने पाछा स्वीकारतो नही अर्थात् भोगी तजीने पाछा न भोगवतो.

बळी ते संसारयां भ्रमण कराननार अज्ञानअविरति मिथ्यादर्शन विगेरेने तिरश्चीन (तिरछि गति) अथवा पतिकुल उपाय वडे, उलंघी जा, अने निर्वाणना झरणरूप ज्ञान दर्शन विगेरेमां तुं अनुकुलता कर, एटले तुं अज्ञान विगेरेमां आत्माने हुवावीच नही, अने ज्ञानादि कार्यमा पतिकुलता न करीच तेथी सावचेत रहेवुं.

जे प्रमादी छे, ते अहीं पण जांति नथी पासतो; एटले, जे ज्ञानथी विमुख थरने भोगीनो अभिलाषि थरने तिरछी गतिमां पडे छे, ते पुरुष कर्तव्यतामां मूढ वनेलो छे ते माने छे के, आ भे एम कर्तुं; अने हवे एम करीच; एवी भोगना अभिलाषनी तृष्णायां व्याकुल वनेलो चित्तनी शांतिने निश्चे भोगवतो नथी. (सूत्रयां भूत भविष्य लीयां; पण वर्तमानकाल अति सूक्ष्म होवाथी न लेतां, अतीत अनागत भूत भविष्य लीया छे.)

आ प्रमाणे भे कर्तुं अने करीच; एम विचारनारा कामातुरने जांति नथीज थती. कहुं छे के:—

“इदं नावत् कराम्यद्य, श्वः कर्त्साऽस्मीति चापरम ॥ चिन्तयन्नद्विह कार्याणि, प्रेत्यार्थं नावबुध्यते ॥१॥”

आ हमणां करं छुं, अने चीजुं सवारमां करीच; एम कार्याने विचारतां तेने, अहीं परलोकने माटे कंइ धर्म कृत्य सूत्रतुं नथी. अहीं दहीना वडावाळा भीखारीतुं दृष्टात कहे छे. कोइ रंकने कोइ जग्याए भेसने चारतां दुध मळेंछुं; तेहुं दहीं करीने विचारवा लायां के, आहुं वी वनावी, अने तेथी पैसा वेदा करी, वेपार करीने वैरी परणीच; अने पुत्र उत्पन्न थरने मोटो थतां, खावा बो- लाववा आवसो; त्पारे लात मारीच. विगेरे तुरंगमांज पण अफाळतां माथुं घुणावतां दहीनीं घडो पळ्यो; अने घडो फुटी गयो; तेथी

વધા તુરંગ દૂર થયા, ન સ્વાયું; ન કોઈને પુન્ય માટે આપું. ए प्रमाणे वीजा पण जीवो करावा करावताना संसारी—कर्तव्यमां—मूढ वनीने पोतानो आरंभ निष्फळ करे છે.

વા૦
૧૩૧॥

અથવા જેમાં કષાય તે “કાસ” સંસાર છે તેને કસે; एटले सन्मुख जाय; તે જ્ઞાન વિગેરેમાં પ્રમાદ કરનારો છે તે કહે છે. एटले संसार भ्रमण कषायथी છે, एटले તેમાં માયા લીધી; एटले જે बहुभायी છે, તે ક્રોધી માની અને લોભી પળ જાણવો; અને અશુભ કૃત્ય કરવાથી મૂઢ વનેલો સુલ્લ વાંચ્છતો હતાં દુઃસ્વજ મોગવે છે. कष्टं છે:—

“सोऽं सोवणकाले मज्जणकाले य मज्जितं लोलो । जमेऽं च वराधो जेमण काले न चाएइ ॥१॥”

જે સ્વાર્થી છે, તે રાતના સુવાનું, અને દિવસમાં નાવાની વલતે, નાવાનું તથા જમવાની વલતે, જમવાનું તે સુલેથી કરી શ-કતો નથી. આના સંબંધમાં મમ્મણ સોઢનું દૃષ્ટાંત પૂર્વે કહેલું છે, તેના જેવો કાસકષ एटले बहु कपटी. તેણે કરેલા કપટથી વનેલો મૂઢ, જે જે કરે તેનાવઢે વેરનો પ્રસંગ થાય; તે કહે છે:—તે કપટી વીજાને ઠગવા લોભનું કૃત્ય કરે છે, જેથી વેર વધે છે, અથવા લોભ કરીને નવાં કર્મ વાંધીને, સેકડો નવા મવ કરે છે, અને નવાં વેર વધે છે. તે કહે છે:—

“ दुःखार्तः सेवते कामान्, सेवितारते च दुःखदाः । यदि ते न प्रियं दुःखं, प्रसङ्गस्तेषु न क्षमः ॥१॥ ”

દુઃસ્વથી પીડાયલો કામ મોગને સેવે છે, અને પરિણામે તે દુઃસ્વ આપે છે, તેથી ગુરુ શિષ્યને કહે છે:—હે મુનિ ! તને જો, દુઃસ્વ પ્રિય ન લાગતું હોય; તો, તે મોગોનો સ્વાદ છોડ.

પ્રશ્ન:—જીવ, પવાં શું કૃત્ય કરે છે કે, પોતાને વેર વધે છે?

સૂત્રમ

॥૩૧૩॥

उत्तरः—आ नाशवंत शरीरनी पुष्टि माटे जीवहिंसा विगरे पापक्रियाथो करे छे, ते क्रियामां हणायला सेंकडो प्राणीओ नाश पामे छे, तेथी मरेला जीवो साथे वेर बन्धाय छे. जे उपर कही गया के, भवभ्रमणमां कपट करवाथी वेर बधे छे, अथवा गुरु कहे छेः—आ वारंवार हुं जे उपदेश आपुं छुं, तेनुं कारण ए छे के, संसारमां वेर बधे छे, तेथी संयमनीज पुष्टि करवी ते साहं छे.

हवे वीजुं कहे छे. जे देवता नहीं छतां, देवता माफक द्रव्य-जुवानी स्वामीपणुं, सुंदर रूप, विगरेथी युक्त होयः ते मनुष्य अ-मर (देवता) माफक आचरे ते अमराय (देवताइ) पुरुष कहेवाय; ते महाश्रद्धी एटले, जेने भोगमां, अने तेने मेळववाना उपा-यमां घणी लालसा (श्रद्धा) होय; ते महाश्रद्धी (पापारंभी) छे, तेनुं दृष्टांत कहे छेः—राजगृह-नगरमां मगधसेना नामनी गणिका (वेख्या) रहेती हती. तेज नगरमां धनशेठ नामनो सार्थवाह हतो. ते कोइ वखते घणुं धन आपीने, ने वेख्यानां घरमां पेठो. तेना रूपयौवन-गुणोचो समूह, द्रव्य विशेरेनी लालचथी वेख्याए तेने स्वीकार्यो; पण ते शेठनुं आवक, स्वर्चना हीसावनी जंजालमां मन रोकायाथी ते वखते, वेख्याने नजरे पण जोइ शक्यो नहीं. (मतलब के, वेपारनी धुनमां, वेख्या साथे वात पण करी नहीं.) आ वेख्या पोताना रूपयौवन-सुंदरताना अहंकारथी दुःखी शइ. तेने अति दुःखी जोइने जरासंघ राजांए कहेवडावुं के ताहं दुःखनुं का-रण भुं छे? अथवा तुं कोनी साथे रहे छे! वेख्याए कहुं के हुं अमर साथे रहुं छं राजाए पूछुं के केवी रीते? तेने कहुं के मने राखनार शेठ आ प्रमणो पैसादार छे, अने भोगना अभिलाषीओ धनमां असक्त बनेला देवता माफक क्रियामां वर्ते छे, खावा पी-वामां तथा बीजी क्रियामां देवता माफक विलास भोगवे छे, पण कामनो अभिलाषि शरीर अने मननी पीडायां पीडाएजो बढारथी सुखी अने अंदरथी दुःखी भोगोनी इच्छावालो छतां भविष्यना वेपारनी चिंतायां पढेलो मने जोतो पण नथी, तेथी मारां बधांए

मुक्तो एक सुख विना रद है. तेषी गुरु शिष्यने कहे है. संसारी कामी जीवोवां दुःख जोहने सेमते सुखी नमानां भोगोपी इच्छा न करी. वली संसारी भोग वांच्छकतुं स्वल्प कहे है. पोते कामना स्वल्पने अथवा तेना कठवा विधावरी व जालीते सेवां शिव राखेछो बीजानी सुंदर स्त्रीओ जोहने ते न मळवाथी अथवा पोतावी बहाली भिया भरी अथवी तेनी आवासावां रात दिवस शोक करे है; कहुं हे कः—

“चिन्ता गते भवति साध्वसमनितकस्ये—सुके तु त्पुत्रिश्चिक्वा रमिशेऽप्य तुष्टिः ॥

द्वेषोऽन्यभाजि वश वतिनि दग्धमानः—प्राप्तिः सुखस्य क्षयिते न कथ्याश्चदश्चि ॥११॥”

नाश पामे तो चिन्ता थाय, पासे होय तो तेना थाकथी गभराभण थाय, त्याग करे तो तेनी इच्छा थाय, नोभवनां आदमी थाय, अथवा पति के पत्नी बीजा साथे संबंध करे, तो द्वेष थाय, वश करेती पति बळोळ जेना थाय, तेथी करीते दुखली भासि पतिनी स्त्रीने कद्रापि पण नथी, आ प्रमाणे घन विभेरेसां पण सगजहुं के षोइपण भकारे धारा विधावनां राख पती. पण पक्षणागे नूभास है, एतुं वतावीने समाप्त करवा कहे है.

से तं जाणह जमहं वेमि, तेइच्छं पंडिष् पवयमाणे से हंता, शिवा शिवा हुंपइया विहुंप
इना उद्वडता, अकडं करिससामिति मन्नमाणे, जसवि थ पं परेइ, अलं वाटअथ रीणोपं.
जे वा से कारइ बाले, न एवं अणगारसस जायइ (सू० १५) तिथेति ॥

तेथी कामना अभिलाषो दुःखनाज हेतुओ छे, तेवुं तमे जाणो तेथी हुं कहुं छं, मारो उपदेश चित्तमां राखवा माटे कानेथी सांभळो अने खोटी वासनांन छोडी दो.

शंका—अहीआं कामवासनाओ निग्रह बताव्यो, ते बीजा उपदेशथी पण कार्य सिद्धि थात तेथी आचार्य कहे छे. “ते इच्छं” काम चिकित्सामां पण पंडित अभिमानी पोते तेवा वचन बोलतो अथवा व्याधिनी चिकित्सानो उपदेश करतो अन्य दर्शनीसाधु जीवना उपरर्दनमां वर्त छे. एदले जे भविष्यना कडवा विपाकने भूले छे, ते बीजाने संसार भोगववाना (कोकशाख) ग्रंथनो उप-देश करे छे, जेना वडे अज्ञानी जीवो विषय सुख लेवा शरीर शक्ति बधारवा अनेक पाप करे छे, तेवुं मूल कारण तेवा उपदेशने कहेवाथी बीजा जीवोने लाकडी विगोरेथी मारनारो तथा शूळ विगोरेथी कान विगोरेओ भेदनारो तथा गांठ छोडवी, विगोरेथी धन चोरनारो, तथा लुंठ के खातर पाडीने धन लेनारो तथा जीव लेनारो वने छे.

कारण के कामचिकित्सा के शरीरनी पुष्टि, के रोगभुं निवारण तत्व दृष्टिथी विमुख पुरुषोने जीवहिंसा सिवाय शतुं नथी. वली केदलाक पंडित मानी पुरुषो एम गर्व करे छे के तेणे कामचिकित्सा विगोरे न करी पण हुं तो करीबज ! एम मानीने पोते हणवा विगोरेनी क्रिया करे छे, तेथी कर्मबन्ध थाय छे, जे कुवासना अथवा जीव हिंसाना औषधोनां शाख वनावे छे ते परिणामे दुर्गतिये आपनार शाख होवाथी ते अकार्य छे.

वली व्हहे छे के, जे पोते चिकित्सा करे छे. ते करनार अने कराननार बन्ने पाप क्रियाओना भागी छे. तेथी तेवी दुर्गतिमां जनारो अज्ञानी जीवनी संगत पण न करवी, कारण के तेथी कर्मबंध थाय छे, अने जीवहिंसाथी औषध करावे, तेनी पण सोवत न करवी.

उत्तम साधुओंने उपर कहेल प्राणीओनी हिसावाळुं काम वासनानुं अथवा वैदकशास्त्रनुं भणवा भणाववानुं होय नहिं. एटले जेम वाळजीवो करे तेम साधुओंने करवुं कल्पे नहिं, तेओनुं वचन पण साधुओए सांभळवुं नहिं.

आवुं सुधर्मस्वामी जंबूस्वामीने कहे छे, पांचमी उद्देशो समाप्त थयो.

हवे छटो उद्देशो कहे छे.

पांचमा साथे छट्टा उद्देशानो आ संबंध छे के, संयम देहना निर्वाह माटे लोकोपां जवुं, पण तेमनी साथे प्रेम न बांधवो एवुं कहुं ते हवे सिद्ध करे छे.

आ सूत्रनो पूर्वना सूत्र साथेनो संबंध कहे छे:—एटले, “१५ मा ” सूत्रनी छेवटे कहुं के:—उत्तम साधुने चिकित्सा विगेरे न होय. अर्हीआं “१६” सूत्रमां पण तेज कहे छे.

से तं संबुद्धमणे आयाणियं समुद्राय तम्हा पावकर्मं नेव कुज्जा न कारवेज्जा। (सू० १६)

जेने चिकित्सा न होय; ते अनपार कहेवाय; अने जे जीवोने दुःख आपनार चिकित्सानो उपदेश आपवो; अथवा तेहुं कल्प करवुं ते पाप छे, एम जाणीतो (गीतार्थ) साधु ज्ञ-परिज्ञावडे तथा, मत्प्याख्यान परिज्ञावडे जाणीने तथा पाप छोडीने आदानीय (ग्रहण करवा योग्य) परमार्थथी भाव आदानीय ज्ञानदर्शन-चारित्र छे, तेने ग्रहण करीने पापकर्म कोइपण बलते न करे तेम न करावे; अने करनारने अनुमोदना पण न आपे.

अथवा, ते साधु ज्ञान विगेरे, मोक्षतुं साचुं कारण छे, एम जाणीने, संयम-अनुष्ठानमां सावध थइने सर्वसावध (पापनां) कृत्य मारे न करवां; एवी प्रतिज्ञारूपपर्वत उपर चढीने थुं करे छे ? ते कहे छे:—

आ सावधना आरंभनी निवृत्तिरूप-संयम लीधो छे, तेथी, मुनिए पापकर्मनी क्रिया न करवी. मनथी पण इच्छवी नहीं; पोते बीजा पासे पण कराववी नहीं; एदळे, नोकर विगेरेने पापकर्ममां भेरावां नहीं; तथा, “१८” प्रकारतुं पापजीव-हिंसा, जुठुं, चोरी, कुचाल, परिग्रह ममता, क्रोध, मान, माया, लोभ, रागद्वेष, कर्जीओ अभ्यालयान, पैशून्य रति अरति, परनिंदा, मायामुषावाद, (कपटतुं जुठ, मिथ्यादर्शन-शलयने पोते न करे; तेम न बीजा पासे न करावे; तथा, पाप करनारी प्रशंसा न करे; एम, मन, वचन, कथाथी त्याग करे.

पक्ष:—एक पाप करे; तेने बीजां पाप लागे के नहीं ?

उत्तर:—ते शास्त्रकार बतावे छे.

सिया तरथ एगयरं विपरामुसइ छसु अन्नयरंमि कपइ सुहट्टो लालपमाणे, सएण दुक्खेण
सूढे विपरियासमुवेइ, सएण, विपमाएण पुढो वयं पकुवइ, जंसिमे पाणा पवहिया पडि-

हाए नो निकरणयाए, एस परिज्ञा पवुच्चइ कम्मोवसंती । (सू० ९७)

कोइ पापआरंभमां पृथ्वीकाय विगेरेनो समारंभ करे छे, ते एक प्रकारतुं आश्रवद्वार प्रारंभे छे, ते छ कायना आरंभमां वर्ते छे, ते जाणतुं, जोके, पोते एकने हणवानो विचार करे छे, जतां संबधने लीधे सर्व हणाय छे.

पक्ष—ज्यारे कोइपण एक कायने हणवा आरंभ करे त्यारे बीजिकायना समारंभतुं पाप अथवा सर्व पापेमां वर्ते हे तेतुं केम मनाय ? उत्तर—हुंभारनी शाळांमां पाणीने अडकवाना दृष्टांतवडे जाणतुं. एटले पाणीने अडकतां पाणी साथे रहेली माटीने स्पर्श थाय तेथी बीजी पृथ्वीकायनो आरंभ थयो अने पाणीमां रहेली वनस्पतिनो आरंभ थयो, ते हालतां वायुनो समारंभ थाय, त्यां रहेली अग्नि पदीप्त थाय. ए प्रमाणे अग्नि बळतां तस जीवोनो आरंभ थाय. (माटे साधुए दरेक जग्याए विचारीने पग सूकवो) अथवा प्राणालिपात आश्रवद्वारमां वर्तवाथी, अथवा एक जीवना अतिपात (हिंसा) अथवा एक कायाना आरंभथी बीजा जीवोनो पण घातक समजवो, तथा प्रतिज्ञा लोपवाथी ते बीजुं पाप वांधे हे. कारण के जीव हिंसानी आज्ञा जिनेश्वरे आपी नथी, तथा प्राणीओना प्राण लेवानी आज्ञा प्राणीओ आपता नथी, माटे चोरीनो दोष हे. तथा सावधना ग्रहण करवाथी परिग्रहवाळो पण हे, अने परिग्रहमां मैथुन तथा रात्रिभोजन पण आवे, कारण के ग्रहकार्य निना स्त्री भोगवाय नहीं. एथी एकना आरंभमां वधी कायानो आरंभ हे, अथवा चार आश्रवद्वारने रोक्या निना चार महाव्रतमां तथा छद्दा रात्रिभोजन विरमणव्रत केवी रीते थाय ? एथी वयानो आरंभ लग्ने अथवा एक पाप आरंभ करे, ते अकर्तव्यमां पवर्तवाथी छए कायना आरंभनो दोंषित हे, अथवा जे एक पण पाप करे, ते आठे प्रकारना कर्मने ग्रहण करी वारंवार तेमां पवर्ते हे. पक्ष—शा माटे ते पाप करे हे ?

उत्तर—सुखनो अर्थि ते वारंवार अयुक्त बोले हे, अने कायाथी दोडवा-कुदवानी क्रिया करे हे, अने पैसो पेदा करवा उपायोने मनथी चिंतवे हे, ते कहे हे. खेती विभेरे करीने पृथ्वीनो आरंभ करे हे, स्नान माटे पाणीनो, तापवा माटे अग्निनो गरमी दूर करवा हवानो (पंखावडे) तथा खावाने माटे वनस्पति अथवा पशु हत्या विभेरेनो आरंभ करे हे, भा पाप वरनार

गृहस्थ अथवा वैश्यादीनी साधु रसनो रसीओ बनीने सचित्त लवण वनस्पति फळ विगोरेने ग्रहण करे छे, तथा बीजी वस्तु पण वा-
परे छे, ने समजी लेवुं.

आ प्रमाणे जे वधारे बोलनारो होय, ते पापकर्मथी बीजा नवा जन्मना दुःखरूपी झाडतुं कर्मबीज पण वावे छे, अने तेथी
दुःखना झाडतुं कार्य प्रकट थरो, ते तेणे अहीं कर्युं. माटे आत्मीय (पोतातुं) कर्युं अने ते पाप कर्मना विपाकनो उदय थनां मूढ
माणस परमार्थने न जाणवाथी, धर्म करवाने वदले सुखने मेळववा प्राणीने दुःख आपवानां हुत्यो करे छे, अर्थात् सुखने वदले
भविष्यमां पण दुःखज पासरो. कहु छे कैः—

“दुःखद्विद् सुखलिप्सु—मोहान्धत्वाद्दृष्टगुणदोषः । यां यां करोति चेष्टां तथा तथा दुःखमादत्तेः ॥१॥”

दुःखनो द्वेषी, सुखनो चाहक, मोहथी आंधळो थवाथी गुण दोषने न जाणनारो जे जे चेष्टाओ करे छे, तेनार्थो पोते दुःखज
पासे छे. अथवा ते मूढ हित मेळववा, अहित छोडवाना विवेकथी शून्य उलटां चाले छे, एदले हितने अहित माने छे. तथा अहितने
हित माने छे: तथा कार्यने अकार्य, पथ्यने अपथ्य विगोरेमां पण समजवुं; एदले एम वताव्युं कै, मोह ते अज्ञान छे, अथवा मोह-
नीयनो भेद छे, ते वन्न प्रकारना मोहथी मूढ वनेलो अल्प सुखना माटे तेवो तेवो आरंभ करे छे कै, जेनावडे शरीरना अने मनना
दुःखना व्यसनोने पासीने अनंत काळना संसार भ्रमणजी पात्रताने पासे छे. वली मूढनी बीजी अनर्थनी परंपरा वतावे छे, एदले
पोताना आत्मावडे मद्य विगोरेना प्रयादथी एदले इन्द्रियोनो रस लेवो, कषायो करवा, विकशा करवी, अथवा घणी निद्रा करवाथी
जुहुं जुहुं द्रव (पापना चाळा) करे छे. अथवा वय एदले पोताना कर्मवडे जेमां जीवो भ्रमण करे छे ते वय संसार जाणवो, एदले

एक एक कायमां घणो काल रहेवाथी तेनो अनंतोकाळ दुःखमां वीने छे.

अथवा कारणमां कायंतो उपचार करीए; तो पोताना जुदीजुदीरीते करेला प्रमादथी बंधायलां कर्मवडे वय एटले, कोइपण अवस्था भोगवे; ते एकेद्रिय विगेरेमां कलल, अर्बुद विगेरेथी लइने, एक दिवसना जन्मेला बाळक पण विगेरेनी अवस्थामां व्याधियथी पीडायला, अथवा दारिद्र तथा दुर्भाग्य विगेरेनां दुःखयी प्राप्त थयेल ते प्रकर्ष करीने बांधे छे. (एटले पूर्वे कर्म बांधे; अने पळीथी भोगवे; ते आश्रयी वयः शब्द लीधो छे.

ते संसारमां अथवा, उपर कहेली अवस्थामां प्राणीओ पीडाय छे ते बतावे छे. 'जं सि मे.' एटले, आ पोताना करेला प्रमादना कारणे अशुभकर्मनां फळ भोगवतां चारगतिवाळा आ संसारमां अथवा, एकेन्द्रियादि अवस्थामां प्राणीओ दुःखोथी पीडाय छे, (एवुं गुरु शिष्यने कहे छे के तुं जां.)

तेओ सुखने माटे आरंभमा राचेने मोहथी धर्मने वदले अधर्म करीने गृहस्थो तथा साधु वेपथारी तथा पाखंडीओ पीडाय छे, (जे ब्रह्मचर्यने वदले कुशील सेवे; तेने इन्द्रिय सदतां संसारमांज नरकवास भोगववो पडे. वैदनी गुलामी करवी पडे; अने वधारे रोग न वधे; ते माटे, वधी इन्द्रियो वशमां राखवी पडे; ए कुमार्गे चाल्यातुं फळ छे.)

जो एवीरीते प्राणीओ पोतानां पापोथी अहीं पीडतां देवाय; तो शुं करतुं ? ते कहे छे:—आ संसार—भ्रमणमां पोतानां कृत्योसुं फळ भोगववामां समर्थ जीवोसुं स्वरूप जाणीने अथवा, गृहस्थवडे मारखातां अथवा, परस्पर लढतां अथवा रोगादीनी पीडाओ भोगवतां, तेमनां कर्मनां फळ भोगवतां जाणीने पंडित साधुए निश्चयथी तेनो त्याग करवो; एटले सर्वथा अथवा, निश्चयथी प्राणी-

अने जुदा जुदा दुःखोनी अवस्था जेमां थाय; ते “निकरण” अथवा “निकार” छे, अने तेज अशुभकर्म शरीर मननुं दुःख उत्पादक छे, ते कर्मने साधु न करे; एटले जेथी प्राणीओने पीडा थाय; तेवुं कृत्य साधु न करे; (साधुए कोइ पण जातनो पापारंभ न करवो;) तेथी शुं थाय ते कहे छे.

आजे सावद्य वेपारनी निवृत्तिरूप—परिज्ञा छे, तेज तत्त्वथी प्रकर्षथी ‘परिज्ञान’ कहेवाय छे, पण बौद्ध (ठगनी) माफक मोक्ष फळ रहित ज्ञान नथी.

आ प्रमाणे ज्ञ परिज्ञा, तथा प्रत्याख्यान परिज्ञावडे प्राणीनो निकार (हिंसा) छोडवावडे साधुने मोक्ष फळे छे, एटले कर्मो ज्ञान्त पामे छे, संपूर्ण जोडलां राग द्वेष विगोरेनां छे, ते वधां संसार झाडनां बीजरूप कर्म छे, तेनो क्षय थाय छे, ते जीवहिंसानी क्रिया दूर करनारने थाय छे.

अने आ कर्मक्षयमां विद्वरूप जीव हिंसानुं मूल आत्मामां विषयवासनानुं ममत्व छे, ते दूर करवा कहे छे.

जे समाइभमइं जहाइ से चयइ ममाइयं, से हु दिइपहे सुणी जस नस्थि ममाइयं, तं परिज्ञाय मेहावो विइत्ता लोणं वंता लोणसन्नं से मइमं परिक्रमिजासिं त्तिवेमि ॥ नारइं सहई वीरे, वीरे न सहई रतिं । जस्मा अविमेण वीरे. तस्हा वीरे न रज्जइ ॥१॥ (सू० १८)

संसासी जह वस्तुमां माराणणी मति तेने जे साधु परिग्रहना कइवां फरुने जाणे छे, ते छोडे छे. ते परिग्रह द्रव्यथी अने

ભાવથી એમ બે પ્રકારે છે, તે બન્ને પ્રકારની પરિશ્રહની બુદ્ધિ હોદવાથી, અંતરનો ભાવપરિશ્રહ પણ નિષેધ કર્યો, અને પરિશ્રહની બુદ્ધિ વિષયનો પ્રતિષેધ કરવાથી વહારનો દ્રવ્યપરિશ્રહ પણ તજવાનો કહ્યો અથવા કાકુન્યાયે લ્હણ તો એમ અર્થ થાય કે, જે પરિશ્રહના વિચારનું મલિન જ્ઞાન હોદે, તેજ પરમાર્થથી વહાર અને અંદરનો પરિશ્રહ હોદે છે, તેનો અર્થ આ છે.

સંબંધ માત્રથી ચિત્તના પરિશ્રહની કાલાજ્ઞાનો અગ્રાવ છે. જેમ નગરમાં સાધુ રહે, અથવા પૃથ્વી ઉપર વેસે છતાં જેમ જિનકલ્પી મુનિને નિષ્પરિશ્રહતાજ છે, તેમ સ્થવિર કલ્પીને પણ જાણવું, તેથી શું સમજવું તે કહે છે.

જે મુનિ જાણે છે કે મોક્ષમાં મુલ્ય વિવ્રનો હેતુ તથા સંસાર અપણનું કારણ છે, તે પરિશ્રહ મમત્વથી હુદવાના વિચારવાળા છે, તેજ દેવતો છે, તેણેજ મોક્ષનો માર્ગ જ્ઞાનાદિક જોયું છે, તે દ્રષ્ટપથ છે.

અથવા દૃષ્ટ મય લ્હણ તો સાતે પ્રકારનો મય જે શરીર વિગેરેના મમત્વથી સાક્ષાત દેવાય છે, અથવા વિચારતાં પરંપરાણ જણાય છે, તે સાતે પ્રકારના મયને જાણનારો નિશ્ચયથી થાય છે, તેનો વધારે સુલાસો કરે છે.

જેમ મમત્વ ન કરે, પરિશ્રહ ન રાણે, તે દૃષ્ટ મય છે, એમ સમજીને પૂર્વે વતાવેલા પરિશ્રહને તે જ્ઞ-પરિજ્ઞાવદે જાણીને પ્રત્યાલ્હ્યાન પરિજ્ઞાવદે ગીતાર્થમુનિ પરિશ્રહના આગ્રહવાળા એકેન્દ્રિયાદિ સંસારી-જીવલોકને દુઃસ્વી જાણીને પોતે પ્રાણિગણની દશ પ્રકારની મમત્વસંજ્ઞા (પરિશ્રહને) ત્યાગે છે, તેજ મુનિ સત્યાસત્યના વિવેકને જાણનારો છે તેને શુરુ કહે છે. તું સંયમ અનુષ્ઠાનમાં યોગ્ય રીતે ઉદ્યમ કર! અથવા, આઠ પ્રકારનાં કર્મને અથવા કર્મનું મૂલ્ય રાગદેષાદિ છ રિપુવર્ગ છે, તેને અથવા, વિષયકથાયને જીતવા પ્રાક્રમ કર, એવું કહું છું.

તે મુનિ સંયમ અનુષ્ઠાનમાં પ્રાક્રમ કરનારો પરિશ્રહના આગ્રહને હેદનારો મુનિ કેવો થાય છે તે કહે છે:—

(सारां काममां विद्म वधारे आवे तेम) कदाच ते संसारनो घर, स्त्री, धन सोतुं विगोरे परिग्रह छोडनार अर्किचन मुत्तिने सं-
यम अनुष्ठान करतां मोहनीयकर्मना उदयथी संयममां अरति थाय; तोपण, ते संयम संबंधी अरतिने पोते सहन करे; (तेमां मन न
राखे;) पण वधारे वैराण्यथी वीर वनीने आठ प्रकारना कर्मशत्रुने प्रेरणा करीने ते शक्तिमान बनेलो वीर असंयममां अथवा, विष-
य-परिग्रहमां रति न करे; अने संयममां जे अरति थाय; अने विषयमां रति थाय तेथी, विमन वनीने शब्दादिमां रमणता न करे;
एटले, रति अरति, ए वचने छोडवाथी खेदी मनवाळो न थाय; तेम, राग पण न करे ते वतावे हे.

जेणे रति, अने अरतिमां मन न लगाडवुं ते वीर हे, अरे जे वीर हे, ते पांच इन्द्रियना विषयमां आसक्ति न करे त्यांरे शुं करवुं ते कहें हे:-

सहे फासे अहियासमाणे निविद नंदिं इह जीवियस्स । मुणो मोणं समायाय, धुणे
कम्मसरीरगं ॥२॥ पंतं दूहसेवति वीरा संमत्तदंसिणो । एस्स ओहंतरे मुणी तिन्ने
मुत्ते विरए विगाहिए, त्तिवंमि ॥ (सू० ९९)

जेथी रति-अरतिने त्यागीने मनोहर शब्द विगोरेमां साधु राग न करे; तेम खरावमां द्वेष पण न करे. ते सर्वां विगोरेमां पण
सारीरीते सहन करे; एटले, मनोह्र शब्द सांभळीने आनंद न माने; तेम, खराव सांभळीने खेद न करे; ते प्रमाणे शब्द,
तथा सर्वां लीधाथी वीची इन्द्रियना विषयमां पण जाणवुं कहुं हे के:-

सहेसु अ भदयपावत्सु, सोयविसयसुवगएसु । तुद्वेण य रुद्वेण व समणेण सया न होअवं ॥१॥

सुंदर के, खराब शब्द कानमां आवतां साधुए खुश अथवा नाखुश हमेशां, (कोइपण बरवते) न थवुं. एज प्रमाणे रूपगंध विगे-
रेमां पण जाणवुं, तेथी, शब्द विगेरेमां पण मध्यस्थता राखनार। शुकरे ? ते कहे छे:—

आ गुरुजी उपासना करनार शिष्य जे विलय छे, तेने अथवा, मोक्षाभिलाषी बीजाने पण आ उपदेश छे. के, तुं सारी रीते
जाण के, अर्थ, वैभव विगेरेथी मननी जे प्रसन्नता छे, तेने दूर कर. आ मनुष्य लोकमां जे संयम विनातुं जीवित छे; तेने त्यजी
दे, अथवा वैभव विगेरेथी कुदरती जे आनंद थाय छे, के मने आ आबी उत्तम समृद्धि मळी छे, मळे छे. अने मळरो. एवो जे
विकल्प थाय छे, ते आनंदना विकल्पने पण तुं निंद, विचार के आ पापना कारण रूप अस्थिर समृद्धिवहे शुक लाम छे ! कहुं छे के:—
विभव इति किं मदस्ते ? च्युतविभवः किं विषादमुपयासि ? । करनिहितकन्दुकसमाः पानोरिपाता मनुष्याणाम् ।

अमारो वैभव छे, एवो तने मद शुक काम थाय छे ! अने वैभव जतां खेद केम करे छे ? तुं जाणतो नथी के माणसोने मळेळी
रिद्धि हाथमां रमवाना दडा माफक पढे छे, ने उछळे ! आ प्रमाणे रूप विगेरेमां पण जाणवुं. ते संवधी सनतकुमारतुं दृष्टांत जाणवुं.

अथवा पांच अतिचारने पण तुं जे पूर्वे कर्या होय, तेने निंद अने यताने रोक अने आवताने अटकाव, केवी रीते ? ते कहे
छे, जण काळने जाणनार ते मुनि छे, अने मुनिहुं मौन ते संयम छे, अथवा मुनिनो भाव ते मौन अने वचनतुं संयम छे, अने ते
प्रमाणे काया अने मनतुं पण जाणवुं ते मन वचन अने कायाला संयमने आदरीने कर्म शरीर, अथवा औदारिक विगेरे शरीरने आ-
त्माथी जुहुं कर, अर्थात् तेनो ममत्व सूक, ते ममत्व केवी रीते सूकाय ? ते कहे छे. प्रान्त एटले रस रहित तथा घी विगेरेथी रहित
लुखवुं भोजन कर, अथवा द्रव्यथी अने भावथी प्रान्त एटले विगत शुभ ते गोचरी करतां द्वेष न करवो. तथा रक्षभाव एटले सारी

गोचरीमां राग न करवो, ते अंगार दोष रहित, वीर साधुओं गोचरी करे हे, ते साधुओं, सम्पत्त्वदशीं हे. तं रागद्वेष रहित हे. अथवा सम्पत्त्वदशीं हे, पटले परमार्थ दृष्टिवाला हे. तंओ जाणे हे. के आ शरीर नृत्तप हे; निरूपकारी हे. एता माटे माणीओ आलोक परलोकमां वलेश करी दुःख भोगवनारा हे. (अने अनेक आदेशमां एक आ देवा हे) तंथी रस रहीक लृत्तरुं खानारी तथा समदशीं कर्णादि शरीर छोडीने भावथी भवओयने तरे हे. ते उत्तम क्रिया करतां भव ओयने तरे हे. अने जे वाप भयभय परिग्रहथी रहित हे. ने युक्त हे. पटले जे निर्मल भावथी शब्दादि विषयनो राग त्त्वजे ते विरत हे, अने मुक्तपणे तथा विरागपणे जे विरूपते हे, तेज मुनिभव ओयने तरे हे, अथवा ने तर्पो हे, एण जाणवुं जे मुनि आ प्रमाणे मुक्त अने वित्तपचार्या चित्तपार न थयो, ते केयो दुःखी थयो ते वलावे हे.

दृषुसुसुणी अणाणाए, तुच्छए गिलाइ वत्तए, एस वीरे पसंसिए, अच्चेइ लोयसंजोगं एस नाए पवुशइ(सु०००

वसु द्रव्य हे. अने भव्य अर्थमां उत्पन्न कर्युं हे. ते मोक्षरूपी भव्य द्रव्य हे. पटले मुक्ति गमन योग्य जे द्रव्य ने वसु हे. अने स्वराय मार्गे वपराय ते दुर्बसु हे. पटले दुस्वयोग करनार जे मुक्ति हे. ते योग्यगमनने अयोग्य हे. (अर्थाने भे संशयरूप भगुने खोटं मार्गे जे हे, तंथी तेनो मोक्ष न थाय.) आप माथी थाय ? ते करे हे. तीर्थकरना उपदेशनी शून्य वर्गी स्वरेखाचारी कने हे. प्रश्न—शाथी ने स्वच्छंदी वने हे. ? उत्तर—प्रथम करेला उद्देशाणां वनालवुं हे. ते मयवुं भरीं आणवु. तं आ प्रमाणे हे. पिथ्यात्त्वथी मोहीत लोक हे. तंमां तत्व तपनवुं दुर्लभ हे अने द्रवोमां आत्माने रोक्वो ते कट्टण हे. अनेरनि भवतिने शक्यी तथा पांच इन्द्रियना विषयमां दृष्ट अनिष्टमा समपाव भाववो तथा मान्ता (निरस) तथा नृत्त्वो आशर करवो मार्गी योग्यकरनी आजा नभवारणी

धार उपर चालवा माफक पाळवी कठण छे. तथा अनुकूल पतिकूल जुदा जुदा उपसर्गो सहैवा कठण छे. अने ते न सहैवानुं कारण अनादि अतीत काल सुखनी भावना जीवने छे. ते स्वभावथी दुःखभां वीकण अने सुखनो प्रिय बनीने वीतरागनी आज्ञाने पाळतो नथी. तेमां दुःख माने छे. कारणके आज्ञा सहन करवानी छे. सुख के दुःखभां समभाव राखवानो छे, ते भूली परवश बनी तुच्छ पटले, पापना उदयथी द्रव्यथी, निर्धन अथवा, घट अथवा जळ विगेरेथी रहित बने छे. (पीवाने पाणी पण मळतुं नथी.) तथा भावथी रिक्त पटले ज्ञान दर्शन चारित्र तेने मळतुं नथी; पटले ते मूर्ख साधुने कोइए प्रश्न करतां जबाब आपवाभां अशक्त होवाथी बोलवाने शरम आवे छे, अथवा, ज्ञानवाळो छतां, चारित्रभ्रष्ट होवाथी; खरं बोलतां पोतानी पूजा नहीं थाय; माटे शुद्ध मार्ग कहे-वाना अवरसे बोलतां शरमाय छे. पोते परिग्रह राखे त्यारे कोइ पूछे के, साधुने धन राखवुं कल्पे ? त्यारे पोते कहे के:—धन राखवाभां दोष नथी; एवुं रवोटुं पण बोले. जे कषायरूपी—महाविषनो टाळनार भगवाननी आज्ञा पाळनार ते 'सुवसु' मुनि छे, ते ज्ञानथीभरलो मधुना कहेला मार्गने बतावनारो कर्मने विदारवाथी वीर बनेलो उत्तम पुरुषोए प्रशंसेलो छे. (जे आज्ञा पाळे ते प्रशंसा तथा सद्गतिने पासे; अने जे आज्ञा न पाळे; ते अपमान अने दुर्गति पासे.)

वकी "अच्चेइ" भगवाननी आज्ञाने अनुसरनारो वीरपुरुष असंयत लोकथी जे ममत्व थाय तेने त्यजे छे, ते लोक बे प्रकारना छे. पटले-बाह्य, धन, सोनुं, मातापिता विगेरेमां ममत्व थाय छे, ते तथा हृदयमां रागद्वेष विगेरे अथवा तेनाथी बंधातां आठ प्रकारनां कर्म, ते अभ्यंतर लोक (ममत्व) छे तेनो संयोग उछंवे छे, अर्थात् ममत्व त्यागे छे.

जो, एम छे तो, शुक करवुं ! ते कहे छे:—जे आ लोकना ममत्वनुं उछंवन छे, ते सारो मार्ग पटले, मोक्षाभिलाषिओनो आचार

हे ते कहे छेः—अथवा 'परं' ते आत्मा छे, तेने मोक्षमां लइ जाय छे, ते 'नाथ' (मागधी सूत्र प्रमाणे) छे तेनो अर्थ आ छे. के जे, लोकनो संयोग त्यजे; तेज श्रेष्ठ आत्माना मोक्षनो न्याय छे. सदुपदेशधी मोक्ष मेळवनारो कहेनाय छे.

एम हो; पण, ते उपदेश केवो छे ते कहे छेः—

अं दुक्खं पवेइयं इह माणवाणं, तस्स दुक्खस्स कुल्ला परिज्जमु दाहरंति, इह कम्मं परिज्जाय,
सव्वसो जेअणन्नदंसी, से अणन्नारामे, जे अणणारामे, से अणन्नदंसी, जहा पुणस्स

करथइ, तहा तुच्छस्स करथइ, जहा तुच्छस्स करथइ जहा पुणस्स करथइ (सू० १०५)

जे दुःख अथवा दुःखनुं कारण अथवा, लोकना पमत्वथी वन्थातुं कर्म तीर्थकरोए वतावुं छे के, आ संसारमां जीवोने आवां करनारा; बोले तेवुं पाळनारा, निद्रा जीतेला; इन्द्रियो वश राखनारा, देशकाल विगेरेनुं स्वरूप जाणनारा; उत्तम गुणोवाळा साधुओ विगेरे आबी परिज्ञा वतावे छे के, दुःखोनुं मूल कारण तथा, तेनुं रोकावानुं कारण आ प्रमाणे छे. ते जाणीने ज्ञ-परिज्ञावहे प्रत्या-ख्यान परिज्ञावहे पापने त्यागे छे. वळी, उपर दुःख थवानो विचार विगेरे मनुष्य तथा बीजा जीवोनुं कहुं ते दुःख जाणवानी तथा दुःखनुं मूल पाप त्यागवानी वे प्रकारनी परिज्ञा-गीतार्थ साधुओएवतावी. ते परिज्ञा करीने तथा, पापनां मूल आश्रवद्वार जाणीने छोडवा ते कहे छेः—

ज्ञानतुं शत्रुपणुं (भ्रमनारने विद्व कखुं) विमरे करवाथी ज्ञानावरणीयकर्म वन्याय छे. तेम आठे कर्म संबंधी जाणीने प्रत्या-
न्यानपरिज्ञावडे पाप छोडीने तेना आश्रवद्वारमां मन-वचन-करवा-कराववा तथा अनुमोदवावडे पोते न वर्ते, अथवा, सर्वथा
जाणीने कहे छे. सर्वथा 'परिज्ञान' ते केवळीने गणधरने अथवा चौदपूर्वि साधुने छे.

अथवा सर्वथा 'कहे छे' एटले आक्षेपणि विमरे चार प्रकारनी धर्मकथा छे ते टिप्पणमां नीचे मुजब छे.

स्थाप्यते हेतु दृष्टान्तैः स्वमतं यत्र पण्डितैः । स्याद्वाद ध्वनिसंयुक्तं सा कथाऽऽक्षेपणी मता ॥१॥

हेतु अने दृष्टांत वडे पंडितो जेमां स्याद्वादवादने अनुसरी जे वचन बोले, ते वचनयुक्त जे कथा ते आक्षेपणी छे.

मिथ्यादशां मतं यत्र, पूर्वापरविरोधकृत् ॥ तन्निराक्रियते सद्भिः सा च विक्षेपणीमता ॥२॥

मिथ्यादृष्टिओना मतने तेमतो पूर्ब अपर विरोध बलावी उत्तम पुरुषो तेनो निषेध करे, ते कथा विक्षेपणी छे.

यस्याः श्रवण माेण, भवेन्मोक्षाभिलाषिता ॥ भठयानां सा च विद्वद्भिः प्रोक्ता संवेदनीकथा ॥३॥

जेना सांभळवा मात्रथी भव्य पुरुषोने मोक्षनी अभिलावा थाय, तेवी विद्वानोनी कहेली कथाने संवेदनीकथा कहे छे.

यत्र संसारभोगाद्गु, स्थितिलक्षणवर्णनम् । वैराग्य कारणं भठ्यैः सोक्ता निर्वेदनीकथा ॥४॥

जे संसार भोगना अंगोनी स्थितिना लक्षणतुं वर्णन छे अने वैराग्यतुं कारण छे तेवी कथाने भव्य पुरुषो कहे छे ते निर्वेदनीकथा जाणवी
ते कथा केवी छे. ते कहे छे वीजुं एटले जैन सिवायतुं जे तत्व तेने माने ते अन्यदर्शी-तथा न अन्यदर्शी ते यथायोग्य

પદાર્થ જાણનારો સમ્યક્દષ્ટિ જિનવચન માનનારો ગીતાર્થ સાધુ છે તે મોક્ષ સીવાય વીજા માર્ગમાં રમતો નથી.

હેતુ અને હેતુવાળા—ભાવવદે સૂત્રને જોડવા કહે છે કે જે યગવાનના ઉપદેશથી અન્ય સ્થાનમાં સ્મણતા ન કરનારો તે અનન્ય-દર્શી છે અને જે અનન્યદર્શી છે તે વીજે રમે નહીં કહું છે કે—

“શિવમસ્તુ કુશાસ્ત્રાણાં વૈશેષિકપષ્ટિ તંત્ર વૌદ્ધાનામ્ । ચેષાં દુર્વિહિતત્વાદ્ધગવત્યનુરજ્યતે ચૈતઃ ॥૧૧”

કુશાસ્ત્રો એ, “વૈશેષિકપષ્ટિતંત્ર” તથા વૌદ્ધનાં રચેલાં છે, તેમનું પળ મહું થાઓ; કારણકે, તેમનામાં વિસંવાદ જોઈને જિને-

શિરના વચનમાં અમારું મન રંજિત થાય છે.

આ પ્રમાણે સમ્યક્ત્વનું સ્વરૂપ કહેલ છે, તે કહેનાર રાગદ્વેષ દૂર કરનારો થાય છે તે વતાવે છે.

જહા પુણસ. વિગેરે.

તીર્થંકર, ગણધર, આચાર્ય વિગેરે જે પ્રકારે ઇન્દ્ર ચક્રવર્તી માંડલીક રાજા વિગેરે પુન્યવાન—જીવને ઉપદેશ કરે છે. તેજ પ્રમાણે

કઠીયારા વિગેરે તુચ્છ જીવોને પણ ઉપદેશ કરે છે. (વંત્રમાં તેમનો સમભાવ છે,) અથવા પૂર્ણ તે જાતિ, કુલ, રૂપ, વિગેરેથી પુન્યવાન

હે, અને નીચ જાતિ કુરુપવાળો તે તુચ્છ છે, અથવા, વિજ્ઞાનવાળો પૂર્ણ તથા, અન્ય સામાન્ય બુદ્ધિવાળો તુચ્છ છે, તે દરેકને ઉત્તમ

પુરુષો સમાનભાવે ઉપદેશ કરે છે. કહું છે કે:—

“જ્ઞાનૈશ્વર્યધનોપેતો, જાત્યન્વય વલ્લાન્વિતઃ । તેજસ્વી મતિમાન્ સ્થ્યાતઃ પૂર્ણસ્તુચ્છા વિપર્યયાત્ ॥૧૧”

ज्ञान, ऐश्वर्य अने धनवाळो, तथा जातिवंश, तथा बळवाळो तेजस्वी, बुद्धिमान प्रख्यात ए गुणवाळो पूर्ण कहेवाय; अने तेथी रहित ते तुच्छ कहेवाय. आनो परमार्थ आ छे के, साधुओ, भिक्षुक विगोरेने तेना कल्याण माटे स्वार्थ राख्या चिना उपदेश करे छे. तेज प्रमाणे चक्रवर्ती विगोरेने पण उपदेश करे छे.

अथवा चक्रवर्ती विगोरेने संसारथी पार उतारवाना हेतुने जेवा आदर्शही कहे छे, तेज प्रमाणे भीक्षुकने पण कहे छे. आ वा-
क्यथी साधुमां 'निरीहता' (निसृहता) बतावी.

पण एवो नियम नथी के, वधाने एक सरस्वीरीते कहेबुं; पण जेम जेने बोध लागे तेम तेने कहेबुं; एदळे, बुद्धिमानने सम-
जावबुं होय तो सूक्ष्म बात कहेवी; अने सामान्य बुद्धिवाळाने सादी बात कहेवी; तथा राजाने कहेतां तेना अभिप्रायने अनुसरीने
कहेबुं; एदळे, उपदेशके विचारबुं के, आ राजा अन्यदर्शनना आग्रहवाळो छे के, मध्यस्थ बुद्धिवाळो छे के संशयवाळो छे ? के,
संशयरहित छे ? तथा आग्रहवाळो छतां, कुतीर्थिओए कदाग्रहवाळो वनाव्यो छे के, पोते कदाग्रही छे ? जो एवो होय; तो, तेने आ
प्रमाणे कहेतो क्रोध थाय. जेमके:—

“दशसूना समश्चक्रौ, दशचक्रिसमो ध्वजः । दशध्वजासमो वैश्या, दशवैश्या समो नृपः ॥१॥”

दशसूना समान चक्री छे, अने दशचक्री समान ध्वजा छे. अने दशध्वजा समान वैश्या छे. अने दश वैश्या जेवो एक राजा छे.
माटे (आबुं न बोलबुं.) तेनी भक्ति रूद्र, विगोरे देवता उपर होय; तो, तेबुं चरित्र कहेतां तेने तेना पापना उदयथी सत्य

कहेतां पण, मोह उत्पन्न थतां द्वेषी थाय; अने द्वेषी थइने भुं करे ते पण कहे छे:—

अवि य हणे अणाइयमाणे, इर्थंषि जाण सेयंति नरिथि, केयं पुरिसे कं च नए ?
एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडियमोयए, उड्डं अहं तिरियं दिसासु से सबओ सब
परिज्ञाचारी, न लिट्पई छण पएण वीरे से मेहावी अणुपाथण खे यन्ने जे य बन्ध
पसुबख मन्नेसी कुसले पण नो बद्धो नो सुक्के ॥ (सू० १०२)

क्रोधायमान थयल्लो राजा वाचाथी अपमान करे; अने तेनुं गाथुं न गावाथी वखते मारवा पण तैयार थाय; एटले, लाकडी-
चाबकाथी साधुने मारे कहुं छे के:—

‘नरथे व य निद्ववणं बंधण निब्भुभण कडगमहो वा । निविसयं व नरिंदो करेज्ज संघंषि सो कुद्धो ।१।’

क्रोधायमान थयल्लो निष्ठापन करे; बंधन करे; देशनिकाल करे; सेनापासे मार मरावे; अथवा, पोतानां राज्यमां आवतां बंध
करे अथवा संघने पण दुःख आपे; ते प्रमाणे, तच्चनिक (विनोरे नो) उपासक-नंदवळनी कथाथी एटले, बुद्धनी उत्पत्तिना कथा-
नकथी; भागवत मतनो भल्लिग्राहनां दृष्टांतथी रौद्रमतनो पेढालनो पुत्र सत्यकी उमाना दृष्टांतने सांभळवथी द्वेषी थाय छे. (बीजा
मतना गुणो न जोतां इषारूपे कथाओ जोडी काढेल छे, तेवी कथा कहेतां बीजा मतवाळाने क्रोध थाय छे. माटे, वने त्यांसुथी

શુભપાસિનીજ કથા કરવી;) અથવા ખીલારી કાળોકુટ (શાયપગની સ્તોત્રવાક્યો) તેને ઉદ્દેશીને ધર્મફલના ઉપદેશરૂપ—કથા કહેતાં તેને ક્રોધ થાય. આ પ્રમાણે, વિધિ ન જાણનારો કથા કહે; તો, તેને વાધા (પીડા) થાય છે, તથા તેમાં પરલોકનો પણ કંઈ લાભ નથી વિગેરે જાણવું, જોકે, મુમુક્ષુને ધર્મકથાપરના હિત માટે કહેતાં પુન્ય છે, પણ જો, કહેનાર સમાને ન ઓલવે; અને દ્રેષદું વચન બોલે; તો, તેને શાસ્ત્રકારે પુન્ય વતાવ્યું નથી.

અથવા રાજાનું અપમાન થતાં ધર્મકથા કહેનાર સાથુને ઠણે; ણટલે, રાજા પશુવધનો યજ્ઞ કરે; તથા, શ્રાદ્ધ, હોમ, વિગેરે કરે; તેમાં, ધર્મ માનતો હોય; તે સમયે ધર્મકથા કહેનાર સાથુ રાજાના સાંભલતાં કહે કે:—તેમાં ધર્મ નથી; તો, રાજા ક્રોધી થઈને દુઃસ્વ આપે. અથવા, જે જે અવિધિય કહે; તેમાં પણ સાથુને શ્રેય નથી. તે વતાવે છે.

સાક્ષર પંદિતની સમાયાં પક્ષહેતુ દૃષ્ટાંત વિગેરે હોદીને પ્રાકૃત ભાષામાં કહેવું તે અનુચિત છે, તથા મૂર્ખાની સમાયાં તત્ત્વ સમ-જાવવા જવું; તે પણ અનુચિત છે. ણ પ્રમાણે કંઈપણ અનુચિત કાર્ય કરતો સાથુ જૈનધર્મની શીલનાજ કરે છે, અને તેને પાપનોજ વન્ય છે, તેનું કલ્યાણ થવાનું નથી; માટે, તેવા વિધિ ન જાણનારા પુરુષે મૌન ધારણ કરવું વધારે સારું છે. (કે બીજાને ક્રોધ ઉત્પન્ન કરી અશુભકર્મ પોતે ન વાંચે.) કહું છે કે:—

‘સાવજ્ઞાવજ્ઞાણં વચણાણં જો ન યાણદ્ વિસેસં । વુતુંપિ તસ્સ ન સ્વમં, કિમંંગ પુણ દેસણં કાડં ॥૧૧૧’
જેને સાવધ અને નિર્વંધ વચનનું જાણપણું નથી; તેને બોલવાનો પણ અધિકાર નથી. તો, તેને ઉપદેશ આપવાનો અધિકાર

क्यांथी होय ? आ प्रमाणे छे, तो, धर्मकथा केवीरीते करवी ते कहै छे:—जे, पीतानी इन्द्रियोने वशमां राखनारो छे, अने विषय विपनो वेरी छे, संसारथी उद्वेग मनवाळो छे, अने वैराग्यथी जेहुं हृदय खंचायछुं छे, तेवो माणस धर्मने पूछे; तो, ते समये आचार्य विगोरे धर्मकथा कहेंनारे विचारवुं के, आ पुरुष केवो छे ? मिथ्यादृष्टि छे के भद्रक छे ? अथवा, केवा आशयथी पूछे छे ? एनो इष्ट-देव कयो छे ? एणे कयो मत मान्यो छे ? विगोरे विचारीने योग्य उत्तर समय उचित कहेवो ते बतावे छे.

एनो सार आ छे के धर्मकथानी विधि जाणनारे पीते आत्ममां परिपूर्ण होय ते सांभळनारनो विचार करे के द्रव्यथी ते केवो छे. तथा आ क्षेत्र केहुं छे ? जेमां तच्चनिक भागवत अथवा बीजा मतवाळा अथवा पतित साधुए अथवा उत्कृष्ट साधुओए आ क्षेत्रने केवा रूपमां वनावुं छे, अने काल ते सुकाल छे के दुकाल छे. अथवा वस्तु मळे तेम छे के नहीं. अने भावथी जेहुं के पूछनार माणस मध्यस्थ भाववाळो छे. के रानी द्वेषी छे, विगोरे विचारीने जेम ते बोध पासे, तेवी धर्मकथा करवी. उपरना गुणवाळो माणस धर्मकथा करवाने योग्य छे. बीजाने अधिकार नथी. कहुं छे के—

‘जो हेउवायपवखंमि, हेउओ आगमनिम आगमिओ । सो ससमयपणवओ सिद्धंत विराहको अणणो ।१।’

जे हेतुवाद पक्षमां हेतुने बतावनार छे. आगममां आगम बतावनार छे. ते स्वसमयनो प्रज्ञापक (उन्नति करनार) अने बीजो सिद्धांतनो विराधक छे. (जो पूछनार हेतु मागे तो हेतु बतावे अने युक्तिथी सिद्ध करे अने आगम प्रमाण मागे तो आगम बतावे ते वनेनो जाणनारो बीजाने धर्मकथा कहै ते योग्य छे.)

जे उपर प्रमाणे धर्मकथानी विधिने जाणनारो. छे. ते प्रशस्त छे, अने जे पुन्यवान अने पुन्यहिनने धर्म कथापां समदृष्टिना विधिण जाणे छे. तथा सांभळनारनो विवेक करी शके तेवा गुणवाळो कर्मने विदारण करनार वीर साधु, उत्तम पुरुषोथी वलाणा- एलो छे. वकी तेनुं वर्णन करे छे.

‘जे वद्धे’ विगेरे.

ते आठ प्रकारना कर्मवडे अथवा स्नेह रूप सांकळ विगेरेथी बंधाएला प्राणीओने धर्मकथा संभळाववा, विगेरेथी सुकावनारो थाय तेज तीर्थकर गणधर अथवा आचार्य विगेरे उपर कहेली धर्मकथानी विधि जाणनारो छे. ते कये स्थाने रहेला जीवोने सुकावे छे? ते कहे छे. उंचे रहेला ज्योतिषी विगेरेने तथा नीचे भवनपति विगेरेने तथा तिर्यंच तथा मनुष्यने बोध आपे छे; (देवताना जीवो सम्यक्त्व पाये अने तिर्यंच पंचेंद्रिय चारित्रनो थोडोभाग अने मनुष्य पूर्ण चारित्र पण पाये.) वकी ते वीर पुरुष वीजाने सुकावनारो हमेशां बने परिज्ञाय पोते चाले छे, एटले सर्वोत्तम ज्ञाने युक्त छे, अने सर्व संवर चारित्र पाळनार छे, ते पोते जे गुणोने मेळवे छे ते कहे छे:—

पोते हिंसाथी थतां पापे लेपातो नथी; (एटले कोइनी हिंसा करतो नथी.) (क्षणनो अर्थ हिंसा कर्यां छे,) ते मेघावी (बुद्धिमान) पण छे, एटले, जेनावडे जीवो चार गतिमां भमे ते अण (कर्म) छे, तेनो यात करे; ते स्वेदने जाणनारो निपुण मुनि छे. एटले ते कर्म क्षय करवानो उद्यम करनारा मोक्षाभिलाषीओने कर्म क्षय करवानी विधि बतावनार पण छे, ते मेघावी, कुशळ, वीर मुनि छे,

तथा, जे प्रकृति, स्थिति, रस, प्रदेश. एम चार प्रकारनां बन्धनाथी मोक्ष करावे; अथवा तेनो उपाय बतावे; ते 'अन्वेषि' पण छे, (ते पूर्वनां वाक्य साथे जोडवुं;) एटले, जे जीव हत्याने दूर करे; खेदने जाणे; ते मूळ उत्तर प्रकृतिना भेदोवदे भिन्न, तथा योगनिमित्ते आवती कर्मप्रकृति, तथा कषाय-स्थितिवाळी कर्मनी बन्धाती अवस्थाने जाणे छे. बांधवुं; स्पर्श करवो; निधत्त करवुं; निकाचित करवुं. आ कर्म परिणामने आश्रयी बन्धाय छे, अने सारा भावथी तेनो नाश थाय छे, ए बन्धने ते जाणे छे. पश्च—आ फरीथी केप कहुं ? उत्तरः—पुनरुक्त दोष लागतो नथी; कारणके, एनावदे कर्म छोडवावुं बतावुं छे.

पश्च—उपर बतावेला गुणोवाळो साधु छद्मस्थ कहेवो के, केवळी कहेवो ? उत्तरः—उपरनां विशेषण केवळी साधुने न पटे; माटे, छद्मस्थ लेवो; तो केवळीनी श्री वात. पश्चः—कुशल साधुना केवा गुणो होवा जोइए ?

उत्तरः—कुशल एटले, जेणे घातिकर्मनो संपूर्ण क्षय कर्यो छे, ते तीर्थकर अथवा, सामान्य केवळी छे.

अने छद्मस्थ—घातिकर्मथी बन्धायलो मोक्षार्थि तथा, तेना उपायने शोधनारो छे, अने केवळी पोते घातिकर्मनो क्षय यवाथी पोते कर्मथी बन्धायलो नथी; पण, अघाति चार कर्म जे भव उपग्रहीक छे, ते तेने होवाथी पोते मुक्त पण नथी; अथवा, तेवा गुणीने छद्मस्थज कहीए छीए. के, 'कुशल' ने, जेणे ज्ञानदर्शन-चारित्र मेळवेळुं छे, तथा मिथ्यात्व, अने बार कषायोनो उपशम करेलो होवाथी; तेने उदयमां न होवाथी ते 'बन्ध' न कहेवाय. आ प्रमाणे, गुणवान साधु कुशल होय; पळी, ते केवळी होय के, छद्मस्थ होय; पण ते साधुना आचारने पाळतो होवो जोइए. जेम साधु माटे कहुं; तेम, बीजा मोक्षाभिलाषीए पण बर्त्तवुं ते बतावे छे.

से जं च आरभे जं नारभे, अणारद्धं च न आरभे, छणं छण परिणाय लागसद्धं च सबसो (सू० १०३)

जे संयम अनुष्ठानने संपूर्ण कर्मक्षय माटे आदरे; ते प्रियत्वात् अचिरति विगेरे संसारनां कारणने न आरंभे; एटले, साधुपणुं अपराधे; अने संसारीपणुं छोडे; एटले, अटारे प्रकारनां पापे विगेरे जे एकांतधी दूर करवानां छे, तेवां पापे छोडीने संयम अनुष्ठानने करीने मोक्ष पापे; अने केवळी, अथवा, उत्तम साधुओए जेने अनाचीर्ण कहुं; ते पोते न करे; अने मोक्ष अनुष्ठान करे. वळी, जिनेश्वरे त्यागवा योग्य कहुं; तेमां मुख्यत्वे हिंसा छे. ते हिंसानां कारणने जाणीने साधु तेने छोडे. इ-परिश्राए जाणे; अने प्रत्याख्यान परिश्राए त्यागे; अथवा, क्षणतो अर्थ हिंसाने बदले समय लक्ष्य; तो समयने जाणीने ते काळे ते काम करे.

वळी लोक जे गृहस्थो छे, तेमने सुखनी अभिलाषा छे, अथवा, ते कारणे तेने परिग्रहनी संज्ञा छे, तेवी संसारी-वासनाने साधु छोडे, ते मन, वचन, कायाधी पोते न करे, न करावे; न अनुमोदे; तेथी कहुं केः—उपरना गुणवाळो धर्मकथा-विधि जानारो, बन्धायला ने मुकावनारो कर्मने हेदवामां कुशल, अने बन्ध-मोक्षनी खोळ करनारो सुमार्गे चालनारो, कुमार्गेने समजी अटार पापने रोकनारो, संसारी-लोकनी स्थिति चाणारो जे मुनि छे, तेने शुं थाय ते बतावे छे.

उद्देशो पासगस्स नरिथ, बाले पुणे निहे कामसमणुन्ने असमिय दुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव
आवद्धं अणुपरियद्धं, (सू० १०४) त्तिवेमि लोकविजयाध्ययनम ॥२॥

जे परमार्थी जोतारो छे, तेने बीजा उद्देशाथी लइने आ उद्देशाना छेडा सुधी जे दीष बताव्या; जेनाथी नारकादि गति भोगववी पढे; ते उद्देशो छे, ते गीतार्थ साधुने न होय; तथा वाळ (मूर्ख) संसार भेमी होय; ते स्नेह करीने कामनी इच्छाथी दुःखना आवर्त्तमांज वारंवार वर्त्ते छे. एवुं हुं कहुं छुं. (टीकाना श्लोक २५०० छे.) छठो उद्देशो समाप्त थयो. सूत्र अनुगम तथा सूत्रालापक निष्पन्ननिक्षेपो सूत्रने स्पर्श करनारी निर्युक्ति सहित पूरो थयो नयोतुं वर्णन बीजे स्यळे कहुं छे. अही संक्षेपमां ज्ञान क्रियानुं पथानपणुं जाणवुं. तेमां पण पोते ज्ञानवाळो ज्ञानने एकांत रेंचे अने क्रिया उठावे अथवा क्रियावाळो क्रियाने पकडी राखे तो ते मिश्यात्वी छे. शिष्यने एम कहुं के तमार वनेने अपेक्षापूर्वक समजीने वनेने आराधवां ॐ शांति

लोकविजयनामतुं वीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

इतिश्री आचारान्नसूत्रे द्वितीयो भाग समाप्तः ॥श्रीरस्तु॥

समाप्त.

॥ इति श्रीआचारान्तसुत्रेद्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेळुं अने श्री श्रुतकेवलीभद्रबाहुरचित निर्युक्तिसहित)

। आचाराङ्गसूत्रम् ॥ भाग त्रीजो

(मूळ अने शीलाङ्गाचार्ये रचेळी टीकाना भाषांतरसहित)



जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ श्यामजीना स्मरणार्थे

दुपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित हीरालाल हंसराज (जामनगरवाला)

१९८९

पडतर किंमत रु. २-८-०

श्रीजैनभास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छापुं जामनगर.

पति २००



॥श्रीजिनाय नमः॥

॥ श्रीआचार्यज्ञसूत्रम् ॥

(मूल अने शिलांकाचार्ये रचेली टीकातुं भाषांतर)

भाग त्रीजो

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

(द्वितीयाण्य नामनुं त्रीजुं अध्ययन.)

वीजुं अध्ययन कहुं हवे त्रीजुं कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छेः—पूर्वे शस्त्रपरिज्ञा नामना पहेला अध्ययनमां आ अध्ययननो अर्थधिकार कहा छे. के शीत, अने गरमीनो अनुकूल के प्रतिकूल (सुख-दुःख) परिषद आवे; तो, समभावे सहन करवो. ते हवे कहे छेः—

अध्ययननो संबंध शस्त्रपरिज्ञामां कहेल महाव्रतने धारण करेला; अने, लोकविजय नामना अध्ययनमां बतावेल संयम पाळनारा

तथा कषाय विगेरेने जीतनारा मोक्षाभिलाषीसाधुने कोइ वखते अंतुकुळ के पतिकुळ परिषह आवे छे, ते वखते मन निर्मळ राखीने तेने समभावे सहन करावा. ए प्रमाणे, संबंधथी आ त्रीजुं अध्ययन बताव्युं छे. एता उपक्रम विगेरे चार अनुयोगद्वार थाय छे. तेमां उपक्रममां अर्थाधिकार बे प्रकारे छे, तेमां अध्ययननो अर्थाधिकार पूर्व्वे कहां छे. अने उद्देशनो अर्थाधिकार हवे निर्युक्तिकार बतावे छे. पढमे सुत्ता अस्संजयत्ति. १? विइए दुह अणुहवंति. १। तइए न हु दुक्खेणं, अकरण याए व समणुत्ति. ११८ उइसंमि चउत्थे, अहिगारो उ वमणं कसायाणं। पाव विरईओ विउणो, उ संजसो एरथ सुक्खुत्ति ॥११९॥

(१) पहेला उद्देशामां कहुं छे के:—जे भावनिद्रामां सुत्ता छे, ते सारा विवेकथी रहित छे.

पश्च:—ते क्या छे? उत्तर:—जे गृहस्थो छे ते.

ते भावथी सुतेलाओना दोष कहे छे. तथा जे भावथी जागता छे, तेना गुणोने बतावे छे. सूत्र 'जरामच्चुं विगेरे.

(२) बीजा उद्देशामां जे गृहस्थो भावनिद्रामां सुतेला छे, तेमने यतां दुःखो बतावे छे. ते सूत्र 'कामेसु गिद्धा'

त्रीजामां कहुं छे के:—फक्त दुःख सहन करवाथी न साधु न कहेवाय पण जो, संयमअनुष्ठान करे; तो ते साधु छे नहीतो, ते साधु नहीं. ते सूत्र कहे छे. 'सहिए दुक्ख'

चोथा उद्देशामां कषायोनुं वमन करवुं. एटले न करावा; अने बाकीनां पापो छोडवां. ते पंडित साधुनुं संयम छे, अने पथम क्रोधथी लइने लोभ सुधी कषायो दूर थवाथी क्षपकश्रेणिना क्रमथी केवलज्ञान प्राप्त थाय छे, अने अयातिकर्म दूर थवाथी आठे

कर्मो नो नाश भतां मोक्ष थाय छे, ते बे गाथामां बतावुं छे. नामनिष्पन्ननिक्षेपामां 'शीतोष्णीय' अध्ययन छे माटे शीत उष्ण व-
न्नेना निक्षेपा कहे छे:—

नासं ठवणा सायं, द्वाे भावे य होइ नायठवं । एमेव य उणहरसवि, च उविहो होइ निकखेवो नि. गा. १२००।

नाम. स्थापना, द्रव्य अने भाव एम चार प्रकारे निक्षेपा छे. तेमां नाम स्थापना सुगमने छोडी द्रव्य निक्षेपो शीत अने उष्णानो कहे छे.

द्ववे सीथल द्वाे, द्वावुणहं चैव, उणहदठवं तु । भावे उ पुगल्लगुणा जीवसस गुणो अणोगविहो ।२०१।

इ शरीर भव्य शरीर छोडी व्यतिरिक्तमां गुण गुणीना अभेदपणाथी द्रव्य शीत ठंडा गुणथी युक्त द्रव्य, अथवा शीतनुं कारण
जे द्रव्य ते द्रव्यना प्रधानपणाथी ते शीत द्रव्य छे, ते बरफ हिम करा विनोरे छे, एज प्रमाणे उष्णमां गरम पदार्थ लेवा.

भावथी बे प्रकारे छे एटले पुद्गलाश्रयी, तथा जीवाश्रयी-छे, ते गाथाना बे पदमां बतावेळ छे, तेमां पुद्गलाश्रयी ठंडो गुण
गुणना प्रधानपणाने बताववारूपे छे, तेम भाव उष्णमां पण जाणवुं. जीवने आश्रयी शीत अने उष्ण रूपवाळो अनेक प्रकारे गुण
छे. जेप्रके औदयिक विनोरेज भावो छे. तेमां औदयिक ते कर्मना उदयथी पगट थयेळ नारकी विनोरे जीवोने भवना आश्रयी पो-
तानी मेळे कषाय थाय छे ते उष्ण भाव जाणवो. अने औपशमिक ते सात प्रकृतिना उपशमथी उपशम सम्यक्त्व तथा चारित्रि (चारित्रि)
रूप ठंडो भाव छे, तथा क्षायिक भाव पण ठंडो छे. कारणके ते क्षायिक सम्यक्त्व तथा चारित्रि रूपवाळो छे.

अथवा वधा कर्मनो दाह ते (क्षायिकभाव) सिवाय उत्पन्न भतो नथी. माटे ते उष्ण छे. तेज प्रमाणे विवक्षाथी बीजा पण बे

प्रकारे थाय छे (आम बे भाव आत्पा, बाकीनामां पण तेज प्रमाणे जाणवा.)

जीवना आ भवगुणतुं शीतपणुं अने उष्णपणाना रूपतुं वर्णन निर्दुक्तिकार खुलासाथी पोतेज कहे छे.

सीयं परिसहपमायुवसमविरई सुहं चउपहं तु । परीसहतचुज्जमकसाय, सोगाहिवेयारई दुक्खं दारं ।२०२।

भावशीत, ते अहीं जीवना परिणामरूपे ग्रहण करे छे. ते आ परिणाम छे, के संयमपरिणामी न पडतां सायुए सकाम निर्जरामादे परिषदो समभावे सहन करवा, तथा कार्यमां शिथीलता एटले 'विहारमां प्रमाद' न करवो तथा मोहनीय कर्मने तांत करवुं ते सम्यक्त्व. देशविरति तथा सर्व विरति लक्षणवाजो छे अथवा उमजम श्रेणी आश्रयी छे. ते अथवा क्षपक श्रेणी आश्रयी कषाय विगोरेना क्षयरूप छे,

विरति—प्राणातिपात विगोरेथी दूर रहवुं ते विरति छे. एटले ते सत्तर प्रकारनो संयम छे, तथा सुख एटले पूर्वना पुन्यना उदयथी भोगववुं ते छे. आ परिषह विगोरे तथा शीत गरमी वन्नेने गाथाना बे पदमां कहे छे:—

परिषह पूर्वे कहेला स्वरूपवाजा छे; अने तपमां उद्यम करवो; ते तप वार प्रकारतुं छे, ते शक्ति प्रमाणे आचरवुं; तथा क्रोध विगोरे कषायो छे, तथा इष्ट न मळे; अथवा नाश थाय, तेथी शोक थाय; ते आधि छे, तथा स्त्री, पुंष, नहुंसक, एम त्रण वेद छे. अरति एटले, मोहना विपाकथी चित्तमां मलिनता थाय ते छे, तथा रोग विगोरे दुःखो छे. आ परिषह विगोरे पीडाकारक होवाथी आत्मा तपे तेथी उष्ण छे. आ प्रमाणे टुकामां गाथानो अर्थ छे, अने एतुं विशेष वर्णन निर्दुक्तिकार पोते कहे छे:—परिषह,

शीत अने उष्णताना कहा; तेमां मंदबुद्धिवाळाने विचार विना शंका थाय के, उलटुं समजाय; तेथी खुलासो करे छे.

इत्थी सक्रारपरासहो य दो भावसीयला एए । सेसा वीसं उणहा परीसहा हुंनि नायठवा ॥२०३॥

स्त्री—परिसह, अने सत्कार—परिसह, ए वन्ने शीत छे, कारणके, भाव मनने ते गमे छे, बाकीना वीथ परिसह प्रतिकूल दोबाथी ते मनने गमला नथी; भेटे उष्ण छे. अथवा परिसहोतुं शीत—उष्णपणुं बीजी रीते कहे छे:—

जे तिठवरपरिणामा, परिसहा तेभवे उणहाउ । जे मंदपरिणामा परिसहा ते भवे सीया ॥नि. गा. २०४दारं॥

दुःखेकरीने सहन थाय; तेवा तीव्र स्वभाववाला गरम परिसह जाणवा, अने जे मंदपरिणामवाला (सहेलाइथी सहन थाय;) ते शीतपरिसह छे, तेनो खुलासो करे छे के, जे शरीरमां दुःख उत्पन्न करनारा थाय; अने सहेलाइथी सहन न थाय, तथा मनमां खेद करावे; ते तीव्र परिणामवाला दोबाथी उष्ण छे, अने जे परिसह फक्त शरीरने दुःख उत्पन्न करे छे, पण वळवान पुरुषने मननुं दुःख तेमां थतु न होय; ते भावथी मंदपरिणामवाला दोबाथी ते शीत—परिसह छे.

अथवा जे घणा जोरमां परिषह आवे ते उष्ण छे, अने जे शरीर उपर थोडी असर करे; ते शीत—परिसह जाणवा.

हवे, परिषह पळी साथेज शीतपणे जे प्रमादपद लीथुं छे, अने तपश्चर्यामां उग्रम करवो; ते उष्णपणे लीथुं छे. ते वन्नेने नीचली गाथामां कहे छे:—

धस्मंसि जो पमायइ अत्थेवासीअट्टत्ति तं विति । उज्जुतं पुण अन्नं तत्तो उणहंति षं विति ॥नि. २०५॥

ધર્મ તે શ્રમણ ધર્મમાં જે સાધુ પમાદ કરે, પોતાની ક્રિયા ન કરે. અથવા જેનાથી અર્થ સધાય તે ધન ધાન્ય, સોડું વિગેરે મેલવના ઉપાય કરે, તેવાને શીત (ઠંડો) પરિપહ કહે છે, ણ જે સાધુ પમાદ ન કરે અને સંયમમાં ઉચ્ચમ કરે તે ઉષ્ણ પરિપહ કહેવાય છે. (સૂત્રમાં 'ળ' શોભા માટે છે) હવે ઉપશમ પદની વ્યાખ્યા કરે છે.

સીર્દ્ધુઓ પરિનિવૃત્તુઓ ય સંતો તદેવ પપહાણો (લ્હોઓ) । હોઉવસંત કસાઓતેણુ વસંતો ભવે જીવો ૨૦૬

ઉપશમ ગુણ ક્રોધ વિગેરેના ઉદયના અભાવમાં હોય છે, અને તે કષાય અગ્નિ ઠંડો થવાથી આત્મા ઠંડો થાય છે, તથા ક્રોધ વિગેરે અગ્નિની જ્વાલા વુક્ષે ત્યારે તે પરિનિવૃત્ત થાય છે, અને રાગદ્વેપ રૂપ અગ્નિના ઉપશમથી ઉપશાંત છે તથા ક્રોધાદિ પરિતાપ દૂર થવાથી આત્મા આનંદિત થાય છે અને તેજ સુસ્વી છે કારણ કે જેને કષાયો શાંત છે તેજ સુસ્વી છે. અને તેથીજ ઉપશાંત કષાયવાળો આત્મા શીત થાય છે. આ વધાં પદો ઇક અર્થવાલાં છે. ણટલે (૧) શીતીભૂત (૨) પરિનિવૃત્ત (૩) શાંત (૪) પ્રહ્લાદ. આ ઉપશાંત કષાય કહેવાય છે (આ પદોનો અર્થ ક્રોધાદિને શાંત કરવાનો છે)

હવે ચિરતિપદ કહે છે.

અભય કરો જીવાણં સીચઘરો સંજમો ભવહ સીઓ । અસ્સંજમો ય ઉપહો, ણ્સો અન્નોઽવિ પજ્જાઓ ॥૨૦૭॥

જીવોને અભય કરવાનો આચાર તે શીત (સુલ્લ) છે. તેનું ઘર છે, તે, પ્ર. કયું? ઉત્તર. સત્તર પ્રકારનો સંયમ પાલ્લવો તે શીત છે. કારણકે; તેમાં વધાં દુઃસ્વનો હેતુ જે રાગદ્વેપ વિગેરેનાં જોહલાં છે, તે ચિરતિમાં દૂર થાય છે. ણ્થી, ઉલ્લટો અસંયમ તે ડ્રબ્ણ છે.

आ शीत अने ऊष्ण लक्षणरूप—संयम, असंयमनो बीजो पर्याय, सुख दुःखरूप छे. ते विवक्षाना कारणशी शाय छे. तेथी हवे, सुखपददुं विवरण करे छे.

निव्वाणसुहं सायं सोईभूयं पयं अणावाहं । इहमवि जं किंचि सुहं तं सोयं दुक्खमवि उण्हं नि. ॥३०८॥

मोक्षसुखनुं स्वरूप

अहीयां सुखने शीत कहूं छे, अने ते रागद्वेष विगेरेनां वथां जोडकां दूर यवाथी यणुंज अने एकांत बाधारहित लक्षणवाळं निरुपाधिक परमार्थ चिंतामां विचारतां सुक्तिनुं सुख तेज साचुं सुख छे, पण बीजुं नथी. अने ते सुख आठे कर्मनो ताप दूर यवाथी शीत छे. ते निर्वाण सुख वतावे छे, अने निर्वाण ते वधा कर्मनो क्षय जाणवो, अथवा विशिष्ट आकाश प्रदेशवाळं स्थान (सिद्धिस्थान) तेमां (जीव निश्चल पणे) रहेवाथी निर्वाण सुख छे. अने आ वधां पदो एक अर्थवाळां छे. एटले साता शीतीभूत, अनावाधपद ए त्रणेनो अर्थ निर्वाण सुख छे. अने आ संसारमां पण सातावेदनीयना विपाकशी उदयमां आवेळं सुख ते मनने आनंद आपवाथी शीत छे. अने तेथी उलटुं पापथी उदयमां आवेळं दुःख ते उष्ण छे.

हवे कषाय विगेरे पदो करे छे.

डउझइ तिवकसाओ सोगभिभूओ उइन्नवेओ थ । उणहयरो होय तवो कसायमाईवि 'जं' उहइ ॥३०९॥

तीव एटले यणा प्रमाणमां विपाक उदयमां आवतां कषायो जेने उदयमां आव्या होय ते वळे छे. आ कषाय अग्निवाळो जीव

फक्त वळे छे, एटलुंज नहीं पण शोक एटले व्हालांनां वियोगथी उत्पन्न थयेळ शोकथी सूद वनीने शुभ व्यापार (धर्म) ने जे सुले ते पण वळे छे. तथा जेने संसारी सुख भोगववानी इच्छा थइ होय, तेवोपण वळे छे कारण के पुरुष वेदवाळो स्त्रीने इच्छे छे. अने स्त्री पण पुरुषने इच्छे छे, अने नपुंसक तो वंनेने इच्छे छे तेनी प्राप्ति न थाय तो आकांक्षा पुरी न भवाथी ते अरति दाहे वळे छे, अने (च) शब्दथी (शब्द विगेरे पांच इन्द्रियना विषयोनी) इच्छा अने कामनी प्राप्ति न थाय तोपण जीव अरतिना दाहे वळे छे, तेथी आ प्रमाणे कपायो शोक अने वेदनो उदय ए त्रणे जीवने वाळनारा होवाथी ते उष्ण छे. अथवा वयुं मोहनीयकर्म, अथवा आठे प्रकारनुं कर्म उष्ण छे आथी पण वयारे दाहकपणावाळं तप छे ते अइथी गाथामां वतावुं छे, कारण के उष्ण कपायने पण तपावे छे. माटे ते तप उष्णतर छे. सूळ गाथामां कपाय जोडे आदि शब्द छे. तेथी एम जाणवुं के तप कपायने वाळे; तेम शोक अने वेद उदयने पण वाळे छे. आ प्रमाणे अनेक रीते शीत उष्ण वतावी जे अभिप्रायवडे आचार्ये द्रव्यभावथी भेदवाळा परिषह प्रमाद उद्यम विगेरे रूपवाळा शीत उष्ण वतावेळ छे, ते आचार्यना अभिप्रायने हवे प्रगट करे छे.

स्तीउपह्वाससुहृदुहपरीसहकसायवेयसोयसहो । हुज्ज समणो सया उज्जुओ, य तवसंजमोवसमे ॥११०॥

शीत अने उष्ण ए वन्नेनो जे स्पर्श छे, तेने सहन करे; एटले, शीतस्पर्श अने उष्णस्पर्श वरीरे (अधिकपणाभां) लागवाथी जीववेदनाने अनुभवतो होय; हतां आर्तध्यान न करे; एटले, वरीर अने मनने अनुकूल थतां सुख अने विपरित थतां दुःख अनुभवे; तथा परिषह कषायवेद तथा शोक जे टंडी तथा गरमीथी उत्पन्न थाय ते वयाने. सहे छे. आ प्रमाणे ठड अने उष्ण विगेरे

सहीने साधु हंमेशां तप अने संयमना ऊपशममां उद्यमवाळो थाय (अर्थात् गृहस्थ उनाळामां के क्रियाळामां जीवोने दुःखरूपी-पाणी छोटवातुं के, अग्नि वाळवातुं पाप करे छे. तथा हायपीट करे छे, अथवा, वगीचा विगोरेमां जइ वनस्पतिने दुःख आपी पोते सुख मानी अहंकार करे छे तेवुं साधुए न कारहुं; पण सुखदुःखने समभावे सहन करीने समाधिमां रहेवुं.) हवे समाप्त करतां ए टंड तापने वणा प्रयाणमां सहेवां ते बतावे छे.

सीयाणि य उपहाणि य, भिन्नवृणं हृति विनहियवाइ । कामा न सेवियवा, सीओसणिज्जसस निज्जुत्ती २११

परिषह-प्रमाद उपशम-विरति सुखरूप जे पदो पूर्वे टंडपणे बताव्यां; तथा परिषहतप उद्यम-कषाय शोकवेद अरतिरूप पूर्वे उष्णरूपे बताव्यां छे. ते बयाने मोक्षाभिलाषी साधुए सहेवां; पण, ते सुखनो हर्ष, अने दुःखनो शोक न करवो; ते परिषहोने सम्यक् दृष्टि जीव जो कामनी अभिलाषा दूर करे; तो तेनाथी सहन थाय छे, माटे, निर्युक्तिकार कहे छे केः—गमेतेवा परिषह टंड के, उष्णताइना आवे; तोपण, ते कामो (खोटी इच्छाओ) मां चित्त न राखवुं तथा कुमार्गो न जवुं.

आ प्रमाणे, श्रीजा अध्ययननो नामनिष्पन्न निक्षेपो कव्हो. हवे, सूत्र अनुगममां असललित विगोरे गुणवाळुं निर्दोष वचन कहेवुं ते आ छे—
सुत्ता अमुणी सया मुणीणो जागरंति (सूत्र० १०५)

पूर्व सूत्र साथे एतो संबंध बतावे छे, दुःखोना आर्त (चक्रावा) मां जे भमे ते दुःखी छे, एटले आ लोकमां जेओ भाव निद्रामां अज्ञानी जीवो सुताछे. ते दुःखोना चक्रावामां भमवाथी दुःखी छे. कहुं छे केः—

नातः परमहं मन्थे, जगती दुःखकारणम् । यथाऽज्ञान महारोगो, दुरन्तः सर्वदेहिनाम् ॥१॥

आ जगतमां जे अज्ञानरूपी महारोग सर्वे जीवोने दुःखे करीने दूर थाय तेवो असाध्य छे, तेनाथी वीजुं दुःखतुं कारण हुं मानतो नथी, विगेरे छे. अहिंआं सुतेला बे प्रकारना छे, द्रव्यथी अने भावथी तेमां निद्रा प्रमादवाळा द्रव्यथी सुता छे. अने मिथ्यात्व अने अज्ञानरूप महानिद्राथी मूढ वनेला जेओ मिथ्यादृष्टि (मोक्ष मार्गथी विमुख) अमुनि छे. तेओ निरंतर भावथी सुतेला जाणवा, कारणके तेओ (सर्व जीवोने अभय दान आपवा रूप) सम्यकज्ञान तथा चारित्रनी क्रियाथी रहित छे. पण निद्रामां पढेलातुं आ प्रमाणे समजतुं के वरवते मिथ्यादृष्टि होह अने सम्यक् दृष्टि पण होय, आ अमुनि माटे वतावतुं हवे मुनिओतुं वर्णन करे छे. तेओ हंमेआं सुबोधथी युक्त अने मोक्षमार्गथी चलायमान थता नथी पण निरंतर हितने मेळववा अहितने जोडवा. संयम पाळवा प्रयास करे तेथी तेओ जागता छे अने शरीरनी स्वभाविक अशक्तिथी द्रव्य निद्रा तेओने होय (सुवे) तो पण रातना नवथी त्रण वाग्या सुधी शास्त्रमां वतावेळी विधए सुवाथी तथा अल्प निद्राथी तेओ जागताज छे, आज भाव स्वाप (सुतुं) तथा जागरण करतुं ते संबंधी निर्युक्तिकार गाथा कहे छे:—

सुप्ता अमुणिओ तया मुणिओ सुप्ता वि जागरा हुंति । धर्मं पडुच्च एवं निद्रासुत्तेण भद्रयत्वं ॥नि. २१२॥
द्रव्यथी अने भावथी वन्दे प्रकारे सुता छे, तेमां निद्राथी सुतेलातुं वर्णन पळी कहेसे. अने भावथी सुतेलातुं पहेळां कहे छे. जेओ अमुनि (गृहस्थो) मिथ्यात्वथी तथा अज्ञानथी बेराइने हिंसा विगेरे पांच आखव सदा वर्ते छे, तेओ भावथी सुतेला छे. अने

मुनिओंने मिथ्यात्व अज्ञानरूप निद्रा दूर थावथी सम्यक्त्व विगेरेनो बोध पामीने भावथी तेओ जागता छे.

जो के, आचार्यनी आज्ञा लइने, मुनिओ नवथी त्रणसुयो रात्रीना बीजा बीजा पहोरे दीर्घसंयम माटे शरीर आधाररूप होवाथी सुवे; तोपण तेओ सदाए जागताज छे. आ प्रमाणे धर्मने आश्रयिने सुता अने जागता बताव्या. हवे, द्रव्यनिद्रायां सुतेलायां भजना जाणवी; एटले, तेमनायां धर्म होय अथवा न पण होय,

एटले जो भावथी जागे; अने निद्राथी आंखो बेरावाथी सुवे तोपण तेने धर्म छे, अने भावथी जागतो होय; पण निद्रा अने प्रमादयां तेनुं ध्यान होयतो, तेने न पग होय; पण जे द्रव्यभाव बनेयां सुता छे, तेने न होय; एम भजनानो अर्थ छे.

प्रश्नः—द्रव्यथी सुतेलाने धर्म केम न होय ?

उत्तरः—द्रव्यथी सुतेलाने निद्रा होय छे, ते निद्रा दुःखेथी दूर थाय छे, कारणके, स्त्यानर्द्धि (शीणर्द्धि) त्रिकला उदययां सम्यक्त्वनी प्राप्ति मोक्षयां जनारा भवसिद्धि जीवोने पण थती नथी; अने तेनो बंध मिथ्यादृष्टि, अने सास्वादनी साथे अनंतानुबंधी कषायना बंधवाळाने होय छे.

अने तेनो क्षय अने अनिदृष्टि वादर गुणस्थान काळना संख्येय भागोयांनो केटलाक भाग जाय त्यांसुथी होय छे. तेज प्रमाणे निद्रा, अने प्रचलाना उदययां पण पूर्व माफक छे.

बंधनो उपरम (दूर थहुं.) तो, अपूर्व करणकाळना असंख्येय भागना अंतयां थाय छे. पण तेनो क्षय तो, ज्यारे बधा कषायो दूर थाय; तेना द्वीचरम समययां (छेळानो पहेलायां) थाय छे.

अने उदय तो उपशामक, अने उपशांत मोहवाळा मुनिओने पण होय छे. एथी, निद्रा प्रमादने दुरंत कळो छे.

(दर्शनावरणीय कर्मनी नव प्रकृतिमां पांच निद्रा छे, तेमां निद्रा, प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, अने थीणद्धि अनुक्रमे प्रमाणमां वधारे निद्रा छे, तेतुं वर्णान कर्मग्रंथमां छे, त्यांथी जावुं. अहीं एटळुं कहेवातुं छे के, परमार्थ (मोक्षतुं) लक्ष राखतुं; अने वने त्यांसुथी अल्प निद्रा करवी.)

अने द्रव्यथी निद्रासां सुतेलो दुःख पामे छे. (जेमके, उंघणसी माणस घरमां आग लागतां बळीजाय छे, घरमांथी धन चो-
राइ जाय छे.) तेज प्रमाणे भावथी सुतेला पण दुःख पामे छे ते वतावे छे.

जह सुत्त मत्त सुच्छिय असहीणो पावए बहुं दुक्खं । तिउवं अपडियारंपि वट्टमाणो तहा लोगो ॥नि. २१३॥

निद्रार्थी सुतेलो तथा दा० विगेरेना निशाथी गांडो थएलो तथा घणो मार मर्मस्थनमां पडवाथी वेथुद्ध वनेलो तथा वायु विगेरे दोषथी चक्री आवतां परवश थएलो जीव बहु दुःख पामे छे जतां पोते ते वखते वदलो के उपाय लइ शकतो नथी तेज प्रमाणे भाव निद्रा एटळे मिथ्यात्वअविरति, प्रमाद, कषाय विगेरेमां सुतेलो जीव समूह नरक विगेरेना भवनां दुःखो भोगवे छे, हवे बीजी सीते उलटा दृष्टांतथी उपदेश देवा कहे छे:—

एसेव य उवएसो पदित्त पयलाय पंधमार्हसुं । अणुहवइ जह सचेओ सुहाइं समणाऽवि तहचेव ॥नि. २१४॥

उपर कहेलो उपदेश जे विवेक अने अविवेक संबंधी थाय छे, ते वतावे छे जेमके सचेतन (बुद्धिमान) विवेकी आग लागतां

तेमांशी नीकळीने सुखी थाय छे अने विद्ववाळा अने विद्वरहित एवा मार्गनुं ज्ञान जेने छे ते सुखेथी पार पहींचे छे. आदि शब्दथी जाणवुं के चोर विगेरेना भवमां विवेकी माणस सुखथी ते विद्वने दूर करी सुखी थाय छे. तेज प्रमाणे साधु पण भावथी सदा विवेकी होवाथी जागतो रहिने वधां कल्याणने मेळवे छे सुता अने जागता संबंधी गथाओ कहे छे:—

जागरह णरा णिञ्चं जागरमाणस्स वड्डए बुद्धी । जो सुअइ नसो धणो जो जग्गइ सो सया धन्नो ॥१॥

जागता माणसेनी बुद्धि वये छे माटे हे माणसो ! तमे जागो (अल्पनिद्रा करो.) जे सुवे छे, ते धन्यवादाने योग्य नथी, पण जागतो माणस धन्यवादाने योग्य छे.

सुअइ सुअं तस्स सुअं संकियखलियं भवे पमत्तस्स । जागरमाणस्स सुअं थिरपरिचिअमव्यमत्तस्स ॥२॥

जे वणुं सुवे छे तेने प्रमादथी तेनुं भणेछं संकावाळं तथा भुलोवाळं थाय छे, पण अप्रमादी जागता साधुनुं भणेछं स्थिर परिचयवाळं (भुल वगारनुं) रहे छे.

नालस्सेण समं सुबखं, न विजा सह निदया । नवेरमं पमाएणं, नारंभेण दयाह्यया ॥३॥

आळसनी साथे सुख नथी. (आळसुने सुख न होय;) तथा निद्रानी साथे विद्या न होय; प्रमादनी साथे वैराग्य न होय; तथा आरंभ करनारने दया न होय.

जागरिआ धम्मसीणं, आहम्मसीणं तु सुत्तया सेआ । वच्छाहिव भगिणाए अकहिंसु जिणो जवंतीए ॥४॥

ધર્મીજીવોને જાગવું સારું, અધર્મીને સુતું સારું. ઇવું ભગવાન્ મહાચીરે વત્સ દેશના રાજાની વેન જયંતી શ્રાવિકાને કહું છે:—
સુયદ્ધ ય અયગરમ્બુઝો સુઅંપિ સે નાસદ્દે અમયમ્બુઝં । હોહિદ્ધ ગોણભમ્બુઝો નદ્દંમિ સુણ્ અમયમ્બુણ્ ॥૫॥

જે અજગરની માફક સુવે છે, તેનું અમૃત જેવું મળેછું નાશ થાય છે, તથા તેને અમૃત જેવું મળેછું નાશ થતાં મુહુદાલ-વલ્કડીયા માફક તેનું અપમાન થાય છે.

આ પ્રમાણે દર્શનાવરણીય કર્મના હૃદયથી કોઈક વચ્ચત કોઈ સાધુ સુતો હોય; પણ મોક્ષાખિલાષી, અને યતનાવાલો હોવાથી; તથા તેણે દર્શન મોહનીયરુપ-નિદ્રા દૂર કરવાથી તે જાગતોજ છે, પણ જોઓ, અજ્ઞાનના હૃદયથી સુતેલા છે, તે અજ્ઞાનીજ સ્વરા સુતેલા છે, અને અજ્ઞાન તે મહાદુઃખ છે, અને તે દુઃખ જંતુઓને અહિતકારી છે, તે સૂત્રકાર વતાવે છે.

લોચંસિ જાણ અહિયાય દુવચ્ચં, સમયં લોગસ્સ જાણિત્તા, હરથ સરથોવરણ્, જરિસ્સમે સદ્દા ય રૂવા ય રસા ય ગંધા ય ફાસા ય સ્વખિસમન્નાગયા મવંતિ (સૂત્ર ૧૦૬)

હ જીવનીકાય સંબંધી તું દુઃખને જાણ; દૃઢલે અજ્ઞાન અથવા, મોહ (મૂઢપણું) તે જીવને નરકાદિ ભવમાં દુઃખ આપનારું અ-
 હિતને માટે છે, અથવા તેનું અજ્ઞાન, તેને અહીંયાજ બંધને માટે, વધને માટે, તથા શરીર, અને મન સંબંધી પીડાને માટે થાય છે.
 (અર્થાત્ ગુરુ શિષ્યને કહે છે કે:—આ સંસારમાં અજ્ઞાની જીવો પોતે અજ્ઞાનદશામાં પાપો કરીને નરક વિગેરેમાં જાય છે, અને ત્યાં તથા, અહીં અનેક પ્રકારનાં દુઃખ સહે છે,) તે તું ધ્યાનમાં રાખ; અને અજ્ઞાનને હોદ. હવે ઇમ્ જાણવાનું ફલ વતાવે છે.

द्रव्य अने भाव ए वे प्रकारनी निद्राथी सुतेला जीवो अहानी छे. तेमने यता दुःखथी दूर रहेवुं ए ज्ञानहुं फळ छे.

वळी समय एटले आचारारसूत्रमां वतावेळ अंतुष्टान (संयम) ने जाणीने अथवा लोक एटले जीवसमूहने जाणीने तेने जे शस्त्रोथी दुःख थाय ते शस्त्र ज्ञानी साधुए न जणाववा (ज्ञान भणवानुं फळ ए छे के कोइ पण जीवने दुःख न देवुं) आ प्रमाणे पहेलांना सूत्र साथे बीजा सूत्रनो संबन्ध छे. कारण के संसारी जीवो भोगना अभिलाषीपणाथी जीवहिंसा विगेरे कषाय हेतुवाळं कर्म बांधीने नरक विगेरे पीडाना स्थानमां उत्पन्न थाय छे. त्यांथी कोइ वखते नीकळीने बधा दुःखोहुं नाश करनार धर्महुं कारण जेमां छे तेहुं आर्यक्षेत्र विगेरेमां मनुष्य जन्म पामे छे. वळी त्यां पण (धर्म पाळवाने बदले) महा मोहना कारणे मोहित मति-वाळो बनी (इन्द्रियोना स्वादने माटे) एयां एवां कार्य करे छे के जेने लीधे ते नीचेनीचे (नारकीमां) जाय छे, पण संसारमांथी पार पर्वोचतो नथी (आहुं लोकोहुं वर्तन जाणीने तेहुं तमार न करहुं.) अथवा समभाव एटले समता (समयनो अर्थ समता लीधो) छे तेने जाणीने बधा जीवो उपर एटले पोताना आत्मा बरोबर परने जाणीने अथवा शत्रु मित्रने समभावे जाणीने तेमना उपर राग द्वेष हुं न कर, अथवा बधा जीवो एकेन्द्रियथी पंचेन्द्रिय शुधी पोताना उत्पन्न थवाना स्थानमां रमवानी इच्छावाळा छे, मरणथी दरे छे, सुखना चाहक छे. दुःखना द्वेषी छे आहुं तेओहुं समानपणुं जाणीने साधुए शुं करहुं ते कहे छे, छ जीवनीकायना द्रव्य भावना भेदवाळा शस्त्रथी दूर रहेवा धर्म जागरणथी जागतो रहे, अथवा जेजे संयमनां शस्त्रो छे ते ते आस्रवद्वार प्राणालिपात विगेरे छे. अथवा शब्द विगेरे पांच प्रकारना काम गुणो (विषयप्रेम) छे. तेनाथी जे दूर रहे ते सुनि छे. तेज सूत्रकार कहे छे के जे सुनिने पोताना आत्माना अनुभवेला बीजा बधा प्राणी संबन्धी इन्द्रियोनी प्रवृत्तिना विषयरूप शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श ते सुदर अने

विरुप एष वे भेद हे, ते समीप आवतां अनुकूल वशाला, अने पतिकूल ते अणामता लागे हे, तेवुं जे मुनि जाणे ते लोकने जाणे हे. तेनो अर्थ आ हे केः—मुनिए तेवा विषयो प्राप्त थाय; तोपण अनुकूलमां राग 'न' करवो; अने पतिकूलमां द्वेष न करवो; तेज खरीरीते तेओतुं अभिसमन्वा गमन (जाणवापणुं) हे, पण वीळुं नथी. (आ संसारमां मुनिने विहार विगेरेमां पुण्योदयथी मधुर अवाज, सुंदर देखाव, रमणीय सुगंधी खटरस—भोजन, तथा कोमळ स्पर्श विगेरे प्राप्त थाय हे, तथा पापना उदयथी तेथी उलडुं थाय हे. तेवा सपयमां संसारी—जीवो हर्षखेद करे हे, तेम मुनिए न करवो.)

अथवा आलोकमांज शब्द विगेरे विषयो प्राणीओने दुःखने माटे थाय हे, तो परलोकतुं तो, शुं कहेवुं? कतुं हे केः—

उकंघ-रक्तः शब्दे हरिणः स्पर्शो नागो रसे च वारिचरः । कृपणपतङ्गो रूपे भुजगो गन्धे ननु विनष्टः ॥१॥

हरिण शब्दमां रक्त थयलो, हाथी स्पर्शमां, माळळुं रसमां, अने रूपमां गरीब पतंगीयुं, तथा सुगंधीमां साप, (अथवा भमरो) खरेखर, नाश पाम्या हे,

पञ्चसु रक्ताः पञ्च विनष्टा यत्रायहीतपरमार्थाः । एकः पञ्चसु रक्तः प्रयाति भस्मान्ततामबुधः ॥१॥

आ प्रमाणे, पांच इन्द्रियोमांथी एकमां रक्त थयेला परमार्थ न जाणनारा ते, पांचे अहीयां नाश पाम्या हे, तेम मूर्ख माणस एकलो पांचेमां रक्त थतां तेनो नाश थाय हे. अथवा, पुष्पशालथी शब्दमां भद्रा नाश पामी अर्जुन चोररुप जोवा जतां नाश पाम्यो; गंधमां गंध प्रियकुमार नाश पाम्यो; रसमां सौदास, अने स्पर्शमां सत्यकि विद्याधर, अथवा सुकुमारीकानो पति ललितांगनाश पाम्यो;

अने तेथोने परभवमां नरक विगेरे दुःख भोगववानो भय बाकी रहे छे. आ प्रमाणे गायन विगेरे बन्ने लोकमां दुःख आपनारा जाणीने जे सुनि तजे, ते केवा गुणो मेळवे ते कहे छे:—

से आयवं नाणवं वेयवं थंसवं बंभवं पद्माणेहिं परियाणइ लोयं, सुणिति वुच्चे, धम्मविउ

उउजू आवइसोए संगमभिजाणइ (सू० १०७)

जे सुनि महामांहनिद्रामां सुतेळा लोकाने अहितने माटे थहुं दुःख जाणे; ते लोक समयदर्शी छे, ते शक्यथी दूर रहीने मथुर गायन विगेरे पांच कामगुणो एकलाज दुःखना हेतुओ तरीके ज्ञ-परिज्ञावडे जाणे छे, तथा मत्याख्यान परिज्ञावडे त्याणे छे, ते मोक्षा-भिलाषी सुनि छे, अने ते आत्माने जाणनारो छे. एटले, ज्ञानादिक गुणवाळो आत्मा तेणे मेळव्यो; ते आत्मावान छे, कारणके, शब्दादि विषय त्यागवाथी एणे आत्माहुं रक्षण कर्युं छे, जो, तेम रक्षण न कर्युं होत; तो, पोतानां पापथी नारकी, तथा एकेन्द्रिय विगेरेमां उत्पन्न थतां आत्माहुं कार्य मोक्षमां जवाहुं न करवाथी तेनो आत्मा केवी सीते गणाय ? (आत्माहुं कार्य ज्ञानमां रमणता करी; चारित्र पाळी; मोक्षमांज जवाहुं छे, ते जे प्राप्त करे; तेणे आत्मा मेळव्यो जाणवो; अने तेज आत्मावाळो छे.)

अने तेज ज्ञानवान् पण छे. एम जाणवुं; अथवा, बीजां मतिमां आयवी नाणवी छे, तेनो अर्थ आ छे के:—

पोताना आत्माने श्वभ्र (नरक) विगेरेमां पडतां अटकावे; ते आत्मवित् (आत्माज्ञानी) छे तथा पशुए जेवुं पदार्थहुं स्वरूप वताव्युं; तेवुं जाणे, ते ज्ञानवित् (तत्त्वज्ञानी) ते, तथा जीवादि स्वरूपने जेनावडे जाणे; ते वेद एटले, आचाराङ्ग विगेरे सूत्र जा-

णनारी होय; ते वेदवित् कहेबाय हे. तथा, इर्गतिमां पढता जीवने धारी राखनार, तथा स्वर्गमोक्ष अपावनार धर्मने जाणे ते धर्म-वित् हे. ए प्रमाणे, वधां कर्मरूप-मळ, कलंकशी रहित, एतुं योगीतुं सुख ब्रह्मचर्य हे, तेने जाणे ते, ब्रह्मवित् हे, अथवा, अढार प्रकारतुं ब्रह्म हे. आ प्रमाणे, ज्ञान, वेद धर्म, अने ब्रह्मचर्य प्रकर्षशी (उत्कृष्टपणे) जेनावडे ज्ञेय पदार्थो जणाय; ते प्रज्ञानो हे एटले, मति विगेरे पहेला भागमां वतावेल ज्ञानवडे जीवलोक जेवे रूपे रहो हे तेने जाणे; अथवा जीवलोकने रहेवानुं जे स्थान, जे क्षे-त्रलोक हे, तेने पोते जाणे अर्थात् जे शब्दादि विषयोना राग तजे; तेज, ज्ञानि यथावस्थित लोकतुं स्वरूप जाणे हे, अने तेवो ज्ञानी प्रथम वतावेल गुणवाळो (एटले जे आत्मवान् ज्ञानवान वेदवान् धर्मवान् ब्रह्मवान्) थोडा अथवा, समस्त पज्ञानवडे लोकोने जाणे तेने मुनि कहेवो; कारणके, जगतनी त्रणे काळनी अवस्थाने माने अथवा. जाणे तेने मुनिशास्त्रमां कहीो हे.

धर्म ते केतन. अने अचेतन द्रव्यना स्वभावरूप, अथवा श्रुतचारित्ररूप-धर्मने जाणे; ते धर्मवित् जाणवो.

रजु (सरळ) ज्ञानदर्शन-चरित्र नामना मोक्षमार्गनां जे अनुष्ठान हे, तेनाथी अकुटिल हे, अथवा यथार्थरीते पदार्थतुं स्वरूप जाणवाथी सरळ हे अथवा वधी उपाधिथी शुद्ध ते अवक्र (सरळ) हे आ प्रमाणे धर्म जाणनार रजु मुनि होय तेने शुंलाभ मळे ते कहे हे. आवड एटले भाव आवर्त्त ते जन्म जरा मरण रोग शोकना दुःख आपवाना स्वभाववाळो संसार हे. कहुं हे के,

रागद्वेष वशाविद्धं, मिथ्या दर्शन दुस्तरम् ॥ जन्मावर्त्ते जगद्विधत्तं, प्रसादाद्भ्रान्त्यते भ्रशम् ॥१॥

रागद्वेषना वशथी विधायेल मिथ्यादर्शनना कारणे दुस्तर अने जन्मना आवर्त्तमां फेकापळुं जगत् हे. तेमां प्रसादथी जीवो

વળું ઝપણ કરે છે. ખાવ શ્રોતપણ શબ્દાદિ કામ ગુણનો વિષય અખિલાષ છે, અને તે વસ્ત્રે 'આવર્ત' અને શ્રોતમલીને આવર્ત શ્રોત; શબ્દ વને છે તે વસ્ત્રેમાં રાગદ્વેષવદે સંગ (સંબંધ) થાય છે, તેને જાણે છે કે આ આવર્ત અને શ્રોતનું કારણ છે. આ જાણનારો સ્વરી રીતે કોને કહેવો? તે કહે છે, જે અનર્થને જાણીને ત્યાગે, તે જાણનારો છે. અર્થાત્ત સંસાર શ્રોત તે રાગદ્વેષ સ્વ સંગ છે. તેને જાણીને જે ત્યાગે તેજ આવર્ત શ્રોતના સંગનો સ્વરો જાણનારો છે. ઉપર વતાવ્યા મપાણે સુતા અને જાગતાના દોષો તથા ગુણોને જાણનારો કયા ગુણો મેલવે, તે કહે છે.

સાડસિગચ્ચાઈ સે નિમંગદે અરદરહસહે, ફરુસયંનો વેણદ, જાગર વેરોવરણ, વીરે ર્વં દુઝરવા

પમુસ્ત્વસિ, જરામચ્ચુવસો વણિણ નરે સયયં મૂદે ધંમં નાખિજાણદ (સૂત્ર ૧૦૮)

તે આત્માથી મુનિ વાહ્ય અર્થ્યંતર ગ્રથ રહિત (નિર્ગ્રથ) વનીને શીત અને ઉષ્ણતાનો ત્યાગી પૃથલે સુલ્લ દુઃસ્વને ન ગણનારો અથવા ટંડ તાપના પરિવહને સારી રીતે સમખાવે સહન કરનારો સંયમમાં રતિ (પ્રેમ) અને અસંયમમાં અરતિ વતાવનારો વની પીઢા કરનારી પરિવહો અને ઉપસર્ગોની કઠોર વેદનાને સહે છે, પણ પીઢાકારી માનતો નથી, (જેમ ગજસુકુમાલના સસરાણ મીની મા-ટીની પાલ વાંધી માથામાં વલ્લતા અંગારા ખર્ચા, તે સમયે ઘણી પીઢા થઈ, હતાં તેણે સસરાનો ઉપકાર માન્યો, અને કેવલ જ્ઞાન પામી મોક્ષમાં ગયો. તેમ વીજા સાધુણ કરવું) અથવા સંયમ કે તપથી શરીરમાં પીઢા થતાં પરુષતા (કઠોરપણું) આવે અથવા કર્મ લેપ દૂર થવાથી સંસારથી રેવેદી મનવાક્રો મોક્ષાખિલાષી નિરાવાય સુલ્લનો ચાહક વનીને સંયમ તપમાં પીઢા થાય તો પણ સમખાવે

सहे पण खेद न पासे. 'जागर' एटले असंयम निद्रा दूर थवाथी पोते संयममां जागतो हे अने अभिमानथी थता अमर्ष (अदेखाइ) एटले बीजातुं बगाडवानो अध्यवसाय (विचार) ते वैर हे. ते वैरथी पोते दूर हे एटले जागर अने वैर उपरत गुणवाळो वीर वने हे, ते कर्म शत्रुने दूर करवानी शक्तिवाळो हे तेवा वीरने उद्वेशीने गुरु कहे हे हे वीर ! तुं उपरना गुण धारण करीने पोताने अथवा बीजाने संसारना दुःखथी अथवा दुःखना कारणरूप कर्मथी वचीश अने वचावीश.

अने उपरना उत्तमगुणोथी रहितप्रमादी जीव संसारना चक्रमां अने दुःखना प्रवाहमां संग करीने उंवतो रहीने ते शुं मेळवे हे ते कहे हे. जरा अने मृत्यु ए वेने वश थइने ते प्राणी निरंतर महा मोहथी मूढ वनेळो स्वर्ग अने मोक्ष आपनार धर्मने जाणतो नथी अने संसारमां जीवने एतुं कोइ पण स्थानज नथी के ज्यां जरा मृत्यु न होय.

प्रश्नः—देवताओने जरा (बूढापो) नथी.

उत्तर—देवताओने पण त्यांथी च्यववाना छ महिना पहेळां उत्तम लेइया वळ सुख प्रभुत्व अने सुंदर वर्णानी क्षानि थाय छेज तेथी तेमने पण जरानो सद्भाव हे, कहुं हे के.

देवा षं भंते ! सर्वे समवपणा ? नो इणडे समडे, सेकेणडेणं भंते! एवं बुच्चइ गोयमां देवा
दुविहा—पुवोववपणगा य पच्छोववपणगा य तरथ षं जे ते पुवोववपणगा तेणं अविमुद्धवपणयरा,
जे षं पच्छोववपणगा ते षं विमुद्धवपणयरा

ગૌતમનો પ્રશ્ન—હે ભગવન્ ? વધા દેવતા સમાન રૂપવાલા છે ? હૃ—તેમ નથી. મૃ—તેનું શું કારણ ?

હૃ—હે ગૌતમ ! દેવો વે પ્રકારના છે. પહેલાં ઉત્પન્ન થયેલા અને પછી ઉત્પન્ન થતા તેમાં જે પહેલાં ઉત્પન્ન થયેલ છે તે કં-
ઇક જ્ઞાંવા રૂપવાલા અને જે પાછલથી ઉત્પન્ન થયા તે વિશુદ્ધ સુંદર રૂપવાલા હોય છે. તેજ પ્રમાણે લેશ્યા વિગેરેમાં પણ જાણવું.
અને ચ્યવનના વચ્ચે તેો વધાને વધુ જ્ઞાંજ હોય છે જેમકે—

મલ્યમ્લાનિઃ કલ્પવૃક્ષ પ્રક્રમ્પઃ શ્રી હીનાશો વાસસાં ચોપરાગઃ ।

દૈન્યં તન્દ્રા કામરાગજ્ઞમ્જ્ઞો, દૃષ્ટિશ્રાન્તિવેપયુશ્ચારતિશ્ચ ॥૧॥

માલા કરમાઈ જાય છે કલ્પવૃક્ષ કંપતું દેવાય છે, શ્રી અને હીનો નાશ થાય છે કપટાં ઉપરથી પ્રેમ ડઠી જાય છે. દીનતા આવે
છે, આલસ થાય છે, કામ રાગનો અને અંગનો મંગ થાય છે, દૃષ્ટિમાં શ્રાંતિ થાય છે. અને કંપારો થાય છે, અને વધું રમણિક તે
અરમણિક લાગે છે. (જેમ, અર્હીયાં મનુષ્યને મરતી વચ્ચે ઘરની ક્લદ્ધિ કે, વૈમવ ઉપરથી અણગમો થાય છે, તેમ દેવતાને પણ દેવ-
લોક હોદતાં ઘણો સ્વેદ થાય છે, અને કલ્પાંત કરે છે.)

જો, આવી રીતે છે તેો, નક્કી થયું કે, વધા જીવો જરા મૃત્યુને વશ છે તેો, તેવું જાણીને પંદિત મુનિ શું કરે ? તે કહે છે:—
પાસિય આરપણો અપ્પત્તો પરિવ્વલ્લ, મંતા ય મદ્મં, પાસ આરંભજં દુક્લમિષિષાંતિણલ્લા, માઈ
પમાઈ પુણ ષ્ઠ ગલ્ભં, ઉવેહમાણો સદ્લલ્લેસુ ઝલ્લ્લ મારામિસંકી મરણા પમુલ્લલ્લે, અપમત્તો

कामेहिं, उवरओ पावकमेहिं, वीरे आयगुने खेयन्ने जे पजवजाय सरथस्स खेयन्ने, अस-
रथस्स खेयन्ने जे अरथस्स खेयन्ने से पजवजायसरथस्स खेयन्ने, अकम्मस्स ववहारो न वि-

जइ कम्ममुणा उवाही जायइ, कम्मं च पडि लेहाए (सुत्र १०९)

ते भावथी जागतो मुनि भावनिद्रामां सुतेला जीयोने मन संबंधी दुःखोथी पीडाता जुवे छे. ते दुःखी जीवो विचारे छे के, हवे अमारे शुं करबुं ? एम मूढ वनेला तथा, दुःखसागरमां डुबेलां प्राणीओने देखीने पोते तेवां दुःखमां न पडवा माटे मुनि अप-
मत थइने विचारे; अने संयम अनुष्ठानने वरोवर करे; तेवा जियने गुरु फरीथी कहे छे:—हे बुद्धिमान् ! हे भणोला जिय ! तुं भा-
वनिद्राथी सुतेला दुःखीओने जो, अने जागताना गुणो तथा सुताना दोषोने जाणीने सुवानी मति न कर (प्रमादी न था.) वली
पाप क्रियानो आरंभ करनारानां दुःखो तथा दुःखनां कारण कर्म, तेने तुं प्रत्यक्ष जो ! जेओ जीवहिंसा (खुन) चोरी विगेरे करे छे.
तेओने थती शिक्षा साक्षात् जो ! अने ते जाणीने आरंभ रहित वनीने आत्महितमां जाग्रत था !

(जेओ साधु छे तेमने मोक्ष साधवानो होवाथी गृहस्थ माफक खेती विगेरे आरंभ करवानो नथी छतां जेओ त्यागी नाम
धरावी खेती विगेरे करे छे ते पण ग्रहस्थ माफक दुःखी थाय छे.)

पण जे विषय कषायथी मलीन चित्तवाळो भावशायी (प्रमादी) छे, ते शुं मेळवे, ते कहे छे. मायी बने, छे, अने माया लेवाथी
बधा कषायोवाळो बने तेज कहे छे, क्रोधी मज्जी मायी लोभी बनीने दाह विगेरेना नखायां प्रमादी थइ नारकीनां दुःख अनुभववी

पाछो तिर्यचमां गर्भना दुःखने अनुभवे छे, पण जे मुनि कथायरहित अपमादी छे तेनें भुं लाभ थाय छे, ते बतावे छे, शब्द रूप विगोरेमां जे रागद्वेष थाय छे तेनी उपेक्षा करतो रजु (सरल) यति थाय छे. एटले खरी रीते जे यति (साधु) छे ते रजु छे, पण गृहस्थ तो स्त्री विगोरे पदार्थ ग्रहण करवाथी वक्र छे (स्त्री विगोरेने मेळववा राजी राखवा गृहस्थने कपट करवुं पहे छे.) वळी ते सरल साधु गायन विगोरेनी उपेक्षा करतो मरण (मार) नी शंका करे छे. एटले बीजाने मारतां (दुःख देतां) हरे छे. तेथी पोते पण मरणथी वचे छे. वळी ते काम (पाप चेष्टाओ) थी अपमादी रहे छे. अने जे साधु काम चेष्टाना पापोथी दूर रहे, तेज खरी रीते मन वचन कायाना पापथी उपरत (वचेळो) छे. कोण वचे छे? ते कहे छे. जे वीर छे तेज गुप्त आत्मा छे. अने ते खेदज्ञ छे (एटले बीजा जीवोना खेदने जाणे छे तेथी कोइने दुःख देतो नथी) ते खेदज्ञ साधु गायन विगोरेना आनंदना विषयोना पर्यव (भागो) अनुकुल थतां पोते तेना निमित्तना शस्त्रने प्राणीओने दुःखकारक जाणीने तेषां लीन न थतां ते निपुण साधु निरवद्य अनुष्ठान जे अशस्त्र छे ते करे छे. अने ते संयमना खेदने जाणनारो पर्यव जात शस्त्रना खेदने जाणनारो छे, तेनो सार आ छे के जे साधु पासै शब्दादि पर्यायो सुंदर के विरूप आवे तो लेवानी के त्यागवानी क्रिया बीजा जीवोने दुःखरूप छे तेम जाणे छे अने मध्यस्थपणुं राखवुं; ते अपीडाकारक होवाथी जे अशस्त्ररूप—संयम छे. ते पोताने अने परने उपकार करनारो छे, एवुं जाणे छे.

आ प्रमाणे, जाणीने शस्त्रने छोडे, अने अशस्त्र (संयम) तेने ग्रहण करे; एटले ज्ञानतुं फल ए छे के; विषयोना आनंदने छोडनारो; समभाव राखनारो जीवोने वचावी संयम पाळे छे, (अने जीवो उपर रागद्वेष करे; तो, संयम पाळी शकतो नथी.)

अथवा, गायन विगोरे पर्यायोथी, अथवा गायन विगोरेथी उत्पन्न थयेळ रागद्वेषना पर्यायोथी जे ज्ञानावस्थायी विगोरे कर्म

બંધાય છે, તેને દાઢકપણાથી તપ તે શસ્ત્ર છે, તે તપના રેવેદને જાણે; તે રેવેદજ્ઞ છે. કારણકે તેના જ્ઞાન તથા યોગ્ય અનુદ્યાનવહે જે અશસ્ત્ર—સંયમ છે, તેને પળ જાણનારો છે, અને સંયમ તપ રેવેદને જાણનારો આશ્રવનિરોધ વિગેરેથી ધવઞ્નપણાં કર્મ જે પૂર્વે એકઠાં કર્યાં છે, તેનો ક્ષય થાય છે, અને કર્મક્ષયથી જે લાઘ્ય થાય છે, તે કહે છે:—

અકર્મનું વર્ણન.

અકર્મ પડલે, જેને આઠ પ્રકારનાં કર્મમાંથી એક પળ કર્મ ન હોય; તે છે, અને તે નારક, તિર્યંચ, નર, દેવ એવી ચાર ગતિમાં ઞ્નપણ કરવાનો વ્યવહાર નથી; તથા, પર્યાસ—અપર્યાસ અવસ્થા નથી; તથા વાલ્કપણ, તથા કુમારપણું વિગેરે સંસારી વ્યપદેશો (જુદી જુદી વ્યવસ્થાન નામ) નથી; અને જે સકર્મી છે, તેને કર્મવહે નારકાદિ વ્યપદેશ હોય છે.

તથા તે કર્મની ઉપાધિવહે પડલે, જ્ઞાનાવરણીય વિગેરેથી જુદાં જુદાં વિશેષણો કર્મ સંબંધી થાય છે તે કહે છે:—જેમકે, મતિ, શ્રુત અવધિ, મન:પર્યાય જ્ઞાનવાલો હોય; તેને તેની બુદ્ધિના પ્રમાણમાં મંદબુદ્ધિવાલો, અથવા તીક્ષ્ણ બુદ્ધિવાલો કહેવાય છે. (૧) તથા ચક્ષુદર્શની અચક્ષુદર્શની નિદ્રાછ વિગેરે છે. (૨) તથા સુસ્વીદુઃસ્વી કહેવાય છે. (૩) મિથ્યાદષ્ટિ, સમ્યગ પિથ્યાદષ્ટિ, સ્ત્રીપુરુષ નપુंसક—કષાયી વિગેરે છે. (૪)

તથા સોપક્રમ નિરુપક્રમ આયુવાલો, અદ્ય આવવાવાલો; વિગેરે છે. (૫) નારક તિર્યંચયોનીવાલો, તથા એકેન્દ્રિય, બે ઇન્દ્રિય, પર્યાસો—અપર્યાસો, સુખગ—દુર્ભગ વિગેરે છે. (૬) હંચગોત્રવાલો, નીચગોત્રવાલો છે, (૭) કૃપણ, ત્યાગી, નિરુપ મોગી, નિર્વાર્થિ છે. (૮) આ પ્રમાણે આઠે કર્મને લીધે સંસારી જીવો ઓલવાય છે. જો આવી રીતે છે તો શું કરવું તે કહે છે. જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મ છે

તેની ઉપેક્ષા કરીને અથવા તેના વંધને પ્રકૃતિ સ્થિતિ અનુભાવ પ્રદેશરૂપે વિચારીને તેની સત્તા વિષાકને પામેલા પ્રાણીઓ જેવી રીતે ભાવનિદ્રામાં સુષ્પ છે (અને દુઃખ ભોગવે છે) તે વિચારીને કર્મ તોહવામાં ભાવ જાગરણ કરવા સાધુષ્પ ઉદ્યમ કરવો, તે કર્મ તોહવાનું આવા ક્રમથી થાય છે.

પ્રથમ આઠ કર્મવાળો માણસ છે તે દીક્ષા લઈને મોહને તોહે પછી અપમાદી થઈ ક્ષયકશ્ત્રેણી કરે તે આઠમે ગુણસ્થાને ક્રોધાદિ ઓછા કરી અગ્યારમે ગુણસ્થાને લોભનો સર્વથા નાશ કરે અને વારમા ગુણસ્થાનના અંતે જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય તથા અંતરાય કર્મ દૂર કરી તેરમે ગુણસ્થાને ચાર અપાતી કર્મવાળો રહે. આ ગુણસ્થાને જયન્મયથી અંતર્હૃદૃત. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વ કોડીમાં થોડો ઓછો કાઠ રહે, ત્યારપછી ૧૪મે ગુણસ્થાને પાંચ દૂર અક્ષર વોલવા જેટલો કાઠ શૈલેશી અવસ્થાને અનુભવીને અકર્મ થાય છે. હવે, ઉત્તરપ્રકૃતિઓનું હતાપણું—અહતાપણું વતાવે છે. જ્ઞાનાવરણીય, તથા અંતરાય તે દરેકની પાંચ પાંચ ભેદની પ્રકૃતિ ચૌદે જીવસ્થાનમાં હોય છે. તથા, ચૌદ ગુણસ્થાનમાં મિથ્યાદૃષ્ટિથી માંડીને વારમા ગુણસ્થાન સુધી પાંચે પ્રકૃતિઓ હોય છે, તેમાં વીજો વિકલ્પ થતો નથી; તથા, દર્શનાવરણીયનાં ત્રણ સત્કર્મનાં સ્થાન છે. (સત્કર્મ પૃદલે સત્તા છે.)

પાંચ નિદ્રા, અને ચાર દર્શન, એ નવ પ્રકૃતિ સર્વ જીવસ્થાનમાં રહે છે. (૧) અને ગુણસ્થાનમાં અનિદ્રાતિ વાદરકાલના સંસ્વેય યાગ સુધી હોય છે. (૨) કેટલાક સંસ્વેય યાગના અંતમાં યીળદ્ધિનિદ્રાત્રિક ક્ષય થવાથી હ કર્મવાલું વીજું સ્થાન છે.

ત્યારપછી, ક્ષીણકપાયના અંત સમયના પહેલા સમયમાં નિદ્રા અને પ્રચલા, એ વેના ક્ષય થવાથી ચાર કર્મનું સ્થાન છે. અને તે પણ ક્ષય થવાથી ક્ષીણકપાય કાલના અંતમાં વીજું સ્થાન છે.

वेदनीय-कर्मणां वे सत्तास्थान छे. ते आ प्रमाणेः—

(१) साता अने असाता वचने होय. (२) तथा वर्त्नेमांथी एक साता, अथवा असाता ज्यारे पोते शैलीशी अबस्थापां सौथी छेछा समयना पहेला समयमां मोक्ष जवाना कालभां होय; त्यारे कोइपण एक साता के, असाता भोगवे ते वीजुं स्थान छे. मोहनीयकर्मणां पंदर सत्तास्थान छे ते आ प्रमाणेः—

(१) सोल कषाय, नव नो कषाय अने त्रण दर्शन होय; त्यारे सम्यक्दृष्टि जीवने अट्टावीश पकृति होय छे.

(२) सम्यक्त्व-वमतां मिश्रदृष्टि ए सत्तावीश होय छे.

(३) स्वभावथी अनादि मिथ्यादृष्टि होय; अथवा वे दर्शन वमतां छवीश होय (४) सम्यक्दृष्टिने अट्टावीश पकृतिमांथी अनंतानुबंधी चार कषाय वमतां अथवा, क्षय यतां चोवीश होय. (५) तेनेज मिथ्यात्व क्षय यतां २३ (६) मिश्रदृष्टि क्षय यतां २२ (७) क्षायिक सम्यक्दृष्टिने २१ (८) अपत्याख्यान अने प्रत्याख्यान-कषाय जतां १३ (९) कोइपण एक वेद क्षय यतां १२ (१०) बीजो वेद क्षय यतां ११ (११) हास्यादि छ दूर यतां ५ (१२) पुरुषवेदना अभावमां ४ (१३) संज्वलन क्रोध क्षय यतां ३ [१४] मान क्षय यतां २ (१५) पायाक्षय यतां ए एक लाभ रहै.

अने ए लाभ दूर यतां मोहनीय सत्ता पण गइ.

सामान्यथी आयुष्य कर्मनी सत्तानां वे स्थान छे ते आ प्रमाणेः—(१) परभवना आयुना बंधना उत्तर काळमां वे आयुष्य होय; अने तेना बंधना अभावमां जे आयुष्यां होय; तेज वीजुं स्थान छे.

नामनां चार स्थानकहे छे,

नामकर्मनी प्रकृतिनां चार सत्तास्थान छे, ते आ प्रमाणेः—

(१) ९३ (२) ९२ (३) ९१ (४) ८८ (५) ८६ (७) ७९ (८) ७८ (९) ७६ [१०] ७५ [११] ९ [१२] ८ तेनी विगतः—
गति चार, पांच जाति, पांच शरीर, पांच संघात, पांच बंधन, छ संस्थान अंगोपांग त्रण, संहनन छ, वर्ण पांच, गंध वे, रस पांच, आठ स्पर्श, अनुपूर्वी चार.

अगुरु लघु, उपघात, पराधात, उह्वास आतप, उद्योत. ए छ तथा प्रशस्त अने अपशस्त, ए वे विहायोगति, तथा मत्पेक शरीर, त्रस, शुभ, सुभग, सुस्वर सूक्ष्म, पर्याप्त स्थिर आदेय अने यश आ दश शुभ छे अने तेनाथी उलटी वीजी दश अशुभ छे. कुल २० तथा निर्माण अने तीर्थकर एम वधी मळोने नाम कर्मनी ९३ प्रकृति छे.

तेमांथी तीर्थकर नामना अभावमां ९२ छे अने आहारक शरीर संघात बंधन अंगोपांग ए चारना अभावमां ९३मांथी ४ बाद करतां ८९ छे तेमांथी पण तीर्थकर नामकर्म बाद करतां ८८ तथा देवगति तथा अनुपूर्वी वमेली बाद करतां ८६ अथवा नरकगति योग्य बांधतां तेनी गति तथा अनुपूर्वी तथा वैक्रिय चतुष्ट बांधनारने ८० साथे आ छ मेलवनां ८६ छे तथा देवगति प्रायोग्य बांधनारने पण ८६ छे अने नरक गति तथा अनुपूर्वी मळी वे तथा वैक्रिय चतुष्क चार ए छ वमतां ८० रहे छे. वळी मनुष्यगति अनुपूर्वी वन्ने वमतां ७८ छे. आ अक्षपक जीवोनां कर्मनां सत्ता स्थान छे अने हवे क्षपकवाळानां कहे छे.

९३ प्रकृतिमांथी नरक तिर्यक गति तथा अनुपूर्वी वन्नेनी मळी तथा १, २, ३, ४, इन्द्रिय जाति मळी चार तथा आतप

ઉચોત સ્થાવર સૂક્ષ્મ સાધારણ મલી કુલ ૧૩ પ્રકૃતિ ક્ષય થતાં ૮૦ પ્રકૃતિ રહે છે તથા તીર્થંકર નામ ન હોય તો ૯૨માંથી ૧૩ જતાં ૭૯ છે. તથા આહારકચતુષ્ટય દૂર થતાં ૯૩માંથી ૮૯ રહે અને તેમાંથી નારકી વિગેરે સંવંથી ૧૩ દૂર થતાં ૭૬ રહે અને તીર્થંકર નામ ન હોય તો ૮૯માંથી ૧ દૂર થતાં ૮૮ રહે અને તેમાંથી ૧૩ જતાં ૭૫ રહે છે.

તેમાં ૮૦ અથવા ૭૬માંથી તીર્થંકર કેવલી શૈલેશી અવસ્થામાં પર્હોચેલાને હેઠ્ઠાના પહેલા [દ્વિચરમ], સમયમાં તીર્થંકર નામ કર્મ ઉમેરવાથી વેદાતી નવ કર્મ પ્રકૃતિ સિવાયની પ્રકૃતિ દૂર થતાં વાકી અંત સમયે નવ પ્રકૃતિ સત્તામાં રહે છે તે કહે છે.

[૧] મનુષ્ય ગતિ [૨] પંચેન્દ્રિય જાતિ [૩] ત્રસ [૪] વાદર [૫] પર્યાસક [૬] સુમગ [૭] આદેય [૮] યશ્કીર્તિ [૯] તીર્થંકર એ નવ સિવાયની વાકીની ૭૧ અથવા ૬૭ દ્વિચરમ સમયમાં નહુ થાય છે અને તીર્થંકર સિવાયના કેવલીને આઠ હોય છે એટલે તેને તીર્થંકર નામ હોડીને વાકીની આઠ પ્રકૃતિ સત્તામાં હોય છે આ તેનું હેહું સ્થાન છે [ત્યાર પછી મોક્ષમાં જતાં એક પળ પ્રકૃતિ નથી] ગોત્રનાં બે સત્તાસ્થાન છે. ડંચ નીચ ગોત્રના સદ્ભાવમાં એક સત્તાસ્થાન છે તથા અગ્નિકાય અને વાયુકાયને ડંચ ગોત્ર વખતે મલિનભાવવાળી અવસ્થામાં ફક્ત નીચ ગોત્રની સત્તા રહે છે. અથવા અયોગી ગુણસ્થાને દ્વિચરમ સમયે નીચ ગોત્રની સત્તા દૂર થતાં ડંચ ગોત્ર એકહું રહે છે એટલે બે ગોત્રની અવસ્થામાં પ્રથમ સત્તા સ્થાન છે અને વંનેમાંથી એક હોય તે બીજું સત્તા સ્થાન છે [અંત-રાયની પાંચે પ્રકૃતિઓ સાથે દૂર થતી હોવાથી તેનું જુદું વર્ણન વતાવ્યું નથી.]

આ પ્રમાણે કર્મોની સત્તા જાળીને સાધુએ તે સત્તાને દૂર કરવા પ્રયત્ન કરવો. વલી બીજું કહે છે,

कर्ममूलं च जं छणं, पडिलेहिय सवं सामायाय 'दोहिं' अंतेहिं अदिस्समाणे तं परिज्जाय 'मेहावी'
विइत्ता लोणं वंता लोणसन्नं से मेहावी परिक्रमि जासि ॥सूत्र ११०॥ त्तिवेमि शीतोष्णीयोद्देशः ?

कर्मतुं मूल कारण पिथयत्त्व अविरति पमाद कपाय योग छे एने संमनीने क्षण एटले हिंसा ते प्राणीओने दुःख देवारुप कृत्य कर्मतुं मुख्य मुल समजीने छोडतुं.

पाठांतरमां 'कम्ममाहूअ' पाठ छे तेनो अर्थ आ छे के उपादान क्षण आ कर्मना छे ते क्षण कर्म छे ते कर्म मेळवीने तेज क्षणे निवृत्ति करे तेनो भावार्थ आ छे; अब्रान पमाद विगेरेथी जे क्षणे कर्मना हेतुरप अनुष्ठान कर्युं तेज क्षणे चित्त स्थिर करीने तेना उपादान हेतुने निवृत्ति करे (जेनाथी कर्म वंधाय तेने छोडे अथवा तेनी गुरु पासे शीघ्र आलोचना ले) वळी उपदेश करे छे पूर्व कहेलां कर्मने समजीने तथा कर्मना विरुद्ध (कर्म दणनार) गुरुनो उपदेश सांभळीने जे रागद्वेष अंतरुपे छे तेनाथी दूर रही अथवा तेनो संबन्ध छोडीने अथवा कर्म उपादाननां कारण रागादिकने इ परिज्ञावडे जाणीने पत्याख्यान परिज्ञावडे तजे अने रागादिथी मोहित लोक अथवा विषय कपाय लोक जाणीने तथा विषयनी वांछा अथवा धन उपर ममत्त्वभाव छोडीने मर्यादासां रहेलो ते मुनि संयम-अनुष्ठानसां प्रयत्न करे; अथवा विषयवृष्णा, अथवा छरिपुवर्गने, अथवा आठ कर्मने आवतां अटकावे, आ प्रमाणे सुधर्मा-स्वामी कहे छे के हुं कहुं छुं. शीतोष्णीय नामना अध्ययननो पहेलो उदेशो समाप्त धयो.



વીજો ઉદ્દેશો

પહેલો ઉદ્દેશો કહ્યા પછી વીજો કહે છે. તેનો સંવન્ધ આ મમાળો છે:—પહેલા ઉદ્દેશામાં ભાવ સુતેલાવતાવ્યા; અને અહીં તેઓના સુવાથી “દુઃખ પડવાનું” ફલ વતાવે છે. એમ તે વચ્ચેનો સંવન્ધ છે, સૂત્ર અનુગમ દોવાથી સૂત્ર કહે છે:—

જાદં ચ વુદ્ધિં ચ હહહજ્જ ! પાસે, મૂણ્હિં જાળો પહિલેહ સાયં, તમ્હાડતિવિજે પરમંતિળજ્ઞા,
સંમત્તદંસી ન કરેહ પાવં ॥૧॥

જાતિ ષ્ટલે, જન્મથી લઈને વાલકુમાર—યૌવન વૃદ્ધાપા સુધી વુદ્ધિ છે, તે મનુષ્યલોકમાં, અથવા સંસારમાં હમણાંજ (કાઠના વિલંબ વિના) તું જો. તેનો સાર આ છે કે શુભ શિષ્યને કહે છે કે:—હે મદ્ર ! હમણાં જન્મતા જીવોને વૃદ્ધાપાસુધીમાં શરીર મન સંવન્ધી કેવાં કેવાં દુઃખો મોગવાય છે તે તુ વિવેક વશુથી જો, કહ્યું છે કે:—

જાયમાણસ્સ જં દુવ્ખં, મરમાણસ્સ જંતુળો । તેળ દુવ્ખલેળા સંતત્તો, ન સરહ જાહ મપ્પળો ॥૧॥

જન્મતા માણસનું જે દુઃખ છે, તે માણસને મરણી વલતે પહતાં દુઃસ્વથી તે તપેલો દોવાથી પૂર્વથી જાતી પળ વિસરી ગયો છે. વિરસરસિયં રસંતો તો સો જોળીમુહાટ નિપ્પહહ । માઝ્ણ્ અપ્પળાડવિઅ વેઅળમડલં જળેમાળો ॥૨॥

માના વાવેલા આહારને ગર્ભમાં વેઠેલો વાલક પરવશ થઈને સ્વાય છે, અને પોતે જન્મતી વલતે પોતાને તથા, માતાને ઘળી ધીજા આપીને યોનિદ્વારા વહાર નીકલે છે.

हीणभिषणसरो दीणां विवरीओ विचित्तओ । दुब्बलो दुबस्वीओ वसइ, संपत्तो चरिमं दसं १३॥

अने ते वृद्धावस्थायां हीन-भिन्न (खोखरो) अवाज होय छे. रांकहुं सुख तथा विपरीत विकल्प करनारो दुर्बल दुःखी अवस्थायां ते पढेलो होय छे, अथवा हे आर्य ! एवुं महावीर पशु गैतमने कहे छे, के जाति वृद्धि अने तेनुं मूल कारण कर्म तथा कार्य दुःख छे तेने जो, अने देखीने बोध पाप, अने तेवुं जन्म विनोरेनुं दुःख तने न आवे, एवुं संयम अनुष्ठान कर.

बळी चौद प्रकारना भूत ग्राम (जीवोनां चौद स्थान) छे. तेनी साथे तारा आत्मानुं सुख सरखाव एदले जेम तुं सुखने वांछे छे तेम बधा पण वांछे छे अने तने दुःख गमहुं नथी तेम वीजानुं पण समज, तेथीं तुं कोइने दुःख न दे तो तेथी तने जन्मादि दुःख नहि मळे. कहुं छे के:—

यथेष्टविषयाः सातमनिष्टा इतरत्तव । अन्यत्रापि विदित्वैवं, न कुर्यादप्रियं जने ॥१॥

जेवी रीते तने इन्द्रियोना रास वहाळा छे अने अनिष्ट अप्रिय छे एवी रीते जाणीने वीजाने अप्रिय कृत्य न करतो. शिष्य पूछे छे तो भुं करवुं? उ०—जाति वृद्धि सुख दुःख देखीने तत्व बतावनारी श्रेष्ठ विद्याने जाण, अने जे तत्व जाणोळा होय, ते मोक्ष अथवा परम ज्ञान विनोरे अथवा मोक्ष मार्गने जाणीने सम्यक्त्वदर्शी वनीने पाप न करे, अर्थात् सारो साधु पाप व्यापार न करे. हवे पापहुं मूल संसारी स्नेहना पासो छे, ते छोडवा उपदेश आपे छे,

उस्सुं च पासं इह मच्चिप्सुहिं, आरंभजीवी उभयाणुपस्सी; कामेसु गिद्धा निचयं करंति, सं-

सिद्धमाणा पुणरिति गढभं ॥सूत्र. २॥ काव्य

आ चार प्रकारना कपाय तथा विषयना विमोक्षमां समर्थ आधार रूप मनुस्य लोकांमां संसारी मनुष्यो साथे द्रव्यथी तथा भा-
वथी वंने प्रकारे जे पाषा (मोहजाळ) छे, तेने सर्वथा छोड; कारण के ते जन समूह काय भोगनी लालसावाळो छे तथा ते मेळववा
माटे जीव हिंसा विगोरे पायां आरंभे छे. तेथीज सूत्रमां कहुं छे के ते आरंभथी जीववावाळो छे, अने महारंभ परिग्रहथी रचना
करीने जीवननो उपाय योजे छे, तथा उभय एटके शरीरना तथा मन संबंधी अथवा आ लोक तथा परलोक संबन्धी (भोगाकांक्षी)
छे, वळी ते काम भोगमां रक्त शङ्गेने अशुभ कर्मनां उपचय करे छे. अने ते कर्म संचय करीने एक गर्भथी नीकळी बीजा गर्भमां
पवेश करे छे. अने संसार चक्रवाळ (चक्रावा) मां अरटनी घटमाळ जेम भराय अने ठळवाय ते न्याये जुनां कर्म भोगवे, अने फरी
नवां बांधीने भ्रमण करे छे. वळी ते अनिष्टत (विना विचारनो) आत्मा केवो (दुष्ट) थाय छे ते कहे छे.

अविसे हासमासज्ज, हंता नंदीति मन्नई अलं बालस्स संगेण, वेरं वड्डेइ अप्पणो (सू० ३) काव्य.

लज्जा भय विगोरेना निमित्तथा चित्तना विप्लववाळुं जे हास्य (हांसी) छे, तेने मेळनीने इच्छा पेमी वनी (क्रीडानी खातर)
जीवोने दृणी [स्त्रिकारमां] आनंद माने छे, अने बीजाओने फसाववा ते महा मोहथी बेरायलो अशुभ विचारवाळो बोले छे के “आ
मृण विगोरे पशुओ शीकारने माटे वनाव्यां छे, तथा स्त्रिकार सुखी पुरुषोनी क्रीडा माटे छे.” जेवी राते जीव हिंसा सिद्ध करे छे.
तेम जुट चोरीमां ण सिद्ध करे के. आ जुहुं बोली ठगवुं के चोरी करवी ए तो बुद्धि बळवुं तथा वहादुरीतुं काय छे विगोरे समनी

हेतुं जो धावीं रीते संसारी मनुष्यो पाप करनारा छे. तो साधुए श्रुं करवुं, ते आचार्य कहे छे.

के जे मनुष्यो शिकारी विनोरे होय, अथवा विषयय कषायमां रक्त होय, तो तेवा बालजीव साथे हास्यादि तथा संग न करवो; जो पापीनो संग करे तो मांहीमांहे लडाइ, भतां वैर वने छे, अने परस्पर वैर लेवानो प्रसंग आवे छे. जेमके गुणसेन राजाए जुदी जुदी रीते करेला हास्यना कारणे अग्निशर्मा ब्राह्मण साथे वैर वधीने नव भव सुधी चाल्युं. [समरादित्य चरित्रमां तेनी कथा छे के अग्निशर्मा ब्राह्मणहुं कुरूप जोइ राजकुमार गुणसेने तेनी हांसी करी. तेथी ब्राह्मणे कंटाली तापस वनी तप करी विख्यात थयो. अनुक्रमे गुणसेन राजा वनी ते तापस पास आव्यो पूर्वानी वात सांभळी राजाए क्षमा चाही पारणामां जमवानुं आमन्त्रण कर्युं. जणे वार आमन्त्रण वखते राजा भूली गयो. अने तापस पाह्यो गयो. तेथी तापसने आ दरेक वखते हांसी जानी, अने वैर लेवानुं नियाणुं कर्युं. गुणसेन ते समरादित्य थयो. अने नव भव सुधी तेनी साथे तापसहुं वैर रह्युं, माटे हांसी न करवो, तेम हांसी कर-
नारनो संग पर न करवो] एज प्रमाणे विषय संग विनोरेमां ण दुःख अने वैर वधवानुं जाणी तेवाओनो संग न करवो. जो एम छे, तो साधुए श्रुं करवुं ? ते कहे छे.

तम्हातिविजो परमंतिणत्वा, आयंकदंसो न करेइ पावं, अगं च मूलं च विणिंच धीरे,

पल्लिच्छिदियाणं निक्कम्मदंसी (सू० ४) काठ्य.

बाल (पापी) नी संगतिथी वैर वधे छे, तेथी अति विद्वान् (गीतार्थ) मुनि परम एटले मोक्षपद अथवा सर्व संवररूप चारित्र

अथवा सम्यग ज्ञान अथवा सम्यग दर्शन [ए त्रणे उत्तम होवार्थी] तेने जाणीने शुं करे ते गुरु कहे छे.

आनक दर्शी—आतंक ते नरक विगोरेनां दुःख छे. तेने (हृदय चक्षुवडे) देखवाना स्वभाववाला ते आतंकदर्शी छे. ते पूर्वे कहेला पापोना अनुबन्धरूप अशुभ कर्मने करतो नथी. तेम पाप करावे पण नहि, तथा अनुमोदतो पण नथी; वली गुरु उपदेश आपे छे, के. अग्र—चार अघाति कर्म जे भवोपग्राही छे. ते अग्र छे, अने मूल—ते चार घातीकर्म छे. ते मूल छे. (अथवा बीजीरीते लइए तो) मोहनीय कर्म मूल छे. बाकीनां सात कर्म अग्र छे. अथवा मिथ्यात्व मूल छे. बाकी वधी प्रकृति अग्र छे. ए प्रमाणे वधां अग्र तथा मूल कर्मने दूर कर; आ सूत्रथी एम सूत्रव्युं के कर्म ते पुद्गलनो समूह छे. तेनो सर्वथा क्षय थतो नथी, पण योग्य अनुष्ठान करवार्थी आत्माथी सर्वथा दूर थइ शके छे.

मोहनीयतुं अथवा मिथ्यात्वतुं वधां कर्ममां मूलपणुं केवी रीते घटे छे ? आम जो कोइने शंका होय तो आचार्य कहे छे के तेना कारणे बाकीनी वधी प्रकृतिओनो बंध पडे छे. कहुं छे के—

न मोहमतिवृत्त्य बंध, उदितस्त्वया कर्मणां; न चैकविध बंधनं, प्रकृतिबंधविभवो महान् ॥

अनादिभव हेतुरेष, न च बध्यते नासकृत; त्वयाऽतिक्रुटिला गतिः कुशल ! कर्मणां दर्शिता ॥१॥

हे कुशल प्रभो ! तमे कर्मोनी बन्ध मोह विना वताव्यो नथी, अने ते मोहतुं अनेक प्रकारतुं बन्धन छे अने प्रकृतिनो महान विभव छे; अने आ मोह अनादि भवतो हेतु छे. अने ते अनेकवार बन्धाय एम नथी. पण वारंवार बन्धाय छे. एथी कर्मोनी कु-

द्विज गति आपे बतावी छे! तेज प्रमाणे आगम कहे छे—

कहणुं भंते! जीवा अट्ट कम्मपगडीआ बंधंति,? गोयमा! पाणावरणिजस्स उदएणं दरिसणावरणिजं
कम्मं नियच्छइ, दरिसणावरणिजस्स कम्मस्स उदएणं दंसणमोहणीयं कम्मंनि यच्छइ, दंसणमोह-
णिजस्स उदएणं मिच्छसं नियच्छइ मिच्छत्तेणं उदिण्णेणं एवं खलु जीवे अट्टकम्मपगडीआ बंधइ ॥

हे भगवान! जीवो केवी रीते आठ कर्म बांधे छे? हे गौतम! ज्ञानावरणीयना उदयथी दर्शनावरणीय कर्म बांधे छे, दर्शनावर-
णीय कर्मना उदयथी दर्शनमोहनीय कर्म बांधे छे, अने मिथ्यत्वना उदयथी आठे कर्मप्रकृतिओ बांधे छे, तेवी रीते क्षय पण, मोह-
नीयकर्मना क्षय साथेज क्षय थाय छे. कहूं छे के:—

नायगंमि हते संते, जहा सेणा विणस्सई । एवं कम्मा विणस्संति, मोहणिजं खयं गए ॥१॥

नायक हणावाथी जेम; सेना नाश पाये छे, तेवी रीते मोहनीयकर्मनो क्षय यवाथी बीजां सात कर्मो नाश थाय छे.

अथवा मूल ते असंयम अथवा कर्म छे, अने अग्र ते संयम तपसा अथवा मोक्ष छे, ते मूलना अग्रमां अक्षोभ्य (अचळ) धीर
तुं था; अथवा बुद्धि ए शोभायमान एवा शिष्यने गुरु कहे छे:—हे धीर; विवेकथी असंयमने दुःखनुं कारण तथा, संयमने सुखना
कारणपणे मान, तथा तप अने संयमवहे राग विगेरेनां बन्धन अथवा तेनां कार्य जे कर्म छे, तेने छेदीने कर्मरहित तुं वन; एदळे
तुं पोताना आत्माने कर्मरहित वनाव. एवा स्वभाववाळो निष्कर्मदर्शी कहेवाय छे. अथवा, मोहनीयकर्म क्षय यतां ज्ञानदर्शननां आव-

रण दूर धतां, ते सर्वदर्शी, तथा सर्वज्ञानी भय छे,अने कर्मर हित थयलो, अथवा सर्वज्ञ वनेलो बीजुं भुं मेळवे छे ते कहे छे—
एस सरणा पमुच्चइ, से हु दिदुभय सुणी, लोणंसि परमदंसी विवित्तजीवी उवसंते समिए
सहिए सया जए कालकंखी परिवए, वहुं च खलु पावं करमं पगडं (सू० १११)

ए सर्वज्ञ साधु मूल अने अग्रजो रेचक [कर्मने तोडनारो] वनीने निष्कर्मदर्शी कहेवाय छे, ते मरणथी मुकाय छे, कारणके घातीकर्मो दुर थवाथी अघातीकर्ममां रहेछं आयु नवा भवतुं वंधातुं नथी, अथवा वारंवार मरवुं, अथवा क्षणे क्षणे मरवुं ए मरणथी ते मुकाय छे अथवा वधोज आ संसार मरण युक्त छे तेथी पोते मुकाय छे वळी ते, मुनि संसारमां रहेलो भय, अथवा संसार संवंधी सात प्रकारनो भय तेने देखे छे, के (संसारीने आवा भयो आवे छे.) ते दृष्टभय कहेवाय छे, वळी ते छ द्रव्यना आधाररूप-लोक अथवा, चौद जीवस्थानवालो लोक छे तेमां परम जे मोक्ष छे. अथवा तेतुं कारण संयम छे तेने देखवाना स्वभाववालो होय ते परमदर्शी छे तथा स्त्रीप शु नपुंसक साधुना ब्रह्मचर्यने घात करनार छे, तेनाथी रहित एवा मकानमां रहे छे, ते द्रव्यथी विवित्त कहेवाय. तथा रागद्वेषथी रहित निर्मल चित्त राखवाथी भावथी विविकत कहेवाय, ते गुणवालो होवाथी विविकतजीवी कहेवाय छे. आवो मुनि इंद्रिय तथा मनने ज्ञांत राखवाथी उपशांत छे, अने ते पांच समितिथी युक्त होवाथी अथवा सरळ ते मोक्षमार्गे जवाथी समित- छे, अने ज्ञान विनोरेथी युक्त छे, तेम अपमादि पण छे. वळी ते मुनि तेवीरीते आखी जीदगी सुधी उचम गुणवालो रहे; ते काल 'आकांक्षी' कहे- वाय; अने ए प्रमाणे पंडित मरणनी आकांक्षावालो संयम-अनुष्ठानमां रहे.

भागे निद्रा अने प्रचलानो बन्ध दूर यतां चार प्रकारना दर्शनावरणनो बन्ध रहेवाथी ते त्रीजुं स्थान छे.
वेदनीय कर्मनुं एकज बन्ध स्थान छे. चाहे साता बांधे चाहे असाता बांधे, पण एक बीजानी विरोधी होवाथी बने साथे न बांधे.
मोहनीयकर्मनां दश बन्धस्थान छे.

(१) एक मिथ्यात्व १, सोळ कषायो १६, कोह पण एक वेद १, हास्य रतिनुं जोडकुं अथवा अरति शोकनुं एक जोडकुं ते-
मांथी एक जोडकुं छेतां ते वे २ तथा भय १, जुगुप्सा २, मकी फुल २२ प्रकृतिनो बंध होय छे.

(२) मिथ्यात्वनो बन्ध दूर यतां सास्वादगुणस्थानमां २१ नो बन्ध छे.

(३) तेमांथी मिश्रदृष्टि अथवा अरतिसम्यग्दृष्टिने अनंतानुबन्धी चोकडी दूर श्वाथी १७ प्रकारनो बन्ध छे.

(४) तेमांथी देशविरति गुणस्थाने अपत्याख्याननी चोकडीना बन्धनो अभाव श्वाथी १३ नो बन्ध छे,

(५) तेमांथी प्रपत्त अपप्रपत्त अपूर्वकरणमां वर्तता साधुने प्रत्याख्याननी चोकडी दूर श्वाथी ९ नो बन्ध छे.

(६) तेमांथी हास्य विगेरेनुं जोडकुं तथा भय जुगुप्सा दूर श्वाथी फक्त ५नो बन्ध अपूर्व करणना चरम [छेल्खा] समये छे.

(७) तेमांथी अनिष्टतिकरणना संख्येय भाग वीते शके पुरुष वेदना बन्धनो अभाव यतां चारनो बन्ध छे.

(८) तेमांथी तेज गुणस्थाने संख्येय भाग गये शके अनुक्रमे क्रोधनो क्षय यतां ३ नो बंध छे.

(९) माननो क्षय यतां २नो बन्ध छे [१०] मायानो क्षय यतां १नो बन्ध छे त्यार पछी अनिष्टतिकरणना छेल्खा समयमां मो-

हनीयना बन्धनो अभाव श्वाथी अबन्धक छे.

सामान्यथी आयुर्कर्मनो बन्ध एक प्रकारनो हे

चार प्रकारना आयुर्मांथी कोइ पण एकनो बन्ध होय पण बे अथवा त्रण साथे बन्धानानो अभाव होवाथी एक बन्ध जाणवो-
नाम कर्मनां आठ बन्धस्थान हे.

(१) २३ प्रकृति तिर्यंच गतिने योग्य बांधतां थाय हे. ते नीचे प्रमाणे तिर्यंच गति, १ एकेंद्रिय जाति १ औदारिक तेजस कार्मण शरीरो ३ हुंड संस्थान १ वर्ण गंध रस स्पर्श ४ तिर्यंग गतिने योग्य अनुपूर्वी १ अगुरु लघु १ उपघात १ स्थावर १ बादर सूक्ष्ममांथी १ कोइ पण एक, अपर्याप्तक १ प्रत्येक साधारणमांथी एक १ अस्थिर १ अशुभ १ दुर्भंग अनादेय १ अयत्न कीर्ति १ निर्माण १ एम फुल २३ हे तेनो बन्ध एकेंद्रिय अपर्याप्ताने योग्य मिथ्यादृष्टिने बांधतां होय हे.

(२) ते त्रेवीश्रमां पराघात अने उच्छ्वास मळी एम २५ पर्याप्ता एकेंद्रियने बन्ध जाणवो. [अपर्याप्ताने बदळे पर्याप्ताने २५ प्रकृति लेवी. (३) एमां आतप अथवा उद्योत एक प्रकृतिनो बन्ध मेळवतां २६ थाय पण साधारणनी जग्याए प्रत्येक अने सूक्ष्मनी जग्याए बादर लेवी. (४) देवगतिने योग्य बांधतां २८ प्रकृतिनो बन्ध नीचे मुजब हे. देवगति १ पंचेंद्रिय जाति १ वैक्रिय तेजस कार्मण त्रण शरीर ३ समचतुरस्र संस्थान १ अंगोपांग ६ वर्ण विगोरे चतुष्टय, ४ अनुपूर्वी १ अगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ उच्छ्वास १ प्रशस्त विहायोगति १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ प्रत्येक १ स्थिर अस्थिरमांथी एक, १ शुभ शुभग. १ सुस्वर १ आदेय १ यज्ञःकीर्ति १ अथवा अयज्ञःकीर्ति निर्माण १ [टीकामां शुभ आयुर्मांथी कोइ पण एक होय हे, एम लखुं हे. दीपणमां एकली शुभ लीथी

छे] एम कुल २८ नो बन्ध थाय छे. १

(५) तेषां तीर्थंकर नामकर्म उभेरवाथी २९

(६) हवे त्रीशानो बन्ध बतावे छे. देवगति, १ पंचेद्रियजाति १ वैकिय आहारक शनीर २ अंगोपांग २ तेजसकार्मण २ पहेछुं

संस्थान १ वर्णादि चतुष्क ४ अनुपूर्वी १ अगुरुलड्ड १ उपघात १ पराघात १ उच्छवास १ पशस्तविहायो गति १ त्रस वादर पर्याप्त

पत्येक स्थिर शुभ सुभग सुस्वर आर्देय यशःकीर्ति ए दशक १० तथा निर्माण १ नाम मन्त्री कुल ३०

[७] एषां तीर्थंकर नाम मेळववाथी ३१ थाय छे.

आ प्रमाणे एकेंद्रिय वेद्दुदिय त्रैयेंद्रिय नरकगति विगेरे आश्रयी अनेक भेदे बन्धना यणा प्रकारो छे. ते कर्म ग्रंथयी जाणवा.

(८) अपूर्वकरण आदि त्रण गुण स्थाने देवगति प्रायोग्य बन्धना उपरमथी यशःकीर्तिज फक्त बांधे छे. तेशी एक विधबन्ध

छे. त्यारपछी नामकर्मना बन्धनो अभाव छे.

गोत्रकर्ममां सामान्यरीते उंच अथवा नीचनो एकनो बन्ध छे. उंच अने नीच बन्धने विरोधी होवाथी साथे बन्धावानो अभाव

छे. कर्मोनुं आ प्रमाणे बन्धद्वारमां लेशथी यणा प्रकारपणुं बतावुं.

सूत्रकार तेशी कहे छे के:—आ कर्म जीवे बांध्यां छे. ते खुलेखुल्लं छे, कारणके, ते प्रमाणे भोगवतां दरेकने अनुभवथाय छे.

[सूत्रमां खलु शब्द वाक्यालंकारमां छे अथवा निश्चयअर्थमां छे के, कर्म बहु प्रकारेज छे.] जो आ प्रमाणे छे, तो ते कर्मबन्धनने

दूर करवा शुं करवुं ? ते कहे छे:—

सत्त्वमि धिदं कुवहा, एरथोवरए मेहावी, सवं पावं कम्मं जोसइ (सू० ११२)

उत्तम जीवोने हित करनार ते सत्य छे, अने तेनेज संयम कहे छे. ते संयममां वैर्यता राख, अथवा यथावस्थित वस्तुनुं स्वरूप जिनेश्वरे वताववाथी तेमनुं कहेछुं मौनींद्र आगम (जैन सिद्धांत) सत्य (तत्त्व) छे. ते भगवंतना वचनमां उपरत [अतिशय रक्त] बनीने मेघावी [तत्त्वदर्शी] साधु वधां पाप कर्म जे संसार समुद्रमां अमण करावे छे तेने [संयम अनुष्ठान तथा तप वदे] क्षय करे छे. आ प्रमाणे अपमादी साधुना उत्तम गुणो वताव्या ते अपमादनो शत्रु प्रमाद छे, ते कषाय विगोरे प्रमादथी प्रमत्त बनेलो केवो दुर्गुणी थाय छे. ते कहे छे.

अणेगच्चित्ते खलु अयं पुरिसे, से केयणं अरिहए पूरिणए, से अणवहाए अणपरियावाए

अणपरिगहाए जणवयवहाए जणवयपरियावाए जणवयपरिगहाए (सू० ११३)

खिति वेपार मजुरी विगोरे अनेक प्रकारना कार्यमां तेहुं चित्त लागवाथी ते संसारी जीव अनेक चित्तवाळोज छे. एटले संसार सुखनो अभिलाषी अनेक चित्त (चंचळ चित्त) वाळो होय छे. “आ पुरुष” एम कहेवाथी संसारी जीव वताव्यो. अहीं पूर्व कहेल दधि घटिका अने कपिल दारिद्रीनो दृष्टांत कहेवो. (उत्तराध्ययन सूत्रमां कपिलनो दृष्टांत वतावेल छे.) हवे जे अनेक चित्तवाळो छे ते शुक करे छे, ते वतावे छे. द्रव्य केतन एटले चालणी पूरनारो अथवा समुद्र छे. अने भावकेतन ते लोभनी इच्छा छे. एटले पूर्व कोहर पण भयुं नथी, तेने पोते भरवा इच्छे छे, तेनो सार आ छे के पैसाना लोभमां शक्य अथवा

अशक्य कार्यमां विचार्यां विना अशक्य अनुष्ठानमां वर्ते छे, अने लोभनी इच्छा पूरण करवामां व्या- कुल मतिवालो वनीने शुं करे छे, ते कहे छे; ते लोभीओ बीजा प्राणीओना वधमां तत्पर थाय छे, अने बीजा जीवोने शरीर तथा मन संबंधी परिताप करावे छे तेज प्रमाणे बे पगवाळां मनुष्य चार पगवाळां मनुष्य पशु विगोरेनो संग्रह करे छे, तथा जानपद एटले जन पदमां थएला काल प्रष्ट विगोरे अथवा राजा विगोरेनो वध करवा तैयार थाय छे, अथवा लोकोनी निर्दा माटे कृत्य करे छे, एटले आ चोर छे एम बीजानी चुगली करे छे, अथवा पारकानां छिद्र उघाडे छे, अथवा मगध विगोरे देशो जीतवा यत्न करे छे (मूल सूत्रमां क्रियापद नथी लीधुं ते लेवुं)

आ प्रमाणे लोभीआ मनुष्यो वध विगोरे क्रिया करे छे के बीजुं पण पण करे छे ते बतावे छे.

आसविता वृतं (वं) अट्टं इचिवेगो समुद्धिया, तमहा तं विदयं नो सेवे, निस्सारं पासिय नाणी,
उववायं चवणं णच्चा, अणणं चर माहणे, से नहणे न हणावए हणंतं नाणु जाणइ, निविंद
नंदि, अरए पयासु. अणा मदंसित्तिसणणे पावेहिं कम्मोहिं (सू० ११४)

उपर बताव्या प्रमाणे बीजा जीवोनो वध करवो, संग्रह करवो, तथा बीजा जीवोने दुःख देवुं विगोरे पाप करीने पोताना लो- भनी इच्छा पूर्ण करीने केदलाक मनुष्यो भरतचक्रवर्ती विगोरे (ते जीवोना थता दुःखने नजरे देखीने वैराग्य पापीने) मन वचन कायाना दुष्ट व्यापारने धिकारी शुभ व्यापारमां एटले संयम अनुष्ठानमां यत्न करे छे अने महान तपश्चर्या करवाथी तेज भवमां

मोक्षमां जाय छे, अने ते प्रमाणे विचारी संयम अनुष्ठानमां वर्तीने काम भोग तथा हिंसा विगोरे आसन्नद्वारने त्यागीने श्रुं करवु ते कहे छे. जेणे भोग त्याग्या ते माणसे प्रतिज्ञा करीने वीजी बखत भोगना लालचु न थवुं, अथवा जुठ अथवा असंयममां वर्तवु नहि. कारण के पांच इंद्रियोना स्वादने खातर असंयम सेवे छे पण ते विषयो सार विनाना छे कारण के जे सार वस्तु छे ते मेलववाथी तसि थाय छे पण जे वस्तुथी तृष्णा बंधे तेथी ते निःसार छे, एवुं देखीने तत्व जाणनारो साधु विषय अभिलाष न करे, आ मनुष्योना विषयरसो असार छे, अने अनित्य छे एटलुंज नहि पण देवताओनुं पण विषय सुख तथा जीवित अनित्य छे ते वतावे छे. उपपान (उत्पन्न) थवुं, च्यवन (नाश पामवुं) ते जाणीने विषय संगना सुखनो त्याग करजे. कारण के विषयसमूह अथवा बंधो संसार अथवा सर्व स्थान अशाइवत छे तेथी श्रुं करवुं ते कहे छे.

मोक्ष मार्गथी अन्य असंयम छे ते अन्यने छोडीने अनन्य ज्ञानादिक छे, तेनुं सेवन कर, माहण एटले मुनि तेने आ उद्देश आप्यो छे. बळो ते मुनि संयम पाळनारो प्राणीओने दुःख न दे, न हणे, न हणावे, न हिंसा करनारने अनुमोदे, आ प्रमाणे हिंसाथी निवृत थइ चोथुं व्रत पाळे, ते कहे छे विषयथी उत्पन्न थएल जे आनंद तेने धिक्कार, तथा स्त्री विगोरेमां राग रहित थइने आवी भावना भाव, “आ विषयो किंपाक फळनी उपमावाळा छे अने कइवा तुरियाना जेवा कइवां फल आपनारा छे” एम जाणीने ते विषय सुख लेवाना परिग्रहना समत्वने त्यागी दे, हवे उत्तम धर्म पाळवा माटे कहे छे. अन्नम एटले मिथ्यादर्शन अवि-रति विगोरे छे तेनाथी उलटुं अनवम एटले संयम छे, तेने देखवाना स्वभाववाळो ते सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्रवाळो थइने उपर कहा सुजब तुं स्त्री संगनी बुद्धिने दूर कर. विषयोनी निदा कर, आ सूत्रनो परमार्थ छे.

जे अनवमदर्शी छे ते निसन्न छे एटले पाप कर्मोथी खेदी वनीने ते कस्तो नथी, अथवा पाप कर्मोथी दूर रहै छे. वकी बीजा गुणो मेरुववा बतावे छे.

कोहाइमाणं हणिथा य वीरे, लोभस्स पासि निरयं महंतं तम्हा य वीरे विरए वहाओ, छिदिज्ज सायं लहुभूयगामी ॥१॥ गंथं परिणाय इहज्ज ! धीरे सायं परिणाय, चरिज्ज दंते । उम्मज्ज लधुं इह माणवेहिं, नोपाणिणं पाणो समारभिजा सि त्तिवेमि ॥ द्वितीय उद्देशकः ३-२ ॥

क्रोध जेमां पहेलो छे ते क्रोधादि कषायो छे. तथा जेनावहे मपाय ते मान, एटले अनंतानुबन्धी विगोरे कषायोना चार भेदो छे ते अथवा क्रोध अने मान जे क्रोधनुं कारण छे ते गर्वने साधु हणे अने ते हणनारो वीर छे, तथा जेम द्वेषरूप क्रोध मानने हणे, तेमज राग दूर करवा कहे छे. लोभ पण अनंतानुबन्धी विगोरे चार प्रकारनो छे तेनी स्थिति अने विपाकने जो, कारणके तेनी स्थिति सूक्ष्म संपराय नामना दक्षमा गुणस्थान सुधी मोटी छे, अने तेनो विपाक अपतिष्ठान विगोरे नरकवासनी प्राप्ति सुधी छे. तेथी सूत्रमां कहुं छे के “गच्छा मणुआ य सत्तमिं पुढविं” माछलां अने मनुष्यो मरीने सातमी नारकी सुधी जाय छे, ते ममाणे ते मोटा लोभमां परवश भइने सातमी नारकीमां दुःख भोगवे छे.

तेथी शुं करवुं ते कहे छे—

जो लोभथी आबुं दुःख छे तो प्राणी वध विगोरेनी प्रवृत्तिथी नरकमां जवुं न पडे माटे वीर पुरुष लोभथी दूर रहै. वकी शोकने

अथवा संसार भ्रमण करावनार भावश्रोतने दूर कर तथा तुं लघु भूत एटळे मोक्ष अथवा संयम ते तरफ जनारो लघुभूतगामी था, अथवा लघुभूत यवानी इच्छावाळो लघुभूत कामी वन; फरी उपदेश आपे छे तुं बाह्य तथा अभ्यंतर बे प्रकारे गांठने ज्ञपरिज्ञावडे जाणीने हमणांज थीर वनीने परपाख्यान परिज्ञावडे छोट.

वकी विषय अभिजाष ते संसार प्रवाह छे तेने जाणीने दांत एटळे इंद्रियोने दमन करीने संयम पाळ, केवी रीते पाळे ते कहे छे, अहीयां मिथ्यात्वादि शोचालथी आच्छादित संसार कुंडमां जीवरूपी काचवो तुं वनीने श्रुति (ज्ञान भणवुं) श्रद्धा तथा संयममां वीर्य जोडीने काचवो जेम तरी आवे तेम तुं तरीजा, मनुष्य सिवाय मोक्ष नथी, माटे मनुष्यपणां तरवातुं कहुं पण प्राणीनी हिसाना आरंभनां कृत्यो न करतो, पांच इन्द्रियो त्रण वळ भासोश्वास अने आयु ते दश प्राणने धारण करवाथी प्राणी कहेवाय. तेने दुःख न दे, न दुःख देनारां कृत्य कर. आ प्रमाणे शितोष्णियअध्ययनमां बीजो उद्देशो अर्थरूपे पुरो थयो.

सुधर्मास्वामीए जंबुस्वामीने कहुं विगेरे पूर्व माफक जाणवुं.

एनो बीजा साथे आ प्रमाणे संबन्ध छे.

हवे बीजो उद्देशो कहे छे.

गया उद्देशापां दुःख तथा तेने सहन करवातुं वतावुं अने ते सहन न करे तो साधु नहि एटळुंज नही पण संयम अनुष्ठान करे तथा पापकर्म न करे: तोत्र साधु थाय छे. ते आ उद्देशापां वतावे छे. आ संबन्धवडे आवेला बीजा उद्देशाना सूत्र अनुगममां

सूत्र उच्चारयुं जोइए.

संधिं लोयस्स जाणित्ता, आयआ बहिया पास, तम्हा न हंता न विघायए, जमिणं अन्नमन्न-
वित्तिगिच्छाए पडिलेहाए न करेइ पावं कम्मं, किं तरथ सुणी कारुंं सिया? (सू० ११५)

द्रव्यार्थो अने भावार्थी एम वे प्रकारे संधि छे. एटले भीत विगेरेमां फाट पढे ते द्रव्य संधि छे, अने भावार्थी संधि कर्म विवर छे एटले दर्शनमोहनीयकर्म जे उदयमां आवुं ते क्षय थुं अने वीजुं बाकीनुं शांत छे ते सम्यक्त्वनी प्राप्तिरूप भावसंधि छे, अथवा ज्ञानावर्णाय विशिष्ट क्षायोपशमिकभावनने पामेल ते सम्यग् ज्ञाननी प्राप्तिरूप भावसंधि छे, अथवा चारित्रमोहनीय क्षय उपशमरूप भावसंधि जे छे तेने जाणीने विचारजे के प्रमाद करवो सारो नथी.

जेमके लोकमां चोर विगेरे शत्रुना सैन्यथी वेरायेला लोकमां भीत अथवा बेडी विगेरेमां सांधो अथवा छिद्र देखीने प्रमाद करवो सारो नथी तेज प्रमाणे मोक्षायिलापीए कर्म विवर मेळवीने लव क्षण जेवा थोडा कालने पण स्त्री पुत्रनां संसारी सुखनो व्यामोह (प्रेम) करवो सारो नथी; अथवा सांधो तेज संधि छे, ते भावसन्धि ज्ञानदर्शन—चारित्रना परिपालनमां अशुभकर्मना उद-
यथी फाट पढे; तो पाहुं संयाण करीदेवुं. (कुभावनने दूर करवो.)

आ क्षयउपशमिक विगेरे भावलोकना आश्रयी छे, अथवा सूत्रमां विभक्ति बदलीए; तो, सातमी विभक्ति लेतां लोकमां षट्छे, ज्ञानदर्शन—चारित्रने योग्य लोक छे, तेमां भावसन्धि जाणीने अक्षुण्ण (सम्पूर्णा) पाळवाने प्रयत्न करवो.

अथवा सन्धि एटले अवसर धम अनुष्ठान करवानो आव्यो हे तेने जाणीने लोक एटले, १४ प्रकारनां जीवोने उपजवाना १४ स्थान हे, तेने जाणीने जीवोने दुःख देवातुं कृत्य न करवुं. (संघिना ऋण जुदा अर्थ वताव्या. प्रथममां विवर एटले बाहुं अथवा फाट वताव्युं के, यात्रुथी वेरातां अजसर जोहने प्रमाद न करतां नासीजवुं; तेम मोह दूर थतां, संसारथी तरीजवुं; बीजो अर्थ सांघो वताव्यो. एटले, जेम गृहस्थो घरमां फाट पडे; तो, प्रमाद कर्यां विना पुरीदे तेम साधुने पापना उदयथी चारित्रमां दोष लागे; तो, तरत शुद्धि करीले. त्रीजो अर्थ अवसर कर्यो हे. एटले, धर्मना अवसरे धर्म करी बीजा जीवोने दुःख थाय; तेवुं कृत्य न करवुं एम वताव्युं.)

वली कहे हे के:—हे साधु! तुं जेम, पोताना आत्माने सुख व्हाळुं गणे हे, अने दुःख अप्रिय माने हे, तेवी रीते बहारनां जीवो उपर पण मानी ले; अने पोताना आत्मा समान मानीने वधां जीवो सुखना वांच्छक, अने दुःखना द्वेषी जाणीने तेओने न थइश; तेम बीजाओथी जुदा जुदा उपायोवडे तेमनो घात न करावीश.

जो के, बीजा मतना केटलाक साधुओ जीवदयाने मुख्य मानीने स्थूलसत्त्व (मोटा जीव अथवा हालता-चालता जीव) ने मारता नथी; तोपण, तेओ पोताने माटे रंधावीने खाय हे; तथा गृहस्थ माफक, वस्तुनो संचय करवाथी तेमना लीधे, सूक्ष्म (नाना जंतुओ, अथवा एकेन्द्रिय) जीवो विभेरे हणाय हे, तेथी तेओ घातक हे, एटले बीजा पासे हणावे हे, अने हणनारनी अनुमोदना करे हे. (माटे साधुए तेवो पण दोष न लागे: माटे, साधु माटे रंधेळो आहार न वापरवो; तेम, संचय पण न करवो.) हवे एम वतावे हे के. उपर प्रमाणे ऋण करणथी हिंसा न करवी. तेटलाथी साधु न कहेवाय; पण जेमां, पापकर्महुं न करवातुं कारण हे.

ते बतावे छे. अन्योन्य जे शंका अथवा, एकबीजानी भय अथवा लज्जा, ते लज्जावद्दे अथवा लज्जाने ध्यानमांलइने परस्पर आशंका अथवा अपेक्षावद्दे, पापना उपादानरूप—जे कर्मनुं अनुष्ठान छे, ते साधु न करे; एदळुं पाप न करवाथी मुनि कहेवाय एदळे जो, परनी लज्जाथी पाप न करे; तो, ते मुनि कहेवाय? उ०—तेदलाथी मुनि न कहेवाय; पण अद्रोहना विचारवाळो मुनिज निश्चयथी साधु छे. जो, ते प्रमाणे, बीजी उपाधिना वशथी ते निर्मळ भाववाळो न होय; तो मुनि न कहेवो. मुनिपणाना भाववाळो मुनि कहेवाय. एदळे, सूत्रमां सरळ शिष्य गुरुने पुछे छे के:—

कोइ साधु बीजा साधुओना डर अथवा लज्जाथी आधाकर्मादि आहार न छे; तो, ते मुनि भावसाधु कहेवाय के नहि ?
आचार्य कहे छे बीजो व्यापार छोडीने सांभळ.

बीजी उपाधि जे पापना व्यापाररूप छे, तेने त्यागवाथी भाव साधुपणुं थाय छे, एथी एम समजवुं के, अंतःकरण निर्मळ करीने साधुनां अनुष्ठान करे; तेज भावमुनिपणुं छे, शिवाय नहि.

उपर कहेल अभिप्राय निश्चयनयनो छे. हवे, व्यवहारनयनो अभिप्राय कहे छे:—जे सम्यक्दृष्टि छे, अने पंचमहाव्रत स्त्रीधेलां छे, तेनो भारवहन करवामां प्रमाद करीने पण बीजा समान साधुनी लज्जावद्दे, अथवा गुरु महाराजना भयथी अथवा गौरव (पोतानां उत्तम कुळ विगेरेना कारणे कोइ साधु आधाकर्म विगेरे दोषिन आहार विगेरे छोडी पडिलेहणा विगेरे क्रिया करे; अथवा तीर्थनी शोभा माटे महिनाना उपवास विगेरे लोकप्रसिद्ध क्रिया करे; तो, तेमां तेना मुनिभावपणानुंज कारण जाणवुं. कारणके; तेवी धर्म-क्रिया करतां परंपराए (धीरे धीरे) तेनी शुभ भावनी उत्पत्ति यशे.

आत्मा०

॥४६९॥

आ प्रमाणे शुभ अंतःकरणना व्यपारधी रहित साधुना साधुपणां सत् असद्भाव बताव्यो; त्यारे विषय पूढे छे केः—निश्च-
यनयनो मुनिभाव केवीरीते छे ? तेनो विशेष खुलासो बाल्ककार कहे छेः—

समयं तरशुवेहाए अप्पाणं विपपसाणीए—अणन्न परमं 'नाणी; नो पमाए कायाइवि । आय-
गुत्ते सया वीरे, जाथामायाइ जावए' ॥ १ ॥ 'विरागं' रुवेहिं गच्छिजा महया खुड्डएहि य,
आगइं गइं परिणाय दोहिवि अतेहिं अदिस्ससाणेहिं से न छिज्जइ न भिज्जइ 'न' उज्झह
'न' हंसइ कंचण सबलोए (सू० ११६)

समभाव ते, समता तेने विचारिने एटले, समतामां रहेलो साधु जे जे करे छे, ते ते कोइपण प्रकारे दीपित आहार विगरे
लज्जा विगरेथी छोडे; अने लोकमां देखाडवा उपवास विगरे करे; ते वधु मुनिपणाता भावतुं कारण छे. अथवा, समय ते जैना-
गम छे, ते आगममां वनावेली विधिए विचारिने संयम—अनुष्ठान करे; ते वधुं मुनिभावतुं कारण छे, एटले आगममां कखा प्रमाणे
चालीने अथवा, समताने वारण करीने आत्माने प्रसन्न राखे; अथवा, आगम भणीने विचारिने अथवा, समदृष्टि राखीने जुदा
जुदा उपयोवडे इन्द्रियो तथा मनना अपमाद विगरेथी आत्माने प्रसन्न करे; अने आत्माने प्रसन्न राखवो; ते संयममां रहेअथी
थाय छे, अने तेमां हमेशा साधुए अपमादीपणुं भाववु तेज कहे छेः—

मूळ सूत्रमां 'अणण' विगरे श्लोक छे तेनो अर्थ कहे छेः—

जेनाथी वीजुं कंइ मोडुं नर्था; ते अनन्य परमसंयम छे, तेने परमार्थ जाणनारो ज्ञानी प्रमादवढे दोष न लगाई. अर्थात् संय-
मक्रियामां कोइपण वखत प्रमाद न करे. हवे जेम अपमानी थवाय ते वतावे छे.

इन्द्रियो तथा मन ए वन्नेनी आत्माने कुमार्गे न जवा दइ गुप्त राखे ते आत्मगुप्त साधु जाणवो, तथा हंमेशां यात्रा ते संयम
यात्रा अने संयम निर्वाहमां मात्रा वापरे ते यात्रा मात्रा कहेवाय, मात्रानो अर्थ अतिआहार न छे, एदले आत्माने जेवीरीते संय-
ममां शक्ति रहे पण इन्द्रियो उन्मत्त न थाय, अने संयमना आधाररूप देहनुं प्रतिपालन लांबा काल सुयी थाय, तेवीरीते आहार
विगेरे वापरे. कहुं छे के:—

आहारार्थं कर्म कुर्यादनिन्द्यं, स्यादाहारः प्राणसन्धारणार्थम् । प्राणाः धार्यस्तत्त्वजिज्ञास-

नाय, नत्वं ज्ञेयं येन भूयो न भूयात् ॥१॥

आहार माटे निर्दोष गोचरी वापरे कारण के आहार छे ते प्राणोने धारण करवा माटे छे, अने ते प्राणोतत्वनी जीज्ञासा
पूर्ण करवा माटे धारयाना छे, कारण के एहुं तत्व जाणहुं वारंवार जन्म लेवो न पडे.

हवे ते आत्मा गुप्तता केवीरीते थाय ते गुरु वतावे छे.

विराग एदले मनोहररूप आंखो आगळ आवे, तो पण तेमां प्रेम न करे, अहिं रूप लेवाहुं कारण आ छे के ते रूप सुंदर
देखतां गमे तेवाहुं मन खेची छे छे, तेथी सूत्रमां रूप लीयुं छे, खरीरीतेतो पांचे विषयोमां विरागी बनहुं, तथा दिव्य भावहुं

रूप होय अथवा शुद्धक एटले मनुष्यरूप होय (देवांगना अथवा सुंदर रूपवाली स्त्री देखीने) तेमां ललचाय नहिं, अथवा देव संवन्धी के मनुष्य संवन्धी मोडुं नातुं रूप एटले तेमां पण मध्यम रूपवाली के घणा रूपवाली देवी के स्त्री होय तो तेमां ललचातुं नहिं, अहि "नागार्जुनीया" कहे छे.

विसयंमि पंचगंसीवि, दुविहंमि तियं तियं ॥ भावओ सुट्टु जाणिचा, से न लिपड दोसुचि ॥१॥

शब्द विगेरे पांचे प्रकारना विषयोमां तथा वन्ने प्रकारमां एटले जे इष्ट अनिष्ट छे, तेमां हीन मध्यम उत्कृष्टने भावथी एटले

परमार्थथी जाणीने रागद्वेषवदे पाप कर्मथी न लेपाय, अर्थात् तेमां रागद्वेष न करे, तेमां थुं आलंवन ले के रागद्वेष न थाय ते कहे छे. आगमन तथा गमन ते तिर्यंच अने मनुष्यने चारे गतिमां आववा जचातुं छे. तथा देवता नारकीने तिर्यंच मनुष्यमांथीज आवतुं जतुं छे, नारकी माफक देवने पण बेज गति अगति छे, फक्त मनुष्यने मोक्ष गतिनो सद्भाव होवाथी पांच गति छे, आ प्रमाणे जीवने गति आगति थाय छे ते विचारीने संसार चक्रवाळमां कुचाना अरटना न्याये भ्रमण छे, ते समजीने अने मनुष्यपणापां मोक्ष मळे छे तेतुं जाणीने सुगतिनो अंत लावनार जे रागद्वेष छे तेने दूर करीने आगति गतिने आपनार रागद्वेष जाणीने ते वन्नेने दूर करी कोइ पण जीवने पोते तरवार विगेरेथी छेदे नहिं, तथा भाला विगेरेथी भेदे नहिं, तथा अग्नि विगेरेथी बाळे नहिं तथा नरकगति विगेरे अथवा अनुपूर्वी विगेरे घणी वार विचारीने पोते हणे नहि.

अथवा रागद्वेषनो अभाव थाय तो उपर कहेलां पाप पोतानी मेळे दूर थाय, एटले रागद्वेष छोडनारो सुनि छेदवा विगेरेना

कृत्य पोते न करे, सूत्रमां 'कंचण' विगरे छे तेनी विभक्ति बदलीने जीजीमां अर्थ लइए, तो एम थाय के 'केनचित् कोइपण माणस एवो नथी के आ वधा लोकमां रागद्वेष विनातो होय ते रागद्वेषना अभावे छेदे, भेदे, अर्थात् रागद्वेष छोड्या पछी छेदे भेदे नहिं. जो के आ प्रमाणे गति आगतिला ज्ञानथी रागद्वेषनो त्याग थाय छे, अने तेना अभावथी छेदनादि संसार दुःखनो अभाव थाय छे, तेहुं मुनि जाणे छे, पण वर्तमान सुखछे देखनारा अमे कयांथी आव्या कयां जइशुं? अथवा अमने त्यां शूं मळरो, एवो विचार नथी करता, तेथी रागद्वेष करीने नवां कर्म बांधीने संसार झ्रमणनी योग्यता अनुभवे छे. एवुं सूत्रकार बतावे छे.

अवरेण पुद्धिं न सरंति एगो, किमस तीयं किं वाऽऽगमिस्सं । भासंति एगो इह माणवाओ,
जसस्स तीयं तमागमिस्सं ॥१॥ नाईयमट्टं न य आगमिस्सं, अट्टं नियच्छन्ति तहागयाड ।

विहय कप्पे एयाणुपस्सी, निज्झोसइत्ता खवगे महेस्सी ॥२॥

उपरनां वे सूत्र गाथानो अर्थ कहे छे. पहेलां हुं कोण हतो ? के हुं हाल आबो छुं? एवुं केटलाक मोह अने अज्ञानथी येरा-येली बुद्धिवाला जीवो जाणता नथी, एटले आ जीवने नरकादि भवथी उत्पन्न थयेछुं अथवा बाल कुमार विगरे वयवाकुं एकहुं थयेछुं पूर्वहुं दुःख विगरे केवी रीते आवेछुं छे? अथवा, भविष्यमां केवी रीते थरो? एटले, आ विषय सुखना बांझरु, अने दुःखना दुःखेपी जीवहुं भविष्यकालमां शूं थरो? ते तेआं जाणता नथी; पण जो, कदी तेओना हृदयमां भूत—भविष्यनी विचारणा होत; तो, तेओने संसारमां रति (आनंद) थात नही, कहु छे के:—

केण ममेत्थुत्पत्ती कहं इओ तह पुणोऽपि गंतव्वं ? ओ एत्थियंपि चित्तइ इत्थं सो को न निद्विण्णो ? ॥१॥

अहीं मारी उत्पत्ति केवीरीते थइ छे ? अने अहीथी मारे कयां जवुं छे ? जे माणस आदळुं पण, अहीं चित्तवे; तो, तेवो केम दुःख-संसारथी वैराग्यवाळो न थाय ? (अर्थात् थायज !) पण, केटलाक महाभिश्च्यज्ञानिओ कह छे के:—आ संसारमां अथवा मनुष्य-लोकमां जेवीरीते हाल मनुष्यो के, बीजां प्राणीओ जेवी अवस्थामां छे, तेवीजरीते भूतकाळमां स्त्रीपुरुष नपुंसक सौभाग्य-वाळो, दुर्भाग्यवाळो, क्लृप्तो, शीयाळ, ब्राह्मण, क्षत्री, विदशुद्र विगोरे भेदोमां भोगवता हतां; अने तेवुंज भविष्यमां थवानुं छे. (आ प्रमाणे जैनेतर एकवादीनो मत कह्यो. ते लोको एवुं माने छे के जेम जीवो हालनी दशामां छे, तेवा भूतकाळमां हता; अने हवे पछी रहेशे.) (बीजो अर्थ) जेनाथी बीजो पर (श्रेष्ठ) नथी ते संयम अपर छे, तेनाथी जेनुं चित्त रंगायळुं छे. तेओ पूर्वे भोगवेलां विषयसुख विगोरेने (स्थूलभद्रमुनि माफक) याद करता नथी. केटलाक रागद्वेषथी सुकायला भविष्यना देव संबधी भोगोनी आकांक्षा राखता नथी. वळी आत्मा-रमणतामां रमता मुनिओने अमुक संसारी जीवने भूतकाळनुं सुखदुःख के, भविष्यनुं थवानुं सुखदुःख लक्ष्यमां रहेंतुं नथी; अथवा उत्तम ध्यानमां वेठेला साधुने केटलो काल बीतीगया; अथवा केटलो बाकी रह्यो ते पण लक्ष्यमां नथी. अथवा लोकोत्तर पुरुषो जेओ रागद्वेषरहित छे, तेवा केवळी भगवंतो, अथवा चउदपूर्वी मुनिओ संसारी जीवने अनादि अनन्तकाल सुधी (अभव्य आश्रयी, अथवा बीजां बधा जीव आश्रयी) दरेक कालमां सुख विगोरे केटलां हतां, अने आवशे तेनी गणतरी पण कही सकता नथी.

वीजा आचार्यो नीचे प्रमाणे कहे छेः—(प्रथमतुं सूत्रकाव्य) वीजी रीते कहे छेः—

“अवरेण पूर्वां किह से अनीतं, किह आगमिरसं न सरंति एगे ॥

भासन्ति एगे इह माणवाओ, जह स अईअं तह आगमिरसं ॥१॥”

पूर्व जन्म साथे वीजा जन्मनो सवन्ध जाणता नथी, के केवीरीते अथवा क्या प्रकारे पूर्व सुख दुःख हतुं, अने भविष्यमां केयो रीते सुख दुःख थरो ते जाणता नथी. अथवा वीजा वादीओ आम बोले छे के.

आमां शुं जाणवानुं छे? केवीरीते हमणां पूर्वना रागद्वेषथी उत्पन्न थएला कर्मवडे जीवने बन्धायलां कर्मनां फल संसारमां भोगववां पहे छे. तेमज पूर्व पण हतुं अने भविष्यमां थवानुं छे, (तेमां वधारे शुं जाणवानुं छे?)

अथवा प्रमाद विषय कषाय विभेरेथी कर्मो एकठां थवाथी इष्ट अनिष्ट विषयोने अनुभवता जीवो सर्वज्ञनी वाणीरूप अमृतना स्वादने न जाणनारा जेओ छे, तेमने जेम भूतकालमां संसारमां सुख दुःख अनुभव्युं, तेवुं भविष्यमां पण अनुभवरो.

पण जेओ संसार समुद्रथी तरवावाळा छे, तेओ कर्मनुं फल जाणे छे, ते वतावे छे, ते सूत्रना वीजा काव्यमां कहे छे जे जीवोनुं संसारमां फरी आववुं नथी. तेओ सिद्ध छे, अथवा जेवुज जाणवानुं छे तेवुंज तेमने ज्ञान छे. तेवा सर्वज्ञो छे, तेओ अतीत (जुना) पदार्थने भविष्यना रूपणे नथी मानता, तथा भविष्यना पदार्थने भूतकालना रूपणे नथी मानता, कारण के परिणतिनी विचित्रता छे, मूत्रमां “अर्थ” शब्द फरी जेवानुं कारण ए छे के पर्यायरूप बदलाय छे (बाळक जुवान बुढो ए पर्याय छे अने ते

बदलाय छे) पण द्रव्यार्थपणे तो त्रणे अवरथायां एकपणुंज छे (वाळपणयां अने बुढापणयां जीवनी भेद नथी.)

अथवा अतीत अर्थ ते विषय भोगादिक भोगवेळां अने भविष्य संबंधी देवांगनाना विलासने भोगवचानां छे. तेने जेओ राग-द्वेषना अभाववाळा छे तेओ याद करता नथी अथवा वांछता नथी. (तु शब्द विशेष बलावे छे) जेम मोहना उदयथी केटलाक पूर्वना अथवा भविष्यना भोगोने वांछे छे, तेम सर्वज्ञ भोगोने इच्छता नथी; अने तेना मार्ग (ज्ञासन) यां चालनारा पण एवाज निःस्पृही होय छे ते बलावे छे, 'विहय कल्पे.'

एटले अनेक प्रकारे आठ प्रकारना कर्मने धोनार ते विधूत छे, अने कर्म धोवुं ते साधुनो आचार छे, तेवो कल्प पाकनार साधु विधूत कल्पवाळो कहेवाय, अने तेज सर्वज्ञनो अनुदर्शी कहेवाय छे, अने ते अतीन अनागत विषयसुखनो अभीलाषी न होय, वळी तेने वीजा कया गुणो होय ते कहे छे.

पूर्व वांछेलां अशुभ चीकणां कर्मनो क्षपक एटले नास करनारो छे, अथवा ते भविष्ययां नाश करनारो थरो [सूत्रयां 'निज्जोस इत्ता' शब्द छे, तेनो अर्थ वर्तमान अने भविष्यनो लीधो छे]

कर्म नाश करवाने जे मुनि उद्यम करे ते धर्मध्यान अथवा शुक्र ध्यान ध्यानार महा योगीश्वरने संसारना सुख दुःखना विकल्पनो नाश थनाथी हवे शुं थरो ते बलावे छे.

का अरई के आणंदे?, इत्थंपि अगहे चरे, सत्वं हासं परिच्चल आलीणयुत्तो परिवष्ट,

पुरिसा! तुममेव तुमं मित्रं किं बहिया मित्रमिच्छसि? (सू० ११७)

इच्छित वस्तुनी अपाप्ति अथवा इष्ट वस्तुनो नाश यतां मनमां जे विकार थाय ते अरति छे, अने इच्छित वस्तुनी प्राप्तियां आनंद थाय छे, आ अरति के आनंद योगिना चित्तमां होतो नथी, कारणके ते महात्माने धर्मध्यान के शुक्लध्यानमां चित्त रोकावाधी तेने संसारी वस्तुनी अरति के आनंद उत्पन्न थवाना कारणनो अपाव छे. तेथी सूत्रमां कहुं के अरति अने आनंद ए श्रुं छे? (अर्थात् कंडज नथी) पण संसारी जीवनी माफक तेमणे ते विकल्पने राख्यो नथी.

जो आ प्रमाणे होय तो तेवा जीवने असंयममां अरति अने संयममां आनंद तेने होवो जोइए एम सिद्ध थयुं, तेहुं आचार्य समाधान करे छे, के तेहुं नथी अने अमारो अभिप्राय तमे समझ्या नथी, कारण के जेमां रति अरतिना विकल्पनो अध्यवसाय निषेध कर्यो छे, तो बीजा प्रसंगमां पण रति अरति न होय तेज सूत्रकार कहे छे; ए महात्माने अरति अने आनंद वने दूर थवा रूप छे एटले तेमने तेवो आग्रह नथी तेथी ते 'अग्रह' कहेवाय छे, एनो भावार्थ आ छे के उत्तम साधु शुक्ल ध्यानथी बीजे कंड रति आनंद कोइ निमित्ते आवे तो पण तेना आग्रह रहित वने, अने ते वन्नेमां मध्यस्थ रहे (संयम अने असंयम व्यवहारथी बाह्य क्रियारूप छे, शुक्ल ध्यानवाळाने ते बाह्य क्रियाओनी श्रेणीमां जरूर नथी; अने ते ध्यानवाळाने थोडा समयमां केवलज्ञान थवाहुं छे. ते अपेक्षाए आ वचन छे के, संयममां रति, असंयममां अरति न होय; परंतु शुक्लध्यान शिवायना बीजा आत्मार्थी साधुने तो कंडक होय छे) फरी उपदेश आपे छे, सर्व हास्य, अथवा हास्यनां कारणो तजे; अने मर्यादांमां रही इन्द्रियोने कवजे राखी लीन रहे;

तथा मन, वचन, कायानी सावय-क्रिया छोडवाथी गुप्त रहै; अथवा काचवा माफक पोतानुं शरीर संभाली राखे; के, कोइ जीवने पीडा न थाय; ते संहतगात्र मुनि छे, अने ते आलीन गुप्त बहेवाय छे, तेचो मुनि साधुनां अनुष्ठाननो बरोबर रीते करे.

ते सुष्ठु साधुने पोतानां आत्मवळथी संयम-अनुष्ठान फळवाळुं थाय छे, पण पारकाना उपरोध (आग्रहथी) नहीं एम वतावे छे. गुरु शिष्यने कहे छे:—हे पुरुष! जो, तें ग्रह (वर) पुत्र, स्त्री, धन-धान्य, सोनुं विनोरेथी रहित तृण अने मणि-मोतीमां, तथा देहुं सोनामां सपानदष्टि राखनार मोक्षार्थी जीवने पण कदाच उपसर्ग भावतां व्याकुळ मति थतां मित्र विनोरेनी आकांक्षा थाय; तो ते दूर करवा कहे छे:—(हे शिष्य!) पुरुष एटले, सुखदुःखथी पूर्ण माटे पुरुष अथवा पुरिमां शयन करवाथी पुरुष (जीव) छे, तेमां वधा जीवोमां उपदेश, तथा संयम-अनुष्ठान करवामां मनुष्य योग्य होवाथी तेने आश्रयी कहे छे. एटले सुशिष्यने कहे; अथवा कोइ पुरुष संसारथी खेद पांमेलो खराव अवस्थामां होय; अने ते पोताना आत्माने शीखामण आपतो होय; अथवा अन्य भव्यात्माने साधु उपदेश आपे के—

“ हे पुरुष! हे जीव! सारां अनुष्ठान करवाथी तुंज तारो मित्र छे, अने पापकर्म करवाथी तुंज तारो शत्रु छे! तोपळी, बीजा मित्रने केम बोधे छे? कारण के, उपकार करे ते मित्र छे अने ते उपकारी परमार्थ-दष्टि ए अत्यंत अने एकांत-गुण युक्त सन्मार्गो चालता आत्माने छोडीने बीजो कोइ बोधवो भक्ष्य नथी; अने संसारनां कार्यमां सहायकारीपणे बीजाने मित्रपणे मानवो ते मोहनुं विजुंभन (चेष्टा) छे. कारण के संसारीनी मित्रताथी परिणामे मोटा दुःखमां पडवारूप संसार समुद्रमां भ्रमण कराववाथी ते खरी रीते अमित्रज छे! तेनो सार आ छे.

“आत्मान आत्मानो अपमत्तपणाथी मित्र हे. कारण के अपमत्त आत्मा अत्यन्त एकान्त परमार्थ सुख उत्पन्न करे हे. अने जो आत्मा प्रमादी थाय तो दुर्गतिमां जाय, माटे बीजा मित्रने शोधवानी जरूर नथी. पण आत्मा शिवाय बीजो बहारनो आ मित्र आ शत्रु एवो विकल्प अदृष्ट उदयना निमित्तथी औपचारिक हे. कहुं हे के—

दुपरिथओ अमित्तं, अट्पा सुपरिथओ अ ते मित्तं ॥ सुहदुक्खकारणाओ, अट्पा मित्तं अमित्तं च ॥१॥

कुमारों गयेलो आत्मा शत्रु हे, सुमारों चालनारो मित्र आत्मान हे. कारण के तेथीज दुःख सुख पासे हे अने तेथीज ते अपित्र के मित्र हे. वळी कहुं हे के—

अट्येकं सरणं कुर्यात्, संकुद्धो बलवानरिः ॥ सरणानि त्वनन्तानि, जन्मानि च करोत्ययम ।.२॥

एक बळवान शत्रु क्रोथायमान थइने पणुं तो एक वार मारी नाखरो, पण कुमारों गयेलो आत्मा अनंतां जन्मसरण आपे हे. ” एटले एम समजवुं के निर्वाण आपनार संयमव्रतने जेणे उचर्या अने पाळ्यां ते आत्मानो मित्र हे. हवे आवो पवित्र आत्मा केवीरीते जाणवो अने तेहुं शुं फळ थरो. ते करे हे.

जं जाणिजा उच्चालइयं तं जाणिजा दूरालइयं, जं जाणिजा दूरालइयं तं जाणिजा उच्चालइयं,
पुरिसा! अत्ताणमेवं अभिणिगिज्झ एवं दुक्खा पमुच्चसि, पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि,

आचा०

॥४७९॥

सञ्चरस आणाए से उवट्टिए मेहावी मारं तरइ, सहिओ धम्ममायाय सेयं समणु परसइ (सु०११८)

जे पुरुष विषय संगनां कर्म जाणीने छोडनार होय तेने तुं तारनारो मानजे; तथा वधां पाप धर्मो (कारणो) ने जे आलय

(धर) दूर छे. ते दूरालय (मोक्ष) अथवा मोक्ष मार्ग (संयम) छे. ते मोक्ष मार्ग जेने होय ते दूरालयिक छे,

हवे हेतु तथा हेतुवाळो पदार्थ जणाववा गत प्रत्यागत सूत्र कहे छे.
 (बीजी रीते) कहे छे, जेने दूरालयिक जाणे तेने उच्चालयिक (तारनारो) जाणे, एनो सार आ छे. जे कर्म तथा आस्वव द्वारनो रोकनार छे तेज मोक्ष मार्गमां रहेळो छे अथवा मुक्त थएळो छे अथवा जे सन्मार्गो वर्त्तन करे ते कर्मनो काढनारो छे. अने तेज आत्मानो मित्र छे, तेथी कहे छे, हे पुरुष! हे जीव! आत्मानेज ओळखीने धर्मध्यानथी वहार इन्द्रियोना विषयस्वादने लेता मनने रोकने आ प्रकारे दुःखना पासामांथी आत्माने मुक्तावजे! ए प्रमाणे कर्मोने दूर करी आत्मा आत्मानो मित्र वनें छे. वळी गुरु कहे छे, हे पुरुष! सदाचरणवाळा पुरुषतुं हित करनार सत्य तेज संयम छे. ते संयमनेज बीजा व्यापारथीज निरपेक्ष तुं वनीने जाण, अने ते प्रमाणे वर्त्तवानी परिज्ञावडे प्रयत्न कर, अथवा आजसत्य जाण, के हे शिष्य! गुरु साक्षिण् लीधेळां महाव्रतोनी प्रतिज्ञानो निर्वाहकथा, अथवा सत्य एटले जैनागम, तेतुं संपूर्ण ज्ञान मेळव, अने मोक्षाभिलाषीण् ते प्रमाणे व्रतोतुं पालन करतुं.
 प०—शा माटे? उ०—सत्य जैनागमनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तने मेघावी (बुद्धिमान) साधुमार [संसार] ने तरे छे. वळी सहित ते ज्ञानादिथी युक्त अथवा हित सहित श्रुत चरित्र वने प्रकारना धर्म ग्रहण करीने साधु शुकं करे, ते कहे छे.

श्रेय ते पुण्य अथवा आत्महितने बरोबर रीते देखे (ते मोक्ष मेळवे) आ प्रमाणे अप्रमत्त साधु तथा तेना गुणो वताव्या हवे तेथी उलटुं कहे छे.

दुहजो जीवियस्स परिवंदणसाणपूयणाए, जंसि एगे पसायंति (सू० ११९)

रागद्वेष, ए वे प्रकारे अथवा आत्मा के बीजा माटे अथवा आ लोक परलोक माटे अथवा रागद्वेष ए वे प्रकारे हणायलो अथवा खराब रीते हणायलो ते द्विहत अथवा दुर्हत (दुःखी) होय ते शुं करे छे. ते कहे छे. आ जीवित केळना गर्भ माफक निःसार छे, तथा बीजळीना चळकाटना झवकारा माफक वंचळ छे. तेवा शरीरना परिवदन (वंदन कराववा) मानन (मान मेळववा) तथा पूजन (पूजावा) माटे हिंसा विगोरे पापोमां पवर्ते छे. परिवंदन ते लोको मारा पळ्याडे भमे ते माटे प्रयत्न करे छे, एटले लावक विगोरेना मांसथी मारुं बहुं शरीर शुष्ट तथा सुंदर देखीने लोको खुशीथीज मने वांदशे, तये श्रीमान् घणा लावो वर्ष जीवो! विगोरे बोलशे विगोरे परिवंदन छे. तेज प्रमाणे मान मेळववा कर्म वांधे छे के, लोको मारुं वळ पराक्रम देखीने अभ्युत्थान, विनय, आसन दान, तथा अंजलि करी मायुं नमावी मने मान आपशे. ते मान न (मान) छे, तथा पूजन माटे वर्त्तनारा कर्म आत्मवचडे आत्माने वांधे छे. एटले, विद्या भणीने हुं धनवान थवाथी बीजो माणस दान, मान, सत्कार प्रणामवडे मारी सेवा विशेष प्रकारे करी पूजा करशे, ते पूजन छे, वळी, उपरना निमित्ते, एटले वंदन विगोरे माटे केटलाक जीवो रागद्वेषथी हणायला प्रमाद करे छे, पण तेओ पोताना हितने माटे हित (धर्म) करना नथी. एथी उलटुं कहे छे:—

सहिओ दुबखमत्ताए पुट्टो ना झंझाए, पासिमं दविए

लोकालोकपवं चाओ सुच्चइ (१२०) तिवेमि तृतीय उद्देशो ॥३-३॥

ज्ञानादि युक्त अथवा हितवाळो उपसर्गशी आवेलां दुःख मात्रशी अथवा रोग थवाशी पीडातां व्याकुल मतिवाळो न थाय ते दूर करवा प्रयत्न न करे, अथवा इच्छेछुं मळतां राग विकल्प तथा अनिष्ट मळतां द्वेष विकल्प न करे, अर्थात् रागद्वेष वन्नेने तजे (न सहेवाय तो मध्यस्थ वनी दवा करे, अने स्थविर साधुने योग्य उपायनो निबध न होवाशी संतोषशी करे)

वळी उपर कहेला वधा उद्देशाना रहस्यने समजीने करवुं न करवुं ते विवेकशी समजे! कोण? जे मोक्षमां जवा योग्य छे ते साधु, ए विवेकी साधु क्या गुणो मेळवे?

जे आलोक्याय (देखाय) ते लोक छे, अने १४ रजु प्रमाण ते छे. लोकमां आलोक ते लोकात्रोक छे, तेना प्रपंचशी युक्त थाय छे. लोकमां प्रपंच आ छे. पर्याप्त, सुभग दुर्भग तथा नारकीना जीवपणे ओळवाय एकेन्द्रियमां अपर्याप्त, एकेन्द्रियपणे ओळवाय ए प्रमाणे वधो संसारी प्रपंच जाणवो. तेनाशी मुकाय एटले चौद राजलोकमां जीवोनुं जुहुं जुहुं रूप तेने मळतां ते नामे गणाय छे. तेवो पोते नहीं थाय.

आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे, जीजो उद्देशो अर्थशी समाप्त.

चौथो उद्देशो.

त्रीजो पुरो थवा पछी चौथो कहे छे तेनो आ प्रमाणे संबन्ध छे. गया उद्देशामां कहुं के फक्त पाप न करवाथी के दुःख सहन करवाथी साधु न कहेवाय, पण निष्प्रत्युह (अविघ्नपणे) संयम अनुष्ठान करवाथी साधु थाय. ते वताव्युं. अने निष्प्रत्युहता (अविघ्नपणुं) कषायने दूर करवाथी थाय छे. तेथी हवे पूर्वे कहेल उद्देशाना अर्थाधिकारवाळुं सिद्ध करे छे, तेथी आ प्रमाणे संबन्धे आवेल उद्देशाना सूत्र अनुगममां सूत्र कहे छे.

सं वंता कोह च माणं च मायं च लोभं च एयं पासगस्स दंसणं

उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स आयाणं सगडडिभ (सू० १२१)

ते साधु ज्ञानादि सहित दुःख मात्रथी वेरायलो छतां अव्याकुल मतिवाळो आत्मद्रव्य भूत लोकालोक प्रपंचथी मुक्त थया जेवो पोतानुं तथा परनुं हित वगाडनार क्रोधने वमन करनारो छे (वम धातुनो अर्थ दूर करवाना अर्थमां छे तेनो भविष्यकाल लइए तो बीजी विभक्ति लागे, नहितो छठी विभक्ति लागु पडे) अर्थात् शास्त्रमां कहेल अनुष्ठानने जे साधु विधि प्रमाणे करे, ते थोडा काळमां क्रोधने दूर करशे ए प्रमाणे बीजे पण समजी लेबुं. एटले पोताना उपघात करनार उपर क्रोध कर्मना विपाकना उदयथी क्रोध थाय, जाति कुल रूप वळ विगेरे चारणे जे गर्व थाय ते मान छे, परने ठगवा रूप विचार ते माया छे. तृष्णाना आग्रहनो परिणाम ते लोभ छे. ते वथाने क्षपणा (कर्म खपाववा) तथा उपशम (शांत करवा) तेने आश्रयी आ क्रोध विगेरे चारनो अनुक्रम छे. अनं-

तानुबन्धी अपत्याख्यानी प्रत्याख्यानी तथा संजवलनी अंदर रहेल भेदो बताववाने माटे जुदा जुदा बताव्या छे, अने चशब्द मुकवाथी ते दरेकनी उपमा पर्वत पृथ्वी रेणु जळ राजीनी क्रोधनी छे, तथा शैल स्तंभ हाडकुं लाकडुं तिनिशलता माननी छे, तथा वांस कुडंगी (थडीडं) मेष श्रंग गोसुत्रिका अवलेखनीनी उपमा. मायानी छे, तथा कृमीराग कर्दम खंजन हरिद्रानी उपमा लोभने छे, तथा आखी जींदगी सुधी एक वरस सुधी चार मास अने पंदर दिवसनी स्थिति अनुक्रमे दरेकनी छे, (आ बघानुं वर्णानि आज सूत्रमां पाने छे त्यांथी जोडुं.)

आ प्रमाणे क्रोध, मान माया लोभ त्यागवाथी खरी रीते साधुपणुं छे पण क्रोध होय त्यां सुधी साधुपणुं नथी; कहुं छे के:—
सामणमणुचरंतस्स कसाया जस्स उक्कडा हुंति । मन्नामि उच्छुपुप्फं व निप्फलं तस्स सामणं ॥१॥

साधुपणुं पाळता साधुने जो कषायो बधारे प्रमाणमां होय तो शेखडीना फुल माफक तेनुं साधुपणुं हुं निष्फळ मानुं छुं. ॥

जं अज्जिअं चरित्तं देसूणाएवि पूवकोडीए । तंपि कसाइयमेत्तो हारेइ नरो सुहुत्तेणं ॥२॥

पूर्व कोडीमां थोडा वर्ष ओछां एवु (आटली लांबी सुदतनुं) चारित्र पाळ्युं होय, ते जो उत्कृष्ट क्रोध करे तो ते माणस एक सुहुत्तमां साधुपणुं हारी जाय छे. आ वधुं पोतानी बुद्धिथी नथी कहुं एवुं बताववा गौतमस्वामी कहे छे के 'एय' विगेरे आ कषाय दूर करवानुं हमणा उपर बताव्युं, ते वधुं सर्वदर्शी पश्यक साक्षात् देखे छे, कारण के तेने निवारण (केवल) ज्ञानदर्शन छे, अने ते पश्यक तीर्थकृत् वर्षमना स्वामी छे, अने तेमनुं दर्शन (अभिप्राय मंतव्य) आ छे.

અથવા જેનાત્રટે વસ્તુ તત્ત્વ યથાવસ્થિત દેખાડાય (કહેવાય) તે દર્શન એટલે ઉપદેશ છે, અર્થાત્ મહાવીર (વર્ધમાન) સ્વા-
મીનું કહેલું છે તે હું કહું છું પણ સ્વબુદ્ધિથી નથી કહેતો, તે સર્વદર્શી પર્યક કેવા છે. કે જેનું આ દર્શન છે તે કહે છે,
'ઉવરય' વિગેરે—જેનું દ્રવ્ય ભાવથી (સર્વ જીવોને દુઃખ દેવારુપ) શસ્ત્ર વંને પ્રકારે દૂર થયું છે, અથવા શસ્ત્રથી પોતે દૂર રહેલા
છે, અહીં ભાવશસ્ત્રમાં અરાંયમ અથવા કપાયો જાણવા, તેનાથી પોતે દૂર છે. તેનો ભાવાર્થ આ છે કે:—

તીર્થકરને પણ કપાયને વસ્યા સિવાય નિરાવળ વયા પદાર્થને દેખનારું પરમ (કેવલ) જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતું નથી, તેના અભાવમાં
મોક્ષ સુખનો અભાવ છે, એથી વીજો પણ મોક્ષ વાંછક સાધુ જે તેનો ઉપદેશ માને છે અને તેના માર્ગે ચાલે છે તેણે પણ કપાયનું
વમન કરતું, શસ્ત્રને ઉપરમનું કાર્ય વતાવી વીજાપણ તીર્થકરનાં વિશેષણ વતાવે છે. 'પલ્લિયતકરસ્સ' એટલે વધાં કર્મનો અથવા સંસા-
રનો અંત લાવવાનો જે યત્ન કરે તે પર્યંતકર છે, તેનું આ દર્શન છે.

હવે જેમ તીર્થકરે સંયમને વિગ્ન કરનાર કપાય શસ્ત્રને દૂર કરી સંતારનો અંત કર્યો તેમ વીજો પણ સાધુ જે તેનું કહેલું કરનારો
હોય તે પણ કરે, તેનું વતાવે છે.

'આયાળ' વિગેરે જેનાવડે આઠ કર્મ આત્મ પ્રદેશ સાથે. એકમેકપણે થાય તે આ દાન છે, અથવા હિંસા વિગેરે આશ્રવદ્વાર
અથવા અઢારે પાપસ્થાન છે. તેની સ્થિતિનું નિમિત્ત કષાયો હોવાથી તે આ દાન છે. તે કપાયોનો વમન કરનારો સ્વકૃત ભિદ્
(કર્મ ભેદનારો) વને છે. અર્થાત્ પોતે (અજ્ઞાનદશામાં) પૂર્વે જે કર્યો અનેક ભવમાં એકઠાં કર્યાં હોય; તેને ભેદી નાંચે; તે સ્વકૃતભિદ્
જાણવો; અને જે કર્મોના આદાન (વીજરુપ)—કષાયોને રોકે; તે અર્પુકર્મ પ્રતિષિદ્ધમાં પ્રવેશ કરનારો છે, અને પોતે પોતાનાં પૂર્વકર્મનો

भेदनारो छे. तीर्थकरना उपदेशवडे पण, पारकानां करेलां कर्मना क्षयना उपायनो अभाव होय तेथी स्वकृत लीधुं.

तेथी तीर्थकरे पण पारकाना करेला कर्मना स्वपाववानो उपाय नथी जाण्यो एवीकोइने शंका थाय तेनो उत्तर. एम नथी. कारण के

तेमना ज्ञानमां वधा पदार्थोनी सत्ता व्यापीने रहेली छे. (परंतु करे ते भोगवे ए नियमथी दरेके कर्म कापवा उद्यम करवो जोइए.)

शंका—हेय उपदेय पदार्थने जोडवुं ग्रहण करवुं तेना उपदेशने जाणवाथी सर्वज्ञ नथी एवुं अमे कहीए डीए. कारण के उपदेश मात्रथी परोपकार करवाथी तर्थकरपणानी उत्पत्ति घटती नथी उत्तर शुक्तिना विकल्पणाथी उत्तम पुरुषना मनने तमारं कहेवुं आनंद आपहुं नथी, कारणके उत्तम ज्ञान विना हित अहितनी प्राप्ति तथा त्याग उपदेशनो असंभव छे. अने एक पदार्थहुं पण संपूर्ण ज्ञान सर्वज्ञपणा विना घटहुं नथी ते सूत्रकार बतावे छे.

जे एगं जाणइ से सबं जाणइ, जे सबं जाणइ से एगं जाणइ (सू० १३३)

जे कोइ पण ज्ञानी परमाणु विगोरे एक द्रव्यने तेना पळीना के पूर्वना पर्याय सहित जाणे, अथवा पोताना अथवा पारकाना वधा पर्यायोने जाणे छे; कारण के तेना पुरुषने अतीत अनागतमां वनेला अने वनवाना पर्यायो सहित द्रव्यने जाणवाथी तेने वधी वस्तुहुं ज्ञान अविनाभावीपणे छे. हवे तेने हेतु तथा हेतुवाला पदार्थ सहित बीजी रीते कहे छे.

जे सर्व पदार्थो संसार उदरमां रहेला छे तेने जाणे छे ते एक घट विगोरे एक वस्तुने जाणे छे, तेज ज्ञानीने अतीत अनागत पर्याय—ओदोवडे ते ते स्वभावनी आपत्तिवडे अनादि अनंतकालपणे समस्त वस्तु स्वभावमां जाणपणुं थाय छे. कहुं छे:—

एगद्वियस्स जे अरथपज्जवा वयणपज्जवा वावि । नीयाणागयभूया, तावइयं तं हवइ द्ध ॥१॥

एक द्रव्यना जेटला अर्थना पर्यायो, अथवा वचनना पर्यायो छे, ते भूत-वर्तमान, भविष्यसहित होय; त्यारे ते द्रव्य थाय छे. (उपरना सूत्रनो परमार्थ ए छे के, कोइपण वस्तुमां द्रव्य पोते वस्तु छे ज्जां, तेमां जे स्वरूप बदलाय छे ते पर्यायो छे पूर्व जे बदलाया ते भूतपर्यायो छे. चाळुमां छे, ते वर्तमान, अने यवानो ते भविष्यता छे. ए वधाने जे साथे जाणे; तेज एक वस्तुना एक पर्यायने पण जाणे अने ते एक पर्यायने पण बरोबर जाणे; ते सर्वने पण जाणे; अने ते आ गाथामां वतावुं छे के एक द्रव्यमां त्रणे कालना पर्यायो छे, अने पर्यायोसहित होय; तेज द्रव्य छे.)

उपर कहेल सर्वज्ञ ते तीर्थंकर छे, अने तेज सर्वज्ञपधु सर्व सत्त्वोने उपकार करनारो, अने बनीशके तेवो उपदेश आपे छे ते सूत्रकार वतावे छे.

सद्वओ पमत्सस्स भयं, सद्वओ अप्पमत्सस्स नरिथ भयं, जे एगं नामे से बहुं नामे, जे बहुं नामे से एगं नामे, दुक्खं लोगस्स जाणिता वंता लोगस्स संजोणं जंति धीरा मह्राजाणं,

परेण परं जंति, नावकं खंति जीवियं (सू० १२३)
 द्रव्य विगोरेथी सर्व प्रकारे जे भय करनारं कर्म उपार्जन करे; ते भय, मद्य विगोरेथी जे प्रमादी बने तेने थाय छे. ते वतावे छे के, प्रमादी द्रव्यथी वथा आत्मप्रदेशोथी कर्म एकठु करे छे. क्षेत्रथी जए दिशामां रहेछं; कालथी पत्येक समये, अने भावथी

हिंसा विगरेथी भयजनक कर्म बांधे छे.

अथवा सर्वत्र एदले, अहीं अने परलोकमां वंने ठेकाणे प्रमाद करनारने भय छे. पण अप्रमादीने कयांय पण भय नथी, ते वतावे छे के, आ लोक के. परलोकमां अपायोथी आत्महितमां जागृत रहेनार अप्रमादीने संसार अपसद (निमकहराम विश्वाघाती,) थी अथवा अशुभ कर्मथी कोइ प्रकारे भय नथी; अने कषायता अभावथी अप्रमत्ता थाय छे, तेथी वधां मोहनीयकर्मनो अभाव थाय छे, तेथी संपूर्ण कर्मनो क्षय थाय छे. तेथी ए प्रमाणे एकना अभावमां घणाना अभावनो संभव थाय छे, तथा एकनो अभाव पण बहु अभावथी जुदा नथी. तेदला माटे हेतु, अने हेतुवाला पदार्थना भावने गत प्रत्यागत सूत्रवडे वतावेछ छे. जे प्रवर्धमान शुभ अवयवसायना कंडकमां चढेलो साधु जे, एकला अनंतानुबंधी क्रोधने क्षय करे छे, ते, मान विगरे बहुने स्वपावे छे. अथवा पोतानाज भेदवाला अप्रत्याह्यान विगरेने स्वपावे छे. तथा, एकला मोहनीयने स्वपावतां वीजी प्रकृतिओने पण स्वपावे छे. अथवा जे, घणी स्थितिवाकाने स्वपावे छे, ते साधु अनतानुबन्धी एकने अथवा, मोहनीयकर्मने स्वपावे छे, ते वतावे छे. जेमके—अगणोत्तर ६९ मोहनीय कोडा—काडी क्षय गया पळी, ज्ञानावरणीय, दर्शानावरणीय, वेदनीय, अंतराय, ए चारनी २९ तथा नामगोत्रनी १९ कोडा—कोडी स्वपी गया पळी, अने तेमां पण थोहुं ओहुं थया पळी मोहनीय कर्मनो क्षण थयाने योग्य थाय छे, पण, ते शिवाय न थाय. तेथी कहुं छे के:—जे बहु नाम होय; तेज परमार्थथी, एकनामवालो छे. अहीं नामनो अर्थ कर्मप्रकृतिनो क्षय, अथवा, उपशम करनार जाणवो. एक उपशम श्रेणीना आश्रयथी एक तथा, बहु उपशम करवावडे बहु उपशमता जाणवी. तेथी ए प्रमाणे बहु तथा, एक कर्मना अभाव शिवाय मोहनीयक्षय अथवा, उपशमनो अभाव थाय; अने तेना अभावमां एदले, जो, मोहनीयक्षय

अथवा, उपशम न थाय; तो, जंतुओंने बहुत दुःखलो संभव है, ते सूत्रमां बतावे है.

दुःख एटले असातावेदनीय-कर्म अथवा पीडा थाय. ते जीवोंने दुःख थतुं इ-परिज्ञावडे जाणीने, अने प्रत्याख्यान-परिज्ञावडे जेम, तेनो अभाव थाय; तेम, साधु ए करवुं.

प्रश्नः—अभाव केवीरीते थाय? अथवा ते अभावथी शुं लाभ थाय? ते वन्ने बतावे है. 'वंता' विगेरे जे स्वआत्माथी जुहुं थन, पुत्र, शरीर, विगेरे है, तेनो ममत्व भावनी संबन्ध है, अने तेनाथी शरीर विगेरेने दुःख थाय है, ते दुःखना हेतुरूप-उपादान कारण, अथवा कर्मने त्याग करया प्रयत्न करे है. एटले, कर्मविदारण करवामां धैर्य राखनासा थीरपुरुषो जेनावडे मोक्षमां जवाय; तेवुं चारित्र्यान जे, अनेक करोडो भवमां मळवुं दुर्लभ है, अने केदलाक जीवो ते मेळवीने पूर्वना अशुभकर्मना उदयथी, प्रमादथी ते हारीजाय है. एटले, जेम कोइने स्वप्नामां मेळवेल थननो मंडार नकामो थाय है, तेम प्रमादथी हारनारने मळेलां चारित्रनो लाभ थतो नथी. माटे तेने मोहुं यान, एवुं विशेषण आपेल है.

अथवा सम्यग् दर्शन विगेरे त्रण रत्नरूप महायान है, अने जेने मोहुं यान है, ते मोक्ष है, तेने थीर पुरुषो प्राप्त करे है.

प्रश्नः—ए वात ठीक है. पण एक भववहेज महायानरूप चारित्र मेळवाथी मोक्ष मळे के परंपराए मोक्ष मळे. अने उत्तर—असे वन्ने प्रकारे मात्नीए छीए एटले कोइ थोडा कर्मवाळाने योग्य क्षेत्रकाल मळता तेज भवमां मुक्ति थाय है, अने ज्ञान बीजाने परंपराए मोक्ष थाय है, ते बतावे है, 'परण परं जेणे सम्यक्त्व प्राप्त कर्तुं, तेणे नरक तिर्यंच गति अटकावी, अने ज्ञान प्राप्त करीने यथाशक्ति संयम पाळीने आयु कर्म पुरं थतां सौधर्मादि देवलोकमां जाय है, त्यांथी पण पुन्य थोहुं चाकी रहे त्यारे

त्यांशी चवीने कर्मभूमि आर्यक्षेत्र सारा कुलमां जन्म आरोग्यता धर्म श्रद्धा, तत्त्वसांभळवुं अने संयम लडने पुसंपाळी अनुत्तर विमान सुधीना देवलोकमां उत्पन्न थाय हे, फरीशी चवीने पूर्व माफक उत्तम संयोगो मनुष्य जन्म विगोरे मेळवी संयम लडने वधा कर्मनो क्षय करे हे, तेशी एम कहुं के पर एटले संयमवडे उपर वतावेळी विधिण परं एटले स्वर्गमां जाय हे, अने परंपराए मोक्षमां जाय हे.

अथवा पर एटले सम्यग्दृष्टि गुणस्थान जे चोशु हे, तेना वडे देशविरति (पांचमुं गुणस्थान) थी ऋद्दने अयोगी (चौदसुं गुणस्थान) सुधी चडे हे.

अथवा पर एटले अनंतानुबन्धी क्षय यथाशी कंडक स्थान निर्मळ यतां चढता भावे साधुओ दर्शनमोहनीय अने चारित्रमोहनीय कर्मनो क्षयरूप पर मेळवे हे, अथवा घातीकर्म अथवा अपातीकर्मनो क्षय करे हे.

आ प्रमाणे कर्म स्वपाववा तैयार थयेला साधुओ पोतानुं आयुष्य केटळं वाकी रहुं तेनी आकांक्षा करता नशी, एटले लांब आयु इच्छता नशी, अथवा असंयम जीवितने वांछता नशी,

अथवा पर वडे पर एटले उत्तर उत्तर तेजोलेश्याने मेळवे हे कहुं हे के:—

“जे इमे अजन्ताए समणा निगंथा विहरंति एए णं कस्स तेयलेस्सं वीईवयंति ?, गोयमा !, मासपरियाए समप्पे निगंथे वाणसंतराणं देवाणं तेयलेस्सं वीइवयइ, एवं हुमासपरिआए

असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं, तिसासपरियाए असुरकुमाराणं देवाणं चउमास-

परियाए गहगणनवलत्ततारारुवाणं जोइसियाणं देवाणं, पंचमासपरियाए चंदिमसूरियाणं जोइसिंदाणं जोइसरार्दणं तेउलेस्सं, छम्मासपरियाए सोहम्मीसाणाणं देवाणं सत्तमासपरियाए सणंकुमारमाहिंदाणं देवाणं, अट्टमासपरियाए बंभलोगलंतगाणं देवाणं, नवमासपरियाए महा सुक्कसहरसाराणं देवाणं, दसमासपरियाए आणयपाणयआरणच्चुआणं देवाणं, एगारसमासपरियाए गोवेजाणं, बारसमासे समणे निगंथे अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं तेयलेसं दीयवयइ, तेण परं सुक्के सुक्काभिजाई भविता तओ पच्छा सिज्झइ ।”

वीर पयुने गौतस्वामी पूछे छे.

जे हमणां साधुओ साधुपणासां विचरे छे, ते कइ तेजोलेश्याने पासे छे?

उ०—हे, गौतम! एक मास साधुपणानी पर्याय थवाथी व्यन्तर देवोनी तेजोलेश्याने पासे छे, वाकीहुं कोष्टक नीचे प्रमाणे वे मास दीक्षा पर्यायवाळो असुर इन्द्र छोडीने भवनपति देवोनी. ॥ त्रण मास दीक्षा असुर कुमार देवोनी ॥ चार मास दीक्षा ग्रहगण नक्षत्र तारारूप ज्योतिषीनी ॥ पांच मास दीक्षा चंद्र सूर्य ज्योतिष इंद्रनी ॥ छ मास दीक्षा सौधर्म इशान देवोनी ॥ सात मास दीक्षा सन्नतकुमार माहेन्द्रनी ॥ आठ मास दीक्षा ब्रह्म लोकांतकनी ॥ नव मास दीक्षा महाशुक सहस्रारनी ॥ दश मास दीक्षा आनत

पाणत तथा आरण अच्युतनी ॥ अर्णियार मास दीक्षा त्रैवेयकनी ॥ वार मास दीक्षा अनुत्तर विमाननी ॥

त्यार पळी शुक्र लेख्याने पापीने केवळज्ञान पापीने मोक्षमां जरो.

जे अनंतातुवन्धी विगेरे कषायोने स्वपाववा तैयार थयो ते एक क्षय करवामांज वर्ते छे के नहिं? ते बतावे छे.

एगं विगिंचमाणे पुढो विगिंचइ, पुढोवि, सड्डी आणाए मेहावी लोगं च आणाए अभिसमिच्चा

अकुओभयं, अरिथ सरथं परेण परं, नरिथ असरथं परेण परं (सू० १२४)

अनंतातुवन्धी एक क्रोधने क्षपकश्रेणीमां चढेलो साधु स्वपावे; ते समये पृथक् वीजी पण दर्शनादि कर्मप्रकृति स्वपावे छे, अने तेणे आयु वांश्चुं छे, ते पण दर्शनसप्तक एटले, अनंतातुवन्धी कषाय चार तथा दर्शनमोहनीयनी त्रण सुधी स्वपावे छे. अथवा, वीजी प्रकृति स्वपावतां अवरये अनंतातुवन्धी नामनी प्रकृति स्वपावे छे. जो, तेम न स्वपे तो, सूत्रमां कहेल एकना क्षयमां वीजी क्षय थाय तेवुं न कहेवाय. केवा गुणवाळो क्षपकश्रेणीने योग्य थाय ते कहे छे:—

‘सद्वा’ विगेरे, श्रद्धा एटले मोक्षमार्ग मेळववाना उद्यमनी इच्छा करे; ते श्रद्धावाळो (श्रद्धी) कहेवाय. एटले, तीर्थकर प्रणीत आगम अनुसारे यथोक्त अनुष्ठान करनारो मेवावी [अप्रमत्त साधु] जे मर्यादांमं रहे छे, तेज श्रेणीने योग्य छे पण वीजो योग्य नथी.

वळो, लोक एटले छ जीवनिकाय, अथवा कषायलोकरने जिनेधरना आगम प्रमाणे जाणीने ते जीवोना समूहने कोइपण सीते भय न थाय तेम साधुए वर्तन करवुं.

अने कपायला समूहने दूर करवाथी ते दूर करनार साधुने कोइथी भय रहेतो नथी; अथवा चराचर लोकने आगमनी आज्ञा प्रमाणे सपजीने चाले; तेने आलोक-परलोक अपाय; ने सारीरिते देखवाथी (सीधे मार्गे चालनाराने) कयांयथी भय नथी.

उपर वतावेळो भय शस्त्रथी थाय छे, पण ते शस्त्रनी प्रकर्षगति छे के नहि? उत्तर—छे, ते वतावे छे.

तेमां द्रव्यशस्त्र तलवार विगोरे छे. ते परथी पण पर छे, तीक्ष्णथी पण तीक्ष्ण थाय छे. कारण के, लोडा उपर पाणी विगोरे चढावानो संस्कार कराय छे. अथवा, शस्त्रएटले, उपघातकारी. तेथी एक पीडाकारीथी बीजो पीडाकारी उत्पन्न थाय छे. ते न्याये एकथी बीजो अपर छे ते वतावे छे. जेमके—तलवारनां वाथी धनुर्वां थाय; तेनाथी माथानी वेदना थाय; तेनाथी ताव चढे; पळी मुखमां शोष पडे; अने छेवटे, मूर्छां विगोरे थाय छे.

पण भावशस्त्र परंपराए जोडेला सूत्रथी सूत्रकार महाराज पोतानी मेळेज प्रत्याख्यान परिज्ञाना द्वारवडे कहेशे के जेवीरिते शस्त्रनी प्रकर्षगति छे, अथवा परंपराए विद्यमान छे, पण अशस्त्रने तेम नथी, ते वतावे छे, के अशस्त्र ते संयम छे, ते संयम परथी बीजुं पर नथी, एटले ते प्रकर्ष गतिने पामेळ नथी, ते आ प्रमाणे.

पृथ्वी विगोरेनी समानता करवी, तेमां भंद तीव्रनो भेद नथी, एटले पृथ्वी विगोरेमां समभावपणुं धारवाथी सामायिकनी सिद्धी छे. अथवा शैलेशी अवस्थामां रहेला संयमथी बीजो संयम नथी, अर्थात् तेनाथी बीजुं गुणस्थान उपर कोइ नथी.

जे क्रोधना उपादानथी बन्ध करे छे. ते स्थिति तथा विपाकथी तथा अनंतानुबन्धीना लक्षणथी जे कर्म बन्धाय तेना क्षयने आश्रयी प्रत्याख्यान परिज्ञावडे जे जाणे छे ते साधु अपर मान विगोरेने पण तोडवानुं देखनारो छे, ते पळीना सूत्रमां वतावे छे.

जे कोहदंसी से माणदंसी, जे माणदंसी से माषादंसी, जे मायादंसी से लोभ-
 दंसी, जे लोभदंसी से पिज्जदंसी, जे पिज्जदंसी से दोसदंसी, जे दोसदंसी से मो-
 हदंसी, जे मोहसंसी से गल्भदंसी, जे गल्भदंसी, से जन्मदंसी, जे जन्मदंसी से
 मारदंसी, जे मारदंसी से नरयदंसी, जे नरयदंसी से तिरियदंसी, जे तीरियदंसी
 सु दुक्खदंसी । से मेहावी अभिणिवट्टिजा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पिज्ज
 च दोसं च मोहं च गल्भं च जन्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च । एयं
 पासगस्स दंसणं उवरयसरथस्स पलियंतकरस्स, आयाणं निसिद्धा सगडब्बिम, किमरिथि
 ओवाही पासगस्स? न विज्जइ?, नरिथि (सू० १२५) त्तिवेमि ॥द्वितोषणीयाध्ययनमू३॥

जे क्रोधने स्वरुपथी जाणे अने ज्ञानने अनर्थ करनासं जाणी त्यागवारुप मानिने (ज्ञान वडे) क्रोधने त्याग करे, ते साधु निश्च
 मानने पण अनर्थ करनासं देखे छे, अने तेने त्यागे छे. अथवा जे क्रोधने जाणे छे, अने समय आवतां क्रोधी बने छे, तेचो माणस
 मान पण देखे छे, अर्थात् ते अहंकारी पण थाय छे, ए प्रमाणे हवे पळी पण सनजी लेवुं. ज्यां सुधी ते दुःख देखनारो थाय त्यां
 सुधी जाणवुं, सूत्र सुगम होवाथी टीका करी नथी. तो पण मंद बुद्धि हितार्थेथोडामां लखीए छीए.

जे अहंकारी वने ते समय आवतां कपटी पण वने. लोभी पण वने, अने जे लोभी होय, ते अनुक्रमे प्रेमी पण वने, अने पोतातुं इच्छित न यतां द्वेषी पण वने, अने ते मोह करनारो पण थाय, अने ते मोह करीने गर्भमां उत्पन्न थाय पळी जन्मतुं दुःख वेठे, ते मार (हिंसा अथवा आरंभना कृत्य) पण करे, अने पळी ते नरक गामी पण थाय, त्यांथी चवीने तिर्यंच थाय, एम परंपराए अनेक दुःखोने ते संसारी जीव भोगवे छे, पण जे मेयावी (बुद्धिमान) साधु छे ते क्रोध विनोरेथी दूर रहे छे ते वलावे छे, एटले क्रोध मान माया लोभ प्रेम द्वेष मोह गर्भ जन्म मार नरक तिर्यंच विनोरेनां दुःखो क्रोथरूप वीजने त्याग करवाथी भोगवतो नथी, आ वधुं जे तत्त्वज्ञान वलावधुं ते वधा उद्देशातुं शरभ्रातथी ते अहि सुधी तीर्थकरतुं कहेछुं छे, अने ते तीर्थकर जीवोने पीडा करनार शस्त्रने छोडीने आठ कर्मनो अंत करनार थया छे एटले तेओ कर्मतुं उपादान कारण क्रोध विनोरे प्रथम त्यागीने पोताना कर्मो जे पूर्व बांधिलां तेने भेदनारा थया, तेओने केवळज्ञान थनाथी संसारी कोइपण जातनी उपाथो नथी एटले द्रव्यथी सोतुं चांदी विनोरे नथी. नेम भावथी आठ प्रकारनां कर्म नथी, आ प्रमाणे शिष्यना प्रश्नां तीर्थकरने कोइपण जातनी द्रव्यथी के भावथी कोइ पण जातनी उपाधि छे के नहिं? तेनो उत्तर कहाो नथी.

आ वचन सुधर्मास्वामि जंबूस्वामीने कहे छे, के भे भगवानना चरणनी सेवा करतां जे सांभळधुं तेने अनुसारे तने कहुं छुं, पण मारी मति कल्पनाथी हुं कहेतो नथी. सूत्र अनुगम कहाो, चाथो उद्देशो पुरो थयो अने तेनी समाप्तिथी अतीत अनागत नय विचारने सूत्रमां थोडांमां वतावयाथी शितोष्णीय नामतुं वीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

सम्यक्त्व नामतुं चीथुं अध्ययन.

बीजुं अध्ययन पुरं यवाथी हवे चीथुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे—संबन्ध छे. पहैला शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनमां अन्नय व्यतिरेक-वहे छु जीवनीकायतुं स्वरूप बतावतां जीव अने अजीव, एम बे पदार्थ सिद्ध कर्यां; तथा जीवोला वधमां बंध थाय छे, अने ते त्या-गवाथी विरति थाय; तेतुं बतावतां आस्रव संवर बे पदार्थ बताव्या; तथा लोकविजय नामना बीजा अध्ययनमां लोको जेग बंधाय छे, अने जेम मुकाय छे, ते बतावतां बंध अने निर्जरा बतावी; तथा बीजा अध्ययनमां शीतोष्णरूप-परिसहो सहैवा; ते बतावतां तेना फलरूप-मोक्ष बताव्यो; तेथी त्रण अध्ययनमां जीव-अजीव, आस्रव, संवर, बंध निर्जरा अने मोक्ष, एम सात पदार्थरूप-तत्त्व बताव्युं अने तत्व पदार्थतुं श्रद्धान (विश्वास) राखवुं; ते सम्यक्त्व कहेवाय छे, ते हवे बतावे छे.

आ संबन्धवहे आवेला आ चोथा अध्ययनता चार अनुयोगद्वार बतावतां उपक्रममां अर्थ अधिकार बे प्रकारे छे. अध्ययननो अर्थाधिकार सम्यक्त्व नामनो छे ते शस्त्रपरिज्ञामां प्रथम कहेल छे, अने उद्देशानो अर्थाधिकार अहीं बतावना निर्युक्तिकार कहे छे:—

पहमे सम्मावाओ, वीए धम्मपवाइयपरिक्खा । तइए अणवज्जतवो, न हु बालतवेण सुक्खुत्ति ॥२५॥

उद्देशंसि नउत्थे, समासवयणेण णियसणं भणियं । तन्हा य नाणदंसणतवचरणे होइ जइयदं ॥२६॥

(१) पहैला उद्देशामां सम्यक्त्वाद ए नामनो अर्थाधिकार छे. एटले, अविपरीतवाद ते सम्यक्त्वाद छे. अर्थात् यथाअवस्थित वस्तुनं बताववी. (२) बीजा उद्देशामां धर्मप्रवादिकोनी परीक्षानो विषय छे. एटले, जेओ धर्मतुं स्वरूप बतावे छे, ते धर्मप्रवादिक

કહેવાય. તેઓતું અયુક્ત તથા, યુક્ત કથનને વિચારવું. (૩) ત્રીજામાં, અનવચ્ચ તપતું વર્ણન છે. ણ્ટલે, જે ચાલતપ કરે; તેવા અજ્ઞાન કરેલાં તપથી મોક્ષ ન થાય તે અહીં વતાવ્યું છે. (૨૧૫) ચોથા ઉદેશામાં સંક્ષેપ વચનમાં સંયતતું સ્વરુપ વતાવ્યું છે, તેથી પહેલામાં સમ્યગ્દર્શન, ત્રીજામાં સમ્યવજ્ઞાન ત્રીજામાં ચાલ તપનો નિર્વેધ કરવાથી સમ્યક્ તપ વતાવ્યો છે, અને ચોથામાં સમ્યક્ ચારિત્ર વતાવ્યું છે, ગાથામાં 'તરમાત' અને 'ચ' શબ્દ છે તે વચ્ચે હેતુમાં છે, જેથી ણ ચારે પળ મોક્ષનાં અંગ પૂર્વે કહ્યાં છે, તેથી ણ જાણતું કે જ્ઞાન દર્શન તપચરણમાં મોક્ષાધિલાષી સાધુ ણ યતન કરવો, અને તેતું પ્રતિપાલન કરવા જીવતાં સુત્રી પ્રયત્ન કરવો, આ પ્રમાણે વે ગાથાનાં અર્થ થયો. હવે નામનિષ્પન્નનિષ્કેપમા વતાવેલ સમ્યક્ત્વ નામનો નિષ્કેપો કહે છે.

નામંટવણાસન્મં દ્વસન્મં ચ ભાવસન્મં ચ । ણસા ચલુ સન્મસસા, નિચ્ચેવો ચટ્ઠિહો હોઈ ॥૨૧૭॥

નામ સ્થાપનાનો અક્ષરાર્થ સુગમ છે, અને તેનાં ભાવાર્થ નામ સ્થાપના હોહોને દ્રવ્ય અને ભાવ સંબંધી નિર્ચુક્તિકાર કહે છે.

અહ દ્વસન્મ, ઇચ્છાણુ લોમિયં તેસુ તેસુ દ્વેસું । કયસંચયસંજુતો, પટત્ત જટ મિપણ હિણ્ણં વા ॥૨૧૮॥

હ શરીર ભવ્ય શરીરથી વ્યતિરિક્ત દ્રવ્ય સમ્યક્ત્વ વતાવે છે, ઇચ્છા ણ્ટલે ચિત્તની પ્રવૃત્તિ (અભિપ્રાય) છે, તેને અનુકુલ કરવું, તે 'ત્તેચ્છાનુલોમિક' છે તેવી તેવી ઇચ્છા અને ભાવને અનુકુલ દ્રવ્યમાં કૃત વિગેરે ઉપાધિના શ્વેદ વહે સાત પ્રકારે થાય છે, તે આ પ્રમાણે છે.

(૧) કૃત ણ્ટલે અપૂર્વે રથ વિગેરે વનાવ્યો હોય, તે રથમાં યોગ્ય રીતે ભાગો ગોઠવ્યાથી સારા વનાવનારને લીધે વેસનારને ચિત્તમાં શાંતિ થાય છે, અથવા જેના માટે તે વનાવ્યો તે શોભાયપાત અને યોગ્ય સમયમાં જલદી વનાવી આપવાથી કરાવનારને

समाधान (समाधी) नो हेतु होवाथी ते द्रव्यसम्यक् छे. आ प्रमाणे संस्कृत (संस्कार करेले) विगोरेमां पण समजहुं, एटले (२) तेज रथ विगोरे भांगी जतां अथवा जुनो यतां तेने सुधारवो अथवा भांगेला भागने बदलवो ते समाधि आपनारो होवाथी द्रव्य सम्यक् छे. (३) जे वे द्रव्यनो संयोग नवो गुण वनाववा करे पण नाश करवा न करे ते खानार अथवा भोगवनारना मननी समाधिने माटे दुधमां साकर मेळववी विगोरे छे, ते संयुक्त द्रव्य सम्यक् छे. अथवा वीजी

(४) तथा जे प्रयोगमां लीवेछु द्रव्य आत्माने लाभना हेतुथी समाधि माटे थाय छे, ते पर्येक द्रव्य सम्यक् छे. अथवा वीजी प्रतिमां उपयुक्त शब्द छे एटले उपयोगमां लीवेछुं द्रव्य मनने समाधि दायक थाय ते उपयुक्त द्रव्य सम्यक् छे.

(५) तथा जड (त्यजेछुं) भार विगोरे दूर करवाथी चित्तमां शांति थाय, ते त्यक्त द्रव्य सम्यक् छे, (६) दहीहुं वासण विगोरे फुटी जतां कागडा विगोरेने आनंददायी थवाथी ते भिन्न द्रव्य सम्यक् छे, (७) अथीक मांस विगोरे छेदवाथी [अथवा गुमडामां नस्तर मुकवाथी] जे शांति थाय ते छिन्न सम्यक् छे, आ साथे पण चित्तने समाधि आपनार होवाथी द्रव्य सम्यक् छे, पण जो ते वरोवर न थाय तो चित्तमां क्लेश यतां सम्यक् थाय छे, हवे भाव सम्यक् वतावे छे.

तिविहं तु भावसम्यक् दंसण नाणे तहा चरिते थ । दंसणचरणे तिविहं नाणे दुविहं तु नायव्वं ॥२१९॥

त्रण प्रकारे भावसम्यक् छे, दर्शन ज्ञान चारित्र ए त्रण भेद छे, ते दरेक पण भेदवाछुं छे, ते कहे छे, तेमां दर्शन अने चरण दरेक त्रण प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे.

अनादि मिथ्यादृष्टिने त्रण पुंज कर्मां विनातो होय तेने यथाप्रवृत्तकारण वाकीनां कर्म क्षीण यवावाळो होय तेने सांगरोपम कोडा-कोडीमां थोडी ओळी स्थिति होय; तेने अपूर्वकरणमां ग्रंथी भेदाता मिथ्यात्वने उदय न होय तेवुं अंतःकरण करीने अनिवृत्ति करणवढे प्रथम सम्यक्त्व मेळवे छे, ते औपशमिक दर्शन छे, कहुं छे के.

“उसरदेसं दडुह्यं च विज्ञाद् वणदवो पप । इय मिच्छताणुदए उवसमसमं लहइ जीवो ॥१॥”

स्वारवाळो [उपर] देश [जग्या] मेळवीने जेम वननो अग्नि (दावानल) बुझाइ जाय छे, तेम मिथ्यात्व उदय न आवे. त्यारे औपशमिकसम्यक्त्वने जीव पाते छे. अथवा कोइ उपशमश्रेणीमां औपशमिक सम्यक्त्व पासे छे. [१] तेज प्रमाणे सम्यक्त्व पुद्गलने आश्रयी ने जे अध्यवसाय उत्पन्न थाय ते क्षायोपशमिक छे. [२] तथा दर्शनमोहनीय क्षय यवाथी क्षायिक छे. (३)

चारित्रना त्रण भेद

(१) दर्शन प्रमाणे चारित्र पण उपशम श्रेणिमां औपशमिक [२] कषायना क्षय उपशमथी क्षायोपशमिक [३] तथा चारित्र मोहनीय कर्मना क्षयथी क्षायिक चारित्र छे.

ज्ञानना वे भागो छे.—क्षायोपशमिक, अने क्षायिक तेषां चार प्रकारना ज्ञान आवरणीय कर्मनो क्षय उपशम यवाथी मनि ज्ञान चिगेरे चार प्रकारतुं क्षायोपशमिक ज्ञान छे, अने वधुं पातीकर्म क्षय यवाथी क्षायिक केवल ज्ञान छे.

आ प्रमाणे त्रणे प्रकारमां भाव सम्यक्त्वपणुं वतावे छते वादी, संका करे छे.

“ जो, एम दर्शन-ज्ञान-चारित्र त्रणेमां सम्यग्वादो संभव थाय छे, तो, दर्शननोज सम्यक्त्रवाद केम रह थयो छे? के जे सम्यग्दर्शनतुं अही वर्णन करवातुं छे.

उतरः—ते दर्शनना भावना भावी (विद्यमानपणाथीज) ज्ञानचारित्रनो भाव छे, जेमके—मिथ्यादृष्टिने ज्ञानचारित्र होलां नथी. [तेने ज्ञान होय; छतां अज्ञान कहेवाय.] अहीं सम्यक्त्वनी प्रथानता बताववा आंधळा तथा देखता एवा बे राजकुमारोतुं दृष्टांत बाल-[मंदबुद्धिवाळा] तथा स्त्री विगेरेना बोध माटे कहे छेः—

उदयसेन नामनो राजा हतो. तेने वीरसेन तथा सूरसेन नामे बे कुमारो छे. तेमां वीरसेन आंधळो छे, तेणे पोताने योग्य गांधर्वादिक [गावा विगेरेनी] कळाओ शीखी; अने बीजा कुमारे धनुर्वेदनो अभ्यास करूं. पछी राजाए तेना आग्रहथी आज्ञा आपी; अने योग्य सांभळीने वीरसेन कुमारे चिज्ञप्ति करी के, हुं पण धनुर्वेदनो अभ्यास करूं. पछी ते जुवान थयो; त्यारे सारा अभ्यासथी मेळवेला उपाध्यायना उपदेशथी, अने अतिशय बुद्धिना कारणथी शब्दवेधी थयो. पछी ते जुवान थयो; त्यारे सारा राजा लहवा आव्यो; धनुर्वेदनां ज्ञानथी अने उत्तमवर्तनथी अगणित चक्षुदर्शन सद-असत्भावथी, तथा शब्दवेधीपणाथी ज्यारे शत्रु राजा लहवा आव्यो; त्यारे राजा पासे युद्धमां जवा मांगणी करी. राजाए आज्ञा आपवाथी विरसेने शत्रुतुं सैन्य जीतवा मयत्न कर्यो; पण शत्रुए अंधपणुं जाणीलीथाथी चुप बेसवाथी वीरसेनतुं कंड न चाल्युं; त्यारे शत्रुना सैन्ये तेने पकडी लीथो पछी सूरसेने ते हुतांत जाणीने राजने पूछीने सूक्ष्म तीरोना सेंकडोनो वरसाद वरसवी शत्रुना सैन्येने जीती भाइने मुकाव्यो.

आ प्रमाणे अभ्यास सारी रीते करी उद्यम करवा छ्तां पण चक्षुनी स्वामीथी इच्छित कार्य करवा समर्थ न थयो, तेज प्रमाणे

सम्यग्दर्शन विना ज्ञानचारित्र कार्यसिद्ध न करी के. तेज निर्युक्तिकार गाथानो उपसंहार करतां बतावे छे.

कुणसाणोऽवि य किरियं, परिच्चयंतोऽवि सयणधणभोए, । दिंतोऽवि दुहसस उरं, न जिणइ अंधो पराणाथं ॥२२०॥

क्रियाने करतो, तथा पोतानां स्वजन, धन भोगोने त्यजवा छतां तथा दुःखने उर आपवा (सामे जवा) छतां पण अंधो अंध-
पणाने लीधे शत्रुना सैन्यने जीती न शक्यो. ते दृष्टांतथी हवे बांध आपे छे:—

कुणसाणोऽवि निविसिं, परिच्चयंतोऽवि सयणधणभोए' । दिंतोऽवि दुहसस उरं, सिच्छइदि न सिज्झइउ ॥२२१॥

एदछे मिथ्यादृष्टि पोताना दर्शनमां कहेली क्रिया करे.

जेमके पांच यमो, तथा पांच नियमो विगोरे पाळे तथा पोताना धन सगां तथा भोगोने त्यागे. तथा पंच अग्निनो ताप तपवा
विगोरेथी दुःख सहन करे छतां मिथ्यादृष्टि दर्शननी स्वामीथी सिद्धि पद नथीज पामतो, (गाथामां उ शब्द एकवारना अर्थमां छे.)
पूर्व जेम अंध कुमार शत्रुने न जीती शक्यो तेम आ कार्य सिद्धिमां असमर्थ छे, जा एम छे तो थुं करवुं? ते कहे छे:—

तस्हा कम्मसाणीथं जेउमणो दंसणमि पयइज्जा, दंसणवओ हि सफलाणि हुंति तवनाणचरणाइं ॥२२२॥

जेशी सिद्धि मार्गथुं मूळ सम्यग् दर्शन छे, तेना विना कर्मक्षय न थाय, तेशी कर्म शत्रुने जीतवानी इच्छावाळो मनुष्य सम्यग्
दर्शन मोळववा प्रथम यत्न करे, अते तेनी प्राप्तिमां थुं थाय ते बतावे छे. के निश्चे दर्शन पायेलानां तप ज्ञान तथा चारित्रनां वधां

अनुष्ठानो सफल थाय छे. तेशी तेमां यत्न करवो.

हवे बीजी रीते पण सम्यग्दर्शनना तथा ते दर्शन मेळवेला मनुष्याने प्राप्त थएला गुणस्थानोना गुणो वतावे छे.

सम्यक्पत्ती सावए, य, विरए अणंत कर्ममं से ॥ दंसण मोहरखवए, उवसामंते य उवसंते ॥२२३॥

खवए य खीणसोहे, जीणे अ सेढी भवे असंखीजा । तविवरीओ कालो, संखिजगुणाइ सेढाए ॥२२४॥

सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थतां असंख्येय गुणवाळी श्रेणि थाय छे. ते पाळली अडवी गाथावडे वतावेळ छे, ते क्रियाने आश्रयी छे. पशः—केवी रीते असंख्येय गुणवाळी श्रेणि थाय ?

उत्तरः—(१) अहीं मिथ्यादृष्टि जो जे थोडुं ओछुं एवी कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिवाळा ग्रंथिसत्त्ववाळा छे. तेओ कर्म निर्जराने आश्रयी समान छे, (२) अने धर्म पूढवानो उत्पन्न थएली संज्ञावाळा पूर्व कहेलाओथी असंख्येय गुण निर्जरयाळां छे. (३) त्यारपळी पूढवानो इच्छावाळा वनी साधु समीपे जवानी इच्छावाळो असंख्येय गुणे उत्तम जाणवो (४) त्यार पळी गुरने पूढतां (५) धर्म स्वीकारवानो इच्छा थतां (६) त्यारपळी धर्मक्रिया करतां जे निर्जरा थाय तेना करतां पण प्रथम धर्मक्रिया करनाराने वथारे निर्जरा थाय ते असंख्येय गुणी जाणवी, एटकेसुधी सम्यक्त्वनी उत्पत्तिनुं वर्णन कर्युं.

त्यार पळी श्रावकव्रत (देशविरति) स्वीकारतो तथा स्वीकारलो विगरे उत्तरांतर गुण पासेलाने असंख्येयगुणी निर्जरा जाणवी, ए प्रमाणे सर्वविरतिमां पण जाणवुं.

तेनाथी पण पूर्व सर्व विरति लीखेलानी असंख्येय गुणी निर्जरा जाणवी, मूळमां “अणंतकर्ममं से” छे, तेनो अर्थ अनंतानुबंधी

आश्रयी जाणवो, एटले भीम कहैवाथी भीमसेन भामार्थी सत्यभामा थाय, ते प्रमाणे छे. मोहनीयकर्मना अंत भागो छे, तेने स्वपाववानी इच्छावाळो असंख्येय गुण निर्जरा करनारो जाणवो, त्यारपळी क्षपक [क्षय करनारो] जाणवो, त्यारपळी क्षीण अनंतानुवधी कषायवाळो जाणवो, तेज दर्शनमोहनीयनी त्रण प्रकृतिमां क्रियाना सन्मुखमां उभा रहैल अपवर्गनुं त्रिक जाणवुं, त्यार पळी सात प्रकृति क्षीण यथाथी उपशमश्रेणिमां चहेळो. असंख्येय गुण निर्जरावाळो जाणवो, त्यार पळी उपशांत मोहवाळो जाणवो त्यार पळी चारित्रमोहनीयने क्षय करनारो जाणवो, त्यार पळी क्षीणमोहवाळो जाणवो, अहियां अभिसुख त्रिगेरे त्रण यथासंभव योजना करवी, त्यार पळी भवस्थ केवळी (जिन) जाणवा त्यारपळी त्रैलेशी अवस्थावाळो असंख्येय गुण निर्जरावाळो जाणवो तेथी ए प्रमाणे कर्म निर्जरा माटे असंख्येय लोकभाकाश प्रदेश प्रमाण वनावेल संयम स्थानना प्रचयथी उत्पन्न थयेळ श्रेणि छे; ते उत्तरोत्तर असंख्येय गुणवाळो जाणवी, कारण के उत्तरोत्तर परवर्धमान अध्यवसायना कंडकनो स्वीकार छे, [जेस संयम पर्याय वधे तेस चारित्रमां आत्मानी निर्मळता वधे.]

कालथी तो तेथी विपरीत अयोगी केवळीथी मांडीने पतिलोम पणे संख्येय गुणवाळी श्रेणिवडे काल जाणवो, तेनो अर्थ आ छे, जेटला कालवडे अयोगी केवळी जेटलां कर्म स्वपावे तेटलां कर्म संयोगी केवळी संख्येय गुण।कालवडे स्वपावे छे ए प्रमाणे पतिलोमपणे जेटला कालमां धर्म पूढवानी इच्छावाळो छे, त्यांसुथी जाणवुं, [नीचला गुणस्थानमां काल वधारे थाय अने कर्म ओळां स्वपे.]

आ प्रमाणे वतावतां सिद्ध कर्तुं के सम्यग्दर्शन पामेलाने तप ज्ञान अने चरण सफळ थाय छे, पण जो कोइ उपाधि (संसारि वासना) वडे करे तो ते सफळ यतां नथी, ते उपाधि कइ छे, ते हवे वतावे छे,

आहार उचहिपूआ, इड्डिसु य गारवेसु कइतविअं। एमेव बारसविहे, तवंमि न हु कइ तवे समणो ॥२२५

आहार उषधि पूजा अने आमर्ष औषधि विनोरे रिद्धि छे, अने आहार उषधि अने पूजा रिद्धि छे, अर्थात् तेवी रिद्धि पूजा मेळवना ज्ञान भणे, अने चारित्रि पाळे, तथा (तेहुं मळवाथी) जण गारवमां वंथाएळो जे क्रिया करे ते कुत्रिम (बनावटी) कहेवाय छे, जेवीरीते ज्ञान चरणहुं अनुष्ठान आहार विनोरे माटे करे, ते कुत्रिम होवाथी मोक्ष न आपे, ते प्रमाणे वार प्रकरना बाह्य अभ्यंतरतपमां पण जाणहुं, अने तेवी संसारी वासना राखनारने श्रमण भाव न होय, अने असाधुहुं अनुष्ठान गुणवाळं न थाय, तेथी वासना रहित साधुहुं जे सम्यग्दर्शन पूर्वक तप ज्ञान चरण सफल छे एम सिद्ध थयुं. माटे सम्यग्दर्शनमां यतना करवी, अने तत्त्वार्थहुं श्रद्धान करहुं ते सम्यग्दर्शन छे, अने आ तत्व सयळां कलंकने दूर करीने जेमणे वथा पदार्थोमां सत्ता व्यापी केवलज्ञानने मेळवेछुं छे, तेवा तीर्थंकरे कहुं छे तेने हवे अनुक्रमे आवेळा सुत्रानुगममां सूत्र बतावे छे.

से वेमि जे अईया जे स पडुपत्ता आगामिस्सा अरहंता भगवंतो ते सबे एवमाइस्खन्ति
 एवं भासंति एवं पणविंति एवं परुविंति-सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता
 न हंतवा न अजावेयवा न परिधित्वा न परीयावेयवा न उद्दवेयवा, एस धम्मो सुकं
 निइए समिच्च लोपं स्वेयणोहिं पवेइए, तंजहा-उट्टिएसु वा अणुट्टिएसु वा उचट्टिएसु वा

અણુવહિષ્ણુ વા ઉચ્ચરયદંડેણુ વા અણુવચરયદંડેણુ વા સોવહિષ્ણુ વા અણોવહિષ્ણુ વા સંજો-

ગરણુસુ વા અસંજોગરણુસુ વા, તત્ત્વં ચેયં તહા ચેયં અસ્મિં ચેયં પલુચ્ચદ (સુ૦ ૧૨૬)

ગૌતમ (સુથમી) સ્વામી કહે છે કે:—જે હું કહું છું તે હું પોતે તીર્થંકરનાં કહેલાં વચનના તત્ત્વને જાણીને કહું છું, તેથી મારું વચન માનવા યોગ્ય છે, અથવા વૌદ્ધમતમાં માનેલું ક્ષણિકપસું દૂર કરવાવડે કહું કે, જે મેં પૂર્વે કહ્યું; તે હમણાં પણ હુંજ કહું છું, પણ વીજો કહેતો નથી; અથવા ‘સે’ શબ્દનો અર્થ ‘તે’ થાય છે, છુટલે જે શ્રદ્ધાનમાં સમ્યક્ત્વ થાય છે, તે તત્ત્વને હું કહું છું

જેઓ પૂર્વ કાલમાં થયા જે વર્તમાનમાં છે, અને ભવિષ્યમાં થશે; તે વધા તીર્થંકરો એમ કહે છે. વહી પૂર્વકાલ અનાદી હોવાથી અનંતા થયા; અને ભવિષ્યકાલ અનંતો હોવાથી અને સર્વદા તીર્થંકર હોવાથી અનંતા થશે; અને વર્તમાનકાલ આશ્રયી જે વચતે આ પ્રરુપણા થતી હોય; તેમાં નક્કી સંભ્યા ન હોવાથી ઉત્કૃષ્ટ અથવા જયન્વ્ય પદે કહેવાય, તેમાં ઉત્સર્ગથી અહીં દ્વીપની અદર એકસોને સીતેર થાય, તે આ પ્રમાણે—

૫—મહાવિદેહમા એકેક વિદેહમાં ૩૨ શ્રેણી હોવાથી દરેકમાં એકેક ગણતાં ૧૬૦ થાય, અને ૫ ભરત ૫ ધેરાવતના મેલવતાં કુલ ૧૭૦ થાય અને જયન્વ્યથી ૨૦ થાય તે આ પ્રમાણે—૫ મહા વિદેહમાં મહાવિદેહની અંદર રહેલી મહા નદીના વને કિનારે મહી પૂર્વે પશ્ચિમ સાથે છેતાં ચાર ચાર હોય તે પાંચેના મહી વીજા થાય. અને ભરત ઐરાવતમાં તો ષક્રાત સુલભમ વિગેરે આરામાં અમાવ છે, વીજા આચાર્ય કહે કહે છે, કે મેરુના પૂર્વે અને પશ્ચિમ મહાવિદેહમાં એકેક તીર્થંકર હોવાથી મહાવિદેહમાં વેજ છે, અને

તેથી પાંચ વિદેહમાં દશ થયા, તેઓ એમ કહે છે. કે,

સત્સરસયમુક્તોસં, હૃદયે દસ સમયસ્વેતજિણમાણં । ચોત્તોસ પદમદીવે, અણંતરઽઠ્યે તે દુગુણા ॥૧૧॥

પૂજા સત્કારને યોગ્ય જોઓ છે, તે અર્હત કહેવાય છે, તેઓ ઐશ્વર્યયુક્ત ભગવંતો છે. તેઓની સંખ્યા તેમના સંબંધમાં જ્યારે કોઈ પશ્ચ પૂહે તેનો અર્થ હવર વતાવે છે, સૂત્રમાં વર્તમાનકાલની વાત છે, તેથી આ પળ જાણવું, કે આ પ્રમાણે કહ્યું અને મવિવ્યમાં કહેશે, એ પ્રમાણે સામાન્યથી તીર્થંકરો દેવ મનુષ્યની પરસ્વદામાં અર્થ 'માગથી' માં વધા જીવો પોતાની ભાવામાં સમજે તેમ તેઓ વોલે છે, એ પ્રમાણે પ્રકર્ષથી સંજય દૂર કરવા માટે પામે રહેનારા સાધુ વિગેરેને જીવ અજીવ આસ્ત્રવ વન્ય સંવર નિર્જરા મોક્ષ એ સાત પદાર્થોને વતાવે છે, (એટલે જિનેશ્વર દેવ સાત પદાર્થોનું વર્ણન કરે છે) એ પ્રમાણે સમ્યગ્દર્શન જ્ઞાન ચારિત્ર જે મોક્ષ માર્ગ છે. તથા મિથ્યાત્વ અવિરતિ પ્રમાદ કષાય યોગ એ વાંચ વન્યના હેતુઓ છે. સ્વ અને પરમાવવહે હતી અહતી વસ્તુ તત્ત્વને સામાન્ય વિ-શેષરુપ વિગેરેના પ્રકારથી વતાવે છે, અથવા આ વધાં પદો એક અર્થવાલાં છે, તે તીર્થંકરો શું વતાવે છે તે કહે છે.

વધાં પ્રાણીઓ એટલે પૃથ્વી પાણી અગ્નિ વાયુ વનસ્પતિ એ એકોન્દ્રય છે, તથા વે ત્રણ ચાર પાંચ ઇન્દ્રિયોવાલા જીવો છે, તેમને ઇન્દ્રિય ૫ વલ ૩ ઉચ્છવાસ નિશ્વાસ. ૧ આયુ ૧ એ દશ પ્રાણ છે, પ્રાણો (સંસારી) જીવોને પૂર્વે હતા હમણાં છે, અને મવિવ્યમાં રહેશે, તેથી પ્રાણી કહેવાય છે; તથા વીજી સીતે ચૌદ ભેદ જીવોના છે તે શૂન ગ્રામ કહેવાય છે, અને વર્તમાનમાં વધા જીવો છે, જીવશે, અને પૂર્વે જીવતા હતા, માટે જીવ છે તે નારકી તિર્યંચ મનુષ્ય અને દેવ એ ચાર ગતિવાલા છે, તથા વધા એ જીવો પોતાન

करेलां कर्मथी साता असाताना उदयथी सुख दुःख भोगवे छे. तेथी सत्त्व छे, अथवा पाण भूत जीव अने सत्त्व ए वधा एक अर्थ-वाळा शब्दो छे, कारण के तत्व भेद पर्यायोवहे पदार्थने स्वीकारवानो छे, तेथी करीने उपरना वधा शब्दो प्राणीना पर्यायवाळा छे, ते जीवोने दंड चाखवा विगोरेथी हणवा नहिं; तथा बीजा पासे बळजबरी करीने हणाववा नहिं; तथा नोकर, दास, दासी विगोरे उपर ममत्वभावथी तेमनो संग्रह न करवो; तथा शरीर अने मननी पीडा उपजावीने परितापवा (संगापवा) नहिं; तथा जीवथी पाण दूर करवावडे तेने अपद्रावण न करवुं. आचो जिनेश्वरनो कहेलो दुर्गतिने अटकाववाने सुंगळ समान तथा सुगतिनी पयाथी समान धर्म छे, अने ते धर्म पुरुषार्थना प्रधानपणाथी विशेषणो बतावे छे. पापना अनुबन्ध रहित शुद्ध छे, पण बौद्ध तथा ब्राह्मणोथी एकेन्द्रियथी पचेन्द्रिय सुयीना जीवोनी हिंसानी अनुमतिने दुःखरूप-कलंक छे. (पटले, ब्राह्मणो यज्ञ करावे छे, अने वैद्वना साधु-ओ साधु माटे राखिळुं खाय छे, तेथी वधनी अनुमतिनो दोष लागे छे,) तेचो दोष जैनधर्मपां नथी. बकी, पांच महाविदेहने आश्रयी ते निरंतर (नित्य) छे, तथा शाश्वत तथा (मोक्ष गति आपवाथी शाश्वत छे अथवा नित्य होवाथी शाश्वत छे, पण एम न थाय; के भव्यत्व माफक पथम थइने पढी न थाय; अने घटना अभाव माफक पथम न थइने नित्य थाय; पण आ धर्म तो त्रणे काळमां शाश्वत छे. बकी, आ जीवसमूहने दुःखसागरमां डुबेल जाणीने तेमांथी पारजवा, जंतुनां दुःख जाणनारा एवा केवळी भगवंतोए बताव्यो छे. आ गौतमस्वामीए पोतानी बुद्धिए न कहेलुं बताववासुं कारण शिष्योनी मति स्थिर करावा माटे कहुं के:-आ शुद्ध धर्म जीनेश्वरनो कहेलो छे. आज सूत्रमां कहेला अर्थने निर्युक्तिकार सूत्र-स्पर्शीक वे गाथावडे कहे छे:-

जे जिणवरा अईया, जे संपइ जे अणागए काले । सव्वेवि ते अहिंसं, वदिंसु वदिहिति विवदिंति ॥३२६॥

હૃદયિય જીવનિકાણ, ણોવિ હણેજોડવિ અ હણાવિજા । નોડવિ અ અણુમદ્વિજા, સમ્મતસસેસ નિજુત્તી ॥૨૩૭॥

આ વલ્લે ગાથાનો અર્થ સરલ છે તેથી ટીકા નથી તેથી થોડામાં લલિષ્ટ હિણ. જે જિનેશ્વરો પૂર્વે થયા વર્તમાનમાં છે, અને મલિલ્યમાં થશે; તે વધાણ મૂતકાલમાં અહિંસા વતાવી છે, વતાવશે, અને વતાવે છે. ણટલે, હ ણ જીવનીકાયને હણે નહિ, હણાવે નહિ અને હણનારને અતુમોદે નહિ. ણ સમ્યકલ્વની નિર્ચુલ્કિ છે તીર્થેકરનો ઉપદેશ ણમના સ્વભાવથી પરોપકારીપણે અપેક્ષા વિના સૂર્ય ઉદય માફક પવર્તેલો છે, જેમ સૂર્ય વધાને પ્રકાશ આપે, તેજ પ્રમાણે જિનેશ્વર વોથ આપે, ણટલે ૧૨૬ સૂત્રમાં વતાવ્યા પ્રમાણે ધર્મ ચરણ પાલવા માટે ઉઠેલા ણટલે જ્ઞાન દર્શન ચારિત્રમાં પ્રયત્ન કરનારા અને તેનાથી વિપરીત તે ધર્મમાં ઉચ્ચમ ન કરનારાને માટે સર્વજ્ઞ ત્રણ જગતના નાથે તેવા તેવા નિમિત્તોને ઉદેશીને ધર્મ કહ્યો છે, ણ પ્રમાણે વધે સમજવું.

અથવા ઉઠેલા અને ન ઉઠેલા ણટલે દ્રવ્યથી વેઠેલા અથવા ન વેઠેલા જીવો છે, તેમને વિર પ્રમુણ ધર્મ કહ્યો તેમાં ૧૧ ગણ-ધરોણ ઉમે ઉમે ધર્મ સાંમલયો, ણટલે પ્રમુના સન્મુલ્લ રહીને ધર્મ સાંમલવા અથવા ચારિત્ર ગ્રહણ કરવા તૈયાર થયેલાને સંમલવાવ્યો, તે ઉપસ્થિત છે, અને તેથી વિપરીત ત્યાં હાજર ન હોય તે અન ઉપસ્થિત (ગેર હાજર) હતા, (અહિં નિમિત્તે સૂત્રમાં સાતમી વિમલ્કિ લીધી છે જેમલ્કે ચામહામાં ડીપહા મરાય છે.)

શંકા—ભાવથી આવેલા ચિલ્લાતિ મુત્ર વિનેરેમાં ધર્મ કથા ઉપયોગી છે, પળ ગેરહાજર હોય તેને ધર્મ કથા શું ગણ કરે ?
ઉત્તર:—જે ગેરહાજર હોય તેવાને ઇંદ્ર નાગ વિનેરે માફક કર્મની પરિણતિ વિચિત્ર હોવાથી અથવા ક્ષય ઉપગમના મેલવવાથી

गुणकारी थाय छे, तेथी तमारी 'शंका' नकामी छे.

पाणिने अथवा आत्माने दुःख दे (दंडे) माटे दंड छे, ते मन वचन कायाए ञण प्रकारनो छे, ए ञण दंडथी दूरथयेला ते उपरत दंड कहेवाय, ते वथा जीव उपर उपकारनी बुद्धिए उपदेश देवाय, एटले जेप्रणे दंड तज्यो छे, तेवा मुनिओ संयममां स्थिरता करे, अने नवा गुणो प्राप्त करे, अने बीजां दंड न तजेका (ग्रहस्थीओ) ते दंडने तजे, माटे तीर्थंकर उपदेश आपे छे,

तथा संग्रहकराय ते उपधि छे, ते द्रव्यथी सोहुं विगेरे छे, अने भावथी कपट छे, ते राखनार उपधिवाला छे, ते सोपधिक छे, चाकीना तेथी उलटा अनुपधिक छे, तेओने माटे पण उपदेश छे, संयोग (संबंध) ते पुत्र स्त्री मित्र विगेरे उपर प्रेमनो छे, तेमां रक्त थयेला ते संयोगरत कहेवाय, अने तेथी उलटा एकत्व भावना भावनारा मुनि असंयोगरत कहेवाय; ते वन्नेने पण भगवाने उपदेश आपेल छे, तेथी ते सत्य छे. (च शब्द नियम अर्थ वतावे छे, माटे) भगवानहुं वचन सत्य छे, तेम यथायोग्यपणे वस्तुनो सद्भाव कलाथी ते वाच्य पण छे. ते वतावे छे के, प्रभुर आ प्रमाणे कहुं केः—“सर्वे जीवो हणवा न जोइए ” विगेरे. आ प्रमाणे सम्यग्दर्शनहुं श्रद्धान राखहुं; अने ते श्रद्धान-जिनेरवरनां प्रवचनमां छे. जे सम्यकमोक्षमार्गने आपनार छे. वकी, ते वथा दंभना प्रवन्थथी दुर होवाथी परकर्थथी बोजाय छे, (माटे ते प्रवचन.) पण, बीजा मतमां तेवो अहिंसा धर्म वताव्यो नथी. जेमके—अन्य मतवाला प्रथम कहे के, सर्व जीवोने न हणवा. (“न हिंस्यात्सव भूतानि”) कहीने यज्ञमां पशुवधनी आज्ञा आपे छे. एटले, प्रथमनां वचनने तेमनां पाछळनां वचनथी वाधा लागे छे. (माटे, ते प्रवचन नथी.) आ प्रमाणे सम्यक्त्वहुं स्वरूप कहीने तेनी प्राप्तिमां शुं करहुं ते वतावे छे.

तं आइत्तु न निहे निक्खिवे जाणित्तु भम्मं जहा तहा, दिट्ठेहि निव्वेयं गच्छिज्जा, नो लीगस्सेसणं चरे (सू० १२७)
 पशुए कहेलां तत्त्वार्थ उपर श्रद्धा राखवारण सम्यग्दर्शन मेळवीने कहेलुं कार्य न करवाथी दोष जाणे; माटे, तेने गोपवे नहि.
 ते प्रमाणे संसर्ग विगेरे निमित्तथी मिथ्यात्व दूर करीने पण, जीवना सामर्थ्य गुणोने छोडे नहि. (यथाशक्ति संयम पाळे; पण,
 प्रमाद न करे) अथवा शिवमतना के, बौद्धमतनां व्रतो ग्रहण करीने व्रतेश्वरयाग विगेरे छोडीने विधिए गुरु पासे पूर्वे व्रतो स्थापन
 करीने दीक्षा सूकी देवी नहि. तेज प्रमाणे गुरु विगेरे पासे सम्यक्त्व लइने पाळुं तजे नहि.

पश्वः—शुं करीने ?

उः—जेवो धर्म छे, तेवो श्रुतचारित्ररूप—धर्म समजीने अथवा वस्तुओनो स्वभाव समजीने तेना उपर विरवास राखे; तथा ते
 धर्म जाणीने बीजुं शुं करे ? ते कहे छेः—देखेला सुंदर अने खराब एवां रूपोवडे निर्वेद पामे; (वैराग्य मेळवे.) ते आ प्रमाणेः—
 सांभळेला शब्दां, चाखेला रसो, सुंवेला गंधो, फारखेला शुभ अने अशुभ स्पर्शोवडे, रागद्वेष भाय; ते न करतां मध्यस्थ रहे; अने
 विचारे के, एमां रागद्वेष शुं करवो ? बळी प्राणी समूहनी अन्वेषणा जे इष्ट वस्तुओने लेवानी अने अनिष्ट वस्तुने त्यागवानीः
 जे बुद्धि छे, तेवा रागद्वेष साधु न करे, जेने आवी सामान्य लोक जेवी एषणा नथी तेने बीजी पण कुबुद्धि नथी, ते वतावे छे.

जस्स नरिथ इमा जाई अणणा तस्स कओ सिया ? दिट्ठं सुयं मयं विणणायं ज

एयं परिकहिज्जइ, समेमाणा पळेमाणा पुणो पुणो जाइं पकप्पंति ॥ सू० १२८ ॥

जे मोक्षाभिलाषी साधुने लोकैषणा [संसारी वासना] नथी तेने वीजी आरंभनी पवृत्ति पण होती नथी, अर्थात् जेणे भोग वासना त्यागी, तेने वीजी आरंभ पवृत्ति कयांथी होय? एटले साधुने सावध अन्तुष्टाननी पवृत्ति न होय, कारण के सावध पवृत्ति ग्रहस्थीनेज होय छे,

अथवा ह्मणांज वतावेली प्रत्यक्ष सम्यक्त्व ज्ञाती जे जीवोने न हणया संबंधी वतावी ते दया जेने न होय तेवाने कुमार्ग तजवा

तथा सावध अन्तुष्टान छोटवारूप वीजी विवेकनी बुद्धि कयांथी होय ! (अर्थात् दया साथेज वीजी सुबुद्धि होय छे.)

हवे शिष्यनी गति स्थिर करावा कहे, के जे तेने भे कहुं ते सर्वज्ञ देवे केवळज्ञान वडे साक्षात् देखेछुं छे, ते सेवा करावावडे भे सांभळुं, ते लघुकर्मवाळा भव्य जीवोने मानवा योग्य छे, तथा ज्ञानावरणीय कर्मना क्षय उपशमथी विशेष प्रकारे जाणु, माटे विज्ञात छे, तथी तप्तारे पण सम्यक्त्व विगोरे भे तपने जे कहु तेमां तप्तारे यत्न करावो, जेओ उपर वतावेल मार्ग न आदरे तेओने शुं थाय छे ते कहे छे, ते सयासी मनुष्यो मनुष्य विगोरे जन्ममां अत्यंत गृह वनीने वारंवार ' मनोज्ञ इंद्रियोना ' विषयमां वारंवार आनंद मालीने फरी फरीने एकेन्द्रि वे इन्द्रिय विगोरे जातिपां जन्म ले छे, पण संसारने तरी शकता नथी, जो आ प्रमाणे तत्वने जाणनारा वर्तमान स्वाद लेनारा छे, जन्ममां आनंद माननारा इन्द्रिय विषयमां लीन थयेला वारंवार नवां जन्म विगोरे साधनारा संसारी जीवो होय तो साधुए शुं करवुं ते कहे छे,

अहो अ राओ य जयमाणे धीरे सया आगयपणणे पमत्ते वहिया पास अपमत्ते सया

परिक्रमिजासि तिवेमि (सू० १२९) सम्यक्त्वाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥ ४-१ ।

दिवसे अने रात्रे मोक्ष मार्गमांज यत्न करते, परिसह उपसर्गमां न डरनारो जे धीर पुरुष हे, तथा सर्व काल जेणे सत् असत्तो विवेक स्वीकार्यो हे, तेने गुरु कहे हे, के तुं जो, प्रमत्त जीवो जे ग्रहस्थो हे, अथवा अन्य मतवाळा जेथो धर्मथी चहार रहेला हे, तेमनी दुर्दशा देखीने तेहुं दुःख तने न भोगवहुं पडे माटे तुं सर्वदा निद्रा विकथा विगेरेथी रहित बनी आंख फरकवा मात्र पण प्रमादी न थइश, अने कर्म शत्रुने जीतवासां अथवा मोक्ष मार्गे जवाथी पराक्रमी बनजे, आ प्रमाणे सम्यक्त्वतुं स्वरूप वतावनार जोथा अध्यायनो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशः।

पहेला उद्देशा साथे बीजानो आ प्रमाणे संबंध हे, के पहेला उद्देशासां सम्यक्त्ववार् वताव्यो, अने ते तेनो शत्रु मिथ्यावाद हे, तेने दूर करवाथी आत्मा लाप मेळवे हे, ते दूर करवो ज्ञान विना न थाय, अने विचारणा विना परिज्ञा न थाय, मिथ्यावादथी थयेल अन्य तीर्थिकोना मतनी विचारणा करवा आ कहेवाय हे, आ संबंधी आवेला उद्देशातुं आ पहेळें सूत्र हे, जे (आसना) विगेरे हे, अने अहि जे सम्यक्त्व लीधुं ते सात पदार्थोतुं श्रद्धान करवातुं हे, तेमां मोक्षाभिलाषीए शस्त्रपरिज्ञा नासना। पहेला अध्ययनमां जीवाजीव पदार्थना ज्ञानवडे संसार तथा मोक्षनां कारणोनो निर्णय करवो पडले तेमां संसारतुं कारण आसव अने निर्जरा, संसार मोक्षना अनुक्रमे कारणो हे, तेतुं सम्यक्त्व वरोवर विचारवा माटे कहे हे.

જે આસવા તે પરિસ્સવા જે પરિસ્સવા તે આસવા; જે અપાસવા તે અપરિસ્સવા, જે અપરિસ્સવા તે અપાસવા; ષ્ણ ષ્ણ સંબુદ્ધમાણે લોચં ચ આણાષ્ અભિસમિચ્ચા પુલો પવેદ્દયં (સૂ૦ ૧૩૦)

સૂત્રમાં જે શ્લોક છે, તે સામાન્યથી લીધેલ છે, અને જે આરંભોવદે આઠ પ્રકારનાં કર્મનો આશ્રય કરે છે, તે આસવો છે, અને જે અનુષ્ઠાનો કરવાથી વધી રીતે કર્મ થાય તે પરિસ્સવ છે, હવે પૂર્વે જે આસવો કર્મવંધનાં સ્થાન વતાઢ્યાં, તે પોતેજ કર્મની નિર્જ-
રાનાં કારણ થાય છે, તેનો ભાવાર્થ આ છે, કે સામાન્ય બુદ્ધિવાલાને મોહ કરાવે તેવાં ફુલની માલા તથા સુંદર સ્ત્રી સુલકરણ વાસ્તે માનવાથી તે વસ્તુઓ તેમને કર્મવંધનો હેતુ થવાથી આસવ છે પણ તેજ વસ્તુઓ તત્વને જાણનારા વિષયસુલકથી દૂર રહેલા મહાત્માઓને ફુલની માલા વિગેરે નકામી જેવી લાગવાથી તથા સંસાર ઞ્મણ કરાવનારી જાણીને તે વસ્તુઓથી તેને વૈરાગ્ય થાય છે, તેથી કહ્યું કે, જે આસવ છે તે જ્ઞાનીને પરિસ્સવ ષ્ણલે નિર્જરાતું સ્થાન છે, તથા વધી વસ્તુઓનું અનેકાંતપણું વતાવવા તેથી ડલડું સૂત્ર કહે છે, જે પરિસ્સવો છે તે આસવો થાય છે, ષ્ણલે અરિહંત સાધુ તપ સંયમ દશવિધ ચક્રવાલા સમાચારી અનુષ્ઠાન વિગેરે મહ્યાત્માને નિર્જરાતાં સ્થાન છે, તેજ ઉત્તમ પદાર્થો જેને અશુભ કર્મનો ઉદય હોય તેવા અશુભ અધ્યવસાયવાલા તથા દુર્ગતિમાં લડ્ જન્મને આગેવાન વનેલા જંતુને તે ઉત્તમ પદાર્થોની આશાતના કરવાથી તથા સાતારિદ્ધિરસનો ગર્વ કરવામાં તત્પર મનુષ્યને તે આસવો થાય છે, ષ્ણલે જ્ઞેનાથી ધર્મ પ્રાપ્તિ થાય ષ્ણવા તીર્થકરો પણ તેવાને પાપનું ઉપાદાનકારણ થાય છે, તેનો પરમાર્થ આ છે, જેટલાં કર્મોની નિર્જરા માટે સંયમ સ્થાન છે, તેટલાંજ વંધને માટે અસંયમસ્થાન છે, કહ્યું છે કે:—

અથા પ્રકારા યાવન્તઃ, સંસારાવેશ્નહેતવઃ । તાવન્તસ્તદ્વિપર્યાસાન્નિર્વાણસુખહેતવઃ ॥ ૧ ॥

જેટલા પ્રકારના જેટલા સંસારના અપણના હેતુઓ છે, તેટલાજ તેને વિપરીત રીતે લેવાથી નિર્વાણ સુખને આપનારા હેતુઓ છે. એ પ્રમાણે રાગદ્વેષથી જેનું અંતઃકરણ મલિન છે, અને વિષય સુખમાં જે તત્પર છે, તેના વિચારો દુષ્ટ હોવાથી તેને ઘયું સંસારને માટે છે, જેમ લીમડાના રસમાં જો દુધ સાકર વિગેરે મેઝવીણ તો પળ લીમડાની કઢવાથથી મીઠી વસ્તુ પળ કઢવી થાય છે, પળ સમ્યગદષ્ટિ જીવ, જેણે સંસાર સમુદ્રમાંથી નીકળવા માટે વિષય અભિલાષો દૂર કરેલાને સર્વે મોહક વસ્તુઓ અશુચિરૂપ અને દુઃખનું કારણ છે. ઘટું ભાવનારને સંવેગ થતાં તે મોહક વસ્તુઓ સંસારનું કારણ હતાં પળ મોક્ષને માટે થાય છે.

વક્રી તેજ વિષયને ડલટા (પતિષેધ) સૂત્ર વઢે કહે છે.

‘જે અણાસવા’ इत्यादि—પસજ્ય પતિષેધના ક્રિયા પતીષેધ પર્યવસાનપણે ‘પરિસૂત્ર’ આ પદવઢેસંબંધનો અમાત્ર હોવાથી આ પર્યુદાસ છે. તે સમજાવે છે. ઘટલે આસ્રવ (સંસાર કુલ્ય) થી ડલટું અનાસ્રવ તે વ્રત છે. તો પળ તે વ્રતો અશુભ કર્મના ડદ્યથી અશુભ અધ્યવસાય થતાં કર્મને અપરિસ્રવ (નિર્જરા માટે નહીં) થાય, જેમકે કૌંકળ આર્ય વિગેરેનું ચારિત્ર કર્મની નિર્જરા માટે ન થયું, તેમજ અપરિસ્રવ જે પાપનું ડપાદાન કારણ હતાં કોઈ પળ પ્રવચન (જેન જ્ઞાસન) ને ડપકાર વિગેરે કરવાથી તે અશુભ કુલ્યો કળવીર લતાને ખમડનારા ક્ષુલ્લકની માફક અનાસ્રવ ઘટલે કર્મવંધનનાં કારણ થતાં નથી.

(ડપરના સૂત્રોનો ભાવાર્થ આ છે કે જે આસ્રવ તે વંધનું કારણ હતાં કારણ વિશેષથી તે, કર્મવંધરૂપે નથી થતું, તેમ નિર્જરાનું

કરવા છતાં તેવા સંજોગોના અમાલેક્ષણ પરિણામ વદલાતાં વંધરૂપે થાય છે, તેવીરીતે કોઈને ઘ્રત લીધાથી અનાસ્ત્ર થતાં નિર્નરા થવી જોઈએ, છતાં કારણ વદલાતાં તે ઘ્રત વંધનરૂપે થાય, અને અપરિસ્ત્ર તે વંધનુ કારણ છતાં સંજોગો વદલાતાં વધરૂપે ન થાય, માટે ઇકાંત પક્કડવું. પળ સુદ્ધિ પૂર્વક સંજોગો તથા મનના પરિણામ વિચારી અનુમાન કરવું, કે વોલવું.) અથવા વીજી રીતે વતાવે છે.

જે આસ્ત્ર કરે—તે આસ્ત્રવો (પચ વિગેરેમાં 'અ' લાગે છે, તેજ પ્રણાળે જે પરિસ્ત્રવ કરે તે પરિસ્ત્રવો (નિર્જરક) છે. ઇની ચોખંગી થાય છે, તેમાં મિથ્યાત્વ અચિરતિ પ્રમાદ કપાય યોગોવહે જેઓ કર્મના અસ્ત્રવો (વંધકો) છે, તેઓજ વીજાઓના પરિસ્ત્રવો (નિર્જરા કરનારા) છે આ પ્રથમ માંગામાં પહેલા વધા સંસારી જીવો ચાર ગતિમાં ભ્રમણ કરનારા છે. તે દરેકને પ્રત્યેક ક્ષણે આસ્ત્ર તથા નિર્જરા છે પળ જેઓ આસ્ત્ર કરે તેઓ પરિસ્ત્રવ ન કરે, આ વીજો માંગો શૂન્ય છે કારણકે, વંધની જોડે નિર્જરા (થોડેપણે અંતે) હંમેશાં ચાલુજ છે.

૯ પ્રમાણે જે અનાસ્ત્રવાલા છે, તેઓ પરિસ્ત્રવવાલા છે, ઇટલે, તેઓ અયોગી કેવલી ૧૪ ગુણસ્થાનમાં રહેલા વીજા માગમાં છે, અને ચોથા માગમાં સિદ્ધ મગવંતો છે, તેઓમાં અનાવપણું છે, તેમ અપરિસ્ત્રવપણું પળ છે, ઇમાં પહેલો અને છેલ્લો માંગો સૂત્રમાં લીધેલ છે. અને પહેલો છેલ્લો લેનાથી મધ્યના વે માંગા સાથે રહેવાથી આવીગયલા જાળવા. જો, ઇમ છે, તો શું કરવું તે કહે છે:—

ઊપર કહેલા પદો (જેનાથી અર્થ સમજાય; તે પદ છે તે) આસ્ત્રવો વિગેરે છે, (અને વીજાનો અર્થ સમજાવા માટે શબ્દના પ્રયોગથી જે પદો અને અર્થ કહેવા જોગ છે,) તે મને યોગ્યરીતે સમજવાવહે સમજેલો સાધુ વિચારે કે, દુનિયાના જીવો આસ્ત્રદ્વાર-

વઢે આવેલાં કર્મવઢે વંધાય છે, તથા તપ અને ચારિત્ર વિગેરેથી કર્મોથી મુક્તાય છે. આહું તીર્થકરના કહેલા આગમને અનુસારે જે આજ્ઞામાં રહે; અને વર્તે તે મુક્તાય. એવું જાણીને કર્મથી છુટવા હુઢું વતાવેલ આસવ, તથા પરિસૂવ સમજીને કયો માણસ ધર્મચારિત્રમાં હથમ ન કરે? કેવીરીતે કહેલ છે, તે વતાવે છે.

આસવો છે, તે જ્ઞાનના પ્રત્યનીકપણાથી ણટલે, જ્ઞાન ખણાવનારના ગુણ મુલત્રા. ખણતાં અંતરાય કરવી; જ્ઞાન ઉપર દ્વેષ કરવો; જ્ઞાનની અતિશય આતાશના કરવી; જ્ઞાનને સમ્યવપકારે ન વતાવવાથી જ્ઞાનાવરણીયકર્મ વંધાય છે, તેજ પ્રમાણે દર્શનના શત્રુપણાથી જ્ઞાનમાં વતાવેલાં વિઢનો માફક દર્શનમાં વિઢન કરવાથી ણટલે, દર્શનને સમ્યવપકારે ન વતાવહું; ત્યાં સુથીના દોષો લગાઢવાથી દર્શનાવરણીયકર્મ વંધાય છે. તેજ પ્રમાણે પાણીઓહું, તથા મૂતોહું તથા જીવોહું તથા સત્તનું ખહું ચાહી દુઃસ્ર ન આપવાથી શોકહું કારણ ન આપવાથી તથા ન હુરત્ર્યાથી તથા પીઢા ન આપવાથી તથા ન સંતાપવાથી (અર્થાત્ નિર્મલ ચારિત્ર વઢે સર્વે જીવોને અમ-યદાન આપવાથી) સાતા વેદનીય કર્મ વંધાય છે, ણથી હલ્હું ણટલે જીવોને અસંયમ વઢે દુઃસ્ર આપવાથી અસાતાવેદનીયકર્મ વંધાય છે, તેજ પ્રમાણે અનતાહુંવંધીના હલ્હુપ્રપણાથી તીવ્રદર્શન મોહનીયપણે તથા ખવલ ચારિત્રમોહનીયતા સઢ્ધાત્રથી મોહનીયકર્મ વંધાય છે, મહાન આરંખથી તથા ઘણા પરિગ્રહથી પંચેન્દ્રિયના વંધથી માંસના ત્રાવાથી નરકહું આશુ વધાય છે, તથા માયાવીપણે જુ-ટના કારણે તથા સ્વોટા તોલ માપ કરવાથી જીવ તિર્યંચહું આશુ વાંધે છે. સ્વભાવે વિનયવાન તથા માહુક્રોષ લજ્ઞાહુપણાથી, તથા અઢેસ્વાહ ન કરવાથી મનુષ્યહું આશુ વાંધે છે, તથા સરાગ-સંયમથી ઢેશચિરતિ (શ્રાવકનાત્રત) તથા વાલતપસ્યથી અને અફામ નિર્ઢરાથી ઢેવહું આશુ વંધાય છે, અને કાર્યમાં સરલ, તથા કોમલ વચન યોગ્યરીતે વોલવાથી શુખ નામ વંધાય છે. અને તેથી હલ્હા

દુર્ગુણોથી અશુભ નામ વન્ધાય છે. જાતિ, કુલ વલ્લરુપ તપ, વિદ્યા લાખ ઐશ્વર્યનાં મદ ન કરવાથી ડંચગોત્ર વન્ધાય છે, અને જાતિ વિગેરેનો મદ કરવાથી, તથા પારકાની નિંદા કરવાથી નીચગોત્ર વન્ધાય છે, દાન, લાખ ધોગ—ઉપધોગ, અને વીર્ય ણ પાંચના અંતરાય કરવાથી અંતરાયકર્મ વન્ધાય છે. આજ ઉપર કહેલા આસત્રો છે. દ્વે પરિત્વચોદું સ્વરુપ વતાવે છે:—

અનશન વિગેરે વાહ્ય અને અભ્યંતર—તપ તે કર્મની નિર્જરા કરનાર પરિસ્ત્રવ છે, આ પ્રમાણે આસ્ત્રવ કરનાર અને નિર્જરા કરનાર ભેદોસહિત જીવો વતાવ્યા છે, તે વથા જીવ વિગેરે સાત પદાર્થો મોક્ષ સુધી છે તે જાણવા. આ પદાર્થોને તીર્થંકર તથા ગણધર ભગવન્તોણ લોકોત્તર જ્ઞાનવદે જાણીને જુદા જુદા વતાવેલ છે, અને તેજ પ્રમાણે તેમની આજ્ઞામાં વર્તનાર વીજો કોદ્દપણ સાધુ ચૌદ પૂર્વ વિગેરેદું જ્ઞાન ધરાવનાર જીવોનાં હિતને માટે વીજાઓને ણ ઉપદેશ આપે છે, તે વતાવે છે:—

આયાદ્ નાળીદ્દહ માળત્રાણં સંસારપદિવપ્પણાણં સંબુદ્ધમાણાણં વિજ્ઞાણપત્ત્રાણં, અદ્દાવિ સંત્તા
અદુવા પમત્તા અહા સચ્ચમિપં તિવેમિ, નાળાગમો મત્તુમુહસ્સ અરિથ્થ દ્દચ્છા પળીયા।

વંકાનિકેયા કાલગહિયા નિચચનિવિદ્દા પુઢો પુઢો જાદં પકવ્પયંતિ (સૂ૦ ૧૩૧)

વથા પદાર્થોને વતાવનાર જ્ઞાન છે. તે જ્ઞાન ને હોય; તે જ્ઞાની કહેવાય, તે જ્ઞાની પ્રવચનમાં મનુષ્યાંને ઉપદેશ કરે છે. મનુષ્ય છેવાનું કારણ ણ છે કે, પવેન્દ્રિય સાંખલે સમજો; તો ણ, તેઓ સંપૂર્ણ ચારિત્ર તથા સંવર લ્દ શકે નહિ; અને દેવતા વિગેરે સાંખલે, ણ આદરી શકે નહિ વહી, કેવળીને ઉપદેશની જરૂર નથી; માટે સંસારમાં રહેલાં યાતીકર્મવાલાં જીવોને આ ઉપદેશ અપાય છે.

वळी, जेओ धर्मने भविष्यमां समजरो, अने स्वीकाररो, जेभ सुनिमुवतस्वामी तीर्थकरणो अने घोडानो दृष्टांत छे, तेवाओने धर्म संभ-
ळावाय, अने ते समजेला होय एटले जेओने आगळ कहेतां छद्मस्त साधुने खबर न पडे माटे केवा जीवोने कहेवुं ते कहे छे.
विज्ञान प्राप्त एटले हितनी प्राप्ति अने अहित छोटवानो विचार करवानुं जेने ज्ञान होय, तथा कथी पर्याप्तिओथी पर्याप्त एटले संझी
होवा जोइए. आ संबंधमां नागार्जुनीया कहे छे.

“ आघाड धर्मं खलु से जीवाणं. तं जहा—संसारपडिवन्नाणं माणुसभवत्थाणं आरंभ विणईणं

दुक्खुच्चेअसुहे सगाण धम्मस्सवण गवेस्सयाणं सुस्सुसमाणाणं पडिपुच्छमाणाणं विपणाण पत्ताणं ”

ससारमां रहेला मनुष्य जन्ममां आवेला पण आरंभथी विरमेला दुःखनी उपेक्षा करनारा सुखने वांछनारा होय छतां पण
तेओ धर्म सांभळवानी इच्छा करता होय, गुस्नी उपासना करता होय, धर्मा विषयने पुञ्जता होय अने समजवानी शक्तिवाळा होय
(आ सूत्र सरळ होवाथी टीका नथी परंतु आरंभ विनयनो अर्थ आरंभथी दूर होय) तेओने ज्ञानी साधु धर्म वतावे छे, ते कहे छे.
'अद्धानि' विगरे एटले विज्ञानने प्राप्त थएलाने धर्मने कहेतां कांइ पण निमित्तथी आर्तध्यानवाळा चिंलति पुत्रांनी माफक होय तो
पण धर्म पामे, अथवा विषयना अभिलाषथी शालिमद्र माफक प्रपत्त होय छतां पण तेवा कर्मना क्षय उपशमथी जेओ धर्म स्वीकारे
छे, ते कहे छे अथवा आर्त दुःखीओ अने प्रपत्त सुखीओ तेओ पण धर्म पामे छे तो बीजाओनुं शुं कहेवुं? (अर्थात् धर्म पामे छे)
अथवा रागद्वेषना उदयथी आर्त तथा विषयोथी प्रपत्त छे. तेओ जैनेतर अथवा गृहस्थ संसारकांतारमां पेठेला केवी रीते तत्त्वने

जाणोला करुणायोग्य रागद्वेष विषयना अभिलाषने जडमूल्यधी उखेडवाने केम समर्थ न थाय, आ वातने वीजी रीते न माने, तेथी वतावे छे 'अहारासच्च' विगेरे. आजें मे कहुं अने कहेवाय छे, ते सत्य छे, एवुं हुं कहुं छुं के जेवी रीते सम्यक्तव अथवा चारित्र्यां परिणाम जे दुर्लभ छे, ते पामीने प्रमाद न करवो, शिष्य कहे छे टीक पण शुं आचार लक्ष्णे प्रमाद न करवो ! ते कहे छे, 'नाणा गमो' विगेरे, एटले कोइ पण वखत संसारमां रहेको जीव मृत्युना भोटापां न आवे एवुं नथी, कहुं छे के:—

वदत पदीह कश्चिदनुसंततसुखपरिभोगलाहितः । प्रयत्नशतपरोऽपि, विगतव्यथमायुरवाप्तवान्नरः

कोइ डाहो माणस पूछे के बोळं, के अहीआ रोज सुखनां परिभोगथी लाड लडावेलो अने संकडो प्रयत्न करीने राखेलो पण वगर व्यथाना आयुवाळो माणस कोइ पण छे के ? (नथी)

न खलु नरः सुरौषसिद्धासुरकिन्नर नायकोऽपि यः । सोऽपि कुतान्तदन्तकुलिशाक्रमेण कुशितो न नश्यति॥

देवताओना समूह अने सिद्ध विद्यावाळो तथा असुरकिन्नरनो नायक पण अथवा मनुष्य पण एवो कोइ नथी, के जे पुरुष ज-मना दांतरूपी वज्रना आक्रमणथी कुश करेलो ते न नाश पावे ? वकी मृत्युना भोटापां गयेळो जे कोइ छे, तेने वचाववानो कोइ पण उपाय नथी कहुं छे, के नाशी जाय, नपी पडे, चाल्यो जाय विस्तार करे अथवा रसायम क्रिया करे अने भोट्यां व्रत करे जे वधारे वीक्षण छे, ते गुफामां पण पेसे, तप करे, माणसर खाय, मंत्र साधन करे तो पण जमना दांतरूप यंत्रगी कातरमां ते कपडने वीराय छे ! अने जेओ विषय कसायना अभिलाषथी प्रपत वनेला धर्मने नथी जाणता तेओनी शुं दशा थाय छे, ते कहे छे, इंद्रियो तथा मनना

विषयने अनुकूल प्रवृत्ति (इच्छा) प्रमाणे अर्ही विषयना सन्मुख जेमां कर्मनो बन्ध छे, ते तरफ अथवा संसारना सन्मुख प्रकर्षण जेओ गएला छे तेओ इच्छा प्रणीत छे. जेओ तेवा छे. तेओ वंकनी अथवा असंयमनी जे पर्यादा छे, तेनो आश्रय लीयेला ते वंकानिकेत छे, अथवा जेमनुं वाकुं निकेत छे, तेवा छे, (व्याकरणना नियमथी सूत्रमांकनो काथयेल छे.) अने जेओए असंयमनी मर्यादा (हद) लीयी छे. तेओ काल (पोत)थी, वेराता कर्मनां उपादान कारण जे सावद्य कर्मनां अनुष्ठान छे, तेमां रक्त वनीने वारंवार एकेन्द्रिय जाति विगेरेमां नवां नवां जन्म मरण भोगवे छे, अथवा काल ग्रहितनो बीजो अर्थ एम लेवो के केटलाक जीवो एम चितवे के धर्म करीशुं, चारित्र लइशुं, एवी आश्राथी वेंसी रहै, (अथवा आ हिताग्निना व्याकरणना प्रयोगथी अथवा आर्ष वचन प्रमाणे परनिपात करतां) ग्रहितकाल शब्द लेतां, केटलाक एहुं इच्छे के पाळ्यी नयमां के मरणना अंत समयमां अथवा पुत्र परणाव्या पळी धर्म करीशुं, हमणा नहि, एवी उमेद राखनारा सावद्य आरंभमां रक्त वनी इच्छा प्रमाणे वक्र असंयममां रहीने भविष्यने भरोसे रहीने धर्म करवानुं राखी वर्तमानमा पाप रक्त वनी पृथक पृथक (जुरी जुरी) एकेन्द्रिय जाति विगेरेमां जन्म-मरण करे छे.

बीजी प्रतिमां 'एत्थ मोहे पुणो पुणो' पाठ छे. तेनो अर्थ आ छे, के उपर कहेली सीते इच्छा एदले, इंद्रियोने अनुकूल कर्म-रूप-मोदमां हुवेला वारंवार एवां पाप करे छे के, तेनी संसारथी अपच्युति (नशुक्ति) थाय, संसारभ्रमण कथांज करे; तेथी शुं थाय ते वतावे छे:—

इहमेगेपि तरथ तरथ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसंवेयंति, चिदं कम्मोहिं कुरेहिं चिदं परिचिदइ,
अचिदं कुरेहिं कम्मोहिं नो चिदं परिचिदइ, एगे वयंति अटुवावि नाणा नाणो वयंति अटुवावि एगे (सू० १३२)

ह (आ) चौद राजलोकप्रामाण्यवाला संसारमां केदलका प्रियत्वाल, अचिरति प्रमाद, अने कपायस्पदगुणवाळां संसारी जीवोने (तेमनां पापनां फल) ते ते नरक तिर्यच गति विगोरे पीडाना स्थानमां वारंवार जवाथी संसलव (परिचय) थाय छे, एटले, पूर्वनां सूत्रमां कला प्रमाणे तेओ इच्छाने अनुसार तस्वो वनावी इन्द्रियोने वल्ल थद तेने अनुकूल आचारीने नरक विगोरे स्थानमां गयेला छतां पण जैनेतर अथवा जैनमतना पासस्था (स्वेच्छाचारी) साधुओ औदेशिक विगोरे दोषित आहारने निर्दोष वतावनारा नरक विगोरेना दुःखना अनुभवो (स्पर्शने) भोगवे छे, (ते इन्द्रियोथी सौथी वथारे परवश वनेला) नास्तिकनुं मानवुं वतावे छे केः—
पिव स्वाद च चारलोचने !, यदतीतं वरगात्रि तन्न ते । नहि भीरु ! गतं निवर्त्तते, समुदायमात्रमिदं कलेवरम् ॥

ते मतनो नायक ब्रह्मरपति पोतानी त्रिथवा वंनने कुमार्गे दोरवा कहे छे केः—“हे सुंदर लांचनवाकी ! इच्छत पी, स्वा. हे सुंदर शरीरवाकी ! जे गयुं ते तासं नथी ! हे वीकण ! गयेछुं पाछुं आवतुं नथी ! आ परमाणुओना समुह मात्रज शरीरनुं खोछुं छे. (अर्थात् जे शरीरवडे धर्म साधवाना छे, तेना वडे भोगोमांज रक्त थवानुं वतावुं; अने तेनी भोकी वेनने विवेक न होवाथी तेना फांसायां फसी, अने तेमनां अधम आचरणोथी अनेक जीवोने कुमार्गे दोरवानुं स्थान मळयुं.)

हवे वैशेषिक मतनुं थोछुं वर्तन दूषणरूप छे, ते वतावे छे, के वैशेषिक मतवाला पण सावध योगना आरंभीओ छे, तेओ बोले छे के, अभिषेचन (स्नान) उपवास ब्रह्मचर्य गुरुकुलवास, वानप्रस्थ (वजवास) यज्ञ करवो, दान देवुं, मोक्षण (मोक्षण) दिग्न न-क्षत्र मंत्र काल नियम विगोरे छे (आ यावतोयां स्नान यज्ञ विगोरे एकेन्द्रि विगोरेने पीडाकारक छे तेज प्रमाणे बीजा मतवाळाओनुं जे सावध अनुष्ठान छे ते एवी सीते वताववुं—

प्रश्नः—कदाच एम पण होय, परंतु वधाए तेवा इच्छापणीत विगेरेथी दुर्गतिमां जइ दुःखनो स्पर्श भोगवनारा छे के कोइकज तेने योग्य कर्म करनारो दुःख भोगवे छे? ते बतावे छे.

उत्तरः—वधा नहीं, पण जे अत्यंत क्रुर वधबंधन विगेरेनी क्रिया वडेज (चीकणा कर्म बांधी) वैतरणी तरण असिपत्र वनपत्र पडवानी तथा शालमली दृक्षतुं आलिंगन विगेरेथी थएल नरकनी भयंकर वेदनानी विरूप दशाने भोगवतो सातमी विगेरे नरकमां वसे छे, पण जे अत्यंत हिंसावाळा कर्मो न करे ते घणी पीडावाळां नरकोमां उत्पन्न थतो नथी, टीक, एम हरो, पण आहुं कोण कहे छे, 'एगे वयंती' त्यादि चौद पूर्वी विगेरे मुनिओ कहे छे, अथवा जेने सकळ (वधा) पदार्थोहुं बतावनारं ज्ञान छे, ते ज्ञानी बोले तथा जेहुं दिव्यज्ञानी केवळी बोले छे तेमज श्रुत केवळी बोले छे, तथा जे श्रुत (ज्ञान वाळा) केवळी बोले छे, तेज निरावरण केवळज्ञानी बोले छे, (ते प्रत्यागत सूत्रवडे जाणवुं के) 'नाणी' विगेरे-ज्ञानी केवळी जे बोले छे तेहुं श्रुत केवळी यथार्थ बोलता होवाथी ते एकज छे, कारण के केवळी मशुने दरेक पदार्थ साक्षात् देवाय छे, अने श्रुत केवळी तेमना उपदेश प्रमाणे वर्ते छे. तेथी बोलवामां पण एक वाक्यता (सरवापणुं) छे; ते कहे छे, तथा वादीओनो विवाद तथा तेमहुं समाधान करे छे.

आवंती केयावंती लोयंसि समणा भ माहणा य पुढो विवायं वयंति, से दिदं च णे सुयं च णे मयं च णे विणणायं च णे उडुदं अहं निरियं दिसासु सव्वओ सुपडिलेहियं च णे-सव्वे पाणा सव्वे जीवा सव्वे भूया सव्वे सत्ता हन्तव्वा अजावेयव्वा परिधावेयव्वा परिधेत्तव्वा

उद्देचयन्वा, इत्थवि जाणह नत्थित्थ दोसो अणारियवयणमेयं, तत्थ जे आरिआ ते एवं वयासी-से दुद्धिदं च भे दुस्सुयं च भे दुम्मयं च भे दुत्तिवणायं च भे उद्धं अहं तिरियं दिस्सासु सन्वओ दुप्पडिलेहियं च भे, जं णं तुब्भे एवं आइक्खह एवं भासह एवं पणवेह-सव्वे पाणा ४ हंतव्वा ५, इत्थवि जाणह नत्थित्थ दोसो, अणारियवयणमेयं, वयं पुण एवमाइक्खामो एवं भासामो एवं परूवेमो एवं पणवेमो-सव्वे पाणा ४ न हंतव्वा १ न अजावेयवा २ न परिचित्त्वा ३ न परिधावेयवा ४ न उद्देचयवा ५, इत्थवि जाणह नत्थित्थ दोसो, आयरिय-वयणमेयं पुद्दं निकाय ससयं पत्तेयं पत्तेयं पुच्छिस्सामि, हंभो पवाइया! किं भे सायं दुस्खं असायं? ससिया पडिवणो यावि एवं बूया-सव्वेसिं पाणा ऽ सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं ससाणं असायं अपरिनिव्वाणं सहलभयं दुस्खं तिवेमि (सू० १३३)

॥ चतुर्थधिययने द्वितीय उद्देशकः ४-२ ॥

‘आवन्ती’ जेटला ‘केआवन्ती’ केटलाक मनुष्य लोकमां जैनतर साधु, तथा ब्राह्मणो जुहुं जुहुं विवादरूपे योत्ते हे, अर्थात्

केटलाक अन्यदर्शनीओ परलोकने वताववानी इच्छावाळा पोताना मंतव्यना प्रेपथी बीजातुं मंतव्य जुठुं दराववा विवाद करे छे, जेपके भागवत मतना लोको कहे छे के पचीस (२५) तत्तना ज्ञानथी मोक्ष थाय छे. आत्मा सर्वव्यापि छे, गुण रहित छे, चैतन्य लक्षणवाळो छे, अने विशेष रहित सामान्य तत्व छे, तथा वैशेषिक मतवाला कहे छे, द्रव्य विगोरे छ पदार्थना परिज्ञानथी मोक्ष छे, समवायिज्ञान गुणवढे इच्छा प्रयत्न द्वेष विगोरे गुणोथी गुणवान् आत्मा छे, परस्पर निरपेक्ष सामान्य विशेषरूप तत्व छे, शाक्य मतवाला कहे छे, परलोकमां जनार आत्माज नथी, निश्चयथी सामान्य क्षणिक वस्तु छे, मीमांसक कहे छे, के मोक्ष तथा सर्वज्ञानो अभाव छे, तथा केटलाक मतमां पृथ्वी विगोरे एकेन्द्रिय जीवो नथी, वीजा केटलाक वनस्पतिमां पण अचेतनपणुं माने छे, तथा केटलाक वेयेन्द्रि विगोरे कृमी विगोरेमां जंतुपणुं मानता नथी, अथवा जीवपणुं मानवा छातां तेना वधमां वंथ मानता नथी, अथवा अल्प मात्र वंथ माने छे, तथा हिंसायां पण भिन्न वाक्यपणुं छे, ते कहे छे:—

प्राणी प्राणिज्ञानं यातकच्चित्तं च तद्रताचेष्टा । प्राणैश्च विप्रयोगः पञ्चभिरापद्यते हिंसा ॥

जीव जीवसुं ज्ञान, यात करनारसुं चित्त, अने तेमां रहलीचेष्टा पाणा साथे वियोग, आ प्रमाणे पापने जाणवाथी हिंसा थाय छे. तथा औद्देशिकता परिभोगनी आज्ञा आयवा विगोरेनी जे विरुद्ध बात छे, ते पोतानी मेळे विचारसुं, म—ते द्राह्मण तथा श्रमणो धर्म विरुद्ध जे बोले छे, ते सूत्र वढेज वतावे छे,

अन्य दर्शनीसुं कहेवु आ छे के:—(‘से दिडुं वेण इत्यादि’ थी लइने ‘नत्थिरय दोसोत्ति,’) दिव्यज्ञानवढे अमे अथवा,

अमारा धर्मना नायको, (तीर्थकरो) शास्त्र रचनाराए साक्षात् जोयुं हे. अथवा, अमारा मोटा गुरु पासेथी असे तथा अमारा बहगुरु पासेथी गुरुए सांभळ्युं हे. अथवा ते धर्मनायकनी पासे सेनामां रहेनारा शिष्योए एम मान्युं हे. अथवा तेपने आ युक्तिए युक्त होवाथी मान्य हे. अथवा अमोने अथवा, अमारा धर्मनायकने आ जाणीतुं हे, ते तत्व भेदना पर्यायोवडे अमोए अथवा, अमारा धर्मनायके पारकाना उपदेशथी नहि; पण, स्वयं जाणोळुं हे के, उपर नीचे तथा, चार दिशा, चार खुणा मळी दशे दिशामां तथा, बधां प्रमाणो ते, प्रत्यक्ष अनुमान ऊपमान आगम अर्थापत्ति विनेरेथी तथा, मनना निश्चयथी असे तथा अमारा गुरुए विचारी लीयुं हे के:—सर्वे प्राणो, सर्वे जीवो, सर्वे भूतो, सर्वे सत्वो हणवा, हणाववा; संग्रह करवो; सतापवा; दुःखी करवा तेमां कंड दोष नथी; तेम धर्मकार्यमां पण समजवुं के, याग यज्ञ करवामां अथवा, देवताने बळिदान आपनामां प्राणी हणाय; तो, पापनो बंध नथी. आ प्रमाणे, केदलाक जेनेतर सन्यासीओ तथा पोताने माटे रसोइ बनवेली जमनारा ब्राह्मणो धर्म विरुद्ध तथा, परलोकविरुद्ध बोले हे. आ प्रमाणे, तेमनुं बोलवुं जीवहिंसानुं होवाथी पापना अनुबंधवाळुं वचन अनार्यपणीत (रचेळुं) हे, पण जेओ तेवा हिंसक इन्द्रिय प्रिय नथी. तेवाओ शुं कहे हे ? ते बतावे हे.

(तत्र वाक्यनी शरुआत करवा अथवा निर्धारण माटे हे.) जेओ देश भाषा तथा चारित्र वहे आर्य (उत्तम गुणवाळा) हे, तेओ एम कहे हे, के अन्य मतवाळाए जे कहुं ते तेमणे खराब रीते देखेळुं हे, अर्थात् तमोए अथवा तमारा गुरु तथा धर्मना नायकोए जीव हिंसानी पुष्टि करो तेथी नीचला दोषो तपने लागु पडे हे. (णं वाक्यालंकारमां हे) वळी तमे याग अथवा देवताना बळिदानमां हिंसाने निर्दोष मानो छो, परंतु आर्य पुरुषो तेमां पण दोष माने हे. एवुं बतावीने हवे आर्य पुरुषो पोतानो मत स्था-

पन करे छे अने कहे छे, अमे आबुं कहीए छीए, अने प्ररूपणा करीए छीए के:-बधा प्राण, जीव, भूत, सत्व ए चारे शरीरधारी जीवो छे, तेमने हणवा नहिं, हुकम चलाववो नहि, संग्रह करवो नहि, संतापवा नहि, पीडा आपवी नहि, उपद्रव करवा नहि, अ-होंआज दोष नथी. (अर्थात् कोइपण जीवने कोइ पण रीते पीडा न आपनारं संयमज निर्दोष छे,) आ आर्य पुरुषोनुं वचन छे. आबुं कहेबाथी हिंसा प्रिय जैनेतर कहे छे, के अपने तमारं वचन अनार्य लागे छे.

जैनाचार्यः—तमारं कहेवुं तमारा एक दिलवाला भिजोज स्वीकारी शकथे. कारण के ते युक्ति रहित छे. तेने माटेज फरी कहे छे, के पोतानी वाक् (वाणी) रूप थंज वडे बंधायला वादीओ पोतानी कुवाणीथी पाळा नहि फरे. (आग्रह पकडी राखथे) तेवा वादी (जैनेतर) ने तेमना मानेला आगमनी व्यवस्था करीने तेतुं विरुप (अनुचित) पणुं वताववा वडे जैनाचार्य पश्व पूछे छे. अथवा प्रथम पश्व करनारा दरेक वादीओने व्यवस्थापीने जैनाचार्य तरफथी पश्व पूछाय छे के-बोळो ! वाद करनारा जैनेतर बंधुओ तमने साता (सुख) मनने आनंद उपजावनारा छे, के दुःख ? जो एम कहे के सुख कहाळुं छे, तो तमारा आगम (सिद्धांत) ने प्रत्यक्ष तथा लोकना मानवा प्रमाणे वाधा थथे. (तमारो सिद्धांत खोटो थथे.) कदी तेओ छुवाइथी जुहुं कहे के अपने दुःख प्रिय छे, तो तेवा वादीओने पोतानी वाक् जालमां बंधायलाने आ प्रमाणे कहेवुं, के तमने जेम दुःख प्रिय छे तेम सर्वे पाणी मात्रने दुःख प्रिय नथी, पण अप्रिय छे, अशांतिकर छे, महा भयरूप छे. छातां हठ ग्रहीने ते न माने तो कहेवुं, के तमारं बोलवुं सत्य क्यारे थाय, के ते प्रमाणरूप बने, पण तेतुं प्रमाण मळवुं दुर्लभ छे के सुखने बदले दुःख कोइ पण प्रिय माने ? माटे तमारे अथवा दरेक मोक्षाभिलाषी के सुखना अभिलाषीए कोइपण जीवोने हणवा नहिं, पीडवा नहिं तथा केदमां नाखवा नहिं विगोरे जाणवुं. ते

हणवासां दोष छे, छलां हणवासां दोष नथी. एतुं मानवुं ते अनर्थ वचन छे. (इति शब्द समाप्ति माटे छे) आहुं सुधर्मस्वामी जंबूस्वामीने कहे छे. उपर वताव्या प्रमाणे ते वादीओने तेमना वचनयंत्रवहेज बांधीने तेमनी अनार्थता वतावी. आ संबंधमां रोह-गुप्त मंत्री जेणे जैनगमसुं तत्व सारी रीते जाणुं छे तेणे मध्यस्थपणुं धारण करीने तमाम मतवाळानी परिखा करावा वहे जेम निराकरण कर्युं ते निर्मुक्तिकार गाथाओ वहे कहे छे.

खुड्डग पायसमासं, धम्म कहंपि य अजंपमाणेणं । छन्नेण अन्तळिगी, परिच्छिग्य रोहगुत्तेणं ॥ २२७ ॥

आ गाथा वहे संक्षेपथी शुद्धकनुं दृष्टांत कहू छे, गाथाना पदना संक्षेपवहे राजसमासां बधा वादीनी धर्मकथा मगट सांभकीने रोहगुप्त मंत्रीए वादीओनी परीक्षा करी. आ गाथानो बधारे खुलासो नीचेनी कथाथी जाणवो. ते कहे छे के चंपानगरीमां सिंहसेन राजानो मंत्री रोहगुप्त महामंत्री हतो ते जिनेश्वरना मंतव्यमां निर्मळ हृदयवाळो बनीने सत् असत्वादना विचारनी चर्चा पूळतो हतो, ते समये जे जेने इच्छित ते तेणे सारं कहू, ते समये चुप बठेला मंत्रीने राजाए कहू, धर्म विचारो जणाववासां तमे कांइ केम बोलता नथी?

मंत्री बोल्यो:—आ वादीओना स्वपक्षना आग्रहवाळां वचनोवहे शुं लाभ थाय ? माटे आपणे विचार करीए, पोतानी मेळे धर्म-परीक्षा करीए. आ प्रमाणे बधा वादीओने शांतिनुं वचन कहीने राजानी आज्ञा लइने नीचखुं एक पद वनावी नगरमां लटकवायुं.

सकुंडलं वा वयणं न व'त्ति, आ गाथाना बीजां त्रण पद मेळवी आरवी गाथाभंडारमां राजा पासे सुकावी. पळी जाहेर दांडी पीटावी कहूं के आ पद सिवाय त्रण पद नवां वनावीने राजा पासे जे गुरु लावचो, तेने राजा मों माग्या दान आपचो, तथा तेनो

भक्त बनसो, आ गाथाना पदने सर्वे वादीओ पोलाने बेर लइ गया. सातमे दिवसे राजाना सभामंडपमां सर्वे वादीओ आव्या तेमां परित्राड (परित्राजक) बोल्यो.

भिवखं पविट्टेण मएऽज्ज दिट्ठं, पमयामुहं कमलविसालनेत्तं । वक्खित्तच्चित्तेण न सुहु नायं,
सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २२८ ॥

भिक्षामां प्रवेश करेलाए में आजे प्रमदा (शुवान स्त्री) तुं मोहुं जोयुं जेमां कमल सरखां नेत्र हतां पण माहं व्याक्षिप्त चित्त होवाथी मने वरोबर खबर न पडी, के तेना मोहामां (कानमां) कुंडल हतां के नहि (आ गाथानो अर्थ सुगम छे परंतु कुंडल हतं के नहि तेनी शंका रहेवानुं कारण फक्त तेणे चित्तनो व्याक्षेप बताव्यो.) आ वादीमां वीतराग (त्याग) दया न जोवाथी, तथा पूर्व आपेली गाथा प्रमाणे अर्थ न मलवाथी, तिरस्कार करीने राजाए रस्तो पकडाव्यो, पडी तापस बोल्यो:—

फलोद्दणं मि गिहं पविट्टो, तत्थासणत्था पमया मि दिट्ठा । वक्खित्तच्चित्तेण न सुहु नायं,
सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २२९ ॥

फलना उदय वडे हु परमां पेठो, त्यां आसन उपर स्त्री बेठेली हती, पण व्याक्षिप्त चित्तथी में बराबर निर्णय न कर्यो, के ते स्त्रीना कानमां कुंडल छे के नहि. ? (आमां पण वैराग्य न होवाथी तेने रजा आपी.) पडी बौद्ध अनुयायी बोल्यो:—

मालाविहारमि मएऽज्ज दिट्ठा, उवासिया कंचणभुसिशंगी । वक्खित्तच्चित्तेण न सुहु नायं,

सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २३० ॥

मालना विहारमां में आजे एक उपसिक्का (ते मतने माननारी स्त्री) जोइ, ते सुवर्णना भूषणे भूषित हती. पण व्याक्षिप्त चित्त वडे में न जोयुं, के कानमां कुंडळ छे के नहि. ?

आ प्रमाणे बीजा तीर्थीओ (वादीओ) ए पोतानुं कही बताव्युं पण कोइ जैन साधु न आव्यो, त्यारे राजाए कहुं के तेने बोलावी लावो. तेथी मंत्रीए एक नानो साधु हतो पण तेने वैराग्य दशाए परिणमेळो जाणी गोचरीमां आवेळो हतो, तेने प्रत्युष (उगता मभात) नी माफक राजा आगळ आप्यो तेथी राजाए ते चोथा पदने आपी उत्तर मागतां शुद्धक साधुए कहुं,

खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स, अउझापजोगो गयमाणसस्स । किं मउझ एएण विचिंतएणं !

सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २३१ ॥

क्षमा धारण करनारा, काम दमन करनारा, इन्द्रिओने जीतनारा अने अध्यात्ममां रक्त एवा मारा जेवा मुनिने शा माटे चिंतववुं, के ते प्रमदाना कानमां कुंडळ छे के नहि ? आमां अजाणपणानुं कारण क्षांति विगोरे गुणो धारणनुं कारण बताव्युं, पण चिंतना विक्षेपनुं कारण न बताव्युं, तेथी राजाने तेनी निसृहता उपरथी धर्म भावनानो उल्लास वध्यो, पळी राजाए धर्मतत्व पुळतां शुद्धक साधुए माटीनो एक गोळो भीत तरफ उळाळी सूचना करीने चालवा मांडवुं, त्यारे राजाए पूढ्यु के आप पूढवा छतां धर्म केम कहेता नथी ? त्यारे तेणे कहुं, हे भोळा राजा ! आ भीना मुका गोळाओना फेकवाथी में धर्म कळो छे, ते वे गाथाथी वतावे छे.

જહો સુક્રોય દો દુહા, ગોલયા મદિયામયા । દોવિ આવડિયા કુહુ, જો ઉહો તરથ (સોરથ) લગાઈ ॥

एवं लगंगनि दुम्मेहा, जे नरा कामलास । विरता उ न लगंगनि, जहा से सुक्रगोलए ॥ २३३ ॥

जे भीनो तथा सूको गोळो છે તે વને માટીના છે, भीંત ઉપર ફેંકતાં જે भीનો છે, તે ત્યાં भीંત ઉપર લાગશે ए प्रमाणे દુહા હોવાલા જેઓ કામની લાલસાવાલા છે, તેઓજ સંસારવાસનામાં શુદ્ધ થશે. પણ જેઓ વિરત છે, તેઓ સુકા ગોळा માફક સંસારવાસનામાં શુદ્ધ નહિ થાય. તેનો ભાવાર્થ કહે છે જેઓ અંગ પ્રત્યંગ જોવાથી વિમુલ્લ છે, તેઓ સ્ત્રીનું મોહું જોતા નથી, અને જેઓ અંગ પ્રત્યંગ જોવામાં ઉત્સુક છે, તેઓ કામ વાસનાથી શુદ્ધ થયેલા भीના ગોळा માફક સ્ત્રીનું મોહું જુए છે, અને તેજ જીવો લાલસાવાલા હોવાથી સંસારપંક અથવા કર્મકાદવ તેમને લાગે છે, પણ જેઓ ક્ષમા વિગેરે ગુણોથી શુક્ત સંસારમુલ્લથી વિમુલ્લ છે. કાષ્ટ (નિસ્પૃહ) મુનિઓ છે તેઓ સુકા ગોळा માફક હોવાથી કયાંય પણ લાગતા નથી. સમ્યક્ત્વ અધ્યયનમાં વીજા ઉદ્દેશાની નિર્ચુક્તિ તથા વીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત થયો.

—:- हवे त्रीजो उदेशो कहे छे -:-

વીજા સાથે તેનો આ પ્રમાણે સંબંધ છે, ગયા ઉદ્દેશામાં સમ્યક્ત્વમાં સાધુને સ્થિર કરવા વીજા મતવાલાની શૂલો વતાવી પણ તે સમ્યક્ત્વ સાથે રહેલું જ્ઞાન છે, તથા તે જ્ઞાનની સફલતા વિરતિ (વૈરાગ્ય) છે, પણ આ ત્રણે હોય હતાં પૂર્વ કરેલાં વીકળાં કર્મનો વંધ નિરવધ તપ કર્યાં વિના ક્ષય ન થાય. માટે હવે તે તપનું વર્ણન કરે છે. આ સંબંધી આવેલા ત્રીજા ઉદ્દેશાનું આ પહેલું સૂત્ર છે.

उवेहि णं बहिया य लोणं, से सबलोगंभि जे केइ विण्णु, अणुवीइपास निकूलत्तदंढा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति, नरासुयच्चा धम्मविउत्ति अंजू, आरंभजं दुक्खमिणंति णच्चा, एवमाहु संमत्तदंसि-
णो, ते सब्बे पावाइया दुक्खस्स कुसला परिणामुदाहरंति इय कम्मं परिणाय सब्बसो (सू० १३४)

पूर्वें बतावेलो संसारप्रिय लोक समूह छे; तेने धर्मथी चिसुख जाणीने तेनी उपेक्षा कर, अथवा तेहुं अनुष्ठान साहं न मान, च शब्दथी जाणवुं के तेनो उपदेश न सांभळ. पासे न जा, तेमनी सेवा न कर तथा विशेष परिचय न कर, (आ वधुं नवा शि-
ष्यने गुरु समजावे छे तुं न जइश—विगोरे—के जो त्यां जाय तो साधु धर्मनी विरुद्ध तेओ स्नान; इच्छित भोजन, मठ बांधी रहेवुं विगोरे आचरे छे, तेमां दिल लगवाथी ते स्वीकारतां साधु गृहस्थ पण न रह्यो, न पुरो साधु थयो, परंतु गीतार्थ साधु जरर पडतां परिचय करे तो बखते तेवाने पण प्रसंगोपात ठेकाणे लावे) जे संसारप्रिय वेषधारीनो परिचय न करतां तेनी उपेक्षा करे ते कया उत्तम गुणो मेळवे, ते कहे छे के:—ते निस्पृही साधु वथा मनुष्यलोकमां जेओ विद्वान (आत्माथी) छे, तेमनाथी पण सर्वोत्तम विद्वान थशे.
पशः—लोकमां केटलाक विद्वानो छे, के तेमां आ श्रेष्ठ थशे ! ‘अणुवीइ’ विगोरे जे केटलाक निक्षिप्त दंडवाळा छे, अर्थात् जेमणे काया मन वचन वढे प्राणीने दुःख आपनारो दंड त्याग कर्षो छे, ते विद्वानो थाय छेज, एवुं विचारीने हे शिष्य ! तुं तेमने जो पशः—जीवोने दुःख आपनारा तेओ कया छे ! ते कहे छे, के जेमणे धर्मनुं तत्त्व जाण्युं छे तेवा सत्ववाळा साधुओ दुष्ट कर्मने त्यजे छे, अने ते प्रमाणे जेओ दन्डथी दूर रहे छे, तेओ आठे कर्मने दणो छे, तेज विद्वान छे. तेवुं आंखो वीची विचारीने

પછી જો, एटले विवेकवाकी बुद्धि थी तेने तुं धारण कर. पशुः—क्या पुरुषो वधां कर्मोने क्षय करे छे ! उत्तरः—ते कहे छे, 'नरे' इत्यादि माणसोज संपूर्ण कर्मक्षय करवाने समर्थ छे, पण बीजा गतिवाळा नहि. तेमां पण वधां मनुष्यो मोक्षमां जनारा नथी; पण जेओए अर्चाते, शरीरना संस्कारो (शोभानो) त्याग करवाथी जेमंतुं शरीर मरण जेवुं छे अर्थात् जेमणे शरीरनो मोह मुकी तेने पुष्ट करवुं; के शोभाववुं ए सचळुं त्याग कर्युंछे. (मेघकुमारो जेम वीतराग पशुना उपदेशथी आंखो सिवाय शरीरना बीजा भामोनी ममता उतारीने दवा विगेरेनो पण त्याग कर्यो हतो; अथवा आखा शरीरनी चामडी जीवतां उतारी; तो पण कोइना उपर कोप न कर्यो; तेना खंधकमुनि माफक थाय छे.) तेवा साधु सर्व कर्मनो क्षय करे छे. अथवा अर्चा एटले तेज अने ते पण क्रोध छे, अने तेना कहेवाथी बीजा कषायो पण जाणी लेवा. तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे केः—जे पुरुषमांथी कषायरूप—अर्चा सर्वथा नष्ट पामी छे, तेवा अकषायी पुरुषोना आठ कर्म नाश थाय छे. बळी, श्रुतचारित्ररूप—धर्मने जाणनारा ते धर्मविदो छे, ते कुटिलतार-हित (सरळ) छे. पशुः—तेम हशे; पण बीजा साधुए श्रुं आलंबन लइने तेवुं करवुं ?

उत्तरः—'आरंभज' विगेरे. सावद्यक्रिया—अनुष्ठानना आरंभथी थयेछुं आरंभज ते, कृत्य दुःस्वरूप छे, एवुं वधां प्राणीओने पत्यक्ष छे. अर्थात् खेती, नोकरी वेपार विगेरे आरंभमां पर्वतलो मनुष्य, शरीर, तथा मननां दुःखने भोगवे छे, ते वाणीथी पण कहेवाय नहि. (एटळुं वधुं छे,) ते साक्षात् संपूर्ण देखनारा (केवलज्ञानी) ए कहेछुं छे. आ वधु दुःख स्वयं—अनुभवसिद्ध जाणीने तेओ शरीरशोभारहित (मृतार्चा) तथा धर्मविद तथा सरळ वने छे, एवुं केवलज्ञानीओ कहे छे ते वतावे छे. आ प्रमाणे केवलज्ञानीओए कहेछुं छे. पशुः—केवा पुरुषोए ते कहेछुं छे ? उत्तरः—समत्व—दर्शीओ, (सम्यक्त्व—दर्शीओ) अथवा समस्त देख-

नाराओए कहेछं छे. एटले आ उद्देशानी शरुआतथी सघळं तेमणे कहुं छे, पशुः—शाथी तेओए ते कहेछं छे ?

उत्तरः—तेओ वधा सर्व विद छे, अने प्रावादिका एटले प्रकर्ष—मर्यादावडे बोलवाना आचारवाळा यथावस्थित पदार्थने वता-ववा तथा शरीर, मन संबंधी दुःखो वतावनारा अथवा तेनुं मूलं कर्मनुं स्वरुप वताववाभां कुशल छे, के जे वताववाथी ते दूर करवा उपाय जाणनारा वनीने ते वधा उत्तम गुरुषोए ज्ञ परिज्ञा वडे जाणीने ते पाप छोडवा पत्याख्यान परिज्ञा वडे त्याग करेळ छे.

आ प्रमाणे कर्मबंध उदय सत्ताना वताववाथी (बीजा पण) ते प्रमाणे जाणीने सर्वे प्रकारे कुशल वनीने तेओ पत्याख्यान परिज्ञावडे त्याग करे छे. अथवा मूल उत्तर प्रकृतिना वधा भेदोने जाणीने एटले मूल प्रकृति आठ, उत्तर प्रकृति १५८ छे तेने जाणीने कर्मबंधनो त्याग करे छे अथवा प्रकृति स्थिति अनुभाव प्रदेश ए चार प्रकारोथी जाणीने त्यागे छे, अथवा बंध सत्ताना कारणो वडे कर्म स्वरुप जाणीने त्यागे छे. हवे ते उदयना प्रकारो वतावे छे. मूल प्रकृतिना त्रण उदयस्थान छे, (१) आठ प्रकारनो, (२) सात प्रकारनो (३) चार प्रकारनो—एटले आठे प्रकृति साथे वेदे तो आठ प्रकारनो, अने ते कालथी अनादि अनंत अभव्योने आश्रयी छे. भव्य ने आश्रयी अनादि सांत तथा सादि सांत छे. अने मोहनीयनो उपशम अथवा क्षय होय, त्याग सात प्रकारनो उदय छे, अने यातिकर्म चारे क्षय थतां वाकीना चार कर्मनो उदय छे, हवे उत्तर प्रकृतिना उदय स्थान कहे छे. ज्ञानावरणय अने अंतरायनुं पांचे प्रकारनुं एक उदयस्थान छे. दर्शनावरणीयना वे छे दर्शन चतुष्कना उदयथी चार अने कोइ पण निद्रा साथे पांच वेदनीय कर्मनुं सामान्यथी एक उदयस्थान साता के असातानुं छे. कारण के साता असाता विरोधी होवाथी वने साथे उदयमां एक वरवते न होइ, मोहनीयकर्मनां नव उदयस्थान छे, ते कहे छे दश, नव, आठ, सात, छ, पांच, चार, वे, एक. ए नवनी विगत—ते

दशमां पिथ्यात् अनंतानुबंधीथी संज्वलन सुधी ४ क्रोधनी चोकडी-ए प्रमाणे माननी चोकडी पण होय ते प्रमाणे कपटनी चोकडी होय, तथा लोभनी चोकडी होय एदले कोइ पण चोकडीनी चार होय, ते मळी पांच थइ. डट्टो कोइ पण एक वेद होय, हास्य रति अथवा अरति शोकतुं जोडळुं होय भय तथा जुगुप्सा मळी कुल १० थइ. उपरनी दशामांथी कोइ जीवने भय के जुगुप्सामांथी एक न होय तो नव, अने वचे न होय तो आठ, अनंतानुबंधीनी एक दूर थतां ७ रही, पिथ्यात्त्वना अभावमां छ रही, अपत्याख्याननी उदयना अभावमां ५, पत्याख्यान आवरणना उदयना अभावे ४ हास्यरतिनुं जोडळुं कोइ पण न होय तो २ अने वेदना अभावमां फक्त संज्वलन एकनो उदय रह्यो. आनुष्यनुं पण एकज उदयस्थान छे. कारणके चारमांनुं कोइ पण एक होय, नाम कर्मना उदयनां १२ स्थान छे. २०, २१, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ९, ८ तेमां संसारमां रहेला सयोगी तेर गुणस्थान सुधीना जीवोने नामकर्मना दश उदयस्थान छे. अने अयोगि गुणस्थानवाळाने छेवटना वेज छे. अहीं बार शुव उदयकर्म प्रकृति प्रथम वता-वे छे. तेजस 'कार्मण' शरीर वे, वर्णागध रस स्पर्श ४ चोकडुं अगुल्लहु, एक स्थिर, एक अस्थिर, एक शुभ, एक अशुभ, एक निर्माण, कुल बार तेमां वीस तीर्थकर केवळी ज्यारे समुद्घात करे त्यारे कार्मण शरीरयोगीने होय छे. ते कहे छे, मनुष्यगति एक पचेन्द्रियजातिओ तस एक बादर एक पर्याप्त एक सुभग एक आदेय एक यशकीर्ति एक त्रणे उपर कहेली शुवउदयनी बार मळी कुल २० थइ. अने एकवीसथी एकत्रीस सुधीनां उदयस्थानो जीव गुणस्थानना भेदथी अनेक भेदवाळां होय छे. ते ग्रंथ वधी जवाना भयथी वधा अहीं कहेता नथी, पण जणवा माटे एकेक कहे छे. प्रथम एकवीसनो एक कहे छे, गति एक, जाति आनुपूर्वी एक तस एक बादर एक पर्याप्त अथवा अपर्याप्त एक कोइ एक सुभग एक अथवा दुर्भग आदेय अथवा एक अनादेय यशकीर्ति अथवा

एक अथश आ नव तथा उपर कहेली शुव बार मळी एकवीस थद्द हवे चोवीसनो एक भेद कहे छेः—

तिर्यंग गति एक एकेन्द्रिय जाति एक औदारिक शरीर एक हुंडसंस्थान एक, उपघात एक प्रत्येक अथवा एक साधारण स्था-
 वर एक सुक्ष्म अथवा एक बादर दुर्भंग एक अनादेय एक अपर्याप्त एक यज्ञकीर्ति एक अथवा अथश आ बार तथा उपर बतावेली
 शुवनी बार मळी चोवीस थद्द. ते चोवीचमांथी अपर्याप्त दूर करी पर्याप्तक तथा पराघात १ मेळवतां २५ थद्द. अने छवीश तो
 केवळीने उपर जे वीस कही छे तेमां उदारिक शरीर एक आंगोपांग एक संस्थान एक प्रथम संहनन एक उपघात एक प्रत्येक
 एक मळी मिश्रकाययोगमां छवीश होय छे. ते छवीशमां तीर्थकरनाम मेळवतां तीर्थकरने मिश्रकाय योगमां सत्यावीस होय छे.
 तेमां पशस्त विहायोगति मेळवतां अष्टावीस अने ते अष्टावीसमांथी तीर्थकर नाम दूर करी उच्छ्वास एक सुस्वर एक पराघात
 एक मेळवतां (२७-१३) वीस थद्द. तेमांथी सुस्वर आंळी करतां २९ तथा ते ३० मां तीर्थकर नाम मेळवतां ३१ थद्द. पण
 नवनो उदय तो मनुष्य गति एक पंचेन्द्रिय जाति एक त्रस एक बादर एक पर्याप्त एक शुभंग एक आदेय एक यज्ञकीर्ति एक
 तीर्थकर एक ए नव तीर्थकरने अयोगी गुणस्थानमां होय छे. पण तीर्थकर नाम सिवाय सामान्य केवळी अयोगीने तो आठ होय छे
 गोत्रतुं तो सामान्यथी एकज उदय स्थान छे. उंच अथवा नीच कोइ पण एक होय छे. कारण के वजे एक वीजाथी विरुद्ध छे.
 उपर बताव्या प्रमाणे कर्मप्रकृतिना उदयवहे अनेक भेदो जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे ते तोडवा प्रयत्न करे छे. जो एम छे तो
 (नवा साधुए) शुं करवुं ते कहे छे.

इह आणाकंखो पंडिष् अणिहे, एगसप्याणं संपेहाए शुणे सरारं, कसेहि अप्याणं जरेहि अप्याणं—ज्ञहा

जुझाइं कट्टाइं हव्ववाहो पमरथइ । एवं अत्तसमाहिण्ण अणिहे, विणिंच कोहं अविकंपमाणे (सू० १३५)
 आ पवचनमां आज्ञा पाळवानी आकांक्षा राखनारो आज्ञाकांक्षी साधु जे सर्वज्ञना उपदेश पमाणे वर्तनारो छे, ते पंडित (तत्त्वज्ञानी) छे. अने ते अस्मिह थाय छे. आठ प्रकारना कर्म वडे लेपाय ते स्मिह छे. ते जेने नथी ते अस्मिह छे, अथवा जे स्नेह करे ते स्नेहवाळो रागी छे. तेजो जे रागी न थाय ते अस्मिह छे. तेथी एम जाणवुं के ते रागद्वेष रहित छे. अथवा निश्चयथी जे भावरि-
 पुरुष इन्द्रियोना विषय तथा फणायथी बंधातां कर्म छे. तेना वडे हणाय ते निहत अने तेम न हणायतो अनिहत छे.
 उपर बतावेल आज्ञाकांक्षी पंडित तथा भावरिपुथी अनिहत गुणवाळो आ पवचन (जैन मार्ग) मां छे. बीजे नथी अने जे साधु अनिहत छे ते परमर्थथी कर्मनो सारी रीते ज्ञाता छे. अने ते शुं करे ते कहे छे. 'एगमपपाणं' इत्यादि. ते अनिहत अथवा अस्मिह साधु पोताना एकला आत्माने धन धान्य सोदुं पुत्र स्त्री तथा पोताना शरीर विगोरे (पुद्गल उपाधि) थी जुहुं जाणीने शरीर विगोरे वधानो मोह छोडे (संभावनामां लिङ्ग पत्यय छे.) तेथी एम सुचवुं छे के आत्माने बधी उपाधीथी जुदो देखे तोज ते शरीरथी जुदो पाडी शके अने तेम मोह उतारवा माटे संसार स्वभावनी भावना छे तथा एकत्व भावनाने आवी रीते भाववी.
 संसार एवायमनर्थसारः, कः कस्य कोऽत्र स्वजनः परो वा ? सर्वे भ्रमन्तः स्वजनाः परे

व, भवन्ति भूत्वा न भवन्ति भूयः ॥ १ ॥

आ संसार अनर्थनो सारज छे, अने अहीं कोण केनो स्वजन अथवा परजन छे ? वथाए संसारमां भ्रमता स्वजन अने परजन

हे ते पर भइ पाछा स्व थाय. अने केदलक फरी देखाव देता नथी. (अर्थात् समुद्रमां तणातां अपार समुद्रमां ज्यां भेगा यवानो तथा स्थिर रहेवानो तथा मळवानो निश्चय नथी, तथा थोडो काळ पण एकता रहेवानो निश्चय नथी, त्यां कोण पोताहुं के पारकुं हे ?)

विचिन्त्यमेतद्भवताऽहमेको, न मेऽस्ति कश्चित् पुरतो न पश्चात् ।

स्वकर्मभिर्भ्रान्तिरियं समैव, अहं पुरस्ताद्दहमेव पश्चात् ॥ ३ ॥

उपर प्रमाणे विचारी हुं एकलो छुं, अने मारे पहेलां के पळवाडे कोइ नथी, परंतु मोहनीयकर्मथी आ एक मारा तारानी भ्रांति हे. खरीरीते तो पहेलां पण हुं अने पळी पण हुं पोते पोतानो स्वजन छुं एवी भावना तमारे भाववी.

सदैकोऽहं न मे कश्चित्, नाहमन्यस्य कस्यचित् । न तं पश्यामि यस्यहं नासौ भावीति यो मम ॥ ३ ॥

हुं सदा एकलो छुं. मारो कोइ पण नथी, तेम हुं बीजा काइनो पण नथी, हुं जेनो थालं, तेवो मने कोइ देखातुं नथी ! (कर्मसंबंध छुटतां सौ रस्ते पडे हे.) तेम मारो भविष्यमां थाय तेवो पण कोइ नथी.

एकः प्रकुरुते कर्मम्, भुनक्त्येकश्च तत्फलम् । जायते जियते चैक, एको याति भवान्तरम् ॥ ४ ॥

पोते एकलोज कर्म बांधे हे, तेनां फळ पण एकलो भोगवे हे, अने जन्मे हे. अने मरे हे पण एकलोज तथा भवांतरमां पण एकलोज जाय हे विगेरे चिंतवे वळी ते भव्यात्मा साधु शुं करे ? ते कहे हे:—“कसे हि अष्णाणं जरेहि अप्पण ” विगेरे. पर (जुदो) आत्मा जे ‘शरीर’ हे. तेने तपरुप कष्ट वडे अथवा चारिज विगेरेथी कुश (दुर्वळ) वनाव, अथवा कृष एटले कर्म तोडवामां हुं समर्थ

छुं? एष विचारी यथाशक्ति तेषां यत्न कर, तथा जर एदल शरीरने जीर्ण बनानी दे, एदले तपवडे शरीर एवुं कर के बुद्धापाथी जीर्ण जेवुं लगे, अर्थात् विगहनो त्याग करीने आत्मा (शरीर) ने दुर्बल बनानी देजे. पशुः-शा माटे?

उत्तरः—जेम सार रहित (सुकां) लाकडाने हव्यवाह (अग्नि) शीघ्र वाली सुके छे, ए दृष्टान्तवडे उपदेश आपे छे के तुं कर्म-ने बाकी सुक. 'एवं अत्त समाहिण्'—उपर प्रमाणे आत्मा समाहित एदले ज्ञानदर्शन चारित्रवडे आत्मसमाहित (समाधिवाळो) छे ते आत्मसमाहित छे, अर्थात् शुभ व्यापारवाळो छे. (अथवा व्याकरणना नियमथी विशेषणने प्रथम लेवाथी आत्मा समाहितने बढले) समाहित आत्मारूप थाय छे, तेवो तुं बन. एदले जे अस्त्रिह (स्नेहरहित वैरागी) होय अने ते तप करे ते तपरूप अग्नि वडे कर्मरूप काष्टने बाकी सुके छे, उपर कहेला मूलार्थने दृष्टान्त तथा बोधने गाथावडे निर्युक्तिकार कहे छे.

जह खलु झुसिरं कट्ट, सुचिरं सुकं लहुं डहइ अग्नी, तह गलु खवंति कर्ममं, सममञ्जरणे टिया साहू ॥नि.३३४
जेम सुका पोला लाकडाने अग्नि जलदी बाळे तेम उत्तम चारित्र पाळनारो साधु कर्मलाकडाने शीघ्र बाळे छे आ प्रमाणे प्रथम स्ने-हरहित बनीने द्वेषनी निवृत्ति करवा कहे छे 'विगिंच कोहं' विगरे कारणे अथवा आ कारणे अति क्रूर अथ्यवसायवाळा क्रोधने छोड, अने क्रोधथी शरीर कंषे छे माटे कहे छे के तुं निष्कंष बनी जा शुं भावीने? ते कहे छे:—

इमं निरुद्धाडयं संपेहाए, दुक्खं च जाण अदु आगमेस्सं, पुढो फासाइं च फासे, लोयं च पासवि-
फंदमाणं, जे निव्वुडा पावेहिं कम्मोहिं अणियाणा ते वियाहिय, तम्हा अतिविजो नो पडिसंज-

चिन्हरूप विष्टा अने पिशाचने मेळवी विलेपन कर, तो शांति थरो. अने ते प्रमाणे पुत्रे न छुटके कर्युं त्यारे तेने शांति थर, अने पिता मरीने सातमी नरकमां गयो. आ दृष्टांतशी पापी पोते दुःस्व भोगवे छे तेम तेनी हाथपीट जोइ बीजां सगां पण दुःस्व भोगवे छे ते वतावुं) गुरु कहे छे:—हे शिष्य ! जेओ क्रोध विगेरे नशी करता; ते केवां होय छे ? ते सांभळ. 'जे निव्वुडा' विगेरे, पण जेओ तीर्थंकरजा बोधशी निर्मळ हृदयवाला छे, तेओ विषय अने कषाय अग्निना बुझावाथी निवृत्त (शांत) थयेलां पापकर्ममां निदान (वासना) रहित वनेला छे. तेओ परमसुखना स्थानने पायेला छे. अर्थात् औपशमिक सुखने भजनारा होवाथी पसिद्ध छे. प्रश्नः—तेथी शुं समजवुं ? उत्तरः—तम्हा विगेरे. ते रागद्वेषथी वेरायेलो दुःस्वी थाय छे, तेथी अति विद्वान् के जेणे, शास्त्रानो परमार्थ जाण्यो छे, तेवाए क्रोधान्निवडे आत्माने वाळवो नहि. अर्थात् क्रोधादि आवतां तेने शांत (दूर) कर, ए प्रमाणे सुधर्मास्वायी जंबूस्वामीने कहे छे.



∴ चोथो उद्देशो ∴

जीजो उद्देशो कह्यो, तेनो आ कहेवाला चोथा उद्देशा साथे आ प्रमाणे संबंध छे; गया उद्देशासां निरवध तप वताव्यो, अने ते संपूर्ण रीते सासा संयममां रहेला मुनिने होय छे, तेथी संयम वतावना चोथो उद्देशो कहे छे, तेना आवा संबंधथी आवेला चोथा उद्देशावुं आ प्रथमसूत्र छे. आवीलए पवीलए निपीलए जहिना पुत्रसंजोगं हिक्का उत्रसमं, तम्हा अविमणे वीरे, सारए

लिजासि त्विवेसि ॥ (सू० १३६) चतुर्थं तुनीयः ॥४-३॥

आ मनुष्यपणुं परिगलित आयुवाळं विचारीने क्रोध विगेरेने छोडी देजे वकी दुक्खं विगेरे-तथा क्रोध विगेरे कषायोथी वळ-
ता मनुष्यने मन संबंधी जे दुःख उत्पन्न थाय छे, तेने जाण, तथा ते क्रोधथी जे नवां कर्म बंधाय तेसुं भविष्यमां पण उत्पन्न थवा-
तुं दुःख विचारीने ते क्रोधादिने मत्प्राप्त्यान परिज्ञावडे जाण, अर्थात् त्याग कर, आगामी (भविष्य) ना दुःखतुं स्वरूप कहे छे.
पुढो विगेरे-जुदी जुदी सात नरकी विगेरेमां मळता शीत उष्ण (ठंड ताप) नी वेदना तथा कुंभीपाक विगेरेनां पीडास्थानोमां थतां
दुःखोने भोगववां पडशे एथी एम सूचवुं के क्रोधथी वळेळाने तेज क्षणे दुःख छे, एम नही, पण भविष्यमां पण जुदां जुदां स्था-
नोमां दुःख भोगववां पडशे. तेने यणो दुःखीओ जोइने बीजा लोक पण दुखीआ थाय. ते वतावे छे लोयंच विगेरे, केवल क्रोधा-
दिथी आत्माज दुःख अनुभवतो नथी, पण शरीर अने मनर्था उत्पन्न थयेळा दुःखोवाळा लोको परवश वनीने तेना दुःखने दूर
करवा आम तेम भटके छे, तेने जो, विवेकचक्षुथी विचारी जो, (आ सूत्रवडे जेओ मोहांथ छे. तेवाओ सगाने दुःखी देखीने
अथवा करुणाथी भीजायला हृदयवाळा छे तेओ दुःखीने शांति पमाडवा अनेक उपयो करवा आम तेम भटकतां अनेक दुःखो भो-
गवे छे. जेमके “एक कषायने रोज ५०० पाडा मारवानी बुरी आदत हती ते तेणे न छोडी. पुत्र पोते धर्मी होवाथी तेमां सामील
न थयो. अंतकाळे वापने तेजा पापथी दाहज्वरनो भयंकर व्याधि थयो अनेक उत्तम शीतळ औषधि वावना चंदन विगेरेनो छेप क-
रवा छतां शांति न थइ, ल्यारे पुत्रे गभारह पोताना परम धर्मी भिन्नने पूछुं. तेणे विचारीने कहुं के तेना नरकना अशुभ कर्मना

सूत्रम

॥५३८॥

छुं ? एम विचारी यथाशक्ति तेषां यत्न कर, तथा जर एटल शरीरने जीर्ण बनावी दे, एटले तपवढे शरीर एवुं कर के बुढापाथी जीर्ण जेवुं लागे, अर्थात् विगहनो त्याग करीने आत्मा (शरीर) ने दुर्बल बनावी देजे. पश्चाः—शा माटे ?

उत्तरः—जेम सार रहित (सुकां) लाकडाने हव्यवाह (अभिन) शीघ्र बाळी मुके छे, ए दृष्टान्तवढे उपदेश आपे छे के तुं कर्म-ने बाळी मुक. ' एवं अत्त समाहिण्'—उपर प्रमाणे आत्मा समाहित एटले ज्ञानदर्शन चारित्रवढे आत्मसमाहित (समाधिवाळो) छे ते आत्मसमाहित छे, अर्थात् शुभ व्यापारवाळो छे. (अथवा व्याकरणना नियमथी विशेषणने प्रथम लेखाथी आत्मा समाहितने वदले) समाहित आत्मारूप भाय छे, तेवो तुं वन. एटले जे अस्तिह (स्नेहरहित वैरागी) होय अने ते तप करे ते तपरूप अन्नि वढे कर्मरूप काष्ठने बाळी मुके छे, उपर कहेला मूत्रार्थने दृष्टान्त तथा बोधने गाथावढे निर्युक्तिकार कहे छे.

जह खलु झुसिरं कट्ट, सुचिरं सुकं लहुं डहइ अग्गी, तह गल्लु खवंति कम्मं, सममच्चरणे ठिया साहु ॥नि.२३४
जेम सुका पोला लाकडाने अग्नि जलदी बाळे तेम उत्तम चारित्र पाळनारो साधु कर्मलाकडाने शीघ्र बाळे छे आ प्रमाणे प्रथम स्ने-हरहित वनीने द्वेषनी निवृत्ति करवा कहे छे ' विगिंच कोहं ' विगेरे कारणे अथवा आ कारणे अति क्रूर अथ्यवसायवाळा क्रोधने छोड, अने क्रोधथी शरीर कंपे छे माटे कहे छे के तुं निष्कंप वनी जा शुं भावीने ? ते कहे छेः—

इमं निरुद्धाउयं संपेहाए, दुक्खं च जाण अट्टु आगमेरसं, पुढो फासाइं च फासे, लोयं च पासवि-
फंदमाणं, जे निव्वुडा पावेहिं कम्मोहिं अणियाणा ते वियाहिय, तमहा अतिविजो नो पडिसंज-

छोड़ीने तप करे, वकी 'हिष्वा विगरे', (हि धातुनो अर्थ गतिवाचक छे तेशी) पामीने (मेळवीने) शुं ? ते कहे छे. इन्द्रिय तथा मनने जीतवारूप उपशम अथवा संयम मेळवीने तप करे तेनो सार आ छे, के असंयम छोडी संयम धारण करीने तप तथा चारित्रनां अनुष्ठानवदे कर्मने वधारे वधारे यथाशक्ति पीडे जेशी कर्मने पीडवा माटे उपशम मेळववो, अने ते मेळव्या पळी (अविमनस्कता) निश्चल शांति मेळववी ते कहे छे. 'तम्हा' इत्यादि, जेम कर्मक्षय माटे असंयमनो त्याग, तेशी अवश्ये संयम मळे, तेमां चित्तनी अशांति न होय, तेशी अवीमना एटले भोगकषायमां अथवा अरतिमां जेतुं मन गयुं ते विमन, तेवो जे न होय ते अविमना, अर्थात् रागद्वेषनी उपाधिथी जेतुं मन चंचल नथी तेवा शांत स्थिर मनवाळो साधु होय. प्रश्नः—ते क्यो छे ?

उत्तरः—वीर ! जे कर्म विदारण करवामां समर्थ छे, अने 'सारए' इत्यादि. सुभारत एटले सारीरीते जीवन पर्यतनी मर्यादा ए संयम अनुष्ठानमां रक्त रहे ते स्वारत कहेवाय, पांच समितिए समित तथा हितयुक्त ते सहित अथवा ज्ञानादियुक्त वनीने सदा (हमेशा) एकवार गुरुए अर्पण करेलो संयम भारवाळो ते शिष्य संयमभारनी यतना करे. प्रः—वारंवार शा माटे संयम अनुष्ठाननो उपदेश करो छो ? उः—ते दुरानुचर छे, दुःखे करीने अनुचराय (पळाय) तेवो छे. प्रः—शुं ? उः—मार्ग ते संयम अनुष्ठान विधि—प्रश्नः—केवाओने ? उः—अपमत्त साधुओने, प्रः—केवाओने ? अनिर्वर्त ते मोक्ष छे. तेमां जेमने जवानी इच्छा छे तेवाओने आ संयम पाळवो कठण छे ते केवीरीते पाळवो कहेवाय ? ते वतावे छे—विगिचव-विगरे मांस शोणित जे अहंकार तथा काम वासना वधारनारां छे. तेने विक्रष्ट तप अनुष्ठान वदे विवेचकर (दूरकर) आत्माथी जुदां जाणी तेने शोषावीदे, आ वीर पुरुषोना मार्गनुं अनुचरण छे, एम जाणवुं. जे आवी रीते तपकरी शरीरने सुकवे, तेने शुं गुण थाय छे, ते कहे छे, 'एष' विगरे मांसशोषी-

तने सुकवे, ते पुरि (नगर) मां शयन करावधी पुरुष छे, अने द्रव ते संयम छे ते संयम जेने होय ते द्रविक पुरुष छे, अथवा द्रव्यभूत छे कारण के तेज मोक्षमां जाय छे, कर्मशत्रु जीतवामां समर्थ होवधी ते वीर पण छे, मांसशोणित शोषवानुं बलाव्यधी वीजा पदार्थो भेद चरवी विगेरे शोषवानुं पण वतावुं जाणवुं. कामण के मांस सुकतां ते पण साथे सुकाइ जाय छे; कळी आयाणीजे विगेर एटले वीर पुरुषोना मार्गे चालनारो जे मांस लोही सुकवे, ते मोक्षभिक्षाधीओने आदनीय ग्राह्य. मानवाजोग वचन वालो विख्यात थाय छे. प्रः—एवो कोण छे ? उः—जे ब्रह्मचर्य ते संयममां रही कामवासना जीतवामां प्रयत्न करे, अथवा समुच्छ्रय ते शरीर अथवा कर्मोपचयने तपचारित्रवडे धुणावे. (कृशकरे—दूरकरे) ते आदनीय तथा व्याख्यात (स्तुत्य पूज्य) थाय छे, आ प्रमाणे अप्रमत्त साधुनुं स्वरूप वतावुं. हवे तेवुं संयम न पाळनारा जे प्रमत्त (प्रमादी साधुओ) छे तेनुं वर्णन करे छेः—

निचेहिं पलिच्छिन्नोहिं आयाणसोयगदिष्ट्वाले, अन्वोच्छिन्नबन्धांणे अणभिकंतसंजोष्ट्वा तसंसि

अवियाणओ आणाष्ट्वा लंभो नरिथि तिर्वेमि (सू० १३८)

जे पदार्थ तरफ लइ जाय—अर्थात् पदार्थनो निर्णय करावा जे दोरे, ते नेत्र विगेरे पांच इन्द्रियो छे, तेना वडे पोताना विषयने ग्रहण करावा वडे जे पाप थाय, ते अटकावीने साधु थतां जगत्तमां सारा पुरुषोधी पूजनीक थइ ब्रह्मचर्यमां रहेवा छतां पण फरीथी तेने मोहनो उदय थवाथी सावध कृत्यमां संसारभ्रमणना बीजरूप कर्मना इन्द्रियोना विषयो रूप स्तोत (प्रवाहो) अथवा मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योग छे तेमां गृह्य थाय ते आदान स्तोत गृह्य वने. प्रः—कोण ? उः—बाल (अन्न) छे, ते राग द्वेषरूप

महा मोहधी मलिन अंतःकरणवालो शुद्ध बने. प्रः—पछी ते केवो थाय ? उः—अवोच्छिन्न विगेरे—एक सरखां सेंकडो जन्ममरण आ-पनार एवुं आठ प्रकारना कर्मरूप बंधन तेने मळे छे; बकी 'अणमि.' जेणे संसारना संयोगरूप धन धान्य सोनुं, पुत्र स्त्री, विगेरेना मोह अथवा असंयमनो संयोग छोज्यो नथी; ते 'अनभिकांत संयोगी' छे, तेवा कुसायुने इन्द्रियोने अनुकूल विषयलालसाना अंधारामां अथवा मोहरूप अंधकारमां प्रवर्तलानुं पोतानुं खरं हित अथवा मोक्षजपायो तेणे न जाणवाथी तीर्थकरनी आज्ञा (उपदेशनो) लाभ तेने यवानो नथी एवुं हुं कहुं हुं अथवा तेने आज्ञा एटले सम्यक्तवनो लाभ यवानो नथी. (भविष्यमां) पण धर्म मळवो दुर्लभ छे. कारण के, सूत्रमां नास्तिक शब्द छे ते अव्यय जणे काल आश्रयी छे.

जसस नरिथ पुरा पच्छा मज्झे तसस कुओ सिया ? से हु पन्नाणमंते बुद्धे आरंभोवरए, संम-
मेयंति पासह, जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं पलिच्छिदिय बाहिरगं च सोयं, निक्कं-
मदंसी इह मच्चिच्चएहिं, कम्ममाणं सफलं ददूण तओ निजाइ वेयवी (सू० १३९)

जे कोइपण बाळमूर्ख साधु कर्मादान सोतमां शुद्ध थयेळ छे तथा एकसरखां जन्ममरण बांध्या छे. तथा संसारमोह छोडयो नथी; अज्ञानअंधकारमां भूल्यो छे, तेने पूर्वजन्ममां धर्मप्राप्ति नहोती; भविष्यमां पण यवानी नथी; तेने मध्यजन्ममां कयांथी यवानी छे ? अर्थात् जेणे सम्यक्तत्व पूर्वं प्राप्त करेळ हशे; तेनेज वर्तमानमां मळे छे. कारण के जेणे सम्यक्तत्व पूर्वं मेळवी तेनो स्वाह लीयो तेने पाछो मिथ्यात्वनो उदय यतां अपार्थ शुद्ध परावर्तनना काले पण थशे; पण सम्यक्तत्व वमेळाने फरी सम्यक्तवनो असं-

भवज थाय तेवुं नथी. (अर्थात् अभविनेज त्रणे काळमां नथी; अथवा अनिरुद्ध इन्द्रियविषयवाळो होय; तोपण आदान स्रोत शुद्ध जाणवो एम कहेळुं जाणवुं. (पण सम्यक्तत्र मेळव्या पळी पाहुं न मळे तेवुं नहि.) पण जे साधु तेवो प्रमादी न थइ संसारसुखतुं स्मरण न करे; अने भविष्यमां मळनारी देवांगनाना भोगने न इच्छे, तेने वर्तमानकाळमां पण भविष्यसुखनो अभिलाष कयांथी होय ? ते वतावे छे. जे साधुए भोगनां भविष्यनां कडवां फळ जाणोला छे, तेने पूर्वे भोगवेळा भोग याद आवता नथी; भविष्यना भोगनी अभिलाषा पण नथी; तेवा उत्तम साधुने व्याधिने छंडेडवा समात भोगने रोग जाणीने तेने केवीरीते खोटी इच्छा पण थाय ? अर्थात् मोहनीयकर्म शांत थवाथी तेने भोगेच्छा होती नथी. जे साधुने त्रिकाळ-विषयनी भोगेच्छा दूर थइ ते केवो होय ? ते कहे छे:—सेहु-विगोरे आवो निरीह साधु प्रकृष्टज्ञान जे जीवाजीव संबंधी तत्व वतावनारं छे तेने मेळवे; तेथी प्रकृष्टज्ञानवाळो छे, तेज बुद्ध एटले, तत्व जाणनारो छे, तेथीज ते सावद्यअनुष्ठानना आरंभथी दूर रहे छे, तेथी आरंभ उपरत छे, ते गुण उत्तम छे ते वतावे छे, सम्म विगोरे एटले साधुओने ते शोभावनारं भूषण छे अथवा सम्यक्तत्रतुं कार्य करनार होवाथी ते सम्यक्तत्र छे. माटे शुरु कहे छे:—हे शिष्य ! तुं तेने जो. तुं पण तेवुं मेळव. शामाटे ते शोभन (भूषणरूप) छे ? ते कहे छे:—जेण विगोरे जे कारण-थी सावद्य-आरंभमां प्रवर्तेळो छे. ते सांकळ विगोरेथी वंधनुं तथा चावला विगोरेथी मारं र्वाय छे तथा प्राणसंशयमरूप-घोर दुःख स्वमे छे. तथा शरीर मन संबंधी परिताप दारुण दुःख बीजाने दइने पोतेपामे छे, माटे ते आरंभो छोडवा ते सारं छे, थुं करीने आरंभ छोडे, ते कहे छे. 'पल्लिच्छिन्दि' विगोरे स्रोत (पापनुं उपादान) रूप वहारथी धन धान्य विगोरे अथवा हिंसादि आस्रवद्वार [अटार पापस्थान] छे, तथा च शब्दथी अभ्यंतर रागाद्वेषरूप अथवा विषय तृष्णा स्रोतने त्यागीने निर्मळ था; वकी 'णिकम्म' कर्म

જેનાં દૂર થયાં તે નિકર્મદર્શી છે, 'દૂદ્'—આ સંસારમાં મર્ત્ય [માણસ] લોકમાં જે નિકર્મદર્શી છે! તેજ બાહ્ય અભ્યંતર પરિગ્રહ હેદનારાઓ છે, શું આધાર લઈને પરિગ્રહને હેદે અથવા નિકર્મદર્શી બને તે કહે છે, 'કમ્માણં' વિગેરે મિથ્યાત્વ અવિરતિ પ્રમાદ કષાય યોગોવહે જે કર્મ વન્ધાય છે. તે જ્ઞાનાવરણીય વિગેરેનું સફળપણું દેસીને પટલે જ્ઞાનાવરણીયનું ફલ જ્ઞાન ઠંકાણું છે, દર્શન-આવરણીયનું દેસવામાં વિદ્વિરુપ છે, વેદનીયનું ફલ રોગ વિગેરે દુઃખો સુખો ભોગવવાના છે.

પ્રશ્ન:—વધાં કર્મના વિપાકના ઉદયને ઇચ્છતા નથી? પ્રદેશ ઉદયને પણ સદ્ભાવ હોય છે. અને તપ કરવાથી ક્ષય પણ થાય છે ત્યારે કર્મનું સફળપણું કેવી રીતે ઘટે. આચાર્યનો ઉત્તર:—તે દોષ નથી, અમને વધા પ્રકારનું ઇચ્છવાપણું અહીં નથી, પણ દ્રવ્ય પૂર્ણપણું માનીએ હીએ અને તે હેજ, પટલે દરેકને આટલજ કર્મનો ઉદય છે, એમ નહિ પણ વધા જીવ આશ્રયી મામાન્યથી જોતાં આઠે કર્મનો સદ્ભાવ છે; તેથી તે કર્મનું અથવા કર્મનું મૂલ આશ્રવ છે. તેનાથી નિશ્ચયથી નીકળી જાય, અર્થાત્—આશ્રવ આવે તેવું કૃત્ય ન કરે. પ્ર.—કોણ ન કરે? ઉ:—વેદવિદ્ જેના વહે સયલું ચર—અચરવેદાય, તે વેદ જૈનાગમ છે, તેને જાણે તે વેદવિદ્ જાણવો અર્થાત્ સર્વજ્ઞના ઉપદેશમાં વર્તનારો હોય તે આ નવાં કર્મ ન વાંધે. આ અમારા એકલાનો અભિપ્રાય નથી; પણ સર્વે તીર્થંક-કરોના આ આશય છે તે વતાવે છે.

જે સ્વલુ મો ! વીરા તે સમિયા સહિયા સયાજયા સંઘડ્દંસિણો આઓવરયા અહાતહં
લોયં ઉવેહસણા પર્ડેણં પડિણં દાહિણં ઉર્ડેણં દ્ય સચ્ચંસિ પરિ (ચિષ્) ચિદિંસુ, સાહિસ્સા-

मो, नाणं वीराणं समिथाण सहियाणं सयाजयाणं संबड दंसीणं आओ व रयाणं अहा तहं
 लोयं समु वेहमाणाणं किमत्थि उवाहो ?, पासगस्स न विज्झइ नत्थि त्तिवेमि (सू० १४०)
 । चतुर्थं चतुर्थः ४-४ । इति सम्यक्त्वाध्ययनम् ॥ ४ ॥

सम्यग्वाद अने निरवद्य तप तथा चारित्र कहुं. हवे, तेनुं फल कहे छे:-‘जेखलु’ विगेरे (खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे.)
 जे पूर्वे अनंता तीर्थकरो थया थवाना छे, अने वर्तमानमां केटलाक छे, तेओ कर्मशत्रुने विदारवामां समर्थ होवाथी वीरो छे,
 समितिथी युक्त तथा ज्ञानादिथी सहित छे. सारा संयमथी यत्नावाळा छे. ‘संयड दंसिणोति शुभ अशुभने निरंतर संपूर्णदशी’ (देख-
 नार) छे. पापकर्मरूप-आत्मार्था उपरत छे. तेओ जेवीरीते लोक चौदराज प्रमाण छे, तेने अथवा, कर्मलोक जे बधी दिशा पूर्व
 विगेरेमां रहेल छे, तेनी जीव अजीवनी व्यवस्थाने देखनारा छे. तेओ सत्य संयमतपमां स्थिर रहेला छे. अर्थात् तेमने त्रिकाल
 विषय संबंधी संपूर्ण देखाय छे. पूर्वे अनंता थया; ते संयममां रखा. पंदर कर्मभूमिमां संख्याता तीर्थकर-सययमां रहेला छे, तथा
 भविष्यमां अनंता थवाना छे. तेओ संयममां स्थित रहेरो; तेओनो त्रणे कालनोज अभिप्राय (बोध) छे, ते हुं तमने कहीवा; एवुं
 सुधर्मास्वामी शिष्याने कहे छे:-तमे सांभळो. पूर्वे कहेलां उत्तम विशेषणोवाळानुं ज्ञान (अभिप्राय) आ छे के, जे कर्मजनित उपाधि
 छे, ते नारक विगेरे चार योनिमां जन्म लेवो; सुखीदुःखी, सुभग, दुर्भग, पर्याप्त-अपर्याप्त विगेरे नवां नवां मळे छे के नहि ? ते
 संबंधी परमतवाळाने शंका छे के ? फरी मळी शके ? तेथी, ते तीर्थकरो साक्षात् जोइने कहे छे के:-तेवा साक्षात् देखनाराने ने ते

वस्तु उपर मोह न रहेवाथी ममता छुटीजवाथी तेवा पश्यक (केवळ ज्ञानी) ने कर्मजनित उपाधि भविष्यमां मळवानी नथी; ते प्रमाणे हुं पण कहुं छुं पण आ हुं मारी बुद्धिथी कहेतो नथी, सूत्रानुगम कळो. चौथो उद्देशो समाप्त थयो; नय विचार तेमांज थोडो वतावी दीथो छे. चौथुं सम्यक्तव नामनुं अध्ययन समाप्त थयुं. (टीकाना स्लोक ६२० थया.)

‘ लोकसार ’ नामनु पांचसुं अध्ययन.

चौथुं अध्ययन कळा पही हवे पांचसुं अध्ययन कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया अध्ययनमां सम्यक्तवनुं स्वरूप वतायुं; अने तेनी अंदर ज्ञान रहेछुं छे, ए सम्यक्तव तथा ज्ञाननुं फळ चारित्र छे, अने चारित्रज मोक्षनुं अंग प्रधानपणे छे, तेथी ते लोकमां माररूप छे. ते चारित्रनुं प्रतिपादन करवा माटे आ अध्ययन छे. आवा संबंधथी आवेला आ लोकसार अध्ययनना उपक्रम विगरे चार अनुयोगद्वार थाय छे ते प्रथम उपक्रम द्वारमां अर्थविकार बे प्रकारे छे. अध्ययननो विषय पहेला अध्ययनमां कळो छे, अने उद्देशानो निर्युक्तिकार गाथाओ वढे कहे छे.

हिंसगविसयारंभग, एग चरुति न मुणी पढमगंमि विरओ मुणिति विइए, अतिरयवाइ परिगहिओ ॥२३६॥
तइए एसो अपरिगहो, य निविन्नकामभोगोय ।अवत्तस्सेगचरस्स, पच्चवाया चउत्थंमि ॥ २३७ ॥
हरओवसो य तव संयमयुत्ती निरसंगया य पंचमए । उम्मग्गवज्जणा छट्ठंगमि, तह रागदोसेय ॥२३८॥

हिंसक ते हिंसा करनारो; तथा विषयो माटे आरंभ करतो ते विषयारंभक, ते बने साये लेतां हिंसक तथा विषयारंभक हे एटले जे साधु प्राणीओनी हिंसा करे, अने विषयसुख लेवा सावद्य आरंभ (संसारी जेवो) करे, ते मुनी न कहेवाय, (व्याकरणाना नियम प्रमाणे समास तथा विग्रह टीकामां बताव्या हे. के जेशी शब्दतो अर्थ तथा उत्पत्ति समजाय) तथा विषयसुखना माटे एकलोज विचारे, ते एक चर हे. ते पण मुनी न कहेवाय आ त्रण अधिकार हिंसक, विषयारंभक अने एकचर हे ते पहेला उद्देशामां हे. बीजा उद्देशामां हिंसादि पापस्थानथी जे दूर रहे, ते विरत मुनि थाय, ते अर्थधिकार हे, बदन शील ते वादी, पण जे अवि-रत वादी होय, ते परिग्रह राखनारो बने हे, ते आ बीजा उद्देशामां बतावशे. बीजा उद्देशामां पूर्वे कहेलो अवि-रत ज्यारे परिग्रह-वालो मुनी बने हे, अर्थात् कामभोगनी वासनाथी दूर रहेलो ते मुनी हे, ते आमां बतावेल हे. चौथा उद्देशामां अव्यक्त (अगीतार्थ) ने सूत्रार्थ भण्या विना तथा सूत्रार्थ परिणम्या विना एकलो फरवाथी दुःखो भोगववां पडे हे ते बतावुं हे. पांचमांमां हदनी उपमाए मुनी ए थवुं, एटले जल भरेलो हद (होज) पाणी न क्षरी जाय, तो प्रशंसवायोप्य हे तेम इनादर्शन चारित्र्यी सदा साधु भरेलो होय, अने विसरी न जाय, तथा ते तप संयम मुप्ति तथा निःसंगता राखे, तो ते शोभे हे, एम बतावुं हे. छठा उद्देशामां उन्मार्ग (कुमार्ग) नुं वर्जन हे एटल कुट्टि तथा रागद्वेष छोडवानुं बतावुं हे, आ प्रमाणे त्रण गाथानो अर्थ थयो, नामनिष्पन्ननिक्षेपामां बे प्रकारे नाम हे. ते आदान पद वडे नाम हे, तथा गौणपणाथी हे ते बनेने निर्युक्तिकार कहे हे.

आयाणपट्टणावंति गोणःनामेण लोणसासत्ति । लोणस्स य सारस्स य चउक्कओ होइ निकूखेवो ॥ २३९ ॥

(प्रथम जे ग्रहण कराय, ते आदान छे. तेनी साथे पद शब्द जोडतां आदान पद थयुं अने ते करणभूत वडे 'आवन्ती' ते नाम छे. अध्ययननी अंदर शरुआतमां (आवन्ती बोलाय छे) ते आदान पद नाम थयुं तथा गुण वडे जे नाम वने, ते गौण अने तेथी जे नाम पडे ते गौण नाम छे ते हेतुथी लोकसार नाम छे. चौद रज्जु प्रमाण लोक छे तेनो सार (परमार्थ) लोकसार छे. बे पदवाळुं आ नाम छे तेथी लोकना तथा सारना दरेकना चार प्रकारे निक्षेपा थाय छे, नाम-स्थापना द्रव्यभाव छे तेमां नाम लोक ते कोइतुं नाम लोक होय. चौद राजलोकनी स्थापनातुं चित्र ते स्थापना लोक छे, तेनी स्थापना नीचली त्रण गाथाओथी जाणवी. तिरिअं चउरो दोसुं, छद्दोसुं अह दसय एक्केके । बारस दोसुं सोलस, दोसुं वीसा य चउसुं तु ॥१॥

पुण रवि सोलस, दोसुं बारस दोसुं तु हुंति नायवा । तिसु दस तिसु अहचछ, य दोसु दसुं तुचत्तारि ॥२॥

ओयरिय लोअमड्झा, चउरो चउरो यसवहहिं णेया । तिअतिअ दुग दुग, एक्केकगं च जा सतसोए उ ॥३॥

(गाथानो परमार्थ सुरगमथी जाणवो कारण के टीका नर्थो) द्रव्य लोकनुं स्वरूप जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काळ ए छ द्रव्यनो समुह जेमां छे ते द्रव्य लोक छे. अने भावलोक औदयिक औपशमिक विगेरे छ भाव वाळां छे ते जाणवो. अथवा सर्व द्रव्य पर्याय युक्तस्वरूपवाळो जाणवो. सारना ण निक्षेपामां नाम स्थापना सुगमने छोडी द्रव्य सार कहे छे.

सवस्स थूलु सुरए, मड्झे देसपहाण सरिराई । थण एरंडे वइरे, खइरं च जिणादुराळाई ॥ २४० ॥

एमां पूर्वार्धे अने पश्चिमार्धमां यथासंख्य अनुक्रमे सार गणवां वथामां थन सार भूत छे, जेपके आ कोटीसार (करोडपति)

हे अथवा पांच कपर्दिका (वाळकोनी रनवानी कोडीभो) वाळो हे. स्थूलमां एरंडो सार हे (अहीं सार शब्द प्रकर्षवाची हे.) स्थूल मध्ये एरंडो अथवा भींडो प्रकर्ष थयेळो हे, गुरुणामां वज्र भारे हे. मध्यमां खेरनुं झाड हे, देशमां आंगो अथवा वेणुं हे. प्रधानमां ज्यां जे प्रधान भाव अनुभवे ते सचित्त अथवा अचित्त के मिश्रज होय ते, तथा सचित्तमां वे पगवाळो अपद हे, तेमां वे पगमां तीर्थंकर हे. चो पगमां सिंह हे. अपद (झाडो) मां कल्पदृक्ष हे. अचित्तमां वैदूर्य मणिरत्न हे मिश्रमां तीर्थंकरज ज्यारे विभूषित होय हे, शरीरोमां मुक्ति जनने योग्य तथा विशिष्ट रूपनी प्राप्ति (तीर्थंकर चक्रवर्तिने आश्रयी) होवाथी औदारिक प्रधान हे, गाथामां आदि शब्द शरीर साथे लेवाथी स्वामित्व करण अधिकरणमा सारता योजवी, जेमके स्वामीपणामां गोरसतुं सारभूत वी हे, करणपणामां मणिरत्ननी सारतावाळा मुकुट वडे राजा शोभे हे, अधिकरणमां दहीमां वी, पाणीमां कमळ उगेळुं शोभे हे विगेरे हे. हवे भावसार वतावे हे.

भावे फलसाहणया फलओ सिद्धी सहस्रम वरिडा। साहणय नाणः दंसणसंजमतवसा तहिं पगयं ॥३४१॥

भाव विषयमां सार विचारतां फळनुं साधन तेज सार हे. जे, मतळव माटे क्रिया करीए ते प्राप्त थाय. (जेमके-विषयाथी वरस सुधी भणे अने पास थाय; त्यारे भावसार हे.) जोके, आ फळ प्राप्ति प्रधान छतां ते मळे. पळी तेनो अंत पण आवीजाय अने अनिश्चित पण हे. तेथी ते, अनेकांत अनत्यंतिक हे, ते कारणथी परमार्थथी जोतां निःसार हे. पण तेथी उळटुं एटळे, सिद्धि-पदज मेळवतुं सार हे. ते केवुं हे ? उः—ते उत्तम सुखवडे श्रेष्ठ हे. कारणके, ते एकांत सुखवाळी, अत्यंत सुख आपनारी सिद्ध-

गति छे. तथा तेमां कोइ जातनी बाधा नथी, माटे ते सर्वोत्कृष्ट छे, अने तेनां साधनो प्रकृत (चाछु) उपकारक ज्ञान दर्शन संयम, अने तप छे ते भावसार सिद्धिफल मेळववा तेनां साधन ज्ञानादिक छे तेमां आपणुं कार्य छे. एटले ज्ञानदर्शन चारित्ररूप-भाव सारवडे अही अधिकार छे. तेशी ते ज्ञान विगेरे जे सिद्धि (मोक्ष) ना उपायो छे, तेनी भावसारता बतावे छे.

लोगंसि कुसमएसु य काम परिगहकुमगलगोसु । सारो हु नाणदंसणतवचरणगुणा हियट्टाए । २४२ ॥

गृहस्थ लोकमां खराव (संसारी) सिद्धान्त छे, ते कामवासनाना आग्रहथी कुमार्ग छे, तेमां रक्त बनेला होवथी काम परिग्रहको आग्रही वनी गृहस्थ भावने तेओ परांसे छे अने बोले छे के:—

गृहाश्रमससो धर्मसो, न भूतो न भविष्यति । पालयन्ति नराः शूराः क्लीबा पाषण्डमाश्रिताः ॥ १ ॥

गृहस्थम जेओ धर्म थयो नथी, थवानो नथी, तेहुं पालन शूर पुरुषो करे छे, पण क्लीव (सब विनाना) पुरुषो तेने छोडी बावा (साधु) वनी जाय छे, कारण के गृहस्थाश्रमने (गृहाश्रमने) आधारे बधा त्यागीओ रहे छे, तेहुं सांभलीने (ओडी बुद्धिवाळा) महाभोहथी मूढ वनीने इच्छा मदन काममां परवो छे, तेज प्रमाणे खरा साधु सिवायना वेशधारीओ पण जेप्रणे इन्द्रियोनी कुचेष्टा रोकी नथी तेओ पण ते बे प्रकारनी कामवासनाने बलाणे छे, एथी लोकमां साररूप ज्ञानदर्शन तप चारित्रना गुणो, उत्तम मुखवाळी श्रेष्ठ सिद्धि मेळववा माटे आदर करावा योग्य सार छे, कारण के ते हितसिद्धि आपनार छे, जो ज्ञानदर्शन तप चारित्रना गुणो हित माटे सार छे, तो शुं करवुं ते कहे छे:—

चहउणं संकपयं, सारपयमिणं दढेण चित्तवं । अथि जिओ परमपयं, जयणा जा रागदोसिहिं ॥१४३॥

आचा०

॥५५२॥

सुत्रम

॥५५२॥

प्रथम शंका छोड़ी दे, अमारा करेला तप विगेरेतुं फल मोक्ष आपशे के नहि, एवो विफल्य ते शंका छे, ते शंकातुं पद ते निमित्तकारण छे, जेपके जिनेश्वरे कहेला इन्द्रियोथी न जणाय, एवा शीणा विषयो होवाथी ते फक्त आगम प्रमाणे मानवा जोइए, तेमां न समजतां संदेह थाय तो पण ते छोड़ीने आ ज्ञानादिक सार जे पूर्वे बतावेल छे, तेने दढ पणे (स्थिरचित्ते) कुमार्गे चालनाराओथी ठगाया विना निश्चलपणे मानवां, तथा पाळवां, ते शंका दूर करवा गथाना पाळवा वे पदमां कहुं छे के जीव छे, आम प्रथम जीवने वधा पदार्थमां प्रथम लेवाथी अने जीवप्रधान होवाथी बीजा अजीव विगेरे पदार्थो पण जाणी लेवा, (के वधा पदार्थो विद्यमान छे) तथा जीव बालो (शरीरधारी के विना शरीरनो) जीव जीवे छे, तथा जीवशे तथा ते संसारी जीव शुभ अशुभ कर्मना फलने भोगवनारो, अने ते 'हुं पोते' एम प्रत्यक्ष साध्य छे, अथवा तेने यती इच्छा द्वेष प्रयत्न विगेरे कार्याना अनुमानथी पण साध्य छे, तेज प्रमाणे अजीवो पण धर्म अधर्म आकाश पुद्गलने गति, स्थिति, अवगाह आपवाना; तथा वे अणु विगेरे स्कंधना हेतुरूप छे. तेथी, पांच द्रव्यसिद्ध थयां, ए प्रमाणे आस्रव-संवर वंध निर्जरा पण विद्यमान छे. कारणके, पुरुषार्थ प्रधानपणे छे. आ पदार्थमां आदिजीव अने अंते मोक्ष ग्रहण करवाथी वचला पदार्थो आवी जाय छे. एटले जीव तो सूत्रमां साक्षात् छे, अने मोक्ष हवे पछी बतावे छे के, परम तेज पद ते, परमपद छे. एम जाणहुं के, मोक्ष शुद्धपद कहेवातुं होवाथी विद्यमान छे. कारणके, ते वंधथी विरुद्धपक्षमां छे, अथवा वंधनी माथे अविनाभाविपणे छे. (एटले वंध त्यारेज कहेवाय के कोइपण

अंशो च पदार्थ जुदा पडे. जो, जुदा न पडे तो, एकज कहेवाय ते बंध न कहेवाय. माटे, जुदा पडे; ते मोक्षजीवने कर्मरूपी-अजीव पदार्थ पुरक स्वन्यरूपे कंड अंशो मळेलो ते सर्वथा जुदो पडे; ते संपूर्ण मोक्ष हे, अने थोडे अंशो जुदो पडे; ते देशमोक्ष हे.) हवे, मोक्ष जो होय; पण, ते प्राप्त करवानो उपाय न होय; तो, माणसो शुं करे ? तेथी ते बतावे हे. 'यतना' एटळे, रागाद्वेष छोडवामां यत्न करवो; ते प्रथम लक्षणरूप-संयम पण विद्यमान हे. तेथी, आ प्रमाणे जीव अने परमपद विद्यमान हे, ते (मोक्षमां) शंका दूर करीने ज्ञानादिक-सारपदने मेळवचा दृढ प्रयत्न करवो, तेनाथी पण अपर अपर (चढतो) सार तथा श्रेष्ठगति हे. एतुं बतावी उपक्षेप कहे छे:—

लोगस्स उ को सारो ?, तस्स य सारस्स को हवइ सारो ? । तस्स य सारो सारं, जइ जाणसि

पुच्छिओ साह ॥ २४४ ॥

चउद राजप्रमाणतो जे लोक छे, तेनो शुं सार छे ? ते सारनो शुं सार ? ते सारनो शुं सार जो ए तमे जाणता हो; तो, हुं पुछुं हुं माटे कहेो.

लोगस्स सार धम्मो, धम्मंणि य नाणसारियं विति । नाणं संजमसारं, संजमसारं च निवाणं ॥ २४५ ॥

बंधा लोकनो सार धर्म छे, धर्मनो सार ज्ञान छे, ज्ञाननो सार संयम छे, संयमनो सार निर्वाण छे. आ प्रमाणे नामनिक्षेपो कसो. हवे, सूत्रानुगममां सूत्र कहेतुं जोइए. ते कहे छे:—

आवंतो केयावंती लोयंसी विपरामुसंति अट्टाए अणट्टाए, एएसु चैव विपरामुसंति, गुर

से कामा, तओ से मारंते, जओ से मारंते तओ से दूरे, नेव से अंतो नेव दूरे (सू० १४१)

‘आवन्ती’—विगरे, जेटला जीवो, मनुष्य, अथवा बीजा असंयत छे, तेमांना केटलाक चौद राजप्रमाण लोकमां गृहस्थ लोकमां गृहस्थ, अथवा अन्य तीर्थिक-लोक छे, तेओ, छ जीवनीकायाना आरंभमां प्रवर्तीने अनेक प्रकारे विषयना रसीया बनी पीडा करे छे. एटले दंडाथी के, चाबखार्था मारवा विगरेथी दुःख दे छे. शा माटे दुःख दे छे ? ते कहे छेः—

धर्म, अर्थ, काम माटे, प्रयोजन आवतां जीवोनो घात करे छे ते बलावे छे. धर्मनिमित्त ते, शौच (पवित्रता) माटे पृथ्वीकाय (काची माटी) ने दुःख दे छे. धन मेळववा खेती विगरे करे छे. काम (शरीरशोभा) माटे आभूषण विगरे बनावे छे. ए प्रमाणे बीजी कायोनी हिंसा करवा संबंधी पण जाणवुं. हवे, अनर्थथी (बीनाप्रयोजने) ते फक्त शोबना माटेज शिकार विगरे प्राणीनो नाश करनारी क्रीयाओ करे छे, तेथी, ए प्रमाणे प्रयोजने अथवा अप्रयोजने प्राणीओने हणी; ते छ जीवनीकायाना स्थानमां विविध प्रकारे सुक्ष्मवादर पर्याप्तक-अपर्याप्तक विगरे भेदवाळां एकेन्द्रिय विगरे प्राणीओने दुःख दे छे. पछी तेमांज पोते अनेक-वार उत्पन्न थाय छे. अथवा, ते छ जीवनीकायाने वाधा करी तेनाथी बंधायळां कर्मबडे तेज कायोमां उत्पन्न थइने तेवा प्रकारोबडे कर्मोने भोगवे छे, ते संबंधमां नागाजुंनीआ आ प्रमाणे कहे छेः—

“ जावंति केइ लोए छकाय वहंसमारंभति अट्टाए अणट्टाए वा ”

विगरे मूत्रमां आनो अर्थ आवी गयो छे. शंका—एम दशो; पण, शा माटे आवां कर्मो जीव करे छे के, जे अन्य कायमां जइने

भोगवचां पढे छे ? उत्तर ' गुरुसे० ' विगोरे तबने नहीं जाणनारा ते जीवने सुंदर राब्द विगोरे इच्छवा योग्य काम (विषयो) दुःखे-
 करीने छोडवा योग्य छे ? कारणके, अल्प मत्त्ववाळा जेमणे पुण्यनो समूह पूरो नथी कर्यो; तेओने ते उलंघवुं दुष्कर छे, तेथी ते
 कायामां आरंभ करे छे, अने तेथी पाप वंधाय छे, तेथी शुं थाय ते कहे छे, ते संसारी जीवे छ जीवनिकायने दुःख देवाथी तथा
 अधिक विषयलाळमा करवाथी पोते मारे ते आशुष्यनो क्षय (मरणवच) ने प्राप्त थाय छे, अने मरेला जीवने जन्म अवश्य थवानो
 छे, जन्ममां पाहुं मरण थवानुं, ए प्रमाणे जन्म मरणरूप संसारसमुद्रमां उपर आववुं. नीचे जवुं, तेथी जीव छुटतो नथी, पळी
 वीजुं ते शुं करे छे, ते कहे छे, ' जओ ' विगोरे जेथी ते मृत्युना मध्यमां पढेलो परम पदना उपायो ज्ञान विगोरे रत्नत्रयथी, अथवा
 तेजुं कार्य मोक्ष तेथी दूर रहे, अथवा सुखनो अर्थी ते कामने त्यजतो नथी, अने विषय रम न छोडवाथी पाळो मरणना सुखमां
 जाय छे, तेथी जन्म जरा मरण रोग शोकथी वेरायेळो सुखथी दूर रहे छे, ते अधिक विषय रसीयाने मृत्युना सुखमां पढतां शुं
 थाय छे ते कहे छे ' नेवसे.' विगोरे पळी ते विषय सुखना किनारे आवतोज नथी तेनो अभिलाष हृदयमां रहेवाथी काम वासनाने
 न त्यागवाथी संसारथी दूर नथी थतो, अथवा जेने अधिक विषय आस्वाद छे ते कर्मनी अंदर छे के बहार छे ! उत्तरः—'नेवसे.'
 ते जीवकर्मना मध्यमां भिन्नश्रेथी होवाथी नथीज; कारणके, भविष्यमां तेनां कर्म अवश्य क्षय थशे तेम दूर पण नथी; कारणके
 कोटी कोटी (कोडा कोडी) सागरोपमां थोडुंथोडुं एनी तेनी स्थिति छे, पूर्वे कहेलां कारणेथी चारित्रनी प्राप्तिमांज ते कर्मनी
 अंदर नथी तेम दूर नथी. एम बोलवुं शक्य छे. चारित्र आत्मामां एकवार फरशुं होय; तो तेनो मोक्ष थाय छे, अथवा जेणे आ
 पाणोनुं लेबाख कर्म न कर्युं, ते संसारना अन्तर्भूत छे, के बहार वर्ते छे ! तेवी शक्याहुं समाधान करे छे, ते जीव रक्षक साधुनां

પાતિકર્મો ક્ષય થવાથી કેવળી તે સંસારના મધ્યમાં ન ગણાય, તેમ દૂર પળ નથી, કારણકે ચાર અપાતિકર્મ વાકી છે, આ (કેવ-
લીને આશ્રયી છે) જેણે શ્રંથી ભેદ કરીને દુષ્પાપ્ય એવું સમ્યક્ત્વ પાપ કર્યું અને સંસારના આરાતીય તીરે (મોક્ષમાં જન્મની તૈયારી-
વાલો) કેવા અધ્યવસાયવાલો હોય છે, તે કહે છે:—

સે પાસદ્ ફુસિયમવિ કુસગો પણુદ્ધં નિવદ્યં વાણરિયં, એવં વાલસસ જીવિયં મંદસસ અવિય-
ળાઓ, કૂરાદં કમમાદં વાલે પકુવમાળે તેળ દુકૂલ્લેળ મૂલે વિવ્પરિઆસમુવેદ, મોહેળ ગભ્મં
મરળાદ્ એદ, એરથ મોહે પુળો પુળો [સૂ. ૧૪૩]

જેવું મિથ્યાત્વ પદલ (પદદો) દૂર થયેલ છે, અને સમ્યક્ત્વના પ્રમાવથી સંસારની અસારતા જાણેલી છે, (દ્રવ્ય ધાતુનો અર્થ પ્રાપ્તિના
અર્થમાં છે) તે જાણે છે કે, કુશળા અગ્રભાગે રહેલા પાણીના વિંદુ માફક સંસારી (વાલ) જીવતું આયુષ્ય છે, અને તે પાણીના
વિંદુ હવર હવરથી આવતા પાણીના વીજા વિંદુથી પ્રેરળા થતાં વાયુના ક્ષપાટાથી પદતાં વાર ન લાગે, તેમ આ વાલજીવતું જીવિત
છે, તેવું ક્ષણમાત્ર જીવિત જાણીને, તલ્લ જાળનારો ઢાહ્યો સાધુ તેમાં મોહ ન કરે, માટે વાલ શબ્દ લીધો છે, એટલે વાલ તે અજ્ઞાની
છે, તે અજ્ઞાનપણાથી જીવિતને વહુ માને છે, તેથી વાલ છે, મંદ છે, સદ્અસત્તા વિવેકથી શૂન્ય છે, તેથી બુદ્ધિહીન હોવાથીજ પર-
શને જાણતો નથી, અને પરમાર્થને ન જાણવાથીજ જીવિતને વહુ માને છે, અને પરમાર્થ ન જાણવાર્થા તે શું કરે છે, તે કહે છે,
'કુરાગિ' ત્રિગેરે તે નિર્દયતાનાં કલ્પો કરે છે, હિંસા જૂઠ વિગેરે જે વીજા લોકોને આશ્ચર્ય પમાડે તેવાં મહાન પાપ અથવા અઢારે

पापस्थानने ते बाल जीव करे छे, (आत्मनेपद क्रियापद लेवाथी पोताने माटे ते करे छे,) तेहुं फल बतावे छे, क्रूर कर्मना विपा-
 कथी मेळवेल्या दुःखवडे भुं करवु? एम विचारमां मूढ बनेलो क्या कृत्यथी मासं आ दुःख दूर थरो, एम मोहथी मोहित थयेलो विप-
 र्यास (उलटो रस्तो) पामे छे, एटले ते मूढ जे प्राणीनी यात विगेरे पापकृत्यो जे दुःख मळवानां कारणो छे, तेज हिंसाना कृत्य
 दूर करवा माटे फरी करे छे ! वळी 'मोहेण' मोह अज्ञान छे, अथवा मोहनीयकर्म छे, ते मिथ्यात्व कषाय विषयनो अभिलाषरूप
 छे, तेना वडे मूढ थयेलो नवां अशुभ कर्म बांधे छे, तेनाथी गर्भमां जाय छे, पळी जन्म बालावस्था कुमार यवन बुढापो विगेरे
 तेने मळे छे वळी ते विषय कषाय विगेरेथी कर्म नवां बांधीने आयुना क्षयथी मरण पामे छे, आदि शब्दथी पाछो गर्भ जन्म विगेरे
 मेळवे, एम जाणवुं. पळी ते नरक विगेरेनां दुःख पामे छे, ते कहे छे. 'एत्थ' उपर कहेला मोह कार्य ते गर्भ मरण विगेरेमां वारं-
 वार अनादि अतंत चार गतिरूप संसार कांतारमां ते जीव भ्रमण करे छे, पण तेनाथी मुक्त थतो नथी, त्यारे केवीरीते भ्रमण
 न करे ? उत्तरः—मिथ्यात्व कषाय अने विषयना अभिलाषथी दूर रहेतो ते केवी रीते दूर थाय ? उत्तरः—विशिष्ट ज्ञाननी उत्पत्ति-
 थी ? म—ते केवी रीते मळे ? उः—मोहना अभावथी ? जो आ प्रमाणे एक बीजाने आश्रये रहेलां छे, जेमके मोह अज्ञान अथवा
 मोहनीयकर्म तेनो अभावथी विशिष्ट ज्ञान, ते पण मोहनीयकर्म दूर थवाथी ए प्रमाणे इतर इतर आश्रय दोष खुलोज थाय छे, ?
 एटले एम थयुं के ज्यां सुधी विशिष्ट ज्ञान प्राप्ति न थाय त्यां सुधी कर्म यांत करवानी पव्हत्ति पण न थाय. उः—तमारो कहेलो दोष
 लागतो नथी. कारण के अर्थ (पदार्थ) नो संशय आवतां पण पव्हत्ति थती देवाय छे, ते सूत्र कहे छेः—
 संसयं परिआणओ संसारे परिज्ञाए भवइ, संसयं अपरियाणओ संसारे अपरिज्ञाए भवइ (सू० १४३)

वन्ने बाहुना अंश जेमां देखाय त्यां संशय थाय छे, ते अर्थ संशय अने अनर्थ संशय एम बे भेद छे. अही अर्थ ते मोक्ष, तथा मोक्षनो उपाय छे, तेमां मोक्षमां संशय नथी, कारण के तेने परम पद एम स्वीकार्युं छे, पण तेना उपायमां संशय होय तो पण प्रवृत्ति थाय छे, अर्थ संशय ते प्रवृत्तितुं अंग छे, अने अनर्थ ते संसार अने संसारना कारणो छे, तेना संदेहमां पण निवृत्ति थाय छेज, कारण के अनर्थ संशय ते निवृत्तितुं अंग छे, एथी अर्थमां अथवा अनर्थमां रहेला संशयने जाणतो होय तेने हेय उपादेयनी प्रवृत्ति थाय छे, तेज परमार्थथी संसारतुं परिज्ञान छे, ते बतावे छे, ते परिज्ञानवडे संशयने जाणनाराथी चार गतिवाळो संसार अथवा तेतुं मूळ कारण मिथ्यात्व अतिरति विगेरे अनर्थपणे ज्ञ परिज्ञावडे जाणेळुं थाय छे, ते बतावे छे, अने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे त्याग थाय छे, पण जे संशयने नथी जाणतो, ते संसारने पण नथी जाणतो, ते बतावे छे, 'संशय' संदेहने वन्ने प्रकारे न जाणनारानी हेय उपादेयनी प्रवृत्ति नहीं थाय, अने प्रवृत्ति विना संसार अनित्य छे, अशुचिथी भरेलो छे, घणां दुःख आपनारो छे, निःसार छे. एम ते जाणतो नथी, आ निश्चय केवी रीते थाय—के ते संशय जाणनारे संसार जाणयो छे ? तथा थुं निश्चय करवो ? उः—संसारना परिज्ञानतुं कार्य विरतिनी प्राप्ति थाय छे, तेथी सर्व विरतिमां प्रष्ट (श्रेष्ठ) विरतिने बताववा कहे छे.

जे छेए से सागरियं न सेवइ, कट्टु एवमविथाणओ विइया मंदरस बालथा, लछा हररथा

पडिलेहाए आगमिन्ना आणविजा अणासेवणय ति बेमि (सू० १४४)

जे छे ए—जे निपुण छे, जेणे गुण्य पाप जाण्यां छे, ते मैथुन (संसार संबंध) मन वचन क्लयाथी करतो नथी, तेनेज संसार

जाणनारो करेवो, (ते जे स्त्रीसंग मन वचन कायथी न करे) पण मोहनीयकर्मना उदयथी जे पासत्यां (त्रिधिल साधु) छे, ते सेवे छे, अने सेवीने पढी साता तथा गौरव नाश थवाना भयथी शुं करे ते कहे छे, कट्टु एकांतमां कुचाल सेवीने गुरु विगोरे ए पूछतां जुठुं बोले आवी रीते जुठुं बोली पाप छुपावनासने शुं थरो ते कहे छे, 'विइआ' अबुद्धिमानने प्रथम तो कुकर्म कर्युं ते अज्ञानता छे, अने पाछुं जुठुं बोलतां मृषावादतो दोष लागी छे, तथा ते फरी न करवापणे फरी अनुत्थान (चाछ) छे, आ संबधे नागार्जुनीआ आ प्रमाणे कहे छे:—

“जे खलु विसए सेवई सेविता वाणालोएइ, परेणवा पुट्टो निपहवइ, अहवा तं परंसएण

वा दोसेण पाविट्टपरेण वादोसेण उवल्लि पिज्जंति ”

जे कुकर्म करे करीने आलोचना करतो नथी, अथवा बीजाए पूछतां जुठुं बोले छे, अथवा पापी पोताना दोषो वडे वधारे वधारे लेप्राप छे. जो एम. छे, तो शुं करवुं, ते कहे छे, 'लद्धाहु' कामो प्राप्त थये छते पण 'हुरत्ये' चित्र झुल्लक (मुनि) माफक तेनां कडवां फळ जाणीने चित्तथी ते बहार करे (अथवा हुशब्द अपि अर्थमां लइ रेफनो आगम थयो ते बीजाना अर्थमां प्रथम विभक्ति लेतां) आवो अर्थ थाय छे के, मेलवेला होय, ते विपाकदारवडे विचारीने तथा ते शब्दादिनां कडवां फळ जाणीने नेवां प्राप करवानी आज्ञा पण पोते न आपे, तेम पोते पण छोडे, एहुं सुधर्मस्वामी कहे छे, जे में पूर्व कसुं, ते में एक सरस्वो श्रेष्ठ ज्ञान प्रवाह मेळव्यो छे, अने शब्दादिनां कडवां फळने जाणवाथी देखवाथी जिनेश्वरना वचन

उपर मने आनंद थयो छे, (प्रथम भगवाननुं वचन सांभळ्युं, तेथी कडवां फळ जाण्यां पळी अनुभव्युं तेथी विश्वास थयो) तेथी हुं कहुं छुं के:-
 पासह एगे ख्वेसु गिद्धे परिणिजमाणो, इत्थ फासे पुणो पुणो, आवंती केयावंती लोयंसि
 आरंभजीवो, एषुसु चैव आरंभजीवी, इत्थवि बाले परिपच्चमाणे रमई पविहिं कस्मेहिं असरणे
 सरणंति मत्तमाणे, इहमेगेसिं एगचरिया भवइ, से बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोमे
 बहुरए बहुनडे बहुसडे बहुसंकल्पे आसवसन्ति पलिउच्छन्ने उद्धियवायं पवयमाणे, मा मे
 केइ अदक्खु अन्नायपमायदोसेणं, सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ, अट्टा पया माणव ! कंम-
 कोविया जे अणुवरया अविजाए पलिमुक्खमाहु आवइमेव अणुपरियइंति त्तिवेमि (१४५)

॥ लोकसारे प्रथमोद्देशकः ५-१ ॥

हे एकांत धर्म रक्त मनुष्यो ? तमे देखो ? (रूपमां बहु वचन लेवाथी आदि शब्दतो अर्थ थाय छे, एटले रूपआदि) के रूप
 विगरे इन्द्रियोना रस जे खास कडवां फळ आपनार असार छे, तेषां मुद्ध थयेला अथवा संसारमां पडेला जीवो स्वाद लइने पळी
 दुःख भोगववा नरक विगरे पीडा स्थानमां गयेला छे, ते प्राणीओने जुओ ? (कोइने नरक उपर विश्वास न होय तो कसाइखानामां
 पशु पक्षीओने गळे छुसी फरती देखो, के ते पशु पक्षीओ आवी दशायां पडवानुं शुं कारण छे, तथा पशुने मारनारा मरावनारा

मांसनो स्वाद करनारनी शुं दशा शनो, ते पण विचारो ?) ते विषय रसना स्वादुशो इन्द्रिओने वत्र थइ शुं फळ मेळवे ते कहे छे, 'एत्थफासे' आ संसारमां इन्द्रियर्था परवत्रा थयेळो मूढ बनीने कर्मनी परिणतिरूप स्वर्णोने वारंवार तेवा तेवा स्थानोमां ते भोगवे, पाठांतरमां 'एत्थमोहे' छे, आ संसारमां मोह ते अज्ञान अथवा चारित्र मोहमां वारंवार मूढ बने छे, कोण ? उत्तरः—आवंती—जे कोइ गृहस्थ आ लोकमां पेट भरवा पाप आरंभ करनारा छे तेओ (बीजाने दुःख देइने) पोते पाळां तेवां दुःख मेळवे छे, वकी ते गृहस्थोने आश्रय करीने रहेल आरंभ करनारो करानारो अनुमोदनारो जनेतर के पासत्थो वेष विडंबक साधु छे, ते पण गृहस्थो माफक दुःख भोगवे छे, ते वतावे छे, एएसु सावद्य आरंभमां पडेला गृहस्थोमां शरीर निर्वाह माटे रहेतो जैनेतर के पासत्थो साधुपण आरंभजीवी होय, ते पूर्वे वतावेला दुःखनो भोगियो थाय, वकी गृहस्थ के जैनेतर तो दूर रहो, पण जे संसारसमुद्रथी तरवारूप सम्यक्त्व रत्न मेळवीने मोक्षसुं एक कारण विरति परिणाम पापीने पण जो पापकर्मना उदयथी चारित्रने पूरं न पाळे तो ते पण सावद्य अनुष्ठान करनारो बने छे, ते कहे छे 'एत्थचि' आ अर्हत्त पणीत संयम मेळवीने रागद्वेषथी व्याकुल बनेळो अंदरथी तपतो अथवा उत्कंठा करतो विषयनी आकांक्षाथी रमे छे, ? कोनी साथे ? उत्तरः—पाप कृत्योवडे विषयरस लेवा सावद्य अनुष्ठानमां चित्त लगाडे छे, शुं करतो ? 'असरण' कामाग्नि अथवा पापकर्मथी बळतो जो के सावद्य अनुष्ठानना अशरण छे, इतां तेनुं शरण लेतो भोगनी इच्छावाळो अज्ञान अंधकारथी छवायेळो दृष्टिवाळो (कामांध बनेला) वारंवार अनेक दुःखोने भोगवे छे, गृहस्थ के जैनेतर दूर रहो पण प्रवज्या (दीक्षा) लेइने पण केटलाक वेष विडंबको दुराचारोने आचरे छे, ते वतावे छे, 'इहमे' आ मनुष्य एकला फरे छे, (चराय ते चरण अथवा चर्या एकलानी चर्या ते एक चर्या) ते एकलविहारीपणुं प्रशस्त अपशस्त एम वे भेदो

हे, तथा ते द्रव्यथी भावथी एम वे भेदे हे, तेमां द्रव्यथी ते गृहस्थ पाखंडी विगोरेनुं विषय कषाय विगोरे माटे एकलानुं फरवुं थाय, अने भावथी अपशस्त न होय कारण के राग द्वेषना अभावथी ते एक चर्या होय हे, अने रागद्वेषना अभावमां अपशस्त एक चर्या ते द्रव्यथी प्रतिमा धारण करेला गच्छमांथी नीकलेला जिनकल्पीने संघ विगोरेना कार्य माटे एकला जवुं पडे ते हे, अने भावथी तो प्रशस्त एक चर्या राग द्वेषना विरहथी थाय हे, तेमां द्रव्यथी तथा भावथी एकचर्या ते केवल ज्ञान उत्पन्न न थथेला तीर्थक-रोए संयम लीधा पळीनो छद्मस्थ काल हे, वाकीना वधा चार भांगामां आवे हे, तेमां प्रथम अपशस्त 'द्रव्य एक चर्यानुं' दृष्टांत कहे हे:—पूर्वे देशमां धान्य पूरक नामना संनिवेशमां जुवान वयमां देवकुमार जेवा रूपवान तापसे गामना नीकळवाना रस्ता उपर छठनो तप शरु कर्यो, वीजा तापसे पासेना गाममां पर्वतनी गुफामां अठम तप करीने अतापना लेवा लाज्यो पळी गाममांथी नीकळतां ते तापसने ठंड ताप सहेतो देखीने लोकोए तेना गुणोथी रंजीत थइने आहार विगोरेथी तेनुं सन्मान कर्युं, लोकोए पूजतां तथा सत्कार करतां ते तपासे लोकोने कहुं के मारथी पण वीजो पहाडनी गुफावाळो तापस वधारे कष्ट सहन करे हे, तेथी लोकोए तेने वारंवार स्तुति करतो जोइ तेमणे ते वीजा तापसनी पण पूजा करी, अने पारकाना गुणो गावा दुष्कर हे, एम जाणीने तेनो पण सत्कार कर्यो. आ प्रमाणे वने भाइए एकला रहीने पूजावा माटे तप कर्यो, तेथी ते अपशस्त हे. आ प्रमाणे वीजा पण एक चर्याना दृष्टांतो यथा संभव विचारी लेवा. आ प्रमाणे सूत्रार्थ कहेतां सूत्र स्पष्टिक नियुक्तिवदे नियुक्तिकार कहे हे.

चारो चरीया चरणं, एगदं वंजणं तहिं छक। दव्वं तु दारु संकम जल थल चाराइयं बहुहा ॥२४६॥

चार (ते चर धातुनो अर्थ गति तथा खावाना अर्थमां छे, तेतुं भावमां चार रूप नने छे,) तथा चर्या शब्द (३-१-१०० ना सूत्र प्रमाणे) वने छे, तेम चरण ण वने छे, एक ते अभिन्न, अर्थ (समान अर्थ) वाला ते एकार्थ कहेवाय छे. जेना वडे अर्थ प्रगट कराय ते व्यंजन शब्द छे, अर्थात् चार, चर्या अने चरण ए त्रणे शब्द एक अर्थवाला छे, तेथी तेना जुदा निक्षेपा छ प्रकारे छे, नाम स्थापना सुगमने छेडिने न शरीर भव्य शरीरथी जुदो 'द्रव्य चार' ते अडथी गायामां वताव्यो छे, 'द्रव्यं तु' तु शब्दना अर्थ पुनः छे, द्रव्य आवी रीते याय छे, दाह (लाकडुं) चाले छे, ते जलमां तथा स्थलमां चाले छे, तेथी ते प्रथम कहे छे, ते लाकडुं जलमां स्थलमां अनेक प्रकारे चाले छे, एटले लाकडानो पूल विगेरे पाणीमां वनावे छे, अने स्थलमां खाडा विगेरे ओळंगवा माटे लाकडां गोठवे छे, तेमज जलमां लाकडानी नाववडे चलाय छे, जमीन उपर रथ विगेरेथी चलाय छे तेमज आदि शब्दथी ते लाकडुं महेल वनाववा विगेरेमां दादर वनाववामां काम लागे छे, तथा जे जे द्रव्य एक देशथी वीजा देशमां जवा माटे वपराय ते द्रव्य चार छे. हवे क्षेत्र चार विगेरे कहे छे,

खित्तं तु जमि खित्तं, कालो काले जहिं भवे चारो । भावंमि नाण दंसण, चरणं तु पसरथ मपसरथ ॥३४७॥

जे क्षेत्रमां चार (चालवानुं) करीये अथवा जेटहुं क्षेत्र चालीए, ते क्षेत्र चार कहेवाय छे, ते प्रमाणे जे कालमां चालीए, अथवा जेटलो काल चालीए ते काल चार छे.

भावमां चारके चरण वे प्रकारतुं छे, प्रशस्त चरण अने अपशस्त छे. तेमां प्रशस्त चरण ते 'ज्ञान दर्शन अने चारित्र' छे, अने

एनाथी उलटुं अपञ्जस्त चरण ते ग्रहस्थ अने अन्यदर्शीनीओनुं संसारी वर्तन छे. तेथी आ प्रमाणे द्रव्य विगेरे चार प्रकारतुं चरण वलावीने वर्तमानमां उपयोगीपणे साधुनो पञ्जस्त भाव चार पश्च द्वाराए निर्युक्तिकार बतावे छे.

लोगे चउविहंमी, समणस्स चउविहो कहं चारो? होई विई अहिगारो, विसेसओ खित्तकालेसुं ॥२४८॥

चार प्रकारना द्रव्य क्षेत्र काल अने भावरूप लोकमां श्रम सहेनार ते श्रमण (यति) नो केवीरीतनो द्रव्यादि चार प्रकारनो चार छे? उत्तर—अहीं धृति (धैर्यता) नो अधिकार छे, एटले चार प्रकारे धैर्यता राखवी.

—!- चार प्रकारनी धैर्यता -!—

द्रव्यथी धैर्यता—एटले अरस (रस रहित) तथा विरस ते तुच्छ तथा लुरुहुं विगेरे भोजन मळे, तो पण तेमां धैर्यता राखवी. क्षेत्र धैर्यता—एटले कुतीर्थिके लोकोने पोताना रागी वनाट्या होय, अथवा कुदरतीज लोको अथद्रक होय (तो साधुनुं बहु मान न करे तेथी) साधुए उद्वेग न करवो,

काल धैर्यता—ते दुकाल विगेरे मुइकेलीना वस्तुमां जेवुं भोजन विगेरे मळे, तेमां संतोष राखवो.

भाव धैर्यता—ते कोइ आक्रोश करे हांसी करे अपमान करे, तोपण क्रोथायमान न थवुं, पण विशेष करीने तो क्षेत्रकालमां हलकापणुं होय त्यां वधारे धैर्यता राखवानी छे, कारण के प्राये तेना निमित्तेज द्रव्य अने भावमां अधैर्यता थाय छे.

हवे फरीथी द्रव्यादिकना भांगाथी साधुनो चार कहे छे.

पात्रोवरए अपरिग्रहे अ गुरुकुलनिसेवए जुत्ते । उभमगवजए रागदोसविरए य से विहरे ॥२४९॥

‘पापोपरतः’—एटले पापना हेतु जे सावध अनुष्ठान हिंसा, जूठ अदत्त आदान (चोरी) अने ब्रह्मचर्य भंग ए पापोथी पोने दूर रहे, तथा परिग्रह न राखे ते अपरिग्रह एटले द्रव्यचारमां पांचे महाव्रत पळवानुं बताव्युं, तथा क्षेत्र चार हवे बतावे छे के-गुरु-कुल ते गुरु पासे रहेवुं, तथा तेनी सेवांमां रहेवुं. एटले आरवी जीदगी सुधी गुरुना उपदेश विगोरेथी (तेमनुं मन प्रसन्न करीने) चारित्र निर्मळ पाळवुं, आथी काळ चार बताव्यो. के आरवी जीदगी सुधी बधो काळ गुरुनी आज्ञामां वर्तवुं.

हवे भावचार कहे छे, साधु मार्गार्थां उलटो ते उन्मार्ग छे, एटले कोई पण जातनुं कुकर्म होय तेनुं वर्जित करे, ते उन्मार्ग वर्जक छे. तथा रागद्वेषथी विरक्त वनीने ते साधु विहार करे तथा संयम अनुष्ठान योग्यरीते करे. निर्युक्तिकारे चार बताव्यो.

हवे पाहुं सूत्र आश्रयी चार (चर्या) बतावे छे. तेमां पूर्वे विषय कषाय निमित्त जे एक चर्या (एकलविहार) करे. ते केवो थाय ते कहे छे. ‘से बहुकोहे’—विगोरे एटले विषयशुद्ध वनेलो इन्द्रियोने अनुकूल वर्तनारो एकलो पडेलो पतित साधु अथवा गृहस्थ होय, तेनुं बीजा माणसो अपमान करे तो ते बहु क्रोधवाळो वने, तथा कोई तप विगोरेना कारणे वदन करे तो बहुमानवाळो (अहं कारी) वने. तथा कुरुकुचादि (कुचेष्टा) तथा कल्क (खोटी) तपश्रया करीने बहु कपटी वने अने आ बधुं कृत्य आहार विगोरेना लोभथी करे माटे ते बहु लोभी वने, अने तेज कारणथी बहु रजवाळो एटले बहु पापरूप कर्म रजवाळो अथवा आरंभ विगोरेमां बहु रक्त वने तेथी बहुरत कहेवाय छे, तथा नटनी माफक भोगो (संसारि सुख) लेवा बहु वेषो धारण करे ते बहु नट कहेवाय.

तेज प्रमाणे घणा प्रकारे शटपणुं करे तेशी बहु शट कहेवाय, तथा संसारी कृत्यना घणा विचारो करे तेशी बहु संकल्प-वाळो) कहेवाय एज प्रमाणे चोर विगोरेनी पण एक चर्घा (अप्रशस्तमां) जाणवी, आवी रीतनो होय तेनी केवी अवस्था थाय, ते कहे छे:—
‘आसव’ विगोरे—आसवो ते हिंसा विगोरे छे, तेपां सक्त (संग) राखे ते आसव सक्त कहेवाय, अर्थात् हिंसा विगोरे पाप कर-नारो होय. ‘पलितं’—ते कर्म—तेनावडे अविच्छिन्न छे. एटले कर्मथी अवष्टब्ध (लेपायळो) छे. आवीरीते अनेक दुर्गुणवाळो होय, छतां पण पोते (लोकोने टगवा) शुं कहे ते कहे छे:—

उद्दिश्य—धर्म चरण (चारित्र) माटे हुं ल्घ्यम करनारो हुं, एटले पतित साधु पण एज प्रमाणे बोले के हुं चारित्र पाळुं हुं, अने ते प्रमाणे न पाळवाथी कर्म वडे लेपाय छे, अने ते साधु वेपथारी मोडेथी पोताने साधु बोलतो आसवोमां वर्ततो छतां आजी-विकाना भयथी केवी रीते वर्ते छे. ते कहे छे. ‘गामे’—मने बीजा कोइ पाप करतां न देखो एथी ते पाप छानां करे छे, अथवा ते अज्ञानथी अथवा प्रमादना दोषथी पाप करे छे, बळी ‘सयायं’—सतत (निरंतर) मोहनीय कर्मना उदयथी अथवा अज्ञानथी मूढ वनेलो श्रुत अने चारित्र धर्मने जाणतो नथी, एटले तेने धर्म अयमंनो विवेक नथी, जो आम छे, तो शुं करवुं ते कहे छे:—

अट्टा—विषय कपायोथी आर्त (पीडायला) वनीने तेओ आठ प्रकारनां कर्म वांघवामां कोविद (कुशल) छे. पण धर्म अनुष्ठा-नमां कुशल नथी, [एवुं गुरु सांभळनार भव्य जीवोने आश्रयी कहे छे] हे जंतुओ ! हे मनुष्यो ! तसे जुओ ! (मनुष्य धर्म करवाने योग्य होत्राथी मनुज शब्द लीयेळ छे) हवे क्या मनुष्यो निरंतर धर्मने न समजतां कर्म वन्यमां कुशल छे ? ते कहे छे:—

‘जे अणुवरया’—जे कोइ (चोक्स अयुक एम नहीं) पण पाप अनुष्ठा नथी विरक्त [निवृत्त] न होय, तेओ ज्ञान दर्शन चारित्र

जे मोक्षनो मार्ग छे, तेज विद्या छे. तेथी उलटी अविद्या छे, तेनाथी पण तेओ परि [बधी रीते] बेरायलां छतां मोक्ष करे (अर्थात् अज्ञान दशाभां रही कुकर्म करी तेनाथी मोक्ष माने) तेओ धर्मने जाणता नथी, हवे धर्मने जाणनारो भुं मेळवे ते कहे छे.

‘आवृ-भाव’ आवर्त ते संसार छे. ते संसारमां कुवाता अरटना न्याये जन्म मरणनुं भ्रमण कर्या करे छे, अने नरक विगेरे चार गतिमां ते चारवार जन्म ले छे. आ प्रमाणे सुधर्मास्वापी कहे छे, आ प्रमाणे लोकसारअध्ययनमां प्रथम उद्देशो समाप्त थयो.



लोकसार अध्ययननो बीजो उद्देशो

हवे बीजो उद्देशो कहे छे, ते नो आ प्रमाणे संबंध छे. पहेला उद्देशाभां कहुं के एक पर्यायवालो (त्यागी) बनीने पण सावध अनुष्ठान करवाथी तथा विरति (चारित्र) न मालवाथी तेये मुनि न कहेवो. आ बीजा उद्देशाभां तेनाथी उलटो ते चारित्र पाळीने पाप अनुष्ठान त्यागनारोज मुनि कहेवाय छे, ते कहे छे. आ संबंधथी आवेला उद्देशानुं पहेळुं सत्र कहे छे.

आवन्ती केयावन्ती लोए अणारंभ जीविणो तेसु, एत्थोवरए तं झोसमाणे, अयं संधीति अदकसू, जे इमस्स विग्गहस्स अयं खणोत्ति अन्नेमी एस्स मग्गे आरिण्हिं पवेइए, उट्ठिष्णो पमायए, जाणित्तु दुक्खं पन्नयं सायं, पुढो छंदा इहमाणवा पुढो दुक्खं पवेइयं से अवि-

हिसमाणे अणवयमाणे, पुट्टो फासे विपणुत्तए (सू० १४६)

आचा०
॥५६८॥

आ मनुष्य लोकमां जेओ केदलाक मनुष्यो आरंभ रहित जीवनारा छे, अही आरंभ एदले सावध अनुष्ठान अथवा पमादीपणुं छे कहुं छे केः
आदाणे निकस्वेवे, भासुस्सगो अ दाणगमणार्ह । सबो पमत्तजोगो, समणस्सवि होइ आरंभो ॥१॥

कोइ पण वस्तु लेवी के मुकवी, बोलवुं. मल परठवो, स्थानमां रहेवुं. अथवा जवुं आववुं, आ वहुं कार्य साधु जो पमादथी करे, तो तेने आरंभ (नो दोष) लागे छे, पण तेथी उलटुं ते पमाद न करे, तो अनारंभी कहेवाय छे, तेवुं निरारंभ जीवन गुजारे छे, तेवा साधुओ समस्त आरंभथी निवृत्त भएला छे, अने जे गृहस्थीओ पुत्रकलत्र के पोताना शरीर विगेरेना रक्षण माटे आरंभ करे छे, तेमना उपर जीवन गुजारे छे, तेनो भावार्थ आ छे, के सावध अनुष्ठान करनार गृहस्थो छे, तेमना आश्रये पोताना देहनी निर्वाह करवावाळा अनारंभ जीवनवाळा ते साधुओ होय छे, जेम कादवना आधारे रहेल छातां कमळ निर्लेप होय छे, तेम तेओ निर्लेप छे, जो एम छे, तो शुं समजवुं. ते कहे छे, आ सावध आरंभवाळा कर्तव्यमां संकुचित गात्रवाळो बने. अथवा अहीं जिनेश्वर कहेला धर्ममां रही पापारंभथी निवृत्त थाय. पश-ते शुं करे? उ०-ते सावध अनुष्ठानथी आवेल (थला) कर्मने क्षय करतो मुनि भावने भजे पश-शुं आलंबन लइने उपरत थाय? उ०-‘अवंसंधी’ विगेरे (अविवक्षित कर्म बलाट्या विनानो धातु होय ते पण अकर्मक धातु थाय छे. जेभके, जो? मृग दोहे छे! एम अहीं पण “अद्राक्षीत्” क्रिया छातां पण असंधि एम प्रथमा विभक्ति करी छे.) आ मत्सक्ष नजर देखातो आर्यक्षेत्र सुकुलमां जन्म इन्द्रियोनी पूरी शक्ति धर्मनी श्रद्धा तथा वैराग्य लक्षणवाळो अवसर मळयो छे, अथवा मिथ्यात्वनी

सुत्रम

॥५६८॥

क्षय थयो छे. अथवा मिथ्यात्वनो हाल तेने उदय नथी, एटले समयत्तवनी प्राप्तिना हेतुभूत कर्मविवर लक्षणवाळो संधि [अवसर] अथवा शुभ अथ्यवसायना जोडाणरूप संघि तने मळयो छे, तेने तारा आत्मामां स्थापन करेलो तुं नजरे जो, एथी हवे तुं एक क्षण पण प्रमाद न करजे. विषय विगेरेना कारणे प्रमादी न थइश, कयो प्रमादी न थाय ? उत्तरः—जे इमस्स' जे एटले जेणे तल प्राप्त कर्हुं, एवा तलज्ञानीने 'जेना वडे आठ प्रकारतुं कर्म' विशेष करीने ग्रहण थाय ते इन्द्रियांवाळं चिग्रह (शरीर) औदारिक छे, तेनो आ वर्त्तमाननो समय [क्षण] सुखमां के दुःखमां वीत्यो. अने भविष्यमां वीतशे. ते दरेक क्षण शोधवानो स्वभाव छे, ते अन्वेषी कहेवाय छे, अने ते सदा अपमत्त रहे छे, आचार्य कहे छे के आ हुं नथी कहेतो पण 'एसमग्गे' आ कहेलो मोक्ष मार्ग आर्य पुरुषोए कहेलो छे. एटले वधा त्यागवारूप धर्म (कुतीर्थ विगेरे) थी दूर रही मोक्ष किनारे पहाँवेला एवा तीर्थकर गणधरोए पकर्षथी पूर्व कहेलो छे, वळी तीर्थकरोए पूर्व कहेलो अने हवे कहेवातो मार्ग कळो छे, एटलुंज नही पण ते प्रमाणे वर्तवानुं छे. ते कहे छे. 'उट्टिए'-संघि (अवसर) मळेळो जाणीने धर्मचरण माटे तैयार थएलो तुं [साधु] एक क्षणमां पण प्रमाद न करीश. वळी वीजुं शुं समजवानुं छे? ते कहे छे—जाणितु-दरेक प्राणीनुं दुःख अथवा तेनुं मूळ कारण कर्म जाणीने तथा मनने प्रसन्न करनारं सुख जाणीने तुं प्रमादी न थइश. वळी दरेक जीवने दुःख अथवा कर्म जुटुं छे, एटलुंज नहि पण कर्मनुं मूळ कारण अथ्यवसाय पण दरेक प्राणीनो जुदोज छे. ते वतावे छे, 'जुदो' जेओनो अभिप्राय पथक् छे तेओ पथक् छंदवाळा कहेवाय छे. एटले जुदी जुदी जातना वन्धना अथ्यवसायना स्थानवाळा छे. तेओ 'इह' ते आ संसारमां अथवा संज्ञावाळा संज्ञी लोकमां मनुष्यो छे. अने तेज प्रमाणे बीजा जीवो पण जाणवा, अने दरेक संज्ञी प्राणीनो जुदो जुदो संकल्प होवाथी तेना कार्यरूप कर्म पण जुटुंज छे, अने तेना कारणरूप दुःख पण जुदा रूपवाळं छे, अने कारण भेद

थाय तो अवश्ये कार्य भेद थाय छे, तेथी पूर्व कहेछं फरीयाद करवावीने कहे छे, 'पुढो' दुःखना उपादानना भेदथी प्राणीओतुं दुःख पण जुहुं जुहुं वतावुं कारण के बया प्राणीओने पोताना करेछां कर्म भोगववामां इश्वर (समर्थ)पणुं छे, पण वीजातुं करेछं पोते न भोगवे आहुं मानीने शुं करे ? ते कहे छे, से-ते अनारंभ जीवी साधु प्रत्येक प्राणीना सुख दुःखना अध्यवसायने जाणनोरो जुदा जुदा उपायो वहे प्राणीओनी हिंसा न करतो तथा जुहुं न बोलतो, (संयम पाळे) तेम तुं पण जो (सूत्रमां प्राकृतना अथवा आर्ष वचनथी 'पश्य'नो लोप थयो छे. ए प्रमाणे पर स्वमां पण ज्यांपद न लीधुं होय त्यां लेवुं) आवीरीते जीवहिंसा न करनारो वीजुं शुं करे ते कहे छे, पुढो-ते पांच महाव्रतमां स्थिर रहीने जे प्रमाणे संयम पाळवनी पतिज्ञा लीधी छे. ते प्रमाणे पाळवार्मा उद्यम करे, अने परिसह उपसर्गो आवतां तेनाथी थता शीत उष्ण विगोरे स्पर्श अथवा दुःखना स्पर्श आवे तेने सहन करी आकुल न थाय पण संसार असार छे विगोरे जुदी जुदी भावनाओवहे (धर्ममां) प्रेरे, अने प्रेरणा ते सम्यक्प्रकारे सहवुं. पण ते दुःख पडवाथी आत्माने दुःखी न मानवो. (व्याकुल न थवुं) पण जे समभावे रही परीषहोने सहे, तेने शुं गुणो थाय, ते कहे छे:—

एस समिया परियाए वियाहिए, जे असत्ता पवेहिं कम्मोहिं उदाहु ते आयंका कुसंति, इति

उदाहु धीरे ते फासे पुढो अहिया सइ, से पुविं पेयं पच्छा पेयं भेउरधम्मसंविद्धंसणं धम्ममधुवं

अणिइयं असासयं चयावचइयं विपरिणामधम्मं, पासह एयं रूवसंधि (सू० १४७)

पूर्व कहेछो जे परीषहोनी प्रणोदक [सहेनारो] सम्मक् अथवा शमितता शमना भाववाळो पर्याय ते चारित्रने ग्रहण करीने सम्यक्

पर्यायवाळो वने अथवा शपिता (शांतस्वभावी) दीक्षावाळो वने तेज स्तुत्य थाय छे पण बीजो नहिं, आ प्रमाणे परिषद अने ज्य-
सर्गमां अक्षोभ्यपणुं वतावीने हवे ज्याधिनी सहन शीलता वतावे छे. 'जे असत्ता' एटले जेमणे कामवासनाने दूर करी तृष्ण अने मणि
तथा माटीतुं हेकुं तथा सोनामां समान भाव धारण कर्यो छे, तेवा समताने पामेला मुनिओ पापकृत्योमां असक्त एटले पापना उ-
पादानना अनुष्ठानथी दूर रहला छे, तेमने कदाचित् आतंक ते शीघ्र जीवने पण दूर करे तेवा जीवलेण शूल विभेरे ज्याधिओ पीडा
करे, त्यारे तेओ शुं करे ? ते कहे छे. अने आ कहेनार कोण छे ते पण कहे छे, भी (बुद्धि) वडे राजे. ते धीर पुरुष तीर्थंकर
अथवा गणधर छे, तेओ कहे छे के तेवा जीवलेण ज्याधिओवडे पीडायलो छतां ते दुःखना अनुभववाळा स्पर्शाने सम्यक्प्रकारे
सहन करे, सहन करतां शुं विचारे ? ते कहे छे, 'से पूज्व'—ते साधु जीव लेण दुःखथी पीडालो छतां आ प्रमाणे विचारे, के पूर्व
पण में आबु अज्ञातावेदनीयकर्मथी उदयमां आवेलुं दुःख सहन कर्युं छे, अने पळवाडे पण मारे सहन करवातुं छे, कारण के संसार
ऊदरना विवरमां रहेनारो (संसारजीव) एवो कोइपण नथी के, जेने अज्ञातावेदनीयकर्मना उदयमां आवेला विपाकथी रोगोनां
दुःखो न ते भोगवे ! वळी तेज प्रमाणे केवळीप्रभुने पण मोहनीय विभेरे चार घातिकर्म क्षय यतां केवळज्ञान उत्पन्न थया छतां
वेदनीयकर्मना सद्भावथी ते असाता—वेदनीयकर्मनो उदय थवानो संभव छे. तेथीज तीर्थंकरोने पण प्रथम कर्म वंधाय; पळी स्पष्ट
थाय; पळी निधत्त थाय; पळी निकाचन थाय; त्यारपळी उदयमां आवतां अवश्ये वेदवुंपुडे; पण भोगव्या विना मोक्ष न थाय;
तेथी अन्य साधु विभेरेए पण अज्ञातावेदनीयकर्म उदय आवतां सन्नतकुमारचक्रवर्ती माफक मारे पण सहन करवुं; एवुं विचारीने
खेद न करवो. कहुं छे के:—

स्वकृतपरिणतानां दुर्नयानां विपाकः । पुंभरपि सहनीयोऽप्यत्र ते निर्गुणस्य । स्वयमनुभव-

तोऽसौ दुःख मोक्षाय सद्यो । भवशतगतिहेतुर्जायतेऽनिच्छतस्ते ॥ १ ॥

पोतानां करेलां दृष्ट कृत्योनी उदयमां आवेलो आ विपाक (फळ) आवेल छे. ते तारे मध्यस्थ रहीने सहन करवो जोइए. ते प्रमाणे विपाक सहन करतां शीघ्र दुःखधी मोक्ष (छुटकारो) थरो. पण जो तुं भोगववामां समता नहीं राखे तो ते विपाक नवा सो भवनो हेतु थरो (चार गतिमां सेंकडो वार जन्म मरण करवां पडरो) वळी आ औदारिक शरीर घणो काळ सुधी पण रसायण विगोरे अपूल्य औषधोधी पोष्या छतां पण माटीना काचा घडाधी पण निःसारतर (तहन नकासुं) वधी रीते हमेशां नाशपामनारं छे ते वलाचे छे, ' भिदुर वम्भ ' अथवा पूर्वे अने पळी पण आ औदारिक शरीर हवे पळी कहेवाला धर्मवाळं छे, पोतानी मेळे भेदाय ते भिदुर छे ते धर्मवाळं जे होय, ते भिदुर धर्मवाळं छे, एटले आ औदारिक शरीरने सारी रीते पोषुं होय, तो पण वेदजानो उदय थतां माथुं पेट आंख छाती विगोरे अवयवोमां पोतानी मेळेज भेदन थायं छे, तथा हाथ पग विगोरे अवयवो पोतानी मेळेज विध्वंस (शून्य) थता होवाधी विध्वंसन धर्मवाळं छे, तथा जेम रात्रीना अंते नक्की सूर्योदय थाय, ते शुब कहेवाय, पण शरीर तेवुं न होवाधी अशुब कहेवाय छे, तथा अपच्युत (नाश न थाय) अतुल्यन्न (उत्पन्न न थाय) एवा एक स्थिर स्वभाववाळं कूटनी अंदर नित्य रहेळुं छे, ते नित्य कहेवाय, पण तेवुं नित्य शरीर न होवार्थो अनित्य छे, तथा तेवा तेवा रूपवडे पाणीनी धारा माफक साश्वत होय तेवु शरीर न होवाधी अशाश्वत छे, तथा इष्ट अनु-

कूल आहारना भोजनथी धृति उपष्टुंभ विगेरेमां औदारिकशरीर वर्णणाना परमाणुना उपचयथी चय तथा घटवाथी अपचय छे; एवा धर्मवाळुं होवाथी अयापचयिक छे, एशीज विविध परिणामवाळुं छे, तेथी ते विपरिणाम धर्मवाळुं छे, जो आवी रीते शरीर नाश-वंत छे, तो ते शरीर उपर शुं अनुबन्ध (ममत्व) होय ? अने कइ रीते मूर्छा होय ? तेथी आ शरीरवडे कुशल (धर्म) अनुष्ठान विना बीजी कोइ पण रीते सफळता नथी; ते कहे छे:—

पासह आ रूपसंधि (योग्य अवसर) ने जुथो ! के नाशवंत धर्मथी बेरायळुं आ औदारिक शरीर छे, तेमां पांचे इन्द्रियोनी संपूर्ण शक्तिना लाभानो अवसर छे, अने ते देवीने जुदा जुदा रोगोथी उत्पन्न थयेला स्पर्शाना दुःखनो उत्तम साधु सहन करे, आ पमाणे (हृदयचक्षुथी) देखनारने शुं थाये, ते कहे छे:—

समुपेह माणस इक्रायणरयस्स इह विप्य मुक्कस्स नरिथ मग्गे विरयस्स त्तिवेमि (सू० १४८)

सारी रीते देखानाने आ भेदुर धर्मवाळुं शरीर छे, एवुं विचारतां तेने मार्ग नथी. अर्थात् चार गतिमां भ्रमण नथी. ते कहे छे. एटले आ आत्मने वधा पापारंभोथी मर्यादायां लेवाय- (कवजे रखाय) अथवा कुशल (धर्म) अनुष्ठानमां उत्तमवाळो कराय, तो ते आयतन कहेवाय अने ते ज्ञानदर्शन चारिज ए त्रणमां एक रूपे होय तो ते एकायतन छे, अने तेमां रमणता करे तो आत्मा अकायतनरत छे, तेवा निस्पृही ज्ञानी मुनि 'इह' आ शरीर अथवा आ जन्ममां विविध उत्तम भावनाओवडे शरीरना अनुबन्धथी मुकाय, ते विप्रमुक्त छे, तेने नरकतिर्यंच मनुष्य गतिमां भ्रमण नथी, तेमज वर्तमानकाल भलाववाथी भविष्यमां पण भ्रमण नथी

एष कर्तुं, अथवा तेज जन्ममां वधा (आठे) कर्मनो क्षय यवाथी तेने नरकादि मार्ग नर्था. पशुः—कोने ! उः—जे हिंसा विगोरे आश्रव द्वारोथी निवृत्त छे. तेने संसार भ्रमण नथी. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे के हुं मारी स्वकल्पनाथी नथी कहेतो पण जे वीर वर्धमानस्वामीए दिव्य ज्ञानवहे जाणीने वचनथी कहुं ते हुं तमने कहुं छुं. आ प्रमाणे विरत ते सुनि छे, एष कहुं, हवे अविरत-वादी ते परिग्रहवाळो छे, एष पूर्वे कहेछुं, ते सिद्ध करे छेः—

आवंति केयावंती लोगंसि परिगहावंती, से अप्यं वाबहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा
अचित्तमंतं वा एषसु चैव परिगहावंती, एतदेव एगिसि महत्भयं भवइ, लोग विसं च णं

उवेहाए, एएसंगे अवियाणओ (सू० १४९)

जे कोइ मनुष्यो आ लोकमां परिग्रहयुक्त छे तेमनी पासे आबी रीतनो परिग्रह छे, 'से अप्यं वा' जे परिग्रहाय (लेवाय) ते परिग्रह छे ते अल्प (थोडो) होय, जेम छोकराने रमावानी कोडीओ, विगोरे अथवा धनधान्य, सोतुं, गाम, देश, विगोरे घणो परिग्रह होय; अथवा तृण, लाकडुं विगोरे मूल्यथी अणुं (ओछी किंमततुं) होय; अथवा प्रमाण (कदमां) नातुं वज्र (हीरो) विगोरे ग्रह होय; अथवा मूल्यथी तथा प्रमाणथी स्यूक (मोटुं) हाथी घोडा विगोरे होय; अने आ वस्तुओ सचित्त अथवा अचित्त होय. आ होय; अथवा मूल्यथी तथा प्रमाणथी स्यूक (मोटुं) हाथी घोडा विगोरे होय; अने आ वस्तुओ सचित्त अथवा अचित्त होय. आ वतावेला परिग्रहवहे परिग्रहवाळा वनीने ए परिग्रह राखनारा गृहस्थीओ साथेज वेपथारी साधुओ रहेनारा होय. (जेमके गृहस्थनुं घर अने वेपथारी मठ के स्वमालिकीनो उपाश्रय तथा गृहस्थने धन तेम वेपथारीनुं द्रव्य, तथा गृहस्थने नोकर—चाकरने वेटा—वेटीनो

परिवार. तेम वेषधारीने नोकर-चाकर अने चेला-चेलीनी व्यवसाय आ ममत्वभावे परिग्रह छे.)

अथवा आ छ जीवनिकायमांज अथवा विषयभूत [वस्तुरूप] श्रोहुं विगोरे जे द्रव्य कहुं; तेमांमूर्छी करतां परिग्रहधारी बने छे. एज प्रमाणे तेज प्रमाणे अविरत [संसारी] रह्या छतां हुं विरत छुं, एवुं बोलतो अल्प-परिग्रह राखवाथी पण परिग्रहधारी बने छे. एज प्रमाणे बीजां व्रतोमां पण जाणवुं. कारणके तेणे आस्रवोहुं निवारण न करवाथी एक देश (शोडो) अपराध करवाथी पण संपूर्ण अपराध-पणानो संभव थाय छे.

शंका-जो, आ प्रमाणे अल्प-परिग्रह पण राखवाथी परिग्रहपणुं थाय छे. तो. हाथमां भोजन करनारा दिगम्बर-[बख्तरहिता]

तथा सरजरक बोटिक विगोरे जे छे, तेओ अपरिग्रहवाळा मुनि यशे. कारणके, तेमने तेवा शोडा परिग्रहको पण अभाव छे.

आचार्यहुं समाधान—तेम नथी; कारणके, 'परिग्रहोतो अभाव छे.' ए हेतु अपसिद्ध [जुदो] छे. सांभळो सरजरकने अस्थि विगोरेनो परिग्रह छे, अने बोटिकोने पीच्छी विगोरेनो परिग्रह छे. आ (बाह्य परिग्रह छे,) तथा अंदरनो परिग्रह पण छे. कारणके,

शरीरधारी छे, तथा आहार विगोरे परिग्रह तेमने विद्यमान छे.

धर्मने टेको आपवारूप ते होवाथी निर्दोष छे एम कहेशो; तो, अमने पण ते समानज छे. तो पछी, दिगम्बर (नगपणाना)

आग्रहनो कदाग्रह शा माटे जोइए ? हवे, जे अल्प (शोडो) विगोरे पण परिग्रह राखे छे, अने अपरिग्रहपणानो अभिमान राखे छे,

तेमनो आहार शरीर विगोरे मोटा अनर्थने माटे थाय छे, ते बतावे छे 'एत देव' ए अल्पबहुपणा विगोरेना परिग्रहवहे केटलाकने

परिग्रहपणुं नरकादि गमनना हेतुपणाथी अथवा बधाने तेनो अविश्वास यतो होवाथी महाभयरूप थाय छे, कारणके आ पकृति

(स्वभाव) परिग्रहनी है, अथवा ते परिग्रहधारी पीते वधार्थो चमके है. [के मारो परिग्रह कोइ न लइ ते !] अथवा दिगम्बरने आ शरीर नभाववा आहारदिक लेवा बीजुं अल्प पात्र त्रकत्राण (कपडुं) विगेरे रूप धर्मोपकरणना अभावथी गृहस्थना घरमां आहार वापरतां सम्यग् उपायना अभावथी अविधिए अशुद्ध आहार विगेरे खातां कर्मबन्धथी उत्पन्न थएल महाभयनो हेतु होवाथी महाभय है, तथा आ धर्म शरीरने बधी रीते आच्छादन (ढांकवाना) अभावथी बीभत्स होवाथी बीजाओने महा भयरूप है.

आ प्रमाणे परिग्रह महाभय है, तेथी कहे छे के 'लोग'-असंयत लोकनुं अल्प विगेरे विशेषवाळं द्रव्य तेने महाभयरूप है, (सूत्रमां च शब्द पुनः ना अर्थमां छे, णुं वाक्यनी शोभा माटे छे) अथवा लोक वित्तने बदले लोकवृत्त लइए तो आहार भय मैथुन परिग्रह संज्ञावाळं लोकवृत्त छे. ते लोकनुं वलण मोटा भयने माटे छे. एहुं उत्तम साधुए इ परिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे ते लोकोनी संसारी चेष्टाओने त्यागी देवी, ते त्यागनारने शुं थाय, ते कहे छे, 'एएसंगे'-ए थोडुं घणुं द्रव्य संग्रह करवानुं अथवा शरीर आहार विगेरेनी मूर्खीने न करवाथी ते परिग्रह राखवाथी थतुं दुःख ते साधुने न थाय वकीः—

से सुपडिबुळं सूत्रणीयंति नच्चा पुरिसा परमचक्रवू विपरिक्रममा, एएसु चैव बंभचैरं त्तिवेमि,
से सुयं च मे अङ्गस्थयं च मे—बधपमुक्खो अङ्गस्थेव, इरथ विरए अणगारे दीराहयं ति-
तिक्खए, पमत्ते बहिया पास, अपमत्तो परिवए, एयं मोणं सममं अणुवासिजासि त्तिवेमि

(सु० १५०) लोकस्मरणअध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥५-३॥

से०—ते परिग्रह छोडनारने सारीरीते प्रतिबद्ध तथा सारी रीते उपनीत ज्ञान विगरे छे, (परिग्रह छोडनारने सारीरीते ज्ञान रत्नोनी प्राप्ति छे) एवुं जाणीने गुरु कहे छे, हे मानव ! तूं परम ज्ञान चक्षुवाळो बनीने अथवा मोक्षनी एकदृष्टिवाळो बनीने जुदी जुदी जातना तप अनुष्ठाननी विधिवदे संयम अनुष्ठानमां पराक्रम कर' ज्ञा माटे आ पराक्रम करवानो उपदेश करे छे ? 'एषुसुचेव' जेओ आ परिग्रहथी विरक्त बनीने परम चक्षुवाळा थया छे, तेओप्रांज परमार्थथी ब्रह्मचर्य छे, पण बीजाभां नथी, कारणके ब्रह्मचर्यनी नववाह बीजाभां नथी, अथवा ब्रह्मचर्य नामनो आ श्रुतस्कंध छे, अने तेनु वाच्य पण ब्रह्मचर्य छे, ते आ ब्रह्मचर्य परिग्रह न राखनाराओप्रांज छे. आ प्रमाणे सुधर्मस्वामी कहे छे, के में कहुं, अने हवे कहीना, ते वयुं सर्वज्ञता उपदेशथी कहुं छुं, ते बतावे छे, 'सेसुअंचमे'—जे जे कहुं, अने जे हवेकहीना, ते में तीर्थंकर पासै सांभळयुं छे, अने ते प्रमाणे मारा आत्माभां स्थिर थयुं, माटे अऽध्यात्म छे, एटले मारा चित्तमां पण नेज प्रमाणे छे, शुं छे ? ते बतावे छे, बन्धथी मोक्ष ते बन्ध प्रमोक्ष छे, ते अऽध्यात्मप्रांज छे, अने अऽध्यात्म ते ब्रह्मचर्य छे, ब्रह्मचर्यवाळानो मोक्ष छे. वळी इत्थ आ परिग्रह राखवाथी विरत तेछे, म०—कोण छे ? उ०—जेने गृह नथी ते अणगार छे, ते साधु दीर्घरात्र (आखी जींदगी) सुधी परिग्रहना अभाववाळो बनीने भूख तरस विगरेनां आवेलां कष्टोने सहन करे, वळी गुरुउपदेश करे छे, 'पमत्ते'—विषयो विगरे प्रमादोथी धर्मथी विमुख थएला गृहस्थो तथा वेपथारीओने तूं जो, देखीने शुं करवुं ? ते कहे छे:—अप्रपत बनीने संयम—अनुष्ठानमां यत्न करे. वळी, 'एयम्' आ पूर्वे कहेकुं संयम—अनुष्ठान मुनिनुं सर्व स्वयमौन छे. ते सर्वज्ञनुं कहेछुं छे, ते सारीरीते पाळवुं आ प्रमाणे हूं कहुं छुं.

ત્રીજો ઉદ્દેશો.

હવે ત્રીજો ઉદ્દેશો કહે છે. તેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે:—ત્રીજા ઉદ્દેશામાં કહું કે:—અવિરતવાદી તે પરિગ્રહવાળો છે, અને આ ત્રીજા ઉદ્દેશામાં તેથી ઊલટું કહે છે. આ પ્રમાણે સંવન્ધથી આવેલા આ ઉદ્દેશાનું પહેલું સૂત્ર કહે છે.

આવંતી કેયાવંતી, લોયંસિ અપરિગ્રહાવંતી ણ્ણસુ ચેવ અપરિગ્રહાવંતી, સુચ્ચા વદં મેહાવી પંડિયાણ નિસામિયા સમિયાણ્ ધમ્મે આરિણ્હિં પવેદ્દણ્ જહિરથ મણ્ સંધી જ્ઞોસિણ્ ણ્ણમન્નરથ

સંધી દુલ્લોસણ્ ભવદ્, તમ્હા વેમ્મિ નો નિહણિજ્જ વીરિયં (સૂ. ૧૫૫)

આલોકમાં જે કોઈ પરિગ્રહવાળા વિરત સાધુઓ છે, તે વધાણ આ અલ્પ વિગેરે દ્રવ્ય ડોદે; હવે અપરિગ્રહધારી મુનિ વને છે, અથવા હા જીવનીકાયમાં મમત્ત્વભાવ તજવાથી અપરિગ્રહધારી થાય છે.

પ્ર:—ટીક. પળ, અપરિગ્રહભાવ કેવી રીતે વને ? તે કહે છે. 'સોચ્ચા વર્હતિ' (ત્રીજી વિમત્તિકિના અર્થમાં પ્રથમ વિમત્તિકિ છે, તેથી) વાળી તે આ તીર્થકરે કહેલા આગમરૂપ—આજ્ઞાને સાંખ્યીને મેધાવી (મર્યાદામાં રહેલો) શ્રુતજ્ઞાન મળેલો હેયઙ્ગપાદવને સમજી તત્ત્વ ગ્રહણ કરાવાની પ્રવૃત્તિ જાણનારો વને; તથા, પંડિત તે ગણધર આચાર્ય વિગેરેનાં વિધિ નિયમરૂપ—વચનોને સાંખ્યી સચિત્ત—અચિત્ત વસ્તુનો જાણ વની તેના પરિગ્રહનો ત્યાગ કરી અપરિગ્રહી વને પ્ર:—ટીક તેમ હશે; પળ, નિરાવરણ જ્ઞાન ડત્પન્ન થણ્લા તીર્થકરોનો ક્યે સમયે વાળીનો યોગ (ઉપદેશ) થાય છે, કે અમે સાંખ્યીણ ?

मोक्षभिलाषी वनी पोतानी मेळज संघाय (ते संधि) अथवा जे कर्मसंतति वन्याय अने एक भक्ती बीजा भवमां साथे जाय ते आठ प्रकारना कर्मसंततिरूप छे. तेने क्षय करी भें (तीर्थकरोए) धर्म कर्तो. तेज मोक्ष माग छे, पण बीजां नहीं. ते कहे छे जेम भें अहीं कर्मसमूह (संधि) तोड्यो. तेम अन्यत्र बीजा अन्य तीर्थीं के कहेला मोक्षमार्गीमां कर्मसंततिरूप संधि दुःक्षय ते दुःखे करीने क्षय थाय तेम छे, कारण के ते असमीचीनपणे होवाथी तेमां खरा उपायनो अभाव छे.

जो जिनेश्वरे अहीं कर्म संधि तोड्यो छे, तो भुं समजहुं ते कहे छे, जेम आज मार्गीमां रहीने उत्कृष्ट तपश्चर्यावडे भें कर्म खपावुं, तेज प्रमाणे अन्य सुमुष्टु पण संयम अनुष्ठानमां तथा तपमां पोतानी शक्तिने योजे, पण प्रमाद न करे, सुधर्मस्वामीए पोताना शिष्यने कहुं, के आ प्रमाणे परम कारुण्यथी भीजायेला हृदयवाळा अने परहितनो एक उपदेश देनारा श्रीवीरवर्धमानस्वामीए आमने कहुं छे, प्रश्न क्यो माणस एवी क्रिया करनारो थाय ? ते कहे छे.

जे पुव्वुट्टाई नो पच्छा निवाई, जे पुव्वुट्टाई पच्छा निवाई, जे नो पुव्वुट्टायोनो पच्छा निवाई
जे सिद्धि तारिसिष् सिया, जे परिज्ञाय लोगमन्ने सयंति ॥ सू० १५३ ॥

जे कोइए संसारनो (अस्थिर) स्वभाव जाणवावडे धर्म चरणमां एक तत्पर मनवाळो वनीने प्रथमथी दीक्षाना अवसर संयम अनुष्ठान करवाने तैयार थएळो होय ते 'पूर्वोत्थायी' छे, अने पळीथी श्रद्धा तथा संवेगथी विशेषथी वधता परिणामवाळो होय, तो ते चारित्र्यथी भ्रष्ट थतो नथी, (पडवाना स्वभाववाळो ते निपाती छे. एदळे चारित्र लेइने निपात करे ते निपाती छे, आचो निपाती

न होय ते नोत्तिपाती कहेवाय) एटले सिंहरणे धरथी नीककी दीक्षा ले, अने लीधा पळी सिंह माफक पाळे, ते गणधर भगवंत जेवा पहेला भांगामां साधु जाणवा.

बीजो भांगो सूत्रवडे वतावे छे, पहेलां चारित्र छे ते पूर्वोत्थायी पळी कर्म परिणतिना विचित्रपणाथी तेवी भवितव्यताना कारणे नंदिषेण माफक पडी जाय (चारित्र सूकी दे) अने कोइ तो गोष्ठामाहिल माफक सम्यग्दर्शनथी पण दूर थाय.

त्रीजा भांगामां अभाव होवाथी लीधो नथी, ते आ छे, ' जेनोपुच्छुट्टायी पच्छानिवाती ' एटले पूर्व दीक्षा ले, तो पळी निपात के अनिपात कहेवाय. धर्मबाळो होय, तो धर्मेनी चिंता कहेवाय, पण दीक्षा लीधानोज निषेध होय तो दीक्षाभां रह्यो, के गयो, तेनी चिंताज ते संबंधी दूर रही, चोथो भांगो वतावे छे.

जेणे पूर्व दीक्षा लीधी नथी; ते पाळळथी पडतो नथी, ते अचिरत एटले, गृहस्थ जाणवो; तेने सम्यग् विरतिना अभावथी पोते दीक्षा लेतो नथी; अने दीक्षा लीधा पळीज पडवानो संभव थाय; पण, दीक्षा लीधा विना तेनो संभव न होवाथी पडतो नथी; अथवा ते भांगामां शाक्यमत विगेरेना साधुथो जाणवा. कारण के तेमनाभां चारित्र लेवुं अने सुकीदेवुं ए जैन सीतिए बनेनो अभाव छे. संकाः—गृहस्थो चोथा भांगामां छे ते बोलवुं योग्य छे, कारणके तेमनाभां सावद्य-अनुष्ठान छे, अने दिक्षा न लेवाथी महाव्रतने लेवानी प्रतिज्ञारूप-मंदीर (मेरु) पर्वतना आरोप (चडना)ना अभावथी पडवानो अभाव छे. पण शाक्यमत विगेरेने दीक्षा लेवाथी पडवानो संभव छे, तो केवी सीते पडवानो अभाव न होय ?

उत्तरः—'सोपि'—ते शाक्यादि साधु साधुसमुदायने पण पंचमहाव्रतभारना आरोपणना अभावथी तथा तेमनां अनुष्ठान

सावद्य व्यापारवाळां होवाथी पूर्वोत्थायी नथी, तेंम दीक्षाना अभावथी पश्चात् निपाता पण नथी तेथी ते गृहस्थ-समानज हे, कारण के ते वनेमां आसवद्दारांतुं रोकण नथी, अथवा उदायी राजाने मारनारा विनय सन्न साधु जेवो कपटी चोथे भांगे हे. तेज प्रमाणे बीजा पण जेओ सावद्य अनुष्ठान करनारा हे. ते पण नेवाज हे, ते वतावे हे. जेओ स्वयूथ्या (जैन मतना) पासस्था (पतित साधु विगोरे वन्ने प्रकारनी परिज्ञावडे लोकस्वरूपने जाणी (वत समजीने लेइने) पाळा रांधवा रंथाववा माटे तेज लोक (गृहस्थो)ने आश्रये रहे हे, अथवा गृहस्थने शोधे हे (तेना उपर ममत्व करी आधाकर्मि आहार ले हे.) तेओ पण गृहस्थ सरखाज जाणवा, आ पोतानी बुद्धिथी नही पण शाल्लकारतुं वचन हे, ते वतावे हे:—

एयं नियाय सुणिणा पवेइयं, इह आणाकंखी पंडिष् अणिहे, पुवावररा ग्रंजयमाणे, सया सोलं सुपेहाए सुणिया भवे अकामे अझंझे, इमेण चेव जुड्झाहि, किं ते जुड्झेण बड्झओ ? ॥ सू० ५५३ ॥

एतद्—जे उत्थान निपात विगोरे पूर्वे वतावुं. ते केवळ ज्ञानना अवलोकनवडे जाणीने तीर्थकरे कहुं हे, अने आ बीडुं कहुं हे, 'इह' आ मौनींद्र पवचनमां रहेलो तथा तीर्थकरना उपदेशने सांभळवानी इच्छावाळो ते, आज्ञाकांक्षी आगमना अनुसारे पट्टि करनारो हे. प्रः—कोण एवो हे ? उः—सद्—असद्ना विवेकने जाणनारो तथा स्नेहरहित रागद्वेषथी प्रमुक्त रातदिवस गुरूनी आज्ञामां रहेनारो यत्नवाळो थाय; ते वतावे हे. रात्रिना पहेला पहोरे सदाचारथी वर्ते; अने वचला वे पहोरमां यथोक्तविधि निद्रा ले, अने वैरात्रादिक (श्रुतार्थ—चिंतन) करे. आ प्रमाणे रात्रिनी यत्ना वतावथी दिवसतुं पण समजी लेवुं कारणके,

आदिअंत लेवाथी मध्यतुं अवश्य आनी जाय छे. 'किं च' वकी 'सदा' सर्वकाल १८००० भेदवाळुं शीलव्रत अथवा संयम पाळे; अथवा शील चार प्रकारतुं छे. महाव्रतने सारीरीते पाळवां, व्रण गुप्तिओ पाळवी.

पांच इन्द्रियोतुं दमन करतुं; कषायनो निग्रह करवो. आ प्रमाणे चार प्रकारतुं शील विचारीने मोक्षना अंगणणे पाळन करजे; पण एक नीमेष (आंखने फारकवानो काळ) मात्र पण प्रमादिव्रत न थड्वा. प्रः—क्यो माणस शीलनो संभेक्षक थाय ? ते कहे छेः— जे शीलनां रक्षणतुं फळ (मोक्षगमन) छे, तथा कुशील सेववानुं फळ नरकगमन विगेरे आगमथी जाणे छे, ते गीतार्थसाधु 'अकाम'—इच्छा मदन काम (संसारी वासना)रहित वने, तथा तेने इंधा (माया अथवा लोभ इच्छा) न होय, तेथी अइंध्र कहेवाय, अने काम तथा इंध्रानो प्रतिषेध करवाथी मोहनीयना उदयनो प्रतिषेध कर्यो, अने तेना प्रतिषेधथी शीलवाळो वने, एनो भावार्थ आ छे, के धर्म सांभळीने अकाम (सुशील) थाय, अने अइंध्र भवाथी अमायी थाय, आ वने गुणथी उत्तर गुण लीथा, अने ते उपलक्षणथी मूळगुण (महाव्रत) पण लीथां, तेथी अहिसक सत्यवादी पण थाय, विगेरे समजी लेवुं.

शंका—जीवथी शरीर जुदुं छे, आनी भावना भावनार तथा पोतातुं वळ वीर्य गोपव्या विना धर्म करनार १८००० शीलिंग धारण करनारने तथा उपदेशमां कहेवा मुजव वर्तवा छतां पण प्रारो सर्वथा कर्ममल दूर नथी थयो, तेथी तमे तेतुं असाधारण कारण कहो ! के जेना वडे हुं शीघ्र संपूर्ण कर्ममल कलंकथी रहित थातं, हुं आपना उपदेशथी सिंह साथे पण मुद्ध करीश, कारण के कर्म क्षय करवा माटे हुं तैयार थयो छुं, तेथी कंड पण मने अशक्य नथी

तेनो उत्तर सूत्रकार आपे छे, इन्द्रिय तथा मनरूप औदारिक शरीरवडे तुं मुद्ध कर, कारणके ते विषयसुखनो पिपासु वनी

स्वेच्छाप चाली ताहं अहित करे छे, तेथी एनेज सुमार्गे चालीने वश कर, वीजा बाह्य रात्रु साये युद्ध करवानी श्री लखर छे ? अंदर रहेला तारा छ रिपुनो जय करवाथी वयुं कार्य सिद्ध थरो, तेथी वीजुं कंइ पण वयारे दुष्कर नथी पण आज संयम विगोरे सामग्री अगाध संसारसमुद्रमां भटकला जीवने करोडो करोडो (हजारो) भवे पण मळवी दुर्लभ छे ! ते सूत्रकार बतावे छे:—

जुद्धारिहं खलु दुल्लहं, जहिरथ कुसलेहिं परिज्ञाविवेगे भासिए, चुए हु बाले गल्भाइसु रज्जइ,
अस्सिं चेषं पवुच्चइ, रूवंसि वा छणंसि वा, से हु एगे संविद्धपहे सुणी, अन्नहा लोगमुवेह-
माणे, इय कम्म परिणाय सबसो से न हिंसइ, संजमई नो पगल्भइ, उवेहमाणो पत्तेयं सायं,
वणणाएसी नारभे कंचणं सबलोए एगपपमुहे विदिसपइन्ने निविणचारी अरए पयासु ॥१५४॥

आ औदारिक शरीर भाव युद्ध करवाने योग्य छे, (खलु शब्द निश्चयना अर्थमां छे, अने ते भिन्न क्रमवाळो छे) ते खरेखर दुर्लभज छे, अर्थात् ते दुःखधीज प्राप्त थाय छे, कहुं छे के:—

ननु पुनरिदमतिदुर्लभमगाधसंसारजलधिभिन्नष्टम, मानुष्यं खथोतकतडिह्यताविलसितप्रतिमम् ॥ १ ॥

आ अति दुर्लभ मनुष्यपणुं अगाध संसारसमुद्रमां पदेखाने खरजुवा (अगीयो कीडो) जेवुं के वीजलीना झवकारा जेवुं थोडो काल रहेनाहं मकेछुं छे ! विगोरे समजनु जोइए.

અથવા વીજી પ્રતિમાં ‘જુદ્ધારિયં ચ દુહ્લહં’ પાઠ છે, તેમાં સંગ્રામ (લડાઈવું) યુદ્ધ અનાર્ય [જંગલીપણાં] છે, અને પરિપઠ વિગેરેથી લઢવું તે આર્ય યુદ્ધ છે, તેથી તે દુર્લભ છે. માટે હે શિષ્ય ! તેની સાથે યુદ્ધ કર, તેથી તારાં વધાં કર્મના ક્ષયરૂપ—મોક્ષ થોડા વચ્ચતમાં જ થશે; અને તેથી માવયુદ્ધ કરવા યોગ્ય ઔદારિક—શરીર મેઝકીને કોઈક મનુષ્ય તો, તેજ ભવે મરુદેવી માફક વધાં કર્મનો ક્ષય કરે છે, કોઈ તો, ભરત રાજા માફક (પૂર્વે મનો આશ્રયી) સાત આઠ મત્રમાં મોક્ષ મેઝવે છે, અને કોઈ તી અર્ધપુદ્ગલ પરાવર્તન થયા પછી મોઢા મેઝવે છે, પણ અપર (અમત્રી) મોક્ષે નહીં જાય શા માટે ? તે કહે છે, જેમ જે પ્રકારે આ સંસારમાં કુશલ તીર્થ-કરોણ પરિજ્ઞા વિવેક (પરિજ્ઞાન વિશિષ્ટતા) કોઈનો કંઈ પણ અધ્યવસાય સંસારનો વિચિત્ર હેતુ વતાવ્યો છે, અને તેજ બુદ્ધિમાને સ્વીકારવો જોઈણ, હવે પૂર્વે કહેલું પરિજ્ઞાનનું જુદાજુદાપણું વતાવવા કહે છે,

(મઢ્ય અને અમઢ્યપણું સ્વભાવથી જ છે. મઢ્ય કાઠાંતરે પણ મોક્ષમાં જશે, પણ અમઢ્ય નહીં જાય) કોઈ દુર્લભવોધિ દુર્લભ પણ મનુષ્યપણું પામીને તથા મોક્ષગમનના ઇક હેતુરૂપ ધર્મ પામીને પણ કર્મના ઉદ્યથી ફરીથી પણ ધર્મથી ષ્ટથઈ વાલ (મૂર્ત્વ) વીવ ગર્મ વિગેરેમાં જાય છે, ઇટલે ગર્મ જેવાં પ્રથમ છે, ઇવી કુમાર યૌવન વિગેરે અવસ્થાઓમાં ષુદ્ધ થઈ જાય છે, અને (એને પ્રિયમાનીને) ઇ અવસ્થાઓ સાથે મારો વિયોગ ન થાઓ ઇવા વિચારવાઠો વને છે, અથવા ધર્મથી ષ્ટથ થઈને ઇવાં કામ કરે છે, કે જેનાવઢે તે વાલજીવ તેવી તેવી ગર્મ વિગેરેની પીઢાઓના સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે, “રિજ્ઞઈ” (કોઈ પ્રતિમાં પાઠ છે) ઇટલે જાય છે (પૂર્વો અર્થ લેવો) મઢ્ય—ટીક, ઇમ હશે પણ આતું વયાં કહું છે ? હઢ્ય—જે પૂર્વે કહું છે, કે આ જિનેશ્વરના વચનમાં પ્રકર્ષથી કહું છે. અને હવે પછી પણ તેજ કહે છે, ‘સ્વે’—વશુ ઇન્દ્રિયના વિષયમાં રાગી થણો, અથવા રસ ઇન્દ્રિયમાં સ્પર્શ ઇન્દ્રિયમાં રાગી થણો

क्षणमां पर्वते छे, क्षणनो अर्थ हिंसा छे, तेथी जेम ते हिंसामां वर्ते छे, तेम जूठ विगेरेमां पण पर्वते छे, पण रूप विप्रयोमां प्रधान होवाथी तथा ते रूपवाळं होवाथी (तुर्त तेमां मन दोडतुं होवाथी) लीधुं छे, अने आस्रव (पाप) द्वारोमां हिंसा मुख्य अने प्रथम होवाथी ते लीथेल छे, अर्थात् अज्ञानी माणस रूप विगेरे माटे धर्मथी भ्रष्ट यइने गर्भ विगेरेनां दुःख भोगवे छे. एम आ जिनेश्वरना मार्गमां कहेल छे, पण जे डाह्या माणसे आ विषय रसने पाहुं गर्भादि गमननो हेतु जाणीने पोते धर्मथी भ्रष्ट न यइने हिंसा विगेरे आस्रव द्वारथी दूर रहे छे, ते केवो थाय, ते कहे छे. ते एकलोज जीतेन्द्रिय मुनि त्रण जगतने माननारो वनीने सभ्यग्न रीते तेणे मोक्ष मार्ग पण तळे खुंदी नांख्यो छे, एटले ज्ञान दर्शन चारित्रवडे मोक्ष मार्ग संमुख कर्यो छे. तथा वीजी पतिमां 'संबिद्ध भये' पाठ छे, एटले ते जीतेन्द्रिय मुनिए भय जाण्यो छे, एटले जे हिंसा विगेरे आस्रवद्वारथी दूर रहे ते मुनिज खुंदेला मोक्ष मार्गवाळो छे. वळी वीजी रीते मुनि होय ते कहे छे, जे विषय कषायथो पराभव पायेळो छे, हिंसा विगेरे कृत्यमां रक्त छे, तेवो गृहस्थ अथवा पाखंडी जन समूह छे तेने रांयवा रंथाववामां अथवा औद्देशिक तथा सचित आहार विगेरेमां रक्त छे. तेवानी (दुर्दशा विचारी) तेनी संगति न करतो, अने तेवा पापमां पोताना आत्माने न जोडतो, अशुभ व्यापार छोडीने, मोक्ष मार्ग जाणनारो मुनि वने छे, लोकने उलटा मार्ग चालेला जोइने पोते शुं करे ? ते कहे छे.

पूर्वे कहेला अशुभ हेतुओथी जे कर्म बांध्युं छे तेना उपादान कारणो संपूर्ण इ परिज्ञावडे समजीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे सर्वथा छोडे, केवीरीते छोडे ते कहे छे. 'स' ते कर्म छोडनारो काय वाचा अने मन वडे जीवोनी हिंसा न करे, न मरावे, मारताने भळो न जाणे, वळी पापोना उपादानमां पर्वतेता पोताना आत्माने रोके, अथवा सत्तर प्रकारना संयममां आत्माने जोडे, अथवा आ चार

संपूर्ण पाठना संयम माफक पोते आचरण करे, वकी 'नो पगल्भइ' एटले असंयम कर्ममां (पापना उदयथी) पवर्त्ततो छतां पगल्भता (शुद्धपणुं) न करे, पापना उदयथी छानुं कुकर्म करे तो पण लज्जायमान थाय, (पश्चात्ताप करे) पण शुद्धता न करे (के एमां शुं पाप छे ?) वकी, आ वताववाथी एम सूचव्युं के मोक्ष मार्ग जणेलो मुनि क्रोध न करे, न जाति विगोरेनो अहंकार करे, न कपट करे, न लोभ करे शुं आलंबीने आ करे ? ते कहे छे. 'उत्प्रेक्षमाणः' वधां प्राणीना मनने पोताहुं अनुकुळ ते साता (सुख) छे, पण बीजाना सुख वडे पोते सुखी नथी, तेम पारकाना दुःखे दुःखी नही, तेहुं जाणीने पोते हिंसा न करे, दरेक प्राणीना सुखने विचारतो मुनि शुं करे ? ते कहे छे, जेनावडे प्रशंसा थाय ते वर्णा (कीर्ति) छे. तेनो अभिलाषी वनीने वधा लोकमां कोइपण जातनो पापारंभ न करे. अथवा तपसंयम विगोरेनो आरंभ पण यशकीर्ति माटे करे नही, पण प्रवचन (जैनशासन)नी प्रभावना माटे करे, तेवा प्रभावको नीचे मुजव छे:—

प्रावचनी धर्मकथी वादी नैमित्तिकरतपरवी च । विद्यारिद्धः ख्यातः कविरपि चोद्भाक्का स्त्वष्टौ ॥१॥

सिद्धांत भणेलो, धर्म कथा कहेनार, वादी (न्यायनो अभ्यासी) ज्योत्सी (जोशी) तपश्चर्या करनार, विद्या (चमत्कारवाळो) सिद्ध मंत्रवाळो. कवि ए आठ धर्मना प्रभावको छे. अथवा वर्ण ते रूप, तेनो अभिलाषी न वने एटले सुंधी तेल विगोरे नलगाडे, केवो वनीने आ सदाचार पाळे? 'एको'—वधां मलकलंक दूर थवाथी एक ते मोक्ष छे, अथवा रागद्वेषना रहितपणाथी एक ते संयम छे. तेमां जेतुं सुख गण्डं छे, तथा मोक्ष अथवा तेना उपायमां एक दृष्टि (लक्ष्य) राखीने कंइपण पापारंभ न करे, वकी मोक्ष तथा

संयम तरफ छे. ते दिशा, अने ते सिवायनी बीजी विदिशा छे, तेमांथी प्रकर्ष तरेलो ते विदीक्र पतीर्ण छे, अने एवो होय ते आरंभ रहित बने, कुमार्गानो परित्याग करवाथी ते पापारंभनो अन्वेषी न होय, कली चरण ते चार छे, अने ते अनुष्ठान छे. निर्विण्णनुं अनुष्ठान करे ते निर्विण्णचारी छे, कथांथी होय ? ते कहे छे. 'प्रजास्वरतः' वारंवार जन्मे ते प्रजा (प्राणीओ) तेमां अरत होय, एटले तेना आरंभथी निवृत्त होय, अथवा ममत्व विनानो होय, अने शरीर विगोरेमां पण जे ममत्व रहित होय ते निर्विण्णचारीज होय छे, अथवा प्रजा (स्त्रीओ) तेमां अरक्त होय ते आरंभमां पण निर्वेद (मोहरहित) होय, कारणके कारणना अभावमां कार्यनो पण अभावज होय छे, अने जे प्रजामां अरक्त अने आरंभरहित छे, ते केवो होय ? ते कहे छे:—

से वसुमं सवसमज्ञागयपद्मार्णेणं अरपाणेणं अकरणिजं पावकममं तं नो अन्नेसी, जं संमंति
 पासहा तं मोणंति पासहा जं मोणंति पासहा तं संमंति पासहा, न इमं सकं सिद्धिलेहि
 अद्विजमाणेहि गुणासाष्टिं वंकसमायारेहि पमत्तेहि गारमावसंतेहि, मुणी मोणं समायाष्ट
 धुणे शरीरं, पंतं ल्हं सेवंति बीरा समसत्तदंसिणो, एस ओहंतरे मुणी, तिणो मुत्ते विरष्ट
 विथाहिष्ट त्तिवेमि ॥ सू० १५५ ॥ लोकसारतृतीयोद्देशकः ॥ ५-३ ॥

वसु ते द्रव्य छे, अने अहीं तेनो अर्थ संयम छे, ते जेने होय ते निवृत्तारंभवालो छे. अने ते मुनि वसुवालो छे, तथा जे

આત્માને સર્વ સમ્યક્પ્રકારે આવેહું [મહેહું] પ્રજ્ઞાન તે વધા પદાર્થોનો પ્રકાશ કરનારું છે, તેવા આત્માવદે (પદાર્થોનું પુરું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરેલાં) જે પાપકૃત્યો કરવા યોગ્ય નથી તે પોતે કદીપણ કરવાને ઇચ્છતો નથી, અર્થાત્ પોતે પરમાર્થને જાળેહો હોવાથી પોતે સાવધા અનુષ્ઠાન કરતો નથી, જે સમ્યક્ પ્રજ્ઞાન છે, આ જાગત પ્રત્યાગત સૂત્રવદેજ વતાવે છે. સમ્યક્ પૃદલે સમ્યક્જ્ઞાન અથવા સમ્યક્ત્વ છે. તેની સાથે ચારિત્ર છે, આ વર્તેનું સહભાવપણું હોવાથી એકનું પ્રહણ કરવાથી વીજું પણ પ્રહણ કરેહું જાણવું, એ ન્યાય છે, જે આ સમ્યક્જ્ઞાન અથવા સમ્યક્ત્વ છે. તે [હે શિષ્યો] તમે જુઓ કે મુનિનો ભાવ તે મૌન છે, પૃદલે સંયમ અનુષ્ઠાન તે મૌન છે. તેને જુઓ, તથા જે મૌન છે, તે સમ્યક્જ્ઞાન અથવા નિશ્ચય સમ્યક્ત્વ છે. તે તમે જુઓ, કારણકે જ્ઞાનનું ફલ વિરતિ છે. તથા જ્ઞાન છે તે સમ્યક્ત્વને પ્રકટ કરવાપણે છે. તેથી તે સમ્યક્ત્વજ્ઞાન ચરણ ત્રણેની એકતા જાણવી, અને આ જેવા તેવાથી પાલવું શક્ય નથી, માટે કહે છે કે આ સમ્યક્ત્વ વિગેરે ત્રણ સારીરીતે કરવાં તેને શક્ય નથી તે કોને ? ત્રિથિલ પુરુષો જેઓ અલ્પ પરિણામપણે મંદ વીર્યવાલા છે, તથા જેમનાંમાં સંયમ તપની ધીરજ તથા દૃઢપણું નથી તેમને સંયમ પાલવો અશક્ય છે, વહી [આદિ:] પુત્ર કલત્ર વિગેરેના પ્રેમથી જેમનું હૃદય મીંજાયહું છે, તેમને પણ સંયમ દુષ્કર છે, તથા જેમને ગુણો તે શબ્દ વિગેરેનો આસ્વાદ છે, તેમને સંયમ અશક્ય છે, વહી વક્ત્ર સમાચારવાલા (કપટી) ઓને અશક્ય છે, તથા વિષય કપાય વિગેરેથી પ્રમાદી છે તથાજેઓને ધર ઉપર મમલ છે. તે અગર સેવનારા (પ્રત્યક્ષી વનેહા) ને પાપ વર્જનરૂપ સંયમ (મૌન) અનુષ્ઠાન કરવું અશક્ય છે, [સૂત્રમાં અનો હેપ થવાથી ગાર છે. પણ અગાર હેવું.] પ્ર:—ત્યારે કેવી રીતે શક્ય થાય? મુનિ તે ત્રણ જગત્ને માનનારો, તેનું મૌન તે મુનિપણું (વધાં પાપકર્મ ત્યાગવારૂપ) છે. તે પ્રહણ કરીને ઔદારિક શરીર અથવા કર્મ શરીર દૂર કરે, તે ધૂનન (દૂર કરવું) કેવી રીતે થાય ? તે કહે છે. માન્તવાસી અથવા

વાલ ચળાદિ અથવા અલ્પ આહાર છે, તે પળ વિગદ્ રહિત હુંવો છે, આર્વો આહાર કોણ છે? વીર પુરુષો કર્મ વિદારણ કરવાને સમર્થ હોય તેવા, વઠી તે કેવા છે? સમ્યક્સ્વદર્શિઓ અથવા સમત્વદર્શિઓ છે, અને જે તુચ્છ હુંવો આહાર સ્વાનારો છે, તેને શું ગુણ થાય તે કહે છે કે, ઉપર વતાવેલ ઉત્તમ ગુણવાલો માર્વૌષ (સંસાર) ને તરે છે, કોણ તરે? મુનિ હોય તે, (અને તેવા ગુણ ધારણ કરાવથી) દમ્પણાજ વર્તમાનકાલમાં તીર્ણ (તર્પાં જેવો) જ છે, અને તે વાહ અખ્યંતર સંગના અમાવથી મુક્ત જેવો જ છે. મઃ—આર્વો કોણ છે? ઉઃ—જે સાવચ અહુષ્ઠાનથી વિરત હોય તે. આ પ્રમાણે વતાલ્યો સુધર્માસ્વામી કહે છે કે મં ઇમ મગવાન મહાવીર પાસે સાંખલ્યું તે તમને કહું.

॥ લોકસારઅધ્યયનમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત થયો ॥



ત્રીજો ઉદ્દેશો.

હવે ત્રીજો ઉદ્દેશો કહે છે, તેનો સંવન્ધ આ પ્રમાણે છે, પહેલા ઉદ્દેશામાં હિંસા કરનાર વિષયારંમ કરનાર ઇકલવિહારી હોય તો પળ તેને મુનિત્વનો અમાવ વતાલ્યો, પળ વીજા અને ત્રીજામાં તો હિંસા અને વિષયારંમ તથા પરિગ્રહ હોડવાવડે સાધુપણું છે, તથા હિંસા કરનાર પરિગ્રહધારીના દોષો વતાલ્યા. અને તેનાથી વિરત (મુક્ત) હોય તેજ મુનિ છે, ઇમ વતાલ્યું. અને આ ત્રીજા ઉદ્દેશામાં ઇકલા ફરનારાને મુનિપણાનો અમાવ છે, તેથી તેનો દોષો વતાવવાવડે કારણો કહે છે. આ પ્રમાણે સંવન્ધથી આવેલા ત્રીજા ઉદ્દેશાનું આ પહેલું સૂત્ર છે:—

गामाणुगामं इहजमाणसस दुजायं दुष्परकृतं भवइ, अविपत्तसस भिक्खुणो ॥ सू० १५६ ॥

बुद्धि विभेरे गुणोन्नो ग्रास करे (नाश करे) ते ग्राम छे. एक गामथी बीजे गाम जवुं ते ग्रामानुग्राम छे, दूयमान ते विचरतो (धा-
तुना अनेकअर्थ छे) अर्थात् गाम गाम जे साधु तेने केवो दोष लागे ते कहे छे, दुष्ट गमन ते दुर्यात् छे एटले एकलो विचरे तो निनीदय
छे, तेने अनुकूल पतिकूल उपसर्गना कारणे कांतो अरणीक मुनि माफक ते गृहस्थ वनी जाय, तथा गतिमां भेद करवार्थो दुष्ट व्यंत-
रीनी जंघा छेदवा माफक (पतिकूल उपसर्गमां चारित्रथी अश्रद्धावाळो) थाय, एटले एकलविहारीने गमन करतां उपसर्गो दोष लागे छे,
तथादुष्ट पराक्रांत एटले एकलो साधु जे सकानमां रहे, तेने चारित्रभ्रष्ट थवाहुं कारण थाय छे. जेमके स्थूलभद्रनी इर्पां करनार कोइया
वेइयाने वेर चोमासुं करवा जनार सिंह गुफावासी मुनिने पतित थवा वखत आव्यो, अथवा चतुष्प्रीणित भर्तुकाना वेर रहेला मुनिने
पोते महासत्त्ववान होवाथी अक्षोभ होवा छलां पण दुष्पराक्रांत थयुं, पण ए पमाणे वधाने दुर्यात् दुष्पराक्रांत थतुं नथी, ते वता-
ववा विशेष खुलासो करे छे, के अव्यक्त (भिक्षा लेनार ते) भिक्षुने ते दोष लागे छे, ते अव्यक्त श्रुत अने वयथी थाय छे. ते वतावे
छे, श्रुति अव्यक्त ते आचार प्रकल्प (ब्रह्म कल्प) अर्थी न भण्यो होय, आ स्थविरकल्पीने आश्रयी छे, पण गच्छथी निकळेला
जिनकल्पीने नवमा पूर्वनी बीजी वस्तु सुधीनुं ज्ञान जोइए. अने वयथी अव्यक्त ते गच्छमां रहेलाने १६ वर्ष अने जिनकल्पीने ३०
वर्षनी उमर जोइए, अहीं चोभंगी थाय छे.

[१] जे श्रुत तथा वयथी अव्यक्त (अपूर्ण) छे तेने एकलविहार न कल्पे, कारण के तेने संयम तथा आत्मा (पोता)नी

विराधनानो संभव छे.

[२] श्रुतथी अव्यक्त पण वयथी व्यक्त छे, तेने पण अगीतार्थपणाथी संयम तथा आत्म विराधनानो संभव होवाथी एकल विहारनो निषेध छे.

[३] तथा श्रुतथी व्यक्त पण वयथी अव्यक्त होय तेने पण वाळकपणाथी सर्व प्रकारे पर भवना कारणे अने विशेषथी चोर तथा कुलिगि (अन्य दर्शनी वावा विगेरे) नो भय छे, तेथी तेने पण एकलविहार न कल्पे.

[४] पण जे वने प्रकारे व्यक्त छे, तेने कारण पढे अथवा प्रतिमा स्वीकारी होय, अथवा (उचित सोवतीना अभावे) एकल-विहार करवो पढे तो करे, आवाने पण कारणना अभावमां एकलविहारनी आज्ञा आपी नथी. कारण के ते एकलविहारमां इर्था समिति तथा गुप्ति विगेरेमां घणा दोषो थाय छे, ते वतावे छे.

[१] एकलो भयतां जे इर्थापथ (मार्ग) जोतो चाछे, तेने पलवाडे कूतरा विगेरेनुं देखवुं वनी शके नहीं, अने कूतरा विगेरेने देखवा जाय तो इर्था पथनुं भान न रहे, ए प्रमाणे वथी समितिओनुं जाणी छेवुं, वकी अजीर्णना कारणे अथवा वायुना रोकवाथी अथवा रोगो उत्पन्न थतां संयम तथा आत्मानी विराधना थाय. तेथी जैन शासननी पण हीलना थाय, तथा तेना उपर द्या ज़ावीने गृहस्थो तेनी चाकरी करे, तो अज्ञानपणाथी छकायनुं उपमर्दन करतां संयमने वाधा उपजावरो, अने तेवो दयाळु गृहस्थ न मळे तो दवा न करवाथी ते साधुनी आत्मविराधना थाय, तथा अतिसार (झाडा) विगेरेमां पेशाव झाडा, विगेरेथी कपडां तथा शरीर खर-डाह जवाथी दुगंच्छा आवतां लोको जैन धर्मनी हीलना [निंदा] करे, वकी गामडा विगेरेमां रहेतां ब्राह्मण विगेरे केश लुंचन विगेरेथी

अधिक्षेप [तिरस्कार] करतां परस्पर विवाद यतां मारामारीनो पण वखत आवे, आ वयुं गच्छमां रहेलां संमुदायमां विचरतां न संभव, कारण के क्रोध विगेरे यतां गुरु उपदेश आपी वनेने शांत राखे. कहुं छे छे—

अक्रोसहणमारणधम्मढभंसाण बालसुलभाणं । लाभं मणणइ धीरो, जहत्तराणं अभावंमि ॥ १ ॥

आक्रोश वध मार धर्म अंश विगेरे बालकोने सुलभ छे, आटहुं छतां उत्तरना दोषोना अभावे धीर माणस तेमां लाभ माने छे, अर्थात् समुदायमां रहेनारो कोइथी लडे तो गुरु उपदेश आपे के आ मार विगेरेहुं दुःख पण सारं छे. कारण के पाछ्कथी दुर्गतिनो संभव नथी पण जे संघाडायथी जुदो पडी एकलो विचरतो होय तेने फक्त दोषोनीज संभव छे

साहंमिण्हिं संमुजण्हिं एगागिओ अ जो विहरे । आयंक पउरयाए लक्काय वहंमि आवडइ ॥ १ ॥

पोताना समुदायना साधु योग्य विहार करता होय, तेमने छोडीने जे एकलो विचरे, तेने रोगोनो वधारो यतां छकायना वधमां

ते पडे छे, (दोषो लगाडे छे)

एगागिअस्स दोरसा इरथी साणे. तहेव पडिणीए । भिक्खवउवसोहि महव्वय तम्हा सविइज्जए गमणं ॥ २ ॥

एकला फरनाराने स्त्री कृतरो तथा; पत्न्यनीकथी दुःख यथा संभव छे, तथा गोचरीनी अशुद्धि तथा महाव्रतमां पण दोषो लागे माटे बीजा साधु सहित विचरहुं, पण गच्छमां रहेनाराने तो घणा गुणो थाय छे, तेनी निश्चाए बीजा बाल वृद्ध वगेरेने उद्यत विदारनो स्वीकार थाय, कारणके पोते तरनामां समर्थ होय, ते बीजा अशक्त हुवतो कोइ लाकडाने बळगेलो होय, तेने पण पोते तारे

हे, आ प्रमाणे गच्छमां पण योग्य विहार करनारो वीजा सीदाता (वेसी रहेला) ने विहार करावे छे, आ प्रमाणे एकला विचरताना दोषोने जाणीने तथा गच्छमां विचरताना गुणो जाणीने कारणना अभावमां पंडित अने उम्परलायक साधुए पण एकलविहार न करवो, तो अगितार्थ अने नावी उमरवालाए तो क्यथी एकल विहार करवो ?

शङ्का—जेतो संभव होय तेनो प्रतिषेध थाय, पण एकाकी विहारनो संभव नथी कारण के क्यो सूर्ख साधु सोवतीओने छोडीने वथा दुःखोहुं स्थान एवो एकल विहार पसंद करे !

उत्तरः—कर्मपरिणतिने कंइपण अशक्य नथी; ते वतावे छे.

स्वतंत्रता जे रोगरूप छे, तेने औषधतुल्य माननाराने वथां दुःखोना प्रवाहमां तणाताने वचवा माटे सेतु [पूल] समान संपूर्ण कल्याणतुं एकस्थानरूप—शुभ आचारना आधाररूप—गच्छमां रहेनारा साधुने प्रमादर्थी भूल थलां तेने ठपको अपाय; त्यारे, ते साधु मदुपदेशने न गणतां सारा धर्मने विचार्या विना कपाय—विपाकनी कडवाशनने दीलमां न लेतां परमार्थने विचार्या विना कुल पुत्रता (खानदानी) पडवाडे सूकी वचन मात्रथी पण कोइने ठपको आपतां सुखना वांछको वनवा माटे न गणाय एदली आपदावाळा थवा माटे गच्छपंथी नीकळी जाय छे, अने पड्डी तेओ आ लोक तथा परलोकना अपायो (दुःखोने) मेळवे छे. कहूं छेः—

जह् सायरमि मीणा, संखोहं सायरस असहंता । णिंति तओ सुकामी निग्गमिन्ता विणरसंति ॥१॥

जेम सागस्मां रहेलां माछलां समुद्रनो क्षोभ न सहन करीने सुख मेळववा बहार जलां नाश पासे छे, तेज प्रमाणे सुखाभिलाषी

साधु एकलो पडतां नाश पामे छे, ते नीचली गाथापां वतावे छे.

एवं गच्छसमुद्दे सारणविद्दीहिं चोर्दया संतां । णिति तओ सुहकामी, मीणा व जहा विणस्संति ॥१॥

गच्छ समुद्रमां रहेता साधुने प्रमादथी भूळतां प्रेरण करतां पोते कंटाली नीकळी जाय; तो, ते सुखना वांच्छक माळला माफक नाश पामे छे.

गच्छंमि केइ पुरिसा सउणी जह पंजरंतरणीरुद्धा । सारणवारणचोइय पासरथगया परिहरंति ॥३॥

शकुनी पक्षीने जो. पांजरापां पूरेळ होय; तो, जीवहिंसा विगेरे न करी शकै. तेज प्रमाणे सारण (दोषने याद कराववा) वारण (पापथी अटकाववा) अने धर्मपां प्रमाद करवाने प्रेरणा करवाथी पासरथा (ढीळापणाने) पाभ्या होय; छतां पण गच्छमां रहेला साधुओ पाळा सुधरी जाय छे.

जहादियापोयमपकरव जायं, सचासया पविउमणं मणानं तमचाइया तरुणमपत्तजायं

ढंक्लादि अवत्तगामं हरेजा ॥ ४ ॥

जेम पक्षीतुं वच्चुं पांखो विनातुं पोताना माळापांथी नीकळवानी इच्छा करे; त्यारे, पांखोना जोर विनातुं ते वच्चुं आप तेम कुदका मारतां तेने मोर विगेरे उपाडी जाय छे. उपर प्रमाणे सिद्धांत पूरा भण्या विना, अने लायक उप्पर विना गुरुए टपको आपतां जे समूदाइथी सीसाइ नीकळी जाय; ते तीर्थीक ध्वांश विगेरेथो अष्ट याय छे ते शाल्शकार वतावे छे:—

वयसाच्चि एषो बुद्ध्या कुप्यंति माणवा, उन्नयमाणेष नरे महया मोहेण मुञ्जइ; संवाहा बहवे-
भुजो ३ दुरइक्कमा अजाणओ अपासओ, एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं तद्धिटीए
तश्सुत्तीए तप्पुरक्कारे तस्सन्नी तद्धिवेसणे जयं विहारी चिस निवाई पंथनिज्जाई पलि बाहिरे,
पासिष पाणे गच्छिज्जा ॥ सू० १५७ ॥

कोह बरवत तप संयमनां अनुष्ठान विगोरेमां खेद आवतां; अथवा, प्रमादशी भूलतां गुरु विगोरेए धर्मना कारणे वचनशी पण
उपको आपतां परमार्थने नहीं जाणनार केदलाक साधुओ क्रोधायमानथाय छे, अने बोले छे के, “आ गुरुए मने आटलावथा साधुओ
वच्चे उपको आप्यो, में भुं गुनोह कर्यो हतो? अथवा, आ वीजा पण तेवी भूल करनारा छे. मने पण एदलोअ अधिकार छे. तेशी
मारा जीवितने पण धिकार हो! विगोरे विचारतां महामोहना उदयवडे क्रोधरूप—अंधारावडे दंकायली चक्षुवाळा तेओ साधुनो
(शांतिरूप)—समुचित आचार छोडीने वने प्रकारे ज्ञानशी तथा, वयशी अशक्त बनेला जेम, समुद्रमांथी बहार जतां माछछुं नाश पाये;
तेम गच्छमांथी नीकलीने तेओ एकला फरतां धर्मभ्रष्ट थाय छे, अथवा कोह माणस वचनशी एम कहे के:—

“आ माथामां लोच करावेला मेलशी शरीर गंथातावाळा मगत अवसरे (दहाडो चढेज) आपणे देखवा. (अर्थात् अम अपशुक्रन
थया के सामा मळ्या.) आवुं बोलतांज केदलाक साधु. क्रोधशी अंधा बनी जाय छे, अथवा कोहनो स्पर्श थाय; तोपण, कोपायमान

थइ जाय छे, अने कोपायमान थइ बीजा साथे लडे; तेथी एवा अनेक दोषो जे गुरुथी जुदा पड्या होय; सिद्धांतनो परमार्थ न जाण्यो होय; तो तेने रक्षकना अभावे दोषो थाय; पण, गुरु साथे होय; तो, लडनारने उपदेश आपे के:—

आक्रुष्टेन मतिमता तत्त्वार्थान्वेषणे मतिः कार्या । यदि सरयं कः कोपः ? स्यादनुतं किं नु कोपेन ॥१॥

बुद्धिमान पुरुषे क्रोध करतां विचार करवो: अने तत्त्व शोधवामां बुद्धि जोडवी. जो, ते कहेनारनुं बोलवुं सत्य होय; तो, कोप केम करवो ? अने तेनुं बोलवुं जूहुं होय; तो, तारे कोप थुं काम करवो ? (कारणके के ते तने लागतुं नथी.)

अपकारिणि कोपश्चेत्, कोपे कोपः कथं न ते ! धमार्थकाममोक्षाणां प्रसह्य परिपान्थिनि ॥ २ ॥

जो तारे बगाहनार उपरज कोप करवो होय, तो ते कोप उपरज तारो कोप केम थतो नथी कारण के धर्म अर्थ काम अने मोक्ष आ चारेने अतियाय विघ्नकारक आ कोप छे, (कोपवालो माणस चारेने भूली जाय, अने अनर्थ करे छे) विगेरे प्रश्न:—क्या कारणे वचनथी पण टपको आपतां आ लोक अने परलोकनुं बगाहनार स्वपरने बाधा करनार क्रोधने लोको पकडी राखे छे ? उ:—जेने उन्नत (घणुं) मान छे, अथवा जे पोताना आत्माने उंचो पाने छे, तेवो माणस प्रबल मोहनीय कर्मना उदयथी अथवा अज्ञानना उदयथी भुंझाय छे एटले कार्य अकार्यना विचारना विवेकथी शून्य थाय छे, तेवा भुंझायलाने कोइए शीवामण आपवा कांड कहुं होय, अथवा मिथ्यात्वीए चाणीथी तिरस्कार कर्षो होय त्यारे, पोते जाति विगेरे कोइपण जातनो मद उत्पन्न थतां मानरूप मेरुपर्वत उपर चढीने कोपायमान थाय छे, के हुं आवो ! तेनो पण आ तिरस्कार करे छे, थिकार छे मासी उंच जातिने ! थिकर छे मारा पुरुषार्थने !

धिक्र छे मारा ज्ञानने ! आं प्रमाणे अभिमानग्रहणी बेरायेलो वचनना ठपका मात्रथी पण गच्छमांथी नीकळी जाय छे, अथवा नीकळ्या पळी बीजा साथे कलेश करवाथो विटंबना पामे छे अथवा कोइ ओळी बुद्धिवाळा मनुष्ये तेने फुलाव्यो होय के आ उत्तम कूळमां उत्पन्न थएलो, सुंदर चेहरावाळो, तीक्ष्ण बुद्धिवाळो कोमळ वचनवाळो वधां शाल्व जाणनारो भाग्यशाली सुखथी सेववा योग्य छे, एवां साचां जूठां वचन सांभळीने उंचे चढावेलो अहंकारी वनीने महान चारित्रमोहथी अथवा संसारना मोहथी भुंझाय छे, अने ते अहंकारथी महामोहे भुंझायेलाने कोइ वचनथी पण जरा ठपको आपे, तो गच्छमांथी नीकळी जतां ओहुं भणवाथी गाम गाम विचरतां भुं दुःख थाय ते कहे छे, ते ओहुं भणेलाने एकला फरतां उपसर्ग संबन्धी पीडा थाय, अथवा जुदा जुदा रोगो संबन्धी पीडा वारंवार थाय ते पीडाओने एकला विचरता साधुने शाल्वोने न जाणवाथी निरवद्य विधिए दूर करवी सुखकेल छे, केवा साधुने सुखकेल छे ? ते कहे छे ते जुदी जुदी रीते आवेली पीडाओ सारी रीते सहेवानो उपाय न जाणवाथी, तथा सारीरीते सहेवातुं फळ न जाणतो होवाथी तेने ते पीडा सहेवी सुखकेल छे, पळी आतंक पीडाथी पीडाइ आकूळ वनेलो एषणाशुद्धिने पण त्यजी दे, प्राणीने थतुं दुःख पण विसरी जाय वाक् (वचन) रूप कंडकथी पेरायलो अंदर पण क्रोध करीने वळे पण आवी उत्तम भावना न भावे के, आ पीडाओ मारा कर्मना विपाको उदयमां आत्माथी थइ छे पण, बीजां प्राणीतो, तेमां निमित्त मात्र छे. वळी

आरसद्रोहममर्यादं मूढमुद्घितसरपथम् । सुतरामनुकरूपेत, नरकाच्चैरमदिन्धनम् ॥ १ ॥

आत्माने द्रोह करनार जे अमर्यादा छे, ते मूढ माणसने सुमार्गोथी यसडीने नरकनी अग्निरूप-उवाळांमां इधन तरीके नांखे. (अर्थात् मर्यादा छोडीने बहार नीकळे; ते नरकनां जेवां दुःखो अहीं अने परलोकमां वन्ने जग्याए भोगवे)

आची उत्तम भावनाओ आगमने न भणवाथी आपरिमलित मतिवाळाने होती नथी. आ वतावीने गुरुमहाराज शिष्योने कहे छे के:—आ एकला फरनाराने बाधा दूर करवी मुश्केल होवाथी अजाणपणाथी पीडा देखवा विना मारा उपदेशथी तुं बहार न जतो पण आगमने अनुसरी सदा आपणा गळ्ळमां रहेनारो बन, सुधर्मास्त्राभि कहे छे:—आ अभिप्राय कुशल एवा वर्धमानस्वामीनो छे, के जेम, एकला भटकनाराने दोपो छे, तेम आचार्य पासे हमेशां रहेनाराने गुणो छे. हवे, आचार्यना सभिपसां रहे; तेणे शुं करवुं ते कहे छे:—ते आचार्य महाराजनी दृष्टि जेमां होय; ते प्रमाणे हेय उपादेय पदार्थोमां वर्तवुं; (जेम कहे तेम करवुं;) अथवा संयममां दृष्टि ते 'तदृष्टि' अथवा तेज आगमज दृष्टि एटले आगममां वताव्या प्रमाणे सर्व व्यवहार करवो; एटले, आगममां वताव्या प्रमाणे सर्वसंगथी विरति करी (ममत्व-त्यागी) ने संयमकृत्य करवां; तथा गुरस्करने सर्वत्र आगळ स्थापवो; अने ते प्रमाणे आचार्य संबन्धी वर्तवुं; तथा आचार्यनी संज्ञा प्रमाणे आचरवुं. अर्थात् तेमनुं कहेछुं ध्यानमां लइ पळी ते प्रमाणे वर्तवुं; पण पोतानी मतिकल्पनाथी कंइ पण कार्य न करे; तथा गुरुनुं निवेदान ते पोतानुं करे; एटले सदा गुरुकुल-वास सेवे; त्यां गुरुकुलमां वसतो केवो थाय ? ने कहे छे. यतनाथी विहार करनारो थाय; यतनाथी पळेदृणा डिकरतो प्राणीने उपमर्दन न करे वळी, आचार्यना चित्त (अभिप्राय) प्रमाणे क्रियामां पर्वते; ते. चित्तनिपाती कहेवाय छे, तथा गुरु कोइ जभ्याए गया होय तो, ते तरफ ध्यान राखे; ते पंथ निध्यायी कहेवाय; तथा गुरुना संथारानो देखनार ते संस्कारक पळोकी. अने गुरु श्रुंत्या होय; तो आहार शोधे; ते विगेरे दरेक रीते गुरुनी आराधना करवाथी सदा गुरुनो आराधक बने. वळी, दरेक वखते गुरुनो अवग्रह कार्यप्रसंग सिवाय आगळपाळळ साचवे, (कार्य-प्रसंगे अवग्रहमां जाय, नहि तो साङ्गत्रण हाथनी अंदर न जाय,) आ सूत्रथी त्रण इयां उद्देशकमां रही छे. (तेमां इयांसमितिनुं

वर्णन हे,) वळी कोइ पण कार्यमां गुरए मोकलयो होय, तो . प्राणीओने साडात्रण हाथनी जग्यामां शोधतो तेने दुःख न थाय, तेम यतनाथी चाले वक्रीः—

आचा०

॥६००॥

से अभिक्रममाणे पडिक्रममाणे संकुचमाणे पसरमाणे विणिवट्टमाणे संपलिजमाणे एगया गुण-
समिथरस रीथओ काथसंफासं समणुचिन्ना एगतिथा पाणा उदायंति, इहलोगवेयणविजावडिंयं,
जं आउट्टिकयं कंसं तं परिन्नाय विवेगमेइ, एवं से अप्पमाएण विवेगं किट्टइ वेयवी ॥ सू० १५८ ॥

ते साधु सदा गुरुनी आज्ञा प्रमाणे चालनारो होय छे, ते अभिक्रम जतो के पाछो फरतो, के हाथ पगने संकोचतो; हाथ विगेरे अवयवने पसारतो, बधा अशुभ वेपारथी पाछो हटतो, होय त्यारे वरोवर रीते बधी बाजुए हाथ पग विगेरे शरीरता अवयवोने तथा तेना स्थानोने रजोहरण विगेरेथी पूंजीने गुरुकुलवासमां वसे, त्यां रहनारनी विधि कहे छे. जमीन उपर एक उरु (जांघ) स्थापीने बीजो उंचो राखीने बेसे, निश्चळ स्थाने तेम न बेसाय तो भूमि देखीने पूंजीने कुकडीना बेसवा प्रमाणे संकोचे, अथवा जरूर पडे लांबा पहीळा पण करे सुवुं होय; तो पण मोरनी माफक सुवे. कारणके ते मोरने बीजा प्रणीनो भय होवाथी एक पासे सुवे, तथा हमेशां सचेतन सुवे, तेज प्रमाणे साधुने पासुं केरवुं होय तो पण देखीने पूंजीने केरवे एज प्रमाणे बधी क्रियाओ पुंजी प्रमाजीने यतनाथी करे; आ प्रमाणे अपमादीपणे क्रिया करतां छतां अवश्य वनवाकालने लीधे शुं थाय, ते कहे छे, कदाच ते गुणयुक्त साधुने अपमत्तपणे बधा अनुष्ठान करवा छतां, जतां आवतां संकोचतां पसारतां पाछा

सुत्रम्

॥६००॥

फरतां प्रमार्जन करतां कोइपण अवस्थायां पोतानी कायाना समागमयां आवेला संपातिम (उडता) केटलाक जंतुओ परिताप पासे, केटलाक जलानी पासे, कोइनो अवयव नाश पासे, अने अंतअवस्था तो सूत्रकारज बतावे छे के, केटलाक प्राणथी पण दूर थाय छे, आयां कर्म संबन्धी विचित्रता छे, शैलेथी अवस्थायां रहेला साधुने मशक विगोरेना कायनो स्पर्श थतां कोइ जंतु मरण पासे, तो पण बन्धना उपादान कारण योगना अभावथी बन्ध नथी. उपशांत तथा क्षीणमोह तथा संयोगी केवलिनै स्थिति निमित्त 'कषायो' ना अभावथी एक समयनोज बन्ध छे. अप्रपत्त साधुने जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी कोडाकोडी सागरापमनी अंदरनो बन्ध छे, पण प्रपत्त साधुने अनाकुटीना कारणे तथा विना देखे वर्तन करवाथी कोइ प्राणीनो पोताना पण विगोरेथी स्पर्श थतां तेने उपापना विगोरे थतां जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी अप्रपत्त माफक छे, पण प्रमादना कारणे काइक विशेष बन्ध छे. अने ते तेज भवे क्षेपाय (दूर थइ शकै) छे, ते सूत्र वडेज बतावे छे. आ जन्ममांज भोगवहुं, ते आलोकवेदन छे, तेनावडे भोगवहुं ते आलोकवेदनवेद्य छे, तेथी आवी पडेहुं वे आलोकवेदनवेद्य आपतित छे, तेनो भावार्थ आ छे, प्रपत्त यतिए पण जे विना इच्छाए भूल करी ते कायना संघटन विगोरेथी कर्म बन्ध थयो, ते आ भवना अनुबन्धरूपे छे, ते भवे खेरवी शकाय तेम छे, आकुटीथी करेला कुल्यमां शुं करवुं ते कहे छे, आगमयां कहेल कारणे विना (फक्त सुलथी) प्राणीने दुःख दीधुं होय, तो न परिज्ञाए जाणीने विवेक करवा, प्रायश्चित लेवुं, ते दश प्रकारहुं छे, (ते गुरु पासे लेवुं) अथवा तेनो अभाव करे, अर्थात् एवुं कुल्य करे के तेनो अभाव थाय, कर्मनो जेम अभाव थाय, ते बतावे छे, 'एवं'—हवे बतावे ते उपाय प्रमाणे ते क्रोधादिथी करेला कुल्यना विवेक माटे वेदविद् (ज्ञाता) साधु प्रमादने दूर करी दश प्रकारमांथी कोइ पण प्रकारहुं जे योग्य होय, ते सम्यग् अनुष्ठानवडे करीने अभाव करे अथवा तीर्थकर

तेज वेदविद् छे अथवा आगम जाणनारा गणधर चौद पूर्वी विगेरे मुनिओ अपमादवहे शीघ्र अभाव करे छे. हवे अपमादी केवी रीतनो होय छे, ते कहे छे.

से पभूयदंसी पभूयपरिन्नाणे उवसंते समिष् सहिष् सयाजष्, दहुं विडिवेएइ अ-
 प्पाणं किमेस जणो करिस्सइ?, एस से परमारामो जाओ लोणंमि इत्थीओ, मुणिणा
 हु एयं पवेइयं, उब्बाहिज्जमाणे गामधम्मोहिं अवि निब्बलासए अवि ओमोयरिं
 कुजा अवि उहुं ठाणं ठाइजा अवि गामाणुगामं इइजिजा अवि आहारं बुच्छि-
 दिजा अवि चए इत्थीसु मणं, पुवं दंडा पच्छा फासा पुवं फासा पच्छा दंडा,
 इच्चेए कलहासंगकरा भवंति, पडिलेहाए आगमिन्ना आणविजा अणसेवणाए सि-
 वेमि, से नो काहिष् नो पासणिष् नो संपसारणिष् नो मामए णो कयकिरिष्
 वहगुत्ते अउझपसंबुडे परिवजइ सया पावं एयं मोणं समणुवासिजासिन्निवेमि
 (सू० १५९) ॥ ५-४ ॥ लोकसारं चतुर्थः ॥

ते साधु प्रमादना विषाक विगोरेनुं अथवा अतीत अनागत वर्तमानना कर्मविषाकनुं प्रभूत (घणुं रदस्य) देखवाना स्वभाववाळो होवाथी प्रभूतदर्शी कहेवाय छे, पण वर्तमानतो स्वार्थ देखीने कांइ पण न करे, तथा सत्व [जीव समूह] नुं रक्षण करवाना उपायमां घणुं ज्ञान धरावे, अथवा संसार भ्रमण तथा मोक्ष मेळववानां कारण घणी रीते जाणे, माटे 'प्रभूत परिज्ञानी' कहेवाय छे, अर्थात् संसारनुं जेवुं स्वरूप होय तेवुं वधा जीवोने वतावे छे, 'किंच-वकी कषायतो उदय न करे, तेथी अथवा इन्द्रिय अने मनने कवजापां राखवाथी 'उपशांत' छे, तथा पांच समितिवडे अथवा सम्यग् रीते मोक्षमार्ग तरफ चालवाथी समित छे. तथा ज्ञान विगोरेथी सहित छे, तथा सदा यत्न करवाथी सदायत छे, आ प्रमाणे अप्रपत्त बनीने गुरु सेवामां रहेतो, पोताना प्रमादथी पूर्व करेल्यां अशुभ कृत्योना अंत करे छे, ते साधु स्त्री विगोरेना अनुकूल परिषद आगतं शुं करे, ते कहे छे. 'दृष्ट्वा' स्त्रीओने पोताना आ-त्माने उपसर्ग करवाने आवती देखीने विचारे के, हुं सम्यग् दृष्टि छुं, तथा पांच महाव्रतनो भार में लीधो छे, शरद ऋतुना चंद्र समान निर्मळ कुलमां में जन्म लीधो छे. हुं अकार्य त्यजवा माटेज तैयार थयो छुं, ते स्त्रीसमूहने देखी विचारे, के आ स्त्रीओथी मारे शुं प्रयोजन छे ? में जीववानी आशा त्याग करी छे, आ लोकहुं सुख सर्वथा छोडुं छे, तेथी ते स्त्री मने शुं उपसर्ग करवानी छे ? माहं मन केम चलायमान करशे ? अथवा विषयोहुं सुख दुःख रुपे परिणमवाथी मने आ स्त्रीओ शुं सुख आपवानी छे ? अथवा पुत्र कलत्र विगोरे मने काळ झडपशे, अथवा रोगो पीडशे, त्यारे ते केवीरीते वचावी शकशे ? अथवा आ प्रमाणे स्त्रीओना स्वभावने चिंतवे ते सूत्रकारज वतावे छे. के आ स्त्रीसमूह रमणता करावे माटे आराम छे, तथा परम आराम होवाथी परमाराम छे, तेवुं सुख देवाडनारी स्त्री तत्व जाणनार ज्ञानी साधुने पण तेनाहास विलास उपांग तथा आंखना कटाक्ष देखडवा विगोरे विवोकवडे ते सुझवे छे, आ लोकमां

जे कोह स्त्रीसमूह छे तेने मोहरूप जाणीने तेओ पोते पुरुषने न त्यजे, ते पहेल्यां पोते त्यजवी, आ तीर्थकरे कहेछुं छे, ते वतावे छे, 'मुनिना' श्री वर्धमानस्यामने केवलज्ञान उत्पन्न भया पछी तेमणे कहुं छे केः—स्त्रीओ भाव बन्धनरूप छे' एवुं पूर्वे प्रकर्मथी कहुं छे, अने आ पण कहुं छे के अतिशय मोहना उदयथी पीडायलो ते 'उद्वाध्यमान' छे मः—शाथी? उः—इन्द्रियोना ग्राम एटले तेओ-ना धर्ममां फसतां पीडाय त्यारे गच्छमां रहेला होय तो गुरु समजावे. मः—केवी शीते? उः—ते कहे छे के तेवो साधु निर्वल निःसार एटले लुलवुं सुकुं खानारो वने, अथवा निर्वल वनीने खाय, अर्थात् घणी तपस्या करवाथी शरीर थाकतां इन्द्रियोना विषयो पण शांत थइ जाय छे, कारणके आहार ओछो लेवाथी बळ ओहुं थइ जाय छे, ते वतावे छे. अबमोदरी (ओहुं खावुं ते) करे, अने जो अंतर्पोत खाया छतां पण मोह शांत न थाय, तो तेथी पण अस्त्रिग्य आहार वाल चणा विगेरेना ३२ कोळीया मात्र खाय, तेथी पण शांत न थाय, तो कायोत्सर्ग विगेरे काय कलेजनो तप करे, ते वतावे छे. उर्ध्वस्थाने रहे तथा शीत अथवा उष्णता विगेरेमां (एटले ठंडमां नदी किनारे अने उनाळामां तपेली रेतीमां) काउसग करे, तेथी पण शांत न थाय, तो गाम गाम विचरे जो के कारण विना विहार निषेधो छे, छतां मोह शांत करवा रोज चाली चालीने काया थकवीने मोह दूर करे, एथी वथारे थुं कहे? अर्थात् जे कारणथी विषय इच्छा दूर थाय, तेवुं कृत्य करे अने डेवटे आहार पण त्याग करे, अतिपात करे (उंचेथी पढीने मरे) उद्वबन्धन करे (गळे फांसो खाय) पण स्त्रीमां मन न करे, (अपि समुच्चयना अर्थमां छे) स्त्रीमां जे मन गयुं, ते त्यजे, तेना परि-त्यागमां वे प्रकारना कामो (इच्छा काम मदन काम) पण दूरथी त्यजेला जाणवा. कहुं छे के—

काम जानामि ते रूपं, सकल्पात् किल जायसे । न त्वां संकल्पयिष्यामि, ततो मे न भविष्यसि ॥ ४ ॥

हे काम हूं तारुं स्वरूप जाणुं छुं, के तुं संकल्पथी उत्पन्न थाय छे पण हूं तारो संकल्प करवानो नथी, तेथी तुं मारा हृदयमां आववानो नथी !

प्रश्नः—पण या माटे स्त्रीमां मन न करवुं ? उः—स्त्रीसंघमां वर्तनारो अपरमार्थ दृष्टिवाळो प्रथमथीज ते स्त्रीनो संग न छोडवा पैसो पैदा करवा खेती वेपार विगोरेनी सावद्य क्रिया करतो अगणित (अत्यंत) भूख तरस टंड ताप विगोरेना परिषदो सहेवाना आ लोकांज दुःस्वरूप दंडो सहे छे, अने ते दंडो स्त्री संबन्ध करवा पहेलांज कराय छे, (तेथी पूर्वे कहुं छे) अने स्त्री ग्रहण कर्या पळी विषयना निमित्तथी वंथायला पापवडे नरक विगोरेनां दुःखोना स्पर्शां भोगववा पडरो, स्त्रीना अकार्यमां प्रवर्तलाने पूर्वे दंड अने पळी हाथ पण विगोरे छेदावाना स्पर्शां छे, अथवा पूर्वे (कोइ स्त्री साथे छुपुं कुकृत्य करतां) ताडना (लाकडीनो मार) विगोरे छे अने पळी-थी स्त्रीनो संबन्ध तथा आलिंगन चुंवन विगोरे छे ते वतावे छे.

वन्दी ए आणेल अने रोकेल राजकुमारीए गवाक्षमांथी फेंकयो ते नीचे पडेल आवीलने लेवाथी राजपुरुषोए देखवाथी टोक्यो, त्यारे राजकुमारीने मूर्छा थवाथी तेने देखतां इन्द्रदत्त वणिकने प्रथमथी दन्डा खावा पड्या, अने पाळळथी कन्या मळतां स्पर्श विगोरेतुं सुख मळ्युं, अथवा कोइने प्रथम सुख विगोरेना स्पर्शां छे, अने पाळळथी ललितांग कुमारनी माफक बीजा व्यभिचारीओने दुःख पडे छे, 'फिंच' वळी आ स्त्री संबन्धो केश संग्रानो सङ्ग (संबन्ध) करावे छे, अथवा कलह (क्रोध) तथा आसङ्ग ते राग छे, ए-टले रागद्वेष करावनारा छे, जो एम छे तो शुं करे, ते कहे छे, ऐहिक अमुष्मिक (आ लोक परलोक) संबन्धी अपायोना कारणे स्त्री संगनी प्रत्युपेक्षावडे 'आगमेत्तति' जाणीने आत्म्याने आसेवन (कुचाल) थी रोके, आ प्रमाणे हूं कहुं छुं, ते तीर्थकरना वचन

प्रमाणे कहुं छुं स्त्रीसंगमां दुःख छे, माटे संग न करवो. वकी ते त्यागवानो, उपाय बतावे छे.

‘सु’ ते स्त्रीसंगनो त्यागी सुनि स्त्रीना कपडांनी, वेषनी तथा शणगारनी कथा न करे, आ प्रमाणे ते त्यजाय छे, तथा तेमने नरकमां लइजनारी तथा स्वर्गमोक्षमां विघ्नरूप अर्गला जेवी जाणीने ते स्त्रीनां अंगउपांगने न देखे, कारण के स्त्रीओने देवतां तेना कटाक्षो महान अनर्थने माटे थाय छे. कहुं छे के:—

सन्मार्गे तावदारते प्रभवति पुरुषस्तावदेवेन्द्रियाणां, लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समात्मवते तावदेव ॥

भूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथजुषो नीलपक्षमाण एते, यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषो दृष्टिबाणाः पतन्ति ११।

नीतिकार कहै छे के पुरुष सन्मार्गमां इन्द्रियोने राखवा त्यां सुधीज समर्थ थाय छे, तथा त्यां सुधीज लज्जा छे, तथा विनय पण त्यां सुधीज छे, के लीलावती (सुंदर स्त्री) ना कानना छेडा सुधीखेचाइने नीलीपांखोवाळा पापणना चापवढे खेचीने छोहेला (कटाक्षो) पुरुषना हृदयनी धीरजने चोरनारा दृष्टिबाणो त्यां सुधी न पड़े. तथा ते स्त्रीओने नरकनी आपनारी जाणीने तेनी साथे संप्रसारण (खानगी बात) पोतानी सगी बेन विनेरर्थो पण न करवुं. कहुं छे के:—

मात्रा स्वस्त्रा दुहित्रा वा, न विविकासनो भवेत् । बलवानिन्द्रियग्रामः पंडितोऽप्यत्र मुह्यति ॥ १ ॥

माता बेन के दीकरी पोतानी होय; तेनी साथे पण एकान्तमां न बेसे कारण के इन्द्रियोनुं प्रवळ बधारे छे जेमां, पंडित पण मोह पासो छे ! आहुं जाणीने स्वार्थमां तत्पर स्त्रीओमां ममत्व न करवो; तथा ते स्त्रीने मोह करनारी मंडन विनेरेनी क्रिया पोते न

करे; तथा स्त्रीओनी वैयावच्छ पोते न करे. अर्थात् कायाना व्यापारनो निषेध कर्यो; तथा आ स्त्रीओने सारा- मोक्षनां अनुष्ठानमां विद्वरूप मानीने चाणी मात्रथी पण आत्ताप न करे. आथी वचननो निषेध कर्यो, तेम अध्यात्म-(मन्ने) कवजासां राखी स्त्रीना भोगमां मन पण न राखे; एदळे सूत्रनो अर्थ विचारवासां ध्यान राखीने मननो ते संवन्धी व्यापार पण रोके. आत्रो उत्तम साधु बीजुं शुं करे ? ते कहे छे के:—सर्वथा सर्वकाल पाप तथा पापनां उपादान कारण छोडे. हवे समाप्त करे छे के, आ आखा उद्देशासां शरुआतथी कहेछुं सुनिना भाव मौन छे, तेने आत्मासां तुं चित्तवजे. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. चोथो उद्देशो समाप्त थयो.

॥ इति श्रीआचाराङ्गसूत्रे तृतीयो भागः समाप्तः ॥



रुपीया ११ नी किंमतनो अंथ फक्त रुपीया ४ मांज मलशे.

(सूळकर्ती-धर्मशासणाणी)

(टीकाकार-रामविजयगणी)

रुपदेशमालासटीक.



आगळथी ग्राहक थनार पासेथी रु. ४ पाळळथी ग्राहक थनार पासेथी रु. ६

लेजरना कागळ उपर सुगररोयळ साहस्रमां पत्राकारे छपाय छे.

आगाळथी रु. मोकळनारने पोस्टेज नाहिं.

हीरालाल हंसराज-जामनगर.

॥६०८॥



॥ इति श्रीआचारङ्गसूत्रे तृतीयो भागः समाप्तः ।

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मस्वामीए रवेळुं अने श्री श्रुतकेवलीभद्रबाहुरचित निर्मुक्तिसहित)

॥ आचाराङ्गसूत्रम् ॥ भाग चौथो ॥

(मूळ अने शीलाङ्गाचार्य रवेळी टीकाना भाषांतरसहित)



जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ शामजीना स्मर्णार्थ

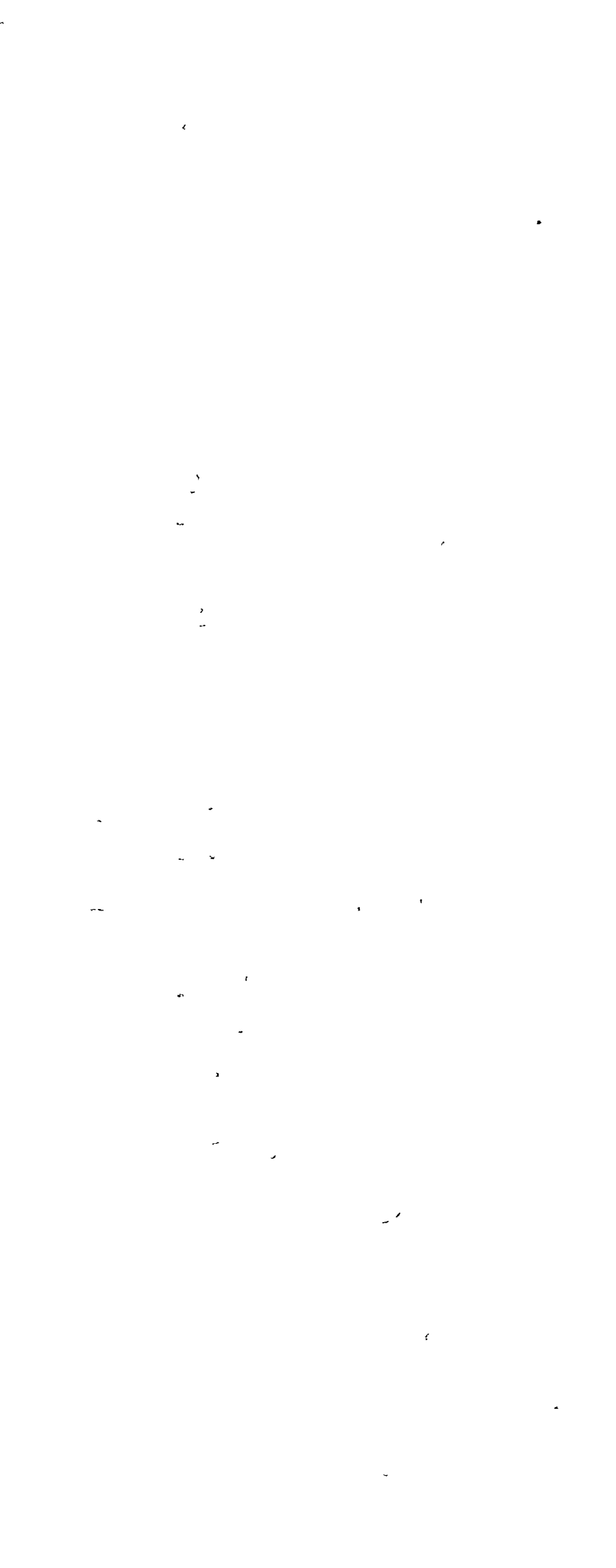
हृषावो प्रसिद्ध करनार—पण्डित हीरालाल हंसराज—(जामनगरवाळा)

पडतर क्रिमत रु. २-८-०

मति २००

१९९०

श्रीजैनभास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छापुं—जामनगर.



॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ श्रीआचारान्नसूत्रम् ॥

(मूळ अने शिलाङ्गाचार्ये रचेली टीकातुं भाषांतर)

भाग चोथो

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

पांचमो उद्देशो कहे छे.

पांचमा उद्देशानो चोथा साथे आ प्रमाणे संबन्ध छे के, चोथामां कहुं केः—अगीनार्थ अपाकव वयनो साधु एकलो विचरतां दुःख पासे छे, तेथी ते दुःखो दूर करवा इच्छता साधुए हमेशां आचार्यनी सेवामां रहवुं; तथा, ते आचार्ये पण हदनी उपमावाळा थवुं; अने तेमनी साथे बीजा साधुए रही तप-संयमथी युक्त वनीने निःसंगपणे विचरवुं. [ए पांचमां उद्देशामां छे,] आवा संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ पथम सूत्र छे,

से वेमि तंजहा-अवि हरए पडिपुणणे समंसि भोमे चिदइ उवसंतरए सारकखमाणे, से चिदइ सोयमज्झगए से पास सबओ गुते, पास लोए महसिणो जे य पन्नाणमंता पबुद्धा आरंभोवरया समममेयंति पासह, कालस्स कंखाए परिवयंति, चिबेमि (सू० १६०)

से (जेवा) गुणवाज्जो आचार्य होय; ते हुं तमने तीर्थकरना उपदेशना अनुसारे कहुं छुं. ते आ प्रमाणे छेः—(वाक्य स्थापना तथा वपराय छे, तथा, अपि शब्द भांगाना समुच्चय माटे वपराय छे.)

हुद (होद-कुंड) नुं वर्णन.

तेना चार भांगा नीचे मुजव छे. (१) ते होदमां धीरे धीरे पाणी नीकळतुं होय अने पाहुं वीजी बाजुथी भरातुं होय ते सीता तथा सीतोदा नदीना प्रवाहना कुंड जेवुं छे. (२) वीजो हुंड ते पाणी नीकळे खरुं; पण पाहुं वीजुं म आवे ते पद्मद्रह जेवुं छे. (३) तथा वीजो पाणी नीकळे नहीं पण आवे खरुं ते लवण समुद्र जेवो छे, (४) जेमां पाणी आवे पण नहीं अने नीकळे पण नहीं, ते, मनुष्य लोकनी बहारना समुद्र माफक छे, तेज प्रमाणे आचार्य पोते श्रुतने अंगीकार करीने वीजाने भणावे छे, तेथी ते पहेला भागमां आवे छे, तथा क्रोधना कारणे वीजा भांगामां आवे छे, एउले कषायना उदयमां ग्रहणनो अभाव छे तेथी तप तथा कापोत्सर्ग विगरेथी क्षपणना उपपत्तिनुं कारण छे, आलोचनाने अंगीकार करवाथी वीजो भांगो लगु पडे, आलोचनाना कारणे कोइने संभळावी शके नहीं, कुमार्गमां पहेलो चोथा भांगामां छे कारण के तेने प्रवेशनिर्मननो अभाव छे, अथवा धर्मि

ખેદથી ખેદો યોજાય છે, સ્થવિર કલ્પિઆચાર્યો પ્રથમ મંગમાં છે, વીજા મંગામાં તીર્થકરો છે, વીજા મંગામાં અહાલંદિક છે તેમને કોઈ વચ્ચે અર્થની પ્રાપ્તિ થઈ ન હોય, ત્યારે આચાર્ય વિગેરે પાસેથી તેમને તેના નિર્ણયનો સહાય છે, અને પ્રત્યેક વ્યક્તિને ઉપયોગી [હેતુ] આપવું ને મળવું મળાવવું તેનો નિષેધ હોવાથી તેઓ સૌથી મંગામાં છે, પણ આ જગ્યાએ પ્રથમ મંગમાં આવેલા ને મળવા મળાવવાનો સદ્ભાવ હોવાથી તેનો અધિકાર છે, અને તેવા હૃદય આચાર્યનો જ અહીં દૃષ્ટાંત છે, અને તે હૃદ નિર્મલ જલનો ખરેખરે તથા સર્વ કૃત્યમાં જન્મનારાં [ઉત્પન્ન થનારાં] કમલોથી શોભાયમાન છે, સમભૂમાગમાં રહેલ પાણીનું નીકળવું અને આવવું નિત્ય જ થાય છે, પણ કોઈ દહાડો સુકાતો નથી, અને સુસ્વેદી તેમાં તરવાનું તથા નીકળવાનું વની શકે તેવો છે, તથા ઉપશાંત તે રજ વિગેરે જે પાણીને કાઢી વનાવે તે જેમાંથી દૂર થયેલ છે, તથા જુદી જુદી જાતના જલચર જીવોના સમૂહને વચાવતો અથવા જલચર જીવોવહે પોતાની રક્ષા કરતો રહેલ છે, આ આપણી ચાહુ ક્રિયા દૃષ્ટાંતમાં હેવાની યદ્યપે આ હૃદ જેવા આચાર્ય છે, તે પ્રથમ મંગાના હેવા, પાંચ પ્રકારના આચાર યુક્ત છે. અને આચાર્યની આઠ પ્રકારની સંપદાથી જોડાયેલો છે, તે વતાવે છે.

આચાર સુઝ સરીરે વયળે વાયળ મર્દે પઓગમર્દે । ય્દ સુસંપયા સ્વહુ અટ્મિઆ સંગહપરિજ્ઞા ॥૧॥

આચાર, શ્રુત, શરીર, વચન, વાચના, મતિ, પ્રયોગમતિ, અને આઠમી સંગ્રહ-પરિજ્ઞા છે. અર્થાત્ આચારમાં સારો, સિદ્ધાંતનું પૂર્વાપરનું જ્ઞાન, શરીર સુંદર, વચન માનનીય હોય; વાચના આપવામાં હૈશીયાર હોય; વૃદ્ધિ તીક્ષ્ણ હોય; પ્રયોગમતિવાલો, તથા સાધુ-સમુદાયને યોગ્ય ઉપકારણ વિગેરેનો સંગ્રહ કરનારો હોય.

तथा, छत्रीस प्रकारना गुणोना समुदायने धारनारो कुंडनी माफक निर्मळ ज्ञाने भरेलो समान—भूभाग एटले, संसक्त विगेरे (रागद्वेष)—दोषथी अदोषित, अथवा सुखविहारनां क्षेत्रमां मध्यस्थ रहे; तथा, ज्ञानदर्शन—चारित्र नामनो मोक्षमार्ग उपश्रमवाला साधुओनो छे, तेमां रहे छे. समता धारे, केवो वनीने ? उपशांत थइ छे रजरूप मोहनीकर्म जेने, शुं करतो? जीवनीकायनी पोते रक्षा करतो वीजाने सारो उपदेश देवावडे रक्षा करावतो; अथवा नरकपात अटकावी वचाववाथी परनो रक्षक वने छे. 'स्रोतो मध्य गतः' आथी प्रथम भांगांमां आवेला स्थविर आचार्यने कहे छे, तेने श्रुतअर्थना दान ग्रहणनो सद्भाव छे, तेथी स्रोत मध्यगतपणुं छे ते आचाय केवा होय? ते कहे छे:—ते आचार्य क्षोभायमान न थाय; तेवा हृद जेवा बधी रीते इन्द्रियो तथा मनने वन्न राखनारा गुप्तिए गुप्त छे तेने तुं जो, (आहुं शिष्यने गुरु कहे छे,) तथा आचार्य शिष्याय पण, एवा बीजा बहु साधुओ संभवे छे. एवुं वताववा कहे छे:—आ मनुष्य लोकमां पूर्वे वतावेला स्वरूप—(गुणो) वाळा महर्षिओ [मोटा मुनिओ] छे तेमने तुं जो ते महर्षिओ केवा छे? ते कहे छे:—फक्त आचार्यो ज हृद जेवा छे. एटळुंज नहि; पण, बीजा साधुओ पण तेवा हृद जेवा छे. प्रकर्षथी जणाय ते प्रज्ञान. पोतानुं तथा परनुं स्वरूप वतावनार ते आगम छे, तेने भजेला अर्थात् आगमना जाण (गीतार्थ) होय; कदाच, तेवुं जाणनारा छे छतां, मोहना उदयथी कोइ वखत हेतु उदाहरणना असंभवमां, अने ज्ञेयना गहनपणाथी संशयमां पडेला सम्यग—श्रद्धाने न माननारा पण होय; तेथी, खुलासो करे छे के, 'प्रबुद्धा' प्रकर्षथी जेम, तीर्थकर कहे तेवुंज तत्त्व पोते समजेला होय; अने तेवा छतां भारी कर्मने लीधे सावध—अनुष्ठानने छोडनारा न होय; (चारित्र न पाळे;) तेथी खुलासो करे छे के, 'आरंभो परताः' ते सावधयोगथी दूर रहेला महर्षिओ छे. अपारा उपरोध (आरमथी) ग्रहण न कर; पण तमारे तमारी निर्मळ बुद्धिवडे

विचारीने जोवा, ते वतावे छे, आ जे में कहुं; ते तमे (हे शिष्यो!) पण, मध्यस्थता धारण करीने समर्यादने जुओ; वळी आ पण जुओ. काळ ते, समाधि—परण छे. तेनी अभिकांक्षावडे साधुओ मोक्षमार्गावाळा संयममां बधी प्रकारे वर्ते छे. आ प्रमाणे हुं कहुं छुं. इति ब्रवीमि शब्द, प्रकरण, उद्देशो, अध्ययनं, श्रुतस्कंध के, परिसमाप्तिमां आवे छे, तेमां, अहीं अधिकारनी समाप्तिमां जाणवो. आचार्यनो अधिकार कला पळी विनेय (शिष्य) नो अधिकार कहे छे:—

वितिगिच्छसमावज्ञेणं अद्याणेणं नो लहइ समाहिं, सिया वेगे अणुगच्छंति, असिता वेगे

अनुगच्छंति, अणुगच्छ माणेहिं अणुगच्छमाणोकहंनिविजे ? (सू० १६१)

विचिकित्सा ते, चित्तनो विखव छे, आम पण छे. एवा प्रकारना संकल्पो ते, युक्तिशी उत्पन्न थता अर्थमां मोहना उदयशी प्रतिनो विभ्रम थाय छे. ते आ प्रमाणे:—आ महान् तपनो कलेश रतीना कोळीया खावा जेहुं निःस्वाद छे, ते करवाशी तेनुं फळ मळशे के नहि? कारण के, खेती करनार विगेरेने महेनत करवा छातां, फळ मळे छे के, नथी पण मळहुं? आवी मति मिथ्यात्वनो अंश उदयमां आववाशी तथा, ज्ञेयने जाणवुं गहन छे तेशी थाय छे, ते ज्ञेयने वतावे छे.

अर्थ त्रण प्रकारनो छे. (१) सुखशी समजाय दुःखशी समजाय; अने वीलकुल न समजाय. - 1 त्रणे सांभळनारना आधार उपर भेद छे, तेमां सुखाधिगम वतावे छे. जेमके—चक्षुवाळो होय; अने चित्रकलामां निपुण होय; तेने रूपसिद्धि (चित्र करवुं) सुलभ छे, अने अनिपुणने दुःखशी चीतराय; पण आंधळाशी तो, वीलकुल देखायाविना न चीतराय; तेमां अनधिगम रूप तो, अत्र-

स्तुज छे, अने सुखाधिगम पण शंकानो विषय न थाय, पण जे देशकाल स्वभावथी विप्रकृष्ट होय; तेमांज शंका थाय, ते धर्म—
 अधर्म, आकाश विगेरेमां जे विचिकित्सा थाय ते जाणवी; अथवा 'विहगिच्छति' विद्वाननी जुगुप्सा एटले, विद्वानो ते साधुओ
 छे. जेमणे संसारमो स्वभाव जाण्यो छे, अने समस्त संगतो त्याग कर्यो छे, तेओनी जुगुप्सा (निंदा) करे छे. कारणके, तेओ
 स्नान करतानथी; तथा, परसेवाना मेलथी गंधातां शरीरवाळा छे. तेओने निंदे छे, 'निंदनारा कहे छे के,' जो, अचित्त पाणीथी
 स्नान करे; तो, शुं दोष छे? आ जुगुप्सा छे, ते जुगुप्साने अथवा, विचिकित्साने प्राप्त करेला आत्मावाळो (शंकावाळो) चितनी
 समाधि अथवा ज्ञानदर्शन चारित्ररूप समाधिने पाप्ततो नथी, कारण के विचिकित्साथी मलीन चित्तवाळाने आचार्य कहे तोपण
 सम्यक्त्व नामनी बोधि [भगवानना वचन उपर आस्था] मेळवतो नथी; अने जे बोधि मेळवे छे, ते गृहस्थ अथवा साधु होय, ते
 वतावे छे, 'सितां:' पुत्र स्त्री विगेरेमां रागी बनेला होय, अथवा लघुकर्मवाळा सम्यक्त्वने पमादनार आचार्यने अनुसरे छे. अर्थात्
 आचार्यनुं कहेछुं माने छे ते प्रमाणे केटलाक गृहवास छोडेला साधुओ शंका विगेरेथी रहित बनी आचार्यना मार्गने अनुसरे छे.
 तेमनामां पण जो कोइ कोरहु माफक होय, ते पण तेवा बीजा उत्तम मार्गने अनुसरनारा साधुने जोइ ते आ कोरहु जेवो पण
 तेनां अशुभ कर्म ओछां थतांते पण सम्यक्त्व पासे, ते वतावे छे. आचार्यनुं कहेछुं सम्यक्त्व माननार श्रावकोथी परिचयमां आवतो
 अथवा प्रेरणा करतातो न माने, तो पळी केवी रीते निर्वेद न पासे? अर्थात् खराब कृत्यनी मिथ्यात्वादि रूप विचिकित्साने छोडीने
 ते पण सम्यक्त्व पासे; अथवा साधु—श्रावक जेओ संसारमां रक्त अथवा विरक्त होय; तेओ आचार्यनुं कहेछुं समजे; तो, कोइ अ-
 ज्ञानना उदयर्था मंद बुद्धि होवाथी तपस्वी साधु घणा वर्धनो दीक्षित होय; ते जो, न समजे; तो, केम खेद न पासे? (कदाच) तप

अने संयमनो निर्वेद न होय; अने अतिर्वेदी होय; तो आर्चीपण भावना भावे. जेपके—जो, हुं भव्य नही होउं तो, मने संयमभाव पण नथी. के, प्रकट—(खुडुं करीने) गुरु कहे छे तोपण, हुं समजतो नथी. आ प्रमाणे खेद पामताने आचार्य समाधिनां वचन कहे छे के:—हे साधु ! खेद न कर ! हुं भव्य छे. कारण के, तुं सम्यक्त्व पाप्त्यो छे, अने ते ग्रन्थीभेद विना न होय. अने ग्रन्थीभेद भव्यत्व विना न होय, कारण के, अभव्यने भव्य, के अभव्यपणानी शंका पण न थाय.

वली, अविरतिनो परिणाम वार कषायनो क्षय उपशम उपशम के क्षय यतांज होय छे, अने ते विरति तुं पाप्त्यो छे. तेथी, दर्शनचारित्र-मोहनीयनो तारे क्षयोपशम थयो छे, नहीतो, सम्यग्दर्शन-चारित्रनी प्राप्ति न होय पण, तने कला छतां जो, यथा पदार्थो न समजाय; तो, ज्ञानावरणीयकर्मना उदयतुं लक्षण जाणहुं; त्यां तो, तारे श्रद्धारूप—सम्यक्त्व स्वीकारवुं. ते कहे छे:—

तमेव सखं नीसंकं जं जिण हिं पवेइयं (सू० १६२)

ज्यां आगल स्वसमय, परसमयना जाण आचार्य न होय; तथा, झीणी गूढ बावतोमां, अने अतींद्रिय पदार्थोमां वने पक्षने मान्य दृष्टांत तथा, सम्यग्हेतुना अभावथी ज्ञानावरणीयना उदयथी सम्यग्ज्ञान न होय; त्यां पण आ प्रमाणे चित्तवहुं के, तेन एक सत्य छे अने तेज निःशंक छे के, जिनेश्वरे कहेला अत्यंत सूक्ष्म-अतींद्रिय पदार्थो जे फक्त आगमथी मानवायोग्य छे (ते मारे प्रमाण छे.) तथा मानवामां शंका न होय; ते निःशंक्ति कहेजाय. के धर्म-अधर्म, आकाश, पुद्गल विनोरे जे तीर्थकरे कहेछुं छे, ते रागद्वेषने जीतेला जिने छे, माटे तेमहुं कहेछुं सत्यज छे. आवुं श्रद्धान करवुं. वरोवर रीते पदार्थन समजाय; तोपण, शंका न करवी.

प०—शुं साधुने पण शंका थाय छे के, तमे आम कहो छो ?

उ०—संसारनी अंदर रहेला जीवोने मोहना उदयथी शुं न थाय ? ते पमाणे आगमां कहेछुं छे.

गौतमनो प०—हे भगवन् ! साधुनिग्रन्थो कांशामोहनीयकर्म वेदे छे ?

“ अरिथ णं भंते ! समणावि निगंथा कंखामोहणिजं कम्मं वेदंति ? हंता अरिथ, कहन्नं समणावि णिगंथा कखामोहणिजं कम्मं वेयंति ? गोयमा ! तेसु तेसु नाणन्तरेसु चरित्तरेसु संकिया कंखिया विइगिच्छासमावन्ना भेयसमोवन्ना कलुससमावन्ना, एवं खलु गोयमा ! समणावि निगंथा कखामोहणिजं कम्मं वेदंति तत्थालंबणं ‘ तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं ’ से णूणं भंते एवं मणं धरेमाणे आणाए आराहए भवति? हंता गोयमा ! एवं मणं धरेमाणे आणाए आराहए भवति, ”

उ०—हा. प०—केवी रीते ते वेदे छे ?

उ०—तेवा तेवा ज्ञानना के, चारित्रना विषयमां न समजातां शङ्का, कांशा, विचिकित्सावाळा बनी भेदोने पामेला न समजातां हृदयमां संखवाणा बने छे तेथी हे गौतम ! ते ठीकछे के, साधुने पण शङ्का विगरे थाय.

गौतम कहे छेः—हे भगवान् ! ते समये साधु मनमां एम चिंतवे के, “तेज सत्य, निःशङ्क छे. के जे, जिनेश्वरे कहेछं छे.” तो, ते आज्ञा पाळवानो आराधक थाय के ?

उत्तर—हे गौतम ! एम मनमां धारे; तो आराधक थाय छे.

वकी गुरु उपदेश आपे छे के, साधुए विचारवुं के—

वीतरागा हि सर्वज्ञा मिथ्या नं ब्रुवते वचचित् । यस्मात्तस्माद्ब्रुवतेषां, तथ्यं भूतार्थदर्शनम् ॥१॥

वीतराग पोते सर्वज्ञ छे. अने तेथी, निश्चे तेओ जुहुं न बोले. जेथी, तेमनुं वचन जीबोहुं स्वरूप बतावनाहं साहुं छे. विगेरे समजी छेहुं. वकी, आ विचिचित्सा दीक्षा लेनारने आगममां मति स्थिर थयली न होवाथी थाय छे. तेवाए पण उपर बतावेछं रहस्य चिंतववुं ते कहे छेः—

सद्धिसस षं समणुन्नसस संपव्वयमाणसस समियंति मन्नमाणसस एगया समिया होइ
 १, समियंति मन्नमाणसस एगया असमिया होइ २, असमियंति मन्नमाणसस एगया
 समिया होइ ३, असमियंति मन्नमाणसस एगया असमिया होइ ४, समियंति मन्नमा-
 माणसस समिया वा असमिया वा समिया होइ उवेहाए ५, असमियंति मन्नमा-

णस्स समिया वा असमिया होइ उवेहाए, ६, उवेहमाणो अणुवेहमाणं
बूया-उवेहाहि समियाए, इच्चैवं तत्थ संधी झोसिओ भवइ, से उट्टियस्स टियस्स गइं

समणुपासह, इत्थवि बालभावं अप्पाणं नो उवदंसिजा (सू० १६३)

अद्दा धर्मनी इच्छा ते जेने होय; ते, अद्दावान् छे. तेवा भव्यजीवने संविग्र, अने योग्य विहार करनारा साधुओए, अथवा संविग्र विगरे गुणोथी दिक्षा लेवायोग्य होय; तेने दिक्षा लेतां शंका थाय; तो, तेने जीवादि पदार्थमां बोध पापवानी अशक्ति होय; तो, तेने समजावहुं के, हे भद्र ! जिनेश्वरे जे कहेछुं छे, ते शंकारहित अने सत्य छे. आ प्रमाणे दिक्षालेता बोध आपवाथी तेनो आत्मा चारित्रथी निर्मळ थतां; चडता कंडकथी पडाना काळमां पण निर्मळ भावना वधे; अथवा वरोवर रहै; ओछी पण थाय अथवा अथाव पण थाय. आवा जीवनी विचित्र परिणामता वतावे छे, ते अद्दावाळाने समजावीने दिक्षा लीधा छतां, पोते जिनेश्वरहुं कहेछुं वचन शंकारहित साहुं मानतो पाळळथी पण शंका, कांक्षा, विचिकित्सा, विगरेथी रहित निर्मळ सम्यक्त्ववाळो होय छे, पण भगवानना वचनमां शंका उत्पन्न थती नथी. (१) कोइने दीक्षा लेतां अद्दा होवाथी मानवा छतां पाळळथी न्याय भणतां कोइ जातनो एकांत पक्ष पकडतां हेतु दृष्टान्तनो लेश हाथमां आवतां पूर्वापर विचार न थवाथी; अने ज्ञेयपदार्थ गहन होवाथी मति मुंझातां कोइ वरवत मिथ्यात्वना अंशनो उदय थतां; ते जिनवचनने सम्यक् मानतो नथी, ते कहे:—आ वधा नयना समूहना अभिप्रायना कारणे अनंत धर्मथी युक्तवरस्तु जेवी छतां, मोहना उदयथी एकनयना अभिप्रायवडे एक अंश साधवा माटे ते साधु जाय छे. जो, नित्य

जिनेश्वरे कहैल; ते फरी अनित्य केम थाय ? अथवा अनित्य ते, नित्य केम थाय ? कारणके, ते बने परस्पर विरोधी छे.

ते प्रमाणे अपच्युत अनुसन्न स्थिर एक स्वभाववाळुं नित्य छे. अने तेशी उलटुं दरेक क्षणे नाश पामनाहं अनित्य छे, विगेरे असम्यक्भावने पामे छे, पण ते एवुं विचारतो नथी, के अनंत धर्मवाळी अने वथा नयना समूहथी युक्त वस्तु छे, ते मंद बुद्धिवाळने ते मानवुं अति गहन होवाथी अशक्य छे, पण श्रद्धाथी मानवा योग्य छे, पण हेतुथी क्षोभायमान न थवुं, कहुं छे के:—

स्वर्नयोनियतनैगमसंप्रहाथैरेकैकशो विहिततीर्थिकोशासनैर्यत् ॥

निष्ठां गतं बहुविधैर्गमपर्ययैस्तैः श्रद्धेयमेव वचनं न तु हेतुगम्यम् ॥ (इत्यादि)

वथा नयोवडे पटले नैगम संग्रह विगेरे अने कथा नियत एक एक अंशथी अन्य तीर्थिक शासनवाळाए वतावेल जे बहु प्रकारना गमपर्यायोवडे संपूर्णता पापेळुं तमाहं वचन श्रद्धा करावा योग्य छे. पण त्यां हेतुथी जाणवा योग्य नथी,

जेथी विचारवुं के हेतुतो एक नयना अभिप्राय प्रमाणे वर्ते छे. तथा एक धर्मने साधे छे, पण वथा धर्मने साधे साधनारने हेतुनो असंभव छे, (तेशी तेने शक्या थाय छे.) (२) वळी विचित्र भावनाने बतावे छे, के कोइ मिथ्यात्वना लेशथी सुझाएलाने शक्या थाय के शब्द पुद्गलनो केवीरिते बने एवुं उलटुं मानीने मिथ्यात्वना परमाणुओना उपशमपणाथी पळीथी शंका विगेरे गुरुना उपदेशे दूर थलां ते श्रद्धावाळो थाय छे; के जो शब्द पुद्गलनो बनेलो न होय तो तेनो करेलो अनुग्रह अथवा उपघात कान उपर केवी रीते थाय ? कारण के आकाश माफक शब्द अमूर्त होय तो कानने कांइ पण न थाय एप्र समजीने सम्यक्त्व पामे छे (३) कोइने आग-

ममां रमणता न थवाथी मति अपरिणत थतां विचारे के एक समयमांज परमाणु लोकांते केवी रीते जाय एम खोडुं मानतां कोइ वरवत कु हेतुना वितर्कना प्रकट अवसरे पूरेपूरो मिथ्यात्वी बने छे, के चौदराज लोकनो एक छेडाथी बीजा छेडा सुथी जतां आकाश प्रदेशने साथे स्पर्श न थवाथी समयनो भेद पडे, ते भेद न पडे तो बेजग्याए एक साथे स्पर्श न थाय तेशी परमाणुनुं तेदला पणुं थाय, एदले ते एवुं माने के लोकने बने छेडे रहेला प्रदेशनो एक वरवते परमाणुए स्पर्श कर्यो माटे तेदको मोटो परमाणु छे, अथवा-ते वन्नेनुं छेडुं परमाणु जेटछुं छे, आ तेनुं मानवुं खोडुं छे. पण ते आग्रही बनेलो विचारतो नथी, के विससा परिणामवडे शीघ्र गतिपणाथी परमाणुनुं एक समयमां असंख्येय प्रदेशनु गमन थाय छे, जेभके आंगलीना माप जेटला एक द्रव्यना असंख्यात आकाश प्रदेश छे, तेदला वधाने एक समयमां परमाणु ओळंगी जाय छे. प०—ए केवी रीते बने ? उ०—जे पत्यक्ष देखाय छे ते ना नहि पाडी सकाय, कारण के ज्यां सौने देखीतुं पत्यक्ष प्रमाण होय, त्यां अनुमान विनोरेनुं प्रयोजन नथी जो एक समयमां अनेक प्रदेश ओळंगवा न मानीये तो अंगुल मात्र प्रदेश ओळंगतां असंख्येयसमय नीकळी जाय, तो आपणे देखेछुं इह छे तेने पण वाधा आवे, माटे ते शंका नकामी छे. (४).

हवे भांगानी समाप्ति करवा परमार्थ बतावे छे.

भगवाननुं वचन साचुं छे, एवुं मानीने शङ्का विभोरे छोडीने ते वस्तु यत्न बडे तेवा रूपेज सम्यक् अथवा असम्यक् पूर्व भावी होय तो पण गुरुना सहवासथी तेभनो उपदेश विचारतां ते श्लिष्य श्रद्धावाळो थाय छे, जेभ इर्यापथमां उपयोग राखनारने कोइ बरवत जीवहिंसा थाय. (तो पण तेने दोष लागतो नथी.) (५) हवे तेशी उलडुं बलावे छे, कोइ वस्तु खोटी रीते मानतां छद्मस्थ साधुने

हुं क बुद्धिशी शंका थाय, ते समये ते वस्तु खोटी अथवा साची विचारी होय, तो तेणे खोटी विचारेली होवाथी खोटा विचारने लीधे अशुभ अशुभ अध्यवसाय होवाथी ते मिथ्यात्व हे, कारण के जेवी शंका करे तेवोज भाव मेळवे, एवुं वचन हे, (६) अथवा सम्यक् माननारने वीजी रीते खुलासो करे हे, श्मिनो भाव श्मिता हे ते श्मिताने माननारो शुभ अध्यवसायवाळो उत्तर कालमां पण उपशमवाळोज रहे हे, अने वीजो तो श्मिताने मानवां छतां कषायना उद्दयथी अश्मिता थाय हे, एज प्रमाणे वीजा भांगामां सम्यक् शब्दनी योजना करवी, के सारुं विचारे तो सारुं फळ मेळवे, तेज प्रमाणे सारुं नरसुं तेनो विवेक विचारतो वीजाने पण उपदेश देवाने समर्थ थाय हे, कहुं हे के, आगममां मति परिणत थवाथी यथायोग्य पदार्थानो स्वभाव बताववाथी आ योग्य हे, आ अयोग्य हे, एवुं विचारतो विद्वान वीजा नहि विचारताने पण समजावे हे, एदले गाढरनां टोळा माफक एक पळी एक जेम दोडे तेम कोइ विना विचारतो शंकावाळो होय, तेने कहे के हे भद्र ! तुं मध्यस्थता राखीने निर्मळ भावथी विचार के जिनेश्वरतुं कहेछुं जीवादित्व विचार शुकितने योग्य हे के नहीं ? ते आंखो वीचीने विचार, अथवा संयने सारी रीते पाळनारो होय, ते संयम सारी रीते न पाळनारने कहे, के हे भद्र ! सम्यग् भाव पापीने हवे संयममां सारो रीते उद्यम कर ! शुं आंलंवीने ? उ०—पूर्व कहेला प्रकारे ते संयममां कर्म संतति क्षय करवा रुप जे संधि हे. ते जो संयम सारो पाळे तो, कर्म दूर कराय तेम हे, आ कर्म संतति तेसिवाय वीजी रीते क्षय थाय तेम नथी. वळी सारीरीते संयम पाळनारने शुं लाभ थाय, ते कहे हे, 'से'—ते सम्यक् रीते दीक्षा लेवाने तैयार थप्लाने शंका रहित धर्म श्रद्धा होवाथी चारित्र ल्हद गुरुकुल वासमां रहेवाथी अथवा गुरुनी आज्ञामां वर्तवाथी जे गति थाय हे, अथवा जे पदवि प्राप्त थाय हे, तेने हे श्लिष्यो ! तमे सारी रीते जुओ ! वथा लोकमां प्रशंसा, ज्ञानदर्शनमां स्थिरता चारित्रमां

निष्कंपता अने तेने श्रुत ज्ञाननी आधारता थाय छे, अथवा स्वर्ग मोक्ष विगेरेनी उत्तम गति मळे छे, तेने जुओ ! अथवा संयममां प्रयत्न (न) करनारने उपरना उत्तम गुणो विना पासत्था विगेरेनी गति जे वधा लोकोने हांसी रूप छे. ते अथवा अधम स्थाननी गति मळे छे. ते तमे देखो ! आ प्रमाणे संयम पाळनार अने प्रमाद करनार साधुनी उंच नीच गतिने जाणीने पांच प्रकारना सारा आचारमां तमार प्रवर्तन करतुं, पण जे चारित्र लेवाभां प्रमाद करे तेनी नीच गति थाय तेथी शुं समजतुं, ते कहे छे, के जेओ असंयममां बाल भावमां रमेळा छे, जे सुगति सकल कल्याणना आधाररूप छे, तेने न मेळवी शके, अर्थात् हे शिष्य ! तुं दीक्षा लहने बाल वेष्टा माफक कुकृत्य न करीश ! ते बाल जेवो आचार शक्य कपिल विगेरेना मतने माननारा आचरे छे, अने बोळे छे, के नित्य, अने अमूर्त आत्मा होवाथी आकाश माफक तेनो अति पातज नथी ! अथवा वृक्ष डेदतां के वाळतां आकाशानो भेद के बळतुं थतुं नथी, तेमज शरीर विकारी छे. तेने वा विगेरे थतां अविकारी आत्माने कंद पण थतुं नथी, तेओ कहे छे के.

न जायते न भ्रियते कदाचिद्वायं भूत्वा भवितेति ॥

आत्मा जन्मे नहीं, तेम मरतो पण नथी, कोइ पण दिवस आ थइने थवानो नथी ! (जेवो छे तेवो ज रहेवानो छे)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः । नचैनं कुद्दयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः ॥१॥

जीवने शस्त्रो छेदे नहीं, अपि बाले नहीं, पाणी भीजावे नहीं, तेम पवन शोषण करतो नथी.

अच्छेद्योऽयमभेद्योयमविकारी स उच्यते । नित्यः सततगः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥

आ आत्मा अद्वैत अभेद्य अत्रिकारी नित्य तथा हंमेधां गमन करनार स्थाणु तथा अचल अने सनातन (पुराणो) छे. (विगेरे तेमनां वचनो छे) ते प्राणीने दृणवा विगेरेयां प्रवर्तनाराने तेना निषेध माटे कहे छे.

तुमंसि नाम सत्त्वेव जं हंतवन्ति मन्नसि, तुमंसि नाम सत्त्वेव जं अजावेयवन्ति म-
न्नसि, तुमंसि नाम सत्त्वेव जं परिधवेयवन्ति मन्नसि, एवं जं परिधितवन्ति मन्नसि,
जं उद्वेयन्ति मन्नसि, अंजु चेषधडिबुद्धजीवी, तस्मा न हंता नवि घायए, अणुसंवेय-
णमप्याणोणं जं हंतव्वं नाभियत्थए (सू० १६४)

तमे जे आत्माने दृणवा पणे विचार्यो ते तुंज छे, (नाम शब्द संभावना माटे छे,) जेम तमे माथुं हाथ पण पासां पीठ पैट-
वाका छो, तेम आ पण छे. के जेने तमे दृणवा योग्य मानो छो, जेम तमने कोइ मारवा आवे तो ते देखीने तमने दुःख थाय छे,
तेवी रीते बधाने छे, तेने दुःख उत्पन्न करवाथी पाप बंधाय छे, तेनो भावार्थ आ छे, के अदृशियां अंतर आत्मा जे आकाश जेवो
छे तेनी हिंसा मारवा बडे नथी पण शरीर आत्मानी हिंसा छे, कारण के ज्यां कंइ पण आधार रूप पोतानुं शरीर छे, तेने सर्वथा
दूर करवुं तेज हिंसा छे, एवुं जेनो माने छे. कहुं छे के:—

पंचन्द्रियाणि त्रिविधं बल च, उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः ॥

प्राणा दर्शते भगवद्विरुक्तास्तेषां वियोजी करणं तु हिंसा ॥ १ ॥

पांच इन्द्रियो त्रण वळ श्वासोश्वास, अने आयु ए दश प्राण भगवाने कहेला छे. तेनो वियोग करवो ते हिंसा छे.

वळी संसारमां रहेला जीवने सर्वथा अमूर्तपणुं न घटे. के आकाशनी माफक जेनावडे विकार न थाय, तथा वधी जन्मपाए प्राणीने दुःख देतां पहेळां आत्मानी तुलना विचारवी, एवुं जोडेना सूत्रशी वतावे छे. तुं पण तेज छे. के तने आज्ञा करवापां आवे ते माने छे. तथा बीजा जीवने परितापवा. एवुं माने छे. तेज प्रमाणे जेने ग्रहण करवा, ते तुं माने छे. जेने दुःख देवुं ते पण तुं माने छे. पण जेवुं तने विरुद्ध थतां दुःख थाय तेम बीजाने पण जाणवुं. अथवा जे कायने तु हणवानो विचार करे छे. त्यां अनेकवार तुं हतो. आ प्रमाणे जुठ विगेरेमां पण समजवुं के. बीजो जुठुं बोली तने ठगे तो तने न गमे, तेम तुं जुठुं बोले तो बीजाने न गमे, जो हणानारो तथा हणानारो वन्नेने उपर कक्षा प्रमाणे एकता थाय तो शुं? ते कहे छे.

‘अज्जु’ रज्जु प्रणुण तेज छे के, जे घातक अने हंतव्यना एकपणाना बोधने माने (पोताना जीव माफक सर्व जीवोने माने) तेज पतिवुद्धजीवी साधुज पोते परिज्ञानवडे जीवे छे, पण जीवनी हिंसा करनारो पोताना समान बीजाने न माननारो जीवतो नथी. जो एम छे, तो शुं करवुं? ते कहे छे. हणानारा जीवने पोतानी माफक मोडुं दुःख थाय छे, माटे पोतानी उपमांशी बीजानी हिंसा न करवी, न बीजा पासे मराववा, हणानाराने अनुमोदवा नहि, वळी संवेदन ते अनुभव छे. के जे बीजा जीवोने मोहना उदयशी हणवा विगेरेशी दुःख दे छे, ते पोते पळवाडे दुःख भोगवे छे, एवु जाणीने कोहने पण हणवो नहि, प्र०—आत्माशी अनुभव

साता के असात्कार्य छे, ते वातने नैयायिक तथा वैशेषिक मतवाळा आत्माथी भिन्न गुण भूत संवेदनतुं एकार्थपणुं समवायिज्ञान वदे माने छे, तेबुं तमे मानो छो, के आत्मा सथे एकपणे मानो छो ? तेनो उत्तर सूत्रकार आपे छे,

जे आया से विनाया, जे विनाया से आया, जेण वियाणइ से अया, तं पडुच्च पडि-

संखाए, एस आथावाई समियाए परियाए त्रियाहिए त्तिवेमि (सू० १६५) ॥ ५-५ ॥

जे आत्मा नित्य उपयोग लक्षणवाळो छे. तेज विज्ञाता छे, पण ते आत्माथी पदार्थनो अनुभव करावनार ज्ञान जुटुं नथी अने जे विज्ञाता छे, ते पदार्थनो परिछेदक उपयोग ते पण आ आत्माज छे. कारण के जीवतुं लक्षण उपयोग छे अने उपयोग ते ज्ञान-स्वरूप छे, ज्ञान अने आत्माने अभेदपणे मानवाथी बौद्धमतने अनुकूल ज्ञानज एकलुं सिद्ध थरो, एम तमने शंका थाय तो जैनाचार्य कहे छे, के तेम नथी, भेदनो अभाव फक्त अमे अहीं बताव्यो, पण एकता कही नथी, जो एम मानता हो के ज्यां भेदनो अभाव तेज ऐक्यता छे, तो ते मानबुं फक्त वार्तामात्र छे; कारण के 'थोळुं वख' तेमां थोळुं तथा पट ए वन्नेमां भेदनो अभाव होवाळतां एकतानी पासि नथी, एमां पण शुक पणाना व्यतिरेकवदे बीजो कोइपण पट [वख] नथी, एम मानो तो ते अशिक्षित (मूर्ख) नो उछाप छे, कारण के तमारा कहेवा प्रमाणे मानतां शुक (थोळा) गुणनो अभाव थतां सर्वथा पटनो अभाव थवा जरो.

वादी—त्यारे एम मानतां आत्मा विनष्ट थयो ?

जैनाचार्य—थना दो ! अमारी कइ हानि नथी, कारण के अनंत धर्मवाळी वस्तुनो अपर (बीजो) घटु विगेरे धर्मनो सद्भाव

छे, तेनो नाश थायतो पण अविनष्ट (कायम) ज छे, एज प्रमाणे आत्मानो पण प्रत्युत्पन्न ज्ञान आत्मकपणाथी विनाश थवा छतां वीजो अमूर्तत्व असंख्य प्रदेशपणुं अगुरुलघु विनोरे धर्मोना सद्भावथी आत्मानो अविनाशज छे ! आटहुंज वस छे ! (जैनमन प्रमाणे मूल वस्तु द्रव्य पणे कायम रहे छे. अने फक्त पर्यायोनोज नाश अने उत्पत्ति छे. तेथी पर्याय नाश थवा छतां मूल द्रव्य वस्तु तो कायमज रहे छे.)

शंका—जे आत्मा ते जाणनारो, एम तृप्त्ययवाळो कर्त्ताना अभिधानथी अने आत्माना कर्त्तव्यपणाथी एम थवुं के जे आत्मा तेज विज्ञाता एम अहीं विपत्ति पत्तिनो अभाव थयो, के जेना वडे आ जाणे छे, ते भिन्न पण होय. जेमके ते करण अथवा क्रिया थरो? जो करण मानीए तो दातरडा माफक भिन्न पदार्थ थरो, अने जो क्रिया मानीए तो कर्त्तामां रहेली संभवे छे, एम कर्ममां रहेली पण संभवे छे, आ प्रमाणे भेदना संभवमां क्यांथां ऐक्यता होय ? जैनाचार्य शिष्यने कहे छे, के तेवाने खुळुं कहेवुं जे मति विनोरे ज्ञान रूप करणवडे अथवा क्रियावडे सामन्य विशेष आकारपणे जे कोइ (जीव) वस्तुने जाणे छे ते आत्मा छे. अने ते आत्माथी भिन्न ज्ञान नथी; तेम करणपणे भेद नथी, एकने कर्म करणना भेदवडे उपलब्धि थाय छे, जेमके देवदत्त आत्माने आत्मावडे जाणे छे, क्रियाना पक्षमां पक्षसंबंधी अभेद छे एवुं तमे पण स्वीकार्युं छेज, वळी

भूतिर्येषां क्रिया सैव, कारकं सैव चोच्यते

जेमां भूति (थवापणुं) छे तेज क्रिया छे, अने तेज कारक छे, आ वचन विनोरेथी एकपणुंज छे,

ज्ञान अने आत्मानुं एकपणुं मानतां शुं थाय ? ते कहे छे ते ज्ञान परिणामने आश्रयी आत्मा ते नामजे व्यपदेश कराय छे, जेमके इन्द्रिथी उपयुक्त होय ते इन्द्र कहेवाय, अथवा मति-ज्ञानीश्रुत ज्ञानी अवधिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी, केवलज्ञानी छे. अने जे ज्ञान आत्मानुं एकपणुं स्वीकारे छे, तेने शुं गुण थाय, ते कहे छे. उपर बतावेली नीतिष् यथावस्थित आत्मवादी थाय, अने तेनां सम्यग् भाववहे अथवा शमिता (उपशमपणा) वहे पर्यायरूप छे, एटले तेज संयम अनुष्ठानरूप प्रसिद्ध छे, (इति ब्रह्म समाप्ति माटे छे) लोकसार अद्ययनमां पांचमो उद्देशो पूरो थयो.



छट्टो उद्देशो.

पांचमो उद्देशो कल्लो हवे छट्टो कहे छे. तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे, गया उद्देशामां कहुं के आचार्ये निर्मळ हृद (कुंड) जेवा थवुं, तेवा उत्तम आचार्यना संसर्गथी शिष्यने कुमार्गनो परित्याग थाय. तेथी रागद्वेषनी अवश्ये हानि थाय, माटे आ प्रतिपादन [सिद्ध] करवाना संबन्धवहे आवेला उद्देशानुं आ पहेछं सूत्र छे,

अणाणाए एगे सोवट्टाणा आणाए एगे निरवट्टाणा, एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स

दंसणं तद्धिटीए तम्मसुत्तीए तएपुरक्करे तसन्नी तद्विवेसणे (सू० १६६)

अर्हीभां तीर्थंकर गणधर विगेरेनो उपदेश माननार होय, तेने विनेय [शिष्य] कहेल छे, अथवा सर्व भावना संभावितपणाथी

શામાન્યથી અભિધાન છે, અનાજા ણ્ટલે મળવાનના ઉપદેશ વિના પોતાની મેલે આચરે, તે અનાચાર છે, તે અનાચારમાં પવર્તેલા કે-
ટલાક इन्द्रियोને વશ થણા અને દુર્ગતિમાં જવાની इच्छાથી પોતાના મતના અભિમાન પ્રથથી વંધાયલા [કદાગ્રહી]હે, તથા ઉપસ્થાન
તે વનાવટી તેમનું ધર્માચરણ છે, તેમાં ઉચ્ચમ 'કરનારા' તે સોપસ્થાનવાલા છે, તેઓ વોલે છે, કે 'અમે પણ પવ્રજિત હીણ' હતાં
સારા ધર્મના ખિવેકથી રહિત વનીને સાવચ આરંભમાં વર્તે છે. તેમ કેટલાક કુમાર્ગની વાસનાવાલા (મિથ્યાત્વી) નથી, પણ આલસ
નિંદા સ્તંભ [માન] વિશેરે. (૧૩ કાઠિયા) થી હુદ્દિ હણાતાં તીર્થંકરના કહેલા સદાચારમાં નિરુપસ્થાનવાલા(સારા ધર્માનુસ્થાન રહિત)
હે. ણ્ટલે મિથ્યાત્વી ચારિત્રના નામે અનાચાર કરે, અને સમ્યક્ત્વી જીવો પ્રમાદથી સંયમ પાલકામાં સ્વેદ પામે છે. તે વક્ત્રેને દુર્ગતિ
મલ્કવાની છે, તેવું જાણીને ગુરુ કહે છે હે શિષ્ય ! તને તેવી દુર્ગતિ ન થાઓ ! [માટે સમ્યક્ત્વ ધારણ કરીને પ્રમાદ હોડી પુરો
સંયમ પાલ] આહું સુધર્માસ્વામી પોતાની હુદ્દિથી નથી કહેતા, તે કહે છે, 'ણ્ટદ' ઉપર કહેહું (જિનેશ્વરનું છે) અથવા આજ્ઞા
રહિત નિરુપસ્થાનપણું છે, અને આજ્ઞા પાલનમાં સોપસ્થાનપણું (ચારિત્ર) છે, આહું તીર્થંકરનું દર્શન (મંતવ્ય) છે.

અથવા હવે પછી જે ઉપદેશ કહે છે, તે તીર્થંકરનું દર્શન છે, કે કુમાર્ગ હોડીને હમેશાં આચાર્યની સેવા કરનારા થવું તે આ-
ચાર્યની દૃષ્ટિમાં રહેવું તે 'તદૃષ્ટિ' છે, ણ્ટલે તીર્થંકરે કહેલા આગમમાં દૃષ્ટિ રાચનારો છે; તથા તે આચાર્ય અથવા તીર્થંકરની આજ્ઞા
પાલનારની સુક્તિ થાય છે, તે 'તન્સુક્તિ' છે, તથા તે સાધુ આચાર્યને વયાં કાર્યમાં આગલ કરે તેથી પુરસ્કાર છે અર્થાત્ આચા-
ર્યની અનુમતિથી કાર્ય કરનારો છે, તત્સંજી, તે તેમના જ્ઞાનથી ઉપયુક્ત છે, તથા ' તન્નિવેશન ' ણ્ટલે તે સદા ગુરુકુલ નિવાસી છે,
તેવાને શું ગુણ થાય તે કહે છે.

अभिभूय अद्वखू अणभिभूए पभू निरालंबणयाए जेमहं अबहिमणे, पवाएण पवायं
जाणिजा, सह संमइयाए परवागरणेणं अन्नोसिं वा अंतिए सुच्चा (सु० १६।७)

परिषद्दो तथा उपसर्गानि जीतीने अथवा घाति चतुष्टयने जीतीने तत्त्वने जोयुं, तथा अनुकूल प्रतिकूल उपसर्ग आवतां अथवा अन्य तीर्थिकोथी पोते हार्यो नहीं; एवो समर्थ (प्रभु) निरालंबनताने धारण करे; पण ते आ संसारमां मातापिता, स्त्री विगेरेनुं अवलंबन न चाहे; तथा तीर्थिकरनी आज्ञा बहार वर्तवामां नरक विगेरेमां जवातुं हे. एवुं भाववामां समर्थ थाय; प्र०—पण कयो पुरुष परिषह उपसर्गाने जीतनारो हे ? तथा कोइथी पण, न हारीने निरालंबनपणुं लेवामां समर्थ थाय ? आवुं शिष्य पूहे तो नीर्थिकर, सुधर्मास्वामी अथवा आचार्य तेने कहे हे:—

उ०—जेणे मोक्षने लक्ष्यमां राह्यो हे, ते महापुरुष लघुकर्मवाळो मारा उपदेशथी बहार न होय. माटे अबहिर्मन (स्थिरचित्तवाळो) हे, ते सर्वज्ञना उपदेश प्रमाणे चाले.

प्र०—पण, तेना उपदेशनो निश्चय केवी रीते थाय ? के, आ जिनेश्वरनो हे ?

उ०—प्रकृष्टवाद ते, प्रवाद हे. आचार्यनी परंपराए चालेळो; तेने सर्वज्ञना उपदेश तरीके जाणीले अथवा अन्य मतवाळानी अणिमादि आठ प्रकारनी लल्लिध (ऐश्वर्य) देवीने पण तीर्थङ्करना नचनथी बहार मन न करे, पण तेवाओने इन्द्र जाळीया जेवा ठगानारा जाणीने तेमहुं अनुष्ठान तथा तेमना वादो (वचननो) ने विचारे (परिक्षा करे)

प्र०—केवी रीते ? उ० — ‘पवाएण पवायं जाणिज्जा’ पकृष्टवाद ते पवाद ‘सर्वज्ञ वाक्य’ छे, ते पवादवढे बीजा तीर्थिकोना पवादनी परिक्षा करे, जेमके वैशेषिको तेनु भुवन विगेरे करानारने इश्वर माने छे, कहे छे के:—

अन्यो जंतुरनीशः स्यादात्मनः सुखदुःखयोः । ईश्वरप्रेरितो गच्छेत् स्वर्गं वा श्वश्रमेव च । १॥

बीजो जीव पोतानुं सुख दुःख भोगववा असमर्थ छे, पण इश्वरनी प्रेरणा थलां ते स्वर्गो अथवा नरकमां जाय छे.

आवा पवादोने जिनेश्वरना पवादवढे विचारवा जेमके आकाशमां इन्द्र धनुष्य विगेरे विससा परिणामे परिणमीने पोताने रूपे वनेलां छे, तेनो बनावनार जुदो इश्वर विगेरे कारणनी कल्पना करवामां अति प्रसंग आवसे, तथा घटघट विगेरेमां दंड चक्र चीवर (कपडुं) पाणी कुंभार तुरी वेम शंलाका कुविद विगेरेना व्यापारथी आंतरा विना मळता आत्मलाभवाळाने सुकी तेने वदले नहीं देखाला एवा इश्वरथी पदार्थी बने छे एवी कल्पना करतां रासभ (गथेडा)ने पण कर्ता कां न गणवो ?

वादीनो उत्तर—तनुकरण विगेरेमां पण पोतानुं करेछुं कृत्य अने तेथी बन्धाएछुं कर्म तेना विना अवंध्य छे. पण पोताना कर्मनी विचित्रता छे. कर्मनी उपलब्धि सिवाय आवुं क्यार्थी होय ? जैनाचार्य कहे छे, जो तमे एम मानो तो बन्नेमां ते समान कथन छे, वळी कारणरूप माता पित्ता एरु छलां अपत्यनी विचित्रता देखवाथी अधिक निमित्तवढे भाववुं, अने ते इश्वरनो स्वीकार करवा करतां अदृष्ट (नशीब) नेज इच्छवुं सारं छे ? कारण के तेना विना सुख दुःख सुभग दुर्भग विगेरे जगत्नी विचित्रता न होय ! हवे सांख्य मतवाळा कहे छे.

सत्त्व, रज, तमः ए वधानी साम्यअवस्था प्रकृति छे. प्रकृतिथी महान, तेथी अहंकार, तेथी अग्यार इन्द्रियो, तेथी पांच तन्मात्र, तेथी पंचभूत, अने तेथी बुद्धि, ए विचारेल अर्थने पुरुष (आत्मा) जाणे छे. पण, ते पोते अकर्ता, अने निर्गुण छे. ते प्रमाणे प्रकृति करे छे, अने पुरुष भोगदे छे. त्यारपछी, कैवल्य अवस्थायां हुं दृष्टा हुं. एवं निवर्त (दूर थाय) छे. विगेरे तेमनुं मानवुं शुक्ति विकळ होवाथी तेमना आंतरा विनाना भिवोज मानसो, कारणके, प्रकृति अचेतन होवाथी केवीरीते आत्माना उपकार मादे क्रियानी प्रवृत्ति करसो ? अने हुं दुःख देनारो हुं. एवं आत्मा देखीने पोताना उपकारनी प्रवृत्ति पोते न करे ? कारणके प्रकृति अचेतन होवाथी तेने विकल्प थवानो संभवज नथी; अने प्रकृति जो, नित्य होय; तो, प्रवृत्तिनी निवृत्तिना अभाव थइ जाय; अने पुरुषनुं कर्तापणुं न होय; तो, संसारथी उद्वेग, अने मोक्षनी उत्कंठा विगेरेनो अभाव थसो. कहुं छे के:—

न विरक्तो न निर्विणो, न भीतो भवबंधनात् । न मोक्षसुखकांक्षी वा, पुरुषो निष्क्रयात्मकः ॥१॥

ते विरक्त नथी; खेद पासेजो पण नथी; तेम, भवबंधनथी डरेजो नथी; अथवा, मोक्ष—सुखनो आकंक्षी नथी. एवा गुणवाज्यो क्रियारहित पुरुष छे. तेनो उत्तर जैनाचार्य कहे छे:—

कः प्रव्रजति सांख्यानं, निष्क्रिये क्षेत्रभोकरि । निष्क्रियत्वात्कथं वाऽस्य, क्षेत्रभोक्त्वत्वमिष्यते ॥

आत्मानिष्क्रिय छे.त्यारे,सांख्यमतयां दीक्षा कोण छे छे? तथा क्षेत्र भोगनायां निष्क्रियपणाथी तेहुं क्षेत्र भोगवहुं केवीरीते इच्छे छे? बौद्धमतवाका वधु क्षणिक माने छे. तेनो उत्तर:—

जो, अन्वय रहित विनाश थाय; तो प्रतिनियतकार्य कारणभाव सिद्ध न थाय; पण एक संतान परंपराथी सिद्ध थाय छे. तेवुं तमारुं कहेवुं भण्या विनाना जेवुं छे ! कारणके संतानवाळाना व्यतिरेक (अभावथी) कोइपण संतान नथी, अने संताननुं सूळ पूर्व कालमां रहेवा पणुं छे, तेज कारण होय तो वयुं ए वयांतुं कारण थरो, कारण के वधाने पूर्व कालमां रहेवापणुं छे, तेथी तमारुं कहेवुं माल विनातुं छे, वकी.

यजातमात्रमेव, प्रध्वरतं तस्य का क्रिया कुंभे? । नोरपन्नमात्रभने क्षिप्तं सन्तिष्ठते वारि ॥१॥

जो घडो बनवा वखतेज नाश पासेतो ते घडामां शुं क्रिया थइ? अने उत्पन्न थतांज घडो भांगेतो तेमां नांखेळुं पणी रही अके नहि: **कर्त्तरि जातविनष्टे धर्माधर्मक्रिया न संभवति । तद्भावे बंधः को बन्धाभावे च को मोक्षः? ॥२॥**

धर्म पाप करनारो तुर्त नाश पासे, तो धर्म अने अधर्मनी क्रिया संभवे नहि, अने धर्म अधर्मना अभावमां पुण्य पापनो बंध न होय, अने ते बंधना अभावमां मोक्ष कोनो थाय ?

बृहस्पति (चार्वार्कि) मतवाळा फक्त पांच भूताने मानता होवाथी जीव पुण्य पाप परलोकनो तेमने अभाव थतां निर्मर्यादापणे अमानुषी कृत्य करनाराने तिरस्कार पदयुक्त कृत्यवाळाने उत्तर न आपवो, तेज उत्तर छे [तेमनी जोडे वात करवी अयोग्यछे] वकी.

अत्रह्यचर्यरर्केमूढः परदारघर्षणाभिरतैः । मायेन्द्रजालविषवत्प्रवर्त्तितमसत्किमप्येतत् ॥१॥

दुराचारमां रक्त अने परस्त्री आलिंगनमां मूढ वनेळा इंद्र जालना जुटा पदार्थ माफक आ लोकोए एवुं असत् संतव्य फेळावुं छे? वकी.

મિથ્યા ચ દૃષ્ટિર્ભવદુઃસ્વધાત્રી, મિથ્યામતિશ્રાપિ વિવેકશૂન્યાઃ ॥

ધર્મર્મયિ ચેષાં પુરુષાધમાનાં, તેષામધર્મો મુવિ કીદશોઽન્યઃ? ॥૨॥

મતોનું દુઃસ્વ આપનારી માતા સમાન જેમનું મિથ્યાદર્શન છે, અને જેમની મિથ્યા મતિ વિવેક રહિત છે, કે જે અધમ પુરુષોણ ધર્મને નામે અધર્મ ફેલાવ્યો છે, તેવાને પૃથ્વિમાં વીજો કયો અધર્મ હશે ?

આ પ્રમાણે વધા તીર્થોના વાદમાં જિનેશ્વરના મતને અનુસરીને વિચારી અસત્યને દૂર કરવું; અને તે સર્વજનું વચન તથા કુમારગંધું વરોચર નિરાકરણ કરીને તીર્થોનોના પ્રવાદોને આ વતાવેલા ત્રણ પ્રકારવડે જાણે. (૧) મનમ કરવું તે મતિ છે, અને જ્ઞાનઆવરણીયકર્મના ક્ષય ઉપશમથી કોઈપણ જ્ઞાન થાય; તે જ્ઞાનજ છે, તેથી ઇકદમ તેજ ક્ષણે મનના કારણે મતિશ્રુત અવધિ કે, વીજાં જ્ઞાનવદે (નિર્મલતા થતાં) પોતે વીજા વાદોની પરીક્ષા કરે; અથવા જ્ઞાનવદે જોવાયોગ્ય તેમને શોભનિક તથા, મિથ્યાત્વ કલંકરહિત નિર્મલમતિ (બુદ્ધિવદે) વધા વાદોના સ્વરૂપને જાણે, કારણકે, સ્વ, અને પરનું સત્યપણું વતાવનાર મતિ છે. કોઈ વચ્ચતપર [તીર્થકરના] ઉપદેશથી જાણે; અથવા તેમનું કહેલ આગમ મળીને તેનાવડે જાણે; અથવા તેથી ન સમજાય; તો, વીજા આચાર્ય વિભેરે પાસે સાંમલીને યથાવસ્થિત વસ્તુના સજ્ઞાવને જાણે; અને જાણીને શું કરે ? તે કહે છે:—

નિદેસં નાદ્વદેજા મેહાવી સુપલિલેહિયા સ્વઓ સ્વપ્પણા સમમં સમમ્પણાય, इह
આરામો પરિવણ નિદિયદી વીરે આગમેણ સયા પરક્કમે (સૂ. ૧૬૮)

(निर्देश कराय ते) निर्देश एटले, जिनेश्वर विगेरेनो जे उपदेश (साधुना हित माटे) छे, तेतुं मर्यादांमां रहेल मेधावीसाधु उलयन न करे. शुं करीने ? ते कहे छे:—

सारीरीते विचारीने के, आ त्यागवाजोग अन्य मनो छे, अने आ ग्रहण करवायोग्य तीर्थकरनां वचन छे, तेने पोते वधा प्रकारेथी एटले, इव्यक्षेत्र काळभाव—रूपे तथा सामान्य विशेषरूपे—वधा पदार्थीने उत्तम मति विगेरे त्रण ज्ञान थी विचारीने हमेशां आचार्यनी आज्ञा पालन करनारो वनी वधां दर्शनोतुं निराकरण करे.

प्र०—शुं करीने ? ते कहे छे:—वधा मतोतुं तत्त्व सारीरीते जाणीने, विचार करी निराकरण करे. वकी, आ मनुष्यलोकमां संयममां रति करे; कारणके, परमार्थथी विचारतां एकांत अत्यंत रति (आनंद) संयममां छे, ते संयमने पूरो पाळवानी परिज्ञावडे जाणीने तेमां लीन रही इन्द्रियोनी उन्मत्तता रोकनीने संयम—अनुष्ठानमां रक्त रहेतुं. 'किभूत' विगेरे. अहीं निष्ठित ते मोक्ष छे, तेनो अर्थी वन, अथवा निष्ठित ते पूरो. अने अर्थ ते, प्रयोजन छे. ते प्रयोजनवाळो वीर ते कर्मने विदारण करवामां तैयार वनीने सर्वज्ञे वतावेला आचार विगेरेमां सर्वकाल यत्न करीने कर्मरिपुने जीत अथवा, मोक्षमार्गमां गमन कर.

आ प्रमाणे सुधर्मस्वामी कहे छे. आचो उपदेश वारंवार श्रामाटे करे छे ? तेतुं कारण कहे छे:—

उहुं सोया अहे सोया, तिरियं सोया वियाहिया । एए सोया विअवखाया, जेहिं संगंति पासह ॥१॥

श्रोतो एटले, कर्म आववानां आत्मवद्वारो छे, ते दरेक भवना अभ्यासथी विषयोना अनुबंध विगेरेथी जीवकर्म पुद्गळोने लीधांज

करे छे, तेथी उंचे श्रोत ते वैमानिक देवीना अभिलाशनी इच्छा, अथवा वैमानिक देवना सुखतुं निगणुं करवुं; के, मने तेवुं मळो. अथो (नीचे) भवनपतिना देवीना सुखनो अभिलाष, अने तिर्यकलोकमां व्यंतर तथा मनुष्य तथा तिर्यचना विषयोनी इच्छा थाय छे, ते श्रोतो छे, अथवा पद्मापकता आश्रयथी उंचे ते पहाडनां शिखरो तथा मोटां मेदान होय; अथवा मोटा थोथ पडता होथ. नीचे नारकी तथा नदीना किनारानी उंडी गुफाओंनां स्थान तथा तिर्यकलोकमां आराम सभा विगरे जीवोने उपभोगनां स्थानो छे, ते बनावटी के स्वभाविक वने छे अथवा कर्म परिणतिना कारणे मळेयां छे, ए वथां (रमणिक अरमणिक) स्थानो कर्मना आसवद्वारा होवाथी श्रोतनी माफक श्रोतो छे, आ त्रणे प्रकारोवडे तथा बीजां पापोनां उपादानना हेतुवडे प्राणीओनी थती आसक्तिने अथवा कर्मना अनुसंगने जो, ते कर्मना अनुसंगना कारणथीज ए श्रोतो छे. एम कहे कहे छे, मोटे तुं सदा जैनागम प्रमाणे उद्यम कर.

आवटं तु पेहाए इरथ विरमिज वैथवी, विणइत्तु सोयं निक्खम्म एस्समहं अकम्ममा

जाणइ पासइ पडिलेहाए नावकंखइ इह आगइं गइं परिन्नाथ (सू० १६९)

राग द्वेष कषाय अने विषयरूप जे आवर्त छे, ते अथवा कर्म वंथनो जे भाव आवर्त छे, तेने जोइने तुं विषयरूप भाव आव-
त्तने वेद (आगम)ने जाणनारो वनीने तेनाथी विरम, अर्थात् आसूवद्वारनो अटकाव कर, बीजी पतिमां “विवेगं किइइ वेदवी”
पाठ छे. एटलेआसूवद्वारने अटकावी तेनाथी यता कर्म वंथनो वेदविद् माणस अभाव करे ? आसूवद्वारना निरोधथी शुं थाय ? ते
कहे छे, आसवद्वारने दूर करवा दीक्षा लइने प्रयास करे, तेज आ प्रत्यक्ष प्रयोजन छे. अने ते आपणी चाछ वातमां सुख्य छे. तेथी

‘आ’ सर्वनाम वांची शब्दथी सूचवुं, के जे कोइ महा पुरुष अतिशयवाळां (उत्तम संयमनां) कृत्य करीने केवो थाय ? ते कहे छे—
 अकर्मा एटले घाति कर्म रहिन वने, (कर्मनो अर्थ घाति कर्म लीथेळ छे) आ घाति कर्म दूर थवाथी ते विशेषर्थी जाणे, तथा सामान्यथी देखे छे, तथा वधी लब्धियां तेने थाय छे, एथी ते पूर्वे जाणे छे, अने पछी देखे छे. आथी क्रमनो उपयोग वताव्यो छे; ते प्रमाणे तेने दिव्य (केवल) ज्ञान उत्पन्न थवाथी त्रण लोकमां माथाना मुकुटना मणि समान (माननीय) तथा सुरासुर नरेन्द्रथी पूज्य वने छे, तथा संसार समुद्रना किनारे पहुँचनारो संपूर्ण जाणेल वनी ते पोते शुं करे ? ते कहे छे, ते जाणवानुं जाणोळा सुर असुर तथा माणसोथी यती पूजाने अनुभवीने पण तेने कुत्रिम अनित्य असार सोपाधिक [इन्द्रजाळ जेवी] मानीने इन्द्रियोना वियोने जीतवाथी उत्पन्न थएल सुखनी निस्पृहताथी तेवी इन्द्रादिनी पूजाने पण तेथो इच्छतानथी, वळी आ मनुष्यलोकमां रह्या छतां केवल ज्ञानथी जीवोनी आगति संसार भ्रमण तथा तेनां कारणाने जपरिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे संसार भ्रमण दूर करेछे, तेना निराकरणथी शुं थाय ? ते कहे छे.

अच्चेइ जाईमरणसस वट्टमगं विकखायराए, सर्वे सरा नियद्वन्ति, तक्का जत्थ न वि-
 जइ, मई तत्थ न गाहिया, ओए, अप्पइट्टाणसस खेयत्ते, से न दीहे न हस्से न
 वट्टे न तंसे न चउरंसे न परिमंडले न किणहे न नीले न लोहिए न हालिई न सु-
 विकखे न सुरभिगंधे न इुरभिगंधे न तित्ते न कडुए न कसाए न अंबिले न महुरे न

कवखडे न मउए न गरए न लहुए न उणहे न निछे न लुक्खे न काऊ न रूहे न
संगे न इरथी न पुरिसे न अन्नहा परिन्ने सन्ने उवमा न विजए, अरुवी सत्ता, अ-

पयरस पयं नरिथि, (सू० १७०)

जाति (जन्म) अने मरणना मार्गना उपादान कारणरूप कर्मने ते केवळी साधु उलंघे छे, अर्थात् वयां कर्मोना क्षय करे छे, अने कर्म क्षय भवार्थी शुं गुण थाय छे, ते कहे छे, विविध प्रकारे प्रधान पुरुषार्थपणे रचेलं शास्त्रोना विषयथी तप अने संयम अनुष्ठाननो विषय अंत मोक्ष आपनार कह्यो छे, ते मोक्ष वधा कर्मना क्षयरप छे, अथवा जे स्थानमां मोक्षना जीवो [सिद्ध भवंगतो] रहेला छे, ते स्थान जे आकाश पदेशमा रहेल छे, तेमां पोते रत छे. (मूत्रमां व्याख्यातनो अर्थ मोक्ष लीथो छे) अने त्यां पोते अत्यंत एकांत वाधा रहित सुखवाळा छे, अने क्षायिक ज्ञान दर्शनरूप संप्रदायी युक्त वनेला अनत काळ रहेवाना छे—(नमुत्युणंमां सिव मयल मरुय मणंत मुक्खेय मन्वा वाह मपुणराविति सिद्धि गइ नाम धेयं टाणं संपत्ताणं नो अर्थ विचारवो.)

प०—त्यां केवी रीते रहेला छे? ते कहे छे त्यां शब्दोनी प्रवृत्ति नथी, अर्थात् शब्दोथी कहेवाय एवी त्यां कोइ पण अवस्था नथी, ते वतावे छे, 'सन्वे' संपूर्ण स्वरो ते अध्ययन (भणवानुं भणाववानुं) जेम अहीं छे, तेम त्यां वाच्य वाचक संबन्धमां उच्चारण पण नथी, कारण के शब्दो तो रूप रस गंध अने स्पर्श समजाववामां कोइ पण कारणे संकेत काळमां ग्रहण कर्या हांग, त्यारे अथवा तेनी तुलनामां पवत्ते छे, पण त्यां सिद्धोने शब्द विनोरेनी प्रवृत्ति नथी. एथीज मोक्ष अवस्था शब्दोथी कहेवाय तेम नथी; फक्त

आचा०

॥६३८॥

शब्दथी कहेवाय तेम नथी, एम नदीं पण उपेक्षणीय पण नथी ते पण कतावे छे,

ज्यां पदार्थनी संबन्ध होय त्यां तेना अद्यवसायना अस्तित्वांमां उह तर्की थाय, पण ज्यां ते नथी त्यां शब्दोनी मवृत्ति केवी रीते थाय ? प्र०—शा माटे त्यां तर्कनी अभाव छे ? ते कहे छे—‘मनन’ करवुं ते मति छे अर्थात् ते मननो ज्यापार छे. अने पदार्थनी चिंता [चिचार] नी चार प्रकारनी औत्पादिका विंगेरे बुद्धि छे. त्यां तेनो ग्राहक नथी. (प्रयोजन नथी) कारण ते मोक्ष अर्थनी स्थामां वधा विकल्पोनी अभाव छे, [त्यां विकल्प थइ शकतो नथी] त्यां मोक्षमां जे जीवो जाय तेओने कोइ पण जातना कर्मोनी अंश छे के अथवा अकर्म वनीने जाय छे, ? तेनो उत्तर—कर्म सहित जे जीवो छे तेमनुं त्यां गमन नथी, एवुं वतावे छे. ‘ओजः’ एकलोज अर्थात् संपूर्ण मलरूप कलंकथी रहित त्यां सिद्ध भगवंत छे, वकी तेमने ओदारिक शरीर विंगेरेनुं अथवा कर्मनुं मतिष्ठान नथी, माटे तेओ अपतिष्ठान छे. एटले मोक्ष अपतिष्ठान छे, ते मोक्षने जाणवामां ‘खेदज्ञ’ (निपुण) छे. अथवा अपतिष्ठान नामनो नरक छे. त्यां तेमने लोकनाडी पर्यंतनुं परिज्ञान छे, तेना आवेदनवडे वधा लोकनी खेदज्ञता वतावेळी छे [सर्वे जीवोनुं तेओ दुःख सुख जाणे छे] सर्व स्वरनुं निवर्तन जे अभिप्रायवडे कहुं छे ते अभिप्रायने हवे प्रकट करे छे. ते परमपदनो अभ्यासी लोकांते कोशना छडा भागे ($\frac{1}{6}$ कोश) जे क्षेत्र छे, तेमां रहेल छे, तेमने अनंत ज्ञान तथा दर्शन छे, ते संस्थाने आश्रयी पोते दीर्घ न थाय, न ह्रस्व थाय, न गोलाकारे न त्रिकोण, न चतुष्कोण, न गोळा जेवो, तेमज वर्णरहित ते काळो नीळां लोहित (लाल) हारिद्र (पीळां) थोळो कोइपण जातनो रंग तेमने नथी, तेम सुरभि के दुरभि गंधनथी, तेम नीखो कडवो कषायळो खाटो मधुर रस नथी, तेमज कर्कश [स्वरवचडो] मृदु गुरु शीत उष्ण स्निग्ध लखो कोइपण जातनो रपर्श नथी, तथा उष्ण शब्दथी कापोत विंगेरे लेइयापण नथी,

अथवा कायवाळो नथी, एटले जेम वेदांवादी कहे छे के, एकज मुक्त आत्मा तेनी कायमां बीजा क्षीण कलेशवाळा पवेश करे छे, सूर्यनां किरणो सूर्यमां समाइ जाय छे, (तेम इश्वरमां वहुं समाइ जाय छे,) तेम जैनमां सिद्धनुं स्वरूप नथी.

बळी न रह (एटले बीज अने जन्मना अर्थमां रह शब्द वपराय छे) एटले कर्म बीजना अभावथी फरीथी तेमने जन्म नथी. पण जेम बौद्धमतवाळा माने छे के पोताना दर्शननुं अपमान थवाथी ते मुक्त परमात्मा पण जन्म ले छे.

दर्शेन्धनः पुन रूपैति भवं प्रमथ्य, निर्वाणमप्यनवधारितभीरुनिष्ठम् ॥

मुक्तः स्वयंकृतभवश्च परार्थ शूरस्त्वच्छासनप्रतिहतेष्विह मोहराज्यम् ॥१॥

जैनाचार्य तेमना मंतव्यथी तेमनुं खंडन करावा जिनेश्वरनी स्तुति करातां कहे छे के, बळेछुं लाकडुं जेम उगी न शके, तेम मोक्षमां गयेला कर्म रहित थएला जीवने जन्म मरण न होय छतां संसारनुं ममर्थन करीने निर्वाण प्राप्त कर्यां पछी मुक्त थइने पण बौद्ध नायक पोतानी मेळे नवो भव लेनार पारकाने (शिक्षा करावा) माटे शूर वनेला तेणे विनां विचारे वीक्षणपणाना अंतवाळुं निर्वाण मान्युं छे (अर्थात् परोपकार करावा दुष्टने दंड देवा पोताना शाशननुं महत्व वधारवा जन्म ले छे) एवा विपरीत बोलनारा जेओ तमारी आज्ञाथी बहार रहेला छे, तेमने विषे मोह राजानुं आहुं प्रवळ राज्य छे! (जैन धर्ममां एहुं मंतव्य छे के मुक्त जीवने फरी जन्म नथी) तथा अमूर्त थवाथी तेने संग न होवाथी ते असंग छे, तथा स्त्री पुरुष नपुंसकनी गणतरीमां नथी. (त्यारे केवा छे ते कहे छे) विशेषथी जाणे ते परित्र छे, तथा सामान्य वरोवर जाणे [देखे] एवी संज्ञावाळो ज्ञानदर्शन युक्त छे. प०—जोस्वरूपथी मुक्तात्मा

ધુતરત્ય નામનું છટું અધ્યયન.

પાંચમું અધ્યયન કહું, હવે છટું અધ્યયન કહે છે, તેનો આ પ્રમાણે સંબંધ છે. ગયા અધ્યયનમાં લોકમાં સારથૂત સંયમ અને મોક્ષ વતાવ્યો છે, અને તે નિઃસંગતા સિવાય સંયમ ન ધોય, તથા કર્મ દૂર કર્યા વિના મોક્ષ ન થાય. તેથી કર્મ દૂર કરવા આ ધુત તે કર્મ ધોવાનું વતાવવા કહે છે, આ સંબંધે આવેલા ધુત નામના અધ્યયનના ચાર અનુયોગ દ્વાર થાય છે, તેમાં પ્રથમ ઉપક્રમ છે. તે ઉપક્રમમાં અર્થાધિકાર વે મેદે છે, અધ્યયનનો અર્થ અધિકાર અને ઉદ્દેશાનો અર્થાધિકાર છે, તેમાં અધ્યયનનો અર્થાધિકાર શ્લા અધ્યયનમાં કહેલ છે, અને ઉદ્દેશાનો અર્થાધિકાર કહેવા નિર્ચુક્તિકાર કહે છે,

પદમે નિયમવિહુણા, કર્મ્માણં વિતિયષ્ તદ્દયમ્મિ । ઉવગરણં સરિરાણં ચડત્થષ્ ગારવતિગસસ ॥૨૫૦॥

પહેલા ઉદ્દેશામાં પોતાના જે સગાં છે, તેઓનું વિધૂન ન (મોહ ત્યાગ) કરવો જોઈષ્. વીજા ઉદ્દેશામાં યાતિકર્મને દૂર કરવાં, ત્રીજામાં ઉપકરણ શરીરને, અને ચોથામાં ત્રણ ગારવને દૂર કરવા તથા ઉપસર્ગ કે સન્માન થાય, તોપણ રાગદ્વેષ ન કરવો, તથા સાધુઓષ્ (પૂર્વે) તે પ્રમાણે કર્મ વિગેરે ધોયાં છે, તે આ પાંચમા ઉદ્દેશામાં વતાવે છે. આ પ્રમાણે અર્થાધિકાર વતાવીને નિષ્લેષો કહે છે, તે ત્રણ પ્રકારનો છે, ઓષ નિષ્પન્નમાં અધ્યયન છે, નામ નિષ્પન્નમાં ધુત નામ છે તેના ચાર પ્રકારે નિષ્લેષા છે, તેમાં સુગ-મનામ સ્થાપના હોડીને દ્રવ્ય અને માવ વતાવવા અદ્ધી (પૂરી) ગાથા કહે છે.

ઉવસગા સમ્માણયવિહુઆણિ પંચમ્મિઉદ્દેસે । દત્તવધુયં વત્થાર્દ, માવધુયં કમ્મ અદ્ધવિહં ॥૨૫૧॥

द्रव्ययुत वे प्रकारे छे, आगमथी अने तो आगमथी तेमां आगमथी युततो ज्ञाता (जाणतारो) होय, पण तेमां ज्ञपयोग न होय अने तो आगमथी तो ज्ञ शरीर भव्य शरीर सिवाय द्रव्ययुत ते कपड विनोरेनी धूळ दूर करवानुं छे. (द्रव्य ते कपडां विनोरेने अने धूत ते मेळ दूर करवानुं छे)

आदि शब्दथी वृक्ष विगोरे फळ माटे धोवानुं छे (सूकां पांढडां विगोरे दूर थवाथी फळ तैयार थाय छे, अथवा विना जरुनी वनस्पति वचमांथी निर्दी काढे छे) अने भाव धूत तो आठे कर्मोने दूर करवा [मोक्ष माटे] उपाय कराय ते छे, [आ अडथी गाथानो अर्थ छे.] फरी आज विषयने सुखासाथी कहे छे.

अहियासितुवसगो, दिव्चे माणुस्सए तिरिच्छे य । जो विहुणइ कम्माइं, भावधुयं तं वियाणाहि ॥२५२॥

उपसर्गोने अतिशे (सारी रीते) सहन करीने कर्म धोवां, एटले देवताना के मनुष्योना के तिर्योना दुःख सुखरूप जे उपसर्गो आवे तेमां सपथाव राखीने जे संसार वृक्षना वीज समान मोहनीय विगोरे कर्मोने दूर करे, ते भाव युत छे; एवुं तुं जाण अथवा क्रिया अने कारकनो भेद नथी, तेथी कर्म शुन्न तेज भावधूत छे, एम जाण नामनिक्षेप कलो हवे त्रीजा सूत्रालापक निष्यन्न निक्षेपमां सूत्रानुगममां अस्वलितादि गुणयुक्त सूत्र कहेवुं ते आ छे:—

ओवूजझमाणे इह भाणवेसु आयाइ से नरे, जस्स इमाओ जाइओ सबओ सुपडिले-
हियाओ भवंति, आयाइ से नाणमणोलिसं, से किइइ तेसिं समुद्धियाणं निक्खित्तद-

पढाणं समाहियाणं पन्नाणमंताणं इह मुत्तिमगं, एवं (अवि) एगे महावीरा विट्परिक्रमंति,
 पासहं एगे अवसीयमाणे अणत्तपद्दे से वेमि, से जहावि (सेवी) कुंसे ह्राए विणिविट्चित्ते
 पच्छन्नपलासे उम्मगं से नो लहइ भंजगा इव संनिवेसं नो चयंति एवं (अयि) एगे
 अणेगरुवेहिं कुत्तेहिं जाया रुवेहिं सत्ता कळुणं थणंति नियाणओ ते न लभंति सुभवं,
 अह पास तेहिं कुत्तेहिं आयत्ताए जाया गंडी अहवाकोढी, रायंसी अवमारियं काणियं झिमियं
 च्चव, कुणियं सुज्जियं तहा ॥१॥ उदरिंच पास मूयं च सुणियं च गिलासणिं वेवइं पीढसपिं
 ष, सिलिवयं महुमेहणिं ॥२॥ सोलस एएयोगा, अक्खाया अणु पुव्वसो अहणं फुसंति आ-
 यंका, फासा य असमंजसा ॥३॥ मरणं तेसिं संपेहाए उववायं चवणं च नच्चा, परियागं

च संपेहाए (सू० १७२)

स्वर्ग तथा मोक्ष, तथा तेनां कारणो तेमज संसारनां कारणोने आवरणरहित (केवल) ज्ञानना सद्भावथी जे माणस जाणे; अने
 आमत्स्यं (मनुष्य) — लोकायां मनुष्याणो धर्म समजावे एट्ठे, ते पातिकर्म दूर थयां पळी; पाते अयातिकर्मरूप [शरीरधारी] मनुष्य-
 पणायां रहेलां थरो धर्म कहे छे:—

पण जेम-बौद्धमतमां भीत विगोरेमांथी पण धर्मोपदेश प्रकट थाय छे. तेम जैनधर्ममां नथी; अथवा जेम, वैशेषिकोतुं उल्लुक् भाववढे पदार्थोतुं वताववापणुं छे, एतुं अमारं (जैनशासन) नथी.

प०—शा माटे ? उ०—धातिकर्म क्षय थया पछी, केवल ज्ञान उत्पन्न थनाथी मनुष्यपणासां रहेलाज (तीर्थंकर) पोते कृतार्थ थया छतांपण, जीवोना हितने माटे मनव्य अने देवोनी सभासां धर्मनो उपदेश करे छे.

प०—तीर्थंकरज धर्म कहे छे, के, बीजो पण कहे छे ? उ०—बीजो पण कहे छे. जेने विशिष्टज्ञान होय, अने सारीरीते पदार्थनो परिच्छेदक होय; ते धर्मोपदेश करे छे. ते कहे छे:—

जेओ अतींद्रियज्ञानि छे, अथवा श्रुत केवळी छे, तेओ धर्म कहे छे. एतुं शस्त्रपरिज्ञा नामना १ला अध्ययनमां कहेल छे. (तेथी आ पत्यक्ष सूचक-विशेषणवढे सूचवयुं के,) ते विशिष्टज्ञानीए आ एकेन्द्रिय विगोरे जातीओ वधा प्रकारो एटले सूक्ष्मवाटर पर्याप्त—अपर्याप्तरूपे बरोबर रीते [शंकारहित] जाणेळी छे, तेज सायु धर्म कहे छे. पण, एम न जाणनारो बीजो (अजाण) धर्म कहेलो नथी. तेज कहे छे:—

‘स आख्याति’ ते तीर्थंकर अथवा सामान्य केवळी अथवा अतिशय ज्ञानी [जातिस्मरण-ज्ञानवाळ, अवधिज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी] अथवा श्रुत केवळी होय ते कहे छे. प०—युं कहे छे, जेनावढे जीव विगोरे पदार्थो जणाय छे, ते ज्ञान मति विगोरे पांच प्रकारतुं छे, ते, प०—ते ज्ञान केवुं छे ? उ०—तेवुं बीजे नथी, माटे ‘अनीदशं’ छे, अथवा सकल [वधा] संसयने दूर करवावढे धर्म संभ्रजावता तेज पोतातुं अनन्य सदश (अनुपम) ज्ञान वतावे छे, [अर्थात् संसारी] ज्ञानथी तृष्णा वंधे, पण तेमना उपदेशना ज्ञानथी

તુળાની જાડ દૂર થાય માટે તે જ્ઞાન અનુપમ છે] મ૦-તેઓ કોને ધર્મ કહે છે ? હ૦-તે તીર્થઙ્કર ગણધર વિગેરે યથાવસ્થિત ભાવો (પદાર્થો) ને ધર્મચરણ માટે યોગ્યરીતે જે પુરુષો હઠેલા હોય, તેમને કહે છે, અથવા દ્રવ્યથી યરીરવહે, અને ભાવથી જ્ઞાન વિગેરેના ઉત્સુક બની વિનય સહિત (હમા યંયા હોય) તેમને ધર્મ કહે છે.

સમોસરણનો વિનય

સમોસરણમાં સ્ત્રીઓ વન્ને પ્રકારે હમી થઈને વિનય પૂર્વક સાંમળે છે, અને પુરુષો હમા થઈને અથવા વેઠા રહીને પણ સાંમળે પણ ભાવથી ઉત્સુક હોય; તેમજ વીજા હઠેલાં જીવો, તથા દેવતા અને તીર્થિચ વિગેરેને ધર્મ સંમળાવે છે. ઇદહુંજ નહિ પણ જેઓ ભાવ વિના ફક્ત કૌતુક વિગેરેથી આવી સાંમળે, તેમને પણ ધર્મ કહે છે, ભાવથી હઠેલાનું વિશેષથી કહે છે.

મન વચન કાયાને જેમણે કવજે લીધાં છે, ઇદલે મન વચન કાયાથી જીવોને દુઃખ દેવારુપ જે દંદ છે, તે દૂર કરવાથી તે નિશ્ચિપ્ત દંદવાઝા [સંયમ પાલનારા] છે. તથા તપ સંયમમાં હદ્યમ કરવાથી સમાહિત (શાંત) અંતઃકરણવાઝા છે, તેમને જિનેશ્વર વિશેષથી ધર્મ કહે છે, તેજ પ્રમાણે પ્રકર્ષથી જાણાય તે પ્રજ્ઞાન છે, તેવું જ્ઞાન ધરાવનાર બુદ્ધિમાનોને આ મનુષ્યલોકમાં જ્ઞાનદર્શન ચારિત્રરુપ સુક્તિ માર્ગ છે તે વતાવે છે, આ પ્રમાણે સમોસરણમાં સાક્ષાત્ ધર્મ સંમળાવતાં કેટલાક લઘુકર્મી જીવો (પૂર્ણ શ્રદ્ધા યતાં) તેજ વરવતે ચારિત્ર ગ્રહણ કરે છે, પણ વીજા તેમ ચારિત્ર લેતા નથી, તે કહે છે, ઇદલે હપર કહ્યા પ્રમાણે કર્મવિવર જેમને મળ્યું તેવા કેટલાક મધ્યાત્માઓ જિનેશ્વર પાસે ધર્મ સાંમળતાંજ સયમ સંગ્રામની ટોચે પરાક્રમ વતાવે છે, અથવા પર તે ઈન્દ્રિયો અથવા કર્મ શત્રુને જીતવા પરાક્રમી વને છે, (અપિ શબ્દનો અર્થ 'ચ' છે, અને 'વ' નો અર્થ વાક્યનો ઉપન્યાસ કરવા માટે છે) હવે તેથી

હલદું કહે છે. તીર્થઢ્કર પોતે વધા સંશયને છેદનારા ધર્મ કહે છે, હઠીં કેટલાકને પ્રવલ મોહના ઉદયે ઘેરી લેવાથી સંયમમાં સ્વેદ પામતા રહે છે, (કાંતો સંયમ લેતા નથી, છે, તો પૂરો પાલતા નથી) તેવાને તમે જુઓ [ગુરુ શિષ્યને કહે છે] તે વહોલા કર્મી સંયમમાં દુઃખ પામતા જીવો કેવા છે. તે કહે છે, આત્માના હિતને માટે જેમની મજા [બુદ્ધિ] કામ કરતી નથી, તે અનાત્મ મજાવાલા (કુબુદ્ધિવાલા) છે, પ્ર૦—તેઓ શા માટે સંયમમાં સ્વેદ માને છે? હ૦—હું કહું છું. અહીં દષ્ટાંત વહે સમજાવે છે કે શા કારણે તેઓ સ્વેદ પામે છે. [સૂત્રમાં 'સે' શબ્દ 'તે' ના અર્થમાં છે, 'અપિ' શબ્દ 'વ'ના અર્થમાં છે, અને તે વાક્યના ઉપન્યાસ માટે છે]

કુંડના કાચવાનું દષ્ટાંત.

કોઈ કાચવો મોટા કુંડમાં વિનિવિષ્ટ[પ્રેમી]ચિત્તવાલો વનીને મુદ્ધ વનેલો અને પલાશ (કોમક પાંદડાંવડે)ઠંકાયલો(તથા સૂત્રમાં પ્રાકૃતના નિયમ પ્રમાણે વ્યત્પય કરવાથી)ઉન્માર્ગ ણટલે, ઉપર આવવાનાં વિવર(હિદ્ર)ને મેલવતો નથી; અથવા, જેનાવડે ડંચે કુદાય; તે ઉન્મલ્લય છે. અથવા, ડંચે જવાય તે, ઉન્માર્ગ છે, તેવો ઉન્માર્ગ મેલવી શકતો નથી. અર્થાત્ જે કુંડમાં તે કાચવો રહેલ છે, તે, પાણી ઉપર પાંદડાં વિગેરે હવાઈ જવાથી વીલકુલ ઠંકાઈ ગયો છે. તેથી તે કાચવો વહાર આવી શકતો નથી. આ કહેવાનો આ સાર છે:—

કોઈ મોટા કુંડ ઠોજ] એક લાલ જોજનના વિસ્તારવાલો છે, અને તે અતિશે શેવાલના શુંદથી કઠણ વની ગયેલા જાલોના સમૂહથી ઠંકાઈ ગયલો છે, અને તે કુંડના જુદા જુદા સ્પવાલા કરિ મગર, માહલાં, વિગેરે જલચર જીવોનો આશ્રય છે, તેના મધ્ય ભાગમાં કુદરતીજ એક ફાટનું વાહું પડેલું હતું. જેમાં ફક્ત કાચવાની ગરદન ડંચે આવી શકે; તેવા કુન્દમાંથી એક કાચવાણ પોતાના ડોલાંથી જુદાં પહતાં વિયોગથી આકુલ વનીને આમ તેમ ગરદન ફેરવતાં કોઈપણ રીતે તેવી મવિતવ્યતાના યોગથી તે કાળામાં પો-

तांना गरदनने बहार काढी; ते समये त्यां तेणे शरदृक्कतुना चंद्रनां चांद्रणार्थी क्षीरसागरना पाणीना प्रवाहथी छवाह रहेंछं शोभा-यमान बनेछं तथा, खीलेळां कुमुदना समूहथी पूजा करावा जेवा उजोळा ताराओथी भराह गयेछं आकाश जोयुं.

आवुं देखीने ते घणो खुश थयो; अने तेना मनमां आ प्रमाणे संकल्प थयो के—मारा सहचारी मित्रो आ स्वर्गसमान पूर्व न देखेछं मनोरथ (विचारमां) पण, न कळी शकाथ; तेवुं ते काचवाओ जुए, तो बहु सारं थाय. आ प्रमाणे विचारी शीघ्रताथी पोताना बन्धुओने शोधवा माटे भटकयो; अने तेमने मळीने तेमने तेवुं बताववा माटे पेळुं छिद्र शोधतो आम तेम भटके छे, छतां, होजनी विस्तीर्णताथी, तथा जीवोनो समूह त्यां घणो मोटो छे, तेथी ते छिद्र मेळवी शकयो नाहि; पण, त्यांज ते, (विनादेखे) मरण पाप्यो. तेनो सार आ लेवानो छे के—संसाररूपी—होज छे. तेमां जीवरूपी—काचवो छे, कर्मरूपी—चीकणी सेवाळ छे, तेमां छिद्र समान—मनुष्यजन्म, तथा आर्षक्षेत्र सुकुळमां जन्म मळवो; अने सम्यक्त्वनी प्राप्तिरूप—सुंदर चन्द्रबालुं आकाशतळ मेळवीने मोहना उदयथी पोतानी ज्ञाति माटे, अथवा विषयस्वादना उपयोग माटे सारां संयममां अनुष्ठान न करतां, सफलता (मोक्षने) प्राप्तो नथी; अने तेवीरीते वरव गुमावी; ते सामग्री गुमावी देवाथी पाळोकाचवाना विवर माफक कयांथी तेवी उत्तम सामग्री मेळवी शके ?

आ कारणथी गुरु उपदेश आपे छे के, हे भव्य ! संकडो भवोमां पण, दुष्पाप्य एंवुं कर्मविवररूप—सम्यक्त्व पापीने एकक्षण मात्र पण, तमार प्रमादवाळा न थवुं. फरीथी पण, संसारलुब्ध—जीवोवुं बीजुं दृष्टांत करे छे:—

‘भंजगा’—दृक्षो पोते ठंड, ताप, धुजारो [कंपवुं] छेदन शारवा (डाळीओवुं) खेचवुं; क्षोभ प्रमादवो; मरदवुं; भांगीनाववुं. एवां अनेक उपद्रवोने सहैवा; छतां पण, पोतानां स्थानने तेमां स्थिर बनीने ते छोडतां नथी. ते प्रमाणे साधुने बोध आपे छे के,

ए वृक्षां प्रमाणे जेओ कर्मथी भारे छे, तेवा मोहबंध-जीवो अनेक उंचनीच कुळमां उत्पन्न थइने धर्मचारित्रने योग्य पोते होवा छतां पण रूप विगेरेनी चक्षुइन्द्रियोनी अनुकुळतामां, अने तेज प्रमाणे मथुर अवाज विगेरे विषयोमां शुद्ध बनी शरीर मननां दुःख भोग-वना छतां; राजाना उपद्रवथी पीडावा छतां, अने अग्निदाहथी बधुं बळी गयेला जेवा बनवा छतां, अने जुदा जुदा निमित्तथी अनेक आधि (चिंतावाळा) छतां पण सकळ (बधां) दुःखोना घरसमान—गृहवासनुं कर्म छोडवा समर्थ यत्ता नथी; पण, घरमां रही-नेज तेवां दुःखो आवतां दीन स्वरे रडे छे, अने बोले छे के, “ हे बाप ! हे मा ! हे दैव ! आवा अवसरे तमने आहुं दुःख देवुं योग्य नथी ! तेज कहां छे के:—

किमिदम चिन्तित मसदृश, मनिष्ठ मतिकष्टमनुपमं दुःखं ॥ सहस्रैवोपनतं मे, नैरधिकस्येव सत्वस्य ॥१॥

न चिंतवेछुं अजापवीवाळं अनिष्ट, तथा अनुपम आहुं (भयंकर) दुःख जेम नारकीना जीवने आवे; तेम मने एकदम कथांथी आवी पडचुं छे ! विगेरे, ते बोले छे.

अथवा रूप विगेरेमां आसक्त थएला चीकणां कर्म बांधीने नरक विगेरेमां उत्पन्न थइ त्यां दुःख भोगवतां करुण स्वरे उपर मुजब रडे छे, अने ते प्रमाणे करुण स्वरे रडवथी पण ते रांकडो जीव ते दुःखथी मुकतो नथी, ते बतावे छे. दुःखनुं निदान ते उपादान कर्म छे, तेनावडे दुर्गतिमां उत्पन्न थएला दुःख भोगवतां रडवा छतां पण त्यांथी दुःखनी मुक्ति (छुटकारो) अथवा मोक्षनुं कारण जे संयम अनुष्ठान छे, ते पापी शकता नथी, अने दुःखना छुटकाराना अभावमां संसार उदरमां जुदी जुदी व्याधिओथी वेरायला जीवो आप तेम भसे छे, ते बतावे जे (अथ शब्द वाक्यना उपन्यास माटे छे) हे शिष्य ! तूं जो ! ते संसारी रखडता जीवो

उच्च नीच कुळमां पोताना शुभ अशुभ कर्म भोगववाने गर्यळा (जन्म प्रमोळा) छे, अने ते कर्मना उदयथी आर्वा अवस्थाने भोगवे छे, तेमां तेमने उत्पन्न थता सोळ रोग बतावनार अण झेलोको छे. तेमां (१) प्रथम रोग, वात, पित्त, श्लेष्म अने ते त्रणोना भोगा थवाथी संनिपात एम चार प्रकारे गंड (कंडमाळ) छे, ते गंड जेने होय ते गंडी कहेवाय छे, एटले गंडमाळा नामनो रोग ते संसारी जीवने थाय छे, तेज प्रमाणे बीजा पण रोगो थाय छे, ते बतावे छे, (अथवा शब्द दरेक रोग साथे जोडवो) अथवा राजांसी एटले अपस्मार (क्षयनो भेद) विगेरेनो रोग थाय छे, अथवा अटार प्रकारना कोढ रोगवाळो कोढीयो थाय छे. तेमां सात मोटा कोढ छे, ते आ प्रमाणे

(१) अरुणो (२) दुम्बर (३) निश्यजीव्ह (४) कपाल (५) काकनाद (६) पौण्डरीक (७) दद्रु. (लाल दादर) आ साते प्रकारना कोढो वधी धातुमां प्रवेद्य थवाथी अने असाध्य थइ जवाथी ते साते भयंकर छे.

नीचला अगीआर कोढ क्षुद्र छे.

(१) रथूळआरुक्क (२) महाकुष्ट (३) एककुष्ट (४) चर्मदळ (५) परिमर्ष [६] विसर्ष [७] सिध्म [८] विचर्चिका (काळीदादर) [९] किटिथ (खरसवुं) [१०] पाभा (खस) [११] शतारुक्क (घणी फोह्डीयो.) कुळ नाना मोटा १८ छे, ते सामान्यथी जोतां, वधाए कोढ-रोगो संनिपातथी थाय छे. हतां पण, वात विगेरेना उत्कट दोषथी जुदा जुदा भेदवाळा गणाय छे. तथा, राजांस रोग ते, राज्यक्षमा (क्षय) रोगवाळो, राजांसी (क्षयी) कहेवाय छे, अने ते क्षयरोग संनिपातथी चार कारणे थाय छे. कळुं छे केः—

त्रिदोष जायते यक्ष्मा, गदो हेतुचतुष्टयात् वेगरोधात् क्षयाच्चैव, साहसाद्विषमाशनात् ॥१॥

त्रण दोषवाळो यक्ष्मा (क्षय) नामनो रोग वीर्यना वेगना रोधथी वेगना क्षयथी, साहस करवाथी; तथा विषम [अयोज्य] खोराकथी—एम चार कारणे थाय छे. तेज प्रमाणे अपस्मारनो रोग वात, पित्त अने कफना संनिपातथी चार प्रकारे छे, ते रोग-वाळो सारा माठाना विवेकथी विकल होय छे, तथा भ्रम (चक्री) मूर्छा विगेरेनी अवस्थाने ते रोगी भोगवे छे. कहां छे के,
भ्रमावेशः ससंरम्भो, द्वेषोद्रको हतस्मृतिः अपस्मार इति ज्ञेयो, गदो योरश्चतुर्विधः ॥२॥

भमेळ चडे, मूर्छा विगेरे थाय, द्वेषनो उड्डाळो थाय, विसरी ज्ञानी देव थाय, एम चार प्रकारनो आ 'घोर' अपस्मार रोग जाणवो. तेमां ब्रह्मरंध्र पर्यंत भ्रमण करनारो वायु छे, तेतुं मुख्य स्थान हृदयनो प्रदेश छे. तथा 'काणियंति' अक्षि [आंख] नो रोग वे प्रकारे छे, प्रथमनो गर्भमांज रोग थाय छे, अने बीजो जन्म्या पळी थाय छे, तेमां गर्भवाळाने दृष्टिनो भाग अपूर्ण होय छे, तेने तेज (प्रकाश) जन्मथी आंघळो वनावे. तेज प्रमाणे, एक आंखमांथी तेज जातां काणां वनावे छे. तेज प्रमाणे रक्तपणां जातां, रक्ता—[लालाश आंखमां वधारो होय.] पित्तपणां जातां, पिंगाक्ष [पीळी आंखवाळां] अने श्लेष्मपणाने पापतां शुक्लाक्ष (धोळी आंखवाळो) वने छे, वातने पापतां विकृत आंखवाळो वने छे, अने जन्म्या पळी जे रोग थाय; ते वात विगेरेथी अभिष्यंद—(आंखमांथी पाणी झरवुं) थाय छे. कहुं छे के:—

वातात्पित्तात् कफादक्ता, दम्बिष्यन्दश्चतुर्विधः प्रायेण जायते घोरः सर्वं नेत्रामयाकरः ॥१॥

वान, पित्त, कफ, अने रक्त—(लोही.) ए चारथी अभिष्यंद चार प्रकारे पाणीतुं झरवुं थाय छे, अने प्रायेकरीने तेशीज

आंखना बधा रोगोनो धोर आकर (समूह) थाय छे तथा 'जिमियंति' जाडयता—(चरबीतुं वधुं; अने लोहीतुं पाणी धुं.) तेथी शरीरनां बधां अवयवोतुं परवशपणुं (अवशित्व) छे. [जेने लीधे जोइए; तेम, हाली-चाली शक्याय के, फरी शक्याय नहि] 'कुणियंति' गर्भाधानगा दोषथी एक पग टुंको होय; अथवा, एक हाथ खोडवाळो होय ते कुणिरोग छे. 'खुजियंति' कुबडो. पीठ विगोरेमां कुबडापणुं होय; ते, 'कुबजी छे.' मातापिताना लोही-वीर्यनो दोष होय; तो तेथी, गर्भमां रहेला दोषोथी कुब्ज—(कुबडो) वापन विगोरेनी खोडो शरीरमां थाय छे; कहुं छे के:—

गर्भे बालप्रकोपेन, दौहृदे वाऽपमानिते ॥ भवेत् कुब्जः कुणिः पंगुर्भ्रूको मन्मन एवा वा ॥१॥

गर्भनी अंदर वायुना प्रकोपथी अथवा दोहला न पूरावाथी गर्भमां रहेलो जीव कुबडो कुणिरोगवाळो पांगळो भुंगो के मन्मन रोगवाळो थाय छे, आंमां 'भुंगो' अने मन्मन एकांतरित (पेटना रोग पछीना रोगमां) मुखदोषमां वतावे छे, तथा 'उंदरि च' ति ('च' समुच्चयना अर्थमां छे) वांत, पित्त विगोरेना कारणे उत्पन्न थयेला आठ प्रकारना उदर रोग छे, ते रोगवाळां उदरी छे, तेमां जलोदर रोग असाध्य छे, बाकीना तुर्त थएला दवा करतां मटे तेवा छे, तेना आ प्रमाणे भेदो छे.

पृथक् सप्तस्तरपि चानित्वाद्यैः प्लीहोदरं बद्धशुदं तथैव ॥ आगंतुकं सप्तममष्टमं तु जलोदरं चेति भवंति तानि ॥१॥

बधा अनिल [बायु] विगोरे एकेकथी के समुदायथी १ वायुनो (वातोदर) २ पित्तनो [पितोदर] ३ कफनो (कफोदर) तथा ४ संनिपात (कणोदर) पालीह (बरोळनी गांठ) ५ उदर रोग (काचवी अकृत विगोरे) ६ बद्धशुद [अजीर्णा] ७ आंगतुक ताव साथे उदर रोग (जीर्णज्वर) ८ जलोदर ए आठ रोग पेटना छे,

‘પાસમૂયંતિ’ હે શિષ્ય ! તું મુંગા અથવા મનમન (બોવહું) દોહનરાત્રને જો, ! તે ગર્ભના દોષથી અથવા પહવાદેથી ૬૫ પ્રકારના મુલનારોગો સાત આયતન [સ્થાન]માં થાય છે, તે આયાતન નીચે મુજબ છે, ૧ હોઠ ૨ દાંતનું મૂલ ૩ દાંત ૪ જીમ ૫ તાલવું ૬ કંઠ ૭ વધાં મલીને સાત છે, તેમાં વે હોઠના આઠ રોગ છે, દંતમૂલમાં ૧૫, દાંતના આઠ છે, જીમના ૫ છે, તાલવાના ૯ છે, કંઠમાં ૧૭ અને વધાના સાથે મલીને ત્રણ છે. કુલ ૬૫ છે, ‘સૂણિયંતિ’ શૂન્યપણું શ્વયથુ [સોજાનો] રોગ વાત પિત્ત શ્લેષ્મ સંનિપાત રક્ત અને અભિઘાત (માત્ર લાગવાથી) થી હ પ્રકારનો છે, કહું છે કે:—

શોફઃ સ્યાત્ ષડ્વિધો ધોરો, દોષૈ રુલ્લેધ લક્ષણઃ યસ્તૈઃ સમસ્તૈશ્ચાપીહ તથા રક્તાભિઘાતજઃ

શોફ નામનો હ પ્રકારનો ધોર રોગ જુદા જુદા કે, સામટા દોષથી શરીર ફુલેહું દેવાય; તે હોહીના વિગાદથી થાય છે. ઇટલે, શ્લોક પહેલાં વતાવ્યા પ્રમાણે વાત, પિત્ત, કફ, અને સંનિપાત, રક્ત, અને અભિઘાતથી સોજાનો રોગ થાય છે, તથા “ગિલાસણિતિ” તે ભસ્મક નામનો વ્યાધિ છે. ઝણતા, વાત, અને પિત્તના ઝત્કટપણાથી, અને કફના ન્યૂનપણાથી તથા ગરમી વધારે થવાથી થાય છે, તથા વેવહંતિ તે વાયુથી ઝત્પન્ન થયેલ શરીરનાં અવયવો કંપરૂપ છે, કહું છે કે:—

પ્રકામં વેપતે યસ્તુ, કંપમાનશ્ચ ગચ્છતિ, કલ્પાપ સ્વંજં તં વિદ્યા, ન્મુક્ત સંધિનિબંધનમ્ ॥૧॥

જે ઘળો કંપે, તથા કંપતો ચાલે, તેને સંધિ નિબંધનથી મુકાણ્હો કલ્પાપ સ્વંજ (લકવાનો રોગ). જાણવો. તેજ પ્રમાણે “પિલ્સર્પિષ્ વ તિ” જીવને ગર્ભના દોષથી તે પીઠ સર્પિષ્ણે ઝત્પન્ન થાય છે, અથવા જન્મ્યા પહી અશુભ કર્મના દોષથી થાય છે,

आ रोगिनि स्पर्श इन्द्रियं भान रोगवाली जग्यापुथी नष्ट थाय छे, ते रोगवाळनि हाथमां पकडेळुं लाकडुं खसी जाय छे, अने सूइ घोचे नो पण असर न थाय तथा 'सीलीवयं चि' इलीपद ते पण विगोरेमां कठण पणुं होय छे, ते आ प्रमाणे-वात, पित्त, कफना प्रकरोपथी छातीमां रोग उत्पन्न भइ जंयामां स्थिर भइ धीरे धीरे काळांतरे पगोनो आश्रय करीने सोजो चढावे छे, ते रोगोने इली-पद कहे छे.

पुराणोदक भूमिष्ठाः, सर्वदुष्टु च शीतलाः ये देशास्तेषु जायन्ते, श्लेषदानि विशेषतः ॥ १ ॥

जे देशमां पाणी भराइ रहेळुं होय, अने छए ऋतुमां शीतल (भेज) रहेतो होय, तेवा देशोमां विशेषे करीने इलीपद रोग थाय-छे;

याद्योर्हस्तयोश्चापि, श्लेषदं जायते तृणां; कर्णोष्ठनाशास्त्रपि च, केचि दिच्छन्ति तद्विदः ॥ २ ॥

वे पगमां वे हाथमां माणसोने ते रोग थाय छे, पण केदलाक विद्वानोनो एवो मत छे के ते रोग कान होठ अने नाकमा पण थाय छे. तथा 'मधुमेहर्णि' ति मधु मेह ते 'बस्ति रोग' छे ते जेने होय ते मधुमेहि कहेवाय छे, एदले मधना जेवो तेनो पेसाव होय छे, ते प्रमेह, (परमीआ) ना २० भेद छे, ते असाध्य पणे गणाय छे. तेमां बधाए प्रमेहो प्राये बधा दोपोथी थाय छे, तो पण वात विगोरे उत्कट यवाथी २० भेदो थाय छे, तेमां कफथी १० पित्तथी ६ अने वायुथी ४ थाय छे, अने ए बधा असाध्य अवस्थामां मधुमेहपणामां थाय छे. कहुं छे केः—

सर्वेष्व प्रमेहास्तु, कालेना प्रतिकारिणः मधुमेहत्वामायान्ति, तदाऽसाध्या भवंति ते ॥ १ ॥

बधा प्रमेहना रोगो योग्य समयमां द्वा. न करवाथी मधुमेहपुं पाम्पा पळी असाध्य बने छे.

आ प्रमाणे उपर बतावेल्या सोळे रोगोतुं वर्णन अनुक्रमे कर्युं, ('अथ' अने 'ण' जे छे. ते 'अथ' नो अर्थ गुजरतीमां 'पळी' थाय छे. अने 'ण' तो फक्त शोभा माटे छे) उपर बतावेल्या रोगो संसारी जीवने थाय छे, तथा आतंक एदले शीघ्र जीव जेण रोग जे शूळ विगोरे छे, तथा गाढ महार (जोरथी लागेलो मार) विगोरे दुःख देनारा स्पर्शी कां तो अनुक्रमे आवे अथवा साथे पण थाय, एदले कंइ निमित्तथी आवे अथवा अनिमित्तो आवे, अने ते रोगोथी पीडाय छे. आ रोगोथीज ते मुक्तातो नथी. बीजुं पण ते संसारी जीवने अधिक दुःख थाय छे, ते बतावे छे, ते कर्म रोगथी भारे थयेला गृहवासमां आप्तक थएला मत्तवाळा अ समंजस रोगथी पीडा थतां अंते प्रणित्याग थाय छे. ते विचारीने अने पाळो तेमनो उंपपात तथा च्यवन (देवता जन्म मरणने बदले उपपात च्य-वन कहेवाय छे.) ते कर्मनुं संचित जाणीने एहुं करहुं जोइए के जेथी उपर बतावेल गंड (गुमडां) विगोरे १६ रोग तथा मरणनो तथा उपपातनो संपूर्ण अभाव थाय, कळी मिथ्यात्व अचिरति प्रमाद कषाय योगथी मेळवेल कर्मनो 'अवाधा' कालनी मुदत पळी उदय थाय छे. त्यारे तेनो परिपाक (अनुभव) थाय छे. तेज करीर तथा मन संबंधी दुःख उत्पन्न करे छे, ते विचारीने तेने जड मूळथी काढवा मयत्न करवो जोइए; ते दुःखीओ दीनस्वरे रडे छे. विगोरे ग्रंथ (सूत्र) वडे ऊपपात. तथा च्यवन सुथी बताव्या जतां पण, तेनुं मोटापणुं बताववा जेनावडे प्राणीओने संसारमां निर्वेद (खेद) उत्पन्न थाय; माटे बीजुं सूत्र कहे छे:—

तंभुणोह जहा तथा संति पाणा अंधा तमसि वियाहिया, तामेव सदं असदं अइअच्च उच्चवावय

फासे पडिसंवेएइ, बुद्धेहिं एयं पवेइयं संति पाणा वासगा रसगा उदए उदएचरा आगास गामिणो पाणा पाणे किलेसंति, पासलोए महत्तमयं (सू० १७७)

(आचार्य शिष्यने कहे छे.) ते यथावस्थित (जेवो छे, तेवा) कर्मविपाकने मारी पासे तमे सांभळो. जेमके—नारकी, तिर्यंच, नर, अमर, ए लक्षणवाळी चार गतिओ छे. तेपां नरकगतिमां, चारलाख योनिओ, तथा २५ लाख कुल कोटिओ छे, अने ३३ सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति छे, त्यां परमाधार्मिक देवतानी करेली वेदना छे, तथा परस्पर त्यां रहेला नारकीना जीवो (कुतरा माफक) एक बीजाने दुःख दे छे, तथा स्वभार्मिक पीडा त्यां जे थाय छे, ते आपणाथी कही सकाय तेम नथी. जो के, थोडामां कहेवानी इच्छाथी कहेवाना विषयने पूरो न कहेवाय; तोपण, त्यांना कर्मविपाक कहेवाथी जेम, पाणीओने वैराग्य थाय; तेम श्लोकोवडे वर्णन करे छे.

श्रवण लवनं नेत्रोद्धारं करक्रम पाटनं । हृदय दहनं नासाच्छेदं पतिक्षण दासणम् ॥

कट विदहनं तीक्ष्णापात त्रिशूल त्रिभेदनम् । दहवचदनैः कर्कषोरैः समन्त विभक्षणम् ॥ १ ॥

कानने कापवा; आंखोना डोळा खेंचीकाढवा; हाथपगने छेदवा; ज्वातीने बाळवी; नाक छेदीनाखडुं; दरेकक्षणे भयंकर अवाज करवो; कटविदहन, तीक्ष्ण आपात, त्रिशूलथी भेदवुं; बळनां मोटांवाळा घोर—कक पक्षीओथी वारंवार भक्षण करवुं. आवी मोटी वेदनाओ परमाधामीथी छे.

तीक्ष्णै रसिभिर्दिक्षैः कुन्तै विषमैः परश्वधै श्वकैः परशु त्रिशूलमुद्गरतामरे वासी सुधंतीषि ॥ २ ॥

वकी, देदीप्यमान तीक्ष्ण तलवारोथी तथा विषमभाला, परशुअथ चक्रोवदे, तथा परशु-त्रिशूल मुद्गर, तोमरवासी सुधंतीथी दुःखदेहे.

संभिन्नतालु शिरसश्चिह्नन्न भुजाश्चिह्नन्न कर्णना सौष्टाः भिन्नहृदयोदरान्ना भिन्नाक्षि पुटाः सुदुःखार्ता ॥ ३ ॥

एटले, तालुं-माथुं जुदुं पाडे हे, तथा भुजा, कान, अने होठ हेदीनाखे; तथा जाली-पेट, आंतरदां भेदीनाखे; तथा आंखोना

डोळा खेंची काढवाथी रांक नारकीना जीवो पीडायला हे. ॥ ४ ॥

निपतन्त उत्पतन्तो विचेष्टमाना महीतले दीनाः नेक्षंते त्रातारं नैरयिक्ता कर्म पटलान्धराः ॥ ४ ॥
नीचे पहेला पाळा उलळता जुदी जुदी चेष्टा करता महीतळ (पृथ्वी) उपर दीन थइ रहेला कर्मना पडदाथी अंधा बनेला नार-
कीना जीवो कोइ रक्षकने जोइ शकता नथी.

शार्दूल विक्रिहित,

शार्दूल विक्रिहित,

छिन्धते कृष्णाः कृतान्त परशो स्तीक्षणे न धारासिना; क्रदन्तो विषवीचि (वच्छ) भिः परिवृता संभक्षण व्यापृतैः ॥ ५ ॥

पाटयन्ते क्रकचेन दाश्वदसिन मच्छिन वाहुद्रयाः कुंभीषु त्रपुपान दशतनवो मूषासु चान्तर्गताः ॥ ५ ॥

जमराजा परशुनी तीक्ष्ण तलवार जेवी धारावदे ते रांकडा हेदाय हे, तथा विषना समूहथी भरेला. (हडकायला कूतरा जेवा)

करडवा माटे वीटायला पोकार करता रहे हे, तथा करवतीवडे जेम, लाकडं चीरे; तेम चीराय हे, तथा तलवारवडे तेना बे वाहु
हेदी नाखे हे, तथा कुंभीमां राखीने गरम गरम तरुं पाय हे, तथा मूषमां (घालीने जेम सोनी सोनुं पीगळावे; तेम) घालीने

શરીરમાં વલતા રાસેલા છે.

મુજ્યન્તેજ્વલદમ્વરીષહુતશુષ્ણા જ્વાલાભિરાસાવિણો, દીપ્તિમાં ગારનિષેષુ વજ્ર મધનેષ્વં ગારકે વૃથિષ્તાઃ ॥

દહન્તે વિકૃતોર્ધ્વં વાહુવદનાઃ ક્રદન્ત આર્તસ્વનાઃ પ્રચ્યન્તઃ કૃપણા દિશો વિચારણા સ્નાણાયકો નો મયેત્ ॥ ૬ ॥

વળી, તે નારકીના જીવો વલતા અંબરીય અગ્નિની જ્વાલાવડે પોકાર કરાતા મુંજાય છે, તથા વલતા અંગારાવાલા વજ્રમવન માફક અંગારામાં ડ્રખા થયેલા રાંકડા મોંવાલા ડંચા હાથ કરીને સોસરા અવાજવાલા રહતા વલે છે. અને તે વિચારાં નારકીના જીવો શરણરહિત થઈને વધી દિશામાં (આશ્રય) આપનારને દેસે છે, પણ તેમને વચાવવા કોઈ સમર્થ નથી; વિગેરે, નારકીનાં દુઃખ છે. તથા તિર્યંગતિમાં પૃથ્વીકાયની ૭ લાસ યોનિ છે, તથા વાર લાસ કુલ કોટિ છે. તેમને નીચલી (પીઢાઓ) છે.

સ્વકાય-પરકાયનાં શસ્ત્રોથી પીઢા છે, તથા શીત-ઝળગની પીઢા છે. તેમ પ્રમાણે અપ્કાય (પાણી) ના જીવોની ૭લાસ યોનિ, તથા કુલ કોટિ, તથા જુદી જુદી જાતિનો વેદનાઓ છે. અગ્નિકાયની ૭ લાસ યોનિ, તથા ૩ લાસ કુલ કોટિ, અને પૂર્વ માફક વેદના છે. વાયુની પણ ૭ લાસ યોનિ, તથા ૭ લાસ કુલ કોટિ, અને ઠંડ-ઝળગતાની જુદા જુદા પ્રકારની વેદના છે. પ્રત્યેક વનસ્પતિની દશલાસ યોનિ, સાધારણ વનસ્પતિની ૧૪ લાસ યોનિ, અને વંનેની ૨૮ લાસ કુલ કોટિ છે. તેમાં ગયલો જીવ અનંતકાલ સુધી પણ હેદન-ખેદન મોટન વિગેરેની જુદી જુદી વેદનાને અનુભવે છે.

વિકલ્પદ્રિય, વેદદ્રિય, તીનદ્રિય, ચારદ્રિયની વલે લાસ યોનિ, તથા કુલ કોટિ ૭-૮-૯ લાસ અનુક્રમે છે, અને તે દરેકને ધૂસ તરસ, ઠંડ-તાપ, વિગેરેથી થતું દુઃખ આપણે પ્રત્યક્ષ જોઈએ છીએ. તીર્થ-પંચેન્દ્રિયની ચારલાસ યોનિ છે, અને જલ્ચરની કુલ

कोटि १२॥ लाख छे, पक्षीओनी कुल कोटि १२ लाख, अने चोपगांनी १० लाख, ऊर परि सर्वनी १० लाख, भुन-परिसर्वनी ९ लाख छे, अने जुदी जुदी वेदना तिर्यंचोनी जे छे, ते प्रत्यक्षज छे. कहुं छे के:—

शुत्तद् हिमात्सुष्ण भयादिदानां, पराभि योगव्यसना तुराणां अदो ! तिरश्चामति दुःखिताना, सुखानु वंगः क्लिबार्त्तमेतद् ॥१॥

भूख तरस, ठंड ताप तथा भयथी दुःखी थप्ला तथा पारकाना कवजायां रहेवाना दुःखथी सदा पीडायेल एवा तिर्यंचो जे अति दुःखी छे, तेमनायां सुखनो अनुसंग शोधचो ने तो निश्चै एक वार्त्ता माव छे! (अर्थात् सुखतो लेश पण नथी) विगेरे छे.

मनुष्य गतिमां पण १४ लाख योनि तथा १२ लाख कुल कोटि अने आची रीतनी वेदनाओ छे.

दुःखं स्त्री कुक्षिमध्ये प्रथममिह भवे गर्भवासे नराणां बालत्वेचापि दुःखं मल्लुल्लिततनुः स्त्रीपयः पानमिश्रं ॥

तारुण्येचापि दुःखं भवति विरहजं वृद्धभावोप्यसारः संसारे रे मनुष्या वदत यदिसुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥ १ ॥

प्रथम मातानी कुलयां आ भवयां पहेळं दुःख मनुष्योने गर्भवासयां रहेवानुं छे, अने जन्मया पछी बालपणामां मलथी खर-डायळुं शरीर संबंधी तथा मातुं दुःख पीवानुं दुःख छे, जुवानीयां पण (स्त्री पुरुष तथा दीकरा दीकरी माबाप सगांन्या) विरहनुं दुःख छे, अने वृद्धावस्था तो असारज छे, (माटे ढाह्यो माणस मुग्ध जीवने पूछे छे के) हे मनुष्यो! जो तमने कयांय पण संसारमां थोडं पण सुख देखवानुं होय तो वोळो! (अर्थात् संसार दुःख सागरज छे)

बाल्यात् प्रभृति चरोगै, ईष्टो भिभवश्च यावहिह मृत्युः शोक वियोगायोगै, दुर्गत दोषैश्च नैकत्रिभैः ॥ २ ॥

बालपणमांथीज रोगोवहे इत्यायलो, अने मृत्यु सुधी (मर्ण पर्यंत) शोक वियोग तथा कुयोग वडे तथा अनेक प्रकारना गरी-

बीना दीषो वडे पराभव रहेल छे.

शुक्लरु हिमोष्णानिल शीतदाह दारिद्र्य शोकप्रिय विप्रयोगैः दौर्भाग्य मौल्यार्थान् भिजात्यदास्य वैरुष्य रोगादि भिर स्वतंत्रः ॥३॥

भूख तरस टंड ताप, पवन तथा ठंडो दाह तथा दरिद्रता शोक बहालांना वियोगथी, तथा दुर्भाग्यिणुं, मूर्खता, नीचजालि, तथा दासपणुं, कुरूप, तथा रोगोथी, आ मनुष्यदेह सदा परतंत्र छे.

देवगतिमां पण चारलाख, योनि, २६ लाख कुल कोटि छे, तेमां पण अदेखाइ, विषाद; मत्सर च्यवनभय, शल्य विगेरेथी पीडायला मनवाळाने दुःखनोन प्रसंग छे. सुखनुं अभिमान तो, आभास, मात्र छे. कहुं छे कैः—

देवेषु च्यवन वियोगदुःखितेषु क्रोधेषु मत्प्रदनाति तापितेषु आर्या नस्त दिह चिचार्यं सं गिरन्तु यत्सौख्यं किमपि निवेदनीयमस्ति देवो, च्यवन, तथा बहालांना वियोगथी दुःखी छे, क्रोध, इष्यां, अहंकार, कामदेवथी अति पीडायला छे. तेथी हे आर्य !

(उत्तम) पुरुषो ! अर्ही कंडपण सुख वर्णवनायोग्य होय; ते विचारीने कहो; (विगेरे समजहुं.)

तेथी, आ प्रमाणे चार गतिमां पडेला संसारी जीवो जुदा जुदा रूपे कर्मविपाकने भोगवे छे, तेज सूत्रकार बतावे छे. 'संति' प्राणीओ विद्यमान छे, तेओ चक्षुइंद्रियथी विकल ते द्रव्यअंधा छे, अने सारा—माठा विवेकथी रहित भावअंध पण छे. तेओ नरक-गति विगेरेना द्रव्यअंधकारमां तथा मिथ्यात्व, अतिरति, प्रमाद, कषाय, विगेरेना कर्मविपाकथी मळेला भावअंधकारमां पण रहेला (शास्त्रकारे) वर्णन्या छे. 'किं च' वजी, तेवी, कुछ (कोड) विगेरेनी अधम अवस्थामां, अथवा एकेंद्रियनी, अथवा अपर्याप्ति अव-स्थाने एकवार अनुभवीने पाहुं कर्म ऊदय आवतां तेमज, अवस्थाने चारवार अनुभवीने ऊच-नीच तीव्रभेद दुःख विरोधना स्पर्शीने

जीव अनुभव छे. आ वधुं तीर्थकरे कहेछं छे. ते कहे छे.— आ वधुं तीर्थकरे पकर्षथी अथवा प्रथमथी कहेछं छे, माटे प्रवेदित छे. तथा हवे पठी, कहेवातुं पण तेमनुं कहेछं छे. 'संति' जीवो विद्यमान छे. एटले, (वास थातुनो अर्थ बन्द, तथा कुत्साना अर्थमां छे. माटे,) जेओ वास करे छे, ते वास ना (बोलनारा) भाषा लडिब पायेला बेइद्रिय विगेरे जीवो पण छे. तेज प्रमाणे रसने अनुसारे जनारा ते कडवो—तीखो कषायलो विगेरे रसने जाणनारा एटले, मनवाळा संगी—जीवो पण छे. (आ प्रमाणे संसारी जीवोनो कर्मविपाक विचारीने महाभय जाणवो;) तेमज ऊदक—(पाणी) रूप—एकेंद्रिय जीवो छे. पर्याप्त—अपर्याप्त अवस्थांमां, तथा ऊदकमां चरनारा ते पोर, छेदनक, लोड्डणक विगेरे तस जीवो छे, तथा माछलां, काचवा विगेरे पण छे. तेमज, स्थक उपर जन्म-नारा. अने केटलाक जळने आश्रये रहेला महोरण तथा पक्षीओमांनो केटलाक, ते पाणीमां पोतातुं जीवन गुजारनारा जाणवा; अने बीजां पक्षीओ आकाशगामी छे. आ प्रमाणे वधां प्राणीओ (पोतानाथी बीजां नबकां) प्राणीने आहार विगेरे माटे, अथवा मत्सर विगेरे माटे दुःख आपे छे. तथी शुं समजतुं? ते कहे छे:—(हे शिष्य !) तुं अवधार ! के, आ चौद रज्जुप्रमाण—लोकमां कर्मविपाकना कारणे जुदी जुदी गतिमां दुःख तथा कलेशनां फलरूप—महाभय छे. (पण तेमां सुख तो, कहेवामात्र छे.) रामाटे कर्मविपाकथी महाभय छे ? ते कहे छे:—

बहुदुक्खा हु जन्तवो, सत्ता कामेसु माणवा, अबलेणा वह गच्छंति सरीरेणं पभंगुरेण अइं से
बहुदुक्खे इइ बाले पकुव्वइ एए रोगा बहू नच्चआ आउरा परियावए नालं पास, अलं तवेएहिं एयं

पास सुणी! महत्भयं नाइ वाइज कंचणं (सू० १७८)

(शुरु कहे छे हे शिष्यो!) कर्मना विपाकथी आवेलां बहु दुःखो जे जीवोने छे, जेथी ते जगणीने तमार तेमां अप्रपादवाळा थवं. म० वारंवार आवो उपदेश केम करो छो? उ—कारण के अनादि भवना अभ्यासथी न गणाय, तेदला उत्तर परिणामवाळा इच्छामदन विषयोमां शुद्ध थयेला पुरुषो छे, तेथी पुनरक्ति दोष लागनो नथी, हवे काम (कुचेष्टा) मां जे जीवो आसक्त छे, ते शुं मेळवे छे, ते कहे छे—वक्ररहित (निःसार) तुष (डॉंगरनां फोतरां) नी सुष्टी समान औदारिक शरीर जे पोतानी मेळे भंग नाश ना स्वभाववाळुं छे, तेना वडे सुख मेळववा कर्मनो उपचय करीने अनेकवार वध (मरण यात) ने मेळवे छे;

म—कयो माणस आवा कडवा विपाकवाळी संसारी वासनामां रति (आनंद) माने? ते कहे छे—

जे मोहना उदयथी आर्त्त थयेल छे. अने कार्य अकार्यना विवेकने गणतो नथी, ते प्राणी जेना वडे बहु दुःख पमाय तेवा काम विषयोमां शुद्ध थाय छे, अथवा प्राणीओने कलेशरूप कृत्यने पोते रागद्वेषथी आकुळ बनेल बाळजीव प्रकर्षथी करे छे. अने तेवां पाप करवाथी तेना कर्मना फलरूप विपाकथी अनेकवार पोते वध पामे छे, (बुरे हाले मरे छे) अथवा पूर्वे वतावेला रोगो आवतां हवे पछी कहेवालां अकृत्यने बाळ (मूर्ख) जीव करे छे, ते वतावे छे—गंडमाळा कोड क्षय विगरे रोग आवतां ते रोगोनी वेदनाथी गभराइने तेने दूर करवा माटे बीजा प्राणीओने संतापे छे, लावक विगरे पक्षीतुं मांस खातां क्षय रोग मट्यो, आवा कुवा-क्योने सांभळीने जीववानी पोते आशाए प्राणीओने महा दुःखरूप अकार्यमां पण वर्ते छे, पण आम विचारता नथी, के पोतानां करेलां पापोनां फळ उदयमां आव्या विना रहे नहि, माटे उदयमां आवेल छे, तथा कर्म ज्ञांत थतां ते उपक्रम (ज्ञांत) थाय छे,

पण प्राणीओने दुःखरूप चिकित्सा (उपाय) करवाथी फक्त नवां पाणेज वंधाय छे, ते कहे छे, के हे शिष्यो ! विमल विवेकरूप ज्ञान चक्षुवडे धारीने जुओ ! के ने रोगोने दूर करवा चिकित्सा विधिओ समर्थ नथी.

प०—जो एम छे तो शुं करवुं ?

उ—‘अलं’ हे शिष्य तुं ! सारा नरसानो विवेकवाळो छे, माटे तारे एवी पाप चिकित्सानी जरूर नथी ! किंच-वळी प्राणीने दुःख देवारूप कृत्य बहु भयरूप होवाथी महा भय तरीके हे मुनि ! तुं तेने जाण—(त्रण जगतता स्वभावने जाणे, माने ते मुनि छे) प—जो एम छे तो शुं करवुं ? उ—कोइ पण प्राणीने तुं हणतो नहिं; कारण के एक पण प्राणीने हणतां आठे प्रकारनां कर्मां वंधाय छे, अने तेनो क्षय न कराय तो संसार भ्रमण करावे छे. माटे महाभय छे, अथवा उपर कहेला रोगो बहु प्रकारे जाणीने कुवासना ने आश्रयी ते जाणवा, अर्थात् कामो (कुचेष्टाओ) पोतेज रोगरूप छे, एवुं अतिशे जाणीने जेम आतुर वनेला कामचेष्टामां अंधा थएला जीवो बीजा प्राणीओने दुःख दे छे, (तेम तमारे न देवुं) ए प्रमाणे रोग अने काम चेष्टामां आकुळ थयेला सावद्य अनुष्ठानमां प्रवर्तैलाने उपदेश आपवारूप महा भयरूप जीव हिंसा वतावीने तेवी हिंसा न करनारा गुणवान (मुनिराजो) ना स्वरूपने वताववा प्रस्ताव रचीने वतावे छे:—

आयाण भो सुस्सुस ! भो धूयवायं पवेयइस्सामि इह खलु अत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं आभसेएण
अभिसंभूया अभिसंजाया । अभिनिवुद्धा अभिसंबुद्धा अभिसंजुद्धा अभिनिक्कंता अणुपुठ्वेण

महामुणो (सू० १७९)

हे शिष्य ! [भो अव्यय आभंगणना अर्थमां छे] हुं तमने हवे पछी जे कहीश, ते वरोवर जाणो, अने सांभळवानी आकांक्षा राखो! (बीजी वार भो शब्द आ विषय महत्वनो छे एम वतावे छे) के तमारे अहीं प्रमाद न करवो, हुं धृतवादन कहु हुं आठ प्रकारना कर्मने धोह नांखवा, ते धृत छे अथवा ज्ञाति [सगांना मोह]नो त्याग करवो, ते धृत छे. तेनो वाद (कथन) कहीश, ते तमारे एक चित्ते सांभळवो आना संबंधमां नागार्जुनीया कहि छे के, (धृतोवचायं पवेयंति) एदले आठ प्रकारना कर्मने अथवा पोताने धोवानो उपाय तीर्थकर विभेरे कहि छे, ते उपाय कयो छे? ते कहि छे (इह) आ संसारमां [खलु वाक्यनी शोभा माटे छे] आत्मानो भाव ते आत्मता [आत्मपणु] ते जीवनुं अस्तित्व छे, अथवा पोतानां करेला कर्मनी परिणति छे, तेना वडे आ जीव समूह छे, पण अन्य लोकना मानवा प्रमाणे पृथ्वी विभेरे भूतोना कायाकारे परिणमवाथी जीवो बन्या नथी, अथवा प्रजापति (ब्रह्मा) ए वनावेल नथी एदले तेवा तेवा ऊंच नीच कुळमां पोताना। पूर्वना कर्म संचयथी मेळवेल शुकशोणित [वीर्य लोही माताना उदरमां] एकत्र यवाथी अनुक्रमे मनुष्यनी उत्पति छे, तेनो आ प्रमाणे क्रम छे.—

सप्ताहं कललं विन्ध्या, ततः सप्ताहमर्बुदम् अर्बुदाज्जायते पेशी, पेशीतोऽपि घनं भवेत् ॥ १ ॥

ते वीर्य लोहीतुं सात दिवसे कलल थाय, पछी अर्बुद थाय छे, पछी पेशी थाय. त्यार पछी घन थाय छे. तेमां ज्यासुधी कलल थाय त्यासुधी अभिसंभूत कहेकाय छे, पेशी यतां सुधी अभिसंजात कहेवाय छे, त्यार पछी सांगोपांग स्नायु शिर रोम विभेरे अनुक्रमे यतां अभिनित्त छे, त्यारथी प्रसूत यतां अभिसंहद छे, अने धर्म श्रवणनी अवस्थापां आवतां धर्मकथा

मेलवीने मेलवेळ पुण्य पापपणाथी अभिसंबुद्ध जाणवा, त्यार पळी सत् असतनो विवेक जाणनारा होय ते अभिनिष्क्रांत छे, त्यार पळी आचारांग सूत्र भणोला तथा तेनो अर्थ समजीने चारित्र पालनारा अनुक्रमे प्रथम शिक्षक (शिष्य) गीतार्थ पळी क्षपक (तपस्वी) पळी परिहारविशुद्धि चारित्रवाळो तथा एकलविहारी जिन कल्पिक सुधी ऊंचे चढनारा मुनिओ वने छे. अने कोइ अभिसंबुद्ध पुरुष दीक्षा लेवा तैयार थयो होय तो तेन पोतानां सगां जे करे ते कहे छे.

तं परिक्रमंतं परिदेवमाणा मा चयाहि इय ते वयंति ! छंदोवणीया अङ्गोववन्ना अक्रंदकारी जण-
गा रुयंति, अतारिसं सुणि [णय] ओहं तरए जणगा जेण विट्पजढा, सरणं तत्थ नो समेइ, कहं नु
नाम से तत्थ रसइ ?, एयं नाणं सया समणुवासिज्जासि तिवेमि(सू० १८०) धृताध्ययनोद्देशकः ६-१

जे तत्व स्वरूप जाणीने गृहवासथी पराङ्मुख वनीने महा पुरुषोए आचरेला मार्गे जवा (दीक्षा लेवा) तैयार थयो होय तेने माता पिता पुत्र कलत्र विगेरे मळतां ते सगां तेने रोइने कहे छे, के अमने तुं न त्यज, एम दया उपजावतां वोले छे, तथा वीडुं शुं वोले छे, ते कहे छे, ताराछंद (अभिप्राय) ने अमे अनुकूल छीए, तारा उपर अपारो पूर्ण विश्वास छे, तेथी अमने न छोड, एम आक्रंद करीने ते सगां रडे छे, वळी आ प्रमाणे वोले छे, के “तेवो मुनि संसार तरी शकतो नथी के जे पाखंड (मुनिना वोथ) थी ठगाइने मावापने त्यजीने दीक्षा ले.” आम कहे, तो पण जेणे संसारनुं तत्व जाण्युं छे, तेवो जे करे, ते कहे छे, जो के आ सगां भारा उपर पूर्ण भेमी छे, छतां पण ते खरे वखते शरण आपतां नथी, अर्थात् तेमनुं शरण स्वीकारतो नथी, गा माटे आ शरण नथी ? ते कहे छे, ते गृहवास वथा तिरस्कारने योग्य नरकना प्रतिनिधि समान अने शुभद्वारने परिष समान छे, तेमां काण

डाह्यो माणस रमणता करे? वळी गृहवास बधा इंद्र (रागाद्वेष विगोरेनां जोडलां) रूप छे, तेमां जेनुं मोह 'कणट' घटी [ओहुं थइ] गयेल छे, ते रति करे? [अर्थात् तेमनो मोह न करे] आ बधानो उपसंहार करे छे, के पूर्वे कहेछं ज्ञान हंसेनां आत्मानी अंदर स्थापी राखजो, एहुं सुधर्मास्वामी शिष्यने कहे छे. धृतअध्ययननो पहेलो उदेशो समाप्त थयो.

बीजो ऊदेशो.

प्रथम उद्देशो कहाो, हवे, बीजो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबध छे. गया उदेशामां सर्गांनो मोह छोडवा सूचव्युं. ते जो, कर्मनुं विधुनन थाय; तो, सफल थयुं कहेवाय; पाटे कर्मनुं विधुनन करवा आ उदेशो कहेवाय छे. आ संबध आवेला उदेशानुं आ पहेछं सूत्र छे.

आउरं लोममायाए चइत्ता पुठ्वसंजोगं हिचचा उवसमं वसित्ता बभचेरंसि वसु वा अणुवसु वा जाणित्तु धम्मं अहा तथा अहेगे तमचाइ कुमीला (सू० १८१)

लोक ते, मातापिता, पुत्र, कलत्र विगोरे स्नेहना संबधथी वियोग थतां पीडाय छे, अथवा तेमनुं बगडतां पीडाय छे, अथवा संसारी-जीवनो समूह कामरागमां पीडातो होय; तेने ज्ञानवहे ग्रहणकरीने (समजीने) तथा पोतानां मातापिता विगोरेनो संबध छोडीने तथा, उपशम मेळवीने ब्रह्मचर्यमां वसीने उत्तम साधु केवो होय? ते कहे छे:—वसु ते, द्रव्य छे. ते द्रव्यवाळो अर्थात् कषायरूप-काळाज विगोरे मळने दूर करी पोते वीतराग बने छे, अने तेथी उलटो, अनुवसु सराग छे. अथवा वसु ते, साधु छे.

अने अनुवसु ते, श्रावक છે. તેમજ, કહું છે કે:—

વીતરાગો વસુર્જયો, જિનો વા સંયતોઽથવા; સરાગો હ્વડ્નુ વસુ: પ્રોક્તઃ, સ્થવિરઃ શ્રાવકોઽપિવા;

વીતરાગ તે વસુ જાણવો, પછી તે જિન હોય અથવા સંયત [સાધુ] હોય, અને સરાગ હોય, તે અનુવસુ કહ્યો છે, અથવા
 બુદ્ધો અથવા શ્રાવક પણ હોય છે.

તથા શ્રુતચારિત્રરુપ—ધર્મ જાણીને પછી યથાયોગ્યપણે સ્વીકારીને પણ પછી કેટલાંક જીવો પ્રવલ મોહના ઉદયથી તેવી ભવિ-
 તવ્યતાના યોગે તેવા ઉત્તમ ધર્મને પાલવા શક્તિવાન થતા નથી, તે કેવા છે? ઉત્તર—કુશીલા ઇટલે રવરાવ ચીલ (આચાર) વાલા
 છે, ઇટલે જેઓ ધર્મ પાલવામાં અશક્ત છે, તેથીજ તેઓ કુશીલવાલા છે, ઇવા વનીને શું કરે છે? તે કહે છે:—

વરથં પડિભગહં કંવલં પાયપુંહણં વિડસિજ્ઞા, અણુપુઠ્ઠ્વેણ અણહિયાસેમાણા પરીસહે દુરાહિયાસણ
 કામે મમાયમાણસ્સ ઇયાણિં વા સુહુસેણ વા અપરિમાણાણ્ ભેણ, ઇવં સે અંતરાણ્હિં કામેહિં આકે-
 વલિણ્હિં અવહન્ના ચેણ (સૂ. ૧૮૨)

કરોડો ભવે પણ દુઃસ્વેથી મેલવાય, તેવો મનુષ્ય જન્મ પામીને પૂર્વે કદીપણ ન મેલવેલ ઇવી સંસાર સમુદ્રથી પાર ઉતરવા
 સમર્થ નાવ સપાત વોધિ (સમ્યક્ત્વ) મેલવીને મોક્ષ દુક્ષના વીજ સમાન સર્વ વિરતિ લક્ષણવાલું ચારિત્ર સ્વીકારીને પાછા કામદેવનો
 માર દુઃસ્વેથી નિવારણ થાય તેવો હોવાથી, મન ઠીલું થવાથી, ઇંદ્રિયોનો સમૂહ લાલચુ થવાથી અનેક ભવના અભ્યાસથી મેલવેલી

विषयनी मधुरताथी प्रवळ मोहनीय कर्मना उदयथी, अशुभ वेदनीयनो भाव एकदम प्रकट थवाथी, अयशःकीर्ति उत्कटपणे थवाथी, आयति (भविष्यतुं हित) ने तरंडोडीने कार्य अकार्यने विचार्या विना महादुःखनो सागर स्वीकारीने वर्त्तमान सुखने देखनारा कुलमां वर्तितो आचार नीचे नांखीने (उत्तम रत्नरूप) चारित्रने त्यजे छे!! अने तेनो त्याग धर्मोपकरण त्यागवाथी थाय छे, ते वतावे छे. वस्त्र ए शब्दथी शैमिक [सूत्रनां] कल्प (वस्त्र) लीथो छे, तथा पात्रां अने उननी कांबळ अथवा पात्रांतो नियोग तथा रजोहरण ए धर्मोपकरणोने वेदरकारीथी त्यजीने कोइ साधु फरीथी देशविरति [श्रावकनां व्रत] स्वीकारे छे, कोइ तो फक्त सम्यक्-दर्शनज राखे छे, कोइ तो तेनाथी पण अष्ट थइ जाय छे, (वटली जाय छे.)

प० आतुं दुर्लभ चारित्र पामीने पाछु केम तजी दे छे!

उ—परीषदो दुःखे करीने सहन थाय छे, तेथी क्रमेकरीने अथवा सामटा परिषदो आवतां सहन न करी शकवाथी परिषदथी भागोला मोहना परवशपणाथी दुर्गतिने आगळ करीने मोक्षमार्ग (उत्तम चारित्र) ने त्यजे छे!! ते रांकडाओ भोगो भोगववा माटे त्यजे छे, छतां पापना उदयथी शुं थाय ? ते कहे छे.—

विरूप कामोने पोताने वहाला मानी स्वीकारतो भोगना अध्यक्षवसायवाळो बनवा छतां, पोतानां अंतरायकर्मना उदयथी तेज क्षणे प्रव्रज्या मुक्या पळी अथवा भोगो प्राप्त थया पळी, अंतर्बुद्धीमां, अथवा कंडरीक राजर्षिनी माफक चारित्र मुक्या पळी एक रात दिवसमां अपरिमाण (वधारे खावाने) लीधे शरीर भेदाय छे, आ प्रमाणे दुराचारना अध्यक्षवसायथी, अथवा कुकर्म सेवीने शीघ्र मरण पामताने पोताना आत्मा साथे चारित्र पाळवारूप धर्म देहने भेद थतां तेवुं शरीर अने पचेन्द्रियपणुं अंतताकाळे पण

मळतुं नशी, (अर्थात् निगोदमां अनंतकाल भ्रमण करे छे.) एज विषयनो उपसंहार करवा कहे छे. 'एवं' ए प्रमाणे भोगनो अभि-
 लाषी अंतरायवाळा काम भोगो जेमां अनेक प्रकारनां विज्जो रहेलां छे, तेने चाहे छे, ते भोगो (न केवल ते अकेवल तेमांशी
 थाय ते,) अकेवलीक, (द्वंद्व-जीडकांवाळो) छे. जेमनो प्रतिपक्ष पण छे, अथवा असंपूर्ण भोगो छे. जेने येकववा पाळा संसारमां
 पडे छे, अथवा (कामभोगने वीजीना बदले वीजीनो अर्थ लइए; तो,) ते कामभोगोवडे भोगना अभिलाषीओ अतृप्त बनीनेज
 (वधारे भोगसुख लेवा जतां) शरीरनो नाश करे छे. ज्यारे, ते रांको आस मरण पामे छे त्यारे, बीजा उत्तम साधुओ जेमनो
 मोक्षसमीप छे, तेवा कयांय पण, कोइपण रीते कोइपण वरत चरणनो परिणाम आवतां लघुकर्मनां कारणशी दरेकक्षणे चडताभाव-
 वाळा बने छे, ते बत्तावे छे.

अहेगो धम्ममायाय आयाणपभिइसु पणिहिए चरे, अप्पलीयमाणे दढे सडवं निद्धिं परिज्जाय, एस
 पणए महासुणी, अइअच्च सवओ संगं न महं अरिथत्ति इय एगो अहं, अस्सि जयमाणे इरथ वि-
 रए अणगारे सवओ मुंडे रीयंते, जे अचेले परिवुसिए संचिक्खइ ओमोयरियाए, से आकुडे वा
 हए वा लुंच्चिए वा पलियं पकरथ अदुवा पकरथ अतहेहिं सहफोसेहिं इय संखाए एगयरे अन्नयरे
 अभिज्जाय तित्तिक्खमाणे परिवए जे य हिरी जेय अहिरीसाणा (सू० १८३)

उपर बतावेला चढता परिणामवाला साधुए चारित्र लीधापळी विशुद्ध परिणामथी तेमनो मोक्ष जलदी भवानो होवाथी श्रुत-
चारित्ररूप-धर्म पामीने वस्त्र-पात्र विगोरे धर्मोपकरण स्वीकारीने धर्मकरणमां समाधिवाला वनी परिषद सहन करीने सर्वज्ञ-प्रभुए
कहेला धर्मने पाळे छे, अने पूर्वे बतावेल्यां प्रमादनां सूत्रो अपमादना अभिप्राय प्रमाणे कहेवां(अर्थात् ते दरेक प्रकारे चारित्र निर्मळ
पाळी ज्ञान भणीने सम्यक्त्वमां दृढ थइ अशुभकर्मने क्षय करी नाखे छे.) कहुं छे केः—

यत्र प्रमादेन तिरोंऽप्रमादः, स्याद्वाऽपि यत्नेन पुनः प्रमादः । विपर्ययेणापि पठति तत्र, सूत्राण्यधीकारवशाद् विधिज्ञाः ॥ १ ॥

ज्यां प्रमादवडे सूत्र कहेवायां होय; त्यां विरोधि अपमाद होवाथी अपमादना कर्णनां सूत्रो अधिकारना वन्नथी विधिने जाण-
नारा विपर्ययवडे भणे छे (कहे छे.) अथवा, अपमादनां कही ते यत्नवडे पाळां प्रमादनां (सूत्रो) कहे छेः—ते उत्तम साधुओ वकी
केवा थइने धर्म आचरे छे? ते कहे छेः—कामभोगोमां अथवा मातपिता विगोरे लोकमां मोह न करनारा, अने धर्मचारित्रमां एटले
तपसंयम विगोरेमां दृढता राखनारा धर्म आचरे छे. वळी, वधा प्रकारनी भोगाकांक्षाने ज्ञ-परिज्ञावडे दुःखरूप जाणीने प्रत्याख्यान-
परिज्ञावडे त्यागे छे, ते भोगाकांक्षा त्यागवाथी जे गुणो थाय; ते कहे छेः—‘एष’ ए काम पिपासानो त्यागनारो प्रकर्षथी नमेळो
‘पद्व’ प्रणमेळो संयममां, अथवा कर्म धोवामां (लीन थयेळो) महाशुनि वने छे, पण तेवा गुणथी रहित होय; ते महाशुनि वनतो
नथी, ‘किंच’ वळी, सर्वे प्रकारे पुत्रकलजादिनो संबध, अथवा विषयाभिलाषनो मोह उल्लंघी (त्यागीने) शुं भावना भावे? ते कहे
छेः—‘आ संसारमां पदतां माहं अवलंबन (आधारभूत) थाय तेवुं कंइपण नथी; अने-तेना अभावथी उपर प्रमाणे हुं संसार-उद-

रमां एकलोज छुं. तेम, हुं पण कोइनो नथी, आ भावना भावनारो जे करे; ते कहे छे. 'अव' आ मौनींद्र (जिनेश्वरना) पवचनमां सावय-अनुष्ठान त्यागीने दश प्रकारनी साधु-समाचारी पाळवायां यतनावळो थाय. 'कोऽसौ?' कोण थाय? ते कहे छे. अन-गार-प्रवर्जित [दीक्षा लीयेळो] होय; ते एकत्वभावना भावतो रहे. [ते पळीना सूत्रमां कहे छे. एटले, आ क्रिया जोडला सूत्रमां पण लेवी.] 'किंच' वळी, ते सर्वे प्रकारे द्रव्यधी अने भावधी मुंड वनीने 'रीयमाणः' संयमअनुष्ठानमां वर्ते छे.

पः—केवो वनेळो?

उः—जे अचेल ते अल्प वस्त्रवाळो अथवा जिनकल्पिक संयममां रही योग्य विहार करनारो अंतप्रांत आहार खानारो वने छे, ते पण वधारे प्रमाणमां नहि, ते कहे छे, अवमोदरी (ओछुं भोजन) करे, अने उमोदरी तप करतां कदाच प्रत्यनीक [जैनधर्मना विरोधीओ जेओ ग्राम कंटक छे तेमनाथी पीडाय, ते वतावे छे, 'स' ते मुनि कुवचनोथी आक्रोश करायलो, दंडा विरोथी मरातो, वाळ खेंची काढवाथी छंचित करेळो (दुःखी थया छतां) पोते पोताना पूर्वकर्मशीज आ उदयमां आवुं छे, एम मानतो सम्यक् प्रकारे सहन करतो विहार करे; तथा आवी भावना भावे,

“ पावाणं च खलु भो कडणं क्रमाणं पुर्विदुच्चिन्नाणं दुष्पडिकंताणं वेदयित्ता सुकलो, नस्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता ”

पोते पूर्वे दुष्ट रीते जे कृत्यो आचर्यां होय, अने दुष्ट कृत्य कर्यापळी तेने आलोचना के तपश्चर्याथी खेरव्यां न होय, ते दुष्ट पापो कांतो भोगवतां छुटे, अथवा तपश्चर्या करवाथी दूर थाय छे.

प०—वचनो बड़े केवी रीते आक्रोश करे छे ?

उ—‘पलियं’ ति ते साधुए पोते गृहस्थावस्थापां वणकर विगोरेनुं नीच कृत्य (धंधो) कर्यो होय तो ते याद करीने तेनी निंदा करे छे, ते आ प्रमाणे—क्रोलिक ! हे साधु बनेला ! तुं पण मारी सामे बोले छे ! अथवा जफार चफार विगोरे बढोथी बीजी रीते बोलीने निंदे छे ! ते हवे बतावे छे.—‘अतथ्यैः’ तहन जुटां कलंकना बढोवडे तिरस्कार करे जेमके ‘तुं चोर छे ! तुं परदार लंपट छे, आवां असत्य आओ जे साधुने कारवा योग्य नथी तेनो कानमां स्पर्श थतां (साधुने क्रोध चढे) तथा कलंक चढाववा साथे हाथ पग छेदवा विगोरेथी [दुख थाय तेवा समये] आ मारा पोताना करेला दुष्ट कृत्योनुं फळ छे एम चितवीने विगोरे अथवा आहुं चितवे.

पंचहिं टाणेहिं छउमत्थे उष्यन्ने उवसगो सहइ स्वमइ तितिकवइ अहियासेइ, तंजहा—जकवाइहे अयं पुरिसे १, उम्मायपत्ते अयं पुरिसे २, दिचचित्ते अयं पुरिसे ३, मम च णं तब्भवेअणीयाणि कम्मपाणि उदिन्नाणि भवंति जन्नं एस पुरिसे आउसइ ग्रंधइ तिणइ पिइइ परितावेइ ४, ममं च णं सम्म सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स एणं तसो कम्मणिज्जाग हवइ ५, पंचहिं टाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहे उवसगो जाव अहियासेज्जा, जाव ममं च णं अहियासेमाणस्स वहवे छउमत्था सपणा निगंथा उदिन्ने परिसहोवसगो सम्मं सहिस्सति जाव अहियामिस्संति इत्यादि ॥

पांच स्थानमां छदूपस्थ साधुओ उपसर्गोनि सहन करे क्षमा राखे क्रोध न करे हृदयमां शांति राखे, तेओ विचारे के आ अपमान करनारो पुरुष यक्षथी बेरायलो छे, आ पुरुष उन्माद पायेलो छे. आ पुरुष अहंकारी छे, मारे ते भवमां वेदवानां कर्म

उदीरणामां आववानां हे तेथी आ पुरूप मने आक्रोश करे हे, वांधे हे तपे हे पीटे हे, संतापे हे, पण मने सारी रीते सहन करवाथी एकांतथी सकाम निर्जरा थाय हे, केवली भगवान तेज पांच स्थानमां आवेळा परीसह उपसर्ग सहन करे तेओ जाणे हे. के, केवली ज्यारे आवां दुःख सहन करे हे, त्यारे पणा उद्दमस्थ साधुओ निर्श्रेथो आवेळा परीसह उपसर्गोने तेमना दृष्टांतथी सारी रीते सहन करशे अने आत्मामां शांति राखशे आ उपरथी साधुए सार ए लेवो के कोइ गांडो थयेलो बीजाने मारे तो तेना उपर दया आवे हे. तेज प्रमाणे साधुने दुःख देनार उपर साधुने दया लाववी जोइए. आ प्रमाणे जे परीसहो आवे ते अतुकूल प्रतिकूल एम वे भेदे हे. ते वन्नेमां रागद्वेष कर्पा विना शांति राखीने विचरे, अथवा बीजी रीते परीसह वे प्रकारना वतावे हे. जे सत्कार अने पुरस्कार साधुने आनंदकारी हे अने प्रतिकूल मनने अनिष्ट हे, अथवा लज्जारूप याचना करवी अने अचेल विगेरे हे, अने लज्जा विनाना ठंड ताप विगेरे हे, ए प्रमाणे वन्ने प्रकारना परीसहोने सम्यक् प्रकारे सहन करतो विचरे, वकी

चिच्चा सवं विसुत्तियं फासे समियदंसणे, एए भो णणिणा वुत्ता जे लोणंसि अणामणधम्मिसणो
 आणाए मामगं धम्मं एस उत्तरवाए इह माणवाणं वियाहिए, इत्थोवरए तं झोसमाणे आयाणि-
 जं परिन्नाय यरियाएण विणिंचइ, इह एणेसिं एगचरिया होइ तत्थियरा इयरहिं कुलेहिं सुद्धेस-
 णाए सत्वंसणाए से मेहावी परिवए सुब्भि अदुवा दुब्भि अदुवा तत्थ भेरवा पाणा पाणे किले-

संति ते फ्रासे पुट्टो धीरे अहियासिजासि तिवेमि (सू० १८४) धृताध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥ ६-२ ॥

बधा परिसहोनी यती वेदनाने सहन करी दुःखने अनुभवतो छतां चित्तमां शांति राखे. पश्व. केवो वनीने ? उ० सम्यक्प्रकारे दर्शन पासेलो ते समित दर्शनवाळो अर्थात् सम्यग्दृष्टी वने. ते परिसहोने सहन करनार साधुओ केवा होय ते कहे छे, ते निर्विकचन निर्भय (भावनाग्र) जीनेश्वरे वतावेळा छे. आ मनुष्य लोकमां आगमन धर्मरहित छे. अर्थात् घर छोडीने दीक्षा लीधा पळी पाळा वेर जवानो इच्छा करता नथी, पण पोतानी दीक्षामां लीधेली प्रतिज्ञा पूरीपाळी पंच महाव्रतनो भार वहन करे छे, वळी जेनावहे आज्ञा कराय ते जिनेश्वरतुं वचन तेज मारो धर्म छे. तेथी तेने वरोबर पाळे. अथवा धर्मतुं अनुष्ठान पूरेपूरु करे, अने विचारे के धर्म तेज मारे सार छे, नाकी वधुं पारकुं [असार] छे, एथी हुं तीर्थकरना उपदेश वहे विधि अनुसारे वरोबर क्रिया करुं म-धर्म केवीरीते आज्ञाथी पळाय ? ते कहे छे, 'एष.' आ वतावेळो उत्तर (उत्कृष्ट) वाद अहिं मनुष्योने कहेळो छे. 'किंच' वळी आ कर्म दूर करवाना उपायरूप संयममां समीप (अंदर) रत (लीन) यइने आठ प्रकारना कर्मने शोषतो [दूर करतो] धर्मने पाळे वळी वीजुं शुं करे ? ते कहे छे.—

जेनावहे ग्रहण कराय ते आदानीय (कर्म) छे. तेने जाणीने मूळ उत्तर प्रकृतिनुं विवेचन करे, अर्थात् साधुपणुं निर्मळ पाळीने क्षय करे, अहीं संपूर्ण कर्म दूर करवामां असमर्थ जे वाहातप छे, तेने आश्रयी कहे छे, आ जैनसिद्धांतमा केटलाक शिथील [ओछां] कर्मवाळाने एकचर्चा एटछे एकल विद्वारनी पतिमा अंगीकार करेली होय छे, तेमां जुदी जुदी जातीना अभिग्रहो तप तथा चारित्र

संबंधी धारण करेला होय छे. तथी प्राभृतिकाने आश्रयी कहे छे, ते एकाकी विहारमां बीजा सामान्य साधुथी विशेष प्रकारे अंत-
प्रांत कुलोमां दश प्रकारनी एषणा दोपरहित आहार विगोरेनी शुद्ध एषणावढे तथा सर्व एषणा ते वधी एषणा. आहार विगोरे
संबंधी उद्गम उत्पाद तथा ग्रास एषणा संबंधी परिशुद्ध विधिए संयममां वर्त्ते छे, बहुषणामां एक देशपणाने कहे छे, ते मर्यादामां
रहेलो मेधावी साधु संयममां वर्त्ते वळी ते तेवां बीजां कुलोमां आहार सुगंधवाळो के दुर्गंधवाळो होय, त्यां रागद्वेष न करे वळी
त्यां एकलविहार करतां मसाणमां प्रतिमा ए रहेतां यातुधान (राक्षस) विगोरेए करेला शब्दो भयकारक लागे; अथवा वीभत्स
प्राणीओ दीस जीभवाळां [वाय विगोरे] बीजा जीवोने पीडे; संतापे छे अने तेने पण संतापे तो, तुं तेवा विषय-दुःखना स्पशोनि
सम्यक्प्रकारे धैर्य राखीने सहन कर; एहुं सुधर्मास्वामि जंबूस्वामिने कहे छे:—

बीजो ऊद्देशो समास थयो.

बीजो ऊद्देशो कहे छे.

बीजो उद्देशो कही बीजो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. बीजामां कर्मथोवानुं वताव्युं; अने ते उपकरण शरीरना
विधूनन विना न थाय. माटे हवे, उपकरण विगोरेतुं विधूनन कहे छे. आवा संबंधे आवेला उद्देशानुं आ पहेळं सूत्र छे.

एयं खु सुणी आयाणं सया सुयवस्वायधर्ममे विद्ध्यकप्ये निज्ज्ञोसइत्ता, जे अचले परिवुत्सिए तस्स
पां भिक्खुस्स नो एवं भवइ—परिजुणो मे वरथे वरथं जाइस्सामि श्रुत्तं जाइस्सामि सुइं जाइस्सामि

संघिस्रसामि सीविस्रसामि उक्कसिस्रसामि हुकसिस्रसामि परिहिस्रसामि पाउणिस्सामि, अटुवा तरथ परिक्रमंतं भुज्जो अचेळं तणफासा फुसन्ति सीयफासा फुसन्ति तेउफासा फुसन्ति दंसमसग फासा फुसन्ति एगयरे अन्नयरे विरुवरुवे फासे अहियासेइ अचेले लाघवं आगममाणे, तवे से अभिसमन्नागए भवइ, जहेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा सबओ सन्वत्ताए समत्तमेव स- मभिजणिज्जा, एवं तेसिं महावीराणं चिररायं पुवाइं वासाणि रीयमाणणं दवियाण पास अहिया- सियं (सू० १८५)

आ उपर बतावेळुं अथवा हवे पळी, कहेवातुं (जे ग्रहण कराय ते आदान.) ते कर्महुं उपादान छे, अने ते कर्म उपादान थवानुं कारण साधुने जोइतां धर्मउपकरणथी अधिक प्रमाणसां हवे पळी कहेवातां वख विगेरे छे, ते वयारानां वख विगेरेने मुनि- ए त्याग करी देवा.

प्रः—ते मुनि केवो होय छे.—उः—ते सदाए सारी रीते वर्णवेला धर्मवाळो छे. एटले, तेने संसार—अप्रणनो हर होवाथी पोताने अर्पण करेलां महाव्रतनो भारवाही छे, तथा विभूत (श्रुणण) एटले, सारी रीते जेणे कल्प—(साधुनो आचार) आत्मासां फरस्यो छे, तेवो मुनि आदान—(कर्मने) खेरवशे.

पः—ते वस्त्र विगोरे आदान केवां होय; के ते दूर करवां पढे ?

उः—(अल्प-अर्थमां नकार छे. जेमके—आ साधु अज्ञान छे. एटले, अल्पज्ञानवाळो छे, ते प्रमाणे अर्थ लेतां) साधु अचेल् एटले, अल्प वस्त्र राखनारो संयममां रहेलो छे, तेवा साधु (भिक्षु) ने आबुं विचारबुं न कल्पे के, मारुं वस्त्र जीर्ण भइ गयुं छे. हुं अचेल्क भइश. मने शरीरनुं रक्षक वस्त्र नथी; तेथी, ठंड विगोरेथी मारुं रक्षण केम भरो ? तेथी हुं विना वस्त्रनो भयो छुं. तेथी कोइ श्रावकने त्यां जइ वस्त्र याचीलाबुं; अथवा ते जीर्णवस्त्रने सांधवाने सोय—दोरो याचीश; अथवा ज्यारे सोय—दोरो मळरो; त्यारे, जीर्णवस्त्रनां काणांने सांधीश; फाटेलाने सीवीश; अथवा हुकां वस्त्रने जोडी मोटुं वनावीश; अथवा, लांबानो हुकडो फाडी सरखुं अथवा, नातुं वनावीश.

एम् योग्य वनावीने हु पहेरीश; तथा, शरीर टांकीश. विगोरे, आर्त्तध्यानथी दणायली अंतःकरणनी दृत्ति धर्ममां एकचित्त राखनार आत्मारथी साधुने वस्त्र जीर्ण भवा छतां, अथवा होय नहीं; तोपण भविष्य संबंधी (चित्ता) न थाय.

अथवा आ सूत्र जिनकल्पीओने आश्रयी कहेछुं छे. एम् व्याख्या करवी कारण के ते मुनिओ अचेल् (वस्त्र रहित) होय छे. तथा तेमना हाथमांथी तेमनी तपोवळनी लब्धिने लोभे पाणीतुं बिदु पण न गळतुं होवाथी तेओ पाणिपात्र कहेवाय छे.

पाणि एटले, हाथ, अने हाथमांज भोजन लइने करे छे. तेमने पात्रां विगोरेतो सात प्रकारनो नियोग होतो नथी; [कारण के तेवो तेमनो अभिग्रह छे.] तथा, कल्पत्रय पण त्यागेल छे. फक्त, तेमने रजोहरण, तथा मुखवस्त्रिका (ओघो, अने सुहुपत्ति) मात्र होय छे तेवा अचेल् जिन-कल्पीमुनिने उपर कहेल् आर्त्तध्यान वस्त्र फाटवा—सांधवा विगोरे संबंधी न होय. (कारण के, धर्मवस्त्र

तेना अभावथी धर्म-फाटवुं विगेरेनो अभाव छे. ज्यारे, धर्मी होय; त्यारे, धर्म शोधवो; ए न्यायनो उत्तम मार्ग छे. तथा जिन-कल्पी मुनिने आवुं पण न होय. के हुं बीजुं नवुं वख याचीश; ए वयुं पूर्वमाफक जाणवुं.

वळी, जेने जिन-कल्पी जेवी लब्धि न होय; तेवो स्थविर कल्पि-साधु हाथमांथी पाणी विगेरेवुं विदु नीचे पढे छे. तेथी, तेओ पात्रना नियोगयुक्त होय छे, अने वखनां कल्प प्रमाणे त्रणमांथी कोइपण एक वख होय; तेवो मुनि पण वख विगेरे जीर्ण थवाथी के, नाश थवाथी नवु न मळे; त्यां सुधी आर्त्तध्यान न करे; तथा, जे अल्पपरिकर्मी (निसृष्टी) होय; तेवाने सोय-दीरो फाटेलाने सांघवा माटे पण शोधवावुं न होय, (जेने उपदेश माटे परोपकारनी विशेष लागणी करातां आत्मार्थ साधवा माटे एकां-तवास होय; तेवाने फाटेछुं के, वख न होय; तेनी शुं परवाह छे? जेमके:—

धैयं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गहिनी । सत्य सन्नुरयं दया च भगीनी भ्राता मनः संयमः ॥

शय्या भूमितल दिशोपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनं । एते यस्य कुटुंबिनो वद सखे कस्माद्भयं योगिनां ॥ १ ॥

धैर्य पिता, क्षमा माता, घणा कालनी शांति वहु, सत्य पुत्र, दया बेन, मन संयम भाइ छे, पथारी जमीनमां छे, दिशा वखो छे. ज्ञानअमृत भोजन छे, तेवा कुटुंबवाळा योगीने कोनो भय छे? एवुं एक मित्र बीजा मित्रने पूछे छे.

अचेल अथवा वखवाळाने तृण (हाथना कांटा) वीगेरे लागतां शुं करे ते कहे छे. तेवो अचेलपणे रहेतां जीर्णवख आर्त्त-रौद्र

[अप]ध्यान न थाय; अथवा आ थाय. ते अचेलपणे वर्त्तां; ते साधुने अचेलपणाना कारणथी कोइ गामडां विगेरेमां शरीरना रक्षणना अभावथी घासना संघारे सुतां घासना कांटानो कडवो अनुभव दुःख देनारो थाय; अथवा घास पोते खुंवे तेवुं होय; तो,

शरीरमां दुःख दे, तेवा समये साधु दीनतारहित मन राखीने तेने सहै.

तेज प्रमाणे शिवाळायां ठंडा देशमां वस्त्रविना ठंड सहैवी पडे; तथा, गरम देशमां उनाळायां वस्त्रविना तडको सहैवो पडे; तथा डांस-मच्छरोना डंख लागे. आ वधा परिसहो एकसाथे डांस-मच्छर, तथा घासना कडवा फरसनां दुःख साथे आवे छे. अथवा ठंड-ताप विगेरे परस्पर विरुद्ध दुःख छे. तेमांथी कोइएक अनुक्रमे आवे. (बहुवचननो सूत्रमां प्रयोग छे, तेथी जाणवुं के, ते दरेक तीव्रमंद के, मध्यम अवस्थावाळो फरस छे.) ते दवे वतावे छे.

विरुप [वीभत्स] ते, मनने दुःख देनार, अथवा जुदी जुदी जातना मंद विगेरे भेदना स्वरुपवाळा विरुपरुप जे फरसो छे, तेनाथी यतां दुःखो पडे; अथवा, ते दुःख आपनार घास विगेरेना स्पर्शा होय; ते वधांने चित्त स्थिर करीने दुःखनि छोडीने सहन करे.

पः—कोण सहन करे.—उः—उपर वतावेळ वस्त्ररहित अल्प-वस्त्रवाळो, अथवा अचलन-स्वरुपवाळो (प्रतिमाधारी) सम्यक्प्रकारे सहै.

पः—शुं विचारीने सहै? उ० जे लघु गुण छे तेनो भाव लघुता छे. ते द्रव्यथी अने भावथी वे प्रकारे लाघवपणुं छे. तेने जाणनारो समताथी परिसहो तथा उपसर्गाने सहै छे. आ संबंधे नागार्जुनीया कहे छे.

“ एवं खलु से उवगरणलाघवियं तवं कम्पक्त्वय कारणं करेइ ”

ए प्रमाणे उपकरणना लाघवपणाथी कर्मने क्षय करनारो तप निश्चयथी उत्तम साधु करे छे.

ए प्रमाणे कहेळा कर्म बडे भाव लाघव माटे उपकरण लाघवनी तप करे छे, ए कहेवानो सार छे.

વહી તે ઉપકરણના લાવવથી કર્મ ઓછાં થાય છે, અને કર્મ ઓછાં થવાથી ઉપકરણ લાવવ મેલવતાં તુળ વિગેરેના સ્પર્શો સહેતાં કાચ કલેશરૂપ વાહ્ય તપ પળ થાય છે. તેથી તે સાધુ સારી રીતે સહે છે. આ માહં કહેહું નથી, એવું સુધર્માસ્વામી કહે છે. કે જે મેં કહું અને હવે પછી કહીશ. તે વધું ભગવાન મહાવીરે પોતે પ્રકર્ષથી અથવા શરૂઆતમાં કહેહું છે. પ્ર—જો ભગવાન મહા-વીરે કહું છે. તેથી શું સમજવું? ઉ—ઉપકરણ લાવવ અથવા આહાર લાવવ તપરૂપ છે. એવું જાણીને શું કરવું તે કહે છે. દ્રવ્યથી ક્ષેત્રથી કાલથી અને ભાવથી તેમાં લયુતા રાલવી જેમકે દ્રવ્યથી આહાર ઉપકરણમાં લાવવપણું રાલવું (પટલે જરૂર જેટલાંજ રાલવાં) ક્ષેત્રથી વધાં ગામ વિગેરેમાં વોજારૂપ ન થવું. કાલથી દીવસ અથવા રાતમાં અથવા ટુકાલ વિગેરે સ્વરાવ વચ્ચતમાં શાંતિ રાલવની તથા ભાવથી કુત્રિપ અને મલિન વિગેરે કુભાવ ત્યાગવા (અર્થાત્ પોતે કહુ સહન કરીને મનમાં કુભાવ ન કરતાં ચારિત્ર નિર્મલ પાઠવું. તથા ગૃહસ્થોને કે વીજા જીવોને કોહપણ રીતે પીડાકારક ન થવું.)

સમ્યક્ત્વ પટલે પ્રશસ્ત અથવા શોભન તત્ત્વ અથવા એક સંગતવાહું(જેનાથી એકાંત હિત થાય તેવું)તત્ત્વ તે સમ્યક્ત્વ છે. કહું છે કે:—

“ પ્રશસ્તઃ શોભનશ્ચૈવ, એકઃ સન્નત એવ ચ । इत्येतैरुप સુદ્રસ્તુ, ભાવઃ સમ્યક્ત્વમુચ્યતે ” ॥ ૧ ॥

પ્રશસ્ત શોભન એક સંગતવાહો જે ભાવ થાય તે સમ્યક્ત્વ છે (ભાવાર્થ ઉપર આવેલ છે.)

આહું સમ્યક્ત્વજ અથવા સમત્વજ સારી રીતે સમજે વિચારે, કે પોતે અચેલ હોય અને વીજો એક વચ્ચ વિગેરે રાલવારો હોય, તેને પોતે નિદે નહિ. કહું છે કે:—

“ જોડવિ દુવત્થતિવત્થો ણોણ અચેલગો વ સંથરહ । ણ હુ તે હીલંતિ પરં સવ્વેડવિ ય તે જિણાણાપ ” ॥ ૧ ॥

जे वे वस्त्र धारण करे, त्रण वस्त्र धारण करे, अथवा एक वस्त्र राखे, अथवा अचेलक फरे, पण ते वधा जिनेश्वरनी आज्ञामां वर्ते छे, तेथी एक बीजाने निंदे नहीं.

“ जे खलु विसरसकथा संघयणधियादिकारणं पथ्य । णउत्तमन्नइ ण य हीणं अप्पणं मन्नइं तेहिं ॥ २ ॥

जेओ जुदा जुदा कल्पवाळा छे, तेओ शरीर संघयण तथा ओळी वधती धैर्यताने लीधे छे तेथी एक बीजाने अपमान न करे, तेम ओळापण न माने, (एटले पोतानी शक्ति वधारे होय तो ओंछां वस्त्रथी निभाव करे, पण वधारे राखनारने निंदे नहीं, तेम कारण पडतां वधारे वस्त्र राखवां पडे तो पोते दीनता न लावे के हुं पतित छुं. पण जरर जेटली वारज मंदवाड विगेरेमां वधारे वस्त्र वापरे.)

सव्वेवि जिणाणाए, जहाविहिं कम्मखवणट्टाए; विहरंति उज्जया खलु, सम्मं अभिजाणइ एवं ॥ ३ ॥

ते वधा जिनेश्वरनी आज्ञामां कर्मक्षय करवाने यथाविधि रहेला छे, पण तेओ योग्य विहार करता विचरे छे, एवुं निश्चयथी पोते मत्तमां उत्तम साधु जाणे छे.

अथवा तेज लाघवपणाने समजीने सर्वे प्रकारे द्रव्यक्षेत्र काळ भाव विचारीने आत्मावडे सर्वथा नाम विगेरे (चार-निक्षे-पाथी) सम्यक्त्वनेज सारी रीते जाणे. अर्थात् तीर्थकर गणधरोना उपदेशथी दरेक क्रिया बरोबर करे. आ वधां अनुष्ठानो जेम तावने दुर करवा माटे तक्षक नागनां माथा उपर रहेल मणीरत्न लाववा रूप अशक्य उपदेश नथी; पण बीजा घणा उत्तम साधुए. घणो काळ सुधी एवुं उत्तम संयम पाळ्युं छे. ते वतावे छे के आ प्रमाणे ओंछां वस्त्र अथवा बीलकुळ वस्त्र विना रहीने घास

विगेरेना कठोर फरसोनां दुःखोने सहन करनार महावीर (बळवान योद्धा) पुरुषोए वधा लोकने चमत्कार पमाडनारा घणा काळ आरवी जीदगी सुधी अनुष्ठान कर्युं छे. तेज विशेषधी कहेछे. (चोरशी लाख, ने चोरशी लाखे गुणतां जे संख्या थाय; तेदलां वरसोनुं पूर्व थाय छे.) तेवां घणां पूर्व सुधी संयम—अनुष्ठान पाळता मुनिओ विचर्या छे. पूर्वनी संख्या ७०, ५६०००-०००००० वर्षनी छे. आ वात रिखवदेव भगवानना वखतधी ते दशमा शीतळनाय सुधी पूर्वनां आउखा हतां; तेने आश्रयी छे. (आठ वर्ष उपरनी उमरना जिव्यने दीक्षा अपाय; अने तेनुं लांबु आयुष्य होय तेने आश्रयी छे.) त्यारपछी, श्रयांसनाथ भगवानधी वर्षनी संख्यानी प्रवृत्ति जाणवी; तथा थव्य जीवो जे मुक्ति जवाने योग्य छे, तेमने तुं जो, अने जे घासना कठोर फरसो विगेरे उपर बलाड्या; ते तयारे सारी रीते सहेवां. जेम तेमणे सहा; तेम, बीजा उत्तम साधुओ सहन करे छे. आ प्रमाणे जे उत्तम साधु सहन करे; तेने शु लाभ थाय ते कहे छे:—

आगयपद्माणां किंसा बाहवो भवंति पयणुए य संससोणिए विस्सेपिं कट्टु परिन्नाय, एस तिपणा

मुत्ते विरए वियाहिए त्तिवेमि (सू० १८६)

आगत ते मेळवेछुं छे. प्रज्ञान जेमणे तेवा गीतार्थ साधुओ तप करीने तथा परीसहो सहीने कृश (पातळी) बाहु बाळा बने छे, अथवा महान् उपसर्ग तथा परीसह विगेरेमां तेओ ज्ञान मेळवेला होवाधी तेमने पीडा ओछी होय छे. कारण के कर्म खपाववा तैयार थयेल साधुने शरीर मात्रने पीडा करनारा परीसह उपसर्गो मने सहाय करनारा छे. एवुं मानवाधी तेने मननी पीडा नधी

શતી. તેજ કહું છે કે:—

આચા૦

॥૬૮૨॥

“ ણિમ્માણેહ પરો ચ્ચિય અપ્પાણ ડ ણ વેયણં સરીરાણં । અપ્પાણો ચ્ચિઅ દ્ધિઅયસ્સ ણ ડણ દુક્કલં પરો દેહ ॥ ૧ ॥
વોજો માણસ આત્માને પીઢા નર્થીજ આપતો પણ શરીરને દુઃખ આપે છે, પણ આત્માના હૃદયનું દુઃખ પોતાનું માનેહું છે. પણ
પારકો તે દુઃખ આપતો નથી.

શરીરની પીઢા તો થાય હેજ તે વતાવે છે. જ્યારે શરીર સુકાય અને પાતલું થાય, ત્યારે માંસને લોહી સુકાય, તેવા ડનામ
સાથુને હુલ્લો તથા અલ્પ આહાર હોવાથી પ્રાયે સ્વલ્પણે પરિણમે છે. પણ રસ પળે નહીં. કારણના અમાવથીજ થોહુજ લોહી અને
તેજ શરીરપળે હોવાથી માંસ પળ થોહુજ હોય છે, તેજ પ્રમાણે મેદ વિગેરે પળ ઓહાં હોય છે. અથવા રુક્ષ [હુંહું] હોય તે પ્રાયે
ઘાતલ (વાયુ કરનાર) હોય છે. અને વાયુ પ્રધાન થવાથી માંસ અને લોહીનું પ્રમાણ ઓહુંજ હોય છે. તથા અચેલપળું હોવાથી શરી-
રને ઘાસના કઠોર ફરસ વિગેરે થતાં શરીરમાં દુઃખ થવાથી પળ માંસ અને લોહી ઓહાં થાય છે.

સંસારશ્રેણી જે રાગદ્વેષરુપ કષાયની સંતતિ છે, તેને ક્ષાંતિ વિગેરે ગુણો ધારીને વિશ્રેણી [નહ] કરીને તથા સમત્વ માવપળું
જાણીને તે પ્રમાણે વર્તે જેમકે જિનકલ્પી કોહ એક કલ્પ [વસ્ત્ર] ધારી કોહ વે, અને કોહ ત્રણ પળ ધારણ કરે છે, અથવા સ્થવિર
કલ્પી મુનિ માસ ક્ષયણ હોય, કોહ પંદર દિવસના ઉપવાસ કરનારો હોય, તથા કોહ વિક્રુષ્ટ અને કોહ અવિક્રુષ્ટ તપ કરનારો હોય,
અથવા કોહ ક્રૂરગહુ જેવો રોઝનો પળ સ્વાનારો હોય, તો તે વથાણે તીર્થકરના વચન અનુસારે વર્તે છે, અને પરસ્પર નિંદા કરનારા
ન હોવાથી સમત્વદર્શી છે, કહું છે કે:—

સુત્રમ

॥૬૮૨॥

जोनि दुबल्य तिवल्यो, एगेण अचेल्गो व संथरइ; नहुनेहिलेंति, परं सर्वेवि हु ते जिणाणए; ॥ १ ॥

जे बे, जण, एक अथवा वल्ल रहित निभाव करे, ते बया जिनेश्वरनी आज्ञापां होनाथी परस्पर निंदा करता नथी;

तथा जिनकल्पिक, अथवा प्रतिमा धारण करेल, कोइ मुनि कदाचित् छ महिना सुधी पण पोताना कल्पमां भिक्षा न मेळवे, तेवो उत्कृष्ट तप करवा छतां पोते रोज खानार क्रूरगड्डु जेवा मुनिने एम न कहे के हे भात खावा माटे दीक्षा लेनारा मुंड! त खावा माटेज मात्र दीक्षा लीधी छे! [एतुं कहीने अपमान न करे.]

तेथी आ प्रमाणे समत्व दृष्टिनी प्रज्ञावडे संसार भ्रमण रूप कषायने दूर करी समता धारण करीने ते मुनि संसार सागर तरेळो छे तेज सर्व संगथी मुक्त छे, तेज सर्व सावद्य अनुष्ठानथी छुटेळ जिनेश्वरे वर्णव्यो छे, पण बीजो नहिं. एतुं सुधर्मास्वामी कहे छे. प्र०—हवे ने प्रमाणे जे संसार श्रेणीने त्यागी संसारसागर तरेळो मुक्त वरणव्यो तेजा उत्तम साधुने अरति पराभव करे के नहिं? उ—कर्मना अचित्य (विचित्र) सामर्थ्यथी परिभवे पण खरी! तेज कहे छे.—

विरयं भिक्खुं रायंतं चिरराश्रोसियं अरई तत्थ किं विधारए?, संघेमाणे समुद्धिए, जहा से दावे असंदीण एवं से धम्मसे आरियपदेसिए, ते अणवकंखमाणा पाणे अणइवाएमाणा जइया मेहा-विणो पंडिया, एवं तेसिं भगवओ अणुट्टाणे जहा से दिया पोए एवंते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुठ्वेण वाइय तिवेमि (सू० १८७) धूनध्ययने तृतीयोद्देशकः ॥ ६-३ ॥

असंयमथी वचेल भिक्षाथी निर्वीह करनार तथा अपशस्त स्थान रूप असंयमथी नीकळी गुणोने उत्कृष्टपणे प्राप्त करवाथी उपर उपरना प्रशस्त गुण स्थान रूप संयममां वर्त्ता साधुने शुं स्ववलायमान करे? अर्थात् तेवा उत्तम साधुने अरति मोक्षमां जतां जतां अटकावी शके के? उ. हा दुर्बळ अने अविनय वाळी इंद्रियो छे. तेने अचित्तय मोह शक्ति अने विचित्र कर्म परिणति शुं न करे? (अर्थात् कुमार्गे लइ जायज) कहुं छे के:—

“ कम्मणि पूर्णं घणचिकणाइ गरुयाइं वइरसारइं । णाणद्धिअंणि पुरिसं पंथाओ उत्पहं णिति ” ॥ १ ॥

निश्चे कर्म घणां चीकणां वधारे प्रमाणमां वज्रसार जेवां भारे होय; तो, ज्ञानथी भूषित होय; तेवा पुरुषने पण सारा मार्गथी कुमार्गे लइ जाय छे.

अथवा आक्षेपमां आ 'किम्' शब्द छे तेनो परमार्थ आ छे के, अरति तेवा उत्तम साधुने धारी शके के? उ. नज धारी शके? कारण के, आ उत्तम साधु क्षणे क्षणे वधारे निर्मळ चारित्रना परिणामथी मोहना उदयने रोकेलो होवाथी लघुकर्मवाळो छे, तेथी तेने अरति कुमार्गे न दोरी शके; ते वतावे छे. क्षणे क्षणे विनाविलंबे संयमस्थानना चढता चढता कंडकने धारण करतो सम्यग्प्रकारे चारित्र पाळतो रहो छे. अथवा, चढता चढता गुणस्थानने पहुँचतो यथाख्यात—चारित्रना संमुख जतो होवाथी तेने अरति केवी रीते अटकावी शके? (न अटकावे.)

अने आचो साधु पोताना आत्मानोज अरतिथी रक्षण करनार छे. एम नहीं पण, बीजाओनी पण अरति दूर करनार होवाथी रक्षक छे, ते वतावे छे. वन्ने वाजुए जेमां पाणी छे ते द्वीप छे; ते द्रव्य, अने भाव एमं वे भेदे छे ते द्रव्यद्वीपमां आधास

(વિશ્રાંતિ) છે છે. તેથી તે આખાસ લેવાને માટે જે દ્વીપ હોય; તે આખાસદ્વીપ છે, તે નદી સમુદ્રના ઘણા મધ્યભાગમાં [નદીની પહોલાઈ વિશેષ હોય તેમાં વન્ને બાહુણ પાળી વહેતું હોય અને વચપાં સ્વાલી જગ્યા હોય; તો, વેટ કહેવાય છે. તેજ પ્રમાણે સમુદ્રમાં જગ્યા ઉપસેલી હોય તો વરસાદ લીધે તે ઉપસેલી જગ્યાના મેદાનમાં ફલદ્રુપ જગ્યા થાય છે, ત્યાં] વહાણ કોઈ પણ કારણે નદી સમુદ્રમાં ભાંગી જતાં ફૂલતાં માણસો આશ્રય લે છે. આ વેટ પણ બે પ્રકારે છે. જે પચવાહીણ અથવા મહીને પાળીથી ભરાઈ જાય તે સંદીન કહેવાય, અને તેવો વેટ જો ખરતીના પાળીથી ભરાઈ ન જાય તો અસંદીન કહેવાય. જેમકે સિંહલદ્વીપ વિગેરે છે. અને વહાણવાલા તે દ્વીપનો આશ્રય લે છે. અને પાળી વિગેરેનાં ઉપયોગ કરે છે. અને તે વેટથી તેમને આશ્રય મળે છે. તેવીજ રીતે ઉત્તમ રીતે વર્તતા સાયુને જોઈને મન્ય જીવો તેનો આશ્રય લે છે.

અથવા દ્વીપને વદલે દીપ [દીવો] પ્રકાશ આપનાર લટ્ટુ તો તે પ્રકાશને માટે હોવાથી પ્રકાશ દ્વીપ છે. અને તે સૂર્ય ચંદ્રમણિ વિગેરે અસંદીન છે. અને વીજો વિજલી ઉલ્કાપાત વિગેરેનો સંદીન છે. [સૂર્ય ચંદ્ર પ્રકાશ આપે પણ તે પ્રકાશ સ્થાયી અને ઉપકારક હોવાથી લોકો આશ્રય લે છે. પણ તેવા ગુણથી રહિત વિનલીનો પ્રકાશ નફામો છે અથવા દુઃસ્વદાયી છે તેવીજ રીતે કુસાયુ અસ્થિર ચારિત્રવાલો લોકોને ધર્મથી અટ્ટ બનાવે છે.] અથવા ઘણાં લાકડાં ઈકઠાં કરી સલ્ગાત્યાથી ઈચ્છિત રસોઈ વિગેરે બનાવવામાં ઉપયોગી હોવાથી અસંદીન છે. અને યાસના મઢકા જેવો અગ્નિનો પ્રકાશ સંદીન છે. [તેજ પ્રમાણે સુસાયુ અને કુસાયુના દૃષ્ટાંત સમજવાં.] જેમ આ સ્થપુટ વિગેરેના વતાવવાથી હેય ઉપાદેયને છોડયું, ગૃહણ કરવું, ઈવા વિવેકને વાંચ્છનારા મન્ય જીવોને સુલ્લુ વતાવવાથી તે ઉત્તમ સાયુ ઉપયોગી છે. તે પ્રમાણે કોઈ સમુદ્રના અંદર રહેલા પાળીઓને વિશ્રાંતિ આપનાર છે. તેજ

પ્રમાણે જ્ઞાન મેલવવા ઉચ્ચત થયેલો પરીસહ ઉપસર્ગમાં દીનતા ન લાવવાથી અસંદીન છે. તે સાથુ વિશેષ પ્રકારે ઉત્તમ વોધ આપવાના કારણે વીજા જીવોને પણ ઉપકાર માટે થાય છે.

વીજા આચાર્યોં માવદ્વીપ અથવા માવદીપને વીજી રીતે વર્ણવે છે; તે આ પ્રમાણે માવદ્વીપ તે સમ્યક્ત્વ છે. અને તે પાહું જવાનું વતાવવાથી ઔપજામિક અને ક્ષાયોપજામિક સંદીન માવદ્વીપ છે, અને ક્ષાયિક સમ્યક્ત્વને મેલવીને સસાર ખમણની હદ આવી જવાથી પ્રાણીઓને ધૈર્ય આવે છે (કે હવે આ દુઃખ અમુક કાલ સુધીનુંજ છે.)

પણ સંદીન માવ દીપ તો શ્રુતજ્ઞાન છે, અને અસંદીન તે કેવલજ્ઞાન છે, તેને મેલવીને પ્રાણીઓ અવરૂપે ધૈર્ય મેલવે છે, અથવા ધર્મને સારી રીતે ધારણ કરી ચારિત્ર પાકતો હતો અરતિના વશમાં તે સાથુ જતો નથી છું વર્ણન કરતાં કોઈ વાદી પૂહે કે—
કેવો આ ધર્મ છે કે જેના સંધાનને માટે આ સાથુ ઉઠ્યો છે? તેનો ઉત્તર જૈનાચાર્ય આપે છે.

જેમ આ અસંદીન દ્વીપ પાણીથી ન ખીંજાયલો મારોલોં વહાણના માણસો તથા વીજા યજ્ઞા જીવોને શરણ આપવાથી ત્રિશ્રાંતિ આપવા યોગ્ય છે, તેમ આ જિનેશ્વરે કહેલો ધર્મ કષ્ઠ તાપ હેદ નિર્ઘટિત એમ ચાર પ્રકારે પરીક્ષા કરતાં અસંદીન દ્વીપ સમાન આશ્રય આપનાર છે, [સોનાની પરીક્ષા કષ્ઠ લેવાથી સારો કષ્ઠ આપે, તાપમાં નાંલવાથી કાઠું ન પડે, પણ વિશેષ ચલકાટ આપે, હીળીથી કપાતાં અંદરથી પણ ઉત્તમ જાતિ ઓઠરાવે, તથા યદ્વચાથી માંગી ન જતાં ચીકળાશથી હથોડીના ઘા પડવા હતાં વિશાલ થતું ચાલે. તેમ જૈન ધર્મીં જીવને કોઈ તિરસ્કાર કરે, સંતાપે, દ્વાધ પગ હેદે, ઘાળીમાં ઘાલીને પીલે, અથવા અણઘટતો અતિશય માર મારે, પ્રાણ લે, તોપણ ઉત્તમ સાથુ પોતાના આત્મધર્મથી વિમુક્ત થતો નથી.]

अथवा कुतर्कवद्दे पोते गभरातो नथी. पण योग्य उत्तर आपवाथी प्राणीओने रक्षण माटे आभास भूमि छे.

प०—ते धर्म आर्य पुरुषोए कहेलो होवाथी ते प्रमाणे वर्तनारा शुं बरोबर अनुष्ठान करनारा छे ? उ-हा, अमे कहीए छीए, प०—जो ने होय तो ते केना छे ? उ.—ते साधुओ निर्मल भाव चालु राखवा संयममां अरतिना पणोदक (दूर करनार) छे.

मोक्षनी समीपमां रही भोगनी इच्छा छोडीने धर्ममां सारी रीते उद्यम करे छे.

आ प्रभाणे वधे समजहुं. के तेओ प्राणीओने दणता नथी. तेम बीजां महाव्रत पाळनारा जाणवा. तथा कुशल अनुष्ठान करवाथी सर्व लोकोना दयित (रक्षका) छे. तथा मेधावी एटले साधुनी मर्यादांमां रहेला छे, पापना कारणेने छोडवाथी. सम्यग् रीते पदार्थने जाणनारा पंडित साधुओ धर्म चारित्र पाळवा माटे उठेला छे.

पण जेओ तेहु निर्मल ज्ञान धरावता नथी, तेओ सम्यग् विवेकना अभावथी हजु सुधी पण तेओ तेहुं चारित्र पाळवा तैयार नथी. तेना ज्ञान रहित साधुओने पूर्वे बतावेला निर्मल बोधवाला आचार्य विगोरेए सुबोध आपीने ज्यांसुधी तेओ ज्ञाने करीने विवेकवाला थाय त्यांसुधी पाळवा जोइए, ते बतावे छे. उपर बतावेली विधिए ओहुं ज्ञान मेळवेला अस्थिर मति वालाने भगवान महावीरना धर्ममां सारी रीते तेओ न जोडायवा होय; तो, सुबोधनां उपदेश वडे तेमनुं पाळन करीने स्थिरमति वाला वनाववा अहीं दृष्टांत कहे छे:—

जेमके:—द्विज ते पक्षी छे, तेनुं पोत (बच्चुं) ते द्वीजपोत छे, ते बच्चांने तेनी मा गर्भना प्रसवथी लइने इहुं मुके, त्यार-पळी, अनेक अवस्थाओ आवे; ते वधामां ज्यांसुधी ते बच्चुं पुरं उडवायोग्य मजबुत पांखोवाळुं थाय; त्यांसुधी पाळे छे; तेज प्रमाणे

आचार्य पण नवा वेलाने दीक्षा आपीने तेज दिवसथी साधुनी दश प्रकारनी समाचारीनो उपदेश, तथा अध्यापन (भणाववावडे) ज्यांसुधी ते गीतार्थ थाय; त्यांसुधी पाळे; पण जे वेलो आचार्यना उपदेशने उल्लंघीने पोतानी इच्छा प्रमाणे स्वतंत्र विचरी कंइपण क्रिया करे; तो, ते (लाभ मेळववाने वदले) उज्यन नगरना राजकुमारनी माफक दुःख पासे ते वतावे छे.

उज्यन नामहुं नगर छे. तेमां जीतशत्रु नामनो राजा छे तेने बे पुत्रो छे. मोटा पुत्रे धर्मघोष आचार्य पासे संसारनी असारता समजीने दीक्षा लीधी. अनुक्रमे आचारांग विगेरे ब्राह्मो भणीने तेनो परमार्थ समजीने जिनकल्पने स्वीकारवानी इच्छाथी बीजी सत्वभाववाने भावे छे, ते भावना पांच प्रकारनी छे. (१) उपाश्रयमां (२) तेनी बहार (३) बीजो तथा चोथो शून्यघरमां, तथा पांचमी भावना प्रसाणमां छे, ते पांचमी भावनाने भावतो हतो.

ते समये मोटाभाइना प्रेमथी नानोभाइ खेवाइने, आचार्य पासे आवीने बोल्यो के:—मारो मोटोभाइ कयां छे ? साधुए कहुं तोरे शुं काम छे? तेणे कहुं के:—मारे दीक्षा लेवी छे. आचार्ये कहुं:—तुं प्रथम दीक्षा ले, पळी तारो भाइ देखीश. तेणे दीक्षा लीधी; अने पूछ्युं. मोटो भाइ कयां छे ? आचार्ये कहुं:—देखवानी शुं जरूर छे ? कारण के, ते कोइथी बोलतो नथी, अने ते जिनकल्प धारण करवा इच्छे छे.

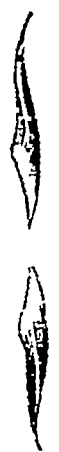
नानाभाइए कहुं:—तोपण, हुं तेने जोइश, घणो आग्रह करवाथी मोटोभाइ बताव्यो, ते चूप वेढेलो नानाभाइए वांचो. पळी, मोटाभाइ उपर घणो प्रेम होवाथी आचार्ये ना पाडी. उपाध्याये रोकयो; साधुओए पकडी राख्यो; अने ते नानाभाइने बोलया:—के आ स्वज्ञानमां रहेवानुं, तारे अमुक समय सुधी थोभवानुं छे. कारण के, तारा जेवाने ए कठण अने विचारमां पडवानुं छे.

आवुं समजाव्या ह्तां पण, तेणे कहुं:—हुं पण, तेज वापथी जन्मयो हुं (मारामां पण तेदलोज हीमत छे.) एवुं ओहुं लइने मोहथी ते पण, तेमज मसाणमां मांटाभाइ माफक वेठो. मोटाभाइने देवीए वांघो, पण नवा साधुने न वांघो, तेथी अस्थिर मतिना कारणे ते देवी उगर कोपायमान थयो. देवताए पण तेना अविधिना कृत्यथी कोपायमान थइने लात मारीने तेनी वे आंखोना डोळा वहार काढी नाख्या.

तेथी मोटोभाइ हृदयथीज (प्रेमथी) देवताने कहेवा लाय्यो, के आ अज्ञान छे, तेने गा माटे दुःख दीधुं तेनी आंखो नवी वनाय. देवीए कहुं, जीवना प्रदेशोथी जुदा पडेला आ डोळा जोडाय तेम नथी, साधुए कहुं नवा वनाय, तेमनुं वचन ओलंघाय तेवुं नथी, एम विचारीने देवीए तेज क्षणे चंडाडे मारेका एल [वकरा]नी आंखोना वे डोळा लावीने तेनी आंखो नवी वनावी.

आ प्रमाणे उपदेवथी वहार वर्तनारने दुःख थाय छे, तेम विचारीने विष्ये हंमेशां आचार्यनी आज्ञामां वर्तवुं. आचार्ये पण हंमेशां परोपकारनी वृत्ति राखीने पोताना विष्यो यथोक्त विधिए पाळवा तेज वतावे छे. के जेम पक्षीना वच्चांने मंत्राप पाळे तेम आचार्ये पण रातदिवस विष्योने पाळवा अनुक्रमे वाचना आपवी, विखासण आपवी, वथा कार्यमां वैर्यतावाळा करवा के जेथी तेओ ते प्रमाणे वर्तने संसारथी पार उत्तरवा समर्थ थाय छे. एवु सुधर्मास्वामि कहे छे.

त्रीजो उद्देशो समाप्त.



ચોથી ઉદ્દેશો કહે છે.

ત્રીજો ઉદ્દેશો કહ્યા પછી ચોથો કહે છે. તેનો આ પ્રમાણે સંબંધ છે. ગયા ઉદ્દેશામાં શરીર ઉપકરણનો મમત્વ ત્યાગ વતાવ્યો અને તે ત્રણ ગૌરવને ધારણ કરનારને સંપૂર્ણ ન કોય, તેથી તે ગૌરવ ત્યાગવા આ ઉદ્દેશો કહે છે. તેના આ સંબંધથી આવેલા ઉદ્દેશાનું પહેલું મૂલ્ય આ છે.

एवं ते सिरसा द्रिया य राधो थ अणुपुञ्चेण चाइया तेहिं महावीरेहिं पद्माणमन्नेहिं तेसिमंतिए पद्माणसुवल्लभ हिच्चा उवसमं फारुसियं समाइयंति वसित्ता बंभचेरंसि आणं तं नोत्ति, मन्नमाणा आघायं तु सुच्चा निसम्म, समणुज्जा जीविरसामां पगे निक्खमंते असंभवंता विडड्झमाणा कामेहिं गिद्धा अड्झोववन्ना समाहिमाधायमजोसयंता सत्थारमेव फरुसं वयंति (सू० १८८)

उपर वतावेल पक्षीना वच्चाना वधवाना क्रमथीज ते शिष्यो पोताने हाथे दीक्षा आपेला अथवा वडी दीक्षा आपेला तथा भणवा आवेला साधुओंने दीवस अने रात्रे क्रमथीज भणावेला होय.

तेमां कालिक मूत्र दिवसनी पहेली तथा चोथी पोरसीमां भणावाय છે. પળ જે ઉત્કાલિક છે તે સંધ્યાસમયની કાલ વેઠા ઓઢીને આલો દિવસ રાત ગમે ત્યારે ભણાય છે. તેનું અધ્યાપન આચારાંગ વિગેરે ક્રમથી કરાય છે, અને આચારાંગમૂત્ર ભણાવવાનું

त्रण वरसना पर्यायवाळाने हे. विगेरे क्रमशी भणावेल्या चारित्र लीधेल्या साधुओ होय हे, तेमने उपदेश आपेलो हे के, गुण मात्र दृष्टि ए जहुं. काचवा माफक अंगने संकोची राखवां आ प्रमाणे शिखापण आपेला, अने भणावी तैपार करेलां साधुओ होय हे.

पः—क्रोणे भणावेल्या हे. उः—ते तीर्थंकर गणभर—आचार्य विगेरे महावीर पुरुषोए भणाव्या हे.

पः—ते भणावनार केवा हे? उः—ज्ञानीओ हे. कारण के, तेमनो कहेलो उपदेशज असर करे हे. (माटे, ज्ञानीहुं विशेषे-षण आपेल हे.) अने ते शिष्यो वन्ने प्रकारे प्रेक्षा पूर्वकारी हे. तेओ आचार्य पासे रहीने (प्रकर्षशी जणाय; ते प्रज्ञान.) श्रुतज्ञान भणे हे. कारण के, ते श्रुतज्ञानना प्रतापशीज नवो नवो बोध थाय हे, तेथी ते बहुत श्रुत वनीने प्रवळ मांहना उदयने लीधे आचार्यना सदुपदेशने उत्कट मदथी दूर करीने उपशम लोडीने दुःखी थाय हे ते उपशम द्रव्य, अने भाव एम वे भेदे हे. द्रव्यशी उपशम ते, कतक नामनी वनस्पति (एक जातहुं बीज आवे हे. ते) तेने चुरीने जो गारावाळा पाणीमां नांखेल होय; तो, पाणी गारो नीचे वेसतां निर्मळ थाय हे, भाव उपशम ते, ज्ञान विगेरेथी त्रण प्रकारहुं हे. (१) ज्ञानवडे जे क्रोध न करे; ते ज्ञानउपशम हे. ते आ प्रमाणे आक्षेपणी विगेरे कोइपण प्रकारनी धर्मकथावडे कोइ जीव शांति धारण करे ते, ज्ञानउपशम हे.

(२) शुद्ध शम्यदर्शनथा तेवा क्रोधीने शांति पमाहे. जंमके—श्रेणिक राजाए जे देवता अश्रद्धावाळो हतो, तेने बोध करीने शांत पमाळ्यां. (पंताना दृढ सम्यकत्वथी ते देवता श्रद्धावाळो थयो;) अथवा आठ दर्शनप्रभावक्रोधी कोइ जीव संपती विगेरेथी शांत पामे हे, अने चारित्र-उपशम तो, क्रोध विगेरेनो उपशम हे, तेनामां विनयथी नम्रता होय हे.

तेमां केटलाक शुद्ध साधुओ ज्ञानसमुद्रमां अंदरहुं रहस्य न जाणवाथी समुद्रना उपरन हुचकी मारनारा होय हे. तेओ उपर

કહેલ ઉપશમ હોડીને તે જ્ઞાનનો લેશ દાખમાં આવતાં અહંકારી વનીને કઠોરતા પ્રહણ કરે છે (અહંકારી વને છે,) તે વતાવે છે. પરસ્પર સૂત્ર તથા ગાથા ગણતાં; અથવા અર્થ વિચારતાં એક વીજાને કહે છે. “ જે તેં કહું, તે અર્થ આ શબ્દનો નથી. તેથી તું જાણતો નથી. વળી, વોલે છે કે—મારા જેવા શબ્દના અર્થનો નિર્ણય કરવાંમા સમર્થ કોઈકજ હોય છે, પળ વયા નહીં,

“ પૃષ્ઠા ગુરવઃ સત્યમપિ પરીક્ષિતં નિશ્ચિતં પુનરિદમ્ નઃ ॥ વાદિનિ ચ મહ્યુભવ્યે ચ માદ્ગોવાન્તરં ગચ્છેત્ ॥ ૧ ॥

ગુરુઓને પૂહેલ, અને પોતે પળ આ નિશ્ચય કરેલો છે એવું અમારં આ કયન છે. તથા વાદિઓમાં વિદ્વાન્, અને સુમટમાં મહારા જેવો કોઈકજ વીજો હશે. વીજો સાથુ કહે છે કે, સ્વરેસ્વર, હરો (પળ) અમારા આચાર્ય તો, આ મમાળે કહે છે. તેથી તે ફરીથી વોલે છે કે, તે આચાર્ય વોલવામાં કુંઠ [હુટા] જેવો હુદ્ધિહીણ શું જાળે ? તું પળ, પોપટની માફક મળાવેલો વિચાર કર્યા વિનાનો છે, આ મમાળે વીજા કેટલાંક વાક્યો તે હુષ્ટ હુદ્ધિય પ્રહણ કરેલ થોડા અક્ષરનું જ્ઞાન ધરાવનાર સાથુ વોલે છે, તેથી એમ જાણવું કે, મહાન્ ઉપશમનું કારણ જે જ્ઞાન છે, તેને વિપરીતપણે પરિણામતાં તે આવું વોલે છે. કહું છે કે:—

“ અન્યૈઃ સ્વેચ્છારવિજ્ઞાનર્થવિશેષાન્ શ્રમેણ વિજ્ઞાય । કૃત્સ્ર વાઙ્મયમિત ઇતિ સ્વાદત્યજ્ઞાનિ દર્ષેણ ” ॥ ૧ ॥

વીજાઓએ ઇચ્છાનુસાર રચેલા કોઈપણ અર્થને શ્રમથી જાળીને પોતે જાળે કે, સંપૂર્ણ સિદ્ધાંતનો પારંગામિ હોય; નેમ, અહં-કારવહે અંગોને સ્વાય છે. [વીજાનું અપમાન કરે છે.]

“ ક્રોડનકમીશ્વરાણાં કુવકુટલાવકસમાનવાહ્યભ્યઃ । શાસ્ત્રાણ્યપિ દાસ્યકથાં લઘુતાં વા શુભકો નયતિ ” ॥ ૨ ॥

શ્રીમંતોની ક્રોડા સમાન વસ્તુને કુવકુટલાના લાવક સમાન જેવો વનીને પવિત્ર શસ્ત્રોને પળ, દાસ્ય કથા જેવી લઘુતાને શુદ્ધ સાથુ

પમાદે છે. (ઉત્તમ જાતીનું મોતી જે શ્રીમંતોનું મન રીક્ષાવે; તેવા મોતીને ન સમજનાર કુકડાનું વચ્ચું જુવારનો દાળો સમજી લેવા જતાં; કદર ન થવાથી ફેંકી દે છે. તેજ પ્રમાણે શુદ્ધ સાધુ ગંભીર સૂત્રના પરમાર્થને ન સમજવાથી હાંસીના વાક્ય તરીકે માની લે છે.) વિગેરે. અથવા વીજી પતિમા 'હેન્ધવા ઉવસમં અહમે પાસ્સિયં સમાસ્હંતિ' પાઠ છે, તેનો અર્થ આ છે કે—ઉપશ્રમ જોડીને વહુ શ્રુત વનેલા કેટલાક (વધા નહીં) કઠોરતાને સ્વીકારે છે, તેથી, તેમને બોલાવતો, અથવા પૂછવા જતાં કાં તો, ચુપ રહે છે. અથવા હુંકાર શબ્દ બોલીને માથુ વિગેરે હલાવીને જવાબ આપે છે.

વઠી, કેટલાક બ્રહ્મચર્ય જે સંયમ રુપ છે, તેમાં રહીને; અથવા, આચારાંગસૂત્ર મળીને તેનો અર્થ બ્રહ્મચર્ય છે, તેમાં રહીને આચારાંગના વિષયને અનુસાર અનુષ્ઠાન કરવા છતાં પણ તેનો તિરસ્કાર કરીને તીર્થકરના ઉપદેશ રુપ આજ્ઞાને કંઈક માને કંઈક ન માને; પરંતુ, સાતાગૌરવનાં વાહુલ્યપણાથી તીર્થકરના વચનને વહુ માન આપતા નથી; પણ શરીરની વહુશપણાને અવલંબે છે. (શરીરની શોભા કરવામાં વીતરાગની આજ્ઞા ઉલ્લંબે છે.)

અથવા, અપવાદને આંલંબીને વર્તતાં ઉત્સર્ગ માર્ગનો ઉપદેશ આપતાં તેઓ ઇકાંત પકડે છે કે, 'તે ઉત્સર્ગ માર્ગ જિનેશ્વરનો કહેલો નથી.' હવે, સમજવા માટે અપવાદ વતાવે છે.

કુજ્ઞા મિવસૂ ગિલાણસ્સ, અગિલાણ સમાહિયં;

નિરોગી મિશુ (સાધુ) માંદા સાધુની સમાધિ માટે યોગ્ય રીતે વેચાવચ્ચ કરે. જે કારણે (રોગે) સાધુ માંદો હોય; તે રોગ દૂર કરવા આધાકર્મી આદ્યાર વિગેરે પળ લાવી આપે.

प०—टीक तेम हशे; पण कुशील साधुओ जेओ तीर्थकरना वचननी आशातना करे तेमने दीर्घ संसार थाय छे, तेमने थवाना भविष्यना दुःखो केम वताव्यां नथी ? उ०—एज अमे वताव्युं, के जे शरीर शोभा विगरे माटे कुशीलता सेवे छे, तेमने थवाना कडवा विपाक विगरे सूचव्या; तेवुं हितशिक्षातुं वचन गुरु पासे सांभकीने ते कुशीलीया साधुओ ते गुरुनेज कडवां वचन संभळावे छे. प०—त्यारे कुशीलीआ साधु वा माटे गुरु पासे सिद्धांत सांभळता हशे ?

उ०—समनाइ (लं.कमां संमत) वनीने मान मेळवी अमे जोवन गुजारीशुं, आवा हेतुथी सिद्धांतना गूढ रहस्यना पश्चोना खुलासा माटेज शब्द शास्त्रादि (व्याकरण विगरे) शास्त्रो भणो छे.

अथवा आ उपायवडे लोकमां मानीता थइने अमे जीवीशुं, एटला माटेज केटलाक-दीक्षा लइने, पळवाडे कुशीलीया वने छे. अथवा समनाइ ते प्रथम दीक्षा लेतां विचारे के अमे उष्टुक्त विहारी वनीने संयम जीवितवडे जीवीशुं, अने दीक्षा लइ पाळ-लथी मोहना उदयथी चारिज वरोवर न पाळे, तेओ गौरवत्रिक (ऋद्धि रस साता)ना कारणे अथवा तेमांथी. कोइपण एकना कारणे ज्ञानादिक मोक्षमार्गमां सारी रीते वर्तता नथी, तेम गुरुना उपदेशमां वर्तता नथी, अने जुदी जुदी जातनी इच्छाओथी गूढ थइने चित्तमां वळता गौरवत्रिकमां ध्यान राखीने विषयोमां रक्त वनी इन्द्रियोने स्थिर करवा रूप जे तीर्थकर विगरेए पांच यमो [महा-व्रतो] वतावेला छे तेने वरोवर न पाळीने पोतानी मेळे पंडित मानी वनीने आचार्य विगरेए वीतरागना शास्त्र प्रमाणे प्रेरणा कर्पा छतां ते कुसाधुओ ते गुरुने कडवां वचन संभळावे छे. अने बोले छे के 'आ विषयमा तमे शुं जाणो'

कारण के जेवीरीते सूत्रना अर्थने व्याकरणने गणितने अथवा निमित्तने-हुं जाणुं छुं. तेवी रीते बीजो कोण जाणे छे? आ

प्रमाणे आचार्य विगेरेने कुसायु कडवां वचन कहे छे.

अथवा धर्मोपदेशक तीर्थंकर विगेरे छे. तेमने पण कडवां वचन कहे छे. ते बतावे छे. कोइ बखत ते सायु भूल करे, त्यारे आचार्य टपको आपे त्यारे कुसायु कहे, के तीर्थंकर अमाहं गळुं कापवाथी वधारे बीजुं शुं कहेनार छे ? विगेरे अनुचित वचन बोले छे. अने विद्याना खोटा मदनना अवलेपर्या मदांध बनीने शास्त्र रचनार गणधर भगवंतीने पण दूषण आपे छे. बळी, आचार्योंन दूषण आपे छे, एटळुंन नहि; पण, बीजा सायुओने पण कडवां म्हैणां संभळावे छे.

सीलमंता उवसंता संवाए रोयमाणा असीला अणुवयमाणस्स विइया मंदस्स बालया (सू० १८९)

शील ते अहार हजार भेदवाळुं छे, अथवा महाव्रतो पाळवानुं छे, तथा पांच इन्द्रियोतो जय करवानुं छे. कषायनो निग्रह छे, त्रण सुप्ति पाळवानी छे. एवुं निर्मळ शील पाळे ते शीलवंत छे, तथा कषायने शांत करवाथी उपशांत छे.

शंका—शीळवान ग्रहण करवाथी उपशांत तेमां समाह गया. त्यारे फरी केम कहु ? उत्तर—कषायना निग्रहनुं प्रधानपणुं बताववा माटे, सम्यकरीते जेनावडे कहेवाय; ते संख्या अथवा पज्ञा छे, तेना बडे

संयम अनुष्ठानमां पराक्रम करनारा आचार्यों होय; छतां, कोइ सायुना नबळा भाष्यथी सदाचार रहित ए-आचार्यों छे. एवी निंदा करनारा, अथवा पडवाडे निंदा करनारा, अथवा मिथ्या दृष्टि विगेरे बोले के तेओ कुशील छे, एवुं कहेतां पासत्था विगेरेनी आ-

चार्योंने खोटां वचन कहेवा रूप आ बीजी मूर्खता छे.

एटले, कुसायु प्रथम तो, पोते सारा चारित्र्यथी रहित छे, अने पोते सारा चारित्र पाळनार उद्युक्त विहारी उत्तम सायुने निंदे

हे. आ तेमनी बीजी मूर्खता हे. अथवा, जे शीलवन्तो हे ते उपशांत हे. एवुं बीजाए कहे छते, ते कुसायु बोले के “ ए वणो उपकार करनारा आचार्य विगेरेमां तपारा कहेवा मुजव वयां शील अने उपशांतता हे ?” आ प्रमाणे बोलता दुराचारी साधुनी बीजी मूर्खता थाय हे. पण, बीजा केटलाक साधुओं वीर्यंतराय कर्मना उदयथी जो के, पोते पुर चारित्र न पाळता होय; छतां पण वंजा उत्तम साधुओंनी प्रशंसा करता रहीने पोते पण बीजाने सारा आचार वतावे हे. ते कहे छेः—

नियद्वमाणा वेगे आथारगोयर माइवखंति, नाणढमट्टा दसणद्धसिणो (सू० १९०)

अशुभ कर्मना उदयथी सयमथी दूर थाय, अथवा लिंग मुक्ती दे, अर्थात् केटलाक साधुओं मोहना उदयथी चारित्र न पाळी शके, त्यारे कोद साधुनो वेष मुक्ती दे, अथवा वेप राखे तो पण पोते साधुनो जेवो आचार होय, तेवो लोकोने वतावे हे. अने पोतानी निंदा करता कहे छे, के तेवो उत्तम आचार पाळवाने असे समर्थ नथी, आ कारणथी चारित्र न पाळयुं, तेज तेमनी मूर्खता हे. पण वचन साचुं बोलवार्थी बीजी मूर्खता थती नथी, तेओं एवुं खोटुं नथी बोलता, “ के अमे जे करीए छीए तेवोज अपारो आचार छे ” (पोतानी भूल कबुल करे छे.) वळी आम न बोले के ‘ हवे आ दुःखम कालना अनुभावथी वळ विगेरे ओहुं भवार्थी मध्यम वर्तन एज कल्याणनुं कारण छे. हमणा उत्सर्गनो अवसर नथी (आहुं खोटुं न बोले) कहुं छे केः—

“ नात्यायतं न शिथिलं, यथा युञ्जीत सारथिः । तथा भद्रं वहन्त्यश्वा, योगः सर्वत्र पूजितः ॥१॥ ”

न जोरथी, न धीरे, एम सारो हाकनार घोडा विगेरेने हाके ते हाकनारो डह्यो गणाय, तथा घोडा पण ते प्रमाणे मध्यम चाले तो ते योग वधे माननीय थाय छे. वळीः—

जो जन्म होइ भगो, ओवासं सी परं अविंदंतो । गंतुं तत्थञ्चयंतो, इमं पहाणति घोसेति जे ज्थां भांग्यो होय तो ते बीजा अवकाशने न जाणतो अने त्यां जवाने असमर्थ होवार्थी पोते पोतानी कुटुंबने पण मथान वतावे छे. (आहुं कुसायुतुं वर्तन छे, ते तेनी वेवडी मूर्खता छे.)

प०—तेओ शामाटे आवा कुशीकतुं समर्थन करता हशे ? उ०—सारा माठाना विवेकतुं जे ज्ञान छे, तेनाथी तेओ अष्ट थयेल छे, तथा सम्यक्दर्शनथी दूर रही असत् (खोटुं) अनुष्ठान करवा वडे पोते नाश पायेला छे, अने शंका उत्पन्न करावीने तेओ बीजाने सारा मार्गथी अष्ट करे छे. वकी बीजा केटलाक पोते बाह्य क्रिया करवा छतां पण (अंदरनी श्रद्धा विना) पोताना आत्मानुं अहित करे छे, ते वतावे छे.

नममाणा वेगे जीविषं विपरिणामंति पुट्टा वेगे नियद्वंति जीवियस्सेव कारणा, निवखंतंपि तेसिं दुद्धिक्खंतं भवइ, बालवयणिज्जा हु ते नरा पुणो पुणा जाइं पकटिंपि अहे संभवंता विहायमाणा अहमंसीति विउक्खसे उदासोणे फरुसं वयंति पल्लियं पकथे अटुवा पकथो अ-

तहेहिं तं वा मेहावी जाणिज्जा धम्मं (सू० १११)

ते कुसायुओ आचार्य विगेरेने श्रुत ज्ञान मेळववा माटे द्रव्यथी देखवा मात्र ज्ञान विगेरेना भाव विनय शिवाय नमवा छतां पण, तेओमांना केटलाक अशुभ कर्मना उदयथी संयय जीवितने विराधे छे. अर्थात् उत्तम चारित्र्यथी आत्माने दूर राखे छे.

बीजुं भुं छे ? ते कहे छे:—चारित्रमां अस्थिर मतिवाळा ऋण गौरवना बन्धायत्ता बंकी परीषद्दोशी फरसातां संयम अथवा साधु वेपथी तेओ दुर थाय छे. प०—शा माटे ?

उ०—असंयम नामना जीवितना निमित्तार्थान् अर्थात् दवे, अमे सुखेथी संसारमां जीवीभुं, एम वीचारीने सावद्य अनुष्ठान करीने संयमथी दुर थाय छे, तेवा जीवीभुं भुं थाय छे ? ते कहे छे. ते कुसाधुओ घरवासथी नीकळ्या छतां ज्ञान दर्शन चारित्रना सूळ उत्तर गुणमां कंइ पण स्वामी आववाथी तेने दीक्षा पाळवी मुक्केल थाय छे, तेवा अष्ट साधुओभुं जे थाय; ते कहे छे (हु अन्यय हेतुना अर्थमां छे.) जेथी असम्यगनुष्ठानथी दीक्षा छंटेला साधु वाल बुद्धिवाळा जे सामान्य पुरुषां छे, तेमनाथी पण निंदाय छे. (ज्यां होय; त्यां तिरस्कार पासे छे.)

वकी, तेओ संयम मुक्कवाथी कुवाना अरहइना न्याये कारंचार नवी जाति [जन्म] मेळवे छे.

प०—तेओ केवा छे ? उ०—अध:संयम स्थानमां वखते रहैला होय; अथवा अविद्याथी नीचे [कुमार्गे]. वर्तता होय; छतां पोते पोताने विद्वान मानता लजुताथी आत्माने उंचे चढावे छे. (पोताने हाथे पोतानी स्तुति करे छे.) वकी, पोते थोडुं भणोळां होय; तोपण, मानथी उंचो बनीने रस अने साता गौरवनी बहुलताथी माने छे. के, हुं बहुश्रुत छुं, अने आचार्य जे जाणे छे ते मं तत्वने थोडाज काळमां जाणी लीधुं छे. एवुं मानीने आत्माने अहंकारी बनावे छे.

ते आत्मइलायाथीज संतोष पामतो नथी; पण, वीजा उत्तम साधुओनी निंदा करे छे ते बतावे छे.

उदासीन ते रागद्वेष रहित मध्यस्थ साधुओ घणुं भणोळा होवाथी ज्ञांत होय छे, तेवा आचार्य विगेरे ज्यारे ते साधुनी भूल

पडे, त्यारे कहे तो, तेमनी पण निंदा करे हे अने बोले हे के, तसे तो, प्रथम कृत्य अकृत्यने जाणो; अने पछी बीजाने उपदेश आपजो. वळी ते कडहुं बोले हे ते सूत्र वडे वतावे हे. 'पलियं' अनुष्ठान हे तेना वडे तूण हार विगेरेथी बोले, (तुं आ तणखला जेवो हे.) अथवा कुंड, मंड, विगेरे गुणोथी अथवा सुखना विकार वगेरेथी कुचेष्टा करीने गुरुहुं अपमान करे, तथा खोटां आळ चढावीने गुरुनो तिरस्कार करे. हवे समाप्त करतां कहे हे, ते वाच्य अवाच्य अथवा श्रुत चारित्र नामनो धर्म उत्तम साधु जे गुरु आज्ञासां रहेल होय ते सारी रीते जाणे.

अने जे असभ्यवादसां बाळ साधु वर्ततो होय तो गुरु विगेरे ए तेने शिखामाण आपवो ते वतावे हे.

अहम्मट्टी तुमंसि नाम बाले आरंभट्टी अणुवयमाणे हण पणे धायमाणे हणओ यावि समणुजायमाणे,

दोरे धम्मसे, उदीरिए उवेहड णं अणाणाए, एस विसदने वियडे वियाहिए तिवेमि (सू० १९३)

अर्थ जेने होय, ते अर्थी अने ते अधर्मनो अर्थी ते अधर्मार्थी हे, एवा अधर्मार्थीने पण शिखामाण देवाय हे,

प०—ते अधर्मार्थी केवी रीते हे, ? उ०—ते बाळ हे. प०—शा माटे बाळ हे ? उ०—सावद्य आरंभसां वर्त्ते हे.

प०—केवी रीते आरंभसां वर्त्ते हे ? उ०—प्राणीओने दुःख देवाख्य वादोने बोलतो आ प्रमाणे कहे हे.

‘जीवो ने हणो’ ए प्रमाणे बीजा पासे हणावी अने हणताने अनुमोदतो त्रण गौरवथी बन्धायलो रांधवा रंधाववानी क्रियासां

पवर्त्तेला गृहस्थीओ आगळ तेमना पिडनो बांछक वनीने आ प्रमाणे कहे हे.

‘आमां शुं दोष छे। कारणके शरीर निना धर्म वनी शके नहीं; माटे धर्मना आधाररूप शरीरने यत्नाथी पाळवुं जोइए’ कहुं छे के. शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणायं प्रयत्नतः । शरीराज्जायते धर्मो, यथा वीजात्सदंकुरः ॥ १ ॥

धर्मथी जोइयाछुं शरीर प्रयत्नथी वचावहुं, कारणके जेम वीज होय, तो सारो अंकुरो थाय, तेम शरीर (साह) होय, तो धर्म थाय छे, (त्पारे आचार्य तेने शीखामण आपे के हे भव्य !) तुं झा माटे एवुं बांछे छे ? -

सांभळ ! धर्म छे, ते घोर भयानक छे, कारण के वथा आश्रवोतो तेसां निरोध छे, अने तेथी ते दुरनुचर छे, एवुं तीर्थकर विगोरेए उदीरित (कहेछुं) छे, तेवा अध्यवसायवाळो तुं वन, अने एवा उत्तम संयम अनुष्ठाननी अवगणना जे करे छे (णं वाक्यनी चोभा माटे छे) अने सावद्य अनुष्ठान करे, ते तीर्थकर गणधरना उपदेशथी बहार जइ स्वेच्छार्थी वर्ते छे.

प्र०—कोण एवो होय ? उ०—उपर बतावेछो अधर्मार्थी वाळ आरंभनी अर्थी वनीने प्राणीओनो यात करे, करावे हणनारने अनुभादनारो धर्मनी अवगणना करनारो, तथा काम भोगसां खेद पासेछो (कामांध) विविध प्रकारे तर्द (हिंसा) करनारो (तर्द धा-तुनो अर्थ हिंसा छे) अथवा सयमसां पतिकूल ते विवर्द छे. एवा स्वरूपवाळो वाळ साधु जिनेश्वरे कहेछो छे. एवुं सुधर्मस्वामी पोताना शिष्योने कहे छे. के तुं मेधावी छे. माटे धर्मने जाण, वळी हवे पछीतुं पण हुं कहुं छुं; ते बतावे छे.

किमणेण भो ! जणेण करिस्सामिति मन्नामाणे एवं एगे वइत्ता मायरं पियरं हिच्चा नायओ
यपरिगहं वीरायमाणा समुट्ठाए अविहिंसा सुवया दंता पस्सं दीणे उपपइए पडिवयमाणे

वसद्दा कायरा जणा लूसगा भवंति अहमेगेसिं सिलोए पावए भवइ, से समणो भविता विठभते २ पासहेगे समन्नागएहिं सह असमन्नागए नममाणेहिं अनममाणे विरएहिं अवि-
रए दंविण्हिं अदविण् अभिसमिञ्चा पंडिण् मेहावी निद्वियइ वीरे आगमेणं सया परिक्रमि-

जासि त्तिवेमि (सू० १९३) इति धूनाध्ययने चतुर्थ उद्देशकः ॥ ६-४ ॥

केटलाक साधुओ तत्व समजीने सम्यग् उत्थानथी तैयार थइ वीर माफक वर्त्ता पाळळथी माणीनी हिंसा करनारा थाय छे.
प०—ते केवी रीते तैयार थयेल हता ? उ०—ते विचारे छे के हे भाइ! मारे आ स्वार्थमां तत्पर एवा माता पिता पुत्र कलत्र
(स्त्री) विगेरे जेओ परमार्थ द्रष्टिण् जोतां अनर्थ रूप छे. तेमनी जोडे हुं शुं करीश ? कारण के तेओ माहं काइपण कार्य करहुं के
रोग दूर करवामां समर्थ नथी, तेथी तेनावडे हुं शुं करीश ? एम जाणीने दीक्षा छे छे. अथवा कोइ दीक्षा लेनारने कोइए कलु. के
हे भाइ ! रेतीना कोळीआ खावाजेवी निःसार दीक्षा लेवा वडे शुं करीश ? पण पूर्वना भाग्ये मळेळुं भोजन विगेरे (सुखेथी) भोगव
एम कहेतां ते दीक्षा लेनार बैराग्यथी रंगायलो होवाथी बोले, के हे वन्धो ! हुं आ भोजन विगेरेथी हवे शुं करीश ? में आ सं-
सारमां भमतां अनेकवार भोगव्युं, तो पण तृप्ति न थइ, तो ह्मणां आ भवमां शुं थवानुं छे ? ए ममाणे विचारता केटलाक पुरुषो
संसार स्वभावने जाणनारा दीक्षा लेवा तैयार थइने मावाप तथा बीजां समांने तथा धन धान्य हिरण्य वे पगवाळां दास दासी तथा
चार पगवाळां पशु विगेरेने डोडवामां (सिंह माफक) वीर माफक आचरण करनारा बनीने योग्य रीते संयम अनुष्ठानमां तत्पर

थयेला होय छे, अने हिंसा त्यागी विहिंस [दयाळू] तथा शोभन व्रत धारण करीने सुव्रत वनेला छे, तथा इन्द्रियो दमीने दांत छे, आवुं निर्मळ वर्तन करनारा छे. आना संबन्धमां नागार्जुनीया कहे छे:—

समणा भयिस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसूया अविहिंसगा सुव्वया दंता परदत्तभोइणो पावं कम्मं न करेस्सामो समुट्ठाए ॥

अमे आगार (धर) रहित अणगार थइशुं; तेम, अकिंचन अपुत्र अपसूत (स्त्री विनाना) दयाळू सारा व्रतवाळा, इन्द्रि दमन करनारा गोचरीथी निर्वाह करनारा वनीने पाप कर्म नहीं करशुं. एम जणीने दीक्षा छे छे. [सुगम सूत्र होवाथी टीका नथी.] आ प्रमाणे प्रथम सिंह जेवा वनी दीक्षा छे छे, अने पछी दीन (रांक) शीयाळीया जेवा विहार करवामां ढीला वनीने त्यागेला भोगोने पाळा ग्रहण करी पतित थयेलाने तुं जो. प्रथम तेओ दीक्षा छे छे, अने पछी पापना उदयथी दीक्षा सुकी दे छे. [गुरुए पोताना शिष्यने स्थिर करवा शिथिलतानो आवो हव्दांत आपेल छे.

प०—तेओ आ माटे दीन थाय छे ? उ०—तेओ इन्द्रियोना विषयो तथा कथायोथी परवरा थवाथी वशार्तं छे, तेवा शिथिलने कर्मनो बन्ध थाय छे. ते कहे छे:—

सोइंदियवसट्टेणं भंते ! कइ कम्म पगढीओ बन्धइ? गोयमा ! आउअवज्जाओ सत्त कम्मपगढीओ जाव अणुपरिअट्टइ, कोह वसट्टेणं भंते ! जीवे एवं तं चैव ॥

गौतमनो प्रश्न—हे भगवन् ! कानने वरा थइने जीव केटली कर्म प्रकृतिओ वांधे ? उ०—आयु छोडीने सात. प०—क्रोधने वरा थइने केटली ? उ०—एज प्रमाणे. आ प्रमाणे मान विगेरेमां पण समजवुं, वकी ते ढीला सायुओ परीसह उपसर्ग आवतां

कातर बने छे, अथवा विषयना रसीआ कातर (वीकण) बने छे.

प०—तेओ कोण छे ? अने शुं करे छे ? उ०—तेओ दीला मनवाला बनीने ब्रतोना विध्वंसक बने छे, आहुं अठार हजार शीलांगवाळुं ब्रह्मचर्य कोण थारी शके ! आहुं विचारीने द्रव्य लिंग अथवा भावलिङ्ग त्यजीने जीवोना विराधक बने छे, ते लिंग त्यजेलाहुं पछी शुं थाय छे ते कहे छे. (अथनो अर्थ पछी छे) केदलाक ब्रत लइने भांगी नांखे छे, तेमने (पापना उदयथी) वखते अंतर्मुहुर्त्तमांज मरण आवे छे, केदलाकनी पापरूप निंदा थाय छे, पोताना साधु के बीजा साधुओमां तेनी अपकीर्ति थाय छे, ते कहे छे, ते आ पतित साधु मसाणना लाकडा जेवो भोगनो अभिलाषी दीक्षा छे छे, अने मुकी दे छे माटे तेनो विश्वास न करवो कारणके तेने अकर्तव्यनुं भान नथी ? कहुं छे के:—

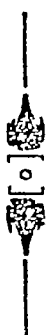
परलोक विरुद्धानि, कुर्वाणं दूरतस्वजेत् ॥ आत्मानं यो न सधत्ते, सोऽन्यस्मै स्यात् कथं हितः ॥१॥

जे परलोक विरुद्ध अकृत्य करे छे, तेने दूरथी त्यजवो, जे आत्माने चारित्रमां स्थिर नथी राखतो, ते बीजाने हितकारक केवी रीते थाय ? विगेरे समजधु.

अथवा सूत्र वडेज तेनी अश्लाघा बताववा कहे छे, ते आ साधु बनीने विविध रीते भमतो साधुपणाथी झट थयेलो छे. वीप्सा वडे अत्यंत जुगुप्सा (निंदा) बतावे छे. कळी, (गुरु शिष्यने कहे छे.) तमे जुओ. कर्मनी प्रबलता केवी छे ? के, जेमहुं नशीब फुटेछुं छे, तेवा उद्युतविहारी (उत्तम साधु) साथे रहेवा छतां पण, हजु तेओ शिथिल विहार बनी रह्या छे, तथा संयम अनुष्ठान वडे विनयशील बनेला साथे रहीने तेओ निर्दय बनेला पाप अनुष्ठान करनारा छे, तथा विरत साथे अचिरत, द्रव्य, भूत साथे

અદ્રવ્ય ધૂત પાપનાં કલંકથી અંકિત થનાથી एवा उत्तम साधुઓ સાથે વસતાં પળ સુખરતા નથી. (અર્થત્ જગત્માં સારા સાધુઓ નજરે જોવા હતાં પળ, ઢીલા સાધુ સુખરતા નથી) આવા ઢીલા સાધુને જાણીને શું કરવું ? તે કહે છે:—હે સાધુ ! તું પંહિત છે. જ્ઞાતા જ્ઞેય છે, મર્યાદામાં રહેલ મેધાવી છે, વિષય સુલ્વની તુલ્ણા તે દૂર કરી છે, તથા તું વીર હોવાથી કર્મ વિદારણ કરવામાં શક્તિવાન છે, તેથી સર્વજ્ઞપણીત ઉપદેશના અનુસારે સર્વદા સંયમ અનુષ્ઠાનમાં વર્તજે. આ પ્રમાણે સુધર્મસ્વામિ કહે છે:—

ધૂત અધ્યયનનો ચોથો ઉદ્દેશો સમાપ્ત.



ધૂત અધ્યયન પંચમ ઉદ્દેશો.

ચોથો કઠીને પાંચમો કહે છે. તેનો આ સંબંધ છે. ગયા ઉદ્દેશામાં કર્મ દૂર કરવા ત્રણ ગૌરવ હોદવાતું વતાવ્યું; અને તે કર્મ વિધૂનન ઉપસર્ગ વિધૂનન વિના સંપૂર્ણ ભાવને અનુભવતું નથી, તથા સત્કાર પુરસ્કારરૂપ સન્માનના વિધૂનન વિના ગૌરવ ત્રિકની વિધૂનના સંપૂર્ણતાને ન પામે; ઈથી ઉપસર્ગ સન્માનને વિધૂનન કરવા આ ઉદ્દેશો કહે છે. આ સંબંધે—આવેલા ઉદ્દેશાતું આ પહેલું સૂત્ર છે. અસ્વલિતાદિ ગુણ યુક્ત ઉચ્ચારવું તે કહે છે:—

સિ ગિહેસુ વા ગિહંતરેસુ વા ગામ્સુ વા ગામંતરેસુ વા નગરેસુ વા નગરંતરેસુ વા જળવયેસુ
વા જળવયંતરેસુ વા ગામનયરંતરે વા ગામજળવયંતરે વા નગરજળવયંતરે વા સંતેગદ્યા

जणा लूसगा भवंति अदुवा फासा फुसंति ते फासे पुढे वीरो अहियासए, ओए समिय-
दंसणे, दयं लोगस्स जाणिता पाईणं पड्डीणं दाहिणं उदीणं आइक्खे, विभए किडे वेयवी, से
उट्टिएसु वा अणुट्टिएसु वा सुस्सुसमाणंस्सु पवेयए संतिं विरइं उवसमं निवाणं सोयं अज-
वियं मइवियं लाघवियं अणइवत्तियं सर्वेसिं पाणाणं सर्वेसिं भूयाणं सर्वेसिं सत्ताणं सर्वेसिं

जोवाणं अणुवीइ भिक्खु धम्ममाइक्खिज्जा (सु० १९४)

ते पंडित मेधावी निष्ठित अर्थवाळो वीर साधु सदा सर्वज्ञ प्रणीत उपदेश प्रमाणे वर्तनारां गौरवत्रिकथी अपतिवद्ध निर्मम नि-
ष्कचन निराश एकाकी विहारएणे [जीनकल्पी जेवो] गाम गाम विचरतो क्षुद्र तीर्थच नर, देवे करेला उपसर्ग परिसहोथी दुःखना
स्पर्शा भोगवतो छतां निर्जरानो अर्थी वनीने सारी रीते सहन करे.

प०—कइ जग्याए तेने तेवा परिसह उपसर्गो दुःख दे ? ते कहे छे. आहार विगेरे माडे घरमां जतां (उंच नीच मध्यम जा-
तिनां घरो होय माटे बहु वचन सूत्रमां छे) तथा घरोना वचमां जतां तथा (बुद्धि विगेरे गुणोने स्वाइ जाय ते गाम) गाममां गामां-
तरमां तथा कर विनानां नगरोमां अथवा अंतराळे जतां थाय छे, तथा ज्यां लोकोने रहेवानां स्थान ते जनपद छे, ते अवति

(मालवो) विगेरे छे, ते देशो साधुने विहार योग्य २५ देश छे (ते आर्य देश छे बाकीना ३१९७४ अनार्य छे.) नीचे दीप-
णमां वीजा सूत्रनो* पाठ मुक्यो छे.

ते समये साधुओंने विचरवा योग्य क्षेत्रनी वन्धायली हद नीचे प्रमाणे हती.

पूर्व दिशामां साधु साध्वीने मगध देश सुधी विचरवुं कल्पे, दक्षिणमां कोशंबी, पश्चिममां शुणा देश सुधी अने उत्तरमां जाव कुणाला देश सुधी आर्य क्षेत्र छे, तेनी बहार जवुं साधु साध्वीने न कल्पे, उपर वतावेल हदमां आर्य भूमिमां २५॥ देश छे, ते जिनेश्वरे धर्म क्षेत्र तरिके वर्णव्या छे.

ते देशोनी वचमाना भागमां साधु विचरे, अथवा गाम नगरना अंतराले अथवा गाम देशना वचमां तेज प्रमाणे नगर देशना वचमां अथवा उद्यानमां अथवा तेना आंतरे विचरतां अथवा जतां आवतां अथवा ते भिक्षुने गाम विगेरेमां रहेतां कायोत्सर्ग विगेरे करतां केटलाक पापरूप कालाशथी मलिन अंतःकरणवाला जे माणसो लूपक (हिंसक) होय; ते साधुने दुःख दे छे. (चार गतिमां भमता जीवोमां) साधुने नारकी दुःख देवाने अशक्त छे. तिर्यंच अने देवतानो उपसर्ग कोइकज वार थाय; तेथी मनुष्योथीज प्राये साधुने उपसर्ग थाय छे. माटे, जन [माणस] शब्द लीयो छे. अथवा, जेओ जन्मे; ते जन छे, अने तेथी जन शब्दनो अर्थ ति-

*'पुरच्छिभेणं कण्ठ निगंथीण वा निगंथीण वा जाव मगाहाओ वृत्तए, दक्षिणेणं कण्ठ निगंथीण वा निगंथीण वा जाव कोसंबीओ वृत्तए, पच्छिभेणं जाव थूणाविसओ, उत्तरेणं जाव कुणालाविसओ, ताव आरिए खित्ते, नो कण्ठ हत्तो वहि'ति अस्यां च आर्यभूमिकयां सार्धैश्च विरातिर्जनपदा धर्मक्षेत्राण्यहदिभरुकानि ॥

तिर्यच नर, अने अमर लीधो छे. एटले, साधुओने विहार विगरेमां आ तणे अनुकूल तथा पतिकूल एक अथवा वन्ने प्रकारे उप-सर्ग करे छे, तेमां देवताना उपसर्ग चार प्रकारना छे. (१) हास्यथी. (२) द्वेषथी. (३) विमर्शथी. (४) प्रथक् विमित्रथी छे. तेमां प्रथमतो क्रीडामां तत्पर कोइ व्यंतर देव हास्यथीज विविध उपसर्गाने करे. जेमके—भिक्षा माटे आवेला नाना साधुओए भिक्षाना लाभने माटे पल्ल विफट तर्पण विगरेथी याचता व्यंतरने मळ्या. पछी, भिक्षा प्राप्त थया पछी तेणे ते चीजो मागी; तेथी, ते व्यंतरने खुशी करवा कयांयथी ते चीज लावीने तेमणे आपी. ते व्यंतरे पण क्रीडामांज ते नाना साधुओ क्षीवा माफक वनव्या.

[२] द्वेषथी भगवान महावीरने महा महिनामां खरी ठंडमां तापसीनुं रुप धारीने व्यंतरीए पोताना चोटलामां झाडनी छालनुं वल्ल पाणीथी भींजावीने तेना वडे पाणीनो ढंडो छंटकाव कर्यो. [३] विमर्शथी आ साधु धर्ममां दह छे के नहि ? ते जोवा अनुकूल पतिकूल उपसर्गोथी परीक्षा करे ते वतावे छे. जेमके—संविग्र साधुनी भक्त वनेली कोइ व्यंतरीए खीनो वेष धारीने उज्जद देव-ळमां वेठेला साधुने अनुकूल उपसर्गोथी चलायमान करवा धार्युं पण ते चलायमान न थवाथी आ दह धमीं छे. एम जाणीने भक्तिथी वांजा. (४) जुदी जुदी रीते हास्यथी, द्वेषथी के, विमर्शथी कोइपण एकथी परिक्षा करे. जेमके—भगवान महावीरने संगम नामना एकज देवताए विमर्शथी शरु कर्या, अने द्वेषथी परिषद् पुरा कर्या. एटले, आ उपसर्गमां प्रारंभ अने अंत जुदी जुदी रीते थाय छे. माणसथी पण साधुने चार प्रकारे उपसर्ग थाय छे. [१] हास्यथी (२) द्वेषथी, [३] विमर्शथी, (४) कुशीळताना सेवन माटे. तेमां हास्यथी देवसेनागणीकाये नाना युवक साधुने कुमार्ग दोरवा सताव्यो; त्यारे साधुए दांडाथी ताडना करी, वेर्याए राजा पासे फरीयादी करी. नाना साधुने राजाए बोलाव्यो. युवके श्रीगृहनां दृष्टांतथी समजाव्यो. के हे राजन् ! तारो खजानो छुंटे तो तुं

शुं करे ? उत्तर—शिक्षा करूं. साधुए कहुं के:—तेवी रीते में यणी समजावी के, साधुओनुं धन निर्मळ शीक छे. माटे, तुं दूर था. पण, तेणे कोइ रीते न मानुं. माटे, जरा शिक्षा करवी पडि छे. (२) द्वेषथी सोमभूति ससराए गजसुकुमारने माथा उपर बळता अंगारा भयी. [३] विमर्शथी चाणाक्य मंत्रीनी भेरणाथी चंद्रशुस राजाए धर्मनी परीक्षा करवा पोतानी राणोओ पासे धर्म संभळा-वता साधुने उपसर्ग कराव्यो. साधुए पण वीजो कोइ उपाय छेवट सुधी न जोवाथी थोडी ताडनार्थी दूर करी, राणीओए फरीयाद करी. साधुए राजना भंडारनो दाखळो आपी राजाने पतिवोध्यां. [४] कोइ दुराचार माटे पार्थना करे. जेपके—इर्याळ शैठना घरमां धणीना अभावमा कोइ पण संजोगोथी त्यां एक साधु रात रहा. तेमने चार जुवान स्त्रीओए धणीना अभावे वाराफरती तेमने आखी रात पजव्या; पण दरेक पहोरमां ते न लोभातां मेरु पर्वत माफक निश्चक रहां तिर्यचना पण भय, द्वेष, आहार अने वाळक रक्षणना माटे चार प्रकारेज उपसर्ग छे. (१) भयथी साप विगोरे चमकीने करडे छे. द्द्वेशथी भगवान महावीरने चंडकोशीए उपसर्ग कर्यो. आहारमाटे सिंह वाय विगोरे मारे छे. अने अपत्य रक्षण माटे काकी [] विगोरे पीडे छे.

उपर बताव्या प्रमाणे उपसर्ग करवाथी (उपर बतावेळा अर्थ प्रमाणे जनो साधुओना लूणक (दुःख देनारा) छे.

अथवा तेवा तेवा गाम विगोरे स्थानमां जातां दुःखना स्पर्शो आत्माने पीडनारा थाय छे. ते चार प्रकारना छे. जेपके आंखमां कणु विगोरे पडवाथी घट्टनता थाय छे. अने भमेलनी मूर्छा विगोरेथी पतनता [पडवुं] थाय छे. वायु विगोरेथी स्तंभनता (रोकण) थाय छे अने ताळवा विगोरेमां अंगुळी विगोरे घालवाथी इलेषणता () थाय छे.

अथवा वात पित्तइलेष्म विगोरेना क्षोभथी कडवा स्पर्शो थाय छे. अथवा निर्विकचनपणाथी तृण स्पर्शो डांस मच्छर तथा वंड

ताप विरोधा पीडारूप स्पर्शा कोइ वरत याय छे.

तेवा कोइ पण परीसहो आवे तो तेना दुःखना स्पर्शाथी साधु पोते धीर बनीने सहन करे, मनमां चितवे, के आथी पण वधारे दुःखो नारकी विरोधां कर्मना अंब्यपणाथी बांयेलां उदयमां आवतां पछी पण भोगववानां रहेशे, माटे ह्यणांज भोगववां टीक छे, एम विचारी सहै.

केवो मुनि सहन करे ? उ०—कहे छे. अथवा उपर बतावेल साधु पोताना उत्तम गुणोथी परीसहो सहिने पोतानोज रक्षक छे. एम नहीं पण सुबोध बडे बीजाओनो पण रक्षक छे. ते बतावे छे. 'ओजः' एकलो राग विरोधाथी रहित सारी रीने दर्शनने पापेला ते समित दर्शन छे अथवा सम्यग्दृष्टि छे, अथवा उपशमने पापेला दर्शनवाळो, अर्थात् दृष्टि ते ज्ञान छे. ते समित दर्शन छे. एडले उपशान्त अथ्यवसायवाळो जाणवां.

अथवा समताने पापेला दर्शनवाळो अर्थ दृष्टि लेतां समदृष्टि जाणवो एडले एवा उत्तम गुणोने धारण करनार साधु परीस-होने सहै अथवा (पछीना क्रीयापद साथे संबन्ध लेतां) ते धर्मने कहे.

प०—शुं आलंबन लइने ? उ०—कहे छे. ते जंतुलोक (जीवमात्र) उपर द्रव्यथी दया जाणीने धर्म कहे. [के ए जीवो कोइ-पण रीते तरो] क्षेत्रथी पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर तथा बीजी पण दीशाना विभागोमां (बथी जग्याए) जोइने सर्वत्र दया करतो ते

साधु धर्म उपदेश करे छे. कालथी आत्मी जीदगी सुधी दया पाळे छे. भावथी रागद्वेष त्यागीने मध्यस्थ पणे धर्म कहे छे, प०—केवी दीते कहे ? उ०—बधा जीवो दुःखना द्वेषी सुखना चाहनार पोताना आत्मानी माफक सदा जाणी छेवा कहुं छे के.

न तत्परस्य संदध्यात्, पतिक्लं यदात्मनः ॥ एय सद्ग्रहाहिको धर्मः, कामादन्यः प्रवर्त्तते ॥१॥

जे पोताने गमतुं नथी, तेतुं वीजाने न करतुं. एज संग्राहिक (सार रूप) धर्म छे ते काम (इच्छाओं)थी जुदो प्रवर्त्त छे. (पोते दुःख भोगवीने पण बीजाने सुख आपवुं) विगोरे छे. ते प्रमाणे धर्मने कहेतां पोते पण द्रव्य क्षेत्र काल अने भावना भेदोवहे अथवा आक्षेपणी विगोरे चार प्रकारनी कथाआ वहे पोते. पण जीव हिंसा जुठ चोरी कुसंग परिग्रह अने रात्री भोजन विगोरे अकार्यथी दूर रही धर्म पाळे. अथवा आ पुरुष कोण छे ? कया देवने माने छे ? तेनी अभिप्राय केवा छे ? अथवा अभिप्राय विनानो छे ? एतुं विचारीने सांभळनारनी योग्यता प्रमाणे ब्रतो तथा संयम अनुष्ठानतुं फळ वतावे.

प०—आवो धर्म कोण कहे ? उ०—वेद [जैन आगम] जाणनारो होय ते. आ संवंधमां नागार्जुनीया आ प्रमाणे कहे छे. जे खलु समणे बहुस्सुए वडशागमे आहरणहेउकुसले धम्मकहाळद्धिसम्पन्ने खेतं कालं पुरिसं समासज्ज केज्यं पुरिसे कं वा दरिसणमभिसम्पन्नो ? एवं गुणजाइए पभू धम्मस्स आय वित्तए ॥

जे निश्चये साधु बहुश्रुत आगमनो नाण दृष्टांत हेतु वताववापां कुशल धर्म कथानी लडिबवाळां क्षेत्रकाल पुरुष ए वधानो विचार करे के आ पुरुष कोण छे. तेतुं संतव्य शुं छे. ए प्रमाणे गुणोनी जातिए युक्त होय तेज धर्म कहेवाने समर्थ छे.

प०—ते केवा निमित्तोमां धर्म कहे ? उ०—ते आगमनो जाण पोताना तथा वीजा. मतना सिद्धांतने जाणनारो. भावउत्थान वहे उठेला साधुओमां धर्म कहे. (वा शब्दनो संबंध वीजा पक्षनो प्रकाश करे छे.) एटले पार्श्वनाथ. भगवानना मोक्ष गया पळी पण तेमना साधुओ ते समयना रिवाज प्रमाणे चार महाव्रत पाळता विचरे, तेमने समय बदलातां महावीर प्रभुना शासनमां रहेळ गण-

धरो पांच महाव्रतनो धर्म वतावे (जेम केशी गणधरना शिष्योने गौतमस्वामिना शिष्योनी मेळाप थयो, अने वन्नेमां शंका थता वन्नेना गुरुओ भेगा थतां गौतमस्वामिए केशीगणधरने पंच महाव्रतनो धर्म समजाव्या. अने तेमणे स्वीकार्यो.)

अथवा पोताना शिष्यो जेओ विनयथी सांभळवा उभा थया होय तेमने नवुं तत्व जाणवा माटे धर्म संभळावे, अथवा दीक्षा न लीथेला श्रावक विगेरे जेओ धर्म सांभळवानी इच्छावाळा वनी गुरु विगेरेनी सेवा (वैयावच्य) करता होय; तेमने संसारथी पार उतारवा गुरु धर्म कहे छे. प्रः—केवो धर्म कहे ? उः—शमन [शांति अहिंसा] तेवा जीव दयाना धर्मने कहे; तथा जीव रक्षा करवा विरति समजावे, आ विरतिना सूचनथी जुढ विगेरेनी विरति जाणवी, एटले, पांचे महाव्रत समजावे; तथा उपशम क्रोधना जयनुं स्वरूप वतावे; तेथी उत्तर गुणोनी पण उपदेश करे एम जाणवुं; तथा निर्द्विंति (निर्वाण) मोक्षनुं स्वरूप वतावे. के, सूळ गुण अने उत्तर गुण वरोवर पाळवाथी आ लोकमां बहु मान, अपूर्व शांति, अने पर भवमां स्वर्गनुं सुख, अने छेवटे मोक्ष मळे छे.

तथा शोच एटले वधी उपाधीथी रहित पवित्र व्रतनुं धारवुं, तथा मायानी वक्रता त्यागवाथी आर्जव छे, तथा मान स्तब्धपणुं त्यागवाथी कोमळता छे, तथा बाला अभ्यंतर ग्रन्थ त्यागवाथी लावव छे, ते केवी रीते कहे छे. ते वतावे छे यथावस्थित वस्तु जेवी रीते आगममां कही होय तेवी रीते ओळंय्या विना कहे छे. प्रः—कोने कहे छे ? उः—दश प्रकारना पाणने धारनारा पाणीओ ते सामान्यथी संक्षी पंचेन्द्रियोने कहे छे, तथा मुक्ति गमन योग्य जे भव्यपणे भूत [रहेला] छे, तेमने कहे छे. तथा संयम जीवितवडे जीवे छे. अने जीववानी इच्छावाळा जीवो छे. तथा तिर्यंच नर, अमर, जेओ संसारमां दुःख पापता रहेला छे. अने दयाने पात्र छे, त्रिवा वधा सत्वोने धर्म कहे छे, अथवा प्राणी भूत जीव सत्व ए चारे एक अर्थवाळा छे. तेवा जीवोने तेमनी योग्यता प्रमाणे

शांति विगरे दश प्रकारनो धर्म पूर्व बलावेलो छे, ते कहे छे. अने शांति विगरे पदोमां बलावेल तत्त्वने विचारीने स्व अने परना उपकार माटे भिक्षु जे धर्म कथानी लब्धवाळो होय ते कहे छे. अने ते धर्म जेवी रीते कहे छे, ते बलावे छे.

अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खमाणे नो अत्ताणं आसाइजा नो परं आसाइजा नो अन्नइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाइजा, से अणासायए अणासायमाणे वड्झमाणणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं जहा से दीवे असंदीणं एवं से भवइ सरणं महासुणी एवं से उट्टिए ठियया अणिहे अचले चले अबहिहेसे परिवए संक्खाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिनिवुडे, तम्हा संगंति पासह गंथेहि गहिया नरा विसज्जा कामकंता तम्हा ल्हहाओ नो परिवित्तसिजा, जस्सिमे आरंभा सबओ सबपयाए सुपरिज्जाया भवंति जस्सिमे ल्हसिणो नो परिवित्तसंति, सेवंता कोहंच माणंय मायं च लोभं च एस तुहे वियाहिए त्तिवेमि (सू० ११५)

ते सुसुखु भिक्षु—धर्मने पूर्वापर विचार करीने, अथवा सांभळनार पुरुषणी पूर्वा पर स्थिति विचारी जेने जेहुं कथन योग्य होय, तेवो धर्म तेने कहे छे. (आ उपसर्ग मर्यादाना अर्थमां छे तेशी,) मर्यादावहे सम्मग् दर्शन विगरेनुं जेहुं अनुष्ठान होय, तेशी ज्ञातना (विरुद्ध) करतां अज्ञातना थाय छे माटे, तेवी अज्ञातनाथी आत्माने दोषित न करे. अर्थात् जेय आज्ञातना न थाय; तेय

धर्म कहे; अथवा आत्माना अशातना चे प्रकारे छे. द्रव्यथी तथा भावथी, द्रव्यथी जेम; आहार उपकरण विगरे द्रव्यनी काल अति पातादि संबंधी आशातना (बाधा) न थाय; तेम कहे. (लोकोने जमवानो वरवत होय; तेदली मोडी वार सुथी कथा कहे; तो, लोकोने शरमथी न उठतां जमतां अंतराय थाय; अथवा शिष्योने गोचरी लावतां बहेवतां मोडूं थतां, पोताने तथा बाळवृद्ध तपस्वी मांदाने काल उल्लंघतां बाधा थाय) ते आहार विगरे द्रव्य गी बाधाथी पोताना शरीरने पण पीडा थाय; तेथी भाव मलिन थतां भावाशातना पण थाय, अथवा कहेतां गात्र भंग रूप भाव आशातना न थाय तेम कहे; तथा सांभळनारनी हीळना (निंदा) न करे; के, सांभळनारने क्रोध चडतां आहार उपकरण अथवा साधुना शरीरनी कोइ पण रीते पीडा करवासां तत्पर थाय तेम कथा न करे, एथीज सांभळनारनी आशातना वर्जोने धर्म कहे, अथवा अन्य प्राणी भूत जीव सत्त्वोने बाधा न करे, ते मुनि पोतानी मेळे पोतानो रक्षक होवार्थी अनाशातक छे. तेम बीजा क्रोधी न वनाववाथी पोते बीजानी आशातना करतो नथी. तेम कोइ आशातना करे तो तेनी अनुमोदना न करतो (बीजा) मरता प्राणीओ भूतो जीवो सत्त्वोने पोताना तरफथी के पारका तरफथी पीडा न थाय तेओ धर्म कहे. जेमके कोइ लौकिक कुभाववनीक पासत्था विगरेने दान आपवानी प्रशंसा करे, अथवा कुवा तळाव वनाववानी प्रशंसा करे तो पृथ्वीफाय विगरेने दुःख थाय, तेनो दोष साधुने लागे, तथा ते दाननी मिंदा करे तो ते बीजा जीवोने दान न मळवाथी साधुने अंतराय कर्म वन्धवावानो विपाक भोगववो पडे. कहूं छे के:—

जे उ दाणं पसंसंति, वह्मिच्छंति पाणिणं । जे उ णं पडिसेहिति, विचिच्छेअं करिति ते ॥१॥

जेओ साधु थइने असाधुना दाननी प्रशंसा करे छे. से सावय होवार्थी साधुओने प्राणीओना वधनो दोष लागे छे. अने ते

दाननी निंदा करे तो दान लेनारनी दृत्तिनो छेद करे छे.

तेथी ते दान तथा कुचा तळाव संबंधी विधि निषेधमां मध्यस्थ भाव राखीने यथावस्थित शुद्ध दाननी प्ररूपणा करे, तथा सावध अनुष्ठाननुं स्वरूप बतावे, (के आ पाप न करवां नांइए.) आ प्रमाणे उपयोग राखी बालनारो साधु वन्ने दोषने त्यागनारो जीवोने आश्वास भूमि आपनारो थाय छे. आ वावतने दृष्टांतथी समजावे छे. के पूर्वे बतावेल असंदीन द्वीप (भरतीना पाणीथी न डुवतो) शरण रूप थाय छे. तेम आ महासुनी जीवोना रक्षणनो उपाय बताववाथी मारनारा जीवोना रक्षा करनार तथा परनार हिंसकने तेना पापी विचारथी वचाववाथी विशिष्ट गुण स्थान मेळववाथी शरण लेवा योग्य थाय छे. ते कहे छे. (पूर्वे कला प्रमाणे विधिए जे धर्म कथाने कहे, ते केटलाक जीवोने दीक्षा अपावे छे. केटलाकने श्रावकां वनावे छे. केटलाकने सम्यग्दर्शनवाळा करे छे, अने केटलाकने मिथ्यात्वथी हटावी भद्र परिणामवाळा वनावे छे.

प०—केवा गुणवाळो आ साधु द्विप माफक शरण योग्य थाय छे ?

उ०—हवे पळी कहेवाता भाव उत्थानवहे संयम अनुष्ठान करतो उत्कृष्टथी तैयार होय; तथा ज्ञानादिकरूप मोक्षना मार्गमां स्थित होय तथा स्नेह रहित होय तथा रागद्वेष छोटवाथी अपतिबद्ध होय, तथा परिसह उपसर्गमां चलायमान न थाय, माटे अचक छे. अने एक जग्याए पडी त रहेतां योग्य विहार करवाथी चल पण छे तथा संयमथी जेनी लेख्या [अध्यवसाय] वहार न होय, ते अबहिलेख्यावाळो कहेवाय. एवो सुनी वधी रीते संयम अनुष्ठानमां वर्ते. पण कोइ जग्याए फसाय नहि, प. ते ज्ञा माटे संयम अनुष्ठानमां वर्ते 'संख्याय' एटले बोधन धर्मने विचारी अत्रिपरीत दर्शन [दृष्टि]वाळो थाय अथवा सदनुष्ठानरूप दृष्टियाळो [दृष्टिमान]

बने, अने तेतुं कारण तेना कषायो कातो गांत होय छे, कांतो क्षय होय छे, तेथी पोते परनिवृत शीतीभूत (ठंडा स्वभावनी) छे, पण तेवा गुणवाळो न होय, ते मिथ्यादृष्टि जीव पेचल धर्मने पाप्ततो नथी, ते बत्तावे छे, (इति अव्यय हेतुना अर्थमां छे) जेथी मिथ्या दृष्टिंतुं विपरीत दर्शन होवाथी संग (प्रेम) वाळो मोक्षमां न जाय, तेथी तेना माता पिता पुत्र स्त्री संबंधी अथवा धन धान्य विगेरेथी यता संग विपाक ने तमे जुओ ! विवेकथी हृदयमां विचारो ! सूत्रधीज संग कहे छे, ते संगवाळा नरो वाह्य अभ्यंतर ग्रन्थथी गुंथायेला गृह थयेला ग्रन्थना संगमां इच्छित न यतां खेद पाप्तता छता संग्रह निमग्न इच्छा मदन कामथी आकांत (अवष्टब्ध, खुंवेळा) बनेळा मोक्षमां जता नथी.

प्र०—जो एम छे तो शुं करवुं ? उ०—जे कामथी आसक (प्रेमी) चित्त थइने सगां तथ धन धान्य विगेरेमां मूर्खी पायेळा काम संबंधी शरीर मन विगेरेनां दुःखोथी पीडायेळा छे, तेनाथी हे शिष्य ! तुं छुवा देवाता संग दूर करवा रूप संयमथी आस न पापीश, संयम अनुष्ठानथी कंटाळतो नहि, कारणके संयमना दुःख करतां पभूत (अतिशे) दुःख भोगवतारा संसार संगी जीवो छे.

प्र०—क्या साधुने संयमथी न इरवानो सभव छे ? उ०—जे महाशुनिष्णु सारी शीते संसार मोक्षनां पूर्व कहेळां कारणो जाण्यां छे, तेने आ संग रूप आरंभो अविगान (एक सरस्वती) पणे वधा माणसे आचरेल छे, अने ते प्रत्यक्ष होवाथी इदम् [आ] शब्दवदे बत्ताव्या छे, ते आरंभो सर्वे प्रकारे जाणीता छे.

प्र०—ते आरंभो केवा छे ? उ०—जेमां ग्रन्थना गुंथायेला विपण चित्तवाळा काम [इच्छा] ओना भारथी फसायेला माणसो हिंसक बनेळा अज्ञान मोहना उदयथी पाप करतां आस पाप्तता नथी, पण जे उपर बत्तावेळा आरंभोने न परिज्ञावदे जाणीने

मत्याक्यानपरिज्ञावहे त्यागे छे, तेणेज आरंभो सारीरीते जाणोला समजवा.

प०—जे आरंभोनो परिज्ञाता छे, ते वीजुं शुकरे ? ते कहे छे.

ते महा मुनी पूर्वे वतावेला उत्तम गुणवाळो छे, ते क्रोध मान माया लोभने त्यागीने मोहनीय कर्म गोडे; ('त्यागीने' ए अ-
व्यय प्रथम लेवानुं कारण ए छे के ते क्रोध विभेरे चारे कयायो वधा भेद सहित त्यागवाना छे, अने क्रोधने प्रथम लेवानुं कारण
तेनो संबन्ध मान साथे छे. एटले मानीने क्रोध थाय छे. तथा लोभने माटे माया थाय, माटे प्रथम माया लीधी छे. अने वधा
दोषाना आश्रय तथा सौथी मोटो अने छेवट सुधी रहतां हांवाथी लोभने छेळो लीधां छे.

अथवा क्षणणा ते कर्मनी निर्जरासां ते प्रमाणे क्रम छे. 'चकार' निश्चयथी जुदी जुदी अपेक्षा माटे समुच्चय अर्थसां छे) तेथी
ए प्रमाणे क्रोध विभेरे मोहने त्यागनारो संसार संतति (भवभ्रमण) थी तट्ट (छुटेलां) तीर्थकर विभेरेए वर्णव्यो छे, एवुं सुधर्मी-
स्वामि कहे छे. अथवा हवे पळीतुं पण तेओ कहे छे, ते वतावे छे.

कायस्स वियाधाए एस संगामसोसे वियाहिए सेहु पारंगसे मुणी, अविहम्ममाणे फलगावयट्टी
कालोवणीए कंखिज्ज कालं जाव सरोरभेउत्तिवेमि धूताध्ययनम् (सू० ११६) ६-५ ॥

औदारिक विभेरे त्रण शरीर अथवा चार याति कर्मनो नाश करवा माटे ते मुनी संग्रामना मथाळे उभेळो वर्णव्यो छे. अथवा
[चि धातुनो अर्थ एकहुं करवानो छे ते एकहु थाय छे.] ते कायने आयुष्यना क्षय सुधी घात करनारो वने, [कायानो ममत्व भूकी

कर्म तोडवा जीदगी सुधी पयास करे. तेज मुनि पारंगामी जाणवो.]

जेम संग्रामने मोखरे शत्रुना सैन्य सामे तिक्षण तळवारनी प्रभाथी उगता सुरजनी माफक विजळीना चमकारा माफक देखाव करी जोनारनी आंखीमां चमत्कार करावनार अने पोतातुं कार्य करवा छतां पण, ते सुभट चिचिनो विकार (कोइ वखत) करे छे. तेज प्रमाणे मरण समय आवे छते, स्थिर मनवाळो होय; तो पण, कोइ वखत संजोगोने आथारे तेनो भाव वगडी पण जाय; तेथी कहे छे के:—जे मरण काळे अनेक दुःख आवे छते पण मोह पांमतो नथी. तेज मुनि संसारनो पारंगामी अथवा कर्मनो, अथवा पोने लीधेला महाव्रतना भारतो पर्यंत पापी (डेवट सुधी पहेंचनारो विजयी) छे.

वळी, जुदा जुदा परिषद उपसर्गो वडे दणयळो छतां, कंटाळो न सवातां उंचेथी पडीने अथवा गार्दपुष्ट (आपघात) अथवा बीजी कोइ पण रीते आपघात न करे.

अथवा हणातां पण बाह्य अर्थांतर तप तथा परिषद उपसर्गो वडे धैर्य राखी पाटीया माफक स्थिर रहे; पण, मरवाना भयर्थी दीनता न लावे. तेज प्रमाणे काळे परवशता पमाडेळो (जीर्ण शरीर यतां) बार वरसनी संलेखना वडे आत्माने दुर्बल करी पहाडनी शुफा विगेरेमां जग्या. निरवध जोडने पादपोपगमन इंगित मरण अथवा भक्त परिज्ञा ए त्रणमांथी कोइ पण अवस्थावाळुं अणसण करीने मरणनी अवस्था सुधी आयुनो क्षय थाय; अने शरीरथी जीव जुदो पडे; त्यां सुधी स्थिरता राखे आज खरी रीते मृत्युनो समय छे. अथवा शरीरनो भेद छे. आज जीवतो विनाश छे. पण, सर्वथा जीवतो विनाश नथी; एवुं सुधर्मास्वामी कहे छे.

आ प्रमाणे—पांचमो उद्देशो समाप्त यतां, धृताख्य नामतुं छटुं अध्ययन पण समाप्त ययुं. (टीकाना श्लोक ८३५ छे.)

छटुं अध्ययन समाप्त

छट्टा पळी सातसुं अध्ययन करेवुं जोइए, पण ते विच्छेद जवाथी आठसुं विमोक्ष नामतुं अध्ययन करे छे.

अथाष्टमं विमोक्षाध्ययनम्

सातसुं अध्ययन महापरिज्ञा नामतुं वहुं, ते विच्छेद जवाथी तेने सुकी छट्टा साथे आठमानो संबंध करेवो जोइए, ते आ प्रमाणे छे. छट्टा अध्ययनमां पोतानां कर्म शरीर, उपकरण तथा गौरवत्रिक तथा उपसर्ग सन्मानना विधूनन वडे निःसंगता बतावी, पण जो अंतकाले सम्यग् निर्वाण थाय तोज ते सफलता पाये तेथी सम्यग् निर्वाण (समाधि मरण) बताववा माटे आ आरंभ करे छे.

अथवा निःसंग विद्यारी साधुए अनेक प्रकारना परिसह उपसर्गो सहन करावा, एवुं छट्टामां बताव्युं, तेमां मारणांतिक उपसर्ग आवे छते अदीन मनवाळा वनीने सम्यग् निर्वाणज करवुं, ए विषय बताववा आ आठसुं अध्ययन छे; आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना उपक्रम विगेरे चार अनुयोग द्वार थाय छे, तेमां उपक्रम द्वारमां आवेलो अर्थ अधिकार वे प्रकारनो छे, तेमां अध्ययननो पूर्वे कर्हो छे, अने उद्देशानो अर्थधिकार निर्युक्तिकार करे छे.

असमणुत्तरस विमुक्त्वो, पदमे विइए अकपियविमुक्त्वो; पडिसेहणा य रुदुरस, चेव सल्भावकहणा य; ॥२५३॥
तइयमि अंगचिद्वाभासिय आसंकिए य कहणा य; सेसेसु अहीगारो उवगारणसरीरमुक्त्वेषु ॥२५४॥

उद्देशं चित्थे, वेदाणसगिद्धिप्रमाणं च । पंचमए गेळन्नं, भत्तपरिआ य बोधव्वा ॥२५५॥

छट्ठमि उ एणत्तं, इंगिणिमरणं च होइ बोधव्वं । सत्तमए पट्ठिमाओ, पायवणणं च नायव्वं ॥२५६॥

अणुण्विचिहारीणिं, भत्तपरिआ य इंगिणिमरणं । पायव गमणं च तहा अहिगारो होइ अट्टमए ॥२५७॥

पहेला उद्देशामां आ प्रमाणे अर्थधिकार छेः—

अ समनुज्ञा (पासत्या) वाळा असमनोह [स्वच्छंदाचारी] अथवा त्रणसो त्रसठ अन्यवादीओनो विमोक्ष [परित्याग] करवो, तेज प्रमाणे तेमनो आहार उपधि शक्या तथा तेमनुं संतव्य त्यागवुं, तेमां प्रथम भगवाननी आज्ञा वहार वर्ते ते पासत्या विगेरे छे, अने असंमनोह ते चारिज तप अने विनयमां हीन तथा यथाच्छंद साधु ते ज्ञानविगेरे पांचे आचारमां हीन होय, तेवानी संगति न करवी [त्रणसेवेसठ एकांत वादीनो पण त्याग करवो]

बीजा उद्देशामां अकल्पनीय ते आधाकर्मी विगेरे दोषित वस्तुनो त्याग करवो, अथवा आधाकर्मी आहारवडे कोइ निमंत्रणा करे, तो तेनो निषेध करवो अने तेनो निषेध करतां दान देनारने क्रोध चडे, तो तेने सिद्धांतनुं तत्व समजाववुं के आवा निर्दोष आहारनुं अमने दान आपे तो तेने तथा अमने गुणकारी छे.

बीजा उद्देशानो अधिकार

गोचरी गयेला साधुने ठंड विगेरेथी अंग धूजतां गृहस्थने आवी शंका थाय के, इन्द्रियोनी उन्मत्तताथी पीडायेला अने शृंगार भावमां रमेला चित्तवाळा आ साधुने कंपारो थाय छे, आवुं बोले, अथवा तेने शंका पडे, तो ते शंका दूर करवा खरी बात समजा-

वची (अने तेने शांत उरवो)

बीजा पांचमा उद्देशानो अधिकार—उपकरण तथा शरीरनो मोक्ष (त्यागं) करवो, ते संक्षेपथी तथा खुलासथी कहे छे, एटले चोथा उद्देशामां आ अधिकार छे, के वैहानस ते उद्बन्धन (फांसो खावो) गार्द पृष्ठ ते बीजाने मांस विगेरेना हृदयना न्यासथी (बीजाने पोतानुं मांस अर्पण करवु ते) शुद्ध (गीध) विगेरेथी पोतानो नाश कराववो.

ए बे प्रकारना मरण [आपयात] नुं वर्णन—पाचमा उद्देशामां—ग्लानता अने भक्त परिज्ञा समजवी, लढामां एकत्व भावना तथा इंगित मरण जाणवुं. सातमामां मास विगेरेनी भिक्षुकनी प्रतिमाओ बतावी छे तथा पादपोगमननुं वर्णन छे, आठमामां अनुपूर्व विहार करनारा दीर्घ संयम पाळनारा शास्त्रार्थ ग्रहणना स्वीकार पळी तेनाथी निवृत्ति लेवा संयम अध्ययन तथा अध्यापन (शीखववुं) तथा निर्मळ क्रिया करनारा साधुओ तैयार थया पळी (उत्कृष्ट तप वडे) कायाने दुर्बळ बनानी (आचार्य के गच्छनायक) भक्त परिज्ञा, इंगित मरण अथवा पादपजगमन ए त्रणमांथी कोइ पण स्वीकारे तेनुं वर्णन छे.

आ प्रमाणे पांच गाथामो संक्षेपथी अर्थ कहाो, अने विस्तारथी तो दरेक उद्देशामां कहेवाचो, निक्षेप त्रण प्रकारे छे, ओष निवृत्त नाम निवृत्त अने सूत्रालापक निवृत्त छे, ओषमां अध्ययन छे; नाममां विमोक्ष छे, ते विमोक्षना निक्षेपानिर्मुक्तिकार कहे छे.

नामदत्तणविमुक्त्वो, दन्वे खित्ते य काल भावे य; एसो उ विमुक्त्वस्मानिक्खेत्तो छविद्वहो होइ ॥२५८॥

नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काल अने भाव विमोक्ष एम छ प्रकारे छे, संक्षेपथी कहाा, अने विशेषथी कहेवा नाम स्थापना सुगमने छोटी द्रव्यादि विमोक्ष बताववा कहे छे.

द्वन्वविमुक्त्वो नियलाइणसु खित्तंमि चारयाइंसु; काले चेइयमहिमइणसु अणवायमईओ । २५९॥

द्रव्य विमोक्ष आगम अने नो आगम एम वे भेदे छे, आगमथी ज्ञाता पण तेमां तेनो उपयोग न होय.

नो आगमथी ज्ञ शरीर भण्य शरीरथी व्यतिरिक्त (जुदो) निगडादिक विषयभूत (बेडीमांथी) जे छुटकारो थाय ते द्रव्य विमोक्ष छे, (अथवा मागधीमां सातमी विभक्ति छे तेनो अर्थ पांचमी विभक्तिमां लइए तो) बेडी विगोरे द्रव्यथी छुटवु, ते द्रव्य विमोक्ष छे, (अपर कारक वचननो संभवतो अर्थ भणोलाए पीतानी मेळे विचारीने योजवो ते बतावे छे जेमके) द्रव्य वहे, के द्रव्यथी, एटले सच्चि अच्चि मिश्र द्रव्यथी मोक्ष ते द्रव्य विमोक्ष विगोरे समजवो.

क्षेत्र विमोक्ष ते जे क्षेत्रमां पोते चारक विगोरेथी पकडाएथो होय, तेमांथी छुटकारो थाय, ते क्षेत्र विमोक्ष छे.

अथवा क्षेत्रना दानथी अथवा जे क्षेत्रमां मोक्षहुं वर्णन चाले ते क्षेत्र विमोक्ष छे. अने काल विमोक्ष चैत्य महिमा विगोरेमां जे-दलो काल अपारी पटह वगडावे. अने आरंभ जीवहिंसा विगोरे वन्ध थाय ते अथवा जे काले मोक्षहुं वर्णन चाले, तेने आभयथी काल मोक्ष छे. आ गाथानो अर्थ छे. हवे भाव विमोक्ष बतवे छे.

दुविहो भावविमुक्त्वो देसविमुक्त्वो य सव्वमुक्त्वो य । देसविमुक्त्वा साहू सव्वविमुक्त्वा भवे सिद्धा ॥२६०॥

भाव विमोक्ष वे प्रकारे छे. आगमथी ज्ञाता अने उपयोग राखनार छे. अने नोआगमथी वे प्रकारे छे. देशथी तथा सर्वथी छे. देशथी अविरत सभ्यण् दृष्टि जीवोने अनंतानुबंधीनी चोकडी क्षय उपशम थवाथी तथा देश विरतीने अनंतानुबंधी तथा अप्रत्याख्याननी चोकडीओ क्षय उपशम थवाथी छे. अने साधुओने प्रथमना चार कषायो (संज्वलननी चोकडी सिवाय) क्षय उपशम थवाथी अने

क्षपक श्रेणीमां जेने जेटलो काल कषायो क्षीण थाय, तेने तेटलानो क्षय थवाथी देश विमुक्ति छे, तेथी साधुओ देश विमुक्त छे. भवस्य केवली साधुओ पण भव उपग्राहिक कर्मना सद्भावथी देश विमुक्त छे, अने सर्वथा विमुक्त तो सिद्ध भगवंतं, ज थाय छे. (गाथार्थ) शंका—मोक्षनी पूर्वे बंधपणुं होय छे, जेयके निगड (हेड) त्रिगेरे बन्ध होय तां तेना मोक्षना संभव थाय, ते शंका दूर करवा माटे बन्ध अभिधान पूर्वक मोक्ष बतावे छे.

कम्मयद्वेहिंसमं, संजोगो होइ जो उ जीवस्स । सो बन्धो नायव्वो, तस्स त्रिआंगो भवे सुक्खो ॥२६१॥

कर्म वर्णाना द्रव्य (पुद्गलो) साथे जे जीवनो संयोग छे, ते पञ्चति स्थिति अनुभाव अने प्रदेश रूप बद्ध स्पृष्ट निषत्त निकाचन अवस्थावालो बन्ध जाणवां. कारण के आत्मानो एकेक प्रदेश अनंत=अनंत कर्म पुद्गलो बडे बन्धायालां छे, अने अनंत अनंत नवा बन्धाइज रला छे, कारणके वाकीना अप्रहण योग्य छे.

प्र०—आठ प्रकारनां कर्म केवी रीते बन्धाय छे ? उ०—मिथ्यात्वना उदयथी—कहुं छे, के.

“ कहुं णं भंते ! जीवा अट्ट कम्मपगडीओ बंधंति ? गोअमा ? णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदणं दरि-सणावरणिज्जं कम्मं निअच्छन्ति, दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदणं मिच्छत्तं णियच्छन्ति, मिच्छत्तेणं उइ-त्तेणं एवं खलु जीवे अट्ट कम्मपगडीओ बन्धइ ” यदि, वा—“ णेहत्तुपिअगतस्स; रेणुओ लग्गई जहाअंभे । तह रागदोसणेहाल्लियस्स कम्मंपि जीवस्स ॥१॥ ”

प्र०—हे भगवन् जीवो आठ प्रकारन कर्मो केवी रीते बांधे छे ?

૭૦—હે ગૌતમ ! જ્ઞાનાવરણીય કર્મના ઉદયથી દર્શનાવરણીય કર્મ વન્ધાય છે, તેથી મિથ્યાત્વનો ઉદય થાય છે અને તેથી આઠે કર્મ પ્રકૃતિ વન્ધાય છે. અથવા સ્નેહ (વી તેલ)થી ચીકણા બનેલા શરીરવાલાને જેમ શરીરમાં ફીળી રેતી ચોટે છે. તેવી રીતે રાગદ્વેષની ચીકણાસથી જીવોને કર્મ ચોટે છે, ણ આઠે પ્રકારના કર્મના આસ્ત્રવના નિરોધથી અથવા તપ વડે અપૂર્વકરણ ક્ષપકશ્રેણીના અનુક્રમથી અથવા શૈલેશી અવસ્થામાં જે કર્મનો વિયોગ થાય છે, તેજ કર્મક્ષય રુપ મોક્ષ છે. છું પુરુષના બધા અર્થોમાં પ્રધાનપણું હોવાથી પ્રારંભેલ તલનારની ધારા માફક મહાત્વતોના અનુષ્ઠાનનું મુખ્ય ફલ હોવાથી તથા बीजा मतवाळानी साथे तेनो भेद होवाथी जेवું મોક્ષનું સ્વરુપ જિનેશ્વરે સાચું બતાવ્યું છે. તે કહે છે. અથવા પ્રથમ કર્મના વિયોગના ઉદ્દેશ વડે મોક્ષનું સ્વરુપ બતાવ્યું. હવે જીવ વિયોગના ઉદ્દેશ વડે મોક્ષનું સ્વરુપ બતાવે છે.

જીવસ અત્તજણિણ्हि चैव कम्मोहिं पुञ्चवद्दस्स । सच्चविवेगो जो तेण तस्स अह इत्तिओ सुक्खो ॥२६२॥

જીવ અસંલ્યાત પ્રદેશવાલો છે. તેને પોતાની મેલે (પોતાનું) અનંતુંજ્ઞાન સ્વભાવથીજ છે, તેને પોતાનો આત્મા જે મિથ્યાત્વ અવિરતિ પ્રમાદ ક્ષાય યોગમાં પરિણત થવાથી જે કર્મો પોતાનાથી વન્ધાય છે, તે કર્મને પૂર્વ બાંધેલ હોવાથી તેનો પ્રવાહ અનાદિ કાલની અપેક્ષાથી ચાલુ છે. તે કર્મનો સર્વથા અભાવ રુપ ત્રિવેક કરવો, અર્થાત્ આત્માને તેનાથી નિર્લેપ કરવો, તેજ જીવને તેટલોજ મોક્ષ છે. પળ બીજા નિર્વાણ પ્રદીપ (હુજાણલા દીવા) માફક કલ્પેલો મોક્ષ નથી, માત્ર વિમોક્ષ કહ્યો, અને જેને તે મોક્ષ થાય છે, તેણે સર્વથા મોક્ષ પ્રાપ્ત કરવા અવશ્યે યત્ન પરિજ્ઞા વિનેરે ત્રણ મરણ (અણસણ)માંથી કાઢપણ સ્વીકારવું જોઈએ. અને કાર્યમાં કારણનો ઉપનાર કરવાથી તે મરણજ ભાવવિમોક્ષ છે. તે બતાવે છે.

મત્ત પરિજ્ઞા ઇંગિણિ પાયવગમણં ચ હૌહૈ નાયત્ત્વં । જી૦ મરહૈ ચરિમમરણં ભાવવિમુક્ત્વં વિયાણાહિ ॥૨૬૬॥

મત્ત (મોજન)ની પરિજ્ઞા [પચ્ચલ્લાણ) અણસણ તે મત્ત પરિજ્ઞા છે, તેમાં ત્રણ પ્રકારનો આહાર ત્યાગીને ફક્ત અચિત્ત પાળીની છુટ રાસીને અણસણ કરે, પણ તે શરીરની વૈયાવચ્ચ કરવા દે, અને તે ધૈર્યતા તથા મજબૂત સંયયણવાળો હોય, તે જેમ પોતાને સમાધિ રહે તેમ અણસણ કરે.

તથા ઇંગિત પદ્દેશમાં મરણ પામવું તે ઇંગિત મરણ છે. તે ચાર પ્રકારના આહારની નિવૃત્તિ રુપ છે. અને તે જેવું સંયયણ મજબૂત હોય, તે પોતાની મેલેજ પાસું ફેરવવું વિગેરે ક્રિયા કરે, એમ જાણવું. તે પ્રમાણે ચારે પ્રકારનો આહાર હોડીને તથા વધી ક્રિયાઓ તથા વેદાઓ હોડીને ઇકાંતમાં શરીરની વૈયાવચ્ચ કરાવ્યા વિના શ્વાહની માફક સ્થિર શરીર કરવું. તે પાદપ ઉપગમન જાણવું.

પણ જે મત્ત સિદ્ધિક્ક જીવ છે. તે હેલ્લા અણસણને આશ્રયીને મરે છે. અને તેથી ઉત્તમ સાધુ જે મોક્ષની ઇચ્છાવાળો છે તે ઉપર વતાવેલા ત્રણ અણસણમાંથી કોઈ પણ એક સ્વીકારે છે, પણ તે વૈદ્યાનસ વિગેરે બાલ મરણ (આપઘાત)થી મરતો નથી અને ત્રણ અણસણમાં થોડો ભેદ હોવાથી ત્રણ પ્રકારનું ભાવમોક્ષ ઇવું તું જાણ, હવે તેજ મરણને સપરાક્રમ અને અપરાક્રમ ઇવા વે ભેદે વતાવે છે. સપરિક્રમે ય અપરિક્રમપ્ ય વાઘાય આણુપુન્વીપ્ । સુત્તત્થજાણણ્ણં સમાહિમરણં તુ કાયત્ત્વં ॥૨૬૪॥

પરાક્રમ [સામથ્યં વલ્ક] જેને હોય તે સપરાક્રમી કહેવાય, અને તેવી રીતે મરે તો સપરાક્રમ મરણ છે, તેના ઉલ્લાસપણામાં અપરાક્રમ છે. ઇટલે જંયા વલ્ક ક્ષીણ થતાં મત્તપરિજ્ઞા ઇંગિત મરણ અને પાદપ ઉપગમન એમ ત્રણ ભેદવાલું અણસણ છે. હતાં પણ તે પરાક્રમ સહિત અને પરાક્રમ રહિત - એમ દરેક વે પ્રકારનું છે. અને તે દરેક ભેદ પણ વ્યાઘાત અને તે રહિત છે. તેમાં સિંહ અને

वाय विगोरेथी जे नाश थाय ते व्याघात छे, अने ते सिवायनी अव्याघात छे. एटले दीक्षा लीथा पछा-सूत्र अर्थ ग्रहण करीने अनुक्रमे विपक्तित्रय [मरण न आवेछुं] एवी अवस्थाने भोगवतो जे छे, ते अव्याघात छे.

अर्हिया अनुपूर्वी शब्द छे तेनो परमार्थ बतावतां समाप्त करे छे. व्याघात वदे अनुक्रमे अथवा सपराक्रम अथवा अपराक्रमवाळा साधुने मरण आवे छते सूत्र अर्थना जाणनारे, काल आवेलो जाणीने समाधि मरणे मरवुं. भक्त परिज्ञा इङ्गित मरण पादप उपगमन ए त्रणमांथी कोइ पण एक मरण पोताने जेम समाधि रहे तेम करवुं. पण बाल मरण न करवुं. (गाथा अर्थ)

तेमां सपराक्रम मरण दृष्टांत वदे बतावे छे.

सपरक्कममाएसो जह मरणं होइ अज्जवहराणं पायवगमणं च तथा एयं सपरक्कमं मरणं ॥२६५॥

पराक्रम सहित ते सपराक्रम मरणनो आदेश आचार्यनी परंपरामां संभलातो आवेलो हक्क वाद आ प्रमाणे छे. ते कहे छे, (यथा शब्द उदाहरणना उपन्यास माटे छे) एटले आ प्रमाणे ते आदेश जाणवो. आर्य वज्रस्वामिनुं मरण पादप उपगमन छे अने ते सपराक्रम मरण छे. ते प्रमाणे बीजे पण समजवुं [गाथा अर्थ] तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो, अने ते कथा प्रसिद्धन छे. जेम आर्य वज्रस्वामिए पोते दवा माटे सुंठनो गांगडो कानमां राखेलो, ते वापरवो भूली जवाथी पोते जाणुं के आवो प्रमाद मने थयो छे. तेथी तेमणे मरण नजीक आवेछुं जाणीने सपराक्रमी वनीने स्थावर्त पर्वत उपर पादप उपगमन अणसण कर्युं. हवे अपराक्रम मरण बतावे छे.

अपरक्कममाएसो जह मरणं होइ उदहिनामाणं । पाओवगसेडवि तथा एयं अपरक्कमं मरणं ॥२६६॥

पराक्रम न होय तो अपराक्रम कहेवाय तेवुं मरण जेने जंघावळ सर्वथा क्षीण थयेळुं होय तेवा उदधि [सागर] नामना ते आर्य समुद्र सुनिनुं मरण थयेळुं छे. तेनो वृद्धावाद आ प्रमाणे छे. ते प्रमाणे पादप उपगमन अणसण वडे तेमनुं मरण थयेळ छे. जेवी रीते आर्य समुद्रनुं अपराक्रम मरण छे. तेवुं बीजी जग्याए पण जाणवुं. (गाथा अर्थ)

तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो. आर्य समुद्र नामना आचार्य स्वभावथीज दुर्बळ हता, पळीथी जंघा वळे सर्वथा क्षीण थतां शरीरथी बीजो लाभ न जाणीने तेने तजवानी इच्छथी पोताना गच्छमां रहीने उपाश्रयना एक भागमां आहार रहीत पादप उपगमन अणसण कर्युं, हवे व्याघातवाळं अणसण कहे छे.

वाघाइयमाएसो अवरुद्धो हुज्ज अंनतरणं । तोसलि महिसीइ हओ, एयं वाघाइयं मरणं ॥२६७॥

विशेषथी आघात ते सिंह विगेरेए करेलो व्याघात छे एटले शरीरनो नाश थाय छे. तेना वडे जे अणसण समाप्त थाय अथंवा तेवुं मरण थाय तो ते व्याघातिम अणसण छे. एटले कोइ साधुने सिंह विगेरेए वेर्यो होय, अने तेनाथी मरण थाय, ते व्याघातिम छे तेना माटे वृद्धवाद आ प्रमाणे छे, के तोसली नामना आचार्यने भेंसोए वेर्यो, अने मरण वरवते तेप्रणे चार प्रकारनो आहार त्यागीने अणसण कर्युं ते व्याघातिम मरण छे. तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो ते कहे छे.

ते देशमां भेंसो घणी थाय छे. तोसली नामना आचार्यने जंगली भेंसोए वेर्यो, तेप्रणे पीडातां बीजो उपाय न जोइने चार प्रकारना आहार त्यागवानुं अणसण कर्युं हवे अव्याघातिम अणसण बताववा कहे छे.

अणुषुविगमाएसो पव्वज्जासुत्तअत्थकरणं च । वीसज्जिओ (य) निन्तो, मुक्का तिवहस्स नीयस्स ॥२६८॥

अनुपूर्वी (क्रम) ने पासे, ते अनुपूर्वीग है.

प०—ते आ देश कयो छे ? (आ देशनो अर्थ ह्रदवाद् छे.) ते ह्रदवाद् आ प्रमाणे छे.

प्रथम आत्मार्थी जीवनने दीक्षा आपवी, पछी सूत्र भणाववां डेवटे अर्थ आपवो. ते बनेमां पविण थयेलो अने गुरुए सुपात्र जोइने सूत्रार्थ भणाव्या पछी तेने आज्ञा आपे तो पोते कोइपण जातनुं अणसण करवा तैयार यइने नीकळे. ते प्रथम आहार उपधि शय्या एम त्रणेनो त्याग करे छे. अने पोते प्रथम रोज भोगवतो तेनाथी प्रोते मुक्राय छे. तेमां जो आचार्य होय तो तेवुं अणसण करवा पहेलां शिष्याने तैयार करीने बीजो आचार्य श्यापीने पोते निहत्त थइने वार वरसनी (उत्कृष्ट तपस्या) संलेखना वडे अनुभव करीने पोते गच्छनी अणुज्ञा [संपति] लइने गच्छने छोडीने अथवा पोते. नीमेळा आचार्यनी समति लइने अणसण करवा बीजा आचार्यनी पासे जाय छे. तेज प्रमाणे उपाध्याय प्रवर्तक स्थविर गणावच्छेदक, अथवा सामान्य साधु हाय ते आचार्यनी रजा लइने संलेखना वडे परिकर्म करीने भक्त परिज्ञा विगेरे अणसण न स्वीकारे. तेमां पण, भाव संलेखना करे कारण के द्रव्य संलेखना जो, एकली होय; तो, दांषनो संभव छे. ते कहे छे:—

पडिचोइओ य कुविओ, रणो जह तिवख सीयला आणा । तंबोले य विवेगो घट्टणया जा पसाओ य ॥२६९॥

आचार्य प्रेरणा करेलो के तुं फरी संलेखना कर, एवुं कहेवाथी क्रोधायमान थएला शिष्यने जेम राजानी आज्ञा तीक्ष्ण होय छे. पछी शीतल थाय छे. तेम आचार्य पण बीजाओना रक्षण माटे प्रथम त्याग करवो जोइए. वळी नागरवेलनुं सडेछुं पान जेम बीजां पान बचाववा माटे दूर करवुं जोइए. तेम कुशिश्यने प्रथम शिक्षा करी पछी ते माफी मनो तो तेना उपर दया लावी राखवो

जोइए. (गाथा अर्थ) भावार्थ कथार्थी जाणवो.

एक साधुए वार वरसनी उकट्ट तपस्याथी संलेखना करी, अने आचार्य पासे अणसणनी याचना करी आचार्य कहुं, तुं हज्ज पण संलेखना कर, तेथी आ शिष्ये कोपायमान थइने फक्त चामडी अने हाडकुं रहेल एवी मांस लोही विर्नानी आंगळी भांगीने देखाडी, के हवे शुं अशुद्ध बाकी रहुं छे ? आचार्य पोनाना हृदयनो अभिप्राय मगट कर्यो, के तुं क्रोधने लीथे अशुद्ध छे, के वचननी कडवासथी शीघ्र तारी आंगळी तें भांगीने भावनी, अशुद्धता देखाडी छे. तेथी तेने बोध करवाने माटे दृष्टांत कहुं, के कोइ राजानी बे आंखो रोज पाणीथी झरती हती, राजाना वैशोए घणी दवा करी पण सारं न थयुं. एक वखत कोइ परदेशी वैद्य आव्यो तेणे कहुं, जो तुं एक मुहुर्त सुधी वेदना सहन करे, अने मने न मरावे, तो तने सारो करं राजाए कबुल कर्युं. अंजन (धुरमो) आंखमां नाख्या पड्डी उत्पन्न थयेली तीव्र वेदनाथी मारी आंखो गइ, एवी बाणी बोलीने राजाए मारवानी आज्ञा करी; तेथी राजानी आज्ञा तीक्ष्ण थइ; अने पूर्व न मारवानुं वचन आपवाथी शीतल आज्ञा करवी पड्डी; पण ज्यारे मुहुर्त पड्डी वेदना दूर थलां सारी आंखोवाळो थलां तेज राजाए खुश थइ वैद्यनी पूजा करी. ए प्रमाणे आचार्यनी आज्ञा पण तीक्ष्ण छे. एटले, शिष्यनी भूल देखलां वडवां वचननी आज्ञा करे; पण शिष्यनुं अंतरंग तपासी तेनां कार्यथी प्रसन्न थाय; एटले, परिणामे शिष्यने हितकर होवाथी ते आज्ञा शीतल छे, आवुं समजाव्या छलां पण क्रोधथी शिष्य तांत न थाय; तो, बीजाओना रक्षण माटे सडेला पाननी माफक तेने दूर करवो.

जो, गुरुनी आज्ञा शिष्य माने; तो, गच्छप्रांज रहेवा दइने दुर्बचनथी तेनो तिरस्कार करी परीक्षा करवी. जो, तेम करतां न

कोषे, तो ते शुद्ध छे, एम जाणीने तेने अणसणनी आझा आपे; तथा तेने आर्त्तध्यान विगेरे न थाय; माटे तेनी खवार, राखी गुरु प्रसाद करे, म०—आ प्रमाणे केवो, अने केदलो काल, अने केवी रीते आत्माने संलेखे ? तेथी, हृदयमां विचारने कहे छे:—

निष्कार्थ्या य सीसा सउणी जह अंडां पयत्तेणं । वारससंवच्छरियं सो संलेहं अह करेइ ॥२७०॥

चत्तारि विचिच्चाइं विगई निज्जुहियाइं चत्तारि । संवच्छरे य दुच्चि उ एगं तरियं तु आयामं ॥२७१॥

नाइविगिट्टो उ तवो, छम्मासे परिमियं तु आयामं । अन्नेऽवि य छमसे होइ विगिट्ठं तवो कम्मं ॥२७२॥

वासं कोडीसहियं आयामं काड आणुपुच्चीए । गिरिकंदरंमि गंतुं, पायवगमणं अह करेइ ॥२७३॥

सूत्र अर्थ तथा बबे प्रकारे पोताना शिष्योने तथा भणवा आवेला बीजा साधुने भणावीने जेम शकुनी पक्षी इंडाने सेवीने तैयार करे, तेम प्रयत्नथी तैयार करवा जोइए. त्यारपळी आचार्य वार वरषनी संलेखना करे ते आ प्रमाणे.

चार वरस सुधी जुदा जुदा तपना अनुष्ठान करे छे. एटले एक बे त्रण चार पांच उपवास विगेरे करीने पारणुं करे छे. पारणां वरवते विगय वापरे. अने नपण वापरे, पांचमा वरसथी बीजां चार वरस तेवो तप करीने पारणांमां बीगइ न वापरे नवमा दशमा वरसमां उपवासने पारणे आंबेल एम करे अग्यारमां वरसमां पहेला छ महीना सुधी अति विकृष्ट तप न करे अथवा एक बे उपवास करीने परिमित आंबेलथी पारणुं करे (उणोदरी तप करे) बीजा छ मासमां विकृष्ट तप अने पारणांमां आंबेलमां उणोदरी तप करे बारमा वरसे कोटी महित आंबेल करे एटले रोज आंबेलथी खाय, एटले आंबेलनी कोटी कोटी मळे माटे कोटी सहित कळुं छे चार मास बाकी रहे. त्यारे तेळना कोगळा अस्खलित नमस्कार विगेरे शिखवा माटे वायु दूर करीने सुख यंत्रना प्रचार माटे

वारंवार करे. आ प्रमाणे वार वरस सुधी अनुक्रमे वधुं करीने सामर्थ्य होय तो गुरुनी आज्ञा लहने पहाडनी गुफामां जडने निर्दोष जग्या जांइने पादप उपगमन अणसण करे इङ्गित मरण अथवा भक्त पत्याख्यान जेम समाधि रहे तेम करे आ प्रमाणे वार वर-सनी संलेखना कर्म वडे आहार ओछो करतां आहारनी अभिलाषानो उच्छेद थाय छे ते वे गाथा वडे वतावे छे.

कह नाम सो तबोकममपंडिओ जो निच्छुजुत्तपा । लहुवित्तीपरिक्खेव वच्चइ जे मंतओ चेव ? ॥२७४॥

आहारेण विरहिओ, अप्पाहारो य संवरनिमित्तं । हासंतो हासंतो, एवाहारं निरंभिज्जा ॥२७५॥

केवी रीते ए साधु तप करवापां पंडित थाय ? जे नित्य उद्युक्त आत्मा वनीने वन्निस कोळियाना परिणामवाळी वृत्ति न राखे? एटले दिवसे दिवसे लघु वृत्तिनो परीक्षेप न करे; तो, तप कर्ममां पंडित केवी रीते थाय (जो, गोचरीमां लोळुपता राखी वधारे वधारे स्वाय; तो, ते तप करवापां निगुण न थाय;) तथा आहार वडे वे त्रण दिवस सुधी वियोग करे. अर्थात् वे त्रण पांच छ उप-वास करी; पछी पारणुं करे तो, शा माटे अल्पाहारी न थाय ? (थायज)

प०—शा माटे तप करे ? उ०—अणसण करवा माटे, आ प्रमाणे उपवास करतो तथा दरेक पारणामां अल्पआहारने लीधे ओछो ओछो करतां देव पढतां उपर बतावेळी विधिप भक्त पञ्चत्वानुं अणसण करे. नाम निक्षेपो कळो. हवे सूत्र अनुगममां अस्वलित विगेरे गुणयुक्त सूत्र कहेवुं. ते कहे छे:—

से वेमि समणुन्नस्स वा असमणुन्नस्स वा असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वरथं

वा पडिगहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा नो पादेजा नो निमंतिजा नो कुजा वेयावडियं

परं आढायमाणे त्तिवेमि (सू० १९७)

सुधर्मास्वामि कहे छे, जे-में भगवान पासै सांभळ्युं; ते कहुं छुं, अने हवे कहेवातुं पण भगवानतुं वचन छे. एटले समनोइ, अथवा अमनोइ होय; एटले, दृष्टि (सम्यग्दर्शन,) तथा लिंगथी समनोइ एटले उत्तम श्रद्धावाळो होय; पण, भोजन विगोरेमां त्यागी न होय, अने अमनोइ ते बौद्ध मत विगोरेना साधुने चार प्रकारना आहार विगोरेनी निमंत्रणा न करे; ते कहे छे. अन्न [भोजन] ते, भात विगोरेतुं छे, अने पाणी ते, द्राख विगोरेतुं छे, अने थोडा देका रूप नाळीयेर (कोपहं) विगोरे छे, अने स्वाद भाटे कपुर, लवंग, विगोरे छे. तेज प्रमाणे वस्त्र, पात्र, कंबल, रजोहरण, आ वधां पोतानां उपकरण कुसाधुने वापरवा न आपे. तेज प्रमाणे तेमनी वैयावच्य न करे; अने घणां आदरवाळो बनीने तेमने तेवी वस्तुतुं आमंत्रण न करे; तेम थोडी घणी वैयावच्य पण न करे, हवे, पछीतुं पण हुं कहुं छुं.

धुवं चैयं जाणिजा असणं वा जाव पायपुछणं वा लभिया नो लभिया भुंजिया नो भुं-

जिया पंथं विउत्ता विउक्कम्म विभत्तं धम्मं जोसेमाणे समेमाणे चलेमाणे पाइजा वा निमं-

तिज्ज वा कुजा वेयावडियं परं अणाढायमाणे त्तिवेमि (सू० १९८)

ते बौद्ध विगोरे मतना कुशीळवाळा साधुओं अन्न विगोरे वतावीने एहुं, बोले के, आ निश्चय जाणो के, अमारा मदमां रोज तसे

भोजन विगरे मेळवचो एटले बीजी जग्याए मळे न मळे अथवा खाइने अथवा विना खाथे अमारी धीरजने माटे तमारे अवश्य आववुं, जो न मळे तो लेवा माटे अने मळे तो वधारे खावा माटे वारंवार भोजन माटे न खावुं होय ते वरवते सवारनो नास्तो क रवा अमारी धीरज माटे कोइ वरवत पण आववुं अथवा ज्यारे तमने जे कल्पे तेवुं असे तमने आपशुं वळी अमारो मठ तमारा रस्ता- मांज छे कदाच तसे बीजे रस्ते जाता हो तो थोडो केरो खाइने पण आडा मार्गे बीजे वेरे जइने पण अमारे त्यां आववुं आ आगम- नमां खेद मानवो नहीं (आ प्रमाणे प्रेम धरवी जैन साधुने वौद्ध विगरेना साधु आमंत्रण करे.) प०—द्या माटे आवुं वौद्ध साधु करे छे ? उ०—ते कहे छे विभक्त (जुदा) धर्मने पाळता अने कदाच जैन साधुना उपाश्रयमां आवीने अथवा रस्तामां जातां निमंत्रण करे अथवा पोतानी पासेवुं भोजन विगरे आपे अथवा भोजन आपवानी निमंत्रणा करे अथवा भक्त माफक वैयावच्च करे आ वधुं जैन साधुने कुशील साधुनुं न कल्पे तेम तेनो परिचय पण न करे केवी रीते जैन साधु रहे ? उ०—ते कुशील साधु बहु मानथी साधु नो आदर करे तोपण पोते तेमां गृह न थाय तोज दर्शनशुद्धि साधुनी रहे छे, (जो तेवा कुशीलनी सोवत करे तो जैन साधुने पोताना कठण संयममां अनादर थाय अने पोते पण तेवुं कुशील आचरे.) अथवा हवे पळीतुं पण सुधर्मास्वामी कहे छे.

इहमेगोसिं आचारगोयरे नो सुनिसंने भवति ते इह आरंभट्टो अणुवयमाणा हण पाणे दा- यमाणा हणओ यावि समणुजाणमाणा अद्दवा अदिन्नमाययंति अद्दवा वायाउ विउज्जंति, तंजहा—अस्थि लोए नस्थि लोए धुवे लोए अद्दवे लोए साइए लोए अणाइए लोए सप-

ज्वसिष् लोष् अपज्वसिष् लोष् सुकडेत्ति वा दुक्कडेत्ति वा कह्हाणोत्ति वा पावेत्ति वा सा-
हृत्ति वा असाहृत्ति वा सिद्धिन्ति वा असिद्धिन्ति वा निरएत्ति वा अनिरएत्ति वा, जमिणं
विपट्टिविन्ना मामगं धम्मं पत्तवेमाणा इत्थवि जाणह अंक्स्मात् एवं तेसिं नो सुयक्खाए धम्मो
नो सुपत्तत्ते धम्मो भवइ (सू० १९९)

आ मनुष्य लोकमां केटलाक पूर्वे करैल अशुभ कर्मनो विपाक जेमने छे. तेवा निर्माणी जीवोने मोक्ष माटे जे अनुष्ठान रूप
आचार छे, तेसारी रीते हृदयमां टस्यो नथी, ते अपरिणत आचारवाला जेवा होय, ते कहे छे:—

ते आचारनुं स्वरूप न जाणनारा गोचरीमां नाह्या विना परसेवाना। मेलना परिषहथी कंटाळेला जे साधुओ छे; तेमने सुख
विहार करनारा बौद्ध मत विगेरेना साधुओए पोताना जेवा विचारवाला वनावेला छे. तेथी, जैनसाधुओ पण, तेनी सोवतथी संय-
ममां शिथिल थइ आरंभना अर्थी वने छे, अथवा ते शक्य विगेरेना साधु, अथवा जे कुशीक छे, तेओ सावद्य आरंभना अर्थी छे.
तेज प्रमाणे मठ, आराम, तळाव. कुवा वनाववा पोताने माटे रांवेछुं खानारा विगेरे साधुओ बोले छे के, पाणीओने मारो, आ
प्रमाणे बीजा पासे मरावता; अने मारनारनी अनुमोदना करता;अथवा बीजानुं द्रव्य लेवाथी कडहुं फळ छे. तेने विसरीने, तथा
जेना शुभ अद्यवसायो टकाइ गया छे. तेओ चोरीनुं द्रव्य ले छे. वळी, पहेला बीजा व्रतमां थोडुं कहेवानुं होवाथी तेने प्रथम कहीने
बीजा महाव्रतनुं वधारे कहेवानुं होवाथी बीजा व्रतनो उपन्यास हवे करे छे. [अथवा ए अव्यय बीजो पक्ष वतावे छे. ते कहे छे.]

एटले, अदत्त छे छे. अथवा, नाना प्रकारनी युक्तियो योजे छे. ते बंतावे छे के, स्थावर जंगम स्वरूपवाळो लोक छे, तेमां नव खंडवाळी पृथ्वी छे अथवा सात द्वीपवाळी पृथ्वी छे. बीजा मतनां माने छे के, ब्रह्माना अंडामां पृथ्वी अंदर रहेली छे. वळी बीजा मतवाळा कहे छे के ब्रह्माना अंडा जेवी पाणीमां रहेली भींजाती एवी सेंकडो पृथ्वीओ पाणीमां रहे छे तथा जेओ पोताना कर्मना फळने भोगवनारा छे परलोक छे वंध मोक्ष छे पांच महाभूत छे (आवा जुदा जुदा अनेक मत छे.)

नारतीको कहे छे के आ बधो लोक जे देवाय छे ते बधुं माया [जुट] नी इन्द्र जळ जेवुं तथा स्वप्नमां देख्या जेवुं छे अने अविचारीत रमणीयपणे भूतना अभ्युगम [स्वीकार] करवा छतां परलोकनो अनुयायी जीव पण नथी, शुभ अशुभ फळ-नथी पण जेम किणु विगेरेमांथी जेम नसो उत्पन्न थाय छे, तेम भूतोमांथी चैतन्य थाय छे. आ बधुं मायाकार गंधर्व नगरना जेवुं छे. कारण के पून्य पाप विगेरे युक्तिथी सिद्ध थतां नथी. वळी चार्वाक कहे छे:—

यथा यथाऽर्थीश्चिन्त्यन्ते, विविच्यन्ते तथा तथा । यद्येतत्स्वयमर्थे भ्यो रोचते तत्र के वयम् । १ ॥

भौतिकानि शरीराणि, विषयाः करणानि च । तथापि मन्दैरन्यस्य, तत्त्वं समुपदिश्यते ॥ २ ॥

जेम जेम अर्थी विचारीए तेनुं विवेचन करीए तेम तेम जे जे अर्थ तरफ रुचे तेमां आपणे कइ गणत्रीमां (जेम जेम विचार करीये तेम तेम आ बधुं विषय तरफ खेंचाइ जाय त्यारे आपणे विचार करवानी भुं जरर.)

आ शरीर तथा विषय अने इन्द्रियो बधुं भूतमांथी वनेछुं छे. तोपण मंद बुद्धिवाळाए बीजा जीवोने फसाववा तत्व तरिके ठसावी दीधुं छे. वळी सांख्य विगेरे मतवाळा कहे छे, लोक नित्य छे. कारणके प्रकट थवुं, लय थवुं एटछुंज मात्र उत्पात अने विनाशवुं स्वरूप

हे. कारण के जे नथी तेनुं उत्पादन नथी. तथा जे-हे तेनो नाश नथी. अथवा ध्रुव ते नदी समुद्र पृथ्वी पर्वत आकाश ए वधांहुं निश्चयपणुं होवथी ते ध्रुव हे (माटे तेमना मत प्रपाणे वधुं नित्य हे)

बौद्ध विगोरे कहे हे लोक अनित्य हे कारण के दरेक क्षणे तेनो स्वभाव क्षय थवारुप हे. विनाशना हेतुना अभावथी अने नित्य नस्तुना अनुक्रमथी के एक साथे अर्थ क्रियामां असामर्थ्यपणुं हे. (आ प्रमाणे तेमनुं मानवुं हे के वधुं अनित्य हे.) अथवा अधुव ते चल हे जेमके भूगोक (पृथ्वीनो गोकुं) केदलाक न कहेवा प्रमाणे नित्य चलायमान हे. (तेओ माने हे के पृथ्वी फरे हे) अने सूर्य स्थिर हे तेमां सूर्य मंडळ दूर होवाथी जेओ पूर्वमांथी जुए हे तेमने सूर्यनो उदय देखाय हे, अने सूर्यना मंडळना निचे रहेलाने मध्यान्ह देखाय हे. अने जेओने सूर्य दूर थवाथी न देखाय तेओने आथमेलो जणाय हे. वकी बीजा मतवाळा एवुं माने हे के लोकनी आदि हे. तेओ कहे हे.

आसीदिदं तपोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् । अपतर्क्यमविज्ञेयं, प्रसुप्तमिव सर्वतः ॥ १ ॥

आ वधुं पूर्वे अधारारूप, अजाण्युं, लक्षण रहित विचाराय नहीं तेवुं, न जणाय तेवुं, वधी रीते सूतेला जेवुं हतुं.

तस्मिन्नेकार्णवीभूते, नष्टुस्थायरजंगमे । नष्टामरनरे चैव, प्रनष्टोरगराक्षसे ॥ २ ॥

ते एक समुद्ररूप बनेलुं स्थावर जंगमनो तथा देवता मनुष्यनो नाश हतो तेम नाग तथा राक्षसनो पण नाश हतो(त्यारे केवुं हतुं ते कहे हे)

केवलं गह्वरीभूते, महाभूत विवर्जिते । अचिन्त्यात्मा विश्रुतत्र, शयानस्तप्यते तपः ॥ ३ ॥

तस्य तत्र शयानस्य, नाभेः पद्मं विनिर्गतम् । तरुणरविमण्डलनिभं, हृदं काञ्चनकर्णिकम् ॥ ४ ॥

तस्मिन् पक्षे तु भगवान् दण्डी यज्ञोपवीतसंयुक्तः । ब्रह्मा तत्रोत्पन्नस्तेन जगन्मातरः सृष्टाः ॥ ५ ॥

अदितिः सुरसङ्घानां दितिर सुराणां मनुर्मनुष्याणाम् । विनता विहङ्गमानां माता विश्वप्रकाराणाम् ॥ ६ ॥

कद्रुः शरीरसृष्टाणां सुलसा मात तु नागजातीनाम् । सुरभिचतुष्पदानामिन्द्रा पुनः सर्व वीजानाम् ॥ ७ ॥

फक्त गहवर (पोलाण) ना आकारवाळुं महाभूतोथी रहित हतुं तेमां अचित्त्य आत्मा विशु (इश्वर) पोते सुतेळो तप करे छे. ३ ते त्यां सुतेळा विशुनी नाभीमांथी एक कमळ उत्पन्न थयुं ते उगता सूर्यना भंडळ जेवुं सोनानी कर्णिकावाळुं रमणिक हतुं (४) ते पन्नमांथी भगवान दंड धारण करेल जनांइ पहेरेलां ब्रह्मा उत्पन्न थयो तेणे जगननी माताओने रची छे. (५)

देवताओना समूहनी माता अदिति छे, अने असुरोनी माता दिति छे. मनुष्यनो मनु छे. पक्षीओनी माता विनता छे. आ प्रमाणे विश्वना प्रकारोनी माताओ ब्रह्माए बनार्ची. (६)

सरीसृपनी माता कद्रू छे. अने नागनी जातीओनी माता सुलसा छे. तेम वथां चोपणां प्राणीनी मा सुरभि छे. अने सर्व वी-जोनी माता इला छे. [आ प्रमाणे पुराणवादीओ बोले छे, तेम बीजा धर्मवाळा पण पोतानी बुद्धि प्रमाणे कल्पना करे छे, तेम समजवुं बीजा मतवाळा केदलाक अनादि लोक माननारा छे जेमेकेशाक्य मतवाळा कहे छे हे भिक्षुओ !

अनव दग्ग [अनादि] आ संसार छे तेनी पूर्व कोटी जणाती नथी, निवारण सत्वोने अविद्या नथी, तेम जीवोनां उत्पाद नथी, वळी अंतवाळो आ लोक छे जगतना प्रलयमां वथानो नाश थाय छे, तथा अंत विनानो लोक छे कारण के विद्यमान वस्तुनो सर्वथा नाशनो असंभव छे. कारण के एवुं नथी [अर्थात् हेज] केदलाक तो वन्नेने पण माने छे ते वतावे छे.

द्वावेव पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च । क्षरः सर्वाणि भूतानि, कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥ १ ॥

वेज पुरुषो लोकमां पूर्वं दत्ता, एक क्षर (नाशवंत) बीजो अक्षर [अनाशवंत] तेषां क्षरमां सर्व भूतो हे. अने अक्षर ते कूटस्थ कहेवाय हे. आ प्रमाणे परमार्थने नहीं जाणनारा लोक हे. विगेरे स्वीकारवा वडे विवाद करता जुदी जुदी वाणी काढे हे तेज प्रमाणे आत्माने पण जुदी जुदी रीते वतावे हे जेपके सारं कर्युं, ते सुकृत माने अथवा दुष्कृत माने एम क्रियावादीओ माने हे. एटले कोइ बोले के सर्व संगतो त्याग करवाथी महाव्रत ग्रहण कर्युं, ते सारं कर्युं. तथा बीजा बोले हेके हे भाइ ! आ सरळ मृग-लोचनवाकी स्त्रीने पुत्र उत्पन्न कर्यां विना ते त्यागी, ते रवोटुं कर्युं. तथा जे दीक्षा लेवा तैयार थयो होय, तेने कहे, के आ कल्याण हे. तेनेज बीजो कहे के आ तो पारवंदीओना जाळमां फसाएलो कलीब हे! गृहाश्रम पाळवाने असमर्थ हे ! विना पुत्रे दीक्षा लीधी तेथी पापरूप हे तथा आ साधु हे, असाधु हे एम पोतानी मतिए कल्पना करी इच्छानुसार बोले हे तथा सिद्धि हे अथवा सिद्धि नथी, अथवा नरक हे अथवा नथी ए प्रमाणे बीजुं पण पोताना आग्रह प्रमाणे पकडी विवाद करे हे ते वतावे हे के आ पूर्वं वना-वेळुं लोक विगेरेने आश्रयी जुटुं जुटुं माननारा ते विपतिपन्न वादीओ हे ते कहे हे.

इच्छंति कृत्रिमं सृष्टि-वादिनः सर्वं मेव मितिलिङ्गम् । कुरानं लोकं माहेश्वरादयः सादि पर्यन्तम् ॥ १ ॥

सृष्टिना वादीओ माहेश्वर विगेरे वधुंज मितिलिङ्ग अने कृत्रिम माने हे, अने वधा लोकने सादि पर्यंत माने हे.

नारीश्वरजं केचित्, केचित् सोमाग्निसंभवलोकं । द्रव्यादि षड्विकल्पं, जगदेतत्केचिदिच्छन्ति ॥ २ ॥

नारी तथा इश्वरथी उत्पन्न थएळुं माने हे, केटलाक मतवाळा सोमाग्निथी लोक उत्पन्न थयेळुं माने हे. तथा द्रव्यगुण विगेरे

છ વિકલ્પવાહું જગત્ કેટલાક માને છે,

ईश्वरपेरितं केचित्, केचिद् ब्रह्मकृतं जगत् । अव्यक्त प्रथवं सर्वं, विश्वमिच्छंति कर्षिताः ॥ ૩ ॥

કેટલાક ઈશ્વરની પેરણાથી થણું માને છે, કેટલાક બ્રહ્માણ જગત્ કરેહું માને છે, અને કર્ષિત મતવાલા અવ્યક્તથી બધું વિશ્વ થણું માને છે.

यादृच्छिक मिदं सर्वं, केचिद् भूत विकारजं । केचिच्चानैकरूपं तु, बहुधा संप्रधाविताः ॥ ૪ ॥

કેટલાક યાદૃચ્છિક (સ્વભાવિક) બધું માને છે, કેટલાક ભૂતોના વિકારથી થણું માને છે, કેટલાક મતવાલા અનેક રૂપવાહું જગત્ માને છે, આ પ્રમાણે અનેક પ્રકારે મતવાદીઓ પોતાના વિચાર બતાવવા દોઢેચા છે. આ પ્રમાણે જેમણે સ્યાદ્વાદ સમુદ્ર અવ-ગાહન કર્યો નથી તેવા ઈકાંશ ગ્રહણ કરી મતિના મેદવાલા બનેલા પરસ્પર દોષિત બનાવે છે, તેજ કહ્યું છે:—

लोकक्रियाऽऽत्मतत्त्वे, विवदन्ते वादिनां विभिन्नार्थं । अविदित पूर्वं येषां, स्याद्वाद विनिश्चितं तत्त्वं ॥ ૧ ॥

લોક, ક્રિયા, આત્મા, તથા તત્ત્વ સંબંધી જુદા જુદા વિષયને બતાવવા તેજ વાદીઓ ફગાડા કરે છે કે જેમણે સ્યાદ્વાદથી વિ-શેષ પ્રકારે નિશ્ચય કર્યા વિના તત્ત્વનું વર્ણન કરેલ છે; પણ જેમણે સ્યાદ્વાદ મતનો નિશ્ચય કર્યો છે, તેઓને અસ્તિત્વ નાસ્તિત્વ વિગેરે અર્થનો નયના અભિપ્રાય પ્રમાણે કથંચિત્ (કોઈ અંશે) આશ્ચય કરવાથી તેમને વિવાદનો અભાવજ છે,

ग्रन्थ वधी जवाना भयथी अहीं बहु कहेवानुं छे, छतां कहेता नथी, तथा तेनुं वर्णन सूत्रकृत विगैरे सूत्रमां विस्तारथी कहु छे. ते वधा परस्पर विवाद करता पोताना तत्त्वनो आग्रह करी तेनुं समर्थन करता पोते नाश पास्या छे, अने बीजानो नाश करे

हे, ते बतावे छे:—केटलाक सुरवथी धर्मने इच्छे छे, बीजा दुःखथी धर्म माने छे, केटलाक स्नानथी धर्म माने छे तथा मारोज धर्म मोक्ष आपनार छे, बीजा बोलवा जेबोज नथी, एम बोलनारा अणुष्ट (तुच्छ) धर्मवाळा परमार्थ नहि जाणनारा (भोळा जीवो) ने फसावे छे. हवे तेमनो उत्तर जैनार्थ आपे छे. लोक छे अथवा नथी विगेरेमां तमे जाणां.

अकस्मात् (मागध) देशमां आ शब्द गोवाळणी सुधां पण संस्कृतमां बोले छे, तेथी तेजरूपे लीधो छे एटले कस्माद् (ते हेतु छे अने अ साथे लेवाथी अकस्माद् ते अहेतु छे) तेमां ते हेतुना अभावथी बनतुं नथी, एम समजवुं के दरेकमां हेतु रहैल छे, जो तेम न मानीने एकांतथीज “लोक छे,” एतुं मानीए तो ते अस्ति (छे), शब्द साथे समान अधिकरणपणे थवाथी जातमां जे जे छे, ते वधुं लोक थरो, अने तेम मानतां तेनो प्रतिपक्ष पण ‘अलोक’ अस्ति (छे), तेथी लोकज अले थरो, अने व्याप्यना सद्भावमां व्यापकनो सद्भाव थतां अलोकनो अभाव थरो, अने तेना अभावमां तेना प्रति पक्ष लोकनो प्रथमज अभाव थरो. अथवा लोकनुं सर्व गतपणुं सिद्ध थरो.

अथवा “लोक अस्ति” पण लोक न भवति [नथी] लोक पण नामज छे, अने लोक नथी लोकनो अभाव छे. ए प्रमाणे थरो, आ वधुं अनिष्ट छे, अने अस्तितुं व्यापकपणुं होवाथी लोक साथे अस्ति एकांत लागवाथी घट पट विगेरेमां पण लोकपणानी प्राप्ति थरो कारण के व्याप्यना व्यापकना सद्भाव साथे अंतरपणुं नथी वळी अस्ति लोक आ प्रतिज्ञा पण लोक एम मानवाथी हेतुनुं पण अस्तित्वपणुं छे, तेथी “प्रतिज्ञा अने हेतु” वक्षेमां एकत्व प्राप्ति थरो, अने ते एक थतां हेतुनो अभाव थरो, अने हेतुना अभावमां क्रीण केनाथी सिद्ध थरो, अथवा एम मानीए के “अस्तित्वथी अन्य लोक छे, तो प्रथम करेली प्रतिज्ञानी हानि थरो, तेथी ए

प्रमाणे एकांतशीज लोक अस्तित्व मानतां हेतुनो अभाव वताव्यो, एज प्रमाणे नास्तित्वनी प्रतिज्ञायां पण समजवुं, ते वतावे छे, कोइ एम कहे के “लोक नथी” आहुं बोलनारने पूछवुं के तमे छो के नहि ? अने जो तमे छो तो लोकयां के लोक बहार जो लोकयां हो, तो लोक नथी एवुं केम बोलो छो ? अने लोक बहार एम बोलयो तां खर, विषाण (गथेडातुं शीगडा) माफक असत्य सिद्ध थ्या, तेथी मारे कोने उत्तर आपवो ? आ प्रमाणे दरेक विद्वाने पोतानी मेळे विचारीने एकांत वादीओतुं समाधान करवुं.

‘एवं’—जेम अस्तित्व नास्तित्व वाद तेमने मानेलो आकस्मिक निर्युक्तिक (युक्ति विनानो) छे, एज प्रमाणे ध्रुव अध्रुव विगेरे वादो पण निर्युक्तिक छे, पण अपारा जैन स्याद्वाद वादीना जैनमतयां कथंचित् (कोइ अंशे) ना स्वीकारथी उपर वतावेला दोषनो प्रसंग नथी, कारण के स्वरपर सताना उपादान व्युदासथी वस्तुनुं वस्तुपणुं उपाद्य छे, एथी ख द्रव्य क्षेत्र काल स्वभावथी वस्तुनुं अस्तित्वपणुं छे, अने परद्रव्य क्षेत्र काल स्वभावथी नास्तित्वपणुं छे, कहुं छे के:—

सदेव सर्वं को नेच्छेत, स्वरूपादिचतुष्टयात् । असदेव विपर्यासान् न चेन्न व्यवतिष्ठते ॥ १ ॥

स्वरूप विगेरे चार (द्रव्य क्षेत्र काल भाव) थी वथा पदार्थोने सत् तरीके कोण न इच्छे ? अने तेथी उलटुं ते बीजाना द्रव्यादि चतुष्टयथी पोते असत् छे, जो तेम न मानीए तो वस्तुनी व्यवस्था रहे नहि. विगेरे जाणवुं, कारण के सूत्रना संबंधना लीथे आ प्रयास थोडयां समजाववा माटे कहेल छे, माटे वथारे कहेता नथी, ए प्रमाणे ध्रुव अध्रुव विगेरेयां पण पांच अवयव अथवा दश अवयव अथवा विजी रीते एकांत पक्ष साथे स्याद्वाद पक्ष सरखावी विचारीने योजवो. (आ पांच अवयव अने दश अवयवनुं स्वरूप दशवैकालिक प्रथम अध्ययनयां हरिभद्रस्वरि महाराजनी टीकयां वतावेल छे.

हवे समाप्त करे है—ए प्रमाणे उपर बतावेली नीतिए ते वधां एकांत वादीओनो धर्म तेओए योग्य रीते कळो नथी, तेम
 शास्त्र पणयनवडे सारी रीते प्रज्ञापित पण नथी,

प०—पोतानी बुद्धिए तमे आ केम कहो छो ? उ०—नहीं, अथवा वादी पूछे है के जो ते वादीओनो एकांत पक्ष बरोबर
 कहेलो नथी, तो केवो धर्म सुप्रज्ञापित थाय है. तेथी त्रैनाचार्य (गणधरो) सूत्र कहे है:—

से जहेयं भगवया पवेइयं आसुपन्नेण जाणया पासया अहुवा गुत्ती वओगोयरसस तिवेमि सव्वरथ
 संमयं पावं, तमेव उवाइक्कम्म एस महं विवेगे वियाहिए, गामेव। अहुवा रणे नेव गामे नेव
 रणे धम्मसायाणह पवेइयं माहणेण मइमया, जामा तिननि उदाहिया जेसु इमे आयरिया संबुद्ध
 माणा ससुद्धिया, जे णिवुया, पावेहिं कम्ममेहिं अणियाणा ते वियाहिया (सू० ३००)

नस्तुतुं आ स्याद्वादरूप लक्षण वधा व्यवहारने अनुसरनारं कोइपण वरत न हणानारं (सर्वत्र जय पायेछं) भगवान महावीरे
 कहेछं है अथवा हवे पञ्चीतु कहेवानुं पण महावीर प्रभुए कहूं है.

तेओ केवा है उ०—केवलज्ञान होवाथी तेओ आशुप्रज्ञावाळा है अर्थात् तेओ सदा उपयोगवाळा है. प०—वन्नै उपयोग
 साथे है के ? उ०—नहीं. कारण के ज्ञान उपयोगथी जाणता, तथा दर्शन उपयोगथी देखता महावीर प्रभुए कळा है. तेवो धर्म
 एकांतवादीओए कळो नथी. अथवा शक्ति ते वाचानी है. एटले भाषा समिति जाणवी ते भगवान महावीरे कळा के दरेके भाषा

समिति राखवी. (विचारीने बोलवुं) अथवा अस्ति नास्ति ध्रुव अथुव विगेरे बोलनारा वादीओ वाद करवाने माटे तैयार थयेला जेओ ऋणसो तेसठनी संख्यावाळा हे. तेवा ऋणसो तेसठनी पतिज्ञा हेतु दृष्टांत उपन्यासना द्वारवडे भूलो वतावी तेमनुं गीतार्थ साधुए समाधान करवुं. अथवा वचननी गुप्ति साधुए राखवी तेहुं स्वरूप हु कहुं हुं. अने हवे पळी कहीश. ते वादीओ जे वाद करावा आवे तेमने आ प्रमाणे कहेवुं. जेम तमारा वथापां पण पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पतिनो आरंभ करवो, कराववो, अनुमोदवो एम संमति आपी हे. एथी बधी जग्याए आ पाप अनुष्ठान हे. एम अमारो मत हे. अर्थात् तमे ते हिंसाने पाप मानता नथी, पण जीवोने दुःस्वरूप होवाथी अमे तेमने जैनमत प्रमाणे पाप मानीए छीए. ते कहे हे.

‘तदेव’—आ पाप अनुष्ठान छोडीने हुं राहो हुं एज मारो विवेक हे. [जे बीजाने दुःख देवानुं छोडे हे, तेज पोते पापथी वचेलो हे. अने तेज धर्म कहेवाने योग्य छं] तेथी हुं वथाथी अपतिसिद्ध आस्वद्वारोवाळा साथे केवी रीते भाषण करूं. (जे जीवोने वचावया चाहे ते हिंसकोनी साथे केवी रीते वाद करी जके ?) तेथी वाद करवो दूर राहो. ए प्रमाणे असमनुज्ञ [असंमति] नो विवेक करे हे. प्र०—अन्य तीर्थिओ पापनी संमतिवाळा अज्ञानी मिथ्या दृष्टि चारित्र रहित अने अतपस्वी हे तेहुं केवी रीते मानो छो ? कारण के तेओ न खेडाएली भूमि उपर जे वन हे तेमां वास करनारा हे. कंदमुळ खानारा हे. अने झाड विगेरेना आश्रये रहेनारा हे अहीं जैनाचार्य कहे हे.

उ०—अरण्यवासथीज धर्म नथी पण जीव अजीवना संपूर्ण ज्ञानथी तथा तेमनी रक्षानां अनुष्ठान करवाथी धर्म हे अने तेओ धर्म तेमनामां नथी, तेथी तेओ असमनोज्ञ हे (उत्तम साधु नथी) वळी सारा माठानो विवेक जैमां होय ते धर्म हे अने तेओ धर्म

गाममां पण थाय अने अरण्यमां पण थाय पण धर्मतु निमित्त के धर्मनो आधार गाम के अरण्य नथी, जेथी भगवाने रहेवासने आश्रयी के बीजी रीततो आश्रय लहने धर्म बताव्यो नथी, तेमनुं कहेवुं ए छे के प्रथम जीवादि तत्वतुं ज्ञान मेळववुं अने सम्यग् अनुष्ठान करवां [के सर्व जीवोने अभयदान मळे ते धर्म छे.] ते धर्मने तमे बरोबर जाणो एवुं भगवान महावीरे कहुं छे. प०—भगवान केवा छे ? उ०—मनन ते बधा पदार्थोतुं परिज्ञान छे तेज मति छे अने ते मतिवाळा (केवलज्ञानी) भगवाने कहुं छे.

प०—केवो धर्म कह्यो छे ? उ०—याम ते महाव्रतो छे तेमां त्रण बताव्या छे. जीव हिंसा जुठ अने परिग्रह ते त्रणोनी त्याग ते याम छे. ते परिग्रहमां अदत्तादान अने मैथुन समाध्या छे माटे पांचने बदले त्रण संख्या कही छे. अथवा याम ते नय (उमर) नी अवस्था छे. जेपके आठ वरसथी त्रीस अने त्यास्थी साठ सुधी बीजी अने त्यारपळी त्रीजी एमां दिक्षा लेवाने अयोग्य एवा तहन नाता आठ वरसनी अंदरना अने छेकज बुढानो समावेश न कर्यो. (जुदा काढ्यो) अथवा जेनावडे संसार भ्रमण विगेरे दूर थाय ते याम ते ज्ञानदर्शन चारित्र छे. एम यामनो त्रण प्रकारे त्रणनी संख्यानो अर्थ कर्यो. (एटले महाव्रत पाळवां त्रण अवस्थायां धर्म करवो, अने रत्नत्रय ज्ञान विगेरे प्राप्त करवां)

जो आ प्रमाणे छे तो शुं करवुं. ते त्रण अवस्थायां अथवा ज्ञान विगेरेमां आर्य देशमां उत्पन्न थयेळा अथवा पाप धर्मो दूर करनारा बोध पायेळा चारित्र पाळवा तैयार थयेळा साधुओ छे. तेओ केवा छे.? ते बतावे छे.

जेओ क्रोध विगेरे दूर करीने शांत थयेळा छे अने पाप कर्ममां जेओ वासना राखता नथी तेज उत्तम साधुओ (मोक्षना अधिका-सीओ) छे. प०—तेओ कइ जग्याए पाप कर्ममां वासना रहित छे.? ते बतावे छे.!

उहं अहं तिरियं दिसासु सव्वओ सव्वावंति च णं पाडियकं जीवेहिं कम्मसमारम्भे णं तं परिज्जाय मेहावी नेव सयं एएहिं काएहिं दंडं समारंभिजा नेवन्ने एएहिं काएहिं दंडं समा-
रभाविजा नेवन्ने एएहिं काएहिं दंडं समारम्भतेऽवि समणुजाणेजा जेवऽन्ने एएहिं काएहिं
दंडं ससारम्भति तेसिंषि वय लजामो तं परिज्जाय मेहावी तं वा दंडं अन्नं वा नो दंडंभी
दंडं ससारमिज्जासि च्चिबेमि (सू० २०१) विमोक्षाध्ययनोद्देशकः ८-९ ॥

उंचे नांचे के तिरछी दिशाभां वथा प्रकारे जे जे दिशाभां छे अने च ब्रह्मदथी विदिशा [खुणा] छे, तेमां एकेन्द्रिय सूक्ष्म वादर विनेरेमां जे कर्मोतो समारंभ छे. अर्थात् जीवोने दुःख देवा रूप जे क्रियाओतो समारंभ (संसारो कृत्य) छे. ते वथा कर्म समारभने इ परिज्ञा वढे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञा वढे त्याग करवा.

प०—कोण त्याग करे. ? उ०—मर्यादांमां रहेळो बुद्धिमान साधु. प०—केवी रीते त्यागे ?

उ०—पोते पोताना आत्मार्थीन चौद भूतप्रापमां रहेळा पृथ्वीकाय विनेरे जीवोने दुःख रूप आरंभ न करे. पण वीजा पासे पण आरंभ न करावे. तेम आरंभ करनानी अनुमोदना न करे.

(सूत्रमां छट्टी विभक्ति छे. तेनो अर्थ जीजीमां लइए तो) ते हिंसाना करनारावोथी अमे शरमाइए टीए. एयो उत्तम विचार करीने साधु पोते मर्यादांमां रहींने तथा कर्मोतो समारंभ मोटा अनर्थ पाटे छे, एम जाणीने पोते ते कर्म समारंभ छोडे. तथा जुव

विशेरे दंडशी पोते डरे. तेशी दंडभीवाळो साधु जीवोने दुःख रय दंडनुं कंड पण कार्य न करे अर्थात् करवुं कराववुं अनुमोदवुं ते त्रण करण अने मन वचन काया ए त्रण योग छे. तेना वडे त्यागे, आ प्रमाणे सुधर्मस्वामि कहे छे.

पहेलो उद्देशो समाप्त.

ॐ

बीजो उद्देशो,

पहेलो उद्देशो कह्यो, हवे बीजो कहे छे तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां पाप रहित संयम पाळवा माटे कुशीळनो परित्याग बताव्यो आ परित्याग अकल्पनीयना परित्याग विना संपूर्णपणाने न पामे. माटे साधुने अकल्पनीयना परित्यागनो विषय बतावनार आ उद्देशो कहे छे. एना संबंधे आवेला उद्देशाहुं आ पहेलुं सूत्र छे.

से भिक्खु परिक्रमिज्ज वा चिडिज्ज वा निसाइज्ज वा तुयद्विज्ज वा सुसाणंसि वा सुत्तागारंसि वा गिरियुहंसि वा रत्तखमूलंसि वा कुमाराययणसि वा हुरत्था वा कहिचि विहरमाण तं भिक्खुं उच्चसंकमिच्चु गाहावई बूया-आउसंतो समाणा! अहं खलु तव अट्टाए असणं वा पाणं वा खइमं वा सइमं वा वरथं वा पडिगहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा पाणाइं भू-याइं जीवाइं सत्ताइं समारत्थ ससुद्धिस्स कीयं पामिच्चं अचिञ्जं अणिसइं अभिहडं आ-

हट्टु चेषमि आवसहं वा समुस्सिणोमि से भुंजह वसह, आउसंतो समणा ! भिक्खु तं गाहावइं समणसं सवथसं पडियाइक्खे—आउसंतो ? गाहावई नो खलु ते वयणं आटामि नो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्टाए असणं वा ४ वरथं ४ पाणाइं वा ४ सणारम्म समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अट्ठिज्जं अणिसट्ठं अभिहहं आहट्टु चेषमि आवसहं वा समुस्सिणोमि, से त्तिरओ आउसो गाहावई ? एयस्स अकरणयाए (सू० २०२)

सामायिक उच्चरेलो ते साधु सावध अनुष्ठान छोडकार्थी भंदर [मेरु] पर्वते चडवा समान पतिज्ञा करेलो भिक्षार्थी जीवन गुजारनार साधु—भिक्षा लेवा के बाजा कार्य माटे पराक्रम (विहार) करे, अथवा ध्यानमां लीन भइने उभो रहे, अथवा भणवुं भणावुं, अथवा सांभळवुं के संभळ्ळावुं होय त्यारे वेसे, तथा कोइ जग्याए मार्गमां याकतां आडो पडे (सुइ रहे) म०—आ वधुं कइ जग्याए करे ? ते वलावे छे—मशाण एट्ठे ज्यां मुट्टदां दाटे बाले ते स्थान, (जेनुं वीजुं नाम पितृवन) छे तेमां गुवाहुं संभवे नहि, माटे यथायोग्य ज्यां घटे, ते छेहुं, ते विचारतां गच्छ वासीओने ते मशाण विगेरे स्थान कल्पतां नथी, कारण के तेवा स्थानमां रही प्रमाद थलां व्यंतर विगेरेनो उपद्रव थाय छे, तथा जिनकल्पी मुनि थवानी सत्व भावनाने भावगार स्थविर कल्पी मुनिनं पण मशाणमां निवास करवानो संपति आपी नथी, पण प्रतिमाथारी मुनिने तो ज्यां सूर्य आथमे त्यांज रहेवानुं छे, तेजाने आश्रयी अथवा जिनकल्पी मुनिने आश्रयी प्रसाणहुं स्थान सूत्र प्रमाणे ज्या जनो संभव थाय, त्यां तं योजवुं. सूत्र्यागार

(उज्जड घरमां) रहे; अथवा, पर्वतनी गुफामां अथवा झाड नीचे अथवा, कुंभारनां स्थानमां अथवा, गामनी बहार कोइ पण जग्याए ते साधु कोइ बखत विहार करे; तेने घरनो मालिक आवीने साधुनी जग्यामां जहने बोले. जे बोले ते बतावे छे.

मसण विगेरे स्थानमां परिक्रमण निगेरे क्रियाने करता साधु पासे कोइ त्यां पहेलां उमो रहेल कोइ माणम स्वभावथी भद्रक जीव अथवा समकीत वारी श्रावक गृहस्थ होय, ते साधुना आचारमां अजाण होय; ते साधुने उद्देशीने कहे. आ आपेलो आहार खानारा छे. आरंभ छोडेला छे. अनुकंपा लाववा योग्य छे अने एट्छं छतां, तेओ सत्य शुचिवाळा (स्नान रहित) छे. माटे, एमने आपेछं अक्षय फल आपनार छे माटे, हुं तेमने दान आपीश. एम विचारीने साधु पासे आवे अने बोले. हे अगुल्मन ! हे माधु ! हुं संसारसमुद्र तरवानी इच्छावाळा तपारे माटे भोजन, पाणी खादिम, तथा स्वादिम वस्तु लाहुं; अथवा बख, पात्रां, कांबल, रजाहरण, विगेरे वनावीने लाहुं. अर्थात् आम कहीने ते गृहस्थ श्रुं करे ? ते कहे छे. पंचेन्द्रिय जेओ ध्याम ले छे, ते पाणीओ छे. तथा त्रणे काळमां थया, थाय छे अने थरो. ते भूत छे, तथा जीवता हता, जीवे छे, अने जीवरो; ते जीवो छे. तथा सुख दुःखमां सक्त छे ते सत्त्वो छे. तेमनो आरंभ करीने लावे; तेमां भोजन विगेरेना आरंभमां पाणीनुं उपमर्दन अवश्य थवानुं छे. आ गृहस्थोनुं कहेछं बधु अथवा थोडुं, कोइ साधु स्वीकारी छे. माटे खुलासो करे छे. आ अविशुद्धि कांठि लीथी छे ते बतावे छे.

आहा कम्मसुद्धिसिअ मीसज्जा वायरा य पाहुडिआ । पूइअ अज्झोयरगो उणमकोही अ छब्भेआ ॥ १ ॥

आथाकर्मो उद्देशीक मिश्र, अने बादर प्राथतिक पूति अने अश्व पूरक, उपद्रकोटी आ छ भेदो ते, अविशुद्धि कोटि छे.
(आ दशवैकालिक सूत्रनी पांचमा अध्यायनी निर्युक्तिनी गाथा छे. तेमां सूत्रवधुं के, जे कार्यामां जीवोने साक्षत हणे; ते

साधु निमित्ते थवाथी अविमुद्धि कोटि छे.) हवे, विशुद्धि कोटि बतावे छे. मूल्यथी लीथेछं, उधारे लीथेछं, छीनवी लीथेछं. जेम कोइ राजा गृहस्थ पासेथी साधुने आपवा माटे छीनवी छे. तथा पारकानुं बदले लीथेछं आहुं कोइ साधुने दान देवा माटे करे; तथा पोलानां घरथी साधुना सामे लावीने आपे; ते विशुद्ध कोटी छे. (आमां साक्षात् जीव हिंसा साधु माटे थती नथी. माटे, विशुद्ध कोटी) आ प्रमाणे साधुने आपवा कोइ बोले; तथा हुं तमारे माटे उपाप्रय वनावीश; अथवा सुधरावीश. एहुं बोले; अने ते गृहस्थ हाथ जोडीने माथुं नमावीने आहार विगेरेनी निमंत्रणा करे अने बोले हे साधु ! आ भोजन वापरो; मारां सुधारेलां घरमां रहो; ते वरवते साधु जे सूत्र अर्थनो भणेलो विद्वान होय; तेणे दीनतावाळुं मन न करतां तेने ना पाडवी; ते माटे गुरु शिष्यने कहे छे:—हे आयुष्मन् ! हे साधु ! हे भिक्षु ! ते गृहस्थ बुद्धिमान होय; मित्र होय; अथवा वीजो कोइ होय तेने साधुए केवो उत्तर आपवो ? ते बतावे छे, हे आयुष्मन् ! हे गृहस्थ ! तमारं ए वचन हुं स्वीकारतो नथी. ('खळु' अपिना अर्थमां छे, अने ते समुच्चयना अर्थमां छे.) मारे साधुनो आचार जे पाळवानो छे, तेनुं ज्ञान मने दोवाथी हुं स्वीकारं नहीं. हुं मारे माटे जीवोने दुःख देवा रूप भोजन विगेरे वनावे, अथवा उपाश्रय वनावे; तो मने ते कल्पे नहीं. कारण के, हे आयुष्मन् ! हे गृहपति ! तेवा आरंभ कराववा रूप अनुष्ठानथी हुं मुक्त थयेल छुं.

माटे जाणी जोहने हुं केवी रीते स्वीकारं ? माटे हुं स्वीकारतो नथी. आ प्रमाणे भोजन विगेरेना संस्कारनो साधुए निषेध कर्यो. पण जो, कोइ गृहस्थ प्रथमथी तेवो साधुनो अभिप्राय जाणीने छानुंज तेहुं भोजन, विगेरे करे अने साधुने आपे; तो पण, साधुए बुद्धि बळथी कोइ पण रीते जाणीने तेनो निषेध करवो ते बतावे छे.

से भिक्खु परिक्रमिज्जा वा जाव हुरथा वा कहिंवि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंक्रमित्तु गा-
हावई आयगयाए पेहाए असणं वा ४ वरथं वा ४ जाव आहट्टु चेएइ आवसहं वा समुत्तिस-
णाइ भिक्खु परिघासेउं, तं च भिक्खु जाणिज्जा सहसम्मइयाए परवागरणेणं अनेसिं वा
सुच्चा—अयं खलु गाहावई मम अट्टाए असणं वा ४ वरथ वा ४ जाव आवसहं वा समुत्तिस-
णाइ, तं च भिक्खु पडिलेहाए आगमिच्चा आणविज्जा अणासेवणाए त्तिवेमि (सु० २०३)

ते साधुने मसाण विगरेमां कोइ स्थाने विचरतां कोइ गृहस्थ मळतां ते हाथ जोडीने मकत्थी भद्र होय; ते मनमां विचारे के
हुं आ साधुने गुप्त रीते आरंभ करीने गोचरी विगरे आपीअ.

म०—गा माटे ? उ०—ते साधुने आहार करवा माटे आपीअ; अथवा, साधुओने रहेवा माटे मकान बनावी आपीअ. ते साधु माटे
बनावेल आहर विगरे दोषित छे एम साधु जाणी छे. म०—केवी रीते जाणे ? पोतानी ताण्ण बुद्धिथी अथवा, तीर्थङ्करे बतावेला
उपायोथी अथवा, बीजा माणसो एट्ठे, तेना नोकर चाकर विगरेने पूछीने जाणा छे के आ गृहस्थ मारे माटे आरंभ करीने आ-
हार विगरे अथवा, उपाश्रय आपे छे, आवु बीजा पासो साधु सांभळे तो, ते वातनी खात्री करीने ते साधु कहे के, आ अमारे माटे
बनावेछुं छे तेथी कल्पहुं नथी; माटे, हुं नहीं छुं. जो आवुं करनार श्रावक होय; तो, तेने टुंकाणमां पिंड निर्युक्तिहुं स्वरूप सम-
जावहुं. बीजा, भद्रक स्वभावना होय तो, तेने निर्दोष भोजनना दानहुं फळ बतावे; तथा गोचरीना सोळ उद्दम विगरे दोष बतावे;

तथा यथाशक्ति ते संबंधी धर्मकथा कहे छे:—

काले देशे कल्पं श्रद्धाशुक्तेन शुद्धमनसा च । सत्कृत्य चं दातव्यं दानं प्रयत्नात्मना सद्भ्यः ॥१॥

दानं सत्पुरुषेषु स्वल्पमपि गुणधिकेषु विनयेन । वटकणिकेव महान्तं न्यग्रोधं सत्फलं कुरुते ॥२॥

दुःखसमुद्रं पात्रास्तरन्ति पात्रार्पितेन दानेन । लघुनेव मकरनिलयं वणिजः सञ्चानपात्रेण ॥३॥

योग्य काल देशमां साधुने कल्पे तेवुं श्रद्धा सहित शुद्ध मनशी उद्यमवाळा थइने पासुक दान उत्तम साधुओने आपवुं (१)

उत्तम पुरुषो जे गुणमां अधिक छे, तेमने विनय वढे थोहुं पण, आपेछं दान मोहुं फळ आपे छे. जेम—वडनी कणिका नानी

छतां, वडनुं झाड सांरां फळवाळ वनावे छे. (२)

तीक्ष्ण बुद्धिवाळा पात्रमां योग्य दान आपीने दुःख समुद्रने तरे छे. जेम—मगरनां स्थानवाळो मोटो समुद्र होय; तेने वेपारीओ

नानां वहाण वढे तरी जाय छे. (३)

आ प्रमाणे सुधर्मस्वामि कहे छे, अने दवे पछीतुं पण तेओ कहे छे:—

भिकवुं च खलु पुट्टा वा अपुट्टा वा जे इमे आहञ्च गंथा वा कुसंति, से हंता हणह खणह

हिंदह दहह पयह आलुपह विळुंपह सहसाकरेह विष्परासुसह, ते फासे धीगे पुट्टो अहि-

यासए अदुवा आयारगोयरमाइक्वे, तक्रिया णमेणलिसं अदुवा वइयुत्तीए गोयरस अणुपु-

વેણ: સંમં પડિલેહણ આયતણુતે બુઠ્ઠિહિંણ્યં પવેइयं (સૂ૦ ૨૦૪)

(‘ચ’ સમુચ્ચયના અર્થમાં છે. ‘વહુ’ વાક્યની શોખા માટે છે.) તે ખિશાના આચારવાહા સાયુને કોइ કહે:—હે સાયુ ! હું તમારે માટે મોજન વિગેરે અથવા હપાશ્રય વિગેરે તૈયાર કરાવીશ; અથવા સુધરાવીશ. સાયુએ તેને સંમતિ ન આપી હોય; તો પણ, તે કરાવે; અને મીઠાં વચન, અથવા વહાત્કારથી હું સાયુ પાસે ગ્રહણ કરાવીશ એવું માને; અને વીજો કોइ મુહસ્થ સાયુના યોહા આચારને જાણતો હોય; તે પૂહ્યા વિનાજ છાતું કાર્ય કરે; અને વિચારે કે, હું તેમને મોજન વિગેરે આપીશ. હવે તે ન મોગવવાથી શ્રદ્ધાનો મંગ થવાથી અથવા, મધુર સેકહો વચનના આગ્રહથી, અથવા ક્રોધના આવેશથી નિશ્ચયથી સુલ્લ દુઃલ્લ પળે અવલોક જાણનારો આ સાયુ છે. એમ જાણીને પશ્ચાતાપ પૂર્વક રાજાની આજ્ઞા લઈને ન્યકાર ભાવના પામેલો દ્રેષી વનીને તે સાયુને મારે પણ સ્વરો તે વતાવે છે, અને એક વતાવવથી વળાનો આદેશ છે તેથી જોઓ આ પૂહીને અથવા વિના પૂહે આહાર વિગેરે લાવવામાં વણું દ્રવ્ય સ્વરચીને સાયુને અર્પણ કરે, અથવા દ્રવ્ય સ્વરચી વતાવેહું મોજન વિગેરે સાયુઓ ન છે; તો તેમને તે મુહસ્થ ક્રોધી વનીને પીહા કરે છે.

પ૦—કેવી રીતે ? હ૦—કહે છે. તે કોઈ વિગેરે ક્રોધી વનીને પોતે સાયુને મારે છે. અથવા, મારવા માટે વીજાને પ્રેરણા કરે છે, અને બોલે છે કે—આ સાયુને દંદા વિગેરેથી મારો; તથા એના હાથ પગ કાપીને વાપલ કરો; તથા અગ્નિ વિગેરેથી બોલો; તથા તેમના સાથલનું માંસ પકાવો; તેનાં વસ્ત્રો વિગેરે હુંટી લ્યો; તથા તેનું વયુંહીનવી લ્યો. એકદમ વયું પહાર વહે કરાવો; શીઘ્ર પંચત્વ (મરણ) પમાહો; તથા, દુઃલ્લ દેવાના જુદા જુદા વિચાર કરો; જુદી જુદી પીહાથી વાધા કરો. આ પ્રમાણે હુકમ કરવાથી તે સાયુને વીજાઓ અનેક પ્રકારે દુઃલ્લના સ્પર્શો કરે; તો પણ, ધીર વનીને તે ફરસોને ફરશી શાંતિથી સહન કરે. તથા વીજા ખૂલ્લ તરસ

विगेरेना परिषहो आवे; ते पण सहे; पण; परिषह उपसर्ग आवेथी कंटाकीने विकलवता (खेद) पापीने तेनो उद्देशिक विगेरे दोषित आहारनी अभिलाषा न करे; अथवा, सांत्वनाद (मीठां वचन) विगेरे अनुकूल उपसर्गोथी ललचावतां पण, अशुद्ध आहार न छे. जिनकल्पी मुनि तो आचार पाळे; पण, तेनाथी जुदो स्थविरकल्पी साधु पण सामर्थ्य होय; तो, पोतानो निर्दोष संयम पाळे. ते कहे:—जुदा जुदा उपसर्गोथी थती पीडाओने सहे; अथवा, साधुओना आचारनो विषय (अनुष्ठान) जे मूळ गुण उत्तरगुणना भेद संबंधी छे ते समजावे; पण, ते समये नयां वडे द्रव्य विचार समजावना न वेसे, तेमां पण, मूळ गुणोनी स्थैर्यता माटे उत्तर गुणाने (विशेष प्रकारे) समजावे; अने तेमां पिंडैषणानी विशुद्धि समजावे;अने आ स्थळे पिंडैषणा सूत्रोने समजाववां जोइए. वकी,कहेवुंके.

दत्त्वयमदुःखितं स्यान्न, न च परदुःखे निमित्त भूतमपि । केवलमुपग्रहकरं, धर्मकृततद् भवेद्वैयम् ॥१॥

जेथा, पोते दुःखां न थाय; तेम. बीजानां दुःखमां पोते निमित्तभूत पण न थाय. फक्त धर्म करवा माटे आश्रय आपनाहं निर्दोष भोजन विगेरे होय; तेज साधुओने आपवावुं छे.

शुं वथा पुरुषोने आ वधुं कहेवुं ? उ०—ना. आवनार पुरुष संबंधी विचार करीने कहेवुं के—आ पुरुष कोण छे ? फोने माने छे ? आग्रहवाळो के, आग्रह रहित छे ? मध्यस्थ छे ? भद्रक छे ? एम वधुं विचारीने यथाशक्ति कहे अने शक्ति होय; तो, पांच अवयव अथवा, बीजी रीते ए प्रसिद्ध करे के, स्वपक्षनी स्थापना थाय; अने पर पक्षनी योग्य रीते भूलो बतावी तेने सुधार. एवां अनन्य सदृश वचन कहे. पण साधु पोते सामर्थ्य रहित होय; अथवा, सामेनो माणस तत्त्वनी वात संभळावतां वधारे कोपे तेम होय, अथवा, अनुकूलनो प्रत्यनीक होय; तो वाक् गुप्ति (मौन) राखवी ते कहे छे. एटळे, साधु बुद्धिमान होय; अने सांभळनार इच्छा

राखे, तो, साधुनो निर्दोष संयम बतावचो, पण तेम न होय तो, मौन राखीने पोताना आत्मानुं हित विचारतो पिंड विशुद्धि विगोरे आचारना विषयने उद्दम दोष विगोरेथी दोषित छे के नहि ? एम वीजाथी पूछी लइने सम्यक् शुद्धि विचार, प०—केवो बनीने ? उ०—आरम गुप्त ते, सदा पोताना संयममां उपयोग राखनारो बनीने विचरे. आ मे नथी कहां तेहुं सुधर्मस्त्रापि कहे छे. 'बुद्धैः' ते कल्प्य अकल्प्यनी विधि जाणनारा तीर्थंकर विगोरेए उपर बतावेछुं कहुं छे. तथा हवे पळीतुं पण तेमनुं कहेछुं छे.

से समणुद्धे असमणुद्भस्स असमणं वा जाव नो पाइज्जा नो निमंतिज्जा नो कुज्जा वेयाव-
डियं परं आढायमाणे तिवेमि (सू० २०५)

फक्त, गृहस्थ अथवा कुशीलीया पासेथी अकल्प्य एम जाणीने आहार विगोरे न छे. तेमज, उत्तम साधु दीखा साधुने पूर्व बतावेछ आहार विगोरे पोते पण जे शुद्ध लावेछो होय ते न आप्पे; अथवा, तेवा पतितो बहु आदरमानथी आहार विगोरे आप्पे; अथवा वीजा रीते ललचावे; तो पण, तेमनी वैयावच्च न करे; त्यारे पोते केवो बने ? अने कोनी वैयावच्च करे ते कहे छे:—

धम्ममायाणह पवेइयं माहणेण मइमया समणुद्धे समणुद्भस्स असणं वा जाव कुज्जा वेया-
वडियं परं आढायमाणे (सू० २०६) तिवेमि ॥८—३॥

सुर कहे छे—हे शिष्यो ! तमे केवळी वर्द्धमान स्वामिण् कहेछा दान धर्मने जाणो, समनोइ साधु ते योग्य विहार करनारो होय ते अपर समनोइ चारित्रधारी संविप्र होय, समाचारीमां रही साथे गोचरी करतो होव, तेवाने अशन विगोरे चार प्रकारनो

आहार, वस्त्र पात्र विगोरे चार प्रकारतुं द्रव्य आपे, तथा ते आपवा माटे निमंत्रणा करे, अथवा पेशल वैयावच्च करे अर्थात् अंगम-
र्दन (चोळतुं चांपुतुं) विगोरे पण करे, पण एथी विरुद्ध आचारवाळा जे गृहस्थो कुतीर्थिओ पासल्याओ असंविग असमनोत्र साधुओ
होय, तेमने आपे नहि, परंतु समनोत्रनेज पोते आपे, तथा अतिशे आदर सत्कार करीने तथा ते वस्तु माटे सीदातो होय, अथवा
तपेळो होय, तो तेनी योग्य रीते वैयावच्च करे, आथी एम वतावुं, के गृहस्थ तथा कुशीलीया साधुनी वैयावच्च न करवी, आहार
विगोरे न आपवा. पण आटळुं विशेष छे, के गृहस्थ पासे जे कल्पनीय छे ते लेतुं अने अकल्पनीयनेज निषेध छे, पण असमनोत्र साधु
पासेथी तो सर्वथा लेवानो निषेध कर्यो. आ प्रमाणे सुधर्मस्वामी कहे छे. विमोक्ष अध्ययनमां बीजो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो

बीजो क्हा पळी बीजो उद्देशो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां अकल्पनीय आहार विगोरेनो निषेध क्हाओ.
तथा तेना निषेधथी अपमान मानीने कोइ कोष करीने मारवा तैयार थाय, तेने दान केवी रीते देवु ते यथावस्थित दान विधिनी
प्ररूपणा साधुए करवी, तेम आ उद्देशामां पण आहार विगोरे निमित्त माटे घरमां पेटेला साधुतुं अंग टंड विगोरेथी कंपतुं देखीने
गृहस्थने उलटुं सप्रजाय के आ साधु काम चेष्टादिना कारणे धूजे छे, तेवा गृहस्थने यथावस्थित स्वरूप वतावीने गीतार्थ साधुए तेनी
खोटी शंका दूर करवी. आ प्रमाणे आवा संबंधे आवेला उद्देशांतुं स्रजानुगममां स्रज उच्चारतुं जोइए ते कहे छे.

मद्भिर्मेणां वयसावि एगे संबुद्धमाणा समुद्दिता, सुखा मेहावी वयषां पंडियाणां निसामिथा

स्मियाए धम्मे अरिण्हिं पवेइए ते अणवकंखमाणा अणइवाएमाणा अपरिगहेमाणा नो परिगहावती सवावति चणं लोगंसि निहाय दंडं पाणेहिं पावं कम्मं अकुवमाणे एस्स महं अंगथे वियाहिण्ण, ओए जुइमस्स खेयन्ने उववायं चवणं च नञ्जा (सू० २०७)

अहीं त्रण अवस्थाओ छे. जुधानी मध्यम वय, अने वृद्धावस्था छे, तेषां मध्यम वयवाळो परिपक्व (स्थिर) बुद्धिवाळो होवाथी धर्मने योग्य छे, ते प्रथम बतावे छे, केटलाक मध्यम वयमां बोधपामेला धर्म चरण माटे तैयार भएला ते समुत्थिन जाणवा. जो के युवावस्था के वृद्धावस्थायां दीक्षा लेनारा होय छे, लतां पण, वाहुल्यताथी तथा प्राये मध्यम अवस्थायां भोग तथा कुतूहलनी इच्छा दूर भयेल होवाथी अविद्रापणे धर्मनो अधिकारी भाय छे. माटे मध्यम वय लीथी छे.

प०—केवी रीते बोध पामेला तैयार भया छे ? उ०—कहे छे. अहीं त्रण प्रकारना बोध पामनारा जाणवा. (१) स्वयं बुद्ध दूर भयेल होवाथी अविद्रापणे धर्मनो अधिकारी भाय छे. माटे मध्यम वय लीथी छे. अहीं त्रण प्रकारना बोध पामनारा जाणवा. (१) स्वयं बुद्ध प०—केवी रीते बोध पामेला तैयार भया छे ? उ०—कहे छे. अहीं त्रण प्रकारना बोध पामनारा जाणवा. (१) स्वयं बुद्ध

(२) प्रत्येक बुद्ध, (३) बुद्धबोधित. ते त्रणमां अहीं बुद्धबोधितनो अधिकार छे, ते कहे छे. 'मेयावी' ते मर्यादायां रहेल बुद्धिमान साधु पंडितो (तीर्थङ्कर) विगोरेतुं हित ग्रहण करतुं; अहित छोडतुं; ए वचन प्रथम सांभळीने पळी विचारीने समताने धारण करे. प०—शा माटे ? उ०—कारण के समता एटले मध्यस्थपणुं धारीने आर्य तीर्थंकर विगोरे ए प्रकर्षथी श्रुति चारित्ररूप धर्म कहे छे. अने मध्यम वयमां तेमणे धर्म सांभळीने बोध पामीने चारित्र लेवा तैयार भयेला छे. ते शुक्रे ते कहे छे. तेओ दीक्षा लहने मोक्ष तरफ प्रयाण करी काम भोगोने त्यागी तथा जीवोने दुःख न दहने परिग्रहने धारण न करता विचरे. (पहेळं डेहेंडं

लेवाथी वचलां त्रण आवे छे.) तेथी जुड न वोळता चोरिने त्यागी ब्रह्मचर्य पाळता विचरे एवा साधुओ पोताना देहमां पण ममत्व त्यागे छे. एमज वथा लोकने विषे कोइपण जातनो परिग्रह तेओ राखता नथी. (च समुच्चयना अर्थमां छे. अने ते भिन्न क्रम वतावे छे. णं वाक्यनी शोभा माटे छे.) वळी माणीओने दंडे ते दंड छे. अने ते दंड बीजा जीवने परिताप करनार छे. ते दंडने प्राणी तरफ अथवा प्राणी विषे. नांखवाथी पाप थाय कर्म वंधाय तेथी ते पाप रूप कर्म ते अढार प्रकारनुं छे. तेने पोते उत्तम साधु आचरतो नथी. तथा वाह्य अभ्यन्तर ग्रन्थ छे तेने त्यागवाथी तेवा साधुने तीर्थङ्कर गणधर विगेरेए अप्रंथ (निर्ग्रन्थ) कहाे छे.

प०—आवो कोण थाय ? उ०—‘ओजः ते अद्वितीय एटले रागद्वेष रहित होय छे. तथा द्युतिवाळो एटले संयम अथवा मोक्ष छे तेना खेदने जाणनारो छे. अने ते निष्ण होवाथी देवलोकरमां पण उपपात च्यवन छे. एम जाणीने विचारे छे के वधां संसारी स्थान अनित्य छे. एवी बुद्धिथी पोते पाप कर्मने वर्जनारो थाय छे. केटलाक पुरुषो तो मध्यम वयमां पण चारित्र लीवेळा परिषह तथा इन्द्रियोथी ज्ञानता पामे छे. ते वतावे छे.

आहारोवचया देहा परीसहप भंगुरा पासह एगे सविदिष्टहिं परिगिलायमणेहिं (सू० २०८)

आहारथी उपचय थाय ते आहारोपचय छे.

प०—ते कोण छे ? उ०—देहो छे. ते देहो आहारना अभावमां झांखात्र लावे छे अथवा ते नाश पामे छे. ते प्रमाणे परिषहो आवेथी भंगुर छे. तेथी आहारथी देहो पुष्ट थाय छातां पण परिषहो आवतां अथवा वायु विगेरेना अटकावथी ज्ञानी पामे छे. एटले गुरु शिष्यने कहे छे. हे शिष्यो तमे जुओ के केउलाक वधी इन्द्रयो झांखी पडतां कलीवताने पामे छे. ते वतावे छे. भूवथी

पीडाएलो देखतो नथी, सांभळतो नथी, सुंघतो नथी, विगेरे जाणवुं; तेमां आहार विना केवळीतुं पण शरीर जलान भाव पांमे' छे. तो ते सिवायना बीजा जे स्वभावथीज भंगुर शरीरवाळा छे तेतुं शुं कहेवुं ?

प०—केवळी विनाना साधुओ अकृतार्थ छे, अने शुधा वेदनीयनो सद्भाव छे, तेथी तेओ आहार करे छे अने दया विगेरे महाज्रतो पाळे छे ए मानवुं टीक छे पण, केवळी तो नियमथी मोक्षमां जनार छे. त्यारे शा मादे शरीरने धारे छे ? अने ते धारण करवा शुं काम स्वाय छे ?

उ०—तेने पण, चार अघाति कर्मनो सद्भाव छे. तेथी एकांतथी कृतार्थता नथी, अने तेनी स्वातर शरीर धारे छे ! अने आहार विना तेतुं धारण न थाय; तथा तेमने शुधावेदनीय कर्मनो सद्भाव छे माटे स्वाय छे. ते कहे छे:—वेदनीयना सद्भावथी तेना करेला ११ परिसहो पण, केवळी ने ओजा के वधा परिषहो उदयमां आवे छे तेथी केवळी पण स्वाय छे. ए सिद्ध थयुं; अने तेथीज आहार विना इन्द्रियोनी जलानता छे एम वतावुं. आ प्रमाणे तत्त्वने जाणनारो परिसहथी पीडानो होय, जतां पण शुं करे ते कहे छे:—

ओए दयं दयइ, जे संनिहाणसरथरस खेयन्ने से भिक्खु कालन्ने बलन्ने मायन्ने खणन्ने
विणयन्ने समयन्ने धरिगहं असमायमाणे कालेणुट्टाइ अपडिन्ने दुहओ छित्ता निथाइं (सू० ३०९)

ओज—ते एकलो रागद्वेष रहित बनीने भूख तरसनी परिषह आवे जते पण, दया (कृपा) पाळे (धारण करे) पण परिषहथी पीडातां दया छोडी न दे. प०—क्यो पुरुष दयाने पाळे छे ? उ०—जे लघुकर्मा होय ते. जेनावडे सम्यक् रीते नारकी विगेरे

गतिमां रखाय ते) संनिधान कर्म छे, तेना स्वरूपने जणावनार शास्त्र छे, तेनां निपुण खेदज्ञ छे, अर्थां संनिधान कर्म छे, तेनुं शस्त्र संयम छे, तेना खेदने जाणनारो छे. अर्थात् संयमक् संयमनो जाणनारो छे अने जे संयमनी विधि जाणनारो छे, ते भिक्षु कालज्ञ ते उचित अनुचित अवसरनो ज्ञाण छे आ वधां सूत्रोनो अर्थ 'लोक विजय' नामना वीजा अध्ययना पांचमा उद्देशामां वता-
बेल होवाथी त्यांथी जाणी लेबुं; तथा बलज्ञ, मात्रज्ञ क्षणज्ञ, विनयज्ञ, समयज्ञ, वधी वावतमां निपुण साधु परिग्रहनो ममत्व त्यांणीने कालमां उत्थायी तथा अपतिज्ञ (कदाग्रह रहित) वनीने उभयथी (द्रव्य भावथी) मयताने छेदनारो वनीने ते साधु संयम अनुष्ठानमां निश्चयथी वर्त्ते; तेने संयमअनुष्ठानमां वर्त्ततां शुं थाय? ते कहे छे:—

तं भिक्खु सीयफासपरिवेवमाणकायं उवसंक्रमिता गाहावई बूया आउसंतो समणा ! नो

खल्लु ते गामधम्मा—उवाहंति ? आउसंतो गाहावई ! नो खल्लु मम गामधम्मा उवाहंति, सीय फासं च नो खल्लु अहं संचाएमि अहिंयासितए, नो खल्लु मे कएइ अजाणकायं उज्जालितए वा (पज्जालितए वा) कायं आयावितए वा पयावितए वा अन्नेसिं वा वयणाओ, सिया स एवं वयंतस्स परोअगणिकाय उज्जालित्ता कायं आयाविजवा, पायविज वा, तं च भिक्खु—पडिलेहाए आगमिता आणविजा अणासेवणाए त्तिवेमि [सू० २१०] ॥ ८-३॥

अंतप्रांत आहारथी तेज रहित बनेला निष्किचन तथा भिक्षाथी निर्वाह करनारा साधुने गरम अवस्थानी युवानी जतां योग्य

वख ठंड. रोकवा जोइए; ते न मळवाथी ठंडथी कंपता शरीरवाळाने नजीक गृहस्थ मळतां शुं थाय ? ते कहे छे:—ते गृहस्थ ऐश्वर्यनी गरमीथी अहंकारी छे. कस्तुरीथी छेप कर्यो छे. उत्तम जातिना केसरना जाडा रसथी गात्र लीपेछुं छे. मीन मद आगुरु घन सार धूपित रंछिकाथी छेपेला शरीरवाळो छे.अने जुवान सुंदरीओना संदोहथी वींटायेळो छे.अने शीत स्पर्शानो अनुभव जेने नाश पाप्यो छे तेवो शेदीयो तेवा कंपता मुनिने जोइ विचार के आ मुनि मारी-सुंदर स्त्रीओ जे देवांगनानी रूप संपदाने हसी काढे छे, तेने जोइने सात्त्विक भावने पापेळो धूजे छे के ठंडना लीधे? आवी रीते शंकामां पढेळो शेट बांळे, के हे आयुष्मन् ! हे श्रमण ! पोताना आत्मानी कुलीनताने प्रकट करतो प्रतिषेध द्वारावडे पूछे छे के तमने शुं इन्द्रियोनी उन्मत्तता दुःख दे छे ? आहुं गृहस्थ पूछे तो तेनो अभिप्राय जाणीने साधुए कहेवुं, के आ गृहस्थने पोताना आत्माना अनुभव वडे अंगना (स्त्री)ना अवलोकनना प्रकट करेल भावथी खोटी शंका थइ छे, तो हुं तेनी शंका दूर करं आहुं विचारी साधु बोळे हे आयुष्मन् ! हे गृहस्थ ! मने इन्द्रियोनी उन्मत्तता नथीज बाधती; पण, तमे मारं शरीर जे, कंपतुं जोयुं छे, ते फक्त ठंडतुंज कारण छे' पण ते कायदेवनो विकार नथी. अति ठंडनो स्पर्श सहन करवाने हुं शक्तियान नथी. आ प्रमाणे साधु बोळे त्यारे, ते गृहस्थ भक्ति अने करुणा रसथी भिंजायला हृदयवाळो बनीने कहे के:—शीघ्र ठंड उडाडनार सारा वळेला अग्निने केप्र सेवतो नथी ? मुनि कहे:—मने अग्निकाय सेववो कल्पतो नथी; तथा सळगाववो पण कल्पतो नथी; तथा कोइए सळगावेलो होय तो, त्यां थोडो घणो ताप लेवो पण मने कल्पतो तथा; तेम वीजनां वचनथी पण, एम करवुं मने कल्पतुं नथी; अथवा वीजाने अग्नि वाळवानुं कहेवुं पण मने कल्पतुं नथी. ते साधुने आहुं बोळतो जाणीने ते गृहस्थ कदाच आहुं करे ते कहे छे:—

ते गृहस्थ आहुं मुनि पासे सांभळीने (पोतानी भक्तिथी) अग्नि सळगावीने भडको करीने साधुनी कापाने थोडी अथवा घणी तपावे, ते अग्नि सळगावचो मुनि देखे, ते पोतानी सुबुद्धिथी अथवा तीर्थङ्करना वंचनोथी अथवा बीजा पासे तत्त्व समजीने ते गृहस्थने समजावे के आ अग्नि सेवचो मने कल्पतो नथी, पण तमे साधु उपर भक्ति अने अनुकम्पणथी पुण्यचो समूह उपार्जन कर्यो छे.

आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. बीजो उद्देशो समाप्त थयो.



चोथो उद्देशो

बीजो कला पळी चोथो कहे छे. तेचो संबन्ध आ प्रमाणे छे, गया उद्देशापां गोचरी गयेला साधुने ठंडथी शरीर कंपतां गृहस्थने खोडी शंका थाय, तो साधुए दूर करवी, पण जो गृहस्थना अभावपां जुवान स्त्रीने साधुना उपर काम वेष्टानी खोटी शंका थाय, अने कुचालनी इच्छाथी स्पर्श करवा आवे, तो गळे फांसो खाडने अथवा गार्ध पृष्ठ विगरे आपघातनुं मरण पण स्वीकारतुं (पण खोडु काम करवुं नहिं) आहुं उपसर्गनुं कारण न होय तो आपघात न करचो, ते वतावना आ उद्देशो कहे आ संबन्धे आ-वेला उद्देशाहुं आ पहेळुं सूत्र छे.

जे भिक्खु तिहिं वरथेहिं परिवुसिए पायचउरथेहिं तस्स णं नो एवं भवइ-चउरथं वरथं जाइ-स्सामि, से अहेसणिजाइं वरथाइं जाइजा अपरिगहिथाइं वरथाइं धादिजा; नो थोइजा नो

धोयरत्ताइं वरथाइं धारिजा, अपलिओवमाणे गामंतरेसु ओमचेलिए, एयं खु वरथधारिसस

सामगियं (सू० २११)

अहीं प्रतिमा धारी अथवा जिनकल्पी जे अछिद्र हाथ (खडिध) बाळो मुनि जाणवो; कारणके, तेनेज पात्र नियोगे मुक्त पात्र, तथा कल्पत्रय (वस्त्रनी) आवी ओष उपधि होय छे, तेने औपग्रहिक (संघारीउं विगेरे) उपधि होती नथी; तेमां ठंडमां शिशिर विगेरे ऋतुमां क्षौमिक (सूत्रनां) वे कपडां (२॥) हाथ लांवां पहोळां होय छे, अने त्रीळुं उनतुं होय छे, तेवा मुनिने ठंड विशेष होय; तो पण, ते साधु वीळुं कपडुं इच्छतो नथी ते बतावे छे. जे प्रिष्ठु त्रण कपडांथी निर्वाह करनारो छे, ते ठंडमां एक कपडुं ओढे छे. जो ठंड वधारे लागे; अने सहन न थाय तो, वीळुं ओढे. ते वन्नेथी पण, घणी ठंडना लीधे न सहाय तो, त्रीळुं उनतुं कपडुं पण ते वन्ने उपर ओढे छे. उनना कपडाने बहारना भागमां सर्वथा राखवुं; अंदर तो, सूत्रनुज राखवुं. ए त्रण वस्त्रो केवां छे ? ते बतावे छे. 'पात्र चतुर्थः' पडता आहारने न पडवा दे ते पात्र छे, अने ते पात्र ना लेवाथी पात्रनो नियोगे सात प्रकारनो पण लीयो जाणवो कारण के तेना विना पात्र लेवाय नहीं. ते आ प्रमाणे छे:—

पतं पताबन्धो, पायद्वयणं च पायकेसरिआ । पडलाइ रयताणं च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥ १ ॥

[१] पात्र [२] पालातुं बन्ध [३] पात्रानु स्थापन (४) पात्र केशरिका (पूजणी) (५) पडला (६) रज स्त्राण [७] गुच्छओ आ सात पात्रानो नियोग छे. आ प्रमाणे सात प्रकारनो पात्र नियोग तथा कल्प त्रण, तथा रजोहरण [ओयो] मुखवस्त्रिका (मुहपत्ति)

ए पांच मेळवतां वार प्रकारनी उपधि छे. आ वार प्रकारनी उपधि धारण करुनारने आवो विचार न थाय, के मने आ ठन्डी स्तुमां त्रण वस्तोथी ठन्ड दूर थती नथी, माटे चोथुं वख हूं याची लावुं. आम अध्यवसायनो निषेध करवाथी याचवुं तो दूरथीज काढी नारवुं. जो त्रण कल्प न होय, अने ठन्डी स्तु आवी पहेंची, तो आ जिन कल्पी विगोरे मुनि यथा एषणीय [निर्दोष] वस्तोनी याचन करे. उत्कर्षण अपकर्षण रहित अपरि कर्माळां याचे तेमां [१] उद्दिष्ट, [२] पहे, (३) अंतर, [४] उच्चियथम्मा ए चार वखनी एषणा छे, तेमां पाडली वेनो अग्रह छे, बाकीनी वे लेवाय छे, तेमां कोइपण एकनो अभिग्रह होय छे. याचना करतां शुद्ध वस्तो मळे, तो ले अने जेवां लीधां तेवांज पहेरे, पण, तेने उत्कर्षण के थोवुं विगोरे परिकर्म न करे तेज वतावे छे. अचित्त जळ वदे पण न थुए स्थविर कल्पीने तो वर्षाद आव्या पहेला अथवा मंदवाडमां अचित्त पाणीथी यतनाथी थोवानी अनुज्ञा (संमति) छे, पण जिनकल्पीने तेम थोवुं न कल्पे, तेम प्रथम थोइने पळी रंगोलां कपडां होय ते पण न पहेरे, तथा बीजा गामे जातां वख संताड्या विना चाले, अर्थात् अंत प्रांत (तदन सादां जीर्ण जेवां) वख धारे; के तेने चोरानाना डरथी टांकी राखवां न पदे तेथीज जिनकल्पी मुनि अवम चेलिक छे; तेने चेल (वख) प्रमाणथी तथा मूळथी अवम [ओळी कींमतवुं] होय; तेथी अवम चेलिक छे; ('सु' अवधारणना अर्थमां छे,) आ प्रमाणे वखधारी जिनकल्पी मुनिने त्रिकल्पवाळी अथवा वार प्रकारनी ओष उपधिवाळी सामग्री होय छे. पण बीजी उपधि न होय; अने ठन्ड दूर थतां ते वस्तो पण त्यजी देवानां छे, ते वतावे छे.

अह पुण एवं जाणिजा-उवाइकंते खलु हेमंते गिरहे पडिवन्ने अहापरिजुनाइं वरथाइं परिट्ट-

विजा अदुवा संतरुतरे अदुवा ओमचेले अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले (सू० २१६)

जो, ते वखो बीजा शीयाळा सुधी चाले तेवां होय, तो वन्ने वखते पडिलेहणा करी धारण करे; अथवा, पासे राखे पण जो जीर्ण जेवां थइ गयां होय तेवुं जाणे तो, ते त्यजी दे ते आ सख बडे बतावे छे. पछी ते साधु एम जाणे के, निशे हवे हेमंत ऋतु [शीयाळो] गयो; अने उनाळो आठ्यो छे. ठंड पण दूर थइ छे, अने आ वखो पण जीर्ण थइ गयां छे. एवुं जाणीने ते वखो त्याग करे. जो वधां जीर्ण थरैलां न होय; तो जे जे जीर्ण होय ते गरठवी दे, अने त्यागीने निःसंग थइने विचरे. पण जो शिथिर (पोथ माघ) वीत्या पछी कोइ क्षेत्र काल के पुरखने आश्रयी शीत (ठन्डी) वधारे लागती होय तो शुं करवुं ? ते कहे छेः—शीत जतां वखो त्यागवां अथवा क्षेत्रादिना गुणथी हिम पडनारो वायरो ठन्डो वाय तो, आत्मानी तुलना तथा ठन्डनी परीक्षा करवा सा-न्तर उत्तर वखवाळो थाय. अर्थात् तेमांथी कांइक तो ओढे; कांइक बाजुए राखे पण, ठन्डनी शंकाथी त्यजी न दे. अथवा अवम चेल [ओडां वखवाळो] ते एक कल्पना त्यागवाथी वे वख धारण करे, अने धीरे धीरे ठन्ड जतां बीजुं वख पण दूर करे, तेथी एक साडो (चादर) थी शरीर ढांकनारो वने, अथवा तहन शीतलो अभाव थाय तो ते पण त्यजी दे, अने पोते अचेल (वख रहित) वने एटले तेनी पासे मात्र सुहपति अने रजोहरण (ओयो) ए वेज मात्र उपधि रहे.

प्र०—ए एक वख पण शा माटे त्यजी दे ? ते कहे छे.

लाघवियं आगममाणे, तंवे से अभिसमन्नागए भवइ (सू० २१३)

लघुनो भाव लावव जेने होय ते लावविक छे, तेवी लावविक (लघुता) नें पोते धारण करावा एक पण वख त्यजी दे, अथवा शरीर अने उपकरणना कर्ममां लावव पणाने पापीने वख त्याग करे, तेवा त्यागीने शुं थाय ? ते कहे छे. ते वखनो परित्याग करनार साधुने तपनी प्राप्ति थाय छे. कारण के कायाने कलेश आपवो ते पण बाह्य तपनो भेद छे. कहुं छे के:—

“ पंचहिं टाणेहिं सन्नगाणं निगंधाणं अचेल गते पसत्ये भवति तंजहा, ! अप्पा पडिछेहा १
वेसासिए खवे २ तवे अणुमए ३ लाववे पसत्ये ४ विडले इन्द्रियनिगहे ५ ”

पंच कारणे साधु निर्गथने अचेलकपणुं प्रशंसवा योग्य छे. [१] अल्पपडिछेहणा (२) विधासवाळं रूप. (३) तपनी अनुमति [४] प्रशस्त लावव, [५] अतिशे इन्द्रियनो निग्रह आ जिनेश्वरे कहुं छे ते बतावे छे:—

जमेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा । सवओ सवत्ताए समत्तमेव सममि जाणिजा [सू० २१४]

आ वधु वीर वर्द्धमान स्वामीए कहेळुं छे एम जाणीने बधा प्रकारोथी सर्व आत्माथी सम्यक्त्व अथवा समत्वपणुं धारे, अर्थात् सचेल अचेल अवस्थानी तुलनाने पोते जाणे, अने आ सेवन परिज्ञाथी पालन करे; पण जे साधुनी शक्ति तेवी न होय, तो ते प्रभुनो मार्ग वरोवर न जाणी शके, तो ते साधु हवे जे बतावे छे, तेवा अध्यवसायवाळो थाय ते कहे छे.

जस्स पां भिक्खुस्स एवं भवइ-पुट्टो खलु अहमंसि नालमहमंसि सीयफासं अहियासितए,से
वसुमं सवसमत्तागाय पत्ताणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणयाए आउडे तवस्सिणा हु तं सेयं जमेगे

विहमाइए तत्थावि तरस कालपरियाए सेऽवि तरथ विअंतिकारए, इच्चेंयं विमोहायतणं

हियं सुहं खमं निस्सेसं आणुगामियं त्तिवेमि [सू० २१५] ८-११ । विमोक्षाध्ययने चतुर्थे उद्देशकः॥

(णं वाक्यनी शोभा माटे छे) जे भिक्षुने मंद संहनना कारणे आवो अध्यवसाय थाय, के हु रोग आतंकथी अथवा ठन्ड विगे-
रेना कारणे अथवा स्त्री विगेरेना उपसर्गथी मारं आ शरीर त्यागवुं ते श्रेय छे, पण ठन्ड विगेरेहुं दुःख के भाव ठन्ड ते स्त्री विगे-
रेनो उपसर्ग सहन करावा हुं शक्तिवान नथी; तेथी, मारे भक्तपरिज्ञा इंगित मरण अथवा पादप उपगमन उत्सर्गथी मरण करावा
योग्य छे. पण, मारे आ अवसरे तेहुं करावुं वनी शर्के तेहुं नथी. कारण के, तेमां अमुक समय सुधी काल क्षेप करवो जोइए. ते उपसर्ग
माराथी सहन थाय तेम नथी; अथवा, रोगथी वेदना यणो काल सहैवाने हुं शक्तिमान नथी. तो मारे हमणा अपवादहुं वेदान्तस
अथवा गार्हप्युष्ट मरण स्वीकारवुं योग्य छे. पण, जे उपसर्गथी पीडायलोहोय ते पाप सेववुं तेने योग्य नथी तेहुं बताववा कहे छे:-
'स' ते साधुने वसु-द्रव्य (संगम) छे, ते संगमवाळो होय ते वसुमात् छे. तेने अनुक्रमे सिद्धांतहुं ज्ञान प्राप्त थवा उत्तां, कोइ
स्त्रीना कटाक्षनो उपसर्ग संभव यतां पण. ते न सेववाथी 'आहतो' (आ समंतात् व्यवस्थित चारे वाजुथी मर्यादायां रहेलो ते)
आहत छे, अथवा नाधु विगेरेथी थयेल ठन्डो सर्प जे दुःख आपनार छे, तेनी चिकित्सा न करवाथी वसुमान् सिद्धांतथां प्राप्त करेले
ज्ञानवाला आत्मा वडे व्यवस्थित छे, तेवो उपसर्ग आवतां वाधु विगेरेनी ठन्डी वेदनाने सहन न करी शकवाथी थुं करे ? ते कहे
छे. ('हु' अव्यय हेतुना अर्थमां छे.) जेथी, यणो काल वाधु विगेरेनी ठन्डी वेदनाने सहन न करी शकवाथी अथवा, जे कारणथी

शुभा स्त्री उपसर्ग करवा आवेत्ती छे, ते विष भक्षणथी के, फांसो खाइने मरवानुं बताव्या छतां पण न मुके; तेथी, ते तपस्वीए घणो काल जुदा जुदा उपायो वडे करेली तपस्याना धनवाळा साधुने मरवुं तेज श्रेय छे, जेमके कोइ साधुने तेना सगांए स्त्रीवाळा ओर-डामां मवेश कराव्यो, अने प्रेमवाळी पत्नीए घणीवर पार्थना कर्यां छतां साधुए धैर्य राख्युं. पण अंते नीकलवानो बीजो उपाय न जोवाथी फांसो खाथो, तेम फांसो खावा माटे उंचे लडकवुं, अथवा विष भक्षण करवुं, अथवा उंचेथी पडवुं, तेज प्रमाणे घणो काल ठन्ड विगेरे सहन न थवाथी सुदर्शन माफक माण त्यागवा. शंका—फांसो खावो विगेरे बाळ मरण छे, अने ते अनर्थ माटे छे, त्यारे तेनो केवी रीते तमे उपदेश कर्यो ? कारण के सिद्धांतमां कहुं छे के:—

“ इक्षेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहि नेरइयभवणहणेहि अप्पाणं संजोएइ जाव

अणाइयं चणं अणवयणं चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो भुज्जो परिचइइत्ति ”

उ०—आ दोष अमारो अर्हत (जिनेभर) ना मतमां नथी, कारण के कइपण एकांतथी निषेध कर्यो छे, के स्वीकारुं छे, तेवुं नथी फक्त एक मैथुनमां जुहुं छे; अने सिवाय दरेकमां द्रव्य क्षेत्र काल भावने आश्रयीने जे प्रथम निषेध कर्यो हतो, तेज स्वीकाराय छे, उत्सर्ग मार्ग पण कोइ बरवत अणुण (नुकसान) माटे छे अने अपवाद पण गुणने माटे काल [समय] जाणनारा साधुने थाय छे, तेज बतावे छे. दीर्घ काल संयम पाळीने संछेखना विधि ए कालना पर्यायवडे भक्तपरिज्ञा विगेरेतुं मरण गुणने माटे छे, अने स्त्री विगेरेना उपसर्गमां वेहानस गार्थपुष्ट विगेरेथी मरण थाय तेमां काल पर्यायज छे. अर्थात् जेवी रीते भक्त परिज्ञा विगेरेतुं मरण गुणवाळुं छे, तेम आ काल पर्यायना मरण जेवुं वेहानस विगेरे मरण लाभदायी छे. घणा काल पर्यायमां जेटळुं

कर्म आसाधु खपावे छे, तेटहुंज आवा समयमां थोडा कालमां कर्म क्षय करी नाखे छे ते बतावे छे. 'सोऽपि' वेदानस विगेरेथी मर-
नारो पण फक्त भक्त परिज्ञा विगेरे करनारो नहि पण आ साधु वेदानस विगेरे मरणमां ('विंशति कारणति') विशेष प्रकारे अन्त-
क्रिया करनारो ते व्यक्तिकारक छे तेवाने तेवा समयमां वेदानसादि मरण उत्सर्गज मार्ग छे. कारणके, आहुं अकाल मरण जे
अपवाद रूप छे, तेना वडै मरेला अनन्ता सिद्धो पूर्वे थया अने थरो. उपसंहार करवा कहे छे के, आ उपर बतावेछ
वेदानस विगेरे मरण मोह दूर थयेला साधुओनी कर्तव्यताथी आयतन [आश्रय] छे अने अणाय दूर करतुं होवाथी हित छे.
जन्मांतरमां पण सुख आपनार होवाथी सुख छे. तथा काल आवेलो होवाथी क्षम (युक्त) छे. तथा, कर्म क्षय करनार होवाथी
निःश्रेयस छे. तथा, पुण्यनो अनुगम उपार्जन करवाथी आनुगमिक छे, आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे:—

चोथो उदेशो समाप्त.



पांचमो उदेशो

चोथो उदेशो कहीने हवे पांचमो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबन्ध छे गया उदेशामां गार्थपृष्ठ विगेरे बालमरण बतावुं पण
आ उदेशामां तो तेथी उलटुं भक्तपरिज्ञानामनुं मरण ग्लान भाव पामेला साधुए स्वीकारवुं ते कहे छे. तेथी आ संबन्धे आवेला
उदेशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

जे भिक्खु दोहिं वरथेहिं परिवुसिए पायतइएहिं तस्स णं नो एवं भवइ तइयं वरथं जाइ-
स्सामि, से अहेसणिजाइं वरथाइ जाइजा जाव एवं खु तस्स भिक्खुस्स सामणिगं, अह पुण
एवं जाणिजा—उवाइकंते खलु हेमंते निम्हे पडिवणे, अहापरिजुत्ताइं वरथाइं परिट्टविजा,
अहापरिजुत्ताइं परिट्टविता अद्दुवा संतरत्तरे अद्दुवा ओमवेले अद्दुवा एगसाडे अद्दुवा अचेले
लाघविधं आगममाणे तवं से अभिस्समन्नाए भवइ जमेयं भगवया पवेइयं तमेव अभि-
समिच्चा सवओ सवत्ताए सम्मतमेव समभिजाणिया, जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—पुट्ठी
अबलो अहमसि नालमहसंसि गिहंतरसंकमणं भिक्खवाययियं गमणाए, से एवं वयंतस्स परो
अभिहडं असणं वा ४ आहट्टु दलइजा, से पुवामेव आलोइजा—आउसंतो ? नो खलु मे
कप्पइ अभिहडं असणं ४ भुत्तए वा पायए वा अन्ने वा एयप्पगारे (सू० २१६)

तेमां त्रण कल्पमां रहेल स्थविरकल्पी अथवा जिनकल्पी मुनि होय, पण वे कल्प (वस्त्र) धारण करनार अवश्ये जिनकल्पी
होय, अथवा परिहार विशुद्धिक अथवा यथालंघिक के प्रतिमाधारी तेमांनो कोइ पण होय, आ सूत्रमां वतावेळ जे जिनकल्पी विगेरे
वे वस्त्रो धारण करनारो होय, आपां वस्त्र शब्द सामान्यथी लीयो छे, माटे एक सूत्रहुं बीजुं उनहुं एम वे वस्त्र धारण करी संय-

ममां रहल छे, केनां बे कल्प वख छे ? उ०—पात्र तीजुं धारण करेलो, साधु छे. ते बधुं पूर्वना सुत्र प्रमाणे जाणहुं, ते ठन्दी पीढाया सुधीनुं जाणहुं, ते प्रमाणे अर्धीः कहै के हुं वाधु विगोरेना। रोगथी पीढायेल निर्वलः होवाथी एक घरथी बीजे बेर जवा असमर्थ हुं तेशी भीक्षा माटे जवा हुं अशक्त हुं आहुं बोलनार साधु पासै कोइ गृहस्थ उभो होय, ते साधुनुं बोलहुं सांभलीने अथवा बोल्या विना पण तेने अशक्त देखीने पर (बीजे) गृहस्थ विगोरे अनुकम्पा तथा भक्तिना रसथी कमल हृदयवाळो बनीने अभिहत ते जीवोने दुःख दइ वनावेलुं अशन पान खादिम स्वादिम लावीने ते साधुने आपे, ते समये जलान साधुए सुत्रार्थने अनुसारे जीवितने नहि वांछतां मरहुं बहेतर ! एम विचारिने तेणे शुं करहुं ते कहै छे, पूर्वोक्तावेला जिन कल्पी विगोरे चारेमांथी कोइ पण एक साधुए प्रथम विचारहुं, के उद्दम विगोरे क्या दोषथी आ दूषित छे ? तेमां अभ्याहत जाणीने तेनो निषेध करवो, ते आ प्रमाणे हे आयुष्यन् ! हे गृहप्रते ! आ मारा सामे आणेहुं अशन खावाने, पणी पीवाने अथवा तेहुं बीजुं आधाकर्म विगोरे दोषथी दुहु अमने कल्पतुं नथी, आ प्रमाणे ते दान आपता गृहस्थने समजावे, बीजे प्रतिमां—

“ तं भिक्खुं कोइ गाहावई उवसंक्रमितु बूया, आउसंतो समणा ! अहन्नं तव अट्टाए असणं वा ४ अभिहडं दलासि, से पूव्वामेव जाणेज्जा—आउसन्तो गाहावई ! जन्नं तुमं मम अट्टाए असणं वा ४ अभिहडं चेतेसि णोय खल्ल मे कप्पइ एयप्पगारं असणं वा ४ भोत्तए वा पायए वा अन्नं वा तहप्यगारेत्ति ”

आमां पण तेज पाठ छे के कोइ गृहस्थ साधु पासै आवीने कहैके हुं तमारै माटे चार प्रकारनो आहारमांथी कोइ पण सामे लाविने आहुं ! ते साधु प्रथमथी जाणे तो कहै के गृहस्थ ! तुं मारे माटे कइ पण सामे लावीने आपे तो मने खावा पीवाने कल्पे

नहि, तेम तेहुं बीजुं पण न कल्पे.

आ प्रमाणे निषेध करेलो पण श्रावक सभ्यगृष्टि पकृति भद्रक अथवा मिथ्यादृष्टिमांथी कोइ पण दयाळु एवुं चितवे, के आ उजान साधु भिक्षा लेवा जवाने अशक्त हे, तेम बीजाने लाववा पण कही शके नहि, माटे तेणे निषेध कर्यां छतां पण हुं कोइ बहाने लावीने आपीश ए प्रमाणे विचारीने आहार विगोरे एम लावीने आपे, तो ते समये साधुए ते आहारने अनेषणीय (अयोग्य) हे, एम विचारीने ते गृहस्थने निषेध करवो. वकी—

जस्स णं भिक्खुस्स अयं पणत्थे—अहं च खलु पडिन्नत्तो अपडिन्नत्तेहिं गिलाणो अगिलाणोहिं
अभिवखं साहम्मिणएहिं कीरमाणं वेयावडियं साइज्जिस्सामि, अहं वावि खलु अपडिन्नतो
पडिन्नत्तस्स अगिलाणां गिलाणस्स अभिकंख साहम्मियस्स कुजा वेयावडियं करणाए आ-
हट्टु परिन्नं अणुक्खिस्सामि आहडं च साइज्जिस्सामि १, अहट्टु परिन्नं आणक्खिस्सामि आ-
हडं च नो साइज्जिस्सामि २, आहट्टु परिन्नं नो आणक्खिस्सामि आहडं च सा इज्जिस्सामि
३, आहट्टु परिन्नं नो आणक्खिस्सामि आहडं च नो साइज्जिस्सामि ४, एवं से अहाकिट्ठि-
यमेव धम्मं समभिजाणमाणे संते विरए सुसमाहियत्से तत्थावि तस्स कालपरियाए से

तरथ विअंतिकारए, इच्चेयं विमोहाययणं हिंयं सुह खमं निस्सेसं आणुगामियं त्तिवेमि

(सू० २१७) ॥८-५॥ विमोक्षाध्ययने पंचम उद्देशकः ॥

(णं वाक्यनी शोभा माटे छे) जे भिक्षु परिहार विशुद्धि चारित्रवाळो अथवा यथालंघिक होय, तेने हवे पळी कहेवातो प्रकल्प (आचार) छे, ते आ प्रमाणे (खलु वाक्यनी शोभा माटे, च समुच्चयना अर्थमां छे) हुं बीजाए करेली वैयावच्चनी अभिलाषा राखीश, हुं केवो हुं ? प्रतिज्ञप्त वैयावच्च करवाने बीजाए कहेलो हुं अर्थात् तेओ कहे छे, के अमे तमारी वैयावच्च यथा उचित करीए, ते बीजा केवा छे !

प्रः—अप्रतिज्ञप्त न कहेला; हुं केवो हुं ? उः—विकृष्ट तपवद्दे कर्तव्यतामां अशक्त हुं अथवा वायु विगेरे रोकावाशी गलान हुं बीजा कहेनारा केवा छे ? अगलान छे, उचित कर्तव्य करवाने शक्तिवान छे, तेमां परिहार विशुद्धि चारित्रवाळा तप करनारनी अनुषारिहारिक (वैयावच्च करनार) सेवा करे छे, ते वैयावच्च करनार कल्पमां रहो होय, अथवा बीजो पण होय, हवे जो ते सेवा करनार पण गलान (मांदा) होय, तो ते बीजानी वैयावच्च न करे, ए प्रमाणे यथालंघिक साधुनुं पण जाणहुं, पण एटळुं विशेष के स्थविरकल्पी साधु पण तेनी सेवा करी शक्ये छे, ते बतावे छे.

निर्जराने हृदयमां विचारीने सरखा कल्पवाळा साधर्मिक अथवा एक कल्पमां रहेला बीजा साधुओशी करायेली वैयावच्चने हुं इच्छीश जेनो आ आचारछे, ते तेवा आचारने पाळतोभक्त परिज्ञावदे पण जीवितने छोडे, पण आचारनुं खंडन न करे आ भावार्थछे;

तेज प्रमाणे अन्य साधर्मिक वडे करायेलुं वैयावच्च अनुमति आपेलुं छे. हवे बीजानी वैयावच्च पाते करे ते बतावे छे (च समुच्चयना अर्थमां अने अपि पुनःना अर्थमां छे अने ते पूर्वना कहेवाथी कइ विशेष बताववा माटे छे. खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे) अने हुं अपतिज्ञप्त कहेवायेलो हुं अने जे बीजो पतिज्ञप्त वैयावच्च न करवाने माटे कहेवायेलो छे ते जलान साधुनी हुं अजलान (साजो) लु माटे निर्जराने उद्देशीने तेवा कल्पधारी साधार्मिक साधुनी वैयावच्च करं ;

प०—शा माटे ? तेना उपकार [ज्ञाति] ने माटे तेशी आ प्रमाणे पतिज्ञा करीने पण भक्त परिज्ञाए पाणीने छोडे पण प्रतिज्ञानुं खंडन न करे, [आ सुन्ननो परमार्थ छे] हवे पतिज्ञा विशेषना द्वारवडे चोभंगी कहे छे. कोइ एक आबी पतिज्ञा करे छे के हुं बीजा जलान साधर्मिक साधुने आहार विगरे लावी आपीश, तथा हुं वैयावच्च पण योग्य रीते करीश, तथा अपर [बीजा] साधर्मिके आपणेण आहार विगरेने वापरीश, आ प्रमाणे पतिज्ञा करीने वैयावच्च करे (१) तथा बीजो साधु आबी पतिज्ञा करे के हुं बीजा माटे गोचरी विगरे शोधीश, पण बीजानो आहार विगरे लावेलो खाइश नहि, (२) बीजो आबी पतिज्ञा करे के हुं बीजाने निमित्ते आहार विगरे शोधीश नहि पण बीजानो लावेलो खाइश, [३] चोथो आ प्रमाणे पतिज्ञा करे हुं बीजाने निमित्ते आहार विगरे शोधीश नहि, तेम बीजानुं लावेलुं खाइश पण नहि [४] आ प्रमाणे जुदी जुदी पतिज्ञाओ करीने कोइ जग्याए ज्ञायमान (मांदो) पण थाय तो पण जीवितने त्याग करे, पण पतिज्ञानो भंग न करे. हवे आ विषयने संपूर्ण करवा कहे छे. आ प्रमाणे कहेली विधि ए तत्वने ज्ञाननारो ते साधु शरीर विगरेनो मोह छोडनारो बनीने यथाकीर्ति धर्मेनेज बरोबर जाणीने आसेवन परिज्ञावडे पालतो तथा लावविकने इच्छतो विगरे चोथा उद्देशामां जे कहुं, ते अहिं वधुं जाणी लेवुं, तथा पाते कषायना उपशमथी शान्त छे, अथवा अनादि

संसारमां पर्यटन करवाथी श्रांत छे, ते सावद्य अनुष्ठानथी विरत छे, शोभन लेइया ते जेणे अंतःकरणनी निर्मळवृत्ति तेजोलेइया विगेरे धारण करवाथी तेसुसमाहत लेइयावाळो छे, आवो वनीने पूर्व कहेली प्रतिज्ञा लईने पाळवामां समर्थ छे, ते तप अथवा रोग ना कारणे जलान भावने पांमेळो होय, छतां पण ते पोतानी प्रतिज्ञानो लोप न करतो शरीर त्यागवा भक्त पत्याल्ल्यान करे, अने ते भक्त परिज्ञामां पण काल पर्यायवडे अनागत परिज्ञा (वार वर्षनी संलेखनानो समय नथी, तेमां पण काल पर्याय छे, जेणे शिष्योने भणावी गणावी तैयार, कर्या होय, अने तप वडे संलिखित देहवाळो होय तेनो जे काल पर्याय मृत्युनो अवसर मशंसवा योग्य छे, तेवो आ जलान थयेला कल्पधारीने पण एरोज अवसर छे. कारण के वन्नेमां कर्मनी निर्जरा समान छे, ते कल्पधारी शिष्यु जलानपणाथी अणशननां विधानमां व्यक्तिकारक कर्म क्षय करनारो छे वाकीनुं वधुं पूर्व माफक जाणवुं पांचमो उद्देशो समाप्त.



छट्टो उद्देशो

पांचमो कसो पळी छट्टो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां वताव्युं, के जलान साधुए भक्त पत्या-ल्ल्यान करवुं, अने आ उद्देशामां वतावरो के वृत्तिसंहनन विगेरेथी बळवाळो साधु एकत्व भावनाने भावीने इंगित मरण करे आ संबंधे आवेला आ उद्देशानुं पहेळू सत कहे छे.

जे भिक्वु एगेण वरथेण परिवुसिए पायविईएण, तस्स णं नो एवं भवइ विइयं वरथं जाइ-

स्सामि, से अहेसणिजं वरथं जाइजा अहापरिगहियं वरथं धारिजा जाव गिरहे पडिवन्ने
अहापरिजुन्नं वरथं परिट्टविजा. २ ता अद्दुवा एगसाडे अट्टुवा अचेले लाघवियं आगममाणे
जाव समत्तमेव समभिजाणिया (सू० २१८)

जिनकल्पी विगेरे जे साधुने एवो अभिग्रह होय के मारे एक वख धारण करवुं अने बीजुं पात्र राखवुं तेवा उत्तम साधुने
मनमां एम न आवे, के बीजुं वख याचुं. ते पोताने जरर पडतां फक्त ठन्डी ऋतुमां एकज निर्दोष वख याची लावे, अने विधि
प्रमाणे लावी पहेरे, पण ज्यारे उनाळो आवे, त्यारे जुनुं वख जीर्ण थवाथी तेने परठवी दे, पण बीजा शीयाळायां चाले तेवुं होय
तो पोते ते एक साटक (चादर) ने धारण करे, अने जीर्ण वख परठवी दीधुं होय, तो पोते वख रहित थइने विचरे, ते स्थिर मति-
वाळा साधुनुं आ लाववपणुं आगम अनुसारे होवाथी सम्यक्त्व अथवा सर्व पाणी उपर समभावपणुं के रागद्वेष रहित पणुं जाणवुं
तथा ते साधुने लघुता होवाथी तेने एकत्व भावनानो अध्यवसाय थाय ते वतावे छे.

जस्स पां भिक्खुस्स एवं भवइ—एगे अहमंसि न मे अस्थि कोइ न याहमवि, कस्सवि, एवं
से एगाणिसेव अप्पाणं समसिजाणिजा, लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए
भवइ जाव समभिजाणिया (सू० २१९)

(णं वाक्यनी शोभा पाटे छे) जे साधुने आवो विचार थाय के “ हुं एकलो छुं, संसारमां भ्रमण करतां परमार्थ दृष्टि जेतां मने उपकार करनार बीजो कोइ नथी, अने हुं पण बीजा कोइना दुःखने दूर करवामां सहायक नथी, कारण के पोताना करेलां कर्महुं फल भोगवामां सर्व जीवोने इश्वर [समर्थ] पणुं छे ” आ प्रमाणे आ साधु पोताना आत्माने अन्तरदृष्टि सम्यग् रीते एकलो जाणे, अने आ आत्माने नरक विगेरेनां दुःखोथी बचाववा शरण आपवा योग्य बीजो नथी, एहुं मानतो होय ते पोताने जे जे रोग विगेरे दुःख देनारां कारणो आवे, त्यारे बीजाना शरणनी उपेक्षा करतो “ भें कर्हुं छे पाटे मारेज भोगवहुं ” आवो निश्चक विचार करीने सम्यग् रीते भोगवे छे.

प०—ते केवी रीते एम समताथी सहन करे ? उ०—लाघविय विगेरे चोथा उदेशा २१५ सू०मां बताव्युं ते “ समत्वपणुं जाणवुं ” त्यांसुथी जाणवुं, के आ साधुने कर्मनी लघुता थावाथी आ लोक परलोक वन्नेमां हित सुख निश्चयस पाटे थाय छे अने परंपराए मोक्ष फल आपनार छे—तेथी तेणे एकत्वभावना भाववी आ अध्ययनना बीजा उदेशामां उद्गम उत्पादन एषणा बतावी ते आ प्रमाणे “आजसंतो समणा ! अहं खलु तव अद्वाए असणं वा ४” विगेरे सू० २०२मां बताव्युं ते प्रमाणे पांचमां उदेशामां ग्रहण एषणा बतावी, “सीया य से एवं वयं तस्सवि परो अभिहडं असणं वा ४ आहहुं दलएजा इत्यादि [सुत्र २१६मां वचमां आ पाठ छे] आ सुत्रवडे शास एषणा बतावी तेने हवे पडीना सूत्रमां विशेषथी बताववा सूत्र कहे छे.

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ आहारे माणे नो वामाओ हणुयाओ दाहिणं

हणुयं संचारिजा आसाएमाणे, दाहिणाओ वामं हणुयं नो संचारिजा आसाएमाणे, से अ-
णासायमाणे लावविंयं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ, जमेयं भगवया पवेइयं
तमेवं अभिसमिच्चा सवओ सवत्ताए समत्तमेव अ (सम) भिजाणीया (सू० २२०)

ते पूर्व बत्तावेळो साधु अथवा साध्वी अथान विगेरे आहार उद्गम उत्पादन एषणाथी शुद्ध अने पत्सुत्पन्न ते ग्रहण एषणा
शुद्ध एटले १६ गृहस्थ दान देनारना तथा सोळ लेनारना तथा दश वन्नेना भोगा मळी कुल ४२ दोषथी रहित आहार लावीने
गोचरी करतां जे पांच दोष अंगार धूम विगेरे छे तेने वर्जीने आहार करे, ते अंगार अने धूम रागद्वेषना कारणे थाय छे, तेमां पण
सरस नीरस आहार आवे तो रागद्वेष थाय छे, अने कारणनो अभाव यतां कार्यनो पण अभाव छे, एम जाणीने रसनी उपलब्धि
[स्वाद]नुं निमित्त त्यजवातुं बत्तावे छे. ते साधु आहार करतां हावी वाजुथी जमणी वाजु स्वाद लेवा माटे भोजन विगेरे न लइ
जाय तेज प्रमाणे स्वाद लेवा जमणी वाजुथी हावी वाजु न लइ जाय कारणके संसारना स्वादथी रसनी प्राप्तिमां रागद्वेषनुं निमित्त
छे, अने तैथीज अंगार, तथा धूम दोष लागे छे, जेथी उत्तम साधु साध्वीए जे कइ स्वादिष्ट होय तेनो स्वाद न करवा वीजी पतिमां
“आहायमाणे” पाठ छे, तेनो अर्थ आ छे, के “आहारमां आदरवाळो मूर्च्छीवाळो गूढ बनीने आहारने आम तेम न फेरवे”
हनु (हृदयची)मां आम तेम हावी जमणीमां न फेरवतुं, तेम बीजे पण स्वाद लेवो नहि ते बत्तावे छे. ‘स’ ते साधु चारे
प्रकारना आहारने वापतो रागद्वेष छोडीने स्व/य, तेज प्रमाणे कोइ निमित्तथी हावी जमणी वाजु आहार फेरवको पडे तो पण प्रोते

स्वाद कर्मां विना फेरवे. प्रः—शा माटे ! उः—आहारनी लायवताने स्वीकारतो आस्वाद न करे, आ प्रमाणे आस्वादना निर्वैथथी अंतर्पांत आहारनो स्वीकार पण कहेलो समजवो. आ प्रमाणे स्वाद न करवाथी ते साधुने कर्मनी बहोली निर्जरा थाय छे, ते बधुं पूर्व माफक छे, समपणु समत्वने पांमे अथवा सम्यक्त्व निश्चल थाय ए वैधुं पूर्व माफक समजवुं. तेवा उत्तम साधु अथवा साध्वीने अंतर्पांत आहार खावाथी मांस लोही ओंछा थवाथी जर्जरित हाडकां थवाथी संयम अनुष्ठान शरीरथी बरोबर न थवाथी स्वेद थाय, तेवी कायवेष्टावाळाने शरीर त्यागवानी बुद्धि थाय, ते बतावे छे.

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—से गिलांमि च खलु अहं इमंमि समए इमं सरोरगं अणु-
पुव्वेण परिवहिसए, से अणुपुव्वेणं आहारं संवट्ठिजा, अणुपुव्वेणं आहारं संवट्ठिता, कसाए

पयणए किञ्चा ससाहियञ्जे फलगावयट्ठी उट्ठाय भिक्खु अभिनिवुडच्चे (सू० २२१)

एकत्वभावना भावनार जे साधुने आहार उपकरणमां लायवपणुं प्राप्त थयुं होय, तेने आबो अभिप्राय थाय छे, (से शब्दनी अर्थ तत् छे अने ते वाक्यना उपन्यास माटे छे, च समुच्चयना अर्थमां छे, खलु अवधारणना अर्थमां छे) के हुं आ संयमना अवसरमां लुखा आहारथी अथवा रोग उत्पन्न थवाथी पीडाइने ज्ञानि पापी अशक्त थयो छुं, लुखा आहारथी के तपथी शरीर अशक्त थवाथी अतुपूर्विण योग्य रीते आवश्यक क्रिया के प्रतिलेखना विगेरे क्रिया करवामां अशक्त बनी गयो छुं. अने शरीर दरेक क्षणे नवळुं पडतुं होवाथी एक वे उपवास के आंचील तप वडे आहारनो संक्षेप करे. अर्थात् साजा शरीरमां बार वर्ष सुधी अनुक्रमे थोडा

घणा तपे संलेखना यती होय, ते अर्ही ग्रहण न करे; पर्ण प्लान सांयुने तेंदळो काळ स्थिति न रहे, माटे तेवी हुंका काळनी अनुपूर्वी वाळी द्रव्य संलेखना माटे आहारने रोके, आवी द्रव्य संलेखना करीने बीजुं शुं करे ? ते कहे छे:—

वे त्रण चार पांच उपवास विगेरेनो अनुक्रमे तप करीने आहारनो संक्षेप करे, अने कषायोने ओळा करीने शरीरनो मोह छोडे. कषायो हंमेयां ओळा करावा जोइए, पण आ संलेखनामां तो अवश्ये विशेष प्रकारे ओळा करावा. एथी तेमने विशेषथी ओळा करी सम्यक्प्रकारे स्थापन कर्युं छे. शरीर (अर्ची) जेणे तेवो मुनि “ समाहित अर्च ” छे. (नियमित कायना व्यापारवाळो छे,) अथवा अर्च्या ते लेइया छे, ते लेइयाने सम्यक् रीते स्थापी छे माटे अति विशुद्ध अध्यवसाय वाळो पोते वन्यो छे, अथवा अर्च्या ते क्रोधादि अध्यवसाय रूप ज्वाळाने शांत करावथी समाहित अर्च्या वाळो छे, तेवा साधुए कर्म क्षय रूप फळं (तेने क प्रत्यय लगाडवाथी फलक थयुं) ने संसार भ्रमण रूप आपदांमं अर्थ (प्रयोजन वाळो छे माटे ते फलक आपद्भर्थी कहेवाय छे. अथवा फलक (पाटीया)ने वंने वाजुथी वांसला विगेरेथी सरखुं करावा छोले तेम अर्ही वाह्य अभ्यंतर अवकृष्ट थवाथी [आर्थ नचन प्रमाणे विग्रह करतां] ‘ फलगावयथी ’ छे, अथवा दुर्वचन [महेंणां] रूप वांसलाथी छोलवा छतां कषायना अभावथी फलक माफक रहे छे, तेवा स्वभावथी पोते ‘ फलकावस्थायी ’ छे, अर्थात् पोते ‘ वासी चन्दन कल्प ’ जेवो छे, [आ प्रमाणे मागथी सूत्रना अर्थ कर्या, कर्म क्षय रूप फळनो अर्थी, ते संसार भ्रमणनी आपदांमंथी छुटवानो अर्थी, तथा क्रोधादिना ओळा यवाथी पाटीया जेवो मध्यस्थ रागद्वेष रहित वताव्यो] आवो उत्तम साधु प्रतिदिन साकार भक्त प्रत्याख्यान वाळो छे अने घणो वळवान रोग आवतां शीघ्र मरण नो उद्यम करनार वनी अभि निवृत्ता अर्च्यवाळो एटले शरीर संताप रहित वने, धैर्य तथा संपयण विगे-

रेषी हुक्त होय, ते महा पुरुषोए आचरेला इन्द्रित मरण ने स्वीकारे. प० केवी रीते ? ते कहे छे.

अणुपविसिता गामं वा नगरं वा खेडं वा कब्बडं वा मडंबं वा पट्टणं वा दीणसुहं वा आ-
 नरं वा आसमं वा सन्निवेसं वा नेगमं वा रायहणिं वा तणाइं जाइजा तणाइं जाइता से
 तमायाए एगंतमवक्कमिजा, एगतमवक्कमिता अपंडे अपपणे अपवीए अपहरिए अ-
 प्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिगपणगदगमट्टियमक्कडासंताणए पडिलेहिय २ पमजिथ २ त-
 णाइं संथरिजा, तणाइं संथरिता इत्थ विसमए इत्तरियं कुजा, तं सत्तवं सत्तववाइं ओए-
 तिन्ने छिन्न कहं कहे आईयट्टे अणाईए चित्त्वाण भेउरं कायं संविहूय विरुवरूवे परीसहा-
 वसगो अस्सिविस्सं मणयाए भेरव मणुच्चिन्ने तत्थावि तस्स काल परियाए जाव अणुगा-
 मिथं तिवेमि (सू० २२३) ॥८-६॥ विमाक्षाध्ययने षष्ठ उद्देशकः

बुद्धि विगरे गुणोत्तो प्रास करे अथवा अठार करो ज्यां लेवाय ते गाम छे, (वधी जग्ग्या एवा शब्दनो अर्थ गुजरतीमां अ-
 थवा लेवो) ज्यां कर न होय ते न कर (नगर) छे, थूलना दगलाथी कोट वनाव्यो होय ते खेट (खेडु) छे, नाना कोटथी वीटा-
 येळु ते कर्बट छे, २॥ गाउने आंतरे गाम होय ते मडंब छे, पत्तन (पाटण) वे प्रकारे छे. जल पत्तन ते कानन द्वीप विगरे छे,

स्थल पत्तन ते मथुरा छे, द्रोण मुख ते जल के स्थल मार्गे नीकलवा तथा पैसेवाना रस्ता होय जेसके भरुच खंभात [वंदर] छे सोना चांदी विगेरेनी खणने अकर छे, तापस विगेरेनो मठ ते आश्रम [आश्रय] छे, यात्रा निमित्ते मळेलां माणसोनो ज्या जमाव यतो होय ते संनिवेश छे, घणा वाणीया [वेपारी] नुं रहेटाण ते “नैगम” छे, राजाने रहेवानुं नगर ते राज्यथानी छे, आपांथी कोइपण जग्याए जइने वासनी याचना करे.

प०—शा माटे ? उ०—पोताने संथारो करवा माटे सुकुं निर्जीव पास दर्भ वीरण विगेरेने कोइ गाम विगेरेमां जइने तेना मालिकनी आज्ञा लइने पोळुं सडेळुं लीळुं छोडीने सुकुं पास ले, ते लइने पास एकांत स्थल पहाडनी गुफा विगेरेमां जइ महा स्थंडिल बोधे ते कहे छे, जेमां कीडी विगेरेनां इन्हां न होय, जेमां वे इन्द्रिय जीवो न होय, तथा नीवार श्यामाक विगेरे बीजो न होय, तथा लीळुं घास दरो विगेरे न होय, तथा उपर के अंदर टारनुं पाणी पडेळुं न होय [अर्थात् छांटो पडेला न होय,] तथा वरसादनुं के नीचेनुं पाणी तेमां पहेलं न होय, तेज प्रमाणे कीडीयाहं, पांच वर्णनी सेवाल, तुर्तनी पाणीथी पलाळेकी माटी करोळीयानां जाळां रहित निर्दोष जग्या होय, तेवा महा स्थंडिलमां वासने पाथरे. प०—केवी रीते ? ते कहे छे. ते जग्याने आंखथी वरोवर जोइनेपछी रजोहरणथी वरोवर पूंजीने [दरेकमां ववे वार लेवानुं] कारण वरोवर जुए]संथारो पाथरीने झाडा पेशावनी जमिन वरोवर जोइने पूर्व दिशाना मोडे संथारा उपर बेसी हथेली अने लळाटमां रजोहरण फसावीने सिद्ध भगवन्तने नमस्कार करीने पञ्चपरमोष्ठिने याद करी (अपि शब्दनो अन्यत्र अर्थ छे) समयमां सुकरर करेला स्थानना इङ्गित मरण करे, (इत्वर शब्दनो अर्थ पादपोपगमननी अपेक्षा माटे छे तेथी) पादपोपगमन अणसण अथवा करे, (पण इत्वरनो अर्थ साकार अमुक काळ

सुधीनुं एवो अर्थ न जेवो) कारण के जिन कल्पी विगेरे धुनिने बीजां काळमां पण साकार मत्याख्याननो संभव नथी, तो मत्या-
ख्यान जेवा अंतिम बलते साकारनो संभव कथाथी होय? कारण के इत्तर ते अमुक काळनुं पञ्चकवाण रोगी अवक करे, के जो आ
रोगथी पांच दीवसमां सुकाइय, तो पळी भोजन करीश, ते शिवाय नहीं करुं विगेरे इत्तर पञ्चकवाण छे, पण इङ्गित मरण तो
धैर्य संहनन विगेरेना बळवाळो पोतानी मेळेंज पासुं फेरवाना विगेरे क्रिया करानारो आखी जीदंगी सुधी चारे आहारनो त्याग
करे छे. कहुं छे के:—

पञ्चकवइ आहारं, चञ्चद्विहं णियमओ गुरुसमीवे; इङ्गियदेसंमि तहा, चिट्ठंषि हु नियमओ कुणइ ॥ १ ॥

उवत्तइ परिअत्तइ, काइगमाईडवि अप्पणा कुणइ; सव्वमिह अप्पणच्चिअ ण, अन्नजोगेण थितिवलिओ ॥ २ ॥

चारे प्रकारना आहारनुं गुरु पासे नियमथी मत्याख्यान करे, अने इङ्गित(मुकरर करेळां)भागमां चेट्टा पण नियमथी करे छे, [१]
पासुं बढले, बाजुए जाय अथवा ठळो मातरं करे, ते पण जाते करे, ते धैर्य तथा बळवाळो पोताना सिवाय बीजा पासुं न करावे.

प.—इङ्गित मरण केवुं छे? अने कोण करे? ते कहे छे. संत पुरुषोनुं हित करे तेथी ते इंगित मरण सत्य छे. अने सुगति
मार्गे लइ जवामां ते अविसंवादपणे होवाथी तथा सर्वज्ञना उपदेशथी ते इंगित मरण सत्य [तथ्य] छे. तथा पोते पण सत्य बोलनार
होवाथी सत्यवादी छे, कारण के आखी जीदंगी सुधी यथोक्त अनुबुद्धान करवाना पतिज्ञा लीयेत्री ते भार उपाडवा समर्थ होवाथी
अने तेमज पाळवाथी सत्यवादी छे, तथा 'ओज' पोते रागद्वेष रहित छे. तथा संसार सागरने तयो छे, अने भूतकाळ माफक
भविष्यमां पण तरवा माटे तेवो उपचार करवाथी अवतीर्ण छे, तथा जेणे राग विगेरेनी विकया कोइ पण रीते न करवानुं नक्की

1. 關於「*...*」的討論，我們已經在「*...*」中討論過。在「*...*」中，我們已經討論過「*...*」的討論。在「*...*」中，我們已經討論過「*...*」的討論。在「*...*」中，我們已經討論過「*...*」的討論。

2. 關於「*...*」的討論，我們已經在「*...*」中討論過。在「*...*」中，我們已經討論過「*...*」的討論。在「*...*」中，我們已經討論過「*...*」的討論。在「*...*」中，我們已經討論過「*...*」的討論。

सातमो उद्देशो

छठो कहीने हवे सातमो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां एकत्व भावना भावनार धृति संहनन विगेरेथी युक्त साधुनुं इंगित मरण बताव्युं, अने अहीं तेज एकत्व भावना प्रतिमाओवडे बतावे छे, एथी अहीं ते प्रतिमाओ बतावे छे, तथा वधारे विशिष्ट संवयणंकाओ पादपोषणमन अणक्षण पण करे, आ संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

जे भिक्खु अचेले परिवुसिए तस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ--चाएमि अहं तणफासं अहि-
यासित्तए सीयफासं अहियासित्तए, तेउफासं अहियासित्तए दंसमसगफासं अहियासित्तए
एगयरे अन्नतरे विरुवह्वे फासे अहियासित्तए, हिरिपडिच्छायणं चउहं नो संचाएमि अहि-
यासित्तए, एवं से कप्पेइ कडिबंधणं धारित्तए (सू० २२३)

जे साधु प्रतिमा धारण करेलो अने विशेष अभिग्रहथी अचेक (वक्करहित) पणे सयममां रहेलो होय, ते भिक्षुने आवो अभि-
प्राय थाय छे, के हुं धृति संहनन विगेरे युक्त होवाथी वैराग्य भावनाथी भावित अंतःकरणवाळो छुं. अने आगम चक्षुवडे (चारे
गतितुं ज्ञान होवाथी) नारकतिर्थचनुं दुःख जाणुं छुं. अने मानुं छुं के मारे मोक्ष जेहुं मोडुं फळ लेवानुं होवाथी तृणनो स्वर्ग
कंड दुःख देतो नथी, तेज प्रमाणे ठन्ड, ताप, दर्सास, मच्छरनो स्पर्श सहन करवा शक्तिमाप्त छुं, तथा एक जातना के जुदी जुदी

जातिना अनुकूल के पतिरूल विरूपरुपवाळा फरशो सहन करवाने हुं शक्तिवान छुं, पण लज्जाने लीधे गुह्य प्रदर्शने शंकावानी जरूर होवाथी ते छोडवा हुं चाहतो नथी. अने आ स्वभावथीज अथवा साधनना विकृत रूपणाथी ते साधुने शरम लागे, तो तेने चोळ-पट्टो पहरेवो कल्पे छे, अने ते पहोळाइमां एक हाथने चार आंगळनो होय, अने लंबाईमां केडना प्रमाणमां होय, तेवो गणतरीनो एक राखे पण, जो तेवां कारणो न होय, तो अचेलपणेज विहार करे, अने अचेलपणेज टन्ड विनेरे स्पर्श सारी रीते सहन करे, ए वताववा कहे छे.—

अदुवा तरथ परक्रमंतं भुजो अचेलं तणफासा फुसन्ति सीयफासा फुसन्ति तेउफासां फुसन्ति
दंसमसगफासा फुसन्ति एगयरे अन्नयरे विरुवरुवे फासे अहियासेइ, अचेले लाघवियं

आगममाणे जाव समभिजाणिया (सू० २२४)

एवु कारण तेने होय, तो ने साधु वस्त्र धारण करे, अथवा पोते लज्जा न पामतो होय, तो अचेल रही संयम पाळे, अने वस्त्र-रहित संयम पाळतां तेने तृणना फरशो फरशे, तथा टंड ताप डांस मच्छरना फरसो दुःख दे तेवा एक जातना के जुदी जुदी जातना भोगववा छतां पोते अचेल रही कर्मनुं लाघवपणुं माने, अने तेमांज सप्तत्व माने, वळी प्रतिपाथारी साधुज विशेष अभिग्रह धारण करे, ते आ प्रमाणे के हुं बीजा प्रतिपाथारी मुनिओने किंचिद आपीश, अथवा तेमनी पासथी लेइश एवो कोइ पण जातनो अभिग्रह धारण करे, तेनी चोभंगी कहे छे,

जसस णं भिक्खुसस एवं भवइ-अहं च खलु अन्नोसिं भिक्खुणं असणं वा ४ आहट्टु दलइ-
 ससामि आरडं च साइजिससामि १ जसस णं भिक्खुसस एवं भवइ-अहं च खलु अन्नोसिं
 भिक्खुणं असणं वा ४ आहट्टु दलइससामि आहडं चनो साइससामि २ जसस णं भिक्खुसस
 एवं भवइ अहं च खलु असणं वा ४ आहट्टु नो दलइससामि आहडं च साइजिससामि
 ३ जसस णं भिक्खुसस एवं भवइ अहं च खलु अन्नोसिं भिक्खुणं असणं वा ४ आहट्टु नो
 दलइससामि आहडं च नो साइजिससामि ४, अहं च खलु तेण अहाइरित्तेण अहेसाणिक्केण
 अहापरिग्गहिणं असणेण वा ४ अभिकंख साहम्मियसस कुजा वेयावडियं करणाए, अहं
 वावि तेण अहाइरित्तेण अहेसणिक्केण अहापरिग्गहिणं असणेण वा पाणेण वा ४ अभि-
 कंख साहम्मिताहिं कोरमाणं वेयावडियं साइजिसामि लाघवियं आगममाणे जाव सम्मत्तमेव
 समभिजाणिया (सू० २२५)

आ वयुं पूर्वे सू० २१७मां आवी गयुं छे, तेयी संस्कृत वडे कहे छे, जे भिक्षुने आबो अभिग्रह होय, के हुं बीजा साधुओ माटे

आहार लावीने आपीश, तथा तेमनुं लावेळूं खाइश (१) बीजा साधुने आवो अभिग्रह होय के बीजा साधुओने आहार लावीने आपीश पण बीजानो लावेलो खाइश नहि. (२) कोइने आवो अभिग्रह होय के बीजाने माटे आहार लावीने आपीश नहि, पण तेमने लावेलो खाइश [३] बीजाने माटे लावीने आपीश नहि तेम लावेलो खाइश पण नहि. आचारमांनो कोइ पण अभिग्रह धारण करे, अथवा पशमना त्रणमांनो एक पद वडेज कोइ अभिग्रह करे ते बतावे छे, जे साधुने आवो अभिग्रह होय, के हुं बीजा ए आहार करतां वधेला आहारनुं भोजन करीश, कारण के ते प्रतिमा धारीओने तेवुंज एषणीय [खावा योग्य] छे, ते आ प्रमाणे. पांच प्रासृतिकामां आग्रह छे, वेनो अभिग्रह छे, तेमज पोताने माटे लीधेला आहारमांशी साधर्मिक साधुनी वैयावच्च निर्जराने उद्देशीने करे, जो, के तेमणे प्रतिमा धारण करेली होवाशी एक जग्याए भेगा थइने न खाय, पण तेमनो अभिग्रह एक सरखो होवाशी सांभोगिक छे, अने तेथी तेवा उत्तम साधुनां उपकरण लाववा माटे हवे वैयावच्च करूं, आवो अभिग्रह कोइ छे, तथा बीजुं बतावे छे. [वा शब्दथी बीजो पक्ष बतावे छे अपि शब्द पुनःना अर्थमां छे] अथवा हुं तेमणे लीधेली गोचरीमांशी ४ निर्जराने उद्देशीने साधर्मिकाए करेली वैयावच्चने स्वीकारीश अथवा जे बीजानी वैयावच्च करे तेनी हुं अनुमोदना करीश. के हे साथो ! तसे बहु सारूं करुं छे ! एवुं वचन बोलीश, तथा काया वडे तथा पसन्न मनवाला भाववडे अनुमोदना करीश, आ वधुं शा माटे करे ? कर्मनी लजुता माटे. आ प्रमाणे कोइ पण अभिग्रह धारण करेलो अचेल के सचेल साधु शरीर पीडा होय अथवा न होय, पण पोतानुं आयु थोडूं रहेळूं जाणीने उद्यत मरण स्वीकारे, ते बतावे छे:—

जस्स षं भिक्खुस्स एवं भवइ—से गिलापि खलु अहं इमस्मि समए इमं सरोरगं अणु-

पुत्रेणं परिवहित्वा, से अणुपुत्रेणं आहारं संवद्विजा २ कसाए पयणुए किच्चा समाहियञ्चे
 फलगावयद्वी उद्वाय भिक्खु अभिनिव्वुडञ्चे अणुपविसित्ता गामं वा नगरं वा जाव राय
 हाणिं वा तणाइं जाइजा जाव संथरिजा, इत्थवि समए कायं च जोगं च ईरियं च पच्च-
 वखाइजा, तं सच्चं सच्चवावई ओए तिनने छिन्नकहंकहे आइयद्वे अणाईए चिच्चणं भे-
 उरं कायं संविहुणिय विरुवरुवे परीसहोवसणे अस्सि विससभणाए भेरवमणुचिन्ने तत्त्ववि
 तस्स काल परियाए सेवि तत्थ वियन्तिकारए, इच्चैयं विमोहाययणं हियं सुहंखमं निस्सेसं

आणुगामियं तिवेमि (सू० २२६) ॥ ८-७ ॥

(णं वाक्यनी शोभा माटे हेः) ते भिक्षुने आवो अभिपाय थाय हे, के हुं उलान थयो हुं, एम जाणीने सू० २२२मां वताव्या
 प्रमाणे घास लावीने एकांत निर्दोष जग्गामां पाथरे अने त्यां बेसीने थुं करे ? ते कहे हे, आ अवसरमां पण बीजे स्थळे नहि पण
 तेज जग्गए संथारामां बेसीने सिद्धनी समक्ष पोतानी मेळेज पांच महाव्रतनो फरी आरोप करे [फरी चाल्वा गणी जाय] तयार-
 पळी चार आहारतुं पच्चक्खाण करे, पळी पादपोषणमन अणसण माटे शरीरने स्थिर करे, अने तेनो वेणार ते संकोचतुं, लांवा करतुं
 के आंख मींचवी उघाडवी ते पण रोके, तथा इरण ते इर्या ते सुक्ष्म, काय वचन संबन्धी तथा मन संबन्धी पण अपशस्ततुं पच्चक्खाण

करे, अने ते पादपोषणमन अणसण सत्य सत्यवादी विगेरे बधुं गया उदेशा प्रमाणे जाणवुं, [इति तथा ब्रवीमि शब्दो पण जाणीताछे.]

सातमो उदेशो समाप्त.

॥ इतिश्री आचारङ्गसूत्रे चतुर्थो भागः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

समाप्त.

11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

॥ इति श्रीआचाराङ्गसूत्रे चतुर्थो भागः समाप्तः ॥ श्रीरसु ॥

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेलुं अने श्रीश्रुतकेवलीभद्रनाहुरचित निर्युक्तिमहित)

॥ आचाराङ्गसूत्रम् भाग पाञ्चमो ॥

(मूळ अने शीलान्नाचार्ये रचेली टीकाना भाषांतरसहित)



जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ जामजीना स्मरणार्थ

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

पहतर किंमत रु. २-८-०

संवत् १९९१

श्री जैन भारकरोदय प्रिण्टिंग प्रेसमां छाप्युं -जामनगर

पति २००

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ श्रीआचारज्ञसूत्रम् ॥

(मूल अने शिलाह्लाचार्ये रचेली टीकानुं भाषांतर)

॥ भाग पांचमो ॥

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

आठमो उद्देशो.

सातमो कहीने हवे आठमो कहे छे, तेनो संबंध आ प्रमाणे छे, गया उद्देशाओषां कहुं के रोगादि संभवमां कालपर्याये आवेळुं भक्त परिज्ञा, इंगित,, के पादपोषणमन मरण करवुं युक्त छे, अने अहीं तो अनुक्रमे विहार करता साधुओतुं काल पर्याये आवेळुं मरण कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशातुं आ प्रथम सूत्र छे.

अनुष्टुप् छंद.

अणुपुत्रेण विमोहाइं, जाइं धीरा समासज्ज ॥ वसुमन्तो, महमन्तो, सबं नच्चा अणोलिसं ॥१॥
दुविहपि विइत्ता णं; बुद्धा धम्मस्स पारगा ॥ अणुपुत्रीइ सङ्गाए, आरंभाओ (य) तिउइई ॥२॥
कसाए पयणू किञ्च, अप्पाहारे तितिवखए ॥ अहभिव्खू णिलाइजा, आहारस्सेव अन्तियं ॥३॥
जीवियं नाभिकंखिज्जा, मरणं नोवि परथए ॥ दुहओऽवि न सज्जिज्जा, जीविए मरणे तहा ॥४॥

अनुक्रमे दीक्षा लीधी. हित शिक्षा मळी, सुवार्थ मेळवी स्थिर मति थया पळी एकाकी विहार विगोरे प्रतिमा स्वीकारी होय, अथवा अनुपूर्वी ते बार वर्षनी संलेखना विधि जेमां चार वरस विकृष्ट तप विगोरे अनुक्रमे पूर्वे तप वताव्यो छे ते जणुं, त्यार-पळी मोह रहित ते जेमांथी के जेनाथी मोह दूर थयो, तेवाने भक्त परिज्ञा इंगित के पादपोषणमन अणसण अनुक्रमे करवानां छे, तेमां धीर ते, क्षोभायमान न थाय, तेवा वसु (संयम) वाळा तथा मत्तन, ते मति होय उपादेय जोडवुं लेवुं ते संबन्धी विचार कर-नार मतिमंत छे, तथा सर्वे कृत्य अकृत्य जाणीने जे साधुने भक्त परिज्ञा विगोरे कोइ मरण उचित लागे तथा पोतानी धैर्यता संव-यण विगोरे विचारी अद्वितीय (उत्तम) रीते जाणीने तेवा मरणे समाधिनुं पालन करे, (१) वे प्रकारनी अवस्था तथा तपनी बाह्य अर्थांतर अवस्थाने विचारी पालन करीने, अथवा मोक्षाधिकारमां वे प्रकारनुं सुकावुं छे, तेमां पण बाह्य ते शरीर उपकरण विगोरे तथा अर्थांतर रागादि छे तेने हेयपणे जाणे अने त्यागीने आरंभथी दूर थाय एटले, ज्ञाननुं फळ हेयने त्यागवानुं छे, कोण त्यागे ?

बुद्धिमान पुरुषो, ते तत्त्वने जाणनारा श्रुत चारित्रि नामनो धर्म छे, तेनी पार पहेंचनारा छे, अर्थात् सम्यग् जाणनारा छे, ते पंडितो धर्म स्वरूपने जाणनारा प्रव्रज्याना अनुक्रमे संयम पाळीने जाणे के हवे मारा जीववाथी कंड विरोध गुण नथी, एथी हवे मोक्षनो अवसर मळयो छे, एथी हुं कया मरणे मरवा योग्य हुं एम विचारीने शरीर धारण करवामाटे अब पान विगेरे शोधवारुप आरंभथी छुटे छे, (अहीं पांचमीनां अर्थमां चाथी विभक्ति छे,) तथा कोइ प्रतिमां (कम्ममुणाओ तिअइई) पाठ छे, एटले आठ भेदवाळा कर्मथी पोते छुटे छे, (व्याकरणना नियम प्रमाणे वर्तमानना समीपमां वर्तमान माफक थाय छे) पा. ३-३-१३१ना नियम प्रमाणे भविष्यकालना अर्थमां वर्तमान काळ छे, [२]

अने ते अभ्युदत मरण माटे संलेखना करतो प्रथान भूत (श्रेष्ठ भावे संलेखना करे ते बतावे छे. एटले कष ते संसार छे. तेनो आय ते कषायो छे. ते क्रोध विगेरे चार छे, तेने पातळा [ओछा] करतो थोडुं र्वाय, ते बतावे छे:—

ते पण वधारे प्रमाणमां नहि, ते बतावे छे, अल्पाहारी (थोडुं खानारो) ते छट अठम विगेरे संलेखनाना अनुक्रमे आवेळा तपने करतो पारणामां पण अल्प र्वाय, अने अल्प आहार र्वावाथी क्रोधनो उद्भव थाय, तेनो उपशम करवो. ते बतावे छे—तुच्छ माणसथी पण तिरस्कारनां वचन सांभळे, तो पण सहन करे, अथवा रोग विगेरे पण बरोबर रीते सहन करे, ते प्रमाणे संलेखना करतो आहारने ओछा प्रमाणमां लेवाथी ते मुमुक्षु भिक्षु ज्ञानता पामे, ते समये आहारनी अंत अवस्थाने स्वीकारे, एटले चार विकृष्ट विगेरे संलेखनाना क्रमनो तप छोडीने भोजन करे, अथवा ज्ञानता पान्याथी आहारनी समीपमां न जाय. ते आ प्रमाणे—हमणां थोडा दिवस र्वाइ लडं, अने पछी बाकीनी संलेखनानो तप करीश एवीआहार र्वावानी भावनामां न जाय. ॥३॥ वळी—

ते संलेखनामां रहेछो अथवा आखी जीदगी मुधी हमेशां ते साधु पाण धारवा रूप जीवितने न चाहे, तथा भूखनी वेदनाथी कंटाळी मरण पण न वांछे तथा जीवित तथा मरणमां संग [ध्यान] न राखे (४) तयारे ते साधु केवो होय ? ते कहे छेः—

मज्झत्थो निजरापेही, समाहिमणुपालए ॥ अन्तो वंहिं विजसिज, अज्झत्थं सुद्धमेसए ॥५॥

जं किंचुचक्रमं जाणे, आऊखेमससमपणो ॥ तस्सेव अंतरद्दाए, खिपं सिखिखज पण्डिए ॥६॥

गामे वा अदुवा रणे, थंडिलं पडिलेहिया ॥ अप्पपाणं तु विज्जाय, तणाइं संथरे सुणी ॥७॥

अणाहारो तुयट्टिजा. पुट्टो तत्थट्टिहियासए ॥ नाइवेलं उवचरे, माणुस्सेहि विपुट्टवं ॥८॥

रागद्वेषनी वचमां रहे ते मध्यस्थ छे, अथवा जीवित मरणनी आकांक्षा रहित ते मध्यस्थ छे, ते निर्जरानी अपेक्षा राखनार ते निर्जरपेक्षी छे. तेवो साधु जीवन मरणनी आ संसा रहित समाधि जे अंत वखतनी छे, तेहुं पालन करे, अर्थात् कालपर्यायिवडे जे मरण आवे ते समाधिमां रही पाळे तथा अंदरना कषायोने तथा बहारना शरीर उपकरण विगेरेनो ममत्त्व छोडी दे, अने अद्यात्मा ते अंतःकरणने शुद्ध करे, एटले मनमां यता रागद्वेष विगेरेनां वथा जोडकां दूर यवाथी खिन्नोतसिका (चंचकता) रहित अंतःकरणने वांछे, वळी उपक्रम ते उपक्रम उपाय छे, तेवा कोइ पण उपायने जाणे.

प०—कोना उपक्रम ? आयुष्यतुं क्षेम ते सम्यक् प्रकारे पाळवुं. प०—कोना संबन्धी ते आयु छे ? उ०—ते आत्मानुं—तेनो परमार्थ आ छे. के आत्मा पोताना आयुष्यनो क्षेमथी प्रतिपालन करवा जे उपपयने जाणे—ते तेने शीघ्र शीखवे, एटले बुद्धिमान

साधु ते प्रमाणे वर्ते, पण ते संलेश्वनाना काळमां वार वर्ष पूरा थता पहिलांज अथवचमां शरीरमां वाधु विगोरेना रोकणथी शीघ्र जीवलेण रोग उत्पन्न थाय तो समाधि मरणने वांछतो तेना उपशमना उपायने एषणीय विधिए तेल चोळवुं विगोरे करे, अने फरी पाळी संलेश्वना शरू करे, अथवा आत्माहुं आधु (जीवित) ने कंड पण आयुना पुद्गलोनुं संवर्तन (उपक्रमण) उत्पन्न थएळुं जाणे तो ते संलेश्वरवनाना तपमांज अनाकुल मतिवाळो वनीने शीघ्रज भक्त परिज्ञा विगोरेने बुद्धिमान साधु शीववे [आदरे] (६) संलेश्वना वडे शुद्ध कायवाशो वनीने मरण काळ आवेलो जाणीने शुं करे? ते कहे छे.

ग्राम—शब्द जाणीतो छे. पण तेना अर्थ अर्हो प्रतिश्रय उपाश्रय वताव्यो छे, प्रतिश्रयज तेने स्थंडिल [संथारानी जग्या] छे. तेने जोइने संथारो करे आवा अरण्य-एटले उपाश्रयनी बहार अर्थ वताव्यो, उद्यान अथवा पर्वतनी गुफामां संथारानी जग्या प्रथम निर्जीव जुए, अने गाम विगोरेथी याची लावेल्ला दर्भ विगोरेना सुका घासमां यथा उचित काळनो जाणनारो साधु संथारो करे, घास पाथरीने शुं करे? ते कहे छे—

आहार रहित ते अनाहारी वने, तेमां शक्ति अनुसारे त्रण अथवा चारे आहारनुं पत्याल्ल्यान करी पंच महाव्रतनुं फरी स्वयं आरोपण करी वधा प्राणी समूहने स्वमावेलो वनी सुख दुःखमां समभाव रावी पूर्व मेळवेल्ला पुण्यना समूहवडे मरणथी न हरतो संथारामां पासुं फेरववुं करे, परिसह उपसर्गो आवे तेने देह ममत्व छोडेल होवाथी सम्यक् प्रकारे सहन करे, तेमां मनुष्यना अनुकूल पतिकूल परीसह उपसर्ग आवतां पर्यादातुं उलयन न करे, तेम पुत्र स्त्री विगोरेना समन्वयथी आर्त ध्यानने वया न थाय, तेमज पतिकूल परीसह उपसर्गोथी क्रोधथी ह्यायलो न थाय, तेज वतावे छे—

संसर्पगा य जे पाणा, जेय उड्डमहाचरा ॥ मुञ्जन्ति मंससोणियं न लुणे न पमज्जए ॥१॥

पाणा देहं विहिंसन्ति, टाणाओ नवि उब्भसे ॥ आसवेहिं विविचेहिं, तिप्पमाणाऽहियासए ॥१०॥

गन्थेहिं विविचेहिं, आउकालस्स पारए ॥ पग्गहिय तरगं चेयं, दवियस्स वियाणओ ॥११॥

अयंसे अवरे धम्मसे, नायपुत्तेण साहिए ॥ आयवज्जं पडीयारं; विजहिज्जा तिहा तिहा ॥१२॥

संसर्पन करे, ते क्रीडी क्रोष्ट (खियाळ) विगेरे जे प्राणीओ छे, तथा उंचे उडनार गीथ विगेरे छे, तथा बीलमां नीचे रहेनारा साप विगेरे छे, तथा सिंह वाय विगेरे आवीने मांस भक्षण करे, तथा डांस मच्छर विगेरे लोही पीए, ते समये ते जीवोने आहार अर्थे आवेळा जाणीने अवंति सुकुमार माफक तेमने हणे नहीं. तेम रजोहरण विगेरेथी उडाडीने खावामां अंतराय न करे (९) वळी आवेळां प्राणीओ मारी कायाने हणओ, पण मारां ज्ञानदर्शन चारित्रने नहीं हणे, तेम विचारी कायानो मोह जोडेळ होवाथी तेने खातां अन्तरायना भयथी पोते न रोके, अने ते स्थानथी पोते भयना कारणे बीजे खसे नहि. प०—केवो वनीने ?

उ०—पाणातिपात विगेरे पांच आश्रवो अथवा विषय कषाय विगेरेथी दूर रहीने शुभ अध्यवसाय वाळो वनीने डांस मच्छर विगेरेथी लोही पीवातो पण अमृत विगेरेथी सिंचन थवा माफक तेओनी करेली पीडाने पोते तथा लतां पण सहन करे; (१०) वळी वाह्य अभ्यंतर ग्रंथ तथा शरीरना प्रेम विगेरेथी पोते दूर रही तथा अंग उपांग विगेरे जैन आगपथी आत्माने भावतो शुक्क ध्यान ने धर्म ध्यानमां रक्त वनी मृत्यु कालनो पारगामी वने एटले ज्यां सुधी छेवटना श्वासोश्वास होय त्यां सुधी तेवी समाधि

राखे, आ भक्त प्रत्याख्यान मरणथी मोक्षमां जाय, अथवा देवलोकमां जाय.

भक्त परिज्ञा कहीने हवे इंगित मरण अडथा श्लोकथी कहे छे. पकर्षथी ग्रहित माटे पकर्ष ग्रहि छे, अने ते पकर्षथी लीयाथी प्रग्रहित तर छे. [अनेक, प्रत्यय लागनाथी] प्रग्रहित तरक छे. हवे इंगित मरण कहे छे कारण के आ भक्त प्रत्याख्यानना नियमथी न चार आहरतुं प्रत्याख्यान छे तथा इंगित प्रदेशमां संभारानी जग्यामां न विहार लेनाथी विशिष्टतर छुति संहनन विगेरेथी युक्त होय, तेज पकर्षथी छे छे,

प०—आ कोने होय छे ? द्रव्य (संयम जेने होय ते द्रविक छे, अने ते गीतार्थनेज छे, अने ते जगन्यथी पण नव पूर्वतुं ज्ञान होय तेवाने छे. बीजाने नथी, अर्दी इंगित मरणमां पण संलेखनामां कहेल तृण संभारो विगेरे समजतुं. (११)

आ अपर विधि छे ? ते कहे छे. आ उपर बतावेछो विधि भक्त परिज्ञाथी जुदो इंगित मरणनो विधि विशेष प्रकारे वीर वर्द्धमान स्वामीए सम्यक् प्रकारे प्राप्त कर्यो छे, आ बँचै जोडे कहेनाथी अने प्रत्यक्ष समान कहेनाथी (इदं) 'आ' विशेषण मुक्त्युं छे, आ इज्जित मरणमां पण प्रव्रज्या विगेरेनो विधि कहेवो, संलेखना पूर्व माफक जाणवी, तेज प्रमाणे उपकरण विगेरे त्यजीने संभारानी जंग्या बरोयर देखीने आलोचना करी पापथी पाछो हटीने पंच महा त्रत फरी उचरीने चार आहारतुं प्रत्याख्यान करीने संभारामां बेसे, अर्दी आटछुं विशेष छे.

आत्माने छोडे एटले अंग संबन्धी वेपार विशेष प्रकारे त्यजे. त्रिविधि त्रिविधि ते त्रण मन वचन कायाथी करतुं करावतुं अनुमोदतुं विगेरे वधुं आत्म वेपार शिवायतुं त्यागे, जरूर पढतां पासुं फेरवतुं पढे हालतुं पढे अथवा पेशाव विगेरे करवो होय

तो जातेज करे [बीजानीं मदद न ले] वळी वधी सीते प्राणीनुं रक्षण वारंवार करवुं ते वतावे छे.

हरिणसु न निवजिजा, थंडिलं मुणियासए ॥ विओसिज्ज अणाहासे, पुट्टो तरथऽहियासए ॥१३॥

इंदिएहिं गिलायंतो, समियं आहरे सुणी ॥ तहावि से अगहिहे, अचले जे समाहिए ॥१४॥

अभिक्रमे पडिक्रमे, संकुचए पसारए ॥ काय साहारणट्टाए, इरथं वावि अचेयणा ॥१६॥

परिक्रमे परिकिलन्ते, अट्टुवा चिडे अहाथए ॥ टाणे ण परिकिलन्ते, निसोइजाय अंतसो ॥१६॥

हरित ते द्रोणा अकुरा विगोरेमां न सए, पण निर्दोष जग्ग्या जोइने सए, तथा बाल्हा अभ्यन्तर उपधि छोडीने अनाहारी वनीने परिसहो तथा उपसर्गथी फरसायलो पण संथारामां वेठेळो रही सम्यक् प्रकारे सहन करे, (१३) वळी आहारना अमाचे मुनि इन्द्रियोथी ग्लान भाव पामे, तोपण आत्माने समाधिपां राखे एटले शमितो भाव शमिता एटले समभावने धारण करी अर्तियान न करे. तथा जेम समाधान राहे तेम वेसे. एटले संकोचथी खेद पामे तो हाथ विगोरे लांवा करे. तेनाथी पण खेद पामे तो स्थिर चित्ते वेसे. अथवा मुकरर जग्यामां फरे. तेमां पण आ पोते छुट राखेळी होवाथी निंदवा जोग नथी ते केवी छे, ते कहे छे. अचळ ते समाधिपां राहे ते इङ्गित प्रदेशमां पोतानी मेळे शरीर चलावे. पण खेदथी कंटाळी अभ्युदत्त सरणथी चलायमान न थाय. तेथी ते अचळ छे. (शरीरथी हाळे पण शुभ ध्यानथी चलायमान न थाय.) पोते धर्म ध्यान के शुक्लध्यानां मन राखे. अने भावथी निश्चळ रहीने इङ्गित प्रदेशमां संक्रमण विगोरे करे. (१४) ते वतावे छे.

पद्मापकनी अपेक्षाए संसुख ते अतिक्रमण छे. अर्थात् संभारथी दूर जाय, तथा प्रतीप पृट्छे पाछो संभारा तरफ आवे पोताना सुकर भागमां जा आव करे तथा निरपन्न अथवा निषन्न रहीने जेम समाधि रहे तेम भुजा विगेरेने संकोचे अथवा लांबा करे,

प०—शा माटे ? उ०—ते बतावे छे. शरीरनी प्रकृतिना कोमळपणाना साधारण कारणथी करवुं पडे छे. अने कायने साधारणपणुं दोबाथी पीडा भलां आयुना उपायना परिहार बडे पोतानो आयुनी स्थिति क्षय भवाथी मरण भाय. [शरीरनो तेवो स्वभाव दोबाथी ते करवुं पडे छे. पण तेमने महा सत्वपणुं होबाथी शरीरनी पीडा भवाथी चित्तमां खोटो भाव भाय तेम न जाणवुं.]

शंका—जेणे कायानो बधो व्यापार रोकेलो छे. ते सुका लाकडा माफक अचेतन पणे पडेलो होय. तेने पुन्यनो समूह घणो एकठो भयेलो छे. तो शा माटे कायाने हलावे ?

उ०—तेवो नियम नथी, शुद्ध अध्यवसायथी यथाशक्ति भारवहन करवा छलां तेनी बरोबरज कर्म क्षय छे, अहीं वा अव्यय होबाथी जाणवुं के, पादपोषणमनमां अचेतन अक्रिय माफक इङ्गित मरणवाळो सक्रिय होय. तो पण बचे समाजन छे. (बनेनी भावमां समाजता छे. काया संबन्धि इङ्गित मरणमां सक्रिय छे. अने पादपोषणमनमां कायाने हलावचानी नथी. माटे अक्रिय छे.)

अथवा इंगित मरणमां अचेतन सुका लाकडा माफक सर्व क्रिया रहिन जेम पादपोषणमनवाळो होय तेम पोते शक्ति होय तो निश्चल रहे. (१५) तेवुं सापथ्य न होय तो आ प्रमाणे करे. ते कहे छे. जो बेटे अथवा न बेटे, गात्र भंग भाय तो त्यांथी उठीने फरे ते समये सरळ गतिए नियमित भागमां आवजा करे अने थकी जाय तो जेम समाधि रहे तेम बेसे अथवा उभो रहे. जो स्थानमां खेद पासे तो बेसे, अथवा पलांटी मारीने अथवा अडथी पलांटी मारीने अथवा उत्कुटुक आसने बेसे अने थके तो सीधो

वेसे तेमां पण उत्तानक (सीधो उंचे मोडुं राखीने) सुवे अथवा पासुं फेरवे अथवा सीधो सुवे अथवा लगंड्यापी सुवे जेम समाधि रहे तेम करे. (१६) वकी-

आसीणोऽणोलिसं मरणं, इन्द्रियाणि समीरण् ॥ कोलावासं सभासज्ज, वितहं पाउरे सण् ॥१७॥

जओ वज्जं ससुपजे, न तरथ अवलम्बण् ॥ तउ उक्कसे अप्पाणं, फासे तरथऽहियासण् ॥१८॥

अयं चाययतरे सिया, जो एवमणुपालण् ॥ स्वगायनिरोहेऽवि, ठाणाओ नवि उब्भमे ॥१९॥

अयं से उत्तमे धम्ममे, पुवट्टाणस्स पणहे ॥ अचिरं पडिलेहिच्चा; विहरे चिड्ढ माहणे ॥२०॥

प०—शुं आश्रयीने ? उ०—अपूर्व आ मरण छे. अने ते सामान्य माणसने विचारवुं पण दुर्लभ छे.

प०—तेवो वनीने शुं करे ? ते कहे छे. इन्द्रियोना इष्ट अनिष्ट पोताना विषयोथी रागद्वेष न करतां तेने समभावे भेरे कोला-वास (घुणना कीडतुं स्थान) अथवा उग्रइनो समुह चोटैओ देखीने जे चीज होय अथवा तेमां नवी जीवात उत्पन्न न थाय तैवुं जोइने खुहुं देखातुं पोलण रहित पोताने टेको लेवा बोधे. (१७)

इंगित मरणने आश्रयी जे निषेध छे, ते कहे छे. आ अनुष्ठानथी अथवा टेका विगोरेथी वज्र माफक दूर रहे अर्थात् की-दाने थतुं दुःख साधुने वज्र लेप माफक त्यां दोष लागे माटे ते घुणवाळा लाकडानो टेको विगोरे ले नही, तथा उंची निची कायाने करतां अथवा खराब वचनथी अथवा आर्तस्थान विगोरे मनना योगथी पोताना आत्माने दोष लागतो जाणीने तेनाथी दूर रहे अर्थात्

पाप लगवा न दे अने तेमां धैर्य अने संहनन विगेरे मजबुत होय तो शरीरनी वैयावच्च न करे, अने चढला शुभ भावना कंडकवाओ बनी अर्धुव भावनी धाराए चढीने सर्वज्ञना कहेला आगम अनुसारे पदार्थना स्वरूपना निरूपणमां पोतानी मति स्थिर करीने आ शरीर आत्माथी जुहुं छे. माटे त्यागवा जोग छे एओ विचार करीने वधा दुःखना स्पर्शोने तथा अनुकूल मतिकूल आवेला उपसर्ग परीसहोने तथा वातपित्त कफना द्वंद्व अथवा जुदा रोगो आवे तो मारे कर्मक्षय करवानो होवाथी हुं उठ्यो छुं माटे मारेज आ पूर्वे करेलां पापने भोगववा जोइए. आवो विचार करीने दुःख सहै.

कारण के में जे शरीरने त्याग्युं छे. एनेज उपद्रव करसो, पण जे धर्म आचरणने करवुं छे, तेने बाधा लगाडे तेम नथी. माटे तेवुं विचारीने सहै. (१८) इहित मरण कहुं हवे पादपोषणमन अणसण कहे छे. ते जोडाजोड कहेल होवाथी आ विशेषणवडे मरणनो विधि वताव्यो छे. आ आयत तर छे ते वतावे छे. मर्यादानी विधिमां आ उपसर्ग छे. ते संपूर्ण यत यतां आयत शब्द छे. अने उपरना वे अणसण करतां वधारे आयत छे, माटे आयत तर छे.

अथवा उपरना वन्ने अणसणथी अतिशय आत छे. माटे आत्तर छे अर्थात् यत्नथी अध्यवसायवाळा छे. प्रथम कहेला वे अणसण करतां पादपोषणमन वधारे दृढतर छे एमां पण इहित मरणमां कला सुजव मत्रज्या संलेखना विगेरे वयुं जाणवु.

प०—जो आ आयततर छे तो शुं करवुं ? उ०—कहे छे. जे भिक्षुक आ कहेली विधिएज पादपोषणमन विधिने पाळे तथा शरीरना वधा व्यापार छेडवाथी काया तपे अथवा मूर्छा पामे अथवा मरण समुद्रयात आवे, अथवा लोही मांस स्त्रियाळीया गीध कीडीओ विगेरेथी खवाय, पीवाय, तो पण महा सन्नना कारणे पोते जाणे के आ इच्छित मोहुं फळ आन्युं छे तेशी ते स्नानथी

द्रव्यथी, अने भावथी ते शुभ अध्यवसायथी चलायमान न थाय. न बीजा स्थाने जाय. (१९) वळी आ अंतःकरणमां उत्पन्न थावाथी प्रत्यक्ष मरण विधि छे. अने ते सौथी श्रेष्ठ होवाथी पादप उपगमन रूप मरणनो धर्म [विशेष] विधि छे. उत्तम पणाना कारणा वतावे छे. [सूत्रमां छट्टी छे, तेनो पांचमीमां अर्थ लइए तो पूर्व स्थानथी एटले भक्त परिज्ञा तथा इंगित मरणना रूपथी आ प्रकर्षथी ग्रह छे; माटे पूर्व स्थान प्रग्रह छे. अर्थात् प्रग्रहितर छे. ते प्रमाणे जे इहित मरणमां कायाने हलाववानी छुट हती ते पण अहीया नथी. झाडुं मूळ जमीनमां होय, ते पोते वळतुं के छेदातुं स्थानथी खसतुं नथी. तेम पोते साधु झाड माफक चेष्टा क्रिया रहित दुःखयां आवेलो होय तो पण चिलाली पुत्र माफक स्थानथी खसतो नथी. पण त्यांज स्थिर रहे छे ते वतावे छे. अचिर स्थान ते पोताना संथारानी जगया प्रथमथी जोइने कहेली विधिए तेमां रहे. आ पादपउपगमनना अधिकारथी विहरणनो अर्थ विहार न लेतां पोते विधिए पालण करे एम जाणहुं. पण स्थानथी न खसे तेज वतावे छे. वथा गात्रना निरोधमां पण स्थिर रहे पण खसे नहीं.

प०—आवो कोण छे ? उ०—माहण साधु छे. ते वेठो होय उभो होय तो पण शरीरनी खबर राख्या विना जेवी रीते पोते प्रथम कायाने स्थापि होय तेमज अचेतन माफक रहे हाळे नहीं (२०) आज वातने बीजी रीते कहे छे.

अचित्तं तु समासज, टावए तत्थ अप्पमां ॥ वोस्सिरे सबसो कायं, न मे देहे परीसहा ॥२१॥

जावजीवं परीसहा, उवसग्गा इति सङ्ख्या ॥ संबुडे देहभेयाए, इय पन्नेऽहियासए ॥२२॥

भेउरेसु न रजिजा, कामेसु बहुतरेसुवि ॥ इच्छा लोभं न सेविजा, धुववन्नं सपेहिया ॥२३॥

सासएहिं निमन्तिजा, दिवमयं न सहहे ॥ तं पडिबुद्धं माहणे, सबं नूमं विह्वणिया ॥३१॥

चित्त जेमां न होय ते अचेतन (जीव रहित) छे अने तेवी संशरानी जग्या अथवा पाटबुं विगोरे मेऋवीने तेना उपर समर्थ पुरुष बेसे अथवा कोइ लाकडाउपर त्यां आत्माने स्थापन करे अने चार प्रकारनो आहार त्यागीने मेरु पर्वत माफक निरुपकंप रहे प्रथम गुरु पासो आलोचना विगोरे क्रिया करीने आत्माथी देहने दूर करे (मोह छोडे) ते समये जो कोइ परीसह उपसर्गो आवे तो भावना भावे के आ मागी देह हवे नथी कारणके में तेने त्यागी छे तो परिसह मने, केवी सीते लागे ? अथवा मारा शरीरमां परीसहो नथी, कारणके सारी सीते सहेवाथी ते संबन्धी पीडाना उद्वेगनो अभाव छे. एयो परीसहोने कर्म शत्रुने नजीवा माफक अपरीसहोज माने (शत्रुने जीतवाथी आनंद माने तेम परीसहोने जीते) (२१)

प०—ते कथां सुधी सहेवा ? आवी शंका दूर करवा कहे छे. आखी जीदगी सुधी परीसह अने उपसर्ग सहेवा एम जाणीने तेने सहन करे अथवा मने आखी जीदगी सुधी परिसह उपसर्गो नथी एम जाणीने सहे अथवा ज्यां सुधी जीवित छे त्यां सुधी परिसह उपसर्गनी पीडा थाय छे. तो थोडा आंखना पलकारा सुधी आ अवस्थायां हुं रहेल हुं तेवाने तो आ अल्प मात्र छे एम जाणीने कायाने बरोबर संवरीने शरीर त्याग भाटे उठेछो हुं एम मानीने ते मुनि उचित विधानने जाणनारो कायाने पीडा करनारां जे जे कष्ट आवे ते बरोबर सहे. (२२)

आवा साधुने जोहने [आश्वर्य पापीने] कोइ राजा विगोरे भोगोनी निमंत्रणा करे ते वतावे छे. एटले जे भेदावाना स्वभाववाळा छे ते भिदुर शब्द विगोरे पांच काम गुणो छे. तेमां राग न करे (मुनि तेनाथी न ललचाय) अथवा बीजी प्रतिमां “कामेसु

सूत्रम्

॥८०१॥

आचा०

॥८०१॥

वहुलेसुवि” पाठ छे, एटले इच्छा मदनरूप जे काम छे, ते घणा प्रमाणमां होय तेमां न ललचाय अर्थात् ते राजा पोतानी कन्याहुं दान वीगेरे आपवा लोभावे, तो पण तेमां शुद्ध न थाय तथा इच्छा रूप लोभ ते इच्छा लोभ छे ते सुनी आ अणमणहुं फल आवता भवमां मने चक्रवर्तीहुं पद अथवा इन्द्रनी पदवी विगेरे मळो, तेवा अभिलाषहुं नियाणुं पोते निर्जरानी अपेक्षा राखीने सेवे नही (नियाणुं न करे,) जेम देवतानी रिद्धि समान सनत्कुमार चक्रवर्तीनी रिद्धि देखीने ब्रह्मदत्ते पूर्व भवमां नियाणुं कर्हुं तेम पोते न करे ते प्रमाणे आगममां कहुं छे.

आ लोकनी आशंसा माटे तप न करे (१) तथा परलोकनी आशंसा माटे न करे (२) तथा जीवितनी आशंसा न करे, (३) मरणनी आशंसा (४) काम भोगनी आशंसा (५) माटे संलेश्वना तप न करे, विगेरे छे.

वर्ण—संयम अथवा मोक्ष ते दुःखे करीने जणाय छे, अथवा पाठांतरमां ध्रुववच पाठ छे तेनो अर्थ आ छे के अव्यभिचारी ते ध्रुव छे ते ध्रुव वर्ण [संयम] ने अथवा शाश्वती यशकीर्तिने विचारीने काम इच्छा लोभने दूर करे, [२३]

वली आखी जोदगी सुधी क्षय न थवाथी शाश्वत छे अथवा प्रतिदिन दान देवाथी शाश्वत अर्थ छे, तेवा सारा विभववडे कोइ ललचावे तो गुरु शिष्यने समजावे छे के तारे तेमां ललचाहुं नहीं पण विचारहुं के आ धन शरीर माटे लेवाय पण ते नाश-वंत छे, माटे धन नकासुं छे.

तेज प्रमाणे कोइपण रीते देवतानी मायाथी न ललचाय ते कहे छे, जो कोइ देवता परीक्षा करवा अथवा शत्रुपणाथी अथवा भक्तिथी अथवा कौतुक विगेरेथी जुदी जुदी रिद्धिओ बतावी ललचावे तो पण आ देव माया छे एम हुं जाण अने ललचाना नहीं.

कारण के जो ए माया न होय तो आ पुरुष एकदम क्याथी आवे अने आटछुं बधुं दुर्लभ द्रव्य आवा क्षेत्रमां कालमां के भावमां कोण आवे ? आ प्रमाणे देव मायाने तुं जाणी ले अथवा कोइ देवी दिव्यरूप धारण करीने ललचावे तो पण पोते न ललचाय, तेवुं तुं समज. हे साधु ! तुं आ बधी मायाने अथवा कर्म बन्धने जाणीने देव वीगेरेनी कपट जालने समजीने ललचातो नही. (२४)

सवडेहिं अमुच्छिद्य, आउकालस्स पारए ॥ तितिकखं परमं नच्चा, विमोहद्वयरं हियं ॥२५॥

तिबेमि विमोक्षाध्ययनमष्टमं समाप्तम् । उद्देशः ॥ ८-८ ॥

बधा अर्थो, इन्द्रियोना विषयो पांच प्रकारना छे. ते काम गुण छे अथवा तेने प्राप्त करावनार द्रव्य समूह छे. तेमां तुं मूर्खी न पामतो एटले प्राप्त करावनार द्रव्य समूह छे तेमां पोते मूर्खी न पामतो आयु पहीवे त्यां सुधी पोते स्थिर रहै. अने तेनो एटले क्षयं थाय त्यां सुधी रहै ते पारग छे एटले उपर बतावेली विधिए पादपउपगमन अणसणमां रहीने चढता शुभ भाव वढे पोताना आयुना कालनो पार पहीचनारो थाय. आ प्रमाणे पादपउपगमननी विधि बतावीने समाप्त करवा भक्त परिज्ञा विगेरे त्रणे मरणोना कालक्षेत्र पुरुषनी अवस्थाने वीचारीने योग्यता प्रमाणे करे ते छेछा वे पदमां बताव्युं छे. परीसह उपसर्गथी जे दुःख आवे ते बधुं सारी सीते सहन करवुं. ते त्रणे मरणमां सुख्य छे ते विचारीने मोह रहितनां जे मरणे भक्त परिज्ञा इंगित मरण पादपउपगमन छे. ते त्रणेमां काल क्षेत्र विगेरेने आश्रयी उत्तम भावे ते करवाथी बधायां समान फल छे. माटे अभिप्रेत अर्थ मळवाथी हित छे, माटे यथाशक्ति लणमांतुं कोइ पण पोतानी शक्ति प्रमाणे ते अवसरे करवुं. [हाल तेवुं संवयण न होवाथी धैर्य न रहै तेम आयुष्यनो

કાલ વતાવનાર જ્ઞાની સાધુના અભાવે તેવું અણસળ થતું નથી. પણ યથાશક્તિ સાગત્રિક એક બે ઉપવાસનું અથવા કલાક બે કલાકનું અણસળ વૈયાવૈચ્ઞ કરનાર માંદા સાધુની સ્થિરતા જોઈ કરાવે છે. અને તેમાં નિર્મલ ભાવની પ્રધાનતા હોવાથી પૂર્વના મરણ જેવોજ લાભ છે.] આ પ્રમાણે સુધર્માસ્વામિણ કહ્યું નય વિચાર વિગેરે તેમાં થોડું આવી ગયું છે. આઠમા અધ્યયનનો આઠમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત થયો. અને અધ્યયન પળ સમાપ્ત થયું [ટીકાના શ્લોક ૧૦૨૦] આઠમું અધ્યયન સમાપ્ત.

ઉપધાન શ્રુત નામનું નવમું અધ્યયન.

આઠમું અધ્યયન કહ્યું, ફરવે નવમું કહે છે, તેનો આ પ્રમાણે સંબન્ધ છે. કે પૂર્વે આઠ અધ્યયનોમાં જે આચારનો વિષય કહ્યો હતો, તેવો શ્રી વીર વર્ધમાનસ્વામિણ પોતે પાલેલો છે, તેથી તે નવમાં અધ્યયનમાં કહે છે. તેનો આઠમા સાથે આ પ્રમાણે સંબન્ધ છે, કે તેમાં અશુદ્ધત મરણ તળ પ્રકારનું વતાવ્યુ, તેવા કોઈ પળ અણસળમાં રહેલો સાધુ આઠમા અધ્યયનમાં વતાવેલ વિધિણ અતિ ધોર પરીસહ ઉપસર્ગ સહન કરી અને સન્માર્ગનો અવતાર પ્રકટ કરી ચાર યાતિ કર્મનો નાશ કરીને અનંતજ્ઞાન વિગેરે અતિશયોવાલું અપમેય મહાવિષયોનું સ્વ તથા પરનું પ્રકાશકણ એવું કેવલજ્ઞાન મેલવનાર શ્રી મહાવીર પશુને સમોસરણમાં બેઠેલા અને સત્ત્વોના હિત માટે દેજના કરે છે તેમને પોતે ધ્યાનમાં ધ્યાવે, ણટલા માટે આ અધ્યયન કહે છે. આવા સંબન્ધે આવેલા આ અધ્યયનના ચાર અનુયોગદ્વાર કરેવા, તેમાં ઉપક્રમદ્વારમાં અર્થાધિકાર બે પ્રકારે છે, અધ્યયન અર્થાધિકાર તથા ઉદ્દેશાર્થ અધિકાર તેમાં અધ્યયનનો અર્થાધિકાર ટુંકાળમાં પહેલા અધ્યયનમાં કહેલ છે, અને તેનેજ સુલાસાવાર નિર્યુત્તિકાર કહે છે—

जो जइया तित्थयरो, सो तइया अपणो य तित्थमि । वणोइ तवोकम्मं, ओहाणसुयंमि अज्जयणे ॥२७६॥
जे समये जे तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे, ते पोताना तीर्थमां आचरनो विषय कहेवाने छेवटना अध्ययनमां पोते करेला तपनुं वर्णन करे छे, (के बीजा जीवोने पण तेम करवानी रुचि थाय) आ वथा तीर्थंकरो नो कल्प छे, अही तो उपधान श्रुत नामनुं छेहुं अर्थयन [ते विषयनुं] छे, तेशी तेने उपधान श्रुत कहे छे. कोइने शङ्का थाय के जेम वथा तीर्थंकरनुं केवल ज्ञानं समान छे, तेम तप अनुष्ठान समान छे, के ओहुं वधतुं छे ? ते शङ्कानुं निवारण करावा कहे छे;

सव्वेसिं तवोकम्मं निरुवसणं तु वणिणय जिणारणं; । नवरं तु वद्धमाणस्स, सोवसणं सुणेयवडं; ॥२७७॥

तित्थयरो चउनाणी सुरमहिओ सिद्धियन्नय युवमि; । अणियूहियवलविरिओ, तवोविहाणंमि उज्जमइ ॥२७८॥

किं पुण अवसेसेहिं दुक्खवक्खयकारणा सुविहिएहिं । होइ न उज्जमियव्वं सपच्चवार्यंमि माणुस्से ? ॥२७९॥

(त्रणे गायानो अर्थ सरळ होवाथी टीका नथी तो पण हुंकारमां लखीए छीए)

वथा तीर्थंकरो नो तप शाल्लमां उपसर्ग रहित वताव्यो छे [पार्श्वनाथनो थोडो होवाथी गण्यो नथी] पण वद्धमानस्वामिनो तंप उपसर्गवाळो जाणयो. (तेमने संगम देवता विगेरेना यणा उपसर्ग आवेला छे, (२७७)

तीर्थंकर दीक्षा लीधा पळी तुरत मनःपर्यवज्ञान प्रकट यतां चार ज्ञानवाळा थाय छे, देवताओथी पूजाय छे, निश्चये मोक्षमां जनारा छे, तोपण पोताहुं वळ वीर्य न गोपवतां तप विधानमां उद्यम करेछे; (२७८) तो बीजा समान्य गीतार्थ साधु विगेरे ए (तपनो फायदो जाण्या पळी) अने मनुष्यपणाहुं जीवन सोपक्रम (विद्य) वाळुं होवाथी आ माटे तपमां यथाशक्ति उद्यम न करयो ?

હવે અધ્યયનનો અર્થાધિકાર વતાવીને ઉદ્દેશાનો અર્થાધિકાર કહે છે—

ચરિયા ૧ સિજ્ઞા ય ૨ પરીસહાય ૩, આયંક્રિયા (એ) ચિગિચ્છા (ઘ) ય ॥ તવચરણેણડહિગારો, ચઠસુદ્દસેસુ નાયવો ૨૮૦
'ચરણ' ચરાય તે ચર્યા, ણટલે 'વર્ડમાનસ્થામિના વિહારને આ પહેલા ઉદ્દેશામાં વર્ણવ્યો છે.

વીજા ઉદ્દેશામાં ગરયા તે વસતિ (રહેવાનું સ્થાન) જેવું મહાવીરે વાપર્યું છે તેવું વર્ણન છે.

ત્રીજા ઉદ્દેશામાં પરીસહો આવેથી નિર્જરાપાટે ચારિત્ર માર્ગથી ષ્ટ્ર ન થતાં સાધુએ તેને સહન કરવા, અને તેના ઉપલક્ષણથી અનુકૂલ તથા પ્રતિકૂલ વર્ડમાનસ્થામિને જે પરીસહો થયા તે વતાવે છે.

ચોથા ઉદ્દેશામાં ભૂલની પીડામાં વિચિત્ર અભિગ્રહની પ્રાપ્તિમાં આહારવદે ચિકિત્સા [ઉપાય] કરે, અને તપ ચરણનો અધિકાર તો ચારે ઉદ્દેશામાં ચાલે છે, (ગાથાર્થ)

ત્રણ પ્રકારે નિક્ષેપો છે, ઓષનિષ્પત્ત, નામ, અને સૂત્રાલાપક તેમાં ઓષમાં અધ્યયન, નામમાં ઉપધાનશ્રુત ણું વે પદનું નામ છે, તે ઉપધાન અને શ્રુતના યથાક્રમે નિક્ષેપા કરવા એ ન્યાયે ઉપધાન નિક્ષેપનું વર્ણન કરે છે.

નામંઠવણુવહાણં દઢવે ભાવે ય હોહ નાયવં । एमेव य सुत्तस्सवि निक्खेवो चउन्विहो દોહ ॥૨૮૧॥

નામસ્થાપના દ્રવ્ય અને ભાવ એમ ચાર પ્રકારે ઉપધાનના નિક્ષેપા છે, તેજ પ્રમાણે શ્રુતના ણ ચારજ છે, તેમાં દ્રવ્યશ્રુત અનુ-પયુક્ત (ઉપયોગ વિના)નું છે. અથવા દ્રવ્ય મેલવવા માટે જૈનેતરનું છે.

અને ભાવશ્રુત તે અંગ ઉપાંગમાં રહેલું જે શ્રુત છે, તેમાં ઉપયોગ હોય તે, હવે સુગમનામસ્થાપના હોડીને દ્રવ્ય વિગેરે ઉપ-

धान बताववा कहे छे.

दन्तुवहाणं सयणे भावुवहाणं तवो चरित्तस्स । तमहा उ नाणदंसणतवचरणेहिं इहाहिण्यं ॥२८२॥
समीपमां रहीने धारण कराय ते उपधान छे. द्रव्य संबन्धी होय ते द्रव्य उपधान छे. ते पथारी विगेरेमां सुखे सुवा माटे माथा नीचे टेको लेवा ओशीकुं विगेरे सुकाय छे. ते द्रव्य उपधान छे.

अने भावतुं उपधान ते भावोपधान छे, ते ज्ञानदर्शन चारित्र अथवा बाह्यअभ्यंतरतप छे. कारण के तेनावडे चारित्रिमां परिणत थयेला भावबालाने उपपुंभन [आधार] कराय छे. जेथी ते प्रमाणे ज्ञान दर्शन तप अने चरणवडे अहीयां अधिकार छे. गार्थार्थ प०—शा माटे चारित्रिना आधार माटे तपतुं भाव उपधान कहे छे ? उ०—कहीए छीए.

जह खलु महलं वत्थं सुज्झइ उदगाइएहिं दन्वेहिं । एवं भावुवहाणेण सुज्झए कम्ममह्विहिं ॥२८३॥

(यथा उदाहरणना उपन्यास माटे छे. जेमके आ छे. एम बीजुं पण जाणतुं. खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे.) जेम मेळुं वत्त प्रथम पाणी विगेरेथी शुद्ध कराय छे, तेम जीवने पण भाव उपधानरूप बाह्य अभ्यन्तर तपवडे आठे कर्मथी शुद्ध कराय छे. अने अहीया कर्मक्षयना हेतु माटे तपस्यातुं उपधान श्रुतपणे लेवाथी पर्यायो लेवा जोइए. [तत्त भेद अने पर्यायोवडे ज्याख्या थाप छे.] माटे पर्यायो कहे छे. अथवा तप अनुष्ठानवडे अवधूनन विगेरे कर्म ओळां थवाना जे विशेष उपायो संभवे छे ते बतावे छे.

ओधूणण धूणण नासण विणासणं झवण खवण सोहिकरं । डेयण भेयण फेडण, दहणं धुवणं च कम्माणं ॥२८४॥
तेमां अवधूनन, ते अपूर्वरुणवडे कर्म ग्रन्थि भेदतुं उपादान जाणतुं. अने ते तपना कोइ पण भेदना सामर्थ्यथी आ क्रिया

थाय छे. एटले वाक्रीना अगीयार भेदमां पण आ जाणवुं. तथा 'धुनन' ते भिन्न ग्रन्थिवाळाने अनिट्ठिकरणवडे सम्भ्यत्तवर्मां रहेवुं, तथा 'नाशन' कर्म प्रकृतिनुं स्त्रिवुक सङ्गमणवडे एक प्रकृतिनुं वीजी प्रकृतिमां सङ्गमण थवुं, 'विनाशन' शैलेशी अवस्थमां सम्पूर्णताथी कर्मनो अभाव करवो, 'ध्यापन' उपशमश्रेणिमां कर्मनुं उदयमां न आववुं, क्षण ते अपत्यस्थानादि क्रमवडे क्षणश्रेणिमां मोह विगोरेनो अभाव करवो, शुद्धिकर-अनंतानुबन्धीना क्षयना प्रक्रमथी क्षायिक सम्भ्यत्तव मेळववुं, 'हेदन' उत्तरोत्तर शुभ अध्यवसायमां चडवाथी स्थितिनी ओछाश करवी, 'भेदन' ते बादर संपराय अवस्थामां संज्वलनना लोभना खंड खंड करी नाखवा, (फेडण) ति—चौठाणीआ रसवाळी अशुभ प्रकृतिने त्रण रसवाळी विगोरे वनाववी, 'दहन' ते केवलीसमुद्घातरूप ध्यान अग्निवडे वेदनीयकर्मनुं राखतुल्य वनाववुं, अने वाक्रीना कर्मनुं वक्रेळां दोरडा माफक वनाववुं, 'धावन' ते शुभ अध्यवसायथी मिथ्यात्व पुद्दलोनुं सम्भ्यत्तवभावे वनाववुं, आ वधी कर्मनी अवस्थार्थो प्राये उपशमश्रेणी क्षणकश्रेणी केवळि समुद्घात शैलेशी अवस्था प्रकट करवाथी प्रभूत रीते प्रकट थाय छे, [आत्मा निर्मळ करवा कराय छे] एटला माटे प्रक्रमाय (आरंभांय) छे, तेमां उपशमश्रेणीमां प्रथमज अनंतानुबन्धीओनी उपशमनी कहेवाय छे, अहीं असंयतसम्भ्यत्तवट्टि देशविरति प्रमत्त अप्रमत्तमांथी कोइ पण वीजा योगमां जतां आरंभक होय छे, तेमां दर्शन समक एकवडे उपशमाय छे, ते कहे छे.

अनंतानुबन्धी चोकडी, उपरनी त्रण लेख्यामां विशुद्ध होवाथी साकार उपयोगवाळो अंतःकोटीकोटी स्थितिनी सत्तावाळो परिवर्तन थती शुभ प्रकृतिओनेज बांधतो पति समये अशुभ प्रकृतिओना अनुभागने अनंतगुण हानीए ओडी करतो शुभ प्रकृतिओने अनन्त गुण वृद्धिए अनुभाग (रस) मां व्यवस्था करतो पत्योपमना असंख्य भाग हीन उत्तरोत्तर स्थितिवन्ध करतो करणकालथी

पण पहिलां अंतर्मुहूर्तमां विशुद्ध मान वनीने त्रण कारण करे छे, ते परयेक अंतर्मुहूर्तना छे. ते कहे छे—(१) यथा पवना (२) अपूर्व (३) अनिष्टिकरण छे—अथवा चोथीं उपशांतथी थाय छे. तेमां यथा पवना कारणमां दरेक समये अनंत गुण वृद्धिवाकी विशुद्धिने अनुभवे छे. तेमां स्थिति घात, रसघात, गुण श्रेणि, गुण सङ्क्रमण आमांथी कोइ पण होतुं नथी तेज प्रमाणे बीजा अपूर्वकरणमां छे. तेनो परमार्थ कहे छे के तेमां अपूर्व अपूर्व क्रियाने मेळवे छे. तेथी अपूर्व कारण छे. तेमां प्रथम समयेज स्थिति घात रस घात गुणश्रेणि गुण सङ्क्रमण अने अन्य स्थिति बन्ध ए पांच पण अधिकार साथे पूर्वे न होता, अने हवे छे, तेथी अपूर्व कारण छे. ते प्रमाणे अनिष्टिकरणमां अन्य अन्यने परिणामो उद्व्यता नथी. माटे ते अनिष्टित्ति कारण छे. एनो सार आ छे के पहेले समये जे जीवोए आकरण फरस्यो ते बधामां तुल्य परिणाम छे. ए प्रमाणे बीजा समयोमां पण जाणवुं. अर्होया पण पूर्वे वतावेला स्थितिघात विगेरे पांचे पण अधिकार साथे वर्से छे. तेथीज आ त्रण कारणवदे उपर वतावेलां क्रमवदे अंतानुबंधीना कषायोने उपश्रमावे छे.

उपश्रमनुं वर्णन.—जेम थूळ पाणीथी छांटीने लाकडाना थाळावडे कुवो करतां चोंटी जवाथी वायु विगेरेथी उदाहना उतां ते थूळ उडती नथी, तेम कर्म थूळ पण विशुद्धि भावरूप पाणीवडे भिजावी अनिष्टित्ति कारण थाळावडे हणतां कर्मरज शांत यवाथी उदय उदीरण सङ्क्रम निधना निकाचनारूप कारणोने अयोग्य थाय छे. (चीकणो कर्म बंध न थाय) तेमां पण प्रथम समये कर्मदलिक थोडुं उपशांत थाय. अने बीजा तीजा विगेरे समयमां असंख्येय गुण वृद्धिए उपश्रमता अंतर्मुहूर्तमां बंधुं शांत थाय छे. आ प्रमाणे एक मतवदे अनन्तानुबन्धीनो उपश्रम वताव्यो.

बीजा आचार्योनी मतभेद.—अन्तानुबन्धीनी विसंयोजना वतावे छे, तेमां क्षायोपश्रमिक सम्यग्दृष्टि जीवो त्रार गतिमां रहेला

हे. तेमां पण अनंतानुबन्धीना विसंयोजको हे. तेमां नारक अने देव अतिरित सम्यग्दृष्टिओ हे, तथा तिर्थंचो अतिरित देशविरत हे. मनुष्यो अतिरित देश विरत प्रमत्त अप्रमत्त हे.

ए वधा पण यथा संभव विशोधि विवेक वडे परिणत थयेला अनंतानुबन्धीनी विसंयोजना माटे पूर्वे कहेल करण त्रण करे हे. तेमां पण अनंतानुबन्धीनी स्थितिने अपवर्तन करतो पत्योपमना असंख्येय भाग मात्र वनावे हे. अने पत्योपमना असंख्येय भाग जेटली मोह प्रकृतिओ जे वन्धाय हे, तेने प्रति समये सङ्गमावे हे. तेमां पण प्रथम समये स्तोक अने त्यार पळीना समयोमां असंख्येय गुण सङ्गमावे हे. ए प्रमाणे छेछा समयमां वथासङ्गमवडे आवलिका जेटलाने छोडी बाकीनी सर्वे सङ्गमावे हे. अने पळी आ-वलिकामां रहेल पण स्तिबुक सङ्गमवडे वेदांती वीजी प्रकृतिओमां सङ्गमावे हे. ए प्रमाणे अनंतानुबन्धी कषायो विसंयोजित थायडे. दर्शन त्रिकनी उपशमना.—तेमां मिथ्यात्वनो उपशमक मिथ्यादृष्टि हे, अथवा वेदक सम्यग्दृष्टि हे पण सम्यक्तत्र के सम्यग्मिथ्यात्वनो वेदक तेज उपशमक हे.

तेमां मिथ्यात्वनो उपशम करतो तेनुं अंतर करीने प्रथम स्थितिने विपाकवडे भोगवीने मिथ्यात्वनो उपशम करतो, उपशांत मिथ्यात्वी वने हे. अने उपशम सम्यग्दृष्टि थाय हे. हवे वेदक सम्यग्दृष्टि जीव उपशम श्रेणीने स्वीकारतो अनंतानुबन्धीने वीसंयोजीने संयममां रहेलो आ विधिए दर्शनत्रिकने उपशमावे हे तेमां यथा प्रवृत्त विभेरे पहेला वतावेळ त्रण करणेने करीने अंतर-करण करतो वेदक सम्यक्तत्रवनी पहेली स्थितिने अंतर्मुहूर्तनी वनावे हे. अने बाकीनी आवलिका मात्र वनावे हे. त्यार पळी थोडी ओळी एवी मुहूर्त मात्रनी स्थिति खंड खंड करीने वध्यमान प्रकृतिओने स्थितिवन्ध मात्र काळवडे ते कर्मना दळियाने सम्यक्तत्रवनी

प्रथम स्थितिमां पक्षेय करतो आ प्रक्रियावडे सम्यक्तवना वन्धना अभावथी अंतर क्रियमाण करेळुं थायं हे. मिथ्यांल सम्यक् मि-
थ्याल प्रथम स्थिति दलिकने आवलिकाना परिमाण मात्र सम्यक्तवनी प्रथम स्थितिमां स्तिबुक सङ्गमवडे सङ्गमवे हे. तेमां पण
सम्यक्तवनी प्रथम स्थिति क्षीण यतां उपशांत दर्शनत्रिकवाळो थाय हे. त्यार पळी चारित्रमोहनीयने उपशमावतो पूर्व माफक त्रण
करण करे हे. एमां विशेष आ हे. यथा पवृत्त करण अपमत्त गुणस्थानेज थाय हे. अने बीजुं अपूर्वकरण तो आठमुं गुणस्थान हे.
तेना प्रथम समयेज स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणि, गुणसङ्गम, अपूर्वस्थितिवंध, ए पांचे अधिकार साथे प्रवर्त्ते हे. तेमां अपूर्वकरणना
संख्येय भाग जतां निद्रा प्रचलाना वंधनो व्यवच्छेद थाय हे. तेमां पण घणां हजार स्थितिनां कंडको गये जते छेळा समयमां
बीजा भवनी नाम प्रकृतिनी त्रीस प्रकृतिना वंधनो व्यवच्छेद करे ते आ प्रमाणे हे.

(१) देवगति (२) अनुपूर्वी (३) पंचेद्रिय जाति, (४) वैक्रिय (५) आहारक शरीर अने ते (६-७) बन्नेना अंगोपांग,
(८) तेजस (९) कार्मण शरीर (१०) समचतुरस्र संस्थान (११ थी १४) वर्ण गंध रस स्पर्श (१५) अगुरुलघु (१६) उपघात
(१७) पराघात (१८) उच्छ्वास (१९) प्रशास्त्रविहायोगति (२०) त्रस (२१) वादर (२२) पर्यास (२३) मत्त्येक (२४) स्थिर
(२५) शुभ (२६) सुभगा (२७) सुस्तर (२८) आदेय (२९) निर्माण (३०) तीर्थङ्करनाम तेथी अपूर्व करणना छेळा समयमां
हास्य रति भय जुगुप्साना वधनो व्यवच्छेद थाय हे. अने हास्यादि पटकना उदयनो व्यवच्छेद थाय हे. वधा कर्मनो अपशस्तनो
उपशम निद्रत निकाचना करवानुं व्यवच्छेद थाय हे. (टीकाना काडसमां लखुं हे के देशना उपशमनो व्यवच्छेद थाय हे) तेथी
ए प्रमाणे असंयत सम्यग्दृष्टि विनोरेथी अपूर्वकरणना अंत सुधी सात कर्मोनी उपशांत मेळ्वाय हे. त्यार पळी अनिष्टनिकरण हे.

અને તે નવમો ગુણ (ગુણસ્થાન) તેમાં રહેલો એકવીસ મોહ પ્રકૃતિનો અંતર કરીને નવુંસક વેદને ઉપશમાવે છે. ત્યારપછી સ્ત્રી વેદ પછી હાસ્યાદિ ષટક પછી પુરુષ વેદના વન્ધ ઉદયનો વ્યવચ્છેદ થાય છે. ત્યાર પછી બે આવલિકામાં એક સમય ઓછે પું વેદનો ઉપશમ થાય છે. ત્યાર પછી બે ક્રોધનો અને પછી સંજ્વલન ક્રોધનો, પછી એજ પ્રમાણે માનવિક અને માયાત્રિકનો ઉપશમ કરે છે. ત્યાર પછી સંજ્વલન લોભના સૂક્ષ્મ સંડો વનાવે છે. અને તે કરણના કાલના ચરમ સમયમાં વચલા બે લોભને ઉપશમાવે છે. આ પ્રમાણે અનિવૃત્તિકરણના અંતમાં સત્તાવીસ પ્રકૃતિ ઉપશાંત થાય છે, ત્યાર પછી સૂક્ષ્મ સંડોને અનુભવતો સૂક્ષ્મસંપરાયવાલો થાય છે. (દશસું ગુણસ્થાન ફરસે છે.) તેના અંતમાં જ્ઞાન અંતરાય દશક દર્શનાવર્ણ ચતુષ્ક યશકીર્તિ અને ઉંચ ગોત્ર એમ સોલ પ્રકૃતિના વન્ધનો વ્યવચ્છેદ થાય છે. એ પ્રમાણે મોહનીય કર્મની ૨૮ પ્રકૃતિ સંજ્વલન લોભ ઉપશમાવતાં ઉપશાંત વીતરાગ થાય છે, (અગીયારસું ગુણસ્થાન ફરસે છે.)

અને તે જવન્ધથી એક સમય અને તે ઉત્કૃષ્ટથી અંતર્મૂર્તિ છે. અને તે ગુણસ્થાનેથી પડવાનું કારણ કાંતો મનુષ્ય ભવ સમાપ્ત થાય અથવા કાલ ક્ષય થાય. અને તે જેમ વહેલો છે અને વંધાદિ વ્યવચ્છેદ કરે છે, તેજ પ્રમાણે પાછો પડતાં કર્મ વંધ વાંધે છે. અને તેમાંથી કોઈ પડતાં મિથ્યાત્વ નામના પહેલા ગુણસ્થાને પળ જાય છે. અને જે ભયક્ષયથી પડે છે, તેને પહેલા સમયમાં જ વધા કરાવો પ્રવર્તે છે. કોઈ તો એક ભવમાં પળ બે વાર ઉપશમશ્રેણિ કરે છે.

ક્ષપકશ્રેણિનું વર્ણન.

આ શ્રેણી કરનાર મનુષ્યજ આઠ વરસની ઉપરનો 'આરંભક' હોય છે. અને તે પ્રથમજ-કરણત્રય પૂર્વક અંતંતાનુવન્ધી કષાયોને

विसंयोजे छे. (दूर करे छे.) पछी करण त्रण पूर्वकज मिथ्यात्वने अने तेमां बाकी रहेल भागने सम्यग् मिथ्यात्वमां नांखतो खपावे छे. ए प्रमाणे सम्यग् मिथ्यात्वने पण खपावे पण विशेष एटछुं छे के तेमां बाकी रहेलने सम्यक्तवमां नांखे छे एज प्रमाणे सम्यक्तवने खपावे छे. अने तेना छेछा समयमां वेदक (क्षयउपशम) सम्यग् दृष्टि थाय छे त्यार पछी क्षायिक सम्यग् दृष्टि थाय छे. आ सात कर्म प्रकृतिओ असंयत सम्यग् दृष्टिथी लईने अपमत्त गुणस्थान सुधी खपावे छे अने आ सम्यक्तव पान्या पहेलां जो आयु वन्धायुं होय तो श्रेणिक राजा माफक त्यांज टके छे. पण जेणे आयु वांध्युं नथी अने क्षायिक समक्ति मेळव्युं छे. तेवो कषाय अष्टकने खपाववा करणत्रय पूर्वक आरंभे छे. त्यां यथा प्रवृत्त करण अपमत्तनेज होय छे अपूर्व करणमां तो स्थितिघात विगरे पूर्वनी माफक निद्राद्विक अने देवगति विगरे त्रीस तथा हास्यादि चतुष्टकनो यथाक्रम बंध व्यवच्छेद उपशमश्रेणिना क्रम माफक कहेवो अने अनिदृत्तिकरणमां तो थीणद्वि त्रिक नरक तिर्यच गति तेनी अनुपूर्वि एकेद्रिय आदि चार जाति आतप उद्योत स्थावर सूक्ष्म साधारण ए सोल प्रकृतिनो क्षय थाय छे. पछी आठ कषायनो क्षय थाय छे.

बीजा आचार्यने मते प्रथम कषाय अष्टकने खपावे छे. त्यारपछी उपर कहेली सोल प्रकृति खपावे छे. त्यार पछी नपुंसक वेद त्यार पछी हास्यादि षटक पछी पुरुष वेद पछी स्त्री वेद खपावे छे. पछी अनुक्रमे क्रोधथी माया सुधी त्रण संज्वलन कषायने खपावे छे. अने संज्वलन लोभना खंड खंड करी तेमांना बादर खंडोने खपावतो अनिदृत्ति बादर गुणस्थानबालो होय छे. अने सूक्ष्म खंडोने खपावतो सूक्ष्म संपराय होय छे. तेना अंतमां ज्ञानावरणीनी दर्शनावरणीनी अतरायनी तथा यशकीर्ति उंच गोत्र मळी सोल प्रकृतिनो बंध व्यवच्छेद करे छे. पछी क्षीण मोही बनीने अंतर्मुहूर्ते रहीने तेना अन्तमां छेछा समयना पहेलामां बे निद्राने

खपावे हे.अन्त समयमां ज्ञान आवरण अने अंतरंग्य पंचक तथा दर्शन आवरण चतुष्क खपावीने आवरण रहित ज्ञान दर्शनवाळी केवळी (सर्वज्ञ) वने हे. अने ते फक्त एकज सात्तावेदनीय कर्मने सयोगी गुणस्थान सुधी बांधे हे. आ गुणस्थाने जवन्व्यथी केवळी अंतर्मुहूर्त अने उत्प्लुष्टथी पूर्व कोडीमां थोडुं ओडुं आयु सुधी होय हे. त्यार पळी आ केवळी भगवानने मालम पढे के अंतर्मुहूर्त आयु वाकी हे. अने वेदनीय कर्म घणुं वधारे हे तो वन्नेनी.स्थिति सरसी करवा केवळी समुद्धात अनुक्रमे करे हे.

केवळी समुद्धातनुं वर्णन.

औदारिक कायना योगवाळी आ लोकना अंत सुधी उंचे नीचे पहेंचे त्यां सुधी करीरना परीणाह (अव-गाहनाना) प्रमाणनो प्रथम समयमां दंड आकार वनावे हे. वीजा समयमां तीळीं दिशाभां लोकांत पुरवा माटे कपाट (कमाड) माफक औदारिक कार्मण शरीरना योगमां रहींने वनावे हे. वीजा समयमां खुणाथो पुरवा माटे कार्मण शरीर योगमां रहींने मन्थान (मथणी) माफक वनावे हे. अने ते सम श्रेणि पळी श्रेणि लेवाथी लोकनो घणो भाग प्राये पुराय हे. अने चोथा समयमां कार्मण योगवडेज मंथानना वचमां रहेला आंतरा पुरवा माटे निष्कृत्वडे पुरे हे तेज प्रमाणे उलटा क्रमे वीजा चार समयमां ते व्यापारने संकेलता ते ते योगवाळो थाय हे. फक्त 'छट्टा' समयमां मंथाननो उपसंहार करतां औदारिक मिश्रयोगी थाय हे. ते प्रमाणे केवळी भगवान समुद्धातने संहरीने पळी फलक विगेरे पोते जे गृहस्थ पासे लीधुं होय ते पाहुं सोपीने योगनो निरोध करे हे.

योग निरोधनुं वर्णनः

प्रथम वादर मन योगने रोके हे. पळी वचन योगने अने काय योग जे वादर होय तेने रांके हे पळी एज क्रमे सूक्ष्म मनो-

યોગ રોકે છે. પછી સૂક્ષ્મ વચનયોગ રોકે છે. ત્યાર પછી સૂક્ષ્મ કાચ યોગને રોકતો અંપતિપાતિ નામના શુક્રધ્યાનના ત્રીજા ખેદને આરોહે છે અને સૂક્ષ્મ ક્રિયાને રોકતો વિશેષ કરીને ક્રિયા રોકીને અનિદ્રિતિ નામના શુક્રધ્યાનના ચોથા પાયાને આરોહે છે. અને તેમાં આઠ થયેલો અયોગી કેવલી માવને પામેલો અન્તર્મુહર્ત જયન્ત્ય ઉત્કૃષ્ટથી રહે છે. તેમાં જે જે કર્મનો ઉદય આવેલ નથી તે તે કર્મોને સ્થિતિના ક્ષયવદે રાખાવતો અને વેદાતિ પદ્ધતિને બીજી પદ્ધતિમાં સંક્રમવાતો રાખાવતો હેવદના પહેલા સમયમાં આવે છે. તે વચ્ચે દેવગતિ સાથેની કર્મ પદ્ધતિઓ રાખાવે છે.

દેવગતિ અનુપૂર્વી વૈક્રિય આહારક શરીર વન્નેનાં અંગોપાંગ અને વન્ધન અને સદ્ગત તથા બીજી પદ્ધતિઓ રાખાવે છે ઔદારિક તેજસ કર્મણ ણ ત્રણ શરીર તેનાં વન્ધન અને સદ્ગતન હ સસ્થાન હ સદ્ગયણ ઔદારિક શરીરના અંગોપાંગ વર્ણ ગંધ રસ ફરસ મનુષ્ય અનુપૂર્વી અગુરુ લઘુ હપવાત પરાવાત ઉચ્ચવાસ પ્રશસ્ત અપ્રશસ્ત વિહાયોગતિ તથા અપર્યાસિ મત્યેક સ્થિર અસ્થિર શુભ અશુભ સુખગ દુર્ભગ સુસ્વર દુઃસ્વર અનાદેય, અયશ્કીર્તિ નિર્માણ નીચગોચ કોઈ પણ એક વેદનીય કર્મ રાખાવે છે.

અને હેછા સમયમાં તો ૧ મનુષ્ય ગતિ ૨ પર્વેન્દ્રિય જાતિ ૩ ત્રસ ૪ વાદર ૫ પર્યાસ ૬ સુખગ ૭ આદેય ૮ મશ્નઃ કીર્તિ ૯ તિર્થંકર નામ ૧૦ કોઈ એક વેદનીય કર્મ ૧૧ આયુ ૧૨ હવ ગોત્ર ણ પ્રકૃતિઓ તીર્થંકર રાખાવે છે, અને કોઈ આચાર્યને મતે અનુપૂર્વી સહિત તેર પ્રકૃતિઓ રાખાવે છે, અને તીર્થંકર ન હોય, તે પ્રથમ વતાવેલી વાર અથવા અગ્યાર રાખાવે છે, સંપૂર્ણ કર્મ ક્ષય કર્યા પછી તુરતજ અસ્પર્શ ગતિ ણ એકાંતિક અત્યંતિક અનાવાય લક્ષણવાલા સુવને અનુભવતો સિદ્ધ સ્થાન જે લોકના અગ્ર ભાગે છે, ત્યાં પહોંચે છે.

हवे उपसंहार करता तीर्थङ्करता आ सेवनथी बीजा जीवोने प्ररोचनता थाय, ते वताववा कहे छे.

एवं तु सप्तशुचिद्रं, वीरदरेणं महाणु भावेणं । जं अणुचरित्तु धारा, सीत्रमचलं ज्ञानि निव्रणं ॥२८४॥

आ प्रमाणे कहेली विधिण ज्ञानादि भाव उपधान अथवा तपने वीरवर्द्धमान स्वामिण स्वयं आदर्यो छे, तो बीजा पण मोक्षा-
भिलाषीण आदरवो. (गाथार्थ)

ब्रह्मचर्य अध्ययनती निर्युक्ति समाप्त भइ.

हवे सूत्रानुगममां सूत्र उच्चारहुं ते कहे छे—

अहासुयं वहस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्टाए ॥ संखाए तसि हेमंते, अहुणो पवइए रीइरथा ॥१॥

आर्य सुधर्मस्वामीने पूछवाथी जंबूस्वामीने पोते कहे छे, यथाश्रुत अथवा यथा सूत्र हुं कहीबा, ते आ प्रमाणे—

ते श्रमण भगवान् महावीर स्वामी उद्यत विहार स्वीकारीने सर्व अलंकार (भूषण) त्यागीने पांच सुठी लोच करीने इंद्रे आपेला

एक देवदूख्य वल्ल धारण करी सामायिकनी प्रतिज्ञा उच्चरीने मनपर्यवज्ञान उत्पन्न थएला आठ प्रकारना कर्म क्षय करवा माटे
अने तीर्थ प्रवर्त्तिववा माटे उद्यत विहारवाळा बनीने तत्त्वने जाणीने ते हेमंत रतुमां मागसर (गुजराती कारतक) मासमां वद १०ना
रोज प्राचीनगामिनी छया (आथमतो सूर्य) यतां दीक्षा लइने विहार कर्यो. अने कुंड ग्रामथी बे घडी दीवस वाकी रहे कर्मार गामे
आव्या अने त्यां भगवान आव्या पछी अनेक प्रकारना अभिग्रह धारण करीने घोर परीसह सहन करता महासत्वपणे मलेच्छोने
पण क्षांति पमाडता वार वर्षथी काइक अधिक छद्मस्थपणे मौनवत लइ तप आदर्यो अहीयां भगवाने सामायक उचर्युं, त्यारपछी इद्रे

भगवान् उपर देवदूत्य वस्त्र स्वभे मुक्त्युं तेषी भगवाने पण निःसंग अभिप्रायवद्देज धर्मोपकरण विना बीजा मुमुक्षुओथी पण धर्मो शवो अशक्य छे. ए कारणनी अपेक्षाए मध्यस्थ वृत्तिए तेज प्रमाणे धारण कर्युं, पण तेना उपभोगनी इच्छा नथी, एम जाणवुं ते बताववा कहे छे.

णो चैविमेण वत्थेण पिहिससामि तंसि हेमंते । से पारए आवकहाए, एयं खु अणुधम्मियं तस्स ॥२॥
 चत्तारिसाहिए मासे, बहवे पाणजाइया आगम्म । अभिरुज्झ कायं विहरिसु, आरुसिया णं तत्थ हिंसिसु ॥३॥
 संवच्छरं साहियं मासं जं न रिक्कासि वत्थणं भगवं । अचेत्तए तओ चाइ तं वोस्सिज्ज वत्थमणगारे ॥४॥

भगवान् विचारे छे के इंद्रे आपेला आ वस्त्रवडे आ मारा शरीर आत्माने दांकीय नहीं. अथवा हेमंत (शीयाळा) नी ऋतुमां ते वस्त्रवडे शरीरतुं रक्षण करीय नहीं अथवा लज्जा माटे वस्त्र धारण नहीं करूं. ते भगवान् केवा छे ? ते बतावे छे.

ते भगवान् प्रतिज्ञाने पुरी करे छे. अथवा परीषहो अथवा संसारथी पार जाय छे.
 प०—केटलो काळ ? ते कहे छे. आरवी जीदगी सुधी. प०—शा माटे आम राखे छे ?

उ०—ते वस्त्र धारण करवाथी एम बतावुं के पूर्वना तीर्थङ्करोए ते प्रमाणे वस्त्र धारण कर्युं छे. (खु अब्रधारणना अर्थमां छे. अने ते भिन्न क्रम बतावे छे) बीजा तीर्थङ्करोतुं वस्त्र धारण करवुं आगम पाठथी बतावे छे.

“ से वेमि जे य अइया जे य पडुपत्ता जे य आंगमेस्सा अरहेता भगवन्तो जे य पन्नयन्ति जे अ पव्वइ-

स्सन्ति सव्वे ते सोव्वही धम्मो देसिअवोत्तिकट्टु तिथयधम्मयाए एसाऽणुधम्मिगत्ति एणं देवदूसमायाए पव्वइंसु वा पव्वयंति वा पव्वइस्सन्ति व ” ति,

ते हुं कहुं छं, पूर्वे जे अनन्ता तीर्थङ्करो थया जेओ हाल उत्पन्न याय छे. अने भविष्यमां थशे. जेमणे दीक्षा लीधी छे अने भविष्यमां छेशे. तेओ वधाए उपधिवाळो धर्म शिष्यो माटे बताववो एम विचारी पोते आ धर्मनो मारग छे एम जाणीने एक देव दूष्य इन्द्र पासे दीक्षायां लीधुं छे. वर्तमानमां छे अने भविष्यमां छेशे. वकी कहुं छे के—

गरियस्त्वात्सचेत्तस्य, धर्मस्यान्यैस्तथागतैः । शिष्यस्य प्रत्ययाच्चैव, वखं दधे न लज्जया ॥ १ ॥

वख सहित साधुना धर्मनुं विशेषणुं होवाथी बीजा तीर्थङ्करोए पण शिष्यना विश्वास माटे वख धारण कर्युं छे. पण रुज्जाने माटे धारण कर्युं नथी. तथा भगवाने दीक्षा लीधा पढी जे देवता संबंधी सुगंध पट लागेल हतो (देवताए सुगंधीनुं विलेपन कर्युं हतुं) तेथी तेनी सुगंधीथी खेचाइ आवेला भमरा विगेरे भगवानना शरीरने दुःख आपता हता ते बतावे छे. चार महीनाथी पण वधारे घणा प्राणीओ भमरा विगेरे शरीरमां डंख मारता हता अने मांस लोहीना अर्थी वनीने करडीने आप तेम दुःख देता हता (ते पशुए समभावे सहुं.) प०—भगवान पासे क्यां सुधी ते देव दूष्य वख रहुं.

उ०—ते इंद्रे आपेछुं वख एक वरसथी काइक अधिक मास सुधी रहुं त्यां सुधी भगवान कल्पमां रहाछे. माटे त्याणुं नही. त्थार पढी वखने त्यागनारा थया अर्थात् भगवान वख त्यागीने अचेल थया, अने ते सुवर्ण वाळुका नदीना पूरमां आवेला कांटायां भरायछुं ब्राह्मणे लीधुं, वकी—

अदु पोरिसिं तिरियं भित्तिं चक्खुमासज्ज अन्तो सो झायइ । अह चक्खुभीया संहिया ते हन्ता हन्ता
 बहवे कंदिसु ॥ ५ ॥ सयणेहिं वितिमिस्सेहिं इरिथओ तत्थ से परिज्ञाय । सागारियं न सेवेइ य,
 से सयं पवेसिया झाइ ॥ ६ ॥ जे के इमे अगारत्था मीसीभावं पहाय से झाई । पुट्टोवि नाभिभा-
 सिंसु गच्छई नाइवत्तइ अञ्ज ॥ ७ ॥ णो सुकरमेयमेगेसिं नाभिभासे य अभिवायत्ताणे । ह्यपुवे
 तत्थ दण्डेहिं लूसियपुवे अप्पपुणोहिं ॥ ८ ॥

पढी पुरुष प्रमाण पोरसी आत्म प्रमाण वीथी (मारग) जग्या शोधता विहार करे छे, अर्थात् साधुने चालतां तेज. ध्यान छे
 के पोतानी उंचाइ जेटली जग्या शोधीने चालहुं.

प०—केवी वीथी छे ? उ०—तीर्यंग भिति गाडानी धुंसरी प्रमाण मोठा आगळ सांकडी अने आगळ जतां पहेकी हीय छे
 ते प्रमाणे भगवान जुए छे. प०—केवी रीते जुए छे ? उ०—आंखे बरोबर ध्यान राखीने तेमां जुए छे. तेवी रीते चालनारने
 जोइने कोइ बरत कोइ बालक कुमार विगरे पीडा करे ते बतावे छे.

(अहीं चछु शब्ददर्शननो पर्याय छे.) एटले तेमना दर्शनधीज हरेला एकठा थयेला घणां बालक विगरे धूळनी सुठी विगरेथी
 हणी हणीने चाला पाडवा लग्या. अने बीजा बालकोने बोलावीने कहुं—जुओ ! आ नागो मुंडीओ छे. तथा आ कोण छे ?
 क्यांथी आब्यो छे ? अने आ कोना संबन्धी छे ? आवी रीते कोलाहल कर्यो. (५) वकी जेनामां सुवाय ते शयन ते रहेवाहुं स्थान

छे. तेसां कोइ निमित्तथी भेगा मळेला गृहस्थ अथवा वीजा दर्शनवाळाओथी भेगा थतां तेमने एकला जोइने कोइ वखत स्त्रीओ पार्थना करे छे. तेथी तेओ शुभ मार्गमां भुंगळ समान ज्ञ परिज्ञावडे तेमने जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे त्यागता मैथुनने सेवना नथी, अने ज्यारे पोते एकला पण शून्य घरमां होय त्यारे भाव मैथुन पण सेवता नथी. आ प्रमाणे ते भगवान पोताना आत्मावडे वैराग्य मार्गे आत्माने दोरीने धर्मध्यान अथवा शुक्लध्यान ध्याय छे. (६)

तेज प्रमाणे केटलाक घरमां रहेनार अगारस्थ जे गृहस्थो छे. तेओ साथे कारण पडतां एकमेक थतां पण द्रव्यथी अने भावथी मिश्र भाव छोडीने ते भगवान धर्मध्यान ध्याय छे. (तेमनी साथे कोइ पण जातनी वातचीत करता नथी.)

प०—शा माटे भगवान बोलाव्याथी अथवा न बोलाव्याथी बोळता नथी. उ०—पोताना कार्य माटेज जाय छे. तेटला माटे तेओ बोलावे तो पण भगवान मोक्ष पंथने अथवा पोताना ध्यानने छोडता नथी. कारण के पोते संयम अनुष्ठानमां वर्तता होवार्थी ऋजु (सरळ) छे आ संबंधमां नागार्जुनीया करे छे.

पुट्टो व सो अपुट्टो व, णो अणुबाइ पावगं भगवं ॥

कोइ ग्रहस्थ पूछे, अथवा न पण पूछे, तो पण भगवान पोते पापनी संमति आपता नथी—

प०—हवे कहेवती वात वीजाओने सुकर नथी (पण दुष्कर छे) तेथी अन्य प्राकृत पुरुषोथी पळाय तेम नथी, छतां पण भगवाने शा माटे ते आचरुं ? ते वतावे छे—बोलावनारा बोलावे तो पण प्रसन्न थइने बोळता नथी, अने जे नथी बोलावता, तेमना उपर कोपता नथी, तेमज प्रतिकूल उपसर्ग करवाथी पण भगवान तेना उपर विरुप भाव करता नथी ते वतावे छे, भगवान ज्यारे

अनार्य (जंगली) देश विगेरेमां विचर्या त्यारे भगवानने ते अनार्य पापीओए प्रथम दंडावढे मार्या, तेज प्रमाणे केश विगेरे खंची तोहीने दुःखी कर्या वकी—

परुसाइं दुत्तितिव्वाइ अइअच्चं मुणी परक्कममाणे । आधायनट्ठगियाईं दण्डजुद्धाईं मुट्टिजुद्धाईं ॥९॥

परुष (कर्कश) वचनोथी बीजा पापीओ दुःख देतां, तेवा कठोर तिरस्कारने भगवाने न गणतां जगतता स्वभावने जाणता भगवान चारित्रमां पराक्रम वतावी सहन करता तथा (कोइनां प्रेमभावना) गायेलां गीतो अने करेला नाचोथी पोते कौतक मानता नहोता. तथा दंड युद्ध तथा मुक्काबाजीनी कुरती यवानी सांभकी आश्चर्य मानीने खीलेला नेत्रवाळा तथा रोमरांजी विकस्वरवाळा उत्सुक यता नहोता.

गट्टिए मिट्टुकहासु समयंमि नायसुए विसोणे अदक्खु । एयइ से उरालाईं गच्छंइ नायपुत्ते असरणयाए ॥१०॥

अवि साहिए दुवे वासे सोओदं अभुत्तवा निक्खन्ते । एगतगए पिहियच्चै से अहिन्नायदंसणे सन्ते ॥११॥

ए प्रमाणे कोइ मांहेमाहे कथा करता होय. अथवा कोइ पोताना सिद्धांतमां कदाग्रही होय, अथवा वे स्त्रीओ पोतानी कथामां रक्त होय, ते समये भगवान महावीर हर्ष शोक छोडीने ते बधानी कथामां मध्यस्थ रहीने जोता हता, अने ए तथा बीजा अनुकूल पतिकूल परिपह उपसर्ग यतां उदार (अतिशय) न सहन थाय तेवा दुःखो आवे तो पण पोते न गणतां संयमअनुष्ठानमां रहेला छे. तथा ज्ञात नामना जे क्षत्रीओ तेमना वंशमां जे जन्मेला छे ते ज्ञात पुत्र महावीर आ दुःखने स्मरणमां लावता

नथी. (पण चारित्र्य निर्मल पाळे छे.)

अथवा शरण ते घर छे. ते नथी माटे अशरण छे. अने ते संयम छे ते माटे पीते यत्न करे छे. ते वतावे छे, एषां आश्रय श्रुं छे के भगवान अतिशय वळ पराक्रमवाळा महाव्रत पाळवानी प्रतिज्ञारूप मेरु पर्वते चढेला पराक्रम करे छे ? ते भगवान महावीरे ज्यारे दीक्षा नहोती लीधी त्यारे पण निर्दोष प्राप्त आहारथी निर्वाह करता हता ते संबंधी कया कहे छे. ज्यारे भगवान महावीरना माता पिता देवलोकमां गयां त्यारे भगवान महावीरे मातानां गर्भमां जरा न हालवाथी माने अतिशय दुःख थयुं हतुं अने ज्यारे पोते हालया त्यारेज माताने थीरज थइ हती, तेथी ते समये अवधिज्ञाने मातानो अभिप्राय जाणानार महावीरप्रभुए अभिग्रह कर्पो हतो के मारा वियोगथी माता पिता कर्माते न मरो, ते हेतुने ध्यानमां राखी 'मारे माता पिता जीवतां सुधी दीक्षा न लेवी.' अने ते प्रमाणे अठावीस वरसनी पोतानी उमर थतां माता पिता देवलोकमां गयां. त्यारे अभिग्रहनी प्रतिज्ञा पुरी थइ एम जाणीने दीक्षा लेवानी तैयारी करी ते समये नंदीवर्धन नामना मोटाभाइ तथा ज्ञाति वंशुओए प्रभुने प्रार्थना करी के हे प्रभु ! 'या उपर खार डांडवा जेवु' माता पिताना वियोगना दुःखमां तमारो वियोग न करो. भगवान महावीरे आ सांभळीने अवधिज्ञाने जाण्युं के मारा आ दीक्षाना समयमां घणा मनुष्यो वेळा थशे, अने मरी जशे, एवुं विचारीने तेओने कहुं के मारे केटलो काळ रोकावुं पडशे ? तेओए कहुं के अपने वे वरसमां शोक दूर थशे. प्रभुए कहुं के टीक छे, पण आहार विगेरे लेवुं ते मारी इच्छाए थशे पण ते इच्छा तोडवा तमारे न आववुं. तेओए विचारुं के कोइ पण रीते भगवान रहो एम मानीने तेमणे हा पाडी, त्यारपळी भगवान ते वचनने अनुसारे निर्दोष आहार लइने गृहस्थपणामां पण साधु वृत्तिए हता, पळी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने

संसारनी असारता विशेष प्रकारे जाणीने तीर्थपर्वतन माटे उद्यम करे छे. ते वतावेछे. (१०) भगवानं महावीर बे नरसयी काइक अधिक काल सुधी काचुं पाणी त्यागीने पण थोवां विगरे क्रिया पण पासुक जळवडेज करता जेवी रीते पहेळु त्रत जीवदयातुं पाळुं तेज प्रमाणे बीजां त्रतो पण पाळ्यां, तेज प्रमाणे एकत्र भावनावडे भावित अंतःकरणवाळा बनीने अर्चारूप क्रोध ज्वाळाने जेणे अटकावी छे. अथवा पिहित अर्चें एटले शरीरने गुप्त राखुं छे. (के कोइ पण जीवने पोतानी कायाथी पीडा थवा देता नथी.)

ते भगवान महावीर दीक्षा लीथा पळी छन्नस्थ कालमां सम्यक्तभभावनावडे भावित हता, (तेमने धर्म उपर निर्मळ श्रद्धा हती) तथा इन्द्रियो अने मनवडे पोते ज्ञांत हता. (उन्मार्गे जवा देता नहोता) एवा भगवान गृहवासमां पण छेवटना बे वरसमां सावद्य आरंभना त्यागी हता तो पळी दीक्षा लीथा पळी चारित्रकालमां शा माटे निःस्पृह न होय ? ते वतावे छे.

पुढविं च आउकायं च तेउकायं च वाउकायं च । पणगाइं बीयहरियाइं तसकायं च सवसो नत्वा ॥१२॥

एयाइं सन्ति पडिलेहे, चित्तमन्ताइ से अभिज्ञाय । परिव्रजिय विहरिस्था इय सङ्घाय से महावीरे ॥१३॥

अटु थावरां य तसत्ताए तसा थ थावरत्ताए । अटुवा सवजोणिया सत्ता कम्ममुणा कट्पिया पुढो बाला ॥१४॥

आ भगवान् महावीर पृथ्वीकाय अक्काय वायुकाय विगरे जीवोने सच्चित्त जाणीने तेनो आरंभ त्यागीने पोते विचरे छे. ते वतावे छे. पृथ्वीकाय सूक्ष्म अने वादर बे भेदे छे. ते सूक्ष्म सर्वत्र छे. अने वादर पण कोमळ अने ऋटण एम बे भेदे छे. तेमां कोमळ माटी थोळा विगरे पांच रंगनी छे. पण ऋटण पृथ्वी तो पृथ्वी चर्करा वाळुका विगरेथी छत्रीय भेदेवाळी छे, ते प्रथम शत्र

પરિજ્ઞા નામના પહેલા ભાગમાં () પાને છે, ત્યાંથી સમજવું. અપકાય પળ સૂક્ષ્મ વાદર વે ભેદે છે, તેમાં સૂક્ષ્મ સર્વત્ર છે. પળ વાદર અગ્નિ અન્નારા વિગેરે પાંચ ભેદે છે.

વાયુતું પળ તેમજ છે. ફક્ત વાદર વાયુ કાય ઉત્કાલિક વિગેરે પાંચ ભેદે છે, વનસ્પતિ પળ સૂક્ષ્મ વાદર વે ભેદે છે. સૂક્ષ્મ સર્વત્ર છે, અને વાદર અગ્નિ સૂક્ષ્મ સ્કંધ પર્વ વીજ સંસ્પર્હન એમ સામાન્યથી હ ભેદે છે.

વળી તે દરેક પ્રત્યેક અને સાધારણ એમ વે ભેદે છે. પ્રત્યેક દુક્ષ ગુચ્છા વગેરે વાર ભેદે છે. અને સાધારણ તો અનેક પ્રકારે છે. તે અનેક ભેદવાળો છતાં વનસ્પતિકાય સૂક્ષ્મ સર્વગત હોવાથી અને અતીન્દ્રિય હોવાથી તેને હોડીને ફક્ત ભેદોમાં વાદરકાય લીધો છે તે વતાવે છે. પનક લેવાથી વીજ અંકુર ભાવ રહિત પનક વિગેરે ઉલ વિગેરે અનંત કાય લેવા અને વીજના પ્રહણથી અગ્નિ વીજ વિગેરે લેવાં હરિત શબ્દથી વીજા ભેદ લેવા (૧૨) આ પ્રમાણે પૃથ્વી વિગેરે શૂતો છે. એમ જાણીને તથા તે ચેતનાવાળા છે એમ જાણીને ભગવાન મહાવીર તેમનો આરંભ હોડીને વિચર્યા પૃથ્વીકાય વિગેરે જંતુના ત્રસ સ્થાવરપણે ભેદો વતાવીને હવે એમનામાં પરસ્પર અનુગમ પળ છે, તે વતાવે છે. (૧૩) સ્થાવર તે પૃથ્વી પાણી અગ્નિ વાયુ વનસ્પતિ છે. તે ત્રસપણે ષ્ટલે વેદંદ્રિય વિગેરે કર્મ વશથી જાય છે. અને ત્રસ જીવો કુમિ વિગેરે પૃથ્વી વિગેરેમાં કર્મને લીધે જાય છે. તે પ્રમાણે વીજે પળ કહું છે.

“ અચળાં મન્તે ! જીવે પૂર્વવિકાસ્યતાએ જાવ તસકાસ્યતાએ ઉવંચણુવે ?, હંતા ગોઅમા ! અસદં અદુવા-

સ્પાંતહુત્તો જાવ ઉવંચણુ પુન્વે ” તિ

ગૌતમનો પ્ર૦—હે ભગવાન ! આ જીવ પૃથ્વી કાય પળેથી લઈ ત્રસકાયપણે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલ છે ?

उ०—हा, अनेक वार अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थयेल छे, अथवा बधी योनिओ जे जीवोनां प्रति स्थान छे, ते सर्व योनिक जीव छे, अने जीवो बधी गतिमां जनारा छे, ते जीवो (मंद बुद्धिथी) बाल छे, अने राग द्वेषथी व्यास थइ चीकणां कर्म बांधी पोताना करेलां कर्मनां फळ जुदी जुदी सीते सर्व योनियोमां भोगववावढे कल्पित (व्यवस्था करायला) छे. कहुं छे के:—

णत्थि किर सो पएसो, लोए बालगकोडिभित्तोऽवि । जम्मणमरणावाहा अणेगसो जत्थ णवि पत्ता ॥ १ ॥

आ लोकमां बालना अग्रभाग जेटलो प्रदेश मात्र पण एवो नथी, के ज्यां आ जीवे जन्म मरणनी बाधा अनेक वार प्राप्त करी नथी। वकी रंगभूमिर्न सा कान्चिच्छुद्धा जगति विद्यते । विचित्रैः कर्मनेपथैर्यत्र सत्त्वेन नाटितं ॥ २ ॥

तेवी शुद्ध रंगभूमि जगत्समां कोइ विद्यमान नथी, के ज्यां कर्मने पथ्य (शणगार) पहेरीने सर्व सत्त्वो नाच्या नथी। विगेरे छे. (१४) वकी— भगवं च एवमज्ञेसिं सोवहिष्प हु लुप्यई बाले; कम्मं च सवसो नच्चा, तं पडियाइक्खे पावग भगवं ॥१५॥

इविहं समिच्च मेहावि किरियमक्खाय ऽणोलिसं नाणी; आयाणसोयमइवायसोयं, जोगं च सवसो णच्चा ॥१६॥

भगवान महावीरे तेमज बीजी सीते जाण्युं के उपधि सहित ते द्रव्यथी तथा भावथी उपधि सहित जे वर्त्त ते कर्मथी लेपाय, पछी ते बाल अन्न साधु दुःखोने अनुभवे छे अथवा (हुनो हेतुमां अर्थ लइए तो) सोपथिक बाल साधु कर्मथी लेपाय छे, तेथी बधी सीते कर्म बंधातुं जाणीने उपधियुं कर्म त्यागी दीधुं. एटखे अंदरथी अने बहारथी जे उपधिरूप पापकर्मनुं अनुष्ठान हतुं ते भगवाने त्यागी दीधुं. (जरूर होय त्यां सुधी शक्तिना अभ्यावमां उपधि साधुए राखवी, अने पाछळथी शक्तिमान यतां त्यागी देवानो मार्ग

भगवाने बताव्यो) (१५) वळी वे प्रकारवाळा ते द्विविध कर्म छे, इयां पत्थय, अने सांप्रसारयिक छे, ते वन्नने पण सर्वज्ञ मधुए जाणीने संयम अनुष्ठानरूप जे कर्म छेदवाने माटे अन्यत्र नथी, तेवी अनन्य सदृशी क्रिया बतावी.

प०—भगवान केवां हता ? उ०—ज्ञानी, (केवलज्ञान प्राप्त थया पळी तेमणे आ क्रिया बतावी.)

प०—वळी तेमणे वीजुं शुं कहुं ? उ०—जेनावडे नवां कर्म लेवाय ते आंदाज खोडुं ध्यान छे; तथा इंद्रियोना विकार संबंधी ते ज्ञोत छे. माटे जे आदान ज्ञोत छे, तेने जाणीने तथा जीव हिंसारूप तथा तेना लक्षणथी मुषावाद विगेरे पापोने तथा मन वचन कायाना व्यापारवाळुं दुर्ध्यान छे ते वधे प्रकारे कर्म बंधने माटे छे एम जाणीने तेमणे संयम लक्षणवाळी निर्दोष क्रिया बतावी. वळी—
अईवत्तियं अणाउड्डिसयमन्नेसिं अकरणयाए; जरिसरिथओ परिज्ञाया, सबकरमभवहा उ स अदकवु ॥१७॥

आकृष्टी (हिंसा) ने त्यागवाथी अहिंसा छे, ते पापथी अति क्रांत होवाथी निर्दोष छे, ते महावीर मधुए पोतेज मथम अहिंसा स्वीकारीने बीजाओने पण हिंसानी मवृत्तिथी दूर राख्या, तथा जेमने स्त्रीओ स्वरूपथी तथा विपाकथी कडवां फळ आपनासी छे, एतुं ज्ञान छे, ते परिज्ञात भगवान छे, तथा तेज स्त्रीओ सर्व कर्म समूहो एटले सर्व पापोना उपादान भूत छे. ते पण एमणे जोयुं छे, तेथीज तेथो संसारतुं रूप जाणनारा थया तेनो भावार्थ ए छे केः—स्त्रीना स्वभावना आवा परिज्ञानथी तथा ते जाणीने त्यागवाथीज भगवान परमार्थदर्शी थया छे मूळ गुणो वलवीने हवे उत्तर गुण प्रकट करावा कहे छेः—

अहाकडं न से सेवे सबसो कम्म अदकवु; यं किंचि पावगं भगवं, तं अकुवं विपड भुंजित्था ॥१८॥

कोइ गृहस्थे साधुने पूछीने अथवा विना पूछे (छानुं) आधा कर्मादि भोजन विगेरे कर्हुं होय तो पोते ते लेता नथी.

प०—शा माटे ? उ०—तेमणे जोयुं के, ते लेवाथी बधी रीते आठे प्रकारना कर्मनो बंध थाय छे, तेवुं दोषित बीजु पण सेवता नथी, ते कहे छे, जे कइ पापवाछुं एटले जेनावडे भविष्यमां पापनुं कारण थाय तेवुं भगवाने न लीयुं, पण विकट (मासुक निर्दोष) भोजन विगेरे लीयुं. (१८) बळी—

णो सेवइ य परचरथं, परपाएवी से न भुञ्जिस्था; परिव्रजि याणउमाणं, गच्छइ संखडिं असरणयाए ॥१९॥
 मायणो असणपाणस्स, नाणुगिके रसेसु अपडिन्ने; अहिंछपि नो पमज्जिजा, नोवि य कंहुयए सुणी गायं

पोते प्रधान (पर) बख भोगवता नथी. तेम किमती पात्रमां खाता नथी, तथा पोते अपमान छोडीने आहारने माटे (ज्यां आहार रंथाय तेवी रसोहानी जग्या) संबंडीमां कोइनुं पण शरण (आखंवन) लीया विना अदीन मनवाळा 'आ मारो कल्प' छे एम जाणीने परीषहो 'जीतवा' माटे जाय छे. (१९)

आहारनी मात्रा (माप) जाणे छे, माटे मात्रइ प्रभु छे, प०—क्यो आहार ? उ०—खवाय ते भात विगेरेनुं भोजन, पीवाय ते पाणी, द्राखनुं धोवण विगेरे—तेमां पोते लोखपी नथी, तेम रस [छवीगइ] मां गृहस्थपणामां पण लोखपी नहोता, तो पछी दीक्षा लीया पछीनुं तो शुकहेवुं रम लेवाथी एम सूचवुं, के पोते तेवा पदार्थमां अभिग्रह न थारे के आजे सिंह केसरीया लाहुज खावा ! पण आवी प्रतिज्ञा राखे के आजे कुलमास अइदना बाकळा विगेरे खावा ; तथा आंखमां रज पही होय, तो ते दूर करवा

माटे पण आंख मसके नहीं ! तथा खणज आवे तो लाकडाना छांडा विगेरेथी पण खणे नहीं, (२०) बळी—

अट्पं तिरियं पेहाए. अट्पिं पिट्टओ पेहाए । अट्पं बुइएऽपडिभाणी, पंथपेहि चरे जयमाणे ॥३१॥

सिसिरंसि अद्धपडिवन्ने, तं बोसिज्ज वत्थमणगारे । पसारित्तु बाहुं परक्कमे, नो अवलंबियाण कंथमि ॥३२॥

एस विहि अणुक्कन्तो माहणेण मईमया । बहुसो अपडिन्नेण भगवया एवं रियन्ति ॥३३॥

तिवेमि ॥ उपधानश्चुताध्ययनोद्देशः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

(अल्प शब्द अभावना अर्थमां छे.) भगवान महावीर विहारमां तीरळी दिशामां जोता नथी तेम वंने बाजुए जोता नथी. तेम मार्गमां चालतां कोइ पूडे तो पण बोलता नथी. मौनज चाले छे. ते बतावे छे के पोते रस्तामां चालतां पण नीचे जीवोने पीडा न थाय तेज यतना राखता हता. (२१) बळी शियाळामां मार्गमां खरी ठंडमां पण देवदृष्य वख छोज्या पळी बे बाहु लंबी करीने चाले छे. पण ठंडथी पीडलां हाथने बांफा बळी संकोचता नथी. तेम पोताना खभा उपर पण हाथ राखीने उभा रहेता नथी. हवे समाप्त करावा कहे छे. (२२) आ विहारनो विधि बतावयो ते भगवान महावीरस्वामी जेओ तखना जाणनारा छे. अने कोइ जातहुं नियाणुं कर्हुं नथी, तथा ऐश्वर्य विगेरे गुणोथी युक्त छे, तेमणे पोते आचर्यो छे. एज प्रमाणे बीजा मोक्षाभिलाषी साधुओ संपूर्ण कर्म क्षय करावा माटे आचरे छे. आहुं सुधर्मास्वामि कहे छे:—

उपधानश्चतुत अध्ययननो पहेलो उद्देशो पुरो धयो.

पहेलो कहीने जोडाजोडज बीजा उदेशानी सूत्र गाथानी ज्याख्या टीकाकार कहे छे. तेमां प्रथम संबन्ध कहे छे. पहेला उदेशापां भगवाननी चर्या बतावी. अने तेमां कोइपणं शय्या (वसति) मां रहेवुं पढे, तेशी आ बीजा उदेशापां तेनुं वर्णन आवशे. आ संबन्धे आवेला उदेशातुं आ प्रथम सूत्र छे.

बीजा उदेशानी सूत्र गाथाओ

चरियासणाइं सिजाओ एगइयाओ जाओ बुइयाओ। आइबख ताइं सयणासणाइं जाइं सेविरथा से महावीरे ॥
 आवेसणसभापवासु पणियसालासु एगया वासो । अहुवा पलियटाणेसुपला लपुअेसु एगया वासो ॥२॥
 आगन्तारे आरामागारे तह य नगरे व एगया वासो । सुसणे सुणगारे वा रुक्खमूले व एगया वासो ॥३॥
 एण्हिं सुणी सयणेहिं समणे आभि पतेरसवासि । राइं दिवंपि जयमाणे अपमत्ते समाहिण झाइ ॥४॥
 चरिया (चर्या) मां जे जे शय्या आसन विगेरे जररनां होय ते शय्या फलक (पाटीयुं) विगेरे सुधर्मास्वामिण जंबूस्वामिना पूजवाथी भगवान महावीरे जे प्रमाणे उपयोगमां लीखेल छे. ते बतावेल छे. (आ टीकाकार लखे छे के तेना पहेलानी टीकापां आ गाथानो अधिकार वर्णव्यो नथी, तेनुं कारण ते सुगम छे के सूत्रमां नथी ते सूचन पुस्तकमां जणातुं नथी तेशी अमे पण तेमनो अभिप्राय समजता नथी.) (१)

जंबूस्वामिना प्रश्नो उत्तर आपे छे. भगवान महावीरने आहारना अभिग्रह माफक प्रतिमा सिवाय प्राये शय्यानो अभिग्रह नथी.

फक्त ज्यां छेछो पहोर (चरम पोरसी) थाय त्यांज मालीकनी आज्ञा लइने रहे ते वतावे छे. सर्वथा ज्यां रहेवाय ते आवेञ्च छे.

आवेशन—शून्यग्रह—तथा 'सभा' ते गाम नगर विगेरेमां त्यांना लोकोने माटे तथा आवेला नवा माणसोने सुवा माटे भीतो-वाळं मकान वनावे छे (शुजरातमां जेने चोरो कहे छे) प्रपाणी पावानी जग्या, (जेने परव कहे छे) ते आवेशन, सभा प्रपा तेमां भगवाने वास कर्यो, तथा पण्यशाळा (हुकान) तथा पलिय एटले लोहार, सुतारनी ओसरिपां तथा पळालना दगलामां अथवा मांचो उपर लटकाल्यो होय तेना नीचे रहे, पण तेना उपर न वेसे कारण के मांचो पोकळ होय छे. (२)

वली प्रसङ्गे आवेला अथवा आवीने त्यां वेसे ते सुसाफरवाजुं के धर्मशाळा ते गाममां होय अथवा गाम बहार होय तथा आराम ते घर आराम तथा आगारमां कोइ वखत वास करे, तथा मसणमां अथवा शून्य घरमां वास करे, (आवेशन तथा शून्य घरनो भेद ए छे के पेलानी भीत मजबुत होय पण वीजामां तेम नहीं कोइ वखत झाडना मूळ नीचे वास कर्यो. (३)

उपर बतावेल शयन ते वसतिमां त्रण जगतने जाणनारा क्रतुवद्ध कालमां अथवा चोमासामां भगवान तपस्यामां उद्युक्त वनीने अथवा ध्यान राखनारा वनीने वास कर्यो.

प०—केडलो काल ? ते कहे छे. प्रकर्षथी तेरमा वरस सुधी एटले वार वरसथी कंडक अधिक सुदत सुधी आखी रात अने दिवस संयम अनुष्ठानमां उद्यमवाला वनीने अपमत्त एटले निद्रा विगेरे प्रमाद रहित तथा विस्रोतसिकारहित धर्म ध्यान अथवा शुद्ध ध्यान ध्याय छे वकी—

णिदंषि नो पगामाए, सेवइ भगवं उट्टाए । जग्गावइ थ अप्पाणं इंसिं साईं थ अपडिन्ने ॥५॥

संबुद्धमाणे पुणरवि आसिसु भगवं उट्टाए । निक्खम्म एगया राओवहि चंक्रमिया सुहुत्ताणं ॥६॥

सयणेहिं तस्थुवसग्गा भीमा आसी अणेगरूवाय । संसपग्गा य जे पाणा अट्टवा जे पक्खिणो उवचरन्ति ॥७॥

अट्ट कुचरा उवचरन्ति गाम रक्खा य सत्तिहरथा य । अट्ट गामिया उवसग्गा इत्थी इगइया पुरिसा य ॥८॥

भगवान पोते प्रमाद रहित वनीने निद्रा पण वधारे लेता नथी. अने तेज प्रमाणे वार वरसमां अस्थिक गाममां व्यन्तरना उपसर्ग पढी कायोत्सर्गमां रहीने अन्तर्मुहर्ते सुधी स्वप्नो देखतां सुधी एकवार निद्रा करी हती ल्यारपढी उठीने आत्माने कुशल अनुष्ठानमां प्रवर्तिवे छे अर्हीया पण पोते प्रतिज्ञा रहित छे. एट्टले पोते मनमां इच्छीने सुता नथी. (५)

वकी ते वीर प्रभु जाणे छे के आ प्रमाद संसार भ्रमण माटे छे. एम जाणीने संगम उत्थानवडे उठीने विचरे छे. जो अन्दर रहेतां निद्रा प्रमाद थाय तो त्यांथो नीककीने शियाळानी रात विगेरेमां खुल्ली जग्यामां मुहर्ते मात्र निद्रा प्रमाद दूर करवा ध्यानमां उभा रखा. (६) वकी ज्यां आगळ उत्कृटक आसन विगेरेथी आश्रय लेवाय तेवा स्थानमां अथवा ते स्थानोवडे ते भगवानने भय करावताराने अनेक जातिना ठन्ड ताप विगेरेथी अथवा अनुकूल पतिकूलरूपे परिषह उपसर्गो थया तथा शून्य घर विगेरेमां अहिं नकुळ (साप नोळीय) विगेरे भगवाननुं मांस विगेरे खाता हता, अथवा मसाण विगेरेमां गीध विगेरे पक्षीओ मांस खाता हता, (तो पण भगवान रागद्वेष करता नहोता.) (७)

वकी कुचर ते चोर परदार लंपट विगेरे कोइ शून्य घर विगेरेमां भगवानने दुःख देता हता तथा गाम रक्षा करनारा कोटवाळ

विगेरे त्रिक चोतरा विगेरे उपर उभेला भगवानने जोइने पूजतां जवाब न आपवाथी हाथमां शक्ति कुंत (भाला) विगेरे राखनारा भगवानने पीडा करता हता, तथा इन्द्रियोथी उन्मत्त थयेल स्त्रीओ भगवान पासे एकांतमां भोगनी याचना सुंदर रूप जोइने करती हती. अथवा शरीर सुगंधी जोइने अथवा पोतातुं तेतुं सुंदर शरीर वनावावा इच्छता पुरुषो भगवान पासे उपाय पूजता हता. जवाब न मळवाथी भगवानने दुःख पण देता हता.

इहलोइयाइं परलोइयाइं भीमाइं अणेगरुवाइं । अवि सुबिभ दुब्धिभगन्धाइं सदाइं अणेगरुवाइं ॥१॥

अहियासए सया समिए फासाइं विरुवरुवाइं । अरइं रइं अभिभूय रीयइ माहणे अबहुवाई ॥१०॥

स जणेहिं तरथ पुच्छिसु एगचरावि एगया राओ । अवाहिए कसाइरथा पेहमाणे सचाहिं अपडिन्ने ॥११॥

अयमंतरंसि को इरथ ? अहमंसिसि भिक्खुआहइ । अयमुत्तमे से धम्ममे तुसिणीए कसाइए ज्ञाइ ॥१२॥

आ लोकमां एटले मनुष्ये करेला दुःखना रूपर्षो तथा देवताए करेला दिव्य रूपर्षो तथा तिर्धचोए करेला उपसर्गोनां दुःखो तथा पर भवे करेलां पापोथी उदयमां आवेलां दुःखोने पोते समताथी सहे छे. अथवा आज जनममां जे दंडाना प्रहार विगेरे दुःख दे छे. तथा ते त्रिवायना परलोक संबंधी भीम (भयंकर) जुदा जुदा उपसर्गो आवे छे. ते बतावे छे. एटले सुगंधीवाळा ते फुलनी माळा तथा चंदन विगेरे छे. अने कोहेलां सुहदां विगेरे दुर्गंधवाळा छे तेज प्रमाणे वीणा वेणुं मृदंग विगेरेथी मथुर अवाज तथा कर्मलक (उंट) तुं बराहवुं विगेरे कानमां कठोर अवाज लागे छे. ते बद्धेमां भगवान रागद्वेष करता नथी. [१]

तथा बधो काल पांचे समितिओथी युक्त छे अने जे कइ दुःखना स्वर्गो आवे तो संयममां अरति लावता नथी तेम सुंदर भोगोमां रति लावता नथी एम बन्ने परिषदमां समभाव धारीने संयम अनुष्ठानमां वर्ते छे. पोते कोइ पण जीवने दुःख न देहुं, एवा माहण बर्नेला जरूर पडतां एक बे उत्तर आपता विचरे छे. (१०)

ते भगवान महावीर साहा बार पक्ष बधारे एवा बार वरस (बार वरस अने साहा बार पखवाडीयां) सुधी एकला विचरता शून्यगृह विगोरेमां रहेता लोकोथी पूछता के तमो कोण छो ?

केम अहीं उभा छो अथवा क्यांथी आव्या छो. ते समये पोते मौन रहेता, तथा दुराचारीओ विगोरे एकत्रा भद्रकला त्यां आवीने कोइ बखत रातमां अथवा दिवसमां पूछता. पण भगवाने उत्तर न आपवाथी क्रोधमां आवी भगवानने मौन देखी तेओ अज्ञानथी दृष्टि छवाइ जतां दंडमुक्ती विगोरेथो मारीने पोतानुं अनार्यपणुं आचरता हता. पण भगवान तो समाधिमां रही धर्म ध्यानमां चित्त राखीने सारी रीते सहेता हता. प्र०—भगवान केवा हता ? उ—प्रतिज्ञा रहित एदछे तेनुं बेर छेवुं एवी इच्छा राखता नहेता.

प्र०—ते आवेलाओ केवी रीते पूछता हता ? उ०—अत्र कोण रहेछुं छे ? एम संकेत करीने दुराचारीओ अथवा काम करनाराओ पोताना साथीओनी राह जोइ भगवानने पूछता हता. बकी हंमेशां त्यां रहेला दुष्ट ध्यानवाला पूछे छे. पण भगवान मौन रहेला हता. पण कोइ बखतघणोज दोष थतो होय तो टालवाने माटे थोहुं बोलता पण हता. प्र०—केवी रीते ? उ०—हुं भिक्षु छुं, आम बोलतां जो तेओ संमति आपे तो त्यां रहेता, पण ते आवेला दुष्टोनी इच्छामां विघ्न थतुं होय, तो क्रोधायमान थइने मोहांधवनी वर्तमान लाभ देखनारा तुच्छ बुद्धिथी कहे के अमारा सुकामथी दमणां निरुद्ध, तो भगवान आ अपीतिनुं स्थान छे, एम

विचारि दुर्त नीकली जता. अथवा भगवान पोते प्रथमथी त्यांना मुख्य धर्णीनी आज्ञा लीधेलीं होवोथी नीकलता नहोता, अने आ माहं ध्यान उत्तम धर्म छे. मारो आचार छे, एम विचारी ते आवनार गृहस्थनां कडवां वचन विगेरे सहन करी मौन रही जे थवाहुं होय ते थाय, एम मानी दुःख सहन करे, पण ध्यानथी चलयमान थता नहोता, वकी शुं करता ते कहे छे.

जंसिप्येगे पविथयन्ति सिसिरे मारुए पवायन्ते । तंसिप्येगे अणगारा हिमवाए निवायमेसन्ति ॥१३॥

संघाडीओ पवेसिससामो एहा य समाद्दहमाणा । पिहिया व सक्खामो अइदुक्खे हिमगसंफासा ॥१४॥

तंसि भगवं अपडिन्ने अहे विगडे अहीयासए । दविए निक्खम्म एगया राओ टाइए भगवं ससियाए ॥१५॥

एस विहि अणुक्कन्तो माहणेण मईमया । बहुसो अपडिणेण भगवया एवं रोयन्ति ॥१६॥

त्तिवेमि ॥ नवमस्य द्वितीय उद्देशकः १-२ ॥

त्रियाळाथी ऋतुमां केटलाक माणसो कपडाना अभावे दांत वीणा विगेरे युक्त कंपता हता. अथवा टंडीना दुःखनो अनुभव करी आर्त्त ध्यानमां पडता हता. तेवा हिम पडयाना समयमां टंडो वा वातां केटलाक साधु जेओ पासत्या जेवा हता, तेओमांना केटलाक तेवी घणी टंड पडतां दुःखी थइने टंडने दूर करवा माटे भडको करता अथवा अन्नारानी सगडी शोधता तथा प्रावार (कामळो) विगेरे याचता अथवा अनगार ते पार्श्वनाथ भगवानना तिर्थमां रहेला गळवासी साधुओज टंडथी पीडाइने ज्यां वायरो न आवे, तेवी शाळा विगेरे बंध जग्या शोधता हता. (१३)

वकी (सङ्गाटी शब्दवदे ठंड दूर करनारां वे अथवा त्रण वन्न जाणवां.) ते सङ्गाटी शोधवा माटे ठंडशी पीडाएला विचारता, के अमे कयांयशी मागी लावीए. अने अन्य धर्मीओ तो एवा समिध बाळवानां लाकडां शोधता हता. के जेने बाळीने ठंड दूर करावा शक्तिवान थइशुं. तथा सङ्गाटीवदे एटले कामळो विगोरे ओढीने रहेता.

प०—शा माटे एतुं करे छे ? उ०—कारण के आ हिमनो ठंडो पवन दुःखे करीने सहन थाय छे.

आवी सरवत ठंडी ऋतुमां कोइ अन्य तापस विगोरे तापणु तापी ठंड दूर करता, कोइ आ जैन साधु कामळो ओढी निभावता, तेवे समये भगवान शुं करता ? ते कहे छेः—आवी ककडती ठंडी अने ठंडा पवनमां बधा शरीरने पीडा थवा छतां भगवान् जेओ ऐश्वर्य आदि गुण युक्त छे, तेओ समभावे ठंडने (तापणुं के कपडा विना) सहै छे.

प०—भगवान केवा छे ? उ०—प्रतिज्ञा रहित छे. एटले तेओ ज्यां ठंडी न आवे तेवुं बंध कवजावाळुं मकान रहेवा विगोरे माटे याचता नथी. प०—तेओ कइ जग्याए ठंड सहै छे ?

उ०—बाजुनी भीतो रहित तथा उपरतुं टांकण होय के नहीं, तेवा स्थानमां रहेता, तथा फरी भगवानना गुण कहे छे, राग द्वेष दूर थवाथी शुद्ध आत्मा द्रव्यवाळा अथवा कर्मप्रियि दूर थवाथी द्रव्य संयम छे. ते द्रववाळा द्रविक (संयमी) छे, तेम मकानमां ठंडी सहेतां कदाच घणी सरवत ठंडी पीडे, तो ते टांकेला मकानथी बहार नीकळी कोइ वार रात्रीमां वे घडी सुधी त्यां रही ठंडी सहन करी पाळा तेज मकानमां आवीने समताथी खच्चरना दृष्टांतथी सहेवाने शक्तिवान थतां.

बीजो उद्देशो समाप्त थयो.

ત્રીજો ઉદ્દેશો કહે છે.

ત્રીજો ઉદ્દેશો કહીને હવે ત્રીજો કહે છે, તેનો આ પ્રમાણે સંબંધ છે. ગયા ઉદ્દેશામાં મગવાનની શર્યા (વસતિ) તું વર્ણન કરું, અને તે સ્થાનોમાં જે ઉપસર્ગો અને પરીપદો સહન કર્યા, તે વતાવવા આ ઉદ્દેશો કહે છે, આ સંબંધે આવેલા ઉદ્દેશાની આ સુત્ર ગાથાઓ છે. તળાપાસે સીયપાસે ય તેડ પાસે ય દંસમસગે ય । અહિયાસપ્ સયા સમિપ્ પાસાઈં વિરુવરૂંવાઈં ॥૧॥ અહ દુચ્ચારલાહમચારી વજ્જમ્મિં ચ સુભમ્મુમિં ચ । પંતં સિજ્જં સેવિંસુ આસળગાણિ ચેવ પંતાણિ ॥૨॥ લાહેહિં તરસુવસગાં વહવે જાણવયા હ્હિંસિંસુ । અહ લૂહદેસિપ્ મત્તે કુક્કુરાતરથ્ હિંસિંસુ નિવદંસુ ॥૩॥ અપ્પે જણે નિવારેદ્દહ્હસણપ્ સુણપ્ દસમાણે । હુહુહુકારિંતિ આહંસુ સમણં કુવકુરાં દસંતુત્તિ ॥૪॥

કુશ દર્મ વિગેરે વૃણના કઠોર પરસો, તથા ઠંડીના સ્પર્શો તથા ગ્રીષ્મ ઋતુમાં ડનાલા વિગેરેનો તાપ દુઃસ્વદાયી હતો અથવા મગવાનને ચાલતાં તેજ (અગ્નિ) કાયજ હતો, તથા હાંસમચ્છરો વિગેરે હતા, તેવા જુદી જુદી જાતિના સ્પર્શોને મગવાન સમતાથી અથવા સમિતિવદે સહન કરતા.

વઠી દુઃસ્વથી વિહાર થાય, તેવો દુરુકર દેશ બાહ છે, તેમાં પળ પોતે વિચર્યા, તેના ચે મગ છે, એક વજ્જ મ્મિ તથા ત્રીજી શુન્ન મ્મિ છે, તે વંને જળ્યાણં વિચર્યા છે, તથા માંત તે શૂન્ય ગ્રહ વિગેરે વસતિમાં રહીને અનેક ઉપદ્રવો મગવાને સહન કર્યા,

तथा धूलना दगला, जाडी रती वेकर (वेळ) तथा माटीनां देफां विगेरेना पांत (तुच्छ) आसनो तथा लाकडां जेवां तेवां पडेलां तेना उपर पोते बेसला, (१) तथा ते लाढा देशमां जे बे विभाग उपर बताव्या तेमां प्राये लोकोना आक्रोश तथा कृतरांना करडवा विगेरेना घणा पतिकूल उपसर्गो भया, ते बतावे छे.

जनपदते देश—अने तेमां उलवव थयेला ते जानपद माणसो छे, ते अनार्य देश होवार्थो अनार्यो छे, तेथी ते दुष्टोए दांतथी करडवुं, भारे दंडनो पहार विगेरेथी दुःख देवुं; (अपि शब्दना अर्थमां अथ शब्द छे, तेथी एम जाणवुं, के) त्यां भोजन पण लुखुं अंतपांत आपता, तथा अनार्यपणाथी स्वभावथीज क्रोथी हता अने रुना अभावे घासवडे शरीर दांकता, तेथो भगवान उपर विरुप आचरता हता, अने शीकारी कृतराथो भगवान उपर करडवा आवता (३) अने ते देशमां भाग्येन हजारमां एक दयाळ जन हतो के जे करडवा आवेला कृतराने अडकावे, उलटा भगवानने लाकडी विगेरेथी मारीने कृतराने तेना उपर दोडाववा सीत्कार (छुछ) करता के कोइ रीते आ साधुने ते कृतराथो करडे ! आवा दुष्ट अने भयङ्कर देशमां पण भगवान् छ मास सुथी रहा वकी—
 एलिवखए जणा मुजो बहवे बजभूमि फरसासी । लडि गहाय नालियं, समणा तरथ य विहरिसु ॥५॥
 एवंपि तरथ विहरंता, पुष्टपुवा अहेसिं सुणिएहिं । संलुच्चमाणा सुणिएहिं दुच्चराणि तरथ लाडेहिं ॥६॥
 निहाय दंडं पाणेहिं तं कायं वोसजमणगारे । अह गाम कंष्टए भगवंते, अहियासए अभिसमिच्चा ॥७॥
 नागो संगामसीसे वा पारए, तरथ से महावीरे । एवंपि तरथ लाडेहिं अलङ्कपूर्वोवि एगया गामो ॥८॥

उपर बलाबेल कष्ट आपनार ज्यां माणसो छे, तेवा देशमां भगवान वारंवार विचर्या, अने ते वज्र भूमिमां घणा माणसो छुं खानारा होवाथी क्रोधी हता, अने तेथी साधुने देखीने कदर्थना करे छे, तेथी बीजा साधुओ बौद्ध विगोरेना हता; तेथी शरीर प्रमाण अथवा तेथी चार आंगळ वधारे लांबी नकी (लाकडी) कुतरा हाकवा माटे हाथमां राखीने विचरता हता. (५)

वकी लाकडी विगोरेनी सामथ्री राखवाथी बुद्ध मतना साधुओ विचरी शकता, अने ते प्रमाणे कृतराओथी करडावानो दर तथा तेमने निवारण करवाहुं मुश्केल होवाथी अनार्य लोकना लाह देशमां गाम विगोरेमां विचरुं मुश्केल हतुं. ॥६॥

प०—आवा कठण देशमां भगवान् त्यारे केवी रीते विचर्या; ते कहे छे—प्राणीओ जेनावहे दंडाय ते दंड मन वचन काया संबन्धी छे, ते दंडने भगवाने छोडी दीथो, तेज प्रमाणे कायानो मोह छोडीने ते अणगार (भगवाने) गाम कंटक ते गाम-दाना नीच लोकोनां कठोर वाक्यो निर्जराहुं कारण मानीने समताथी सहन कर्या. (७)

प०—केवी रीते सहन कर्या? ते दृष्टांत बतावीने कहे छे.

जेम हाथी संग्राभना मोखरे आगळ वधीने शत्रुना लश्करने भेदीने तेनी पार जाय छे, ते प्रमाणे भगवान महावीर ते लाह देशमां परीषहनी सेनाने जीतीने तेनाथी पार उत्तर्या, तथा ते लाह देशमां गामो थोडां होवाथी कोइवार कोइ स्थळे गाम वरवते मळतुं पण नहोतुं (जंगलमां पण पडी रहेतां.)

उवसंकमन्तमपडिन्नं, गामंतियसि अप्पत्तं; । पडिनिक्खस्मिच्चु ल्हसिंसु, एयाओ परं पत्तेहीति ॥९॥

हयपुत्रो तरथ दंडेण, अदुवा मुट्टिणा अदु कुंतफलेण; । अदु लेल्लुणा क्वाल्लेण, हंशा बहवे कंदिंसु ॥१०॥

गोचरी लेवा जतां अथवा मकानमां रईवा जतां भगवान पतिश्चा रहितं हता, एटले गाम पासे आवेळु होय, अथवा गाम न आव्युं होय, तो एम नहोता करता के; हुं अहीं हमेशां रहीश, अथवा अहीं नहीं रहुं, तथा त्यां अनार्य लोको भगवाननी पासे आवीने प्रथम मारता, अने कहेता के आ गामथी दूर जाओ. (९) तथा कदी गाम बहार रहेता तो त्यां पण अनार्य लोको आ-वीने प्रथम दंड (लाकडी) अथवा मुक्रीथी मारता, अथवा भाल्लिनी अण्णिथी माटीना ठेफाथी अथवा घडाना टीकराथी मारी मारीने अनार्य लोको बीजाने बोलता के आवो आवो ! तमे जुओ तो त्वारा के ओं कोण छे ? ए प्रमाणे कलकल करता हता. (१०)

मंसाणि छिन्नपुत्राणि उट्ठंभिया एगया कायं; । परीसहाइं लुचिंसु, अदुवा पंसुणा उवकारिंसु ॥११॥

उच्चा लइय निहणिसु, अदुवा आसणाउ खलइंसु । वोसट्टकायपयणाऽऽसी दुक्खसहे भगवं अपडिन्ने ॥१२॥
कोइ वलत तो भगवान पासे आवीने तेमना शरीरने झाली राखीने तेमांथी मांस कापी काढता, तथा बीजा पण दुःख देनारा परीषहो आपता, अथवा धूळथी हेरान करता. (११)

वकी कोइ वलत भगवानने उंचे उंचकीने नीचे पटकता हता, अथवा गोदोहिक उत्कुट्टक वीरासन विगेरेथी थको मारी पाडी देता, आवुं दुःख यवा छातां पण भगवाने तो क्रायानो मोह मुक्री दीधेलो होवाथी परिषह सहन करवापां लीन हता, अने मुहकेलीथी सहन थाय, तेवा परिषहोना दुःखने सहेता, पण ते दुःखने दूर करवानी अथवा देवा करवानी इच्छा न थराववाथी अपतिश्चाळा हता.

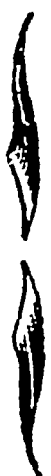
दुःख सहेनारा भगवान केवी रीते हता ते दृष्टांतथी वतावे छे।

सुरो संगामसीसे वा संवुडे तरथ से महावीर । पडिसेवमाणे फरसाइं; अंचले भगवं रीथिरथा ॥१३॥

एस विही अणुकंतो, माहणेण मईमया । बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रियंति ॥१४॥

जेप संगामना मोखरे शूरवीर पुरुष शत्रुना सैन्यना भाला विगोरेथी भेदावा छतां पण बखतर पहेरेछं होवाथी पाछो हठतो नथी, तेज प्रमाणे भगवान महावीर पण ते लाढ विगोरे देशोमां परिषहरूप शत्रुओए पीडा करावा छतां पण कठोर परीषहोना दुःखोने मेरु माफक निष्कंप वनीने थीरजवडे संवृत्त अंगवाळा वनीने सहेता ज्ञान दर्शन चारित्ररूप मोक्ष मार्गमां विचरे छे. (१३) आज प्रमाणे गया उद्देशामां वताव्या प्रमाणे बुद्धिमान भगवान महावीर कदाग्रह विना दुःखो सहेता विचर्या—

नवमा अध्ययनतो त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो.



चोथो उद्देशो कहे छे.

त्रीजो उद्देशो कहीने हवे चोथो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे के त्रीजा उद्देशामां भगवाने सहेला उपसर्ग परीषहोतुं वर्णन छे, अने आ उद्देशामां पण रोग आतंक पीडा आवातां पण तेनी चिकित्सा (उपाय) छोडी दइने भयंकर रोग उत्पन्न थया छतां पण बरोबर सहेता, अने एकांत तप चरणमां उधम करता, ते वतावशे. आ संबंधे आवेला उद्देशातुं आ प्रथम सूत्र छे:—

ओमायरियं षाण्ड, अपुट्टेऽपि भगवं रोगेहिं । पुट्टे वा अपुट्टे वा, नो से साइजर्ड तेइच्छं ॥१॥
संसोहणं च वमणं च, गायभ्रंगणं च सिणाणं च । संबाहणं च न से कप्पे दंतपक्खालुणं च परिंत्ताए ॥२॥

उपर बतावैला शीतोष्ण दंशमशक आक्रोश ताडना विगेरे परिषहेमां थोडुं दुःख होवाथी सहैवा शक्य हता, पण उणोदरी (ओडुं खाडुं) ते शक्य न होतुं, पण भगवान महावीर तो वातादि क्षोभना अभावे रोगमां सपडायार् न होता छतां, पण ओडुं खावाने शक्तिवान थया एटले लोको तो रोगमां सपडायया होय, त्यारे ते रोग दूर करावा ओडुं खाता हता, पण भगवान तो ते रोगना अभावमां पण ममत्व ओडो करावा ओडुं खाता, अथवा खांसी के दम विगेरेना द्रव्य रोगथी पीडायया नहोता, छतां पण भविष्यमां आववाना भावरोगरूप कर्मने दूर करावा माटे उणोदरी तप करता हता.

प०—शुं भगवानने तेवा खांसी दम विगेरेना रोगो यता नहोता ? के भाव रोगो दूर करवाना कारणे उणोदरी तप कर्यो ?
उ०—कहे छे भगवानने खांसी विगेरे रोगो स्वभावथीज काया साथे यता हता, अने नचा तो शस्त्रना वा विगेरे लागवाथी यता, ते बतावे छे. ते भगवान महावीर कुरराना कडवाथी अथवा खांसी श्वास विगेरेना रोगोथी पीडाय, छतां पण ते चिकित्सा (रोगना उपाय) ने करता नथी, अर्थात् तेओ रोगनी शांति करावा औषध लेवानी इच्छा करता नहोता. (१)

ते बतावे छे, शरीरतुं बरोबर रीते शोधवुं ते निःसोत्र (निसोतर) सुवर्णसुखी विगेरेथी जुलाब लेता नहोता, तथा मदनफळ (पीढक विगेरेथी उलटी (वमन) करता नहोता, तथा सहस्र पाक तेल विगेरेथी शरीरतुं अभयंगन (चोळवुं) करता नहोता. तथा

उद्धर्त्तन विगोरेथी स्नान करता नहोता. हाथ पग विगोरेनुं संवाधन (दवावधुं) करावता नहोता. तथा आहुं शरीर अशुचि (गंदकी) थी भरेछुं छे, एम जाणीने दातण विगोरेथी दांत साफ करता नहोता.

आचा०

॥८४३॥

विराए गामधम्मोहिं, रीयइ माहणे अबहुवाई । सिसिरांसि एगया भगवं, छायाए झाइ आसीय ॥३॥

आयावइ य गिरहाणं, अच्छइ उक्कुहुए अभित्तावे । अहु जाव इरथ लूहेणं, ओयणंसंशुक्कमासेणं ॥४॥

वकी पांचे इंद्रियोना विषयोमां शब्द विगोरेथी मोह न पामतां संयम अनुष्ठानमां तेने दोरे छे, तेथी तेओ विरत छे, तथा माहन (जीवोना रक्षक) मशु अबहु (थोडुं) बोलनारा छे, (एक वार बोले तेथी अबहु शब्द लीयो छे, बाकी तो अवादी छे एहुं बोजाय)

तथा कोइ वरवत शिश्निर ऋतु (शीयाळा)मां भगवान धर्म ध्यान अथवा शुक्क ध्यानमां स्थिर दता. (३)
वकी (छट्टी विभक्तिने सातमीना अर्थमां लेतां) ग्रीष्म ऋतुमां भगवान् (खुछा मेदानमां) आतापना लेता ते वतावे छे. उत्तु-
हुक आसने भगवान् सर्पना तडका सन्मुख बेसता, अने धर्मना आधाररूप देहने लुखा एवा कोदरा भातर्था तथा बोरकूट विगोरेनो
साथवो, तथा अहद (जे उत्तर दिशायां थाय छे) अथवा बाफेला वासी अहद अथवा सिद्ध मासा विगोरेथी कायानो निभाव करता.

हवे ते काल अवाधि (सुदत)ना विशेषणवहे वतावे छे.
एयाणि तिसि पडिसेवे, अट्ट मासे अ जावयं भगवं; । अपि इरथ इगया भगवं अद्धमासं अहुवा मासंसि ॥५॥
अवि साहिए दुवे मासे छट्पि मासे अहुवा विहरिंथा; । राओवरायं अपडिन्ने अन्नगिलायमेगया भुंजे ॥६॥

आषा०

॥८४३॥

कदाच कोइने एवी शंका प्राय के प्रथम बतावेला भात मंथु तथा अहद साथे मेळवी खाता दशे, तेथीं ते दूर करावा कहे छे. के ते त्रणे जो साथे मळे तो साथे छेइ खाता, अने त्रणेमांथी कोइ जुदुं जुदुं मळे तो तेम खेता अथवा एकळुं मळे तो तेम खेता अर्थात् त्रणमांथी जे मळे ते छेइ निर्वाह करता.

प्र०—आ केटली सुदत सुधी आम करता, ते कहे छे. (शीयाळा उनाळानी आठ मासनी ऋतुने ऋतुबद्ध काल कहे छे. ते) आठे मास सुधी भगवाने तेवा लुखा भोजनथी निर्वाह कर्यो तथा तेज प्रमाणे पाणी पण अर्धयो मास के एक मास भगवाने तेवुं (सादुं) पीथुं. (५) तथा बे मासथी अधिक अथवा छ मासथी पण वधारे भगवाने पाणी पण पीथा विना रात दिवस निर्वाह करी लीथो, हुं पाणी 'पीथा' तेवी इच्छा (प्रतिज्ञा) पण न करी, तथा कोइवार वासी (खवाय तेवुं) मळ्युं होय तो कोइ वार खाइ पण खेता. (६)

छट्टेण एगया भुंजे अहुवा अहमेण दसमेणं, । दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिंने ॥७॥
णञ्जा णं से महावीरे नोऽविय पावगं सयमकासी, । अन्ने हिंवाण कारिरथा, कीरंतंपि नाणुजाणिरथा ॥८॥

वळी कोइ वखत छट्टनो तप करी पारणुं करे छे, एटले प्रथमना दिवसे एक वखत खाय. त्यारपछी बे दिवस उपवास करे, अने चौथे दिवते पाहुं एकवार खाय, एटले प्रथमनो एक वचला वार अने चौथादिवसनो एक टंक मळी छ वखत न खावाथी छट भक्त प्राय छे. ए प्रमाणे बे बे टंक एकेक दिवसना वधारातां आठ भक्त त्यागवाथी अटम अने तेवी रीते दसम तथा वार भक्त पञ्चखवाण

कर्तुं, एटले वचमां पांच उपवास करे अने प्रथमनां दिवसे तथा सातमा दिवसे एक वार खांय, आ बथो तव पोते शरीरमां समाधि राखीने करता पण मन मेळुं करता नहोता, तथा नियाणुं (मतिज्ञा) करता नहोता, (७) तथा हेय उपादेय वस्तु तत्वने महावीरे जाणीने ते महावीर मथुए कर्मनी प्रेरणा करावामां वीर बनीने पाप कर्म पोते जाते न कर्तुं, न बीजा पास करावुं, अने अन्य पाप करनारने पोते प्रशंसा नही, (८)

गामं पविसे नगरं वा घासमेसे कडं परद्वाए । सुविमुद्धमेसिया भगवं, आयतजोगयाए सेविरथा ॥९॥
अट्टु वायसा दिगिंच्छता जेअन्ने रसेसिणो सत्ता । घासेसणाए चिंटिति, सययं निवइए य पैहाए ॥१०॥

भगवान् महावीर गाम अथवा नगरमां पेसीने गोचरी शोधता, गण ते पर माटे बनावेळुं एटले उद्दमं दोष रहित होय ते लेता, तथा सुविमुद्ध एटले उत्पाद दोष रहित लेता, आ प्रमाणे एषणा (गोचरी) ना दोष त्यागीने भगवान आयत ते संयम अने मन वचन कायाना योग (व्यापार) वाळा बनीने ज्ञान चतुष्यवडे त्रणे गुप्ति पाळता आयत योगवाळो भाव (ते आयत योगता) छे, ते वडे शुद्ध आहार लावी गोचरी करतां पांच दोष थाय, ते टाळीने गोचरी करता [अहीयां पण ४२ दोष गोचरी लेतां अने '५' गोचरी करतां एम ४७ दोष टाळवातुं जाणवुं] [९]

हवे भगवान ज्यारे गोचरीए नीकळता. त्यारे मार्गमां भूखथी पीडंयेला कागडा तथा बीजां रस [पाणी] नी इच्छावाळां कपोत कहुतर विगेरे सत्त्वो [प्राणीओ] तथा खावातुं शोधचा माटे जे प्राणीओ रस्तामां वेठेलां होय, तेमने जमीन उपर बरोबर

जोइने तेमने खावा पीवासां अडचण न पडे तेवी शीते ह्मेसां पोते धीरे धीरे गोचरीने माटे चाले छे. [१०]

अदुवा माहणं च समणं वा गाम पिण्डोलगं च अतिहिं वा; । सोवागमूसियारिं वा कुक्कुरं वा विविदियं पुरथां
वित्तिच्छेयं च जन्तो तेस्मिपत्तियं परिहरन्तो; । मंदं परक्रमे भगवं अहिसमाणो धासमेसिस्था ॥१२॥

अथवा ब्राह्मणने लाभ माटे उभेळो जाणीने तथा बौद्ध मतना साधु आजीविक [गोबालना मतना] साधु तथा परिव्राट तापस
अथवा पार्श्वनाथना अनुयायी जैन साधुसांथी कोइपण होय, अथवा गामना भीखारीओ जे होजरी भरवा माटे भटकता होय, अ-
थवा कोइ अतिथि [पुरोणा] मुसाफर होय, तथा चांडाळ के वीलाडी कूतरं के कोइपण माणी मोढा आगळ उभेळुं होय तो [११]

तेमनी वृत्तिने छेदवा विना अने मनसांथी दुःखान काढीने तेमने जरा पण त्रास आप्या विना भगवान् मंदं मंदं चाले छे,
तथा पर एवा कुंथवा विनोरे नाना जंतुओने दुःख दीया विना पोते गोचरीसां फरे छे. (१२)

अवि सुइयं वा सुकं वा सीयं पिंडं पुराणकुन्मासं । अदु बुकसं पुलगां वा लळे पिंडे अलळे द्विप ॥१३॥
अवि झाइ से महावीरे आसणरथे अकुक्कुए झापां । उडूं अहेतिरियं च पेहमाणे समाहिमपडिन्ने ॥१४॥

दही विनोरेशी भोजन भोजिावेळुं होय, तेमज बालचणा विनोरे सुकुं होय, अथवा ठंडु होय अथवा घणा दिवसना रांधेला
जुना कुलमाष होय अथवा बुकस ते जुनुं धान्य के भात विनोरे होय 'अथवा जुनो साथवो बोरकुट विनोरे होय, अथवा घणा
दिवसनुं भरेळुं गोरस अने पजना मंडक (देवरां) होय, तथा जवना निष्पाव विनोरे पुलाक होय, ए प्रमाणे ठंडो जनो सारो

माथे एसिक अरसिक गमे तेवो पिंड मळे तो पण रागद्वेष छोडीने वापरता द्रविक (संयमवाळा) भगवान विचरे हे. एटले जो पुरी अथवा सारी गोचरी मळी होय तो अहंकारी थता नथी, तथा न मळतां ओछी मळतां खराब मळतां पोते पोतानी के आपनार गृहस्थनी निंदा करता नथी, (१३) पण तेवो आहार मळतां खाइने अने न मळतां भूर्या राहीने पण साहं ध्यान महावीर मशु करे हे केवी अवस्थामां राहीने ध्यान करे हे. ते वतावे हे.

उक्तुक गोदोहिक वीरासन विगेरे आसन धारीने मुख विगेरेनी चंचळ चेष्टाने छोडीने धर्म ध्यान के शुक ध्यान ध्याये हे. प्र०—त्यां शुं ध्येयने भगवान धारे हे ? ते कहे हे. उंचे, नीचे तथा तीरच्छा लोकमां जे परमाणु तथा जीव विगेरे विद्यमान हे, तेने द्रव्य पर्याय नित्य अनित्य विगेरे रूपणे ध्यावे हे. तथा अंतःकरणनी पवित्र समाधिने देखता प्रतिज्ञा रहित बनीने ध्यान करे हे. (१४)

अकसाई विगयगेही य सहरुवेसु अमुच्छिष्ट झाई । छउमरथोऽवि परक्रममाणो; न पमायं सइंषि
कुविरथा ॥१५॥ सयमेव अभिसमागमम, आयएजोगमायसोहीए । अभिनिवुडे अमाइछे, आवकहं
भगवं समियासी ॥१६॥ एस विहि अणुकंतो, माहणेण मईमया । बहुसो अपडिन्नेण, भगवया
एवं रियंति ॥१७॥ निवेमि १-४ ब्रह्मचर्यश्रुतरकंधे नवमाध्ययने चतुर्थ उद्देशकः

कषाय रहित (क्रोध विगेरेथो पांपण विगेरे चडाव्या विना) तथा शुद्ध पणुं दूर करीने तथा शब्द विगेरेमां सूच्छीं राव्या

विना ध्यान करे छे, मनने अनुकूलमां राग नथी तेम प्रतिहूलमां द्वेष नथी, तथा ज्ञानआवरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अंतराय, ए चार कर्म विद्यमान होवाथी छत्रस्य हता, तो पण तेमणे विविध संयमना अनुष्ठानमां पराक्रम बतावीने कषाय विगेरे प्रमादने एकवार पण न कर्यो, (१५) तथा पोते पोताना आत्माथी तत्वने जाणीने संसार स्वभाव जाणनारा भगवान स्वयंबुद्ध बनी तीर्थ प्रवर्तन करवा उद्यम कर्यो. कहूं छे के:—

आदित्यादिर्विबुधविसरः सारमस्यां त्रिलोक्या—मास्कन्दन्तं पदमनुपमं यच्छिवं त्वाप्तुवाच; ॥

तीर्थं नाथो लघुभवभयच्छेदिं तूर्णं विधत्स्व—त्येतद्वाक्य त्वदधिगतये नो किमु स्यान्नियोगः ? ॥१॥

आदित्य विगेरे विबुधोनो समूह (नव लोकांकित देवो) छे, तेमणे तेमने कहूं के हे नाथ ! आ त्रण लोकमां साररूप अनुपम जे शीघ्र भवोना भय छेदनार अने त्रिवपद आपनार तीर्थ (जैन शासन) छे. तेमने शीघ्र स्थापन करो ! आ प्रमाणे आहुं वाक्य तपारी स्मृति माटे काने न पड्युं होत, तो आ नियोग केवी रीते यात ? तथा तीर्थ प्रवर्तन माटे केवी रीते भगवाने उद्यम कर्यो ते बतावे छे:—

आरम शुद्धिवदे षटले पोतानां कर्मना क्षय उपशम तथा क्षय करवावदे सुप्रणिहित मन वचन कायाना योगो जे आयत योग छे, तेमने निर्मल करी तथा विषय कषायो विगेरेने उपशम विगेरेथी दूर करवाथी ठंडी गुण प्राप्त करेला (शांत) भगवान छे. तथा माया रहित तेज प्रमाणे क्रोध मान लोभ रहित बनी जीवतां सुधी पांच समितिषु समित (उपयोग राखी वर्तन करनारा) तथा त्रण गुप्तिथी गुप्त बनीने रखा हता. (१६)

उद्देशो समाप्त करवा कहे छे. आ प्रमाणे शास्त्रमां बतावेली विधिए श्री वर्द्धमानस्वामी जेओ चार ज्ञान युक्त छे, तेप्रणे अनेक प्रकारे नियणुं कर्या विना आचार्यो, कारण के ते प्रमाणे बीजो सुसुक्षु पण भगवानना दासबलाथी मोक्ष आपनार मार्गवडे आत्महितने आचरतो विचरे, आ प्रमाणे सुधर्मस्वामी जंबूस्वामीने कहे छे. ते हुं कहुं छुं. जे वीर प्रभुना चरणनी सेवा करतां में सांभळ्युं छे. आ प्रमाणे सूत्रानुगम तथा सूत्रालापक निष्यन्न निक्षेप सूत्र स्पर्शिक निर्युक्ति सहित वर्णव्यो छे. हवे नयोतुं वर्णन करे छे. नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र शब्द समभिरुद एवंभूत ए प्रमाणे सामान्यथी ७ नय छे. ते संमतितर्क विगेरेमां लक्षणथी अने विधानथी विस्तारथी कहा छे, माटे अहींया तेज नयोने ज्ञान क्रिया ए वंने नयोमां समावीने समासथी कहीए छीए.

आ आचारंग सूत्रना अधिकारमां ज्ञान क्रिया एम बे नयोनो समावेश थाय छे, तेथी तथा ते ज्ञान क्रियाने आधिन मोक्ष होवाथी, अने मोक्ष माटे शास्त्रनी पट्टति छे, एम जाणवुं, अने अहींआं ज्ञान तथा क्रिया परस्पर संबंध राखीनेज निवक्षित कार्य सिद्धिमां समर्थ छे, पण एकहुं ज्ञान के एकली क्रिया समर्थ नथी, माटे अहीं ते बे ज्ञान क्रिया नयने समजावीए छीए.

ज्ञान नयवाळानो अभिप्राय.

ज्ञान प्रधान छे, पण क्रिया नहीं, कारणके समस्त (बधा) हेय पदार्थने त्यागवा, उपादेयने स्वीकारवा, ए पट्टति ज्ञानने आधीन छे. तेज बतावे छे, के सारी रीते निश्चय करेला सम्य ज्ञानथी पवर्तन करनारो अर्थ क्रियानो अर्थी पोतावुं कार्य बगाइतो नथी. कहुं छे के. विज्ञप्तिः फलदा पुंसां, न क्रिया फलदा मता । मिथ्याज्ञानात् पवर्तस्य, फलासंवाददर्शनाद् ॥ १ ॥

पुरुषोने जे ज्ञान छे, ते फल देनाहं छे, पण क्रिया फलदायी नथी. कारण के मिथ्या ज्ञानवालो क्रिया करना जाय तो तेनुं अयोग्य फल साक्षात् देवाय छे, अने सम्यग् प्रकारे ज्ञानधीज पारं पहेंचाय छे, तथा विषय-व्यवस्थितिनुं समाधान ज्ञान पूर्वक थाय छे, तथा बधा दुःखोनो नाश ज्ञानधीज थाय छे, अने ज्ञाननुंज अन्यव्यतिरेकपणुं छे. एटखे ज्ञान होय तो फलनी सिद्धि अने ज्ञान न होय तो फलनी असिद्धि छे; माटे दरेक रीते ज्ञाननुं प्रधानपणुं छे, ते बतावे छे. ज्ञानता अभावे अनर्थ दूर करवा माटे तैयारी करे तो पण करवा जतां अज्ञानताधी पतंगीया माफक अनर्थमां शीपलाइ जाय छे, अने ज्ञानता सद्भावे बधा अर्थोने अने अनर्थना संशयोने विचारीने यथाशक्ति विदोने दूर करे छे, तेमज आगम पण कहै छे, “पदमं नाणं तओ दया” सूत्र छे. आ बयुं क्षायोपशमिकज्ञान आश्रयी कसुं, अने क्षायिकने आश्रयी पण तेज प्रधान छे, कारण के नमेला सुर असुर देवताना मुकुटोना समुदायोनी वेदिकामां जेयना चरण गुलनी पीठ छे, तथा भव समुद्रना तटे पहेंच्या छे.

तथा दीक्षा लीगी छे, ऋण लोकना बंधु छे, तप चारिज सारीरीते आदरवा छतां पण ज्यां सुधी जीव अजीव विगेरे बधा पदार्थोनुं परिच्छेद करनार घनघाति कर्म समूह क्षय थवारूप केवलज्ञान प्राप्त न थाय त्यां सुधी ते भगवानने मोक्ष प्राप्ति यती नथी, माटे ज्ञानज शुक्तिए शुक्त आ लोक परलोक फलनी इच्छित प्राप्ति करनार सिद्ध थाय छे,

क्रिया वादीनो नय (अभिप्राय)

क्रियाज आलोक परलोकनुं इच्छित फलनी प्राप्तिनुं कारण छे. कारण के ते शुक्तिए शुक्त छे. जो तेम न होय तो ज्ञानवहे देखवा छतां पण अर्थ क्रियाना समर्पन अर्थमां प्रमाता प्रेक्षा पूर्वकारी छतां पण जो छोडवा केवारूप पवति क्रिया न करे तो तेनुं

ज्ञान पण निष्कल जाय हे, कारण के ते ज्ञानतुं अर्थपणुं क्रिया साथे हे, कारण के जेनी जे अर्थ पाटे प्रवृत्ति होय, तेनुं तैमां प्रधानपणुं हे, अने ते सिवायतुं अप्रधान (गौण) हे, एं न्याय हे, संविद् वढे विषय व्यवस्थानतुं पण अर्थ क्रियापणाथी अर्थपणुं क्रियातुं प्रधानपणुं बतावे हे, अन्यय व्यतिरेको पण क्रियामांसिद्ध थाय हे, कारण के सम्यक् चिकित्सानी विधि जाणनारो यथार्थ औषधनी प्राप्ति करे, तो पण उपयोग क्रिया रहित होय तो ते वैद रोगने दूर करी शकतो नथी. तेज कहुं हे. के—

शास्त्राण्यधीत्यापि भवंति मूर्खाः । यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान् ॥

संचिन्त्यतामौषधमातुरं हि । किं ज्ञानमात्रेण करोत्यङ्गरेगम् ॥१॥

शास्त्रोने भणीने पण केटलार्क क्रिया न करनारा मूर्खा होय हे, पण जे थोडुं भणेलो होय पण क्रिया करनारो होय ते विद्वान् हे. कारण के औषध चिंतवो, पण ते चिंतवेळुं औषध विना क्रिया करे शुं रोगीने निरोगी बनवी शकशे के ? वळी—

क्रियैव फलदा पुंसां, न ज्ञानं फलदं मतं; यतः स्त्रीभक्ष्यभोगज्ञो, न ज्ञानात् सुखितो भवेत् ॥ १ ॥

पुरुषोने क्रियाज फलदायी हे. पण ज्ञान फलदायी नथी कारण के स्त्रीस्वाधैना पदार्थ, तथा भोगववानी वस्तुओनो जाणनार एकला ज्ञानथी सुखीओ थतो नथी ! पण ते क्रियाथी युक्त होय ते प्राणस पोतानी इच्छा प्रमाणे अर्थ भेळवनारो थाय हे.

जे पूछता हो के केवी रीते ! तो कहुं छुं. के “निश्चयथी देखेलासां न उत्पन्न थणुं नथी, ” अने ज्या सकल (वया) लोकसां पत्यक्ष सिद्ध अर्थ होय त्यां वीजुं प्रमाण मागी शकाय नहीं. ! तथा परलोकतुं सुख वांछतां होय, तेपणे पण तप चारित्रनी क्रियाज करवी, जिनेश्वरतुं वचन पण तेज कहे हे.

वेदयहुत्तगणसंवे, आयरियाणं च पवणय सुए य । सर्वेसुऽपि तेण कथं, तवसंज्ञममुज्जमन्तेणं ॥ १ ॥

चैत्य कुल गण संघ आचार्य पवचनश्रुत, ए वधायां पण तेणे तप अने संयमयां उद्यम करवायी कर्तुं जाणवुं, माटे आ क्रियाज स्वीकारवी, कारण के तीर्थकर विगेरेए पण क्रिया रहित ज्ञानने पण अफळ कहुं हे वळी कहुं हे के—

सुबहुं पि सुअमधीतं, किं काहि चरण विष्णुहण (मुक्क) स्स ? अंधस्स जह पळित्ता, दीवसतसहस्सकोट्टिवि ॥१॥

यणाए सिद्धांत भण्यो होय, पण जो चारित्र रहित होय तो ते शुकुं करी शके ? जेपके घरयां लावो करोडो दीवा कर्या होय तो पण अंधो केवी रीते कार्य सिद्ध करी शके ? अर्थात् देववानी क्रियायां विफल होवायी तेने दीवा नकामा हे. वळी क्षायोप-शामिक ज्ञानथी क्रिया प्रधान हे, एम नहि, पण क्षायिक ज्ञानथी पण क्रिया प्रधान हे, जेपके जीव अजीव विगेरे संपूर्ण वस्तु परिच्छेदक केवलज्ञान विद्यमान होय, पण ज्यां सुधी क्रिया समाप्त करनारं अयोगी गुणस्थानतुं 'ध्यानरूप क्रियापणुं' न फरसे, त्यां सुधी भवधारणीय कर्मनो उच्छेद थाय नही, अने तेनो उच्छेद न थावायी मोक्ष प्राप्ति पण न थाय, माटे ज्ञान प्रधान नथी, पण चरणनी क्रियायां आलोक अने परलोकना इच्छित फळनी प्राप्ति हे, माटे ते क्रियाज प्रधान फळने अनुभव हे.

आ प्रमाणे ज्ञान विना सत्यक क्रियानो अभाव हे. अने ते क्रियाना अभावथी अर्थ सिद्धि माटे ज्ञानतुं वैफल्य हे. आ प्रमाणे वने नयवाळो पोताना नयनी सिद्धि करी तथी सामान्य बुद्धिवाळो शिष्य व्याकुल मतिवाळो बनीने गुरने पूछे हे के आयां सत्य तत्व शुकुं हे ? आचार्यांनो उत्तर—हे देवोने प्रिय भाइ ! अमे तो कहुं छेज ? पण तुं भूळी गयो ! कारण के ज्ञान तथा क्रियाना अभिप्रायो वन्ने एक बीजाने आधारेज वधा कर्म कंदना उच्छेदरूप मोक्षनां कारणो हे तेतुं दृष्टांत.

आधुं नगर ज्यारे बळ्युं, त्यारे अंदर रहेला आंधळो पांगळी बन्ने मळी जंवाथी सुखेथी बहार नीकळ्या, तेज कळुं छे.
संजोयसिद्धीए फलं वदन्तीति. कारण के एक वैद्यथी रय चालतो नथी, बन्नेनो संयोग भतां कार्यनी सिद्धि थाय छे. पण
स्वतंत्र पद्धतिमां तो विवक्षित कार्यनी सिद्धि भती नथी, ए प्रसिद्धज छे. बळी क्रिया विनाहुं ज्ञान हणायुं छे, आगममां पण सर्व
नयोना उपसंहारना द्वार बडे आज विषय कसो छे. जेमके—

सर्वेस्मिं णयाणं बहुविहवत्तवय णिसामेता । तं सत्वणय विरुद्धं चं चरण गुणद्विओ साह् ॥ १ ॥

वधा नयोहुं घणा प्रकारहुं वक्तव्य सांभळीने वधा नयथी विशुद्ध मंतव्यने चरण गुणमां स्थित साधु होय ते माने, तेथी आ
आचारांगसूत्र ज्ञान क्रियारूप छे, तेने जाणोला सम्यग् मार्गावाळा साधुओ जेमणे कुशुत नदी कषाय माळलानां कुळथी आकुळ
बनेळ तथा प्रियनो वियोग अप्रियनो संयोग विगेरे अनेक दुःखथी मळेळ महा आवर्त्तवाळुं मिथ्यात्व पवननी पेरणानी उपस्थापित
भय शोक हास्य रति अरति विगेरे तरंगवाळुं विश्रसा वेलाथी चित थयेळुं सेकडो व्याधि मगरना समूहना रहेवासवाळुं महा मंथीर
भय आपनार त्रास उत्पादक महा संसार अर्णव (समुद्र) ने साक्षात् देखेलो छे, तेवा साधुओ ते संसार समुद्रथी पार जवा इच्छता
होय तेमने आ आचारांग सूत्रमां वतावेळुं ज्ञान तथा क्रिया अव्याहत (निर्विघ्न) यानपात्र (वहाण) छे, एटका माटे सुमुखए आत्सं-
तिक, एकांतिक, अनावाध, शाश्वत, अनंत अजरामर, अक्षय, अव्याबाध तथा समस्त रागद्वेष विगेरे द्वंद्व रहित सम्यग्
दर्शन, ज्ञान, व्रत, चरणक्रियाकलापथी शुक्त परमार्थ श्रेष्ठ कार्य जे सर्वोत्तम मोक्ष स्थान छे, तेनी इच्छावाळा बनीने ते आचारांग
सूत्रनो आधार लेवो, तेज ब्रह्मचर्य नामना श्रुतस्कंधनी निर्दिष्टि कुलवाळा श्री शील आचार्ये “तत्त्वादीत्या” नामनी वाहरि साधुना

सहायथी आ टीका समाप्त करी है, (श्लोक ग्रंथमान ९७६) है.

द्रासप्तत्यधिकेषु हि शतेषु सप्तसु गतेषु गुप्तानाम् । संवत्सरेषु मासि च भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम् ॥१॥

७७२ वर्षं शुभ वंशवाळा राजाओना संवत्सरानां गये थके भाद्रवा महिनानी शुक्ल पंचमीण.

शीलाचार्येण कृता गम्भूतायां स्थितेन टीकैषा । सम्यगुपसृज्य शोध्यं, मात्सर्यविनाकृतैरार्यैः ॥२॥

शीलाचार्ये गंभूता (गांधु) मां रहीने आ टीका बनावी है, तेने मात्सर्य [अदेवाइ] कर्मा विना उत्तम साधुओए शोधवी.

कृत्वाऽऽचारस्य मया टीकां यत्किमपि संचितं पुण्यम् । तेनाऽनुयाज्जगदिदं निर्बलिमतुलां सदाचारम् ॥३॥

अने में आ आचारांगनी टीका बनावीने तेशी जे कइ पुण्य उपार्जन कर्युं होय, तेनाथी आ जगत्ना जीवो अतुल

मोक्ष तथा सदाचार प्राप्त करो.

वर्णः पदप्रथ वाक्यं पद्यादि च यन्मया परित्यक्तम् । तच्छोधनीयमत्र च व्याप्तोहः कस्य नो भवति ? ॥४॥

वर्ण (अक्षर) पद वाक्य पद्य विगेरे जे माराथी पूर्वनी टीका के सत्वभांथी छुटी गयुं होय; तो ते विद्वाने सुधारी लेवुं.

कारण के व्याप्तोह (भूल) कोनी नथी थती ?

तत्तादित्या जेतुं बीजुं नाम है एवी आ आचारांगसूत्रनी दृति ब्रह्मचर्यश्रुतस्कंधनी है ते समाप्त थइ.

आ प्रमाणे श्रीभद्रवाहुस्वामीए रचेल निर्युक्ति सहित आचारांगसूत्र प्रथम स्कंधनी श्रीवाहरिगणिए करेल सहायथी

श्रीशीलांक आचार्ये तत्तादित्या एवा बीजा नामवाकी रचेली आदृति संपूर्ण थइ.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 इति श्रीमद्भद्रबाहुस्वामिसंहयनिर्गुक्तिसंकलिताचाराङ्गप्रथमश्रुतरकनधस्य
 धृतिः श्रीबाहरिगणिविहितसाहाय्यकेन श्रीशीलाङ्गाचार्येण तत्त्वा-
 दित्यापराभिधानेन विहिताऽऽयाता संपूर्तिम् ।
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

स्कंध २ जो (अध्ययन पांचमुं)

जयत्यनादिपर्यन्तमनेकगुणरत्नभूत । न्यक्तताशेषतीर्थेशं तीर्थं तीर्थाधिपैर्दुर्लभम् ॥ १ ॥

अनादि, अनंत काल रहेनाहं, अनेक गुण रत्नोयी भरेछुं, बधा मतवाळाने सीधे रस्ते लावनार अने तीर्थकरोए नमस्कार करेछुं एवुं तीर्थ (जैन शासन) जयवंतु वर्ते छे,

नमः श्रीवर्द्धमानाय, सदाचारविधायिने । पणताशेषगीर्वाणचूडारत्नार्चितांइये ॥ २ ॥

सदाचार बतावनारा अने नमेला बधा देवताओना मुकुटना रत्नोयी जेना पण पूजित छे. एवा श्रीवर्द्धमानस्वामीने नमस्कार थाओ.

आचारमेरोगर्गदितस्य लेशतः, । प्रवचिम तच्छेषिकचूलिकागतम् ॥

आरिसितेऽर्थे गुणवान कृती सदा । जायेत निःशेषमशेषितक्रियः ॥३॥

आचारांग सूत्ररूप मेरुपर्वतनी चूलिका समान आ चूलिकामां जे थोडो विषय आवेछ छे, तेने थोडापां कहुं छुं कारणके कारण के हमेशा कृत्य करनारो गुणवान पुरुष आरंभेला इच्छित अर्थमांवाकी रहेली क्रिया करवाथीज संपूर्णपणा(नी अर्थसिद्धि)ने पाये छे.

नव ब्रह्मचर्यअध्ययनरूप आचार पथम श्रुतस्कंध कहाओ, हवे अग्रश्रुतस्कंध आरंभे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे.

पूर्व आचारना परिमाणने बतावतां कहुं के—

नवबंधचेरमइओ अट्टारसपयसहस्सिओ वेओ । हवइ य सपंचचूलो बहुबहुअथरो पयमोणं ॥ १ ॥

नव ब्रह्मचर्यवाळो, अट्टार हजार पदवाळो पंच चूला सहित पदोना अग्रवडे घणो. घणो आ वेद (जैनागाम)आचारांग पाय छे.

तेमां प्रथम स्कंधमां नव ब्रह्मचर्य अध्ययनोने कहां, अने तेमां पण समस्त विवक्षित अर्थ कह्यो नथी अने कहेलो विषय पण संक्षेपथी कल्यो छे, जेथी न कहेवायेला विषयनो कहेवा माटे तथा संक्षेपमा कहेला विषयने विस्तारथी कहेवा तेना अग्रभूत (मुख्य) चार चुडाओ पूर्व कहेला विषयनो संग्राहिकज अर्थ बतावे छे, तेथी ते अर्थवाळो आ बीजो अग्रश्रुत स्कंध छे. एथी आवा संबंधे आवेला आ स्कंधनी त्वाख्या कहेवाय छे. नाम स्थापना सुगमने छोडी द्रव्य अग्रना निक्षेपा बताववा निर्मुक्तिकार कहे छे.

द्ववो(१) गाहण(२) आप्स(३) काल(४) कम(५) गणण(६) संचए(७) भावे(८) ॥

अगं भावे उ पहाण(१) बहुय(२) उवगारओ(३) तिविहं ॥ निर्मुक्ति गाथा, ॥ २८५ ॥

द्रव्य अग्र वे प्रकारे छे, आगम अने नोआगम विगरे छे. ते सिवाय व्यतिरिक्तमां द्रव्याग्र सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्यना वृक्ष (झाड) कुंत [भाला] विगरेनो जे अग्रभाग छे ते लेवो. अवगाहना अग्र जे जे द्रव्यनो नीचलो भाग अवगाहना करे ते अवगाहना अग्र छे. जेमके मनुष्य क्षेत्रमां मेरु छोडीने बीजा पर्वतनी उंचाइनो चोथो भाग जमीनमां दटायेलो छे अने मेरु पर्वतनो एकदंजार जोजन भाग दटायेलो छे.

आदेश अग्र—आदेश कराय ते आदेश छे अने ते व्यापारनी नियोजना छे. अहीं अग्र शब्द परिमाण वाची तेथी ज्यां परिमित पदार्थोनो आदेश देवाय ते आदेश अग्र छे. ते आ प्रमाणे—त्रण पुरुषोवडे जे कृत्य कराय छे अथवा तेमने जमाडे छे.

कालाग्र—अधिकमास छे. अथवा अग्र शब्द परिमाणवाचक छे, तेमां अतीतकाल अनादि छे. अनागत [आवनारो] भविष्य काल अनंत छे अथवा सर्वदा—संपूर्ण काल छे.

क्रमाद्य—परिणामीवहे अग्र ते क्रमाद्य छे. आ द्रव्यादि चार प्रकारतुं छे, तेमां द्रव्याद्य ते एक अणुथी बे अणु अने बे अणुथी त्रण अणु विगेरे छे. क्षेत्राद्य—एक प्रदेशना अवगाढथी बे प्रदेशना अवगाढ सुधी, बे प्रदेशना अवगाढथी त्रण प्रदेश अवगाढ विगेरे छे. कालाद्य—एक समयनी स्थितिथी बे समयनी स्थिति सुधी, बे समयनी स्थितिथी त्रण समयनी स्थिति सुधी.

भावाद्य—एक गुण काळाशथी बे गुण-काळाश, बे गुण काळाशथी त्रण गुण काळाश विगेरे छे.

गणना अद्य—सख्या धर्म स्थान ते, एक स्थानथी बीजा दश स्थान सुधी ते दश गुणो जेम एक-दश-सो-हजार.

संचय अद्य—संचित द्रव्यना उपर जे छे, ते ताद्य उपस्कर संचितना उपर शंख छे.

भावाद्यना त्रण प्रकार—१ प्रधान अद्य, २ प्रभूत अद्य, ३ उपकार अद्य, तेमां प्रधान अद्य संचित, अचित्त, मिश्र-एय त्रण प्रकारे छे. संचित पण बे पगवाळां चार पगवाळां अपद विगेरे त्रण भेद छे, तेमां द्विपदमां तीर्थङ्कर, चोपदमां सिंद, अपदमां कल्पवृक्ष छे. अचित्तमां वैदुर्य विगेरे, मिश्रमां तीर्थङ्करज दागीनाथीज अलंकृत होय ते, प्रभूत अद्य ते अपेक्षा राखनार छे. जेमके—

“ जीवा पोगल समया दव्व पएसा य पज्जना चैव । थोवाऽणताणंता विसेसमहिया दुवे णंता ॥ १ ॥ ”

१ जीव, २ शुद्धलो, ३ त्रणे कालना समयो, ४ द्रव्यो, ५ प्रदेशो, ६ पर्यवो. १ स्तोक [थोडा], २ अनंत गुणा, ३ अनंत

गुणा, ४ विशेषअधिका बे अनंता [अनंत अनंत गुणाः]

आ बधामां एक पढी एक अद्य छे, अने पर्याय अद्य तो सौथी अद्य छे, उपकार अद्य तो पूर्वे कहेला विस्तारथी अने न कहेला बताववाथी उपकारमां वर्त्ते छे, जेमके—

दशवैकालिक सूत्रमां जे विषय कहेवानो बाकी रह्यो होय ते चुंटायां कहेवाय—एवी बे चुंटा दशवैकालिकमां छे. अथवा उप-
कार अग्र ते आ आचार श्रुतस्कंधनी चुंढानो विषय छे अने तेथी उपकार अग्रहुंज अहीं पयोजन छे, अने ते निर्युक्तिकारु कहे छे.

उचयारेण उ पणयं आयारस्सेव उवरिमाइं तु । रुक्त्वस्स य पत्वयस्स य जह अण्णाइं तहेयाइं ॥ २८६ ॥

आपणे अहींया उपकार अग्रथी अधिकार [प्रयोजन] छे. कारण के आ चूढाओ आचाराङ्गसूत्रना उपर वत्ते छे, एटले आचा-
राङ्गना विषयनेज विशेष खुलासाथी कहेवा आ चूढाओ गोठवायेली छे, जेभके दृक्षने अग्र[टोच]होय छे, तथा पहांडने टोच (शीवर)होय
छे अने बाकीना अग्रना निक्षेपाहुं वर्णन तो शिष्यनी मति खीलववा पाटे छे तथा तेने लीधे उपकार अग्र सुखेथी समजी शक्राय. कहुंछेके
उच्चारिअस्स सरिसं, जं केणइ तं परुवए विहिणा । जेणडहिगारो तंमि उ, परुविए होइ सुहनेज्झं ॥ १ ॥

जे कहेवानुं होय तेना जेवा पदार्थो विधिए कहेवाथी जेनावहे अधिकार छे तेमां पण बीजा सरखा पदार्थो सांभकवाथी कहे-
वानो मुख्य पदार्थ पण सुखेथी ग्रहण कराय छे. तेमां हपणां आ कहेवुं जोइए के आ चूढाओ [अग्रभागो] कोणे रची छे ? या
पाटे ? अथवा कयांथी उदरी ते ज्ञानो खुलासो करे छे:—

थेरेहिडणुणगहट्टा सीसहिअं होउ पागदत्थं च । आयाराओ अत्थो आयारंगेसु पविमत्तो ॥ २८७ ॥

श्रुतज्ञानना पारंगामी वृद्ध गुरुषो जे चौद पूर्वी छे तेमणे आ रची छे, तथा शिष्यना उपर अनुग्रह लावीने के एओ सहेलथी समजे.
तथा अपकट (गुह्य) अर्थ खुल्यो पाय पाटे आचारंग सूत्रमांथी आ वधा विषयोने विस्तारथी कहा छे. हवे जे अध्ययनमांथी
जे अधिकार लीयो छे. ते विभाग पाडीने कहे छे,—

विइअस्स य पंचमए अंडुमगस्स विइयंमि उहेसे । भणिओ षिंडी सिज्जा वत्थं पाउग्गही चेवं ॥ २८८ ॥

पंचमगस्स चउत्थे इरिया वणिज्जई समासेणं । छट्टस्स य पंचमए भासज्जायं वियाणाहि ॥ २८९ ॥

ब्रह्मचर्यतां नवे अऽध्ययनोर्मांथी वीजुं लोकविजय अध्ययन छे. तेना पांचमां उद्देशामां आ सूत्र छे, “सन्त्रामगंधं परिभाष्य निरापगंधो परित्रणए. ” तेषां आम शब्दथी हणवुं. हणाववुं, हणताने अनुमोदवुं ए त्रण कोटी लीथी छे. गंध शब्द लेवाथी वीजी त्रण लीथी छे. आ छए अविशुद्ध कोटी छे ते नीचे प्रमाणे छे.

हणे हणावे हणताने, हणताने अनुमोदे, रांधे रंधावे रांधताने अनुमोदे ते छ छे. तथा ते अध्ययनमांज आ सूत्र छे.

“ अदिस्समाणो कयविकएहि ” आ सूत्रथी त्रण विशोधि कोटी लीथी छे. खरीद करे, खरीद करेरावे अने खरीद करनारने

अनुमोदे ते त्रण छे, तथा आठमा विमोह (विमोक्ष) अध्ययनना वीजा उद्देशामां आ सूत्र छे—

भिवस्स परकमेज्जा चिट्ठेज्जावा निसीएज्ज वा तुयाट्टिज्ज वा सुसाणंसि वा ” इत्यादि थी लइने “वट्टिया विहरिज्जा तं

भिवस्सु गाहावती उवसंक्रमितु वएज्जा अहमाउसंतो समणा ! तुब्भट्टाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं पाणाइं

भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामीच्चं” इत्यादि,

आ वथांने आशथीने ११ षिट्ठेवणाओ रची छे, तथा तेज वीजा अध्ययनमां पांचमा उद्देशामां आ सूत्र छे,

से वत्थं पट्टिगहं कंबलं पायपुंछणं उग्गहं च कट्ठासणं ” इति, तेषां वत्थ कांबल पादपुंछन लेवाथी वत्थ एवणा लीथी. पात्रां

लेवाथी पात्रैवणा लीथी छे, अवग्रह शब्दथी अवग्रह (इंद्र विभेरेनो पांच प्रकारनो) छे ते लीथी कटाक्षान लेवाथी शब्दा लीथी,

तेज प्रमाणे पांचसुं अध्ययन 'आवृत्ति' नामसुं छे, तेना चोथा उद्देशाभां आ सूत्र छे, "गाम्राणुगामं दृढज्जमाणसस दृज्जाथं दुष्परिकृतं इत्यादि" आ सूत्रथी ' इर्या ' समिति संक्षेपथी वर्णथी. तेथी इर्या अध्ययन रच्युं छे. तथा छट्ठा अध्ययनना पांचमा उद्देशाभां आ सूत्र छे, "आ इन्ववइ विहयइ किदइ धम्मकामी" आथी भाषा जात अध्ययन रच्युं छे तेम सुं जाण. ॥२८९॥.

सन्निकगाणि सत्तवि निज्जुदइं महापरिजाओ । सत्थपरिजा भावण निज्जुदा उ धुय विमुत्ति ॥ २९० ॥

आयारपकप्पो पुण पच्चक्खणसस तइयवत्थुओ । आयारनामधिज्जा वीसइमा पाहुइच्छेया ॥ २९१ ॥

तथा महापरिज्ञा नामना सातमा अध्ययनमां सात उद्देशा हता, तेमांथी एकेक लेवाथी सात लीया छे, तथा शस्त्र परिज्ञामांथी भावना अधिकार लीयो छे, तथा धृतअध्ययनना बीजा चोथा उद्देशामांथी विमुक्ति अध्ययन लीयुं छे. ॥९॥

तथा आचार प्रकल्प ते निशीथसूत्र छे अने ते प्रत्याख्यान पूर्वनी बीजी वस्तु छे तेमां २० सुं पाहुइ आचार नामसुं छे तेमांथी लीखेल छे. (आ पांचमी चूडा जुदी पाडी छे.)

ब्रह्मचर्यनां नव अध्ययनोथी आचार अग्र (चूलिकाओ) रचेल छे. एथी निरुहण [रचवा] ना अधिकारथीज ते शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनथीज ते आचार अग्र (चूला) रची छे, ते वर्तावे छे.

अन्वोगडो उ भणिओ सत्थपरिजाय दंडनिकखेओ । सो पुण विथज्जमाणो तथा तथा होइ नायन्वो ॥ २९२ ॥

अव्यक्त दंड निक्षेपो हतो ते वताव्यो छे, एदले मण्णिओने पीथारूप जे दंड छे, तेनो निक्षेप (परित्याग) छे, अर्थात् संयम छे, ते शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनमां गुप्त सीते कखो-हतो, तेथी ते संयमनेज जुदा जुदा भाग पाडीने आठे अध्ययनमां अनेक

प्रकारे वर्णव्यो छे, एम जाणवुं.

म०—आ संयम संक्षेपथी कहेलो छे, ते केवी रीते विस्तरथी कहेवाय छे ? ते कहे छे.

एगचिहो पुण सो संजमुत्ति अज्झत्थ वाहिरो य दुहा । मणवयणकाय तिविहो चउव्विहो चाउजापो उ ॥२९३॥

अविरतिनो त्यागरूप एक प्रकारनो संयम छे अने तेज आध्यात्मिक [अभ्यंतर] अने बाह्य एम बे भेद थाय छे, अने मन

वचन कायाना भेदथी त्रण प्रकारनो छे, तथा चार महाव्रतना भेदथी चार प्रकारनो छे, पंच य महव्वयाइं तु पंचहा राइभोअणे छट्टा । सीलंगसहस्साणि य आयारससप्यवीभागा ॥ २९४ ॥

पांच महाव्रतना भेदथी पांच प्रकारनो अने रात्रिभोजन विरमण मेलवतां छ प्रकारे छे, ए प्रमाणे अनेक प्रक्रियाथी भेद पाहेला १८ हजार शीलंगाना भेद सुथी परिमाणवाला संयम थाय छे.

म०—एण आ संयम केवो छे ? उ०—ते मवचनमां पांच महाव्रतना भेद तरीके वर्णवाय छे ते कहे छे.

आइकिलवउं विभइउं विभाउं वेव सुहतरं होइ । एण कारणेणं महव्वया पच पत्तता ॥ २९५ ॥
 पांच महाव्रतरूपे व्यवस्थापेला होय, तो सुखेथी कहेवाय अने किरियने सुखेथीज समजाय, ए कारणथीज पांच महाव्रतो बलावेछे, अने ए पांच महाव्रतो अस्वलित (संपूर्ण) होय तोज फलवाळा (सिद्धि आपनार) थाय छे, तेथी तेनी रक्षामां यत्न करवो, ते कहे छे.

तेसिं च रक्खणट्टा य भावणा पंच पंच इक्किं । ता सत्थपरिक्खए, एसो अट्ठिमतरो होई ॥ २९३ ॥
 ते महाव्रतोनी दरेकनी पांच पांच वृत्ति समान भावनाओ छे, ते बची आ बीजा अग्रश्रुत स्कंधमां कहेवाय छे, एथी आ

સત્ત્વપરિજ્ઞા અધ્યયનમાં અર્થંતર થાય છે
દ્વે ચૂડાઓનું યથાસ્ત્વ (પોતાનું) પરિમાણ કહે છે.

જાર્વોભાહપદિમાઓ પદ્મા સત્તિકગા વિદ્વિઅચૂડા । ભાવણ વિમુક્તિ આયારપક્ષ્ણા તિન્નિ દ્વઅ પંચ ॥ ૬૧૭ ॥

પિંદૈષ્ણા અધ્યયનથી આરંભીને અવગ્રહ પતિપા અધ્યયન સુધીમાં સાત અધ્યયનોની પહેલી ચૂડા છે, સાત સાતની પૈકેક પ્ વીજી ચૂડા છે, ભાવના નામની ત્રીજી છે, અને વિમુક્તિ નામની ચોથી ચુડા છે. આચાર પક્ષ્ણ નિશીથ છે, તે પાંચમી ચુડા છે, તે ચુડાનો નામ વિગેરે નિક્ષેપો છ પ્રકારનો છે. નામ સ્થાપના સુગમ છે, દ્રવ્ય ચુડા વ્યતિરિક્તમાં—સચિત્તમાં કુકડાની, અચિત્તમાં સુકુટના ચુડાની મણિ છે. મિશ્રમાં મયૂરની છે, ક્ષેત્ર ચુડામાં લોક નિષ્કુટ રૂપ છે, કાલ ચુડામાં અધિક માસના સ્વભાવવાળી, અને ભાવ ચુડામાં આજ ચુડા છે. કારણ કે તે ક્ષાયોપશ્ચમિક (શ્રુતજ્ઞાન) માં વર્તે છે. આ સાત અધ્યયન રૂપ છે, તેમાં પ્રથમ અધ્યયન પિંદૈષ્ણા છે, તેના ચાર અનુયોગદ્વાર છે. નામનિષ્ણન્ન નિક્ષેપામાં પિંદૈષ્ણા અધ્યયન છે, તેના નિક્ષેપદ્વારે સર્વે પિંદ નિર્ચુક્તિઓ અર્થી કરેલી, દ્વે સ્વનાનુગમમાં અસ્ત્વલિત વિગેરે ગુણ યુક્ત સ્ત્રવ ઉચ્ચારવુ જોઈએ, તે કહે છે.

સે મિક્ત્વુ વા મિક્ત્વુણી વા ગાદાવહકુલં પિંદવાપ્યપદિયાણ અણુપવિદ્દે સમાણે સે જં પુણ જાણિજ્ઞા—અસપ્તં વા પાણં વા સ્વાઇમં વા સાઇમં વા પાણોદિં વા પણોદિં વા ત્રીણદિં વા હરિણદિં વા સંસતં હ્રમ્પિસ્સં સીઓદણ્ણ વા ઓસિતં રયસા વા પરિયાસિયં વા તહપ્પગારં અસપ્તં વા પાણં વા સ્વાઇમં વા સાઇમં વા પરહત્થંસિ વા પરપાયંસિ વા અપ્પાસુયં અણેસણિજ્ઞંતિ મન્નમાણે કામ્પેડવિ સંને નો પદિગ્ગાહિજ્ઞા ॥ સે ય આહચ્ચ પદિગ્ગહે સિયા સે તં આયાય

एगंतमवकमिज्जा एगंतमयकमिच्चा अहे आरामंसि वा अरुंहे अरुपणो अरुपवीए अरुपहरिए अरुपोसे अरुपुदए अरुपुत्तिगणणगदगमद्वियमकडासंताणए विगिंचिय २ उम्मीसं विसोद्विय २ तओ संजयामेव खुं-जिज्जा वा पीइज्जा वा, नं च नो संचइज्जा शुत्तए वा पायए वा से तमायाय एगंतमवकमिज्जा, अहे क्षामथंडिलंसि वा अद्विरासंसि वा किद्विरासंसि वा तुसरारासंसि वा गोमयरासंसि वा अक्करंसि वा तहएगारंसि थंडिलंसि पडिल्लेहिय पडिल्लेहिय पमज्जिय पमज्जिय तओ संजयामेव परिद्विज्जा ॥ (सू० १)

(से शब्द मगध देशमां पहेली विभक्तिना निर्देशमां वपराय छे. तेथी) जे कोइ भिक्षाथी निर्वाह करनार भावभिधु मूळ उत्तरण भारनारो विविध अभिग्रह (तपविशेष) करनारो उत्तरम साधु होय अथवा साध्वी होय, ते भावभिधु के साध्वी अज्ञाता वेदनीय विगोरेना कारणोथी आहार ग्रहण करे छे, ते बतावे छे.

वेअण १ वेआवच्चे २ इरियट्टाए य ३ संजमट्टाए ४ तह पाणवत्तियाए ५ उडं पुण थम्मचिंताए ॥ १ ॥ ”

१ अज्ञाता वेदनिय कर्मदुर करवा. २ बीजा साधुओनी वेआवच्च करवा ३ इयां समिति पाळवा माटे, ४ संयम पाळवा माटे ५ जीवित धारण करवा ६ अने अर्पचितवन करवा माटे आहार लेवाय छे, उपर बतावेला कारणोमांथी कोइएण कारणे आहारनो अर्थो वनीने गृहस्थना धरे जाय, म. क्षामाटे? उ० 'पुडवाय पडियाए' भीक्षा (नो ऊय तेनी प्रतिज्ञा ते) अर्हां मने मळरो, तेथी त्यांसेसीने अन्नन विगोरे जाणे, केवी रीते? ते कहे छे. प्राणि ते ' २ सजा ' (वासी पाणीवाळा रथेला अनाजमां वेइद्विय विगोरे शीषा जीव उत्पन्न थाय छे ते) देखीने ते जीवो होय तो गोचरी न लेवी, तेज प्रमाणे पत्तक (उल आवे छे ते)

जोवी, तथा घटना दाणा विगोरे अदकेल होय, हरिन ते दरो जुवहार विगोरे अंठुरावाळं लीळं पाय होय, तेनी साथे मिश्र थइ गयुं होय, तथा काचा पाणीथी भोजायलुं होय, अथवा सचित्त रजथी परिगुंठित (खरडायेळुं) भोजन प्राणी स्वादिप के स्वादिप होय ते चारे प्रकारनो आहार देनारना हाथमां होय के गृहस्थना वायणमां होय, ते सचित्त अथवा आधाकर्म विगोरे दोषथी अनेपणीय (दोषित) होय पयुं जाणे तो ते भावमिश्रु मळतुं होय, तो पण न के, आ उत्सर्गनी विधि के, हवे अपवादनी विधि के, के द्रव्यादि पटले द्रव्य क्षेत्र फाळ भाव विचारीने जर पडतां लेवुं पडे तो के पण खरो ते बतावे के, द्रव्यथी ते द्रव्य जरनुं हो अने धीजे मळतुं दुर्लभ होय, तथा क्षेत्रथी ते वधा साधुने साधारण गोचरी मळे तेम न होय पटले लोको दृष्टि रानी होय विशेषथी अन्यदर्शनीना रानी होय ? फाळथी दुकाल विगोरे होय. अने भावथी ज्ञान [मंदवाह] विगोरे होय, विगोरे कारण तो गीतार्थ साधु लाभ विशेष होय अने दोष ओछो लागतो होय तो ते के.

पकी फोड वलत अजाणपणे जीवातवाळं अथवा जीव उत्पन्न थाय (तेवुं विदक विगोरे) उन्मिश्र भोजन विगोरे (१) तो तेनी परवचवानी विधि के के. “ से अहम्ब इत्यादि ” पटले कोइवार उपयोग राखवा छतां पण भूलथी ओचित्तुं विगोरे भोजन लेवायुं होय तो, ते ‘अनाभोग’ देनार, लेनार ए वेना भेदथी चार प्रकारनो थाय के, [जेमके (१) साधुनो उप-भोग होय गृहस्थनो न होय, [२] गृहस्थनो उपयोग होय साधुनो न होय, [३] वनेनो उपयोग न होय, (४) वनेनो उपयोग होय.] आचो आधार अशुद्ध आवेलो जणाय तो ते आधार लडने एकांतमां जाय, पटले ज्यां गृहस्थ लोक देखे नहि, तेम आवे पण नहि, ते एकांत स्थळ अनेक प्रकारतुं होय के. ते बतावे के.

आराम, उपाश्रय (अथ शब्द लोक आवता न होय तेवो विशिष्ट पदेशना संग्रह माटे छे.) अथवा शून्यगृह विगोरे स्थळ होय ते स्थळ केवुं होय, ते कहे छे. (अल्पशब्द अभाववाचक छे.) ज्यां इंटा न होय, बीज, हरित, ठार. कातुं पाणी, तथा उत्तिग यासना अग्र भागे पाणीनां विंदु होय ते, पनक लीलण फूलण होय, वधारे पाणीथी भींजायेली माटी होय, मर्कट ते सूक्ष्म जीव अथवा करोलीयानां जाळां जेमां तेना वच्चां होय छे, ते दरेक जीवथी रहित आराम विगोरे स्थळे जइने पूर्वे लीथेला आहारमां जे जीव मिश्रित होय ते देखीदेखीने अशुद्ध आहारने त्यागवो, अथवा भविष्यमां जीव थाय तेवुं साधवो विगोरे होय तेमां जीवो जोइजोइने तेनुं भोजन दूर करीने खावा जेवु वाकी शुद्ध राहुं होय ते बरोबर जाणीने पोते रागद्वेष छोडीने खाय अथवा पीए कहुं छे के-
वायालीसेसणसंकडंमि गहणंमि जीव ! ण हु छलिओ । इण्हि जह न छलिज्जसि भुंजंतो रागदोसेहिं ॥ १ ॥
वेतालीस दोष गोचरीना छे. तेना संकटमां हे जीव ! तुं पथम ठगायो नथी, तेम हवे पण गोचरी करतां रागद्वेष वढे ठगातो नहीं!

रागेण सइंगालं दोसेण सधूमगं वियाणाहि । रागदोसविमुक्को भुंजेज्जा निज्जरापेही ॥ २ ॥

रागथी अंगार दोष थाय छे, द्वेषवढे धूम दोष लागे छे, माटे रागद्वेषथी रहित वनी सकामनिर्जरानी इच्छा राखी गोचरी करजे! अने जे आहार विगोरे खावामां के पीवामां वधारे होय ते न खवाय, अथवा अशुद्ध पृथक् करवुं अन्नक्य होय ती परठववुं जोइए, तेथी ते भिक्षु तेवा वधेला के अशुद्ध आहारने लेइने एकंतमां जाय, एकंतमां जइने ते आहारने परठवे, हवे ज्यां परठवे, ते वतावे छे (अथनो अर्थ पछी छे, वा नो अर्थ अथवा छे) [क्षामेति] बळेळुं स्थान, [इंटना निभाडानी जग्या] अथवा अस्थि अचिन्न ठवीयानां दगलामां कीट, (लोढानो काट)ना दगलामां, अथवा तुपना दगलामां सूकां अडायां, के तेवा कोइएण दगलामां

पूर्वे वतावेल फासु जग्यामां जइने त्यां वारंवार आंखे जोइने रजोहरण विगेरेथी पुंजीपुंजीने परठवे. प्रत्युपेक्षण अने प्रमार्जनने आश्रयी भांगा थाय छे.—

(१) अपत्युपेक्षित अपमार्जित, (२) अपत्युपेक्षित प्रमार्जित (३) प्रत्युपेक्षित अपमार्जित. तेमां पण देख्या विना प्रमार्जन करतो एक स्थानथी बीजा स्थाने जतां तस जीवोने विराथे छे. अने देखीने पूज्या विना आवता पृथ्वीकाय विगेरेने विराथे छे, बाकीना चार भांगा नीचे मुजब छे.—

(४) खराब रीते देखेछं अने पुंजेछं [५] खराब रीते देखेछं बरोबर पुंजेछं (६) सारी रीते देखेछं खराब रीते पुंजेछं (७) सारी रीते देखेछं, सारी रीते पुंजेछ. तेथी आ सातमा भांगामां वतावेळी रीतिए स्थंडिल जोइने उत्तम साधु उपयोग राखीनेन शुद्ध अशुद्ध पुंजना भागो परिकल्पीने त्यजे [परठवे]

हवे औषधिनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा गाहावइ० जाव पविट्टे समाणे से जाओ पुण आसहीओ जाणिजा—कसिणाओ सा-
सियाओ अविदलकडाओ अतिरिच्छच्छिन्नाओ अबुच्छिण्णाओ तरुणियं वा छिवाडिं अणभिकंतयजियं पेहाए.
अफासुयं अणेसणिज्जंति मन्नमाणे लाभे संते नो पट्टिगाहिजा ॥ से भिक्खू वा० जाव पविट्टे समाणे से जाओ
पुण ओसहीओ जाणिजा—अकसिणाओ अससियाओ विदलकडाओ तिरिच्छच्छिन्नाओ बुच्छिन्नाओ तरुणियं
वा छिवाडिं अभिकंतं भजियं पेहाए फासुयं एसणिज्जंति मन्नमाणे लाभे संते पट्टिगाहिजा ॥ (सू० २)

ते भावपिथु गृहस्थना परमां गयेलो होय, त्यां शालीबीज विगरे औषधि द्येय तेने आ प्रमाणे जाणे के आ वधी हणायेली नथी [सच्चित् छे] आमां पण चोभंगी छे, तेमां द्रव्यकुत्सना ते अशस्त्र उपहत [शस्त्रथी हणायेली नथी,] भावकुत्सना ते सच्चित् छे. तेमां कुत्सना आ पदवट्टे चार भांगांमांना पहेला त्रण लेवा, एटले द्रव्यथी तथा भावथी वने प्रकारे अचित्त पयेली होयं ते चोथो भांगो लेवो कल्पे. बाकीना त्रण भांगावाळी न कल्पे.

“सासियाओ” चि—जीवनुं स्वपणुं ते उपजवानुं स्थान मत्याश्रय जेमां छे, ते स्याश्रय छे. अर्थात् अविनष्टयोनिकाळं अनाज छे, अने आगममां पण केटलीक औषधि (अनाज) नो अविनष्ट योनिकाल बताव्यो छे, ते आ प्रमाणे—“एतेसिणं भंते ! सालीणं के वड्ढं कालं जोणी संचिद्वइ” ? एवा सन्न पाठो छे, [गौतमस्वामी पूछे छे के हे भगवन् आ कपोदनी योनि केटलो काल सच्चित्त (उपजवा योग्य) छे. विगरे [‘अविदल कडाओ’ चि—ज्यांसुधी वे फाडचां उपस्थी नीचे सुधी सरखां न कर्या होय अर्थात् दाळ न बनवावी होय. [कटोळनी प्राये दाळ सर्वत्र वने छे] ‘अतिरिच्छिच्छिन्नाओ’ चि—कंदली करेली न होय ते. ए द्रव्यथी कुत्स (आरवी) छे अने भावथी सच्चित्त होय के न होय.

तेज प्रमाणे “अवोच्छिन्नाओ” चि—जीव रहित न थइ होय, ते अर्थात् भावथी कुत्स (आरवी सच्चित्त) होय, तथा ‘तरुणियं वा छिन्नाडिं’ चि—अपरिपक्व मग विगरेनी शीण [फळी] तेनुंज विशेष कहे छे. ‘अणभिकंत भज्जिय’ चि—जीवितथी अभिक्रान्त न होय अर्थात् सच्चित्त होय तथा ‘अभज्जिय’ अमर्दित ‘अविराधित’ होय आ प्रमाणे आवो आहार स्वावायोग्य होय, पण ते अपा-सुक अथवा अनेषणीय पोते देखीने सच्चित्त जाणतो होय तो, गृहस्थ आपे तो प्रण पोते सच्चित्तने ग्रहण करे नाहि, हवे तेथी उलट्टं

सूत्र कहे छे, ते भावभिधुं तेवी औषधिने असंपूर्ण हुकडा थएली अने अचित्त थयेली विनष्ट्योनिवाली दाळ वनावेली कंदली करेली तथा फळी अचित्त थयेली अने भांगेली होय अने ते प्रासुक अने एषणीय (लेवायोग्य) होय अने गृहस्थ आपे तो कारण होय तो साधु तेने ले, लेवायोग्य अने न लेवा योग्यना अधिकारवाळा आहार विशेषतुंज कहे छे:—

से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा—पिहुयं वा बहुस्यं वा भुंजियं वा मंथुं वा चाउलं वा चाउलप= लंबं वा सहसंभजियं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा—पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा असइं भजियं हुक्खुतो वा तिक्खुत्तो वा भजियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिगाहिज्जा ॥ [सू० ३]

ते भावभिधु गृहस्थने वेर गयेलो पृथुक शाली तथा वरीने शेकीने धाणी वनावे, तेमां तुप विगेरेनी बहु रज होय, तथा घटं विगेरेने भुंजला (अथवा शेकेका) होय एटले एक बाजुथी के छेडा नरफथी शेक्या होय, अथवा तल, घटं विगेरे शेक्या होय तथा घटं विगेरे चूर्ण वनावी शेकेल होय अथवा शालीव्रीहीना तांदळा, अथवा तेनीजं कणकी (चाउल पलंब) होय आहुं कोइपण जातनुं अनाज विगेरे एकवार थोडुं शेक्युं होय, थोडुं बीजा शक्कवडे मरडेळुं कुटेळुं होय पण ते जो अप्रासुक अने अनेषणीय पोते मानतो होय तो तेवुं अन्न ले नहि एथी विपरीत होय तो ते लेवुं एटले अग्नि विगेरेथी वारंवार शेक्युं होय, अथवा पूरेपुरुं कुटेळुं होय, अने अथकासुं विगेरे दोषवाळं नहोय; अने प्रासुक होय तेवी खात्री थाय तो लाभ थतां जरूर होय तो साधु ग्रहण करे.

हवे गृहस्थना घरमां पेसवानी विधि कहेछे.—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं जाव पविसिउकामे नो अन्नउत्थिपण वा गारत्थिपण वा परिहारिआ

वां अंपरिहारिणं सद्धिं गाहावहकुलं पिंडवापण्डियाए पचिसिज्ज वां निक्खमिज्ज वां ॥ से भिक्खू वा० वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खममाणे वां पचिसमाणे वा नो अन्नउत्थिण्ण वा गारत्थिण्ण वा परिहारिओ वा अपरिहारिण्ण सद्धिं वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पचिसिज्ज वां ॥ से भिक्खू वां०
गामाणुगामं दूइज्जमाणे नो अन्नउत्थिण्ण वा जाव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा (सू० ४)

ते साधुए गृहस्थना घरमां पवेश करवो होय तो आटला माणसो साथे न जहुं, अथवा पूर्वे ते पेढो होय तो, तेनी साथे न नीकळवुं. तेमनां नाम बतावे छे, (१) अन्य तीर्थिक ते लालं कपडां राखनारा वावा विगेरे. गृहस्थो—भीखना पिंड उपर जीवनारा ब्राह्मण विगेरे. तेमनी साथे पेसतां नीचला दोषो थाय छे, जो पाडळ चाले तो तेओनी करेली इयां पत्ययनो कर्मबंध लगो—जीवरक्षा न थाय, तथा नैनजासननी निंदा थाय, तथा तेओनी जातिमां अहंकार थाय के आवा साधुओ पण अमारी पाडळ चाले छे ! ते ममाणे कदाच साधु आगळ चाले तो तेओने द्वेष उत्पन्न थाय, अथवा देनार असरल स्वभावी होय तो तेने द्वेष थाय, अने वस्तु वहेंचीने आपेतो खराब वस्तवमां पूरो आहार न मळतां जीवननिर्वाह न थइ शके, तेम ममाणे परिहरण ने परिहार छे, ते परिहार सहित चाले, ते 'पारिहारिक' एटले पिंडदोष त्यागवाथी उद्युक्तविहारी (उत्तम) साधु छे, तेवा उत्तम गुणवाळा साधुए पासत्था, अवसन्न कुशील, संसक्त, यथाहंद एवा पांच प्रकारना कुसाधु साथे गोचरी न जहुं, तेमनी साथे जातां अनेषणीय गोचरी आवे, अप्रहण दोष लागे एटले जो पासत्थो 'अनेषणीय' छे, तेहुं साधु पण छे, तो तेनी पढतिनी प्रशंसानो दोष लगो, अने जो न छे तो असंखड विगेरे दोषो थाय, तेहुं जाणीने गोचरी छेवा माटे गृहस्थना घरमां तेवा साथे पेसे नहीं, तेम नीकळे

पण नहीं, तेवीज रीते तेमनी साथे बीजे पण जवानो निषेध करे छे. एटले साधुने स्थंडिल (विचार) भूमिए जवुं होय, अथवा विहार (भणवा) ना स्थळे जवुं होय, तो अन्य तीर्थि विगेरे साथे दोषोनो संभव होवाथी न जवुं, ते कहे छे स्थंडिल साथे जतां पासुक जल स्वच्छ होय, अस्वच्छ होय. घणुं के थोडुं होय, तो तेनाथी जग्या स्वच्छ करतां उपयातनो संभव थाय, अथवा जोडे भणवा जतां सिद्धांतना आलावा गणतां ते पतित साधुने तेवुं न स्वचाथी विकथा करी विद्र करे, ते भय छे अथवा सेह (नवा शिष्य) आदिने असहिष्णुपणाथी क्केशनो संभव थाय छे, माटे तेवा साथे साधुए तेवा स्थळमां जवुं-आववुं नहिं, तेज प्रमाणे ते भिक्षुए एक गामथी बीजे गाम जतां के नगरथी बीजे नगर विगेरे स्थळे जतां उपर बतावेल अन्य तीर्थिओ विगेरे साथे दोषोनो संभव होवाथी जवुं नहि-कारण के मातुंस्थंडिल विगेरे रोकवाथी रोग थतां आत्मविराधन थाय, अने मातुंस्थंडिल करवा जतां पासुक, अपासुक ग्रहण विगेरेमां उपयात अने संयमविराधनानो संभव छे, एज प्रमाणे भोजन [गोचरी] करतां पण दोषोनो संभव समजवां, सेहादि विप्रतारण (शिष्यने कुमार्गे दारववा) विगेरेनो दोष पण थाय. हवे तेमना दाननो निषेध करे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा० जाव पविट्टे समाणे नो अब्जत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा परिहारिओ वा अप-

रिहारियंस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दिज्जा वा अणुपइज्जा वा ॥ [सू० ५]

ते साधु गृहस्थीना घरमां पेठेळ होय, अथवा ते साधु उपाश्रयमां रहेल होय, तो ते साधुए अन्य तीर्थिओ विगेरेने दोषनो संभव होवाथी आहार प्राणी विगेरे पोते आपवुं नहि, तेम गृहस्थ पासे पोते अपाववुं नहि, जो आपतां देखे तो लोको एवुं माने के आ साधु आवा अन्यदर्शनीओनी पण दाक्षिण्यतां (अरम) राखनारा छे. वकी तेमने टेको आपवाथी असंयममां पवर्तन विगेरेना दोषो थाय छे.

पिंडना अधिकारशीज 'अनेषणीय' दोष संबंधी निषेध करावा आहे हे.

से भिक्खू वा० जाव समाणे असणं वा ४ अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुहिसस पाणाइं भूयाइं जीवाइं सचाइं समाब्भ समुहिसस कीयं पाप्पिच्चं अच्छिज्जं अणिसठं अभिहडं आहट्टु चेएइ, तं तहपणारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा बहिया नीहडं वा अनीहडं वा अत्ताद्धियं वा अणत्ताद्धियं वा परिश्रुतं वा अपरिश्रुतं वा आसेवियं वा अणासेवियं वा अफासुयं जाव नो पडिग्गाहिज्जा एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ समुहिसस चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ॥ (सू० ६)

ते साधु गृहस्थने घेर गोचरी गयेजो द्योय ते नीचे बतावेला दोषोबाळुं अन्न विगेरे न ले, 'असंपडियाए' चि—जेनी पासे स्व (द्रव्य) नथी ते अस्व (निर्ग्रंथ) हे, एवा निर्ग्रंथने कोइ भद्रक गृहस्थ जोइने विचारे के आ निर्ग्रंथ हे, माटे तेने माटे सचिच अत्ताज विगेरे आरंभ समांरंभ करीने बहोरावीश, संरंभ, समांरंभ ने आरंभनुं स्वरूप आ प्रमाणे हे.

संकल्पो संरंभो परियावकरो भवे समांरंभो; । आरंभो उद्वबओ सुद्धनयाणं तु सव्वेसिं ॥१॥

संकल्प करवो ते संरंभ हे, परित्ताप करतारो समांरंभ हे, अने उपद्रव करीने कराय ते बधा शुद्ध नयोमां आरंभ मुख्य हे, आ प्रमाणे समांरंभ विगेरेने आचरीने आधाकर्म [साधु माटे रसोइ] वनावे, एतथी बधी अशुद्ध कोटी लीधी तथा क्रीत—ते मूल्य आपीने लेवुं; पाप्पिच्च—ते उळीतुं लेवुं, आछेय—ते बलजबरीथी छीनवी लेवुं, अनिसष्ट—ते तेना बधा मालीके मकीने न आपेळं चोळक विगेरे हे, अभ्याहत गृहस्थे दूरथी लावी आपेळं, आवुं वेचांतुं विगेरे लावीने आपे, आ वाक्कयथी बधी विशुध्धकोटी

लीथेली छे, ते आहार चारे प्रकारनो होय, ते आधाकर्म विगेरे दोषथी दोषित होय ते जो गृहस्थ आप्पे, ते बीजाए करेछुं पोते आप्पे, अथवा पोते जाते करीने आप्पे, तथा घरथी नीकळेछुं, अथवा न नीकळ्युं होय अथवा ते दाताएज स्वीकार्युं होय, अथवा न स्वीकार्युं होय, अथवा ते दाताए वयुं खायुं होय अथवा न खायुं होय अथवा थोडुं चार्युं होय अथवा न चार्युं होय, आवुं वयुं होय छतां जो ते अप्राप्तुक अनेषणीय पोताने माळुम पडे तो मळतुं होय छतां पण लेवुं नहीं आ पहेला अने छेछा तीर्थकरना साधुओने (अकल्पनीय) छे, पण २२ तीर्थकरोना साधुओने तो जेने उद्देशीने कर्युं होय तो तेने न कल्पे; बाकी बीजाने कल्पे, आ प्रमाणे घणा साधुओने आश्री उद्देशीने बनावेछुं होय तो ते लेवुं कल्पे नहीं, तेज प्रमाणे साधुओने आश्रीपण वे सुत्रनी एकत्र बहुल योजना करवी.

हवे बीजा प्रकारे अविशुद्ध कोटीने आश्री कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव प्रमाणे से जं पुण जाणिजा असणं वा ४ वहवे प्रमणा माहणा अतिहि किवणवणीमए पगणिय २ समुहिसस पाणाइं वा ४ समारब्ध जाव नो पडिगाहिजा ॥ (सू० ७)

ते भावसाधु गृहस्थने वेर गोचरी गयेल होय त्यां एवुं जाणे के आ वयुं भोजन विगेरे घणा श्रमणोने माटे बनाव्युं छे, ते श्रमणो निर्ग्रंथ, शाक्य, तापस, गौरिक, आजीविक ए पांच छे, तेमने माटे बनावेल होय, ब्राह्मण माटे अथवा भोजनना समय पहेलां जे मुसइफर आवे ते अतिथि माटे अथवा कृपण (दरिद्री) माटे वणीमक [भाट विगेरे] माटे उद्देशीने बनावेछुं होय, एटले वेजण श्रमण पांच छे ब्राह्मण, एम संख्या गणने सचित्त वस्तुना आरंभवडे अचित्त रसोइ बनावी होय तो ते भोजन संस्कारवाळं

खावेळुं के खांधा पळी वचेळुं अथवा अप्रासुक अनेषणीय आंधाकमीं भोजन मळतुं होय तीणणं जाणीने लें नहीं.

हवे विशोधि कोटी आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा० जाव पविट्टे समणो से जं पुण जाणिजा—असणं वा ४ वहवे समणा माहणा अतिहिं कियणवणीमए समुद्दिस्स जाव वेएइ तं तहएगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं वा. अबहियानीहडं अण-
चट्टियं अपरिसुत्तं अणासेविय अफासुयं अणेसणिज्जं जाव नो पडिगाहिजा अह पुण एवं जाणिजा पुरिसंतरकडं
वहियानीहडं अचट्टियं परिसुत्तं आसेवियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिगाहिजा ॥ (मू० ८)

ते साधु भोजन विगेरे आवा प्रकारतुं जाणे के—यणाश्रमण ब्राह्मण अतिथि कृपण वणीमकने माटे उद्देशीने वचावेळुं छे, अने कोइ गृहस्थ रसोइ तैयार थया पळी आपे छे, तेतुं भोजन तेज पुरुष त्यांज उभो रहीने पोताना कवजामा राखेळुं, खाधाविनातुं, वापर्याविनातुं, अप्रासुक, अनेषणीय आपतो होय तो त्यां गयेळा जैन साधुए तेतुं जाण्या पळी ते न लेतुं, ते “जावंतिया भिक्खू” सूत्रथी उल्लडुं हवे कहे छे, (अथ शब्द पूर्वानी अपेक्षाए ‘पण’ ना अर्थमां छे, पुनःशब्द विशेषणना अर्थमां छे,) पण ते भिखु एम जाणे के ते भोजन बीजा माटे करेळुं छे, वहार आवेळुं छे, तेणे पोतातुं करेळुं छे, तेणे खाधुं छे, वापर्युं छे, प्रासुक छे, एषणीय छे. आतुं जाणीने मळे तो ते भोजन साधुए लेतुं, तेनो भावार्थ आ छे, के अविशोधि कोटीवाळुं भोजन जेम तेम कर्युं होय तो ते न कल्पे, पण विशोधि कोटीवाळुं पुरुषान्तर करेळुं होय, अने तेणे पोतातुं करेळुं होय तो ते साधुने लेतुं कल्पे छे, विशोधि-कोटीनो अधिकार कहे छे.

સે ભિક્ષુ વા ભિક્ષુણી વા ગાહાવહકુલં પિંડવાપવદિયાણં પવિસિઝકામે સે જાઇં પુણ કુલાઇં જાણિજ્ઞા—ઇમેસુ
 સ્વલુ કુલેસુ નિરૂપે પિંડે દિજ્ઞદ અગ્નપિંડે દિજ્ઞદ નિરૂપે માણ દિજ્ઞદ નિરૂપે અવહરમાણ દિજ્ઞદ. તદ્દાપગારાઇં
 કુલાઇં નિરૂપાઇં નિરૂપમાણાઇં નો ભત્તાણ વા પાણાણ વા પવિસિજ્ઞ વા નિક્કલમિજ્ઞ વા ॥ ૯યં સ્વલુ તસ્સ ભિક્ષુસસ
 ભિક્ષુણીણ વા સામણિયં જં સન્વદ્દેહિં સમિણ સયા જણ [મુ. ૧]. ત્તિવેમિ ॥ પિણ્ઠેપણાઃપ્યયન આઘાંહેત્તકઃ ॥ ૧-૧-૧ ॥

તે ભિક્ષુક ગૃહસ્થીનાં ઘરમાં જવાની ઇચ્છાવાળો આવાં કુલો જાણે કે, આ કુલોમાં નિત્ય પિંડ (પોષ) અપાય છે, તથા અગ્ન-
 પિંડ કર્મોદનો ખાત વિગેરે પ્રથમથી ભિક્ષામાટે સ્થાપીને અપાય છે, તે અગ્નપિંડ નિત્ય ભાગ અર્ધપોષ અપાય છે, તથા પોષનો ચોથો
 ભાગ અપાય છે, તેવા નિત્ય દાનયુક્ત કુલ, નિત્ય દાન દેવાથી સ્વપક્ષ તથા પરપક્ષના સાધુઓ જાય છે. તેનો ભાવાર્થ આ છે કે,
 સ્વપક્ષ તે સંયત, પરપક્ષ વાકીના ભિક્ષુકો તે વધા ભિક્ષામાટે જતા હોય, અને તે દાનદેનારા ઇમ સમજે કે ઘણા ભિક્ષુકોવે આપીણ
 ણથી ઘણો આરંભ કરી તેઓ છૂટ્ કાચનો આરંભ કરે, અને થોડું રાંધે તો વધાને અંતરાય થાય માટે વધારે રાંધે ણવા સ્થાનમાં
 ઉત્તમ સાધુ ગોચરી માટે કે પાણી માટે ત્યાં ન જાય, હવે વધાનો ઉપસંહાર કરે છે.

પ્રથમથી હેવદસુથી તે ભિક્ષુને સમગ્ર જે ઉદ્દમ, ઉત્પાદન ગ્રહણ ણ્ણના સંયોજના [પ્રમાણથી વધારે] અંગાર યુમકારણોવદે
 સમજીને સુપરિશુદ્ધ પિંડ સાધુઓણ લેવો, તેજ જ્ઞાનાચાર સમગ્રતા દર્શન ચારિત્ર તપ્ર અને વીર્યાચાર સંપન્નતા છે. અથવા આ સૂત્ર-
 વદે સમગ્રતા દેવાદે છે, કે જે સરસ વિરસ વિગેરે આહાર મળે છે, તેનાથી અથવા રૂપ રસ ગંધ સ્પર્શવદે સાધુ સમિત છે. અર્થાત્
 સમયાવ રાત્રનાર સંયત છે, અથવા પાંચ સમિતિથી સમિત છે, શુભ અશુભમાં રાગદ્વેષ રહિત છે, આર્થો સાધુ હિત સાધવાથી સહિત

हे, अथवा ज्ञान दर्शन चारित्र सहित हे, आर्वा संयम युक्त साधु यतना करे (संयम पाळे) आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे हे-के मे भगवान पासे सांभळ्युं ते तमने कहुं, पोतानी मतिकल्पनाथी कहुं नथी. बाकी बधुं पूर्वमाफक जाणवुं.

पिंडैषणा अभ्ययननो प्रहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेलो कहीने हवे बीजो उद्देशो कहे हे, तेनो आ प्रमाणे संबंध हे. के प्रथम उद्देशामां पिंडहुं स्वरूप बताव्युं, अने अर्हो पण ते संबंधी विशुद्धकोटिने आश्रयी कहे हे.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपट्टियाए अणुपचिद्वे समाने से जं पुण जाणिज्जा-असणं वा ४ अट्टमिणोसहिण्णु वा अद्धमासिण्णु वा मासिण्णु वा दोमासिण्णु वा तेमासिण्णु वा चाउम्मासिण्णु वा पच्चमासिण्णु वा छम्मसिण्णु वा उऊसु वा उउसंधीसु वा उउपरियट्टसु वा बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमणे एगाओ उक्खाओ परिणसिज्जमाणे पेहाए दोहि उक्खाहिं परिणसिज्जमाणे पेहाए तिहि उक्खाहिं परिणसिज्जमाणे पेहाए कुंभीसुहाओ वा कल्लोवाइओ वा सनिहिसंनिचयाओ वा परिणसिज्जमाणे पेहाए तहणगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवियं अफासुयं जाव नो पट्टिगाहिज्जा ॥ अइ पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडं जाव आसेवियं फासुयं पट्टिगाहिज्जा ॥ (सु० १०)

ते भावभिधु आवा प्रकारतुं भोजन विगेरे जाणे के, आठमनां पैपथ उपवास विगेरे ते अष्टमीपैपथ ते जेमां होय ते अष्टमीपैपथ उत्सव छे, तेज प्रमाणे पंदर दिवसे आवनारो ठेठ ऋतुना छेडे आवनारो, विगेरे महिने बे महिने त्रण महिने चार महिने छ महिने रतुमां रतुसंधिमां अथवा रतु बदलातां कोइपण निमित्ताने उद्देशीने यणा श्रमण माहण अतिथि कृपणवनीमगोने एक पिठरक (तपेलामां) थी भात विगेरे “परिष्सिज्जमाण” आपेलाने खातां देखीने अथवा बे त्रण पिठरकथी अपातुं होय विगेरे जाणतुं. आ ‘पिठरक’ ते सांकडा मोढानी होय तो कुंभी (चर) छे, अने ‘कलोवाइअ’ पिळ्ळी पिठक (देयडो) छे, तेमांथी कोइपणमांथी अपाय, अथवा संनिधि ते गोरस विगेरेनो संचय होय, तेमांथी अपातुं होय, [“तओ एवविदं जावंतिदं पिंडं समणादीणं परिष्सिज्जमाणं पेहाए”] ति आबो पिंड अपतो जाणीने तेज पुरुष साधु विगेरेने उद्देशीने वनवीने आपतो होय तो अपासुक अनेषणीय मानतो, मळतुं होय तो पण ते ले नहि, हवे अमुक विशेषणवाळं लेवा योग्य वतावे छे,

एदले ते भिक्षु एवुं जाणे के पुरुषांतर थयुं छे. एदले वीजा गृहस्थने तेनी महिनत बदल अथवा वीजा कारणे मळ्युं होय अने ते पोते तेमांथी पोतानुं थया पळी बढोराने, तो एषणीय पासुक जाणीने पोते ले.

हवे जे कुलोमां गोचरी माटे जवुं कल्पे तेनो अधिकार कहे छे—

से भिकखू वा २ जाव समाणे से जाइं पुण कुलाइं जाणिजा, तं जहा—उगगकुलाणि वा भोगकुलाणि वा राइ-
नकुलाणि वा खत्तियकुलाणि वा इक्खवागकुलाणि वा हरिवंसकुलाणि वा एसियकुलाणि वा वेसियकुलाणि वा
गंडागकुलाणि वा कोइगकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा बुकासकुलाणि वा अन्नयरेसु वा तहपगारेसु कुलेसु

अदुगुंछिएसु अगर्हिएसु असणं वा ४ फासुय जाव पडिग्गाहिज्जा ॥ (सु० ११)

ते भिक्षु गोचरी जवा चाहे तो आंवां कुळो जाणीने तेमां पवेक्ष करे, उपकुळ ते आरक्षिक [कोटवालुं काम ते वखते कर-
नारा] भोगकुळ ते राजाने पूजवायोग्य होय, राजन्यकुळ ते राजाना मित्रतरीके हता, क्षत्रियकुळ राष्ट्रकूट विगोरेमां रहेनार, इक्ष्वाक
ते ऋषयदेवना वंशमां जन्मेळा, हरिवंश ते नेमिनाथना वंशना, 'एसिअं गोष्ठ वैश्य (वणिज) गंडक ते नापित छे, जे गाममां उद्धो-
षणातुं काम करे छे, कोट्टाग (सुतार) वोक्कशालिय तंतुवाय (कपडां वणनारा) हवे कयांसुधी कहेसे. ते खुलासो करे छे. के तेवां
कुळोमां गोचरी जवुं के ज्यां जवाथी लोकोमां निंदा न थाय, जुदा जुदा देशना दीक्षा लीयेका विद्योने सहेलथी समजाय तेदला
पाटे तेवा कुळोनां विशेषणो कहे छे, के न निंदावायोग्य कुळमां गोचरी जाय, एदले चामडातुं काम करनार मोची, चामडीया
दासदांसी विगोरेना कुळमां गोचरी न जवुं, पण तेनाथी उलटां सारां धर्मी कुळोमां ज्यां गोचरी निर्दोष पासुक मळे ते छे.

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा—असणं वा ४ समवाएसु वा पिंडनियरेसु वा इंदमहेसु वा
रंदमहेसु वा एवं रदमहेसु वा सुगुंदमहेसु वा भूयमहेसु वा जक्खवमहेसु वा नागमहेसु वा धूममहेसु वा चेरयम-
हेसु वा रक्खवमहेसु गिरिमहेसु वा दरिमहेसु वा अगडमहेसु वा तलागमहेसु वा दहमहेसु वा नइमहेसु वा सरम-
हेसु वा सागरमहेसु वा आगरमहेसु वा अन्नपरसु वा तहप्यगारेसु विरुवरुवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु वहवे समण-
माहणअतिहिकिवणवणीमिगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए दोदि जाव संनिहिसनिचयाओ वा परिए-
सिज्जमाणे पेहाए तहप्यगारं असणं वा ४ अबुरिसंतरकडं जाव नो पडिग्गाहिज्जा ॥ अह पुण एवं जाणिज्जा

दिनं जं तेसिं दायवं, अह तत्थ भुंजमाणे पैहाए गाहावइभारियं वा गाहावइभणिणं वा गाहावइपुत्तं वा भुमं वा सुण्हं वा धाइं वा दासं वा दासिं वा कम्मकरं वा कम्मकरिं वा से पुब्बामेव आलोइज्जा—आउसिति वा भणिणित्तिं वा दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं भोयण जायं, से सेवं वयंतस्स परी असणं वा ४ आहट्टु दलइज्जा तहपणारं असणं वा ४ सयं वा पुण जा इज्जा परी वा से दिज्जा फासुयं जाव पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० १२)

ते भिक्षु आ ममाणे वळी आहार विगेरे ४ प्रकारनो जाणे के आ वीजा पुरुषने अपायो नथी तो अनेवणीय अप्रासुक जाणीने पोते न ले, ते केवो आहार ते कहे छे.

समवाय (मेळो) संखच्छेदश्रेणी विगेरेनो पिंड निकर मरेलानी पाळक पिंड अपाय छे. (गुजरातमां श्राद्ध कहेवाय छे) ते तथा इंद्रउत्सव [प्रथम कार्तिकी पूर्णिमाए थतो] स्कंद ते कार्तिकस्वामीनो महोत्सव पूर्व करतो रुद्र (महादेव) विगेरे जाणीता छे. मुकुंद (वळदेव) एटले इन्द्र, स्कंद, रुद्र, मुकुंद, भूत, जक्ष, नाग, स्तुप, चैत्य, वृक्ष, गिरि, दरि, अगड, तलाग, द्रह, नदी, सरोवर, सागर, आगर अथवा तेवा कोइ देव विगेरेने उद्देशीने कोइ महोत्सव करे त्यां जे कोइ श्रमण ब्राह्मण अतिथि कृपण वणीमाग विगेरे आवे तेने आपवा माटे भोजन बनावे, तेवुं जो कोइ जैनसाधु जाणे के ते रसोइ बनावनारना कवजासां छे, तो ते अशुद्ध जाणीने न ले, जोके त्यां वधाने दान देवातुं न होय, तो पण त्यां घणा माणसो एकठा थयां होय, तेथी त्यां संखडी (रसोइ-खाना) आगळ आहार लेवान जवुं, तेज विशेषण सहित कहे छे—

वळी आवो आहार जाणे के जे श्रमण विगेरेने आपवतुं होय तेने अपायुं छे, अने गृहस्थलोकोने त्यां खातां जुए, तो त्यां

जरर होय तो आहार माटे जाय, ते गृहस्थोनां नाम कहे छे, जेमके गृहस्थोनी भार्या विगेरेने पूर्वे खातां जुए, अथवा मालिकने जुए, तो मालिकने उद्देशीने साधु बोले के हे आयुष्यमति ! हे वेंन ! मने जे कंड भोजन तैयार होय ते आप, आहुं साधु बोले छते कोइ गृहस्थ भोजन विगेरे लावीने आपे, अने त्यां घणो जनसमूह एकटो थवाथी अथवा तेवां बीजां कारण होय तो साधु पोतानी मेळे याचे, अथवा याच्याविना पण गृहस्थ आपे, अने ते प्रासुक एषणीय अन्न विगेरे जाणे तो साधु ले.

हवे अन्य गामनी चिंता (विचार) ने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा २ परं अश्रजोयणमेराए संखडिं नच्चा संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भिक्खू वा २ पार्इणं संखडिं नच्चा पडीणं गच्छे अणाढायमाणे, पडीणं संखडिं नच्चा पार्इणं गच्छे अणाढायमाणे, दाहिणं संखडिं नच्चा उदीणं गच्छे अणाढायमाणे, उदीणं संखडिं नच्चा दाहिणं गच्छे अणाढायमाणे, जत्थेव सा संखडिं सिया, तंजहा—गाभंसि वा नगरंसि वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडवंसि वा पट्टणंसि वा आगरंसि वा दोणसुहंसि वा नेगमंसि वा आसमंसि वा संनिवेसंसि वा जाव रायहारिणंसि वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए, केवली बूया—आयाणमेयं संखडिं संखडिपडियाए अभियारेमाणे आहाकम्मियं वा उद्दंसियं वा मीस-

जायं वा कीयगडं वा पामिच्चं वा अच्छिज्जं वा अणिसिद्धं वा अभिहडं वा आहट्टु दिज्जमाणं सुजिज्जा (सु० १३) ते भिक्षु वधारेमां वधारे अर्धं योजनसुधी क्षेत्रमां जमणतुं ज्यां रसोडुं होय, त्यां जवानो विचार करे नहि, पण पोताना गाममां अनुक्खे गोचरी जातां तेहुं जमण होय ते जाणीने भुं करतुं ते कहे छे—एदळे पूर्वेदिशायां जमण जाणे, तो तेथी उलटी

पश्चिमदिशायां गोचरी जाय, अने पश्चिमदिशायां जमण होय तो पूर्वदिशायां गोचरी जाय, एम बीजी पण दिशायां जाणवुं, एदळे जमणनी जग्याए जवानो अनादर करे, ज्यां जमण होय त्यां न जवुं, हवे जमण कयां कयां होय ते कहे छे, गाम ज्यां इंद्रियोनी पुष्टि थाय अथवा ज्यां करो लागु पडे ते छे, तेज प्रमाणे नगर, खेड, कर्कट मडंब पतन (पाटण). आकर द्रोणमुख नैगम आश्रम राज्यधानी संनिवेश [आ वया शब्दोक्तो अर्थ आचारानना अगाजना भागयां पा० अपयेल छे] आवा. स्थानयां संखडि (जमण) जाणीने जवुं नहि, केवळीप्रभु कहे छे के, ते जमण कर्मोना उपादाननुं स्थान छे, अथवा बीजी प्रतिपां आदानने वदले आयतन शब्द छे. तेनो अर्थ आ छे के संखडिमां जवुं ते दोषोनुं स्थान छे.

प्र०.—संखडीयां जवुं ते दोषोनुं आयतन केवीसीते छे? ते कहे छे “संखडि संखडि पडियाएत्ति”—जे जे संखडिने उद्देशीने पोते जाय, तो ते जग्याए आयांनो कोइपण दोष अवश्ये लागु पडे ते बतावे छे. आथाकर्म, औद्देशिक, मिश्र, क्रीत, उग्रतक, आ-च्छेद्य, अनिष्टष्ट, अभ्याहत आयांथी कोइपण दोषथी दोषित पोते भोजन वापर, कारण के जमणनो करनारो एवुंज मनयां धारे के, आ आवनारो साधु मारा जमणने उद्देशीने आद्यो छे, माटे मारे कोइपण व्हाने एने आपवुं एम विचारी आथाकर्म दोषवाळं भोजन विगेरे वनावी आपे, अथवा जे साधु लोखणी थडने जमणनी बुधिए त्यां जाय, ते सूद वनीने आथाकर्म विगेरेनुं भोजन वापर, वळी संखडि निमिते आवेला साधुने उद्देशीने ग्रहस्थ वसति (उतरवावुं स्थान) आ प्रमाणे करे ते कहे छे.

असंजए भिक्खुपडियाए खुडियदुवारियाओ महस्त्रिय दुवारियाओ कुळा, महस्त्रियदुवारियाओ खुडियदुवारि-
याओ कुळा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुळा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुळा, पवायाओ सिज्जाओ

निवायाओ कुज्जा, निवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहि वा उवससयसस हरियाणि छिदिय छिदिय दाक्खिय दाक्खिय संथारगं संथारिज्जा, एस विळुंगयाओ सिज्जाए, तंमहा से संजणं नियंठे तहणगारं पुरेसंखवडि वा पच्छासंखवडि वा संखवडि संखवडिपडियाए नो अभिसंथारिज्जा गमणाए, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स जाव सया

जए (सू० १३) चिबेभि । पिण्डैवणाध्ययने द्वितीयः १-१-२

असंयत ते गृहस्थ छे, अने ते श्रावक अथवा पकृतिभद्रक अन्य दर्शनीय होय, ते साधुओने आवता जाणीने नेमने माटे सांकडा दरवाजा जे घरने होय ते साधुनिमित्ते मोटा करावे, अथवा घणा मोटा होय ते जरूर जेटला सांकडा करावे, अथवा सरस्वी जग्गा होय ते स्त्रीओने आवताना भयथी विषम करावे, अथवा विषम होय ते साधुओना समाधान माटे सरस्वी वनावे छे, तथा घणी हवावाळी जग्गाने शीयाळो होय तो पवन न आवे तेवी वनाववा आरंभ करे. अने उनाळो होय अने पवन वितानी जग्गा होय तो हवावाळी वनाववा प्रयत्न करे, तथा उपाश्रयना चोकमां लीळं घास होय तो छेदी छेदी-उखेडी उखेडीने उपाश्रय रहेवायोग्य संस्कारवालो वनावे, अथवा सुवानी जग्गा संस्कारकने सुधारे. अने ते मनमां एवो उद्देश राखे के साधुनी शर्याता संस्कारमां आपणुं कर्तव्य छे. माटे आपणे करवु जोइए, कारण के तेओ निर्ग्रंथ-अकिंचन छे, वकी गृहस्थ तेम न करे तो कारण आवे साधु पोते (निर्घृण भइने) करीछे. तेटला माटे अनेक दोषथी दुष्ट एवुं संखवडि (जमण) जाणीने लग्न विनेरेनी पथम अने मरण पाळकनी पळीनी संखवडीमां जमणने उद्देशीने साधु न जाय, अथवा आगळ संखवडि थवानी छे, माटे पथम साधु जाय, अथवा गृहस्थ जग्गाने सुधारी राखे, अथवा संखवडि पूरी भइ, माटे हवे वखेळुं भोजन (मिष्टान्न) खाइशुं एवी बुद्धिथी पळीथी साधुओ जाय,

मादे साधुए तेवी संखडिना जमणने उदेशीने तेवा स्थानमां विहार नकरवो, ओज साधुनी संपूर्ण संयमशुद्धि छे, के संखडिमां सर्वथा जवातुं मांडीवाळतुं.

त्रीजो उदेशो.

बीजो उदेशो कहीने त्रीजो कहे छे, तेजो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उदेशापां बतवतुं छे के संखडिमां दोषो जाणीने त्यां जवानो निषेध कर्यो, हवे बीजे प्रकारे तेमां रहेला दोषोने बतावे छे.

से एगइओ अन्नयरं संखडिं आसित्ता पविता छडिज्ज वा वमिज्ज वा भुत्ते वा से नो सम्मं परिणमिज्जा अन्न-यरे वा से दुक्खे रोगायंके समुण्णजिज्जा केवली बूया आयाणमेयं ॥ (सू० १४) इह खल्ल भिक्खू गाहावईहिं वा गाहावईणीहिं वा परिवायएहिं वा परिवार्इयाहिं वा एगज्जं सद्धिं सुंडं पाठं भो वइमिस्सं हुरत्था वा उवस्सयं पडिलेहेमाणो नो लंभिज्जा तमेव उवस्सयं संमिस्ससीभावमावज्जिज्जा, अन्नमाणे वा से मत्ते विपरियासियभूए इत्थिविणगहे वा किलीवे वा तं भिक्खुं उवसंक्रमित्तु बूया—आउसंतो समण ! अहे आराभांसि वा अहे उवस्सयंसि वा राओ वा वियाले वा गामधम्मनियंतिं कट्टु रहस्सियं मेहुणधम्मपरियारणाए आउट्टामो, तं चेवेगईओ सा-तिज्जिज्जा—अकरणिज्जं चेयं संखाए एए आयाणा [आयतणाणि] संति संविज्जमाणा पच्चवाया भवंति, तमहा से संजए नियंटे तहण्णारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए (सू० १५)

ते भिक्षु कोइ बरत एक चर (एकजो फरनारो) होय, अने ते आंगळ-पाछळ संवडिहुं भोजन खाइने तथा शीखंड के दूध विगेरे अति लोडुपीपणाथी रसनो स्वादीयो बनीने घणुं खाय, तो विशेष झाडा थाय, अथवा वंपन थाय, अथवा अंजीरपणथी कोइ विगेरे कोइ रोग थाय, अथवा तुर्त जीव लेनारो आतंक शूळ विगेरे रोग थाय, माटे केवळी सर्वज्ञप्रभु कहे हे के ते संवडिहुं जमण कर्मोहुं उपादान हे, ते आदान केवी रीते थाय हे, ते बतावे हे. आ संवडिना स्थानमां आ अपायो (पीडाओ) थाय हे, अथवा जीभनो स्वाद करी इंद्रियो उन्मत्त यतां दुर्गति गमन विगेरे परलोकना अपायो हे, [खलु शब्द वाच्यनी शोभा माटे हे] ते भिक्षु गृहस्थ अथवा तेना घरनी स्त्रीओ साथे अथवा परित्राजक (बाबां) साथे अथवा बावीओ साथे कोइ दिवस एक वाक्य (एक चित्त थवा) थी प्रेमी बनीने तेओनी साथे ते साधु लोडुपपणे कोइ पण जातहुं नसो चडावनाहं पीणुं पण पीए, अने नसो चडतां रहेवाहुं स्थान याचे, पण जो तेवो शीलरक्षणनो उपाश्रय न मळे तो ते संवडि नजीकनाज मकान (धर्मशाळा विगेरे) मां गृहस्थ अथवा बावी विगेरे ज्यां उतर्या होय तेमनी साथे उतरिने एकमेकपणे वर्ते, त्यां नसो चडेलो होवाथी कांतो गृहस्थ पो-ताने भूली जाय अथवा साधु पोताने साधुपणाथी भूले, अने तेथी आहुं चिंतवे, के हुं गृहस्थज हुं ! अथवा (इंद्रियो पुष्ट थयेळ होवाथी) स्त्रीना शरीरमां मोहित थयेळो अथवा नपुंसक साथे कुचालथी साधुपणुं गुमावे, अथवा तेने उन्मत्त जोइ कोइ ररवडती स्त्री अथवा नपुंसक तेनी पासे आवीने बोले के हे आयुष्मन् ! हे श्रमण ! हुं तारीसाथे एकांतमां मळवा इच्छुं हुं, आराममां अथवा उपाश्रयमां रात्रे अथवा संंध्याकाले ते साधुने इन्द्रियोथी परवश बनेलाने कहे के तपारे त्यां आवहुं, अने तपारे अपारी इच्छाथी विपरीत न करवुं, पण मारी साथे तपारे हमेशां अभुक्त स्थळमां आवहुं, आ प्रमाणे परवश बनावीने गामनी सीप्रमां अथवा

कोइ एकांत स्थळमां जइने स्त्रीसंग अथवा कुर्चेष्टानी विव्रति करे, अने दुराचारथी भ्रष्ट थवां वसत आवे, माटे संखडिमां जवुं अयोग्य छे, एम मानीने संखडि (जमण) मां जवुं नहि, कारण के आ जमणो कर्मोपादननां कारणो छे, तेमां कर्म दरेक क्षणे एकठां थाय छे, एटले त्यां जवाथी बीजां पण अशुभ कर्मबंधनां कारणो मळी आवे छे, उपर बतावेला त्यां आलोक-संबंधी रोगना दुराचारना अपायो छे. तेमज परलोक संबंधी दुर्गतिगमनना प्रत्यवायो छे, माटे संखडीने उद्देशीने त्यां पहेलां के पळी साधुए जवुं नहीं.

से भिक्खू वा २ अन्नयरिं संखडिं सुखा निसम्म संपहावइ उरुयभूएण अप्पाणेणं, धुवा संखडी, नो संचाएइतत्थ इयरेयेरिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं षिंडवायं पडिग्गाहिना आहारं आहारिणए, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा ॥ से तत्थ कालेण अणुपवेसिना तत्थियरेयेरिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं षिंडवायं पडिग्गाहिना आहारं आहारिज्जा ॥ [सू० १६]

ते भिक्षु आगळ-पाळळनी कोइपण 'संखडी' बीजा पास के जाते सांभळीने निश्चय करे के त्यां अवश्ये जमण छे, तो त्यां उत्सुकपणाथी अवश्य दोडे के मने अद्भुत भोजन मळसे. तो त्यां गया पळी जुदा जुदा धरोथी समुदायनी एषणिय गोचरी आ-धाकर्मादि दोष रहित फक्तं रजोहरण विगेरेना वेषथी मळे ते उत्पादन दोष रहित लेवी, तं तेनाथी बनी शके नहि, अने कपट पण करे, प्र०—केवी रीते ? पोते गुरु पासेथी 'प्रतिज्ञा' करीने जाय, के जुदा जुदा धेरेथी गोचरी लइश, पण उपर बतावेली रीते तेम लेवा शक्तिवान न थाय. अने संखडिमांज जाय. माटे आलोक परलोकना अपायोना भयने जाणीने संखडि तरफ न जाय. केवी रीते करे. तं कहे छे. ते भिक्षु कारण विशेषे त्यां जाय तो पण योग्य समये जुदा जुदा धरोमां जइने सामुदायिक

आहार—पाणी पासुक वेषमाअथी मळे ते भात्रीपिंड विगेरे दोषथी रहित लइने आहार करे.

से भिक्खू वा र से जं पुण जाणिज्जा गामं वा जाव रायहाणि वा इमंसि खल्ल गामंसि वा जाव रायहाणिसि वा संखडी सिया तं पि य गामं वा जाव रायहाणि वा संखडि संखडि पडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ केवली बूया आयाणमेयं अइजाज्वमां णं संखडि अणुपविस्समाणस्स—पाएण वा वाए अकंतपुव्वे भवइ, इत्थेण वा इत्थे संखालियपुव्वे भवेइ, पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ, सीसेण वा सीसे संयट्टियपुव्वे भवइ, काएण वा काए संखोभियपुव्वे भवइ, दंडेण वा अट्टीण वा सुट्टीण वा लेळुणा वा कवाल्लेण वा अभिहयपुव्वेण वा भवइ, सीओदएण वा उस्सित्तपुव्वे भवइ, रयसा वा परियासियपुव्वे भवइ, अणेसणिज्जे वा परिशुत्तपुव्वे भवइ, अत्थेसि वा दिज्जमाणे पडिअगाहियपुव्वे भवइ, तमहा से संजए नियंठे तइएणारं आइजावमाणं संखडि संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ (सू० १७)

वळी ते भिक्षु जो आ प्रमाणे जाणे के गाममां, नगरमां अथवा राजधानीमां कोइएण स्थळे संखडि (जमण) भवानी छे त्यां चरक विगेरे अनेकं भिक्षाचरो, हशे. त्यां जमणनी बुद्धिए साधु विहार न करे. त्यां जवाथी यता दोषोने सूत्रवडे कहे छे, के केवळी (सर्वत्र) प्रशु तेने कर्म उपादान छे. एज वतावे छे. ते संखडि चरक विगेरेथी व्याप्त हशे. एटले १०० नी रसोइ होय त्यां पांचसो भेगा थरो. त्यां थोडी रसोइने तीथे आवा दोषो थाय छे. थक्काथक्कीमां एकना पण बीजाने लागरो. हाथथी हाथ अथइशे. पात्रां साथे पात्रां अथइशे. अथवा माथासाथे माथुं भटकाशे. साधुनी काय साथे चरक विगेरेनी काया अथइशे. ते वरवते थक्को लागतां

ते वावो कोपायमान यतां क्षमदां करशे. पछी ते रीसमां आवीने दंड (लाकडी) थी कैरीना गोदळा विभेरेथी मुक्काथी माटीना देफाथी कपाल [घडाना ठीकरा] थी साधुने घायल करशे, अथवा टंडा पाणीथी सिंचशे, धूळथी कपडां वगाडशे, आ दोषो तो जगाना संकोचने लीधे थाय छे, पण ओछी रसोहने लीधे आवा दोषो थाय छे. अशुद्ध आहार खावानो वखत आवरो, कारण के थोडुं रांधेछुं अने भिक्षु वधारे होय छे, त्यारे घरधणी एम समजे के माहं नाम सांभळीने आ लोको आव्या छे, माटे मारे कोइपण रीते पण तेमने आपवुं जोइए, एहुं विचारीने साधुने रांगीने पण आपशे, तेथी दोषित आहार खावानो प्रसंग आवे, अथवा कोइ वखत दानदेनारने बीजा वावा विभेरेने आपवानी इच्छा होय अने वचमां साधु आवीने छे, तेथी घरधणीने तथा वावा विभेरेने खोहुं लग्ने, माटे आवा दोषोने जाणीने उत्तम साधुए आवी संखडिमां घणा लोको भरायेळा होय, त्यां भोजननी तंगीने लीधे अथवा धक्कामुक्कीना कारणे संखडिनी बुद्धिए त्यां जहुं नहि, हवे सामान्यथी पिंडनी शंकाने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा ४ एसणिज्जे सिया अणेसणिज्जे सिया वितिगिंछ-

समावन्नेण अप्पाणेण असमाहडाए लेसाए तहणपगारं असणं वा ४ लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० १८)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो एषणीय आहरने पण शंकावाळुं जाणे, के आ उद्दमादि दोषोथी दुष्ट छे. तां साधुए तेवी शंका थया पछी तेहुं लेहुं नहि, कारणके “जं संके तं समावज्जे,” ज्यां शंका थाय त्यां ते भोजन लेहुं नहि, (आ सूत्रमां एषणीय अथवा अनेषणीय चार प्रकारनो आहार होय, पण पोताने केदलांक कारणोथी माळुम पडे के ते उद्दम दोष विभेरेथी युक्त छे. आवी ज्यां पोतानी लेख्या थइ तो उत्तम साधुए ते लेहुं नहि.) हवे गच्छमांथी नीळेकला साधुअोने आश्रयी सूत्र कहे छे.

से भिक्खु० गाहावइहलं पविसिउकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइहलं षिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खल-
मिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा २ वहिया विहारभूमिं वा विचारभूमिं वा निक्खममाणे वा पविसमाणे वा सव्वं भंड-
गमायाए वहिया विहारभूमिं वा विचारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा २ गामाणुगामं
दइज्जमाणे सव्वं भंडगमायाए गामाणुगामं दइज्जिज्जा ॥ (सू० १९)

ते भिक्खु गच्छमांथी जिनकल्पी विगेरे सुनि नीकळ्यो होय, ते गृहस्थने वेर गोचरी लेवा जाय, तो पीतानां वथां धर्मोपकरण
साथे लइने गृहस्थना घरमां पेसे, अथवा नीकळे, तेवा सुनीनां उपकरण अनेक प्रकारे छे.

“दुगतीग चउक्क पंचग नव दस एकारसेव चारसह” इत्यादि—ते जिनकल्पी वे प्रकारना छे, हाथमांथी पाणी टपके तेवा,
तथा जे लडिवाळा होय तेने पाणीतुं विंदु टपके नहि, तेवा सुनिने शक्ति अनुसार विशेष अभिग्रह होवाथी फक्त वेज उपकरण
रजोहरण अने मुखवस्त्रिका छे, अने कोइने शरीरना रक्षण माटे एक सूत्रनुं कपडूं होवाथी त्रण उपकरण थया, पण तेवा साधुने वधारे
ठंडीना कारणे उनतुं वस्त्र वधारे राखवाथी चार उपकरण थयां, तेथी पण ठंडी न सहन थाय तो वे सूत्रनां वस्त्र राखवाथी पांच थयां.
पण लडिवाविनाना जिनकल्पीने सात प्रकारनां पात्रानो निर्योग थवाथी १२ उपकरण थाय छे. “१ पत्तं २ पत्तावंथो ३ पाय-

द्वणं च ४ पायकेसरिया ॥ ५ पडलाइ ६ रयत्ताणं ७ च गोच्छओ पायनिज्जोगो ॥ १ ॥”
१ पात्र २ पात्रानो बंध ३ पात्रस्थापन ४ पात्र केसरिका (पुंजणी) ५ पडला ६ रजस्त्राण ७ गोच्छो. उपरनां पांच तेमां मळतां
चार उपकरण वधारेमां वधारे जिनकल्पीने होय, ते गोचरीमां जाय, त्यारे साथे लेइ जाय तेम बीजे स्थळे पण जतां साथे लेइ जाय,

ते कहे छे, एटले गाम विगेरेनी बहार स्वाध्याय करवा अथवा स्थंडील जवा जाय तो पण वधां उपकरण लेइ जाय, आ बीजुं सूत्र छे, तेज प्रमाणे बीजे गाम जाय तो पण लेइने जांय, ए बीजुं सूत्र छे, हवे गमनना अभावनां निमित्त कहे छे,

से भिकखू० अह गुण एवं जाणिजा—तिव्वदेसियं वासं वासेमाणं पेहाए तिव्वदेसियं महियं संनिचलमाणं पेहाए सहवाएण वा रयं समुध्युयं पेहाए तिरिच्छसंपाइमा वा तसा पाणा संथडा संनिचयमाणा पेहाए से एवं नच्चा नो सव्वं भंडगमायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविंसिज्ज वा निकखमिज्ज वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निकखमिज्ज वा पविसिज्ज वा गामाणुगामं दइज्जिजा ॥ (सू० २०)

ते भिक्षु कदी आहुं जाणे के अहीं लंबाण क्षेत्रमां झाकल पढे छे, अथवा धुमस पढे छे, अथवा वंदोळीयो वाइने थुक घणी उडे छे, अथवा तीरछां-पतंगीयां विगेरे क्षीणां जंतुओ उट्टीने शरीर साथे आयडे छे, तो ते साधु पूर्वं त्रण सूत्रमां बतावेल उपधि लइने जाय आवे नहि, तेनो परमार्थ आ छे, के जिनकल्पीनो आ कल्प छे के ज्यारे बहार नीकळे त्यारे प्रथम उपयोग दे के वर्षांद झाकल के धुमस वरसे छे के वरसवानो छे ? जो प्रथम जाणे तो न नीकळे. कारण के तेनी शक्ति एवी छे के छमास सुधी पण ठहोमात्रुं (झाडो पेयाव) रोकी शके, अने स्थविरकल्पी पण उपयोग दे, अने जाण्या पछी कारण होय तो नीकळे खरो. पण पोतानी वधां उपधि लेइने न नीकळे, प्रथम बतावी गया के अधम कुलोमां गोचरी विगेरे माटे जहुं आवहुं नहि. पण हवे अतिदनीक कुलोमां पण दोषोना देखवायी त्यां जवानो निषेध छे, ते बतावे छे.

से भिकखू वा २ से जाई गुण कुलइं जाणिजा तंजहाखचियाण वा राईण वा कुराईण वा रायपेसियाण वा राय-

वंसद्विद्याण वा अंतो वा, वाहिं वा गच्छंत्वाण वा संनिविद्धाण वा निमंतेप्रमाण वा असणं वा ४ लाये संते नो पडिगाहिजा (सू० २१) ॥ १-१-३ ॥ पिण्डैषणायां तृतीय उद्देशकः ॥
 ते भिक्षु एत्रां कुलो जाणे के, चक्रवर्ती, वासुदेव, बळदेव विनोरे क्षत्रियोनां आ छे, अथवा क्षत्रियोथी अन्य राजाओनां कुलो छे, कुराज ते नानां रजवाडा (नाना टाकरडा विनोरे) ना कुलो छे, राजना प्रेक्ष्य ते दंडपाक्षिक [हवालदार फोजदार] नां कुलो तथा राजवंशमां रहेला ते राजाना मामा तथा भाणेजो विनोरेनां कुलोमां संतापना भयथी येसवुं नहि, त्यां जतां आवतां अंदर रहेला म्माणसोथी अथवा बहार रहेला म्माणसोथी अथवा जता आवता म्माणसोथी साधुओने नुकशान थाय, माटे कोइ गोचरीतुं निमंत्रण करे, अथवा भोजन मळतुं होय तोपण त्यां गोचरी लेवा जतुं नहि.

त्रीजो उद्देशो समाप्त भयो.

चोथो उद्देशो.

त्रीजो कहीने चोथो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां संखडी संबंधी विधि कही, अही पण तेनी बाकीनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणेजा मंसाइयं वा मच्छाइयं वा मंसखलं वा आहेणं वा पहेंणं वा हिंगोलं वा समेलं वा हीरमाणं पेहाए अंतरा से मणा बहुपाणा बहुवीया बहुहरिया बहुओसा बहुउदया बहुउध्या बहुउ-
 त्तिगणगदगामडीयमकइसंतयाणा बहवे तस्य सम्पणमाहणअतिहिक्किवणवणीसंगा उवागया उवागमिस्संति (उवाग-

च्छंति) तत्थाइना विनी नो पन्नस्स निक्खमणपवेसाए नो पन्नस्स वायणपुच्छणपरियइणाणुपेहधम्मणुओगचिं-
ताए, से एवं नच्चा तहपगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडिआए नो अभिसंघारिज्जा गम-
णाए ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा मंसाइयं वा मच्छाइयं वा जाव हीरमाणं वा पेहाए अंतरा से
मग्गा अप्पा पाणा जाव संताणगा नो जत्थ वहवे समण० जाव उवांगमिस्संति अप्पाइना विनी पन्नस्स निक्ख-
मणपवेसाए; पन्नस्स वायणपुच्छणपरियइणाणुपेहधम्मणुओगचिंताए, सेवं नच्चा तहपगारं पुरेसंखडिं वा० अभि-
संरिज्ज गमणाए ॥ (सू० २२)

ते साधु कोइ गाम विगेरेमां भिक्षा माटे गयो होय, त्यां संखडि आवा प्रकारनी जाणेतो त्यां गोचरी जावुं नहि, जेमां मांस
विगेरे प्रधान छे. मांसना इवाहुओ माटे मुख्य तेज वस्तु होय, एटले प्रथम तेने वधारे रांधे. अथवा बीजी रसोइ पूरी थया पछी
ते तेना स्वाहुओ माटे रांधे, त्यां कोइ सगो विगेरे तेवुं अभक्ष्य भोजन बेर लइ जाय, तेवुं देखीने त्यां साधु जाय नहि, तेना दोषो
हवे पछी कहेशे, तेज प्रमाणे माछलांथी वधारे प्रधान होय, तेज प्रमाणे मांसखल आश्रयी पण जाणवुं. ज्यां संखडि माटे मांस
छेदीने तेने सुकावे, अथवा सुकवेळुं, टगळो करेळुं होय, तेज प्रमाणे माछलासंबंधी पण जाणवुं. अथवा विवाह पछी बहु बेर
आवतां वरना घरे भोजन थाय छे, अथवा बहुने लइ जतां सासरे भोजन थाय छे, हिंगोल, ते मरेखानुं भोजन छे, अथवा यक्षनी
यात्रा विगेरे माटे भोजन छे, 'संमेल' ते परिवारना सन्माननुं भोजन, अथवा गोटीयाओनुं भोजन, आवुं कोइपण प्रकारनुं जमण
जाणीने त्यां कोइ सगां—वहालांथी ते निमित्ते कइपण लइ जवातुं देखीने त्यां भिक्षामाटे जवुं नहि, त्यां जवाथी थता दोषोने वतावे

हे, त्यां रस्तामां जतां बहु पतंग विगोरे माणीओ होय छे, तथा.. बहु बीज, बहु हरित, बहु अवश्याय घणुं पाणी बहु उत्तिग पनक भीजवेली माटी करोळीयानां ज्राळां होय छे, तथा त्यां जमण जाणीने घणां श्रमण ब्राह्मण अतिथि कुमण वणीमग आब्या, आवशे अने आवे छे, ते चरक विगोरेथी व्याप्त होय छे, तेथी बुद्धिमान साधुने त्यां जवुं आववुं कल्पे नहि, तेम त्यां जनारने गीतवा-जोत्रना संभवथी भणवुं भणाववुं अर्थचितयन विगोरे थइ शके नहि, तेथी ते साधुने आवातां जतां घणो काल लागे, तेथी बहु दोषवाळी संवृद्धिमां ज्यां मांस विगोरे मुख्य छे, तेवा प्रथमना जमणमां के पाळलना जमणमां तेने उद्देशीने साधुए जवुं नहि, हवे अपवाद मार्ग कहे छे.

ते भिक्षु मार्गमां विहार करतां दुर्वळ थाय, मंदवाडमांथी उठ्यो होय, तपचरणथी दुर्वळ थयो होय, अथवा बीजे कंइ आहार मळे तेवुं स्थान न होय, अथवा त्यांज दवानी चीज मळे तेम होय, तो तेवा जमणमां कारण प्रसंगे जवुं पडे तो जे रस्ते स्मश्रु जीवो घास बीज के वचमां कांइ न पड्युं होय, तो ते रस्ते मांस विगोरेना दोषो दूर करवा समर्थ होय तो कारणे जाय, अने पोताने खपनी भक्ष्य वस्तु लइ आवे. (जैनोमां दश विद्रुति विगइ छे. घी, दूध, दही, तेल, गोल, कडाइ एटले एकळं घी, के दूध, दही, तेल, गोल अने कडाइमां घी, तेल पुष्कळ नांखीने तळेल होय ते कडाइ विगय कहेथाय, आ पदार्थो जरूर पडे तो लेवाय छे, पण मांस मदिरा मांखण अने माखी वीगोरेतुं मध ए अभक्ष्य छे. कारणके तेमां जीवोनी उत्पत्ति छे. अने ते खानारने इंद्रियो दमन करवी तथा सुबुद्धि राखवी दुर्लभ छे, माटे जैन साधु के श्रावकने वर्जवा योग्य छे, माटे वने त्यांसुधी तेवा रस्ते पण जवानो निषेध छे, वखते खराव वस्तुनी दुर्गंधी आवे तो प्रण बुद्धि अष्ट थाय छे.

चालता पिंडना अधिकारमां भिक्षा संबंधि खुलासावार कहे छे,

० से भिक्खुवा २ जाव पविसिउकामे से जं पुण जाणिज्जा खीरिणियाओ गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए असणं वा ४ उवसंखट्टिज्जमाणं पेहाए पुरा अप्पज्जहिए सेवं नच्चानो गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा ॥ से तमादाय एंगंतमवकमिज्जा अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा खीरिणियाओ गावीओ खीरियाओपेहाए असणं वा ४ उवक्खवहियं पेहाए पुराए ज्जहिए सेवं नच्चा तओ संजयामेव गाहा० निक्खमिज्ज वा ॥ (सू० २३)

ते भिष्णु गृहस्थना घरमां पेसता आ ममाणे जाणे के अहीं तुर्तनी मसुतिवाळी गायो दोहवाय छे, तो त्यां गायो दोहवाती देखीने चारे प्रकारनो आहार ' रंधातो ' जोइने अथवा भात विगेरे रंधिलो तैयार देखीने पण प्रथम वीजाने न आपेलो होय तो पण प्रवर्तमान अधिकरणनी अपेक्षावाळो प्रकृतिप्रदक विगेरे कोइ गृहस्थ साधुने देखीने श्रद्धावाळो वनीने धणुं दूध तेमने आधुं, आवी बुद्धिथी वाड्डाने पीडा करे, दोहवाती गायोने त्रास पमाडे, ते कारणथी साधुने परपीडाना कारणे संयम तथा आत्मानी विराधना धाय, अने अड्या रंधायेळ भात विगेरेने जल्दी रंधवा माटे प्रयत्न करे तैथी पण संयम विराधना छे, माटे तेहुं जाणीने साधु गोचरीं माटे त्यां न जाय, न नीकळे तेवा स्थळे भुं करहुं ते कहे छे, ते भिष्णु ते गायनु दोहहुं, विगेरे जाणीने एक बाजुए ज्यां गृहस्थ न आवे, न देखे त्यां उभो रहे, त्यां उभा रहेतां आ ममाणे पळी जाणे के ' गायो दोहवाइ गइ छे, त्यारपळी गोचरीनी जरूर होय तो शुद्ध आहार लेवा योग्य होय ते लेवा जाय अने नीकळे,

पिंडना अधिकारर्थेन आ कहे छे.

भिकववागा नामेने एवमाहंसु—समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं इइज्जमाणे खुट्ठाए खुलुअयं गामे संनिरद्धा ए नो महालए से हंता भयंतारो वाहिरगाजि गामाणि भिकवायरियाए वयह. संति तत्येगइयस्स भिकखुस्स पुरेसंशुया वा पच्छासंशुया वा परिवसंति, तंजहा—गाहावइ वा गाहावइणीओ वा गाहावइपुत्ता वा गाहावइधुयाओ वा गाहावइसुणहाओ वा धाइओ वा दांसा वा दासीओ वा कम्मकरा वा कम्मकरीओ वा, तहप्पगाराइं कुलाइं पुरेसंशुयाणिवा पच्छासंशुयाणि वा पुत्र्वामेव भिकवायरियाए अणुपविसिस्सामि, अविय इत्थ लभिससामि पिंडं वा लोयं वा रवीरं वा दहिं वा नवणीयं वा धयं वा गुळं वा तिळं वा महुं वा मज्जं वा मंसं वा सक्कूलिं वा वा फाणियं वा पूयं वां सिहिरिणं वा, तं पुत्र्वामेवं शुच्चा पच्चि पडिणहं च संलिहिय संमज्जिय तओ पच्छा भिकखूहिं सदिं गाहा० पविसिस्सामि वा निक्खवमिस्सामि वा, माइट्ठाणं संफासे. तं नो एवं करिज्जा ॥ से तत्थ भिकखूहिं सदिं कालेण अणुपविसित्ता तत्थियरेयपरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियां पिंडवायं पडिगाहित्ता आहारं आहारिज्जा, एयं खलु तस्स भिकखुस्स वा भिकखुणीए वा सामाणियं० (सू०२४) ॥

१-१-४ ॥ पिण्डैवणायां चतुर्थं उद्देशकः ॥

केटलाक साधुओ जे एक स्थले नंपावळ क्षीण यवायी एक जग्याए रहा होय, तथा मासकल्पनो विहारकरनारा कोइ जग्याए मासकल्प रहा होय ते समये बीजा विहार करनारा परोणा साधु त्यां आवीने उतर्या होय, तेमने पूर्व स्थिर रहेला

अथवा मासकल्पी उत्तर्या हाय, तेओ कहे के, आ गाम थुल्लक (नातुं) छे, अथवा गोचरी आपवाभां तुच्छ छे, तथा सूत्रक विगेरेथी घर अटक्यां छे, माटे घणुंज तुच्छ छे, तेथी हे पूज्य ! आप वने त्यांसुधी नजीकना गामभां गोचरी माटे जजो, तो ते प्रमाणे करवुं. हवे रहेला साधुनो दोष वतावे छे,

अथवा त्यां रहेनार साधुना पूर्वना सगां भत्रीजा विगेरे होय, अथवा पळवाडेना सगां. सासरीयांनां सगां विगेरे होय, ते वतावेछे. जेमके गृहस्थ, तेनी स्त्री तेना पुत्रो, दीकरीओ, दीकरांनी वहुओ, धावमाला दासदासी नोकर. नोकरडी तेवां संसारी संबंधवाळां पूर्वनां के पळीना सगां-संवंधी होय. तो त्यां पूर्वगोचरी जाडं, तो त्यां साहं भोजनशालिना चोखा विगेरे तथा दूध, दही, मांखण, घी, गोल तेल मध, दारु, मांस सक्कली (तलसांकळी), गोकनीपेत, पूडा, शीखंड विगेरे गोचरीना वचवत पहेलां लावीने खाडं, आ सूत्रभां भक्ष्य अभक्ष्य वस्तुओनो विवेक सू. २२ भां वताजो छे, ते आधारे अपवाद समजवो, अथवा कोइ साधु दुष्ट बुद्धिथी, रसगुधीथी पोताना हिंसक सगां जे पूर्वनां संबंधी होय तो त्यांथी लावीने बारोबार खाय. (ते माटे आ सूत्रभां तेनो निषेध कर्यो के तेणे त्यां जवुं नहि,) तेम अविवेकथी वस्तुओ लावीने खाय, पीणुं पीए. पळी पातरां ऋणवार साफ करीने पळी गोचरीना समये डाहा (चांत) मनवाजो वनीने हुं नवा आवेला परोणा साथे गोचरी जइ आवीक, आवुं कपट कोइ करे तो, ते साधुनुं रसना लोछुपपणाथी साधुपणुं नष्ट थाय छे, माटे विजा साधुए तेम न करवुं. त्यारे साधुए शुं करवुं ते कहे छे. आवेला परोणा साथे त्यां रहेला साधुए गोचरीना वचवते जुदाजुदा कुलोमांथी थोडी थोडी सामुदायिक एषणीय (उदगम) दोष रहित) तथा वैषिक ते फक्त साधुना वेधथी मेळवेल (धात्री पिड विगेरे उत्पादन दोष रहित) गोचरी मेळवीने लेवी आज

साधुनी संपूर्णता छे, (आ सूत्रमां मांस-मदिरावाळां कुटुंबमांथी कोइए दीक्षा लीथी होय, तो तेवाए सागांने बेर गोचरी जुदा न जवुं, तेज श्रेयस्कर छे, कारणके कुबुद्धि केवी खराब छे, अने तेनुं जैन धर्ममां केवुं पायश्चित छे ते नीकेवुं बनेछं दृष्टांत वांचवा जेवुं छे.

(कुमारपाल राजाए जैनधर्म स्वीकार्या पहैलां मांसभक्षण करेछुं अने पाछळथी त्याग कर्युं दहंतुं, तेने एक समये बेबर खातां मांसनो स्वाद आव्यो, तेथी श्रीमान हेमचंद्रआचार्य पासो आवीने पूछयुं, के मने बेबरखावुं कल्पे के नहि? गुरए कहुं के नहि. प्र-शामाटे? उ-पूर्वनो दुष्ट स्वभाव मांसभक्षणनो याद आवे. कुमारपाले कहुं के त्यारे जो तेवुं स्मरण थयुं होय तो तेनुं मने पायश्चित थुं आवे? उ-बचीस दांत पाडी नांखवानुं. तेज समये लुहारने बोलावी दांत खेची काढवा कहुं, त्यारे हेमचंद्राचार्य ते राजानी दहता जोइ वीजुं पायश्चित आप्युं आथी सामजवानुं ए छे के 'तेवा' मांसभक्षणवाळां कुटुंबोमां जतां कुमारपाल माफक खराब चीज याद आवी जायतो साधुपणुं भ्रष्ट थाय, पण बीजा साधु साथे होय तो तेनी शरमथी त्यां रहेनारो साधु पण बचे, अने सागांने पण मांस भक्षण न करवा बोध मळवाथी पापथी बचे.

चोथो उद्देशो समाप्त.

पांचमो उद्देशो.

चौथो कह्यो, हवे पांचमो उद्देशो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां निर्दोष पिंड लेवानी विधि कही अने अहीं पण तेज कहे छे.

से भिक्खू वा २ जाव पविट्टे समाणे से जं गुण जाणिजा—अगणपिंड उक्खिक्खमाणं पेहाए अगणपिंडं निकक्खणं पेहाए अगणपिंडं हीरमाणं पेहाए अगणपिंड परिभाइजमाणं पेहाए अगणपिंडं परिभुंजमाण पेहाए अगणपिंड परिट्टविज्जमाजं पेहाए पुरा असिणाइ वा अवहारइ वा पुरा जत्थउणो समण० वणीमगा खद्धं २ उवसंक्रमंति से हंता अमहवि खद्धं २ उवसंक्रमामि, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करेज्जा ॥ (सू० २५)

सै भिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो एम जाणे के देवता माटे तैयार करेलो भान विगेरेनो आहार छे, तेमांथी थोहो थोहो काहे छे. अने बीजा वासणमां नाखे छे, तेबुं देखीने अथवा कोइ देवना मंदिरमां लइ जवातुं जोइने अथवा थोहुं थोहुं बीजाने अपातुं जोइने तथा बीजाथी खवातुं अथवा देवळनी चारे दिशामां बलि तरीके उछालातुं अथवा पूर्वे बीजा ब्राह्मण विगेरेए त्यांथी एकवार जमी आवीने वेर लइ जता होय, अथवा एकवार जमीआवीने श्रमण विगेरे एम माने के बीजीवार पण आपणने त्यां मळसे, एम धारीने पाछा त्व राथी जता होय, आबुं देखीने कोइ भोजो साधु के छालचु साधु ते भोजनना स्वादथी ललचाइने तेम विचार के हुं पण त्यां जइने गोचरी लाबुं, आम करबुं साधुने कल्पे नहि कारणके आबुं करतां तेनो पण बीजा माफक कपट करबुं पढे.

हे भिक्षुमां फ्रवान्नी विधि कहे छे
 से भिक्खु वा० जाव समाणेअंत रा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा तोरणाणि वा अगलाणि वा
 अगलपासगाणि वा सति परक्मे जयांमेव परिकमिज्जा; नो उच्चुयं गच्छिज्जा, केवली बूया आयाणमेयं
 से तत्थ परक्कममाणे पयलिज्ज वा पक्खलेज्ज वा पवडिज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा पक्खलेज्जमाणे वा पव
 डमाणे वा, तत्थ सेकाए उच्चारणे वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणेण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूण्य वा
 सुक्केण वा सोणिण्ण वा उवलित्ते सिया, तहप्पगारं कायं नो अणंतरहियाए पुढवीए नो ससिणिद्धाए पुढवीए
 नो चित्तभंताए सिल्लाएनो चित्तभंताए लेल्लए कोलावासंसि वा दाए जीवपइट्टिए सअंढे सपाणे जाव ससंताणए
 नो आपमिज्ज वा पमिज्ज वा संलिहिज्ज वा नलिहिज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वडिज्ज वा आयाविज्ज वा
 पायाविज्ज वा, से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा पत्तं वा कट्टं वा सक्कं वा साइज्जा, जाइजा से तमायाय
 एणंतमवक्कमिज्जा २ अहे द्दामर्थडिल्लिसिवा जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि पडिल्लेहिय पडिल्लेहिय पमिज्जिय

तथो संजयामेव आपमिज्ज वा जाव पयाविज्ज वा ॥ (सू० २६)

ते साधु गृहस्थने वेर गोचरी जवा माटे जतां पाडो (भइछो), शेरी, के गाम विगेरेमां पेसतां मार्ग जुए, त्यां रस्तामां
 जतां वचमां समान भूभागमां अथवा वे गामना वचमां कयारा वनावेल जुए, अथवा घरने के नगरने खाइ के कोट हाय, अथवा
 तोरणो अर्गला (अटगलो) अथवा अर्गलपाशक (जेमां अर्गलानो अंकोडो नाखे छे, ते जुए, तो ते कारणके लइने ते सीधे

मार्गे न जाय; कारणके त्यां जतां केवळीप्रभु आहे हे के कर्मबंधनतुं ते कारण छे, वखते संयम विरायना अथवा आत्म विरागना थायछे ते वतावे छे. तेवे मार्गे जतां मार्गमां वमना कारणे विषमपणांथी कोइ वखत धुजे, कोइ वखत टोकर रवाय, कोइ वखत पडीजाय तो छकायमांथी कोइपण कायने विराथे, तेमज त्यां शरीरना मळथी, पिशाचथी बळवा, लींढ, वमन, पित्त, पर, वीर्य, लोहीर्थां खरडाय माटे तेवे मार्गे न जवुं पडे तो टोकरखातां गारामां पडीने खरडाय विगेरे कारणयो आवुं न करे, ते आहे छे.

ते साधु तेवा अशुचि गारा विगेरेमां पडतां वचमां वख राख्या विना खुल्ला शरीरे पृथ्वी साथे स्पर्श न करे, अथवा भीनी जमीन साथे के धुळवाळी पृथ्वी साथे तथा सचित्त पत्थर साथे तथा सचित्त माटीना टेफासाथे अथवा धुणना कीडाथी सडेछुं लाकडुं जेमां अनेक नानां इंडां होय तेनी साथे अथवा करोळीयाना जाळांवाळी जग्या साथे एकवार न स्पर्श करे, न वारंवार स्पर्श करे, तेनाथी गारो दूर न करे, तेम त्यां वेसीने कादव दूर करवा खोतरे नहि, तेम त्यां वेसीने उद्वर्तन (चोळवुं) न करे, तेम सुकायलाने पण त्यां न खोतरे, तेम त्यां उभो रहीने सूर्यने नडके एकवार न तापे, अथवा वारंवार न तापे, शुं करे, ते आहे छे ते भिक्षु त्यांथी नीकळी अल्प रजवाळु तृण विगेरे याचे, अनं अचित्त जग्याए निभाडा विगेरे एकांतमां जोइने त्यां वेसीने शरीरनो कादव दूर करे, अथवा तडके तपावे. अनं पळी दूर करे. अने स्वच्छ करे, वळी शुं करे ? ते आहेछे.

से भिक्खू वा० से जं गुण जाणिजा गोणं वियालं पडिपहे पेहाए महिसं वियालं पडिपहे पेहाए एवं मणुस्सं आसां हत्थिं सीहं वणं विगं दीवियं अच्छं तरच्छं परिसरं सियालं विरालं सुणयं कोलसुणयंकोकतियं चित्ताचिच्छ

द्वयं त्रियालं पट्टिपहे पेहाए सइ परकमे संजयामेव परकमेजजा, नो उज्जुयं गच्छिजजा । से भिवखू वा० समाणे अंतरा से उवाओ वा खाणुएं वा कंटए वा घसी वा पिछुगा वा विसमे वा विजजले वा परिया।ज्जिजजा, सह परकमे संजयामेव, नो उज्जुयं गच्छिजजा ॥ (सू० २७)

ते भिक्षु रस्तामां जतां ध्यान राखे. अने जो त्यां एवुं जाणे के रस्तामां गाय, गोथो विगेरे छे, अने ते मारकणो होवाथी रस्तो बंध छे, अथवा झेरी साप छे, जंगली भेंस के पाडो छे, दुष्ट मनुष्य छे, घोडो हाथी, सिंह, बाघ, वृक (बरगड्डं), चित्रो, बळद सरथ, जंगली हुकर, कोकंतिक, शीयाळना आकारतुं लोमडी जेवुं जानावर छे, जे रातमां कोको एम आरदे छे, चित्ता, चिल्लडय के जंगली जानवर छे. तेवुं कोइपण दुःखदायी प्राणी रस्तामां माळस पडे तो प्रथम उपयोग दइने खात्री करे, अने बीजा रस्तो होय तो ते सीधे रस्ते न जतां भय विनाता रस्ते जाय, तेज प्रमाणे मार्गमां खाडो होय ठंठुं होय कांटा होय, ढोळव होय, काळी फाटेली माटी होय, उंचानीचा देकरा होय, कादव होय, तेवी जग्याए बीजा मार्ग होय तो चक्रावो खाइने पण ते रस्ते जवुं पण टुंका सीधा रस्ते न जवुं. कारणके त्यां जवाथी संयमनी तथा पोतानी विराधनानो संभव छे.

से भिवखू वा० गाहावइकुल्लस दुवारवाहं कंटगवुं दियाए परिपिहियं पेहाए तेसिं पुब्बामेव उगहं अणुत्तविय अपट्टिलेहिय अप्पमज्जिय नो अवंगुणिज्ज वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्जवा, तेसिं पुब्बामेव उगहं अणुत्तविय पट्टिलेहिय पट्टिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा पविसेज्ज वा निक्खमेज्ज वा॥ (सू० २८)

ते साधु गृहस्थने धेर गोचरी जतां ते घरनुं बारणुं दीधेळुं जोइने ते घणीनी रजा लीधा विना, आंखथी जोइने रजो-

हरण विगेरेथी पूंज्या विना उघाडवुं नहि, उघाडीने पेसे नहिं, अने नीकळे पण नहि, तेना दोषो वतावे छे. गृहस्थने द्वेष थाय ते घरमांथी वस्तु खोषाय तो साधुना उपर शंका आवे अने उघाहेला द्वारथी पशु विगेरे घरमां पेसी जाय, तेथी संयम अने आत्मविराधना थाय, हवे जो कारण होय, तो अपवादमार्ग कहे छे.

ते घरमां जावानी जरूर होय तो तेना धणीनी रजा लडने आखे देखीने ओघाथी पुंजीने वारणुं विगेरे उघाडे तेनो भावार्थ आ छे. पोते दरवाजो उघाडीने पेसवुं नहि, जो मांदा आचार्य विगेरे माटे त्यां औषध विगेरे मळतुं होय, अथवा वैद्य त्यां रहेतो होय, अथवा दुर्लभ द्रव्य त्यां मळसे, अथवा ओछी गोचरी मळेळी होय, एवां खास कारणो आवेथी दीधेळा वारणा आगळ उभो रहीने शब्द करे (बोलावे) अथवा पोते संभाळथी पुजीप्रमाजीने उघाडीने जवुं .

त्यां प्रवेश थया पळीनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा २ से जं पुण जाणिज्जा समणं वा माहणं वा गामपिंडोत्तमं वा अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए नो तेसिं संलोए सपट्टिदुवारे चिट्ठिज्जा, से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा २ अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, से से परो अणावायमसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा ४ आहट्टु दलहज्जा, से य एवं वइज्जा—आउसंतो समणा ! इमे मे असणे वा ४ सव्वजणाए निसट्टे तं भुंजह वा णं परिभाएह वा णं, तं चेगइओ पडिगाहिचा तुसिणीओ उवेहिज्जा, अविचाइं एयं मममेव सिया, माइट्ठणं संफासे नो एवं करिज्जा से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा २ से पुव्वामेव आलोइआ—आउसंतो समणा ! इमे मे असणे वा ४ सव्वजणाए निसिट्टे तं भुंजह वा णं जाव

परिभाएह वा णं, सेणमेवं वयंतं परा वइज्जा—आउसंतो सम्पणा ! तुम चेवं णं परिभाएहि, से तत्थ परिभाएमाणे नो अप्पणो खंधं २ डायं २ ऊसदं २ रसियं २ मणुत्तं २ निधं २ लुक्खं २, से तत्थ अमुच्छिप्प अगिधे अंग (ना) हिप्प अणउद्दोववन्ने बहुसममेव परिभाइज्जा, से णं परिभाएमाणं परो वइज्जा—आउसंतो सम्पणा ! माणं तु परिभाएहि सव्वे वेगइआ ठिया उ भुक्खाभो वा पाहांपो वा, से तत्थ भुंजमाणे नो अप्पणा खद्धं खद्धं जाव

लुक्खं, से तत्थ अमुच्छिप्प ४ बहुसममेव भुंजिज्जा वा पाइज्जा वा ॥ (सू० २९)

ते साधु गाम विगरेमां भिक्षा माटे पेठेलो एमं जाणे, के आ यरमां पथम श्रमणं विगरे पेठेल छे. तो तेने पहेलां पेठेलो जेइने दान देनार तथा जेनारने अपीति न थाय, तथा अतरायकर्म न वंधाय, माटे ते वंने देखे, त्यां उभा न रहेहुं, तेमज नीकळवांना दरवाजा आगळ पण वंनेनी अपीति टाळवा विगरे माटे उभा न रहेहुं, पण ते साधु एकांतमां जइ कोइ न आवे न देखे, त्यां उभो रहे, त्यां उभा रहेता पण जैन साधुने गृहस्थ जाते आहार आपीने आ प्रमाणे कहे के “ तमे भिक्षा माटे बहु आवेला छो, अने हुं एकलो याहुलपणाथी आहार वहेची आपवाने शक्तिवान नथी, हे श्रमणो ! भे तमने वथा साधुओने चारे प्रकारनी आहार आप्यो छे. तेथी हवे तमे पोतानी इच्छा प्रमाणे ते आहारने एकठा बेसीने खाओ, चापरो, अथवा वहेचीने लो, आ प्रमाणे गृहस्थ आपे, तो उत्सर्गथी जैन साधुए ते आहार भागमां न लेवो, पण दुकाल होय, अथवा लांबा पंथमां गोचरीनी तंगी होय तो अपवादथी कारणपदे ले पण खरो, पण ते आहार लेइने एहुं न करे, के ते आहारने जानोमानो लेइ एकांतमां पोताने मळेखो माटे थोडो होवाथी हुं कोइने न आहुं, एकलो खाडं तेहुं कपट न करे, त्यारे शु-करहुं ते-कहे छे.

ते भिक्षु आहारने लइने त्यां वीजा श्रमण विगेरे पासे जइने ते आहार तेमने देखाहे, अने बोले के हे आयुष्यमानो ! हे श्रमणो आ आहार विगेरे आपण वधाने गृहस्थे वहेच्या विना सामटो आपेळ छे, तेशी तमे वधा एकव बेसीने खाओ, वापरो आ आ प्रमाणे साधुने बोळतो सांभळीने कोइ श्रमण विगेरे आ प्रमाणे कहे, हे साथो ! तमेज अमने वधाने वहेची आपो, तेहुं साधुए न करवुं पण कारणे करवुं पहे तो आ प्रमाणे करवुं, के पोते वहेचतां घणुं उंचु शाक विगेरे पोते न ले, तेम छुवुं पण न ले, पण ते भिक्षु आहारमां मूर्छित थया विना अष्टद्वरणे ममता रहित थइने वधाने सारखुं वहेची आपे, कंडपण दाणो विगेरे सहजे वधारे रहे. (कारणके तोळीने आयुं नथी) तो पण वने त्यांसुधी वधाने सारखुं वहेची आपे, पण ते वहेचतां कोइ श्रमण (अन्य-दर्शनी) एम बोले, के वहेचो नहि, पण आपणे वधा साथे बेसीने जमीए, पीए, तो साथे न जमवुं, पण पोताना साधुओ होय, पासत्था विगेरे होय के संभोगिक (साथे गोचरी करे तेवा) होय, ते वधाने साथे आलोचना आपीने साथे जमवानी आ विधि छे. एटले पोते वधाने सारखु वहेची आपे, अने वधा त्यां साथे बेसीने खाय पीए, गया सूत्रमां बहारहुं आलोकरथान निषेधुं, हवे त्यां प्रवेक्षना प्रतिषेधनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा से चं पुण जाणिज्जा सामणं वा माहणं वा गामपिंडोत्थं वा अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं वेहाए नो ते उवाइक्कम्म पविसिज्ज वा ओभासिज्ज वा, से तमायाय एणंतमक्कभिज्जा २ अणावायमसंत्थोए चिद्धिज्जा, अह पुणेवं जाणिज्जा पडिसेहिए वादिन्ने वा, तओ तंमि नियत्तिए संजयामेव पविसिज्ज वा ओभासिज्ज वा एयं० सामणियं० (सू० ३०) ॥२-१-१-५॥ पिण्डैषणार्यां पञ्चम उद्देशकः ॥

ते भिक्षु गोचरी माटे गाम विगेरेमां पेठेला एवुं जाणे के आ घरमां भयम भ्रमण विगेरे पेठेला छे, तो ते पूर्वे पेठेला भ्रमण विगेरेने देखीने तेने ओळंगीने पोते अंदर न जाय, तेम त्यां उभो रहीने गृहस्थ पासे भिक्षा पण न मागे, पण तेने पेठेला जाणीने पोते एकांतमां धणी न देखे तेम उभो रहे, पळी ते अंदरना भिक्षुने आपे अथवा ना पांढे, त्यारे ते त्यांथी पाळो नीकके त्यारपळी जैन साधु अंदर जाय अने आहारनी याचना करे, आज साधुनुं साधुपणुं संपूर्ण रीते छे.

पांचमो उद्देशो समाप्त भयो.

छट्टो उद्देशो

पांचमां पळी छट्टो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे सांबंध छे, गया उद्देशामां भ्रमण विगेरेने अंतरायना भयथी गृहमर्षका निषेधो, तेज प्रमाणे अहीं अपर प्राणीओना अंतरायना निषेध माटे कहे छे.

से भिक्षु वा से जं पुण जाणिजा-रसेसिणो वहवे पाणा यासेरणाए संथडे संनिवइए पेहाए, तंजहा-कुवकड जाइयं वा सूयंर जाइयं वा अगगिडंसि वा वायसा संथडा संनिवइया पेहाए सह परकमे संजया नो उज्जुयं गच्छिजा (सू० ३१)

ते भिक्षु गोचरी माटे गाम विगेरेमां जतां एम जाणे के आ मार्गमां घणां प्राणीओ रसानां इच्छुओ होयने पाळळथी

दाणा चुंगवा शेरी विगेरेमां वणा एकटां थइने जमीन उपर पहेलां छे, तेमने ते साधुए जोइने ते तरफ तेणे न जुबुं, ते प्राणि-
ओनां नाम बतावे छे, कुकडां विगेरे लीयाथी उडतां पक्षीओ जाणवा. तेज प्रमाणे सूवरजाति लीयाथी चोपगां ढोर विगेरे चरता
होय अथवा अग्रपिंडी (बली) वहार फकेल होय तेमां कागडा खाता होय तेमने देवीने शरीरमां शक्ति होय त्यांमुधि सम्यक्
उपयोग राखीने साधु ते रस्ते न जाय कारणके त्यां जतां अनेक प्राणीने अंतराय थाय छे. अने तेने उडतां के बीजे स्वसतां
तेमनो वध पण वरवते थाय. हवे गृहस्थना घरमां पेठेल साधुने गोचरीनी विधि कहे छे.

से भिकखू वा २ जाव नो गाहावदकुलस्स वा दुवारसाहं अवलंबिय २ चिट्ठिजा, नो गा० दगाच्छड्डणमत्तए
चिट्ठिजा, नो गा० चंदणित्थए चिट्ठिजा, नो गा० सिणाणस्स वा वच्चस्स वा संलोए सपडिदुवारे चिट्ठिजा,
नो० आलोयं वा थिगालं वा संधि वा दगभवणं वा दाहाओ पणिज्झिय २ अंगुलिआए वा उदिसिय २ उणमिय
२ अवनमिय २ निज्झाइजा, नो गाहावदअंगुलियाए उदिसिय २ जाइजा, नो गा० अं० चालिय २ जाइजा,
नो गा० अं० तजिय २ जाइजा, नो गा० अं० उक्खुलंपिय (उक्खुल्लुदिय) २ जाइजा, नो गाहावदं वदिय
२ जाइजा नो वयणं फरसं वइजा ॥ (सू० ३२)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी पेठेलो नीचली बावतो न करे, तेना वारणाती शाखाने वारंवार अवलंबीने उभो न रहे,
जो ते पकडे, तो वरवते जीर्ण होय तो पडी जाय अथवा बरोबर न जायेल होय तो स्वसी जाय. तेथी संयमनी विराधना थाय
तथा धोवानी (चोकडी) तथा उदक (पाणी) मुकवानी जग्या (पाणीयारा) तरफ तथा आचमन करे त्यां अथवा टांका

करे, टट्टी जड़ने पग धुवे, ए जग्या तरफ पोते उभो न रहे, के तेवा घरवाळा तरफ पोतानी दृष्टि पडे, तेमां आ दोष छे के, त्यां देखनाथी स्त्री विगेरेना संबंधीओने शंका थाय अने त्यां लजाइने बरोबर शरीर स्वच्छ न थनाथी तेने द्वेष थाय, तेज प्रमाणे गृहस्थना गोख झरखा तरफ दृष्टि न करे, तथा फाट पडेली ते दुरस्त करी होय त्यां न जुए, अथवा चोरे खातर पाडेळुं होय, अथवा भीतने सांघो कर्पो होय, अथवा उदकगृह (पाणीतुं स्थान) होय, आ बधां स्थानो वारंवार हाथ लांवा करीने अथवा आंगुळी उंची करीने तथा मारुं उंचुं करीने नमावीने अथवा काया नीची नमावीने देखे नहि, बीजाने वतावे पण नहि, (सूत्रमां वेवार ते पाठ वताववातुं कारण भार देवानुं छे) जो वारंवार त्यां देखे के बीजाने देखाडे, तो घरमां कंड चोराय के नाश पामे तो शंका उत्पन्न थाय, वली ते पिशु गृहस्थना घरमां पेठेलो गृहस्थने आंगळी वडे उद्देशीने तथा अंगुळी चलावीने अथवा आंगळीथी भय वतावीने तथा खरज खणीने तेमज वचनथी (भाट माफक) स्तुति करीने याचवुं नहि, तथा कोइ वरवत गृहस्थ न आपे तो तेने कडवां वचन न करे, के तुं जश माफक पारकानुं घर रक्षे छे ! तारा नशीवमां दान कयांथी होय ? तारी वातज सारी छे, पण कृत्य सारां नथी ! वली

अक्षरद्वयमेतद्धि, नास्ति नास्ति यदुच्यते तदिदं देहिदेहीति, विपरीतं भविष्यति ॥ १ ॥
तु ' नथी नथी ' एवा वे अक्षर बोले छे, तेने वदले तुं ' आप आप ' ए वे अक्षर घरवाळाने करे, के तेथी विपरीत

थसे ! अर्थात् तारं कल्याण थसे ! (आहुं पण कटाक्ष वचन साधु न बोले)
अह तस्य कंचि भुंजमाणं पेहाए गाहावद् वा० जाव कम्मकरि वा से पुत्रामेव आलोइजा—आउसोत्ति वा भइणित्ति

वा दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं भोषणजायं ? से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा मत्तं वा दत्ठिं वा भायणं वा सीओदगविय-
 ड्ढेण वा उसिणोदगवियड्ढेण वा उच्चोलिज्ज वा पद्दोइज्ज वा, से पुट्ठवापेव आलोइज्जा-आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! मा
 एयं तु मं हत्थवा ४ सी ओदगवियड्ढेण वा २ उच्चोलिहि वा २, अभिकंठसी मे दाडं एवमेव दलयाहिसे सेवं वयंतस्स
 परो हत्थं वा० सीओ० उसी० उच्चोलित्ता पद्दोइत्ता आहट्टु दलइज्जा, तहएपगारेणं पुरेकम्मकएणं हत्थेण वा असणं
 वा ४ अफासुयं जाव वो पडिगाहिज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा नो पुरेकम्मकएणं उदउड्ढेणं तहएपगारेणं वा उदउड्ढेण
 वा हत्थेण वा ४ असणं वा ४ अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा । अह पुणेवं जाणिज्जा—नो उदउड्ढेण ससिणिद्धेण
 सेसं तं चेव एवं—ससरक्खे उदउड्ढे, ससिणिद्धे मट्ठिया ऊसे । हरियात्ते हिंशुत्तए, मणोसिखा अंजणे लोणे ॥१॥ गैरुय
 वन्निक सेट्ठिय सोरट्ठिय पिट्ट कुकुस उक्कुट्ठसंसट्ठेण । अह पुणेव जाणिज्जा नो असंसट्ठे संसट्ठे तहएपगारेण संसट्ठेण
 हत्थेण वा ४ असणं वा ४ फासुयं जाव मडिगाहिज्जा [सू० ३३]

गृहस्थना घरमां पेठेलो ते भिक्षु कोइ गृहस्थ विगेरेने खातां जुए, तेने खातां देखीने साधु पथम आहुं विचारे के आ.
 गृहस्थ, पोते अथवा तेनी स्त्री अथवा तेनी नोकरडी विगेरे कोइ पण खाय छे, एहुं विचारीने तेहुं नाम लेइ याचना करे, के
 आयुष्मन् ! के अमुक गृहस्थ अमुक वाइ ! अथवा योग्य बीजुं वचन बोलीने कहे के तमारा घरमां जे रंथायुं होय तेमांथी अमने
 आपो ! एम याचना करे, ते तेम आपवाने हाजर न होय, अथवा कारण आवे आ प्रमाणे बोले, पछी तेना घरमांथी याचता
 भिक्षुने बीजो गृहस्थ कोइ बरवत हाथ डोइ के बीजुं वासण कांचा पाणीथी के बरोबर न उना थयेला पाणीथी अथवा उनु

करेछं पाहुं कालं पहेाचतां सच्चित्त थयेल होय तेना वडे धुए, अथवा चारंवार धुए, आ प्रमाणे थोवानी चेष्टा करतां पहेलां साधु जोइने विचारे [अर्थि ध्यात राखे,] अने पछी तेम देखीने तेहुं नाम लेइने निचारे, के तमे काचा पाणी विगोरेथी न चुओ पण पहेलो गृहस्थ सच्चित्त विगोरे थोइनेज आपे तो अप्राप्तुक जाणीने साधु छे नहि.

वळी ते साधु गृहस्थनां घरमां पेठेलां जो एम जाणे के क्षाधु माटे नहि, पण तेणे कोइ पण कारणे प्रथम काचा पाणीए हाथ के वासण थोयुं छे, अने तेनां टपकां पडे छे, एवुं देखे तो चारे प्रकारनो आहार अप्राप्तुक जाणीने लेवो नहि, कदाच पाणीनां टपकां न पडतां होय, पण काचा पाणीथी खरडेला हाथ के वासण होय तोपण ते आपतां साधुए न लेहुं, एज पूर्व कथा प्रमाणे न्याय छे, जेम काचा पाणीथी खरडेला हाथे न लेहुं, तेम सच्चित्त रज होय, माटीथी खरडेल होय, तेमां उप ते खारवाळी माटी. हडताळ, हिंगळोक, मणशिल, अंजन, लवण, गेरू, आ बथी पृथ्वीकायनी खाणमांथी नीकलेली सच्चित्त वस्तुओ साधुने न कल्पे, [वर्णिका ते पीळी माटीं मेद छे, सेटिका खडी छे, सौराष्ट्रि ते तुवरिका छे, पिष्ट ते छड्याविनाना तंदूल चूरण [भूको] छे, कुकसा उपरनां कूटेलां छोतरां [उक्कुट] पीळु पर्णिका विगोरेनी खांडणीमां खांडेल चुरो अथवा लीलां पांदाडानो चुरो, विगोरे खरडेला हाथ विगोरेथी आपे तो छे नहि, ए प्रमाणे जो खरडेल न होय तो साधु गोचरी छे.

पण एम जाणे के खरडायेल छे, पण ते जातिना आहारथी दाय विगोरे खरडेल छे, तेमां आठ भांगा छे.

“असंसद्वे हत्ये असंसद्वे मत्ते निरवसेसे दव्वे”

आमां एकेक पद वदलवाथी आथी आठ भांगा थाय—तेमां संसष्ट हाथ, संसष्ट वासण अने शेष द्रव्य वाकी रहेल होय ते

आठमो भागो सर्वोत्तम छे, पण एहुं जाणे के, काचा पाणी विगेरेथी असंसष्ट हाथ विगेरे छे, तो ते लेहुं, अथवा ते जातिना द्रव्यवहे (भक्ष्य वस्तुथी) हाथ विगेरे स्वरहेल होय ते आहारने पासुक जाणीने साधुए लेवो, वकी

से भिक्खू वा २ से जं पुण जाणिजा पिहुयं वा बहुसयं वा जाव चाउलपलंबं वा असंजए भिक्खुपडियाए चित्तनंताए सिलाए जाव संताणाए कुट्टिसु वा कुट्टिति वा कुट्टिससंति वा, उप्फणिसु वा ३ तहप्पगारं पिहुयं वा० अफ्फासुयं नो पडिगाहिजा ॥ (सू० ३४)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो जो एहुं जाणे, के चोखा विगेरेना कुरसुरा (समरा) घणी रेतीथी भरेखा छे, अथवा अडथा कोकेल चोखा विगेरेना कण विगेरे होय, तेने साधुने उद्वेशीनेज सच्चित्त शिला उपर अथवा बीजवाकी, हरिनवाकी अथवा नाना अंतुना इंडावाकी अथवा करोळीयाना जालावकी शिला उपर ते समरा के कर्णोने फुटेल होय फुटे अथवा फुटसो, (सूत्रमां एकवचन क्रियापदनु छे ते आर्षवचन होवाथी बहुवचनमां लेवु अथवा जातिमां एकवचन पण लेवाय) आम करीने पळी ते थाणी, पळवा विगेरे सच्चित्त मिश्र होय. तेने सच्चित्त शिलामां कुटीने साधु माटे झाटके अने मळी आपे, के आपसो, तेहुं जाणीने तेवो पृथक् विगेरे आहार आपे तोपण ले नहि.

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं० विलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं असंसंजए जाव संताणाए भिदिंसु ३ र्खिंसु वा

३ विलं वा लोणं उब्भिमं वा लोणं अफासुयं० नो दडिगाहिजा ॥ (सू० ३५)

जो ते भिक्षु एहुं जाणे, के आ खाणनुं मीठुं (विल वीड) छे, अथवा सिंधव, संजल विगेरे वधी मीठानी जाति होय, तथा

उदभिज (समुद्रना किनारे सूकावेळुं मीठुं) ते प्रमाणे रुमक विगेरे वीजुं मीठुं पण लेवुं, आवुं मीठुं जे कावुं छे, तेने उपर बतावेल

बिला उपर कूटीने आपे, अटले साधु माटे भेदे, भेदरो, अथवा बधारे झणिं, करावा चूरीने आपे तो लेवुं नहि. वळी

से भिकवू वा० से जं० असणं वा ४ अगणिनिकिक्वत्तं तहण्यांर असणं वा ४ अफासुयं नो०, केवळी बूया आयाणमेयं,

अस्संजए भिकवुपडियाए उस्सिचमाणे वा निस्सिचमाणे वा आमज्जमाणे वा पमज्जमाणे वा ओयारेमाणे वा उव्वत्तमाणे

वा अगणिजीवे हिसिज्जा, अह भिकवूणं पुव्वोवइहा एस पइत्ता एस हेऊ एस कारणे एसुवएसे जं तहण्यांर असणं वा ४

अगणिगिक्वत्तं अफासयं नो० पडिं० एयं० सामणियं ॥ (सू०३६) ॥ पिण्डैषणायां षळ उद्वैशकः २-१-१-६ ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी गयेल होय, त्यां चारे प्रकारानो अहार अग्नि उपर वळता साये लागेल होय तो आहार आपे

तो पण लेवो नहि, त्यां केवळी प्रभु कहे छे के, आ कर्मा दान छे, तेज प्रमाणे गृहस्थ भिक्षुने उदेशीने त्यां अग्नि उपर रहेल

आहारने वीजा वासणमां नांखतो तेमांशी प्रथम आपेल होय ते वधेलामां वीजुं नाखे अथवा हाथशी मसळीने शोधे, तथा प्रकर्षणी

शोधे, तथा निचे उतारीने अथवा अग्निने तीरळी करीने जीवोने पीडे.

आ वधी वात समजावीने कहे छे के उपर बतावेली साधुनी आ प्रतिज्ञा छे के अग्नि साये लागेळुं भोजन विगेरे अप्राप्तु छे,

अने ते अनेषणीय छे, एम जाणीने आहार मळतो होय, तो पण ले नहि, आज साधुतुं सर्वथा साधुपणुं छे, पहेला अध्ययननो

छट्टो उदयो समाप्त थयो.

सातमो उद्देशो

छटो उद्देशो कहीने सातमो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां संयम विराधनां वतावी, अने अहीं संयमनी आत्मानी दानदेनारनी विराधना वतावरो अने ते विराधनाथी जैनशासननी हीलना थाय, ते आ उद्देशामां वतावरो.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ रंधंसि वा थंयसि वा मालंसि वा पासायंसि वा हम्मिमयतलंसि वा अन्नयरंसि वा तहपणारंसि अंतलिक्खवजायंसि उवनिक्खित्ते सिया तहपणारं मालोहडं असणं वा ४ अफासुयं नो० केवली बूया आपाणमेयं, अस्संजए भिक्खुपडियाए पीढं वा फलमं वा निस्सेणिं वा उदूहलं वा आहडु उस्साविय दुरुहिट्ठजा, सेताथ दुरुहमाणे पयल्लिज्ज वा पवडिज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा २ हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा उदरं वा सीसं अन्नयरं वा कायंसि इंदिजालं लूसिज्ज वा पाणाणि वा ४ अभिहणिज्ज वा वित्तासिज्ज वा लेसिज्ज वा संघसिज्ज वा संघट्टिज्ज वा परियाविज्ज वा किलमिज्ज वा टाणाओ टाणं संकामिज्ज वा, तं तहपणारं मालोहड असणं वा ४ लामे संते ना पडिगाहिज्जा, से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं० असणं वा ४ कुट्टियाओ वा कोलेज्जाउ वा अस्संजए भिक्खुपडियाए उक्कज्जिय अवउज्जिय ओहरिय आहुडु दलइज्जा, तहपणारं असणं वा ४ लामे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ३७) ॥

ते भिक्षु गोचरीमां गयेछो जो आ प्रमाणे चारे प्रकारनो आहार जाणे, स्कंध (ते अर्धपाकार—उंची भीत जेवो होय) लाकडो के पत्थरनो थंभो होय, तथा मांचडो बांधेछो होय अथवा शीका उपर होय, महेलमां, के हवेलीमां के कोइपण अंतरीक्ष (अधर)

स्थानमां आहार राखेल होय तो तेवा उपरथी आहार लईने वहीरावे तो पण मालापत हृदोष लागतो जाणीने न लेवो, केवळी पशु तेमां आ प्रमाणे दोष बत्तावे छे, एटले न्यां उंचे वस्तु राखी होय ते लेवा गृहस्थ जाय तो हायं पर्वोचवां माटे साधु माटेज मांची, पाटीयुं, नीसरणी, उंथी उखणी अथवा वीजुं कंड पण अथर टेकवीने तेना उपर चढीने लेवा जाय तो चढतां पढी जाय, अने खसीने पढतां हाय, पण भांगतां अथवा इंद्रिय के शरीरमां लागी जाय, तेज प्रमाणे पढतां बीजा जीवोने, प्राणीओने हणे, त्रास पमाडे, अथवा थुलवडे ढांके, घसारो आपे, संघट्टन करे आ प्रमाणे थतां ते जीवोने परिताप करे, थकवे, एकस्थानथी बीजा स्थानमां खसेडे, आवा दोषो जाणीने शीका के मेडा उपरथी लावीने आपे तो मळती वस्तु पण साधुए न लेवी

अथवा ते साधु आहार लेतां आ प्रमाणे जाणे, के माटीनी कोटीमांथी अथवा जमीनमां खोदेल अर्ध गोलाकार खाणमांथी साधुने उद्देशीने कायाने उंचीनीची करीने कुवडी थईने काढे, तथा खाणमां नीची नमीने अथवा तीरळी पढीने आहार लावीने आपे, तो साधुए अथोमालाहुत (नीचे पढीने लीखेल) आहार गृहस्थ पासेथी मळतो होय तो पण लेवो नहि, हवे पृथ्वीकायने आश्रयी कहे छे.

से भिकखू वा० से जं० असणं वा ४ मट्टियाडलितं तहपगारं असणं वा ४ लाभे सं०, केवळी०, अस्संज्जए भि० मट्टिओ-
 लितं असणं वा० उड्ढिभदमाणं पुढविकाथं समारंभिज्जा तह तेउवाउवणस्सइतसकायं समारंभिज्जा पुणरवि उड्ढिपमाणे
 पच्छाकम्मं करिज्जा, अह भिकखूणं पुन्वी० जं तहपगारं मट्टिओलितं असणं वा लाभे० । से भिकखू० से नं० असणं
 वा ४ पुढाविकायपइड्डियं तहपगारं असणं वा० अफासुयं० । से भिकखू० जं असणं वा ४ आउकायइड्डियं चेव, एवं

अगणिकायपदद्वयं लाभे० केवली०, असंज० भि० अगणिं उस्सकिय निससकिय ओहरिय आहट्ट दलइज्जा अह भिक्खुणं० जाव नो पडि० ॥ (सू० ३८)

ते भिक्षु गोचरीमां गयेलो आ प्रमाणे जाणे, कै पिठरक (माटीना गोळा) विगेरेमां माटीथी पथम लीपिने चोडेल होय, तेमांथी काढीने चार प्रकारना आहारमांथी कांडपण आपे तो पश्चात्कर्मना दोषथी मळतो आहार पण न ले, म०-शामाटे ? उ० केवळी प्रभु तेने कर्म उपादान कहे छे, के ते गृहस्थ भिक्षुकनी निश्राए माटीथी लीपेळुं वासण होय, तेमांथी काढीने कांडपण आहार आपे, तो ते वासण खोलतां पृथ्वीकायनो आरंभ करे, तेज केवळी प्रभु कहे छे, तथा अग्नि वायुनो तेमज वनस्पति तथा त्रसकायनो पण आरंभ करे, अने साधुने आप्या पळी वाकी रहेल मालना रक्षण माटे ते वासणने पाहुं लीपे माटे साधुने पूर्व कहे- ली आ प्रतिज्ञा होवाथी अने तेज हेतु तेज कारण होवाथी आ उपदेश छे के, तेहुं माटीथी लीपेळुं वासण उचडावीने मळतुं भोजन के वस्तु कंडपण लेवुं नहि.

वळी ते भिक्षुक गृहस्थना घरमां पैसेतां वळी आवुं भोजन विगेरे जाणे, तो नले, एटले पृथ्वीकाय उषर स्थापेल आहारने जाणीने पृथ्वीकायना संघट्टन विगेरेना भयथी अपासुक जाणाने मळतुं होय तो पण नले, एज प्रमाणे पाणी उषर अग्निकायमां स्थापेल होय तो पोते ले नहि, कारण के केवळी तेमां आदान कहे छे, तेज वतावे छे, 'असंयत' गृहस्थ भिक्षु माटे अग्नि उषर स्थापेल वासणने आमतेम फेरवी आहार आपे तेथी ते जीवोने पीडा थाय माटे साधुभोनी आ प्रतिज्ञा छे के तेवो आहार लेवो नहि. से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ अच्युसिणं असंए भि० सुत्पेण वा विहुत्पेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा साहाए

वा साहाय्येण वा पिहुणेण वा पिहुणहन्थेण वा चेल्लेण वा चेलकणेण वा हन्थेण वा सुहेण वा फुमिज्ज वा वीइज्जा वा, से पुन्वामेव आलोइज्जा— आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! मा एतं तुमं असणं वा अच्चुत्तिणं सुत्पेण वा जाव फुमाहि वा वीयाहि वा अभिकंवलसि मे दाउं, एमेव दलयाहि, से सेवं वयंतस्स परो सुत्पेण वा जाव वीहता आहट्टु दलइज्जा तहत्पणारं असणं वा ४ अफासुयं वा तो पढी० ॥ (सू० ३९) ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां घेठेलो जो आ प्रमाणे जाणे के आं घणो उनो भात विगरे साधुने उदशीनेज गृहस्थ ठंडो करवा माटे सूपडाथी, वीजणाथी, मोरना पींछाना पंत्वाथी अथवा शाखाथी के शाखाना भंगवडे अथवा पींछाथी अथवा पींछाना समूहवडे, वस्त्रथी के वस्त्रना डेडाथी, हाथथी, मोठेथी अथवा तेवा कंइपण ओजारथी फुंकीने ठंडो करे, अथवा वस्त्रथी वीजे, आ प्रमाणे करवा पहेलां साधु लक्ष्य राखीने तेहुं गृहस्थ करे, ते पहेलां तेने नाम दइने बोले के हे भाइ ! हे बहेन ! आहुं तमे करीने मने आपवानी इच्छा धरावो छो, तो तेम फुंकया विनाज अमने आपो, आहुं साधु कहे तो पण गृहस्थ हठथी सूपडेथी के सुव्वना वायुवडे फुंकीने आपे तो तेने अनेषणीय (दोषित) आहार जाणीने लेवो नहि.

पिंडना अधिकारथीज एषणा दोषोने उदशीने कहे छे.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ वणस्सइकायपइद्धियं तहत्पणारं असणं वा ४ वण० लाभे संते नो पडि० । एवं तसकाएवि ॥ (सू० ४०) ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो एहुं जाणे, के वनस्पतिकायमां चारे प्रकारनो आहार छे, तो ते जाणीने छे नहि, ए प्रमाणे

नसकायतुं सूत्र पण जाणतुं, अहीं (वनस्पतिकायमां रहेळुं) आ सूत्र वटे निक्षिप्त नामतो एषणादोष लेनार आपनार वनेनो भेगो वताव्यो, तेज प्रमाणे बीजा पण एषणादोष यथासंभव सूत्रोमां योजवा ते आ प्रमाणे छे.

संकीय मक्खिय विगरेथी शंकित साहरियदा यगुम्मीसे; अपरिणय लिच छड्डिय, एसण दोसा दस हवति ॥ १ ॥

(१) अथाकर्म विगरेथी शंकित आहार विगरे न लेवुं, (२) पाणी विगरेथी मूक्षित [लीपायेळ] होय, (३) पृथ्वीकाय विगरेमां स्थापन करेळुं होय, (४) बीजोरा विगरे फळथी टांकेळुं होय (५) वासणमांथी तुष विगरे न आपवा योग वस्तु बीजी सचित्त पृथ्वी विगरे उपर नांवीने ते वासण विगरेथी जे आपे, ते संहृत दोष छे. (६) बाल वृद्ध विगरे दान देनार शुद्धि तथा शक्ति विनानो होय, (७) सचित्त विगरे पदार्थथी मिश्रित वस्तु होय, (८) देवनी वास्तु वरोवर अचित्त न थइ होय, अथवा देनार लेनारना भावविनानी होय ते अपरिणत कहेवाय, (९) नरवी विगरे निंदानीक पदार्थथी लिप्त होय (१०) छांटा पाडती वहेरारवे. आ दस दोष एसणाना क्हावा, ते टाळवा जोइए. हवे पीवाना आश्रयी कहे छे—

से भिक्खू वा २ से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा—उससेइमं वा १ संसेइमं वा २ चाउलोदगं वा ३ अन्नयरं वा तहणगारं पाणगजायं अहुणाधोयं अणंविअंअवुककं अपरिणयं अविद्धयं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा । अह पुण एवं जाणिज्जा चिराधोयं अंविअं वुककं परिणयं विद्धयं फासुयं पडिगाहिज्जा । से भिक्खू वा० से जंपुण पाणगजायं जाणिज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा ४ तुसोदगं वा ५ जवोदगं वा ६ आयामं वा ७ सोवीर वा ८ सुद्धवियडं वा ९ अन्नयरं वा तहणगारं वा पाणगजायं पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं पाणग-

जायं ? से सेवं नयतस्स . परो वड्जा-आउस्सं तो समाणा ! तुमं चैवेयं पाणगजायं पडिग्गहेण वा उस्सिचिया णं उयत्तिया णं मिण्हाहि, तहत्थगारं पाणगजायं सयं वा गिण्हिज्जा परो वा से दिज्जा, फासुयं लामे संते पडिग्गाहिज्जा ॥

(सू० ४१)

ते साधु गृहस्थना घरमां पाणी माटे गयेल होय. त्यां एवु जाणे के आटोगुंदळवानुं आ पाणी छे, ते उस्सोइम छे, तथा तलने धोवानुं पाणी छे, ते संसेइम छे, अथवा अरणिक्का विगेरे धोवानुं पाणी छे, तेमां प्रथमनां वे तो प्रासुक छेज; पण त्रीजा चोथा नंबरना पाणी मिश्र छे, ते अमुक् काले परणित [फासु] थाय छे, ते चावल [चोखा] नुं धोवण छे, तेमां त्रण अनादेश छे, परपोटा थला होय, पाणीनां विदुओ वासणने लोलां शोषाइ गयां होय, अथवा तंदुलरंधाइ गयां होय, पण तेनो खरो आदेश आं छे, के पाणी स्वच्छ थइ गयुं होय, [परपोटा बेसीने स्वच्छ थयुं होय तेज लेवाय]—अनाम्ल ते पोताना स्वादथी अचलित अन्धु-त्क्रांत अपरिणत अविध्वस्त, अप्रासुक मालुम पडे ते साधुए लेवुं नहि, अने तेथी विपरित होय तो गृहण करहुं, फरी पाणीना अधिकारथीज विशेषे कहे छे.

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो आवुं पाणी जाणे, के [४] तलनुं धोवण कोइपण प्रकारे प्रासुक करेछं पाणी, गृहस्थना घरमां छे, ए प्रमाणे [५-६] तुषथी, ज्वथी, अचित्त थयुं होय, [७] आचार्ल [ओसामण] [८] आरनाल सोवीर [९] बरोबर उंनुं पाणी शुद्ध विकट अथवा तेवुं द्राक्षनुं धोवण विगेरे अचित्त पाणी जुए, तो गृहस्थने कहे, के हे भाइ ! हे वाइ ! जे कंइ आवुं अचित्त पाणी होय, ते मने आपो ! ते बलते गृहस्थ बोले, के हे साधु ! तमेज आ पाणी पोताना पानरा बडे के काचलीबडे के

कदायुं उंचकीने के वांकुवाळीने वासणमांथी लो, ते पमाणे कहे तो साधु पोते ग्रहण करे, अथवा गृहस्थ तेने आपे, तो मासुक पाणी साधुए लेवुं. वळी—

से भिक्खु वा० से जं पुण पाणगं जाणिज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए जाव संताणए उद्धट्ट २ निक्खित्ते सिमा, असंजए भिक्खुपडियाए उदज्जेण वा ससिणिधयेण वा सकसाएण वा मत्तेण वा सीओदेणेण वा संभोइता आहट्ट दळइज्जा, तह-एणारं पाणगजायं अफासुयं० एयं खल्ल समाजियं० ॥ (सू० ४२) ॥ पिण्डैषणायां सप्तमः २-१-१-७ ।

ते भिक्षु जो आहुं जाणे के ते अचिरा पाणी, सचित्रा पृथ्वीकाय विगोरेमां आंतरा विना मुकेळं छे, अथवा करोळीयाना जाळा विगोरेमां वीजा वासणमांथी लइ लइने तेमां वासण मुकेळं छे, अथवा ते गृहस्थ भिक्षुने उद्देशीनेज कात्वा पाणीना गळतां टपकांवडे अथवा सचित्र पृथ्वी विगोरेना अवयवथी खरडायेळं भाजन होय, अथवा ढंडा पाणीथी मिश्र करीने—भेगुं करीने आपे, तेहुं पाणी ‘अनेषणीय’ जाणीने लेवुं नहि, आ भिक्षुनी संपूर्ण साधुता छे.

सातमो उद्देशो समाप्त.

आठमो उद्देशो.

सातमो कहीने आठमो उद्देशो कहे छे. तेनो आ पमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां पाणीनो विचार वताव्यो, अहि, पण तेज पाणी संबंधी विशेष कहे हे—

से भिक्खु वा २ से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा-अंबपाणग वा १० अंबाडगपाणगं वा ११ कविदुपाण ० १२ माउलिंगपा ० १३ मुदियापा ० १४ दालिमपा ० १५ खजूरपा ० १६ नाळियेरपा ० १७ करीरपा ० १८ कोलपा ० १९ आमलपा ० २० चिंचापा ० २१ अन्नयरं वा तहपगारं पाणगजातं सअट्टियं सकणुयं सवीयगं अस्संजए भिक्खुपडियाए उल्लेण वा दूसेण वा वालगेण वा आविल्लियाण परिवील्लियाण परिसावियाण आहट्टु दलइज्जा तहपगारं पाणगजायं अफा० लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ४३) ॥

ते साधु गृहस्थना घरमां गयेल आवा प्रकारहुं पाणी जाणे, के केरीनुं तथा अंबाडाहुं धोवण (१०-११) हे, तथा कोठ (१२) हुं धोवण हे, वीजोरं (१३) मुद्रिका (द्राक्ष) हुं धोवण (१४) हे, दाडम (१५) हुं, खजुर (१६) हुं, नाळियेर (१७) केर (१८) कोल (बोर) हुं (१९) आमणां (२०) चिंचा आंबली (२१) तथा तेवां वीजां वधां पाणी-एटले द्राक्ष, बोर, आंबली विगेरे कोइ-पण पाणीने ते क्षणेज चूरीने कराय हे, तथा अंबाडा विगेरेहुं पाणी वे त्रण दिवस साये राखीने पलाळे आहुं पाणी होय अथवा तेवी जातहुं बीजुं होय, ते ठळियासाथे वर्ते, अथवा कणुक (छाल विगेरे अन्नयव) साये होय, तथा बीज सहित वर्ते, ठळीयो तथा बीज आमणां विगेरेमां जुदापणुं प्रीतीत हे, आहुं पाणी गृहस्थ साधुने उद्देशीने द्राक्ष विगेरे चूरीने अथवा वांसनी छालथी वनावेल छान्नी विगेरे पलाळीने अथवा गाय विगेरेतां छडाना पूवाळना वनावेल चालणावडे अथवा सुगुदीपक्षीना माळा वडे. ठळीयो विगेरे दूर करावा एकवार मसळीने के वारंवार चोळीने तथा परिस्रवण करीने-गालीने साधु पासे लावीने आपे, आहुं पाणी उदगमदोषथी दुष्ट जाणीने मळतुं होय, तो पण ले नहि, उदगमदोषथी नीचे प्रमाणे हे,

आहाकम्मुद्देशोरिस्य पूतीकम्मे अं मीसजाए अ ॥ ठवाणा पाहुडियाएँ पाओअर कीय पामिच्चे ॥ १ ॥
परिदिए अभिहडे, उदिमिन्ने मात्रोहडे इअ अच्छेज्जे अणिसडे, अज्झोअरए अ सोलसमे ॥ २ ॥

(१) साधुना माटे जे सचित्तनुं अचित्त करे, अथवा अचित्त रांधे ते आधाकर्म दोष छे (२) जे पोताना माटे तैयार रसोइ थइ होय ते लाहुना चूर्ण विगेरे गोल विगेरेथी साधुने उद्देशीने वधारे संस्कारवाळुं वनावे, आ समान्यथी छे, (पण विशेषथी जाणवा इच्छनारे विशेष सूत्रथी जाणवुं (३) आधाकर्मना भागथी मिश्र करे ते पूतीकर्म छे, (४) साधु तथा गृहस्थने आश्रयी प्रथमथी आहार भेगो रंथाय ते मिश्र छे. (५) साधुने माटे खीर विगेरे जुदी काढी राखे ते स्थापना दोष छे, (६) घरमां लग्न विगेरेना अवसर आववानो होय ते साधुने आवेला जाणोने के आववाना जाणी तेमने ते मिष्ठान्न विगेरे आपवा माटे आगळ पाळक करे, ते माभुतिकदोष छे, (७) साधुने उद्देशीने झरखा वारी विगेरे उघाडवी, अथवा अंधारामांथी लावीने अजवाळामां मुकवुं ते पाहु-
ष्करण छे, (८) द्रव्य विगेरे आपीने खरीद करे ते क्रीतदोष छे साधु माटे कोइनुं उळीकुं-उळीनुं छे ते 'पामिच्च' दोष छे (१०) कोदरा विगेरे आपीने पाडंशीना घरमांथी गालि विगेरेनाचोखा वदले लावे. ते गरिचर्चित्तदोष छे, (११) घर विगेरेथी साधुना उपाश्रयमां लावीने आपे ते अभ्याहृतदोष छे, (१२) छाप विगेरेथी लीपेळुं वासण खोळीने आपे, ते उद्विन्न दोष छे, (१३) माळा उपर विगेरेथी-निसरणी वडे लावीने आपे ते मालहृत दोष छे, (१४) नोकर विगेरेथी छीनवी लइने आपे ते आ छेद्य दोष छे, (१५) समुदाय आश्रयी रंथायेळुं, वधानी रजा लीधा सिवाय एकलो आपे ते अनिसृष्ट दोष छे, (१६) पोताना माटे रंथाता अन्न-
मां पाळळथी तांदुल विगेरे साधुने आवता सांभळीने रांधतां उमेरे ते 'अश्रयवृत्तक' दोष छे, आवा कोइपण दोषथी दोषित आहार

होय तो साधुए ते आहार लेवो नहि. पाहुं पण भोजन पाणी विनोरे आश्रयी कहे छे.

से भिकखू वा० २ आगंतरेसु वा आरामगारेसु वा गाहावईगिहेसु वा परियावसहेसु वा अन्नगंधाणि वा पाणगंधाणि वा सुरभिगंधाणि वा आघाय २ से तस्य आसायपडियाए सुच्छिष्टए गिद्धे गटिए अद्धो ववन्ने अहो गंधो २ नो गंधमायाइजा (सू० ४४).

ते साधु आगंतार ते बहेरनी बहार सुसाफरो आवीने उतरे तेवी धर्मज्ञाळा के सुशाफरखानामां अथवा आराम घरो [वगीचा-नी अंदरना मकान] मां अथवा गृहस्थना घरोमां पूजाना घरोमां अथवा भिक्षुकना मठमां ज्यां अन्न-पाणीनी सुगंधीना गंधोने सुंधी सुंधीने तेना स्वादनी प्रतिज्ञाथी सूद्धित गृह्य वेळो वनेळो अहाहा! ! शुं सुगंध छे ! एवो भेमी वनीने ते गंधने सुंधे नहि. फरी पण आहारने आश्रयी कहे छे—

से भिकखू वा २ से जं० साह्यं वा विरालियं वा सासवनालियं वा अन्नयरं वा तहप्यगारं आमंगं असन्धपरिणयं अफासु० । से भिकखू वा० से जं पुण० पिप्पल्लिं वा पिप्पल्लचुण्णं वा मिरियं वा मिरियचुण्णं वा सिंगवेरं वा सिंगवेरचुण्णं वा अन्नयरं वा तहप्यगारं वा आमंगं वा असत्य प० । से भिकखू वा० से जं पुण पलंघजायं जाणिजा, तंजहा-अंबप-लंघं वा अंबाडगपलंघं वा तालप० त्रिद्विभारिप० सुरहि० सल्लरप० अन्नयरं तहप्यगारं पलंघजायं आमंग असत्यप० । से भिकखू ५ से जं पुण पवालजायं जाणिजा, तंजहा-आसोइपवालं वा निगोहप० पिडुंखुप० निपूरप० सल्लइप० अन्नयरं वा तहप्यगारं पवालजायं आमंगं असत्यपरिणयं० । से भि० से जं पुण० सरड्यजायं जाणिजा, तंजहा-सरड्यं वा

कविद्वसर० दाडिमसर० विह्वस० अन्नपरं वा तहपगारं सरइयजायं आमं असत्थ परिणयं० । से भिक्खू वा० से जं पु० तंजहा-उवरमंथुं वा नगोहमं० पिळ्ळुम० आसात्थमं० अन्नपरं वा तहपगारं वा मंथुजायं आमयं दुरकं साणुवीयं अफासुयं० ॥ (सू० ४५)

ते भिक्षु साळुक (पाणीमां थनारं कंद) विरालिय (स्थळमां थनारं कंद) सरसवनी कंदलीओ तेवुं कइपण काचुं कंद कांदक विगेरे शक्खोथी परिणत थयेळुं नहोय, तेमज ते भिक्षु पीपर, पीपरनुं चुरण, मरचां मरचांनुं चुरण सींगोडा सींगोडानुं चुरण अथवा तेवुं कइपण काचुं शक्ख परससीया विनानुं अपासुक होय ते, आंवाना फळ (केरीओ) अंवाडानां फळ, ताडनां फळ झिद्धि ते वल्लीपलास सुरभि ते शतदु छे सहर छे. आ प्रमाणे जे कइ काचुं फळ होय, अने ते शक्खथी परिणत न होय तो सच्चि न जाणीने लेवुं नहि.

वळी ते भिक्षु कोइपण जातिनुं पवाळ ते पीपळानुं; वडनुं पिळ्ळु (पीपरी) निपुर (नंदीदक्ष) शक्क्री अथवा तेवुं वीजुं काइपण पवाळ होय तो, काचुं सच्चि होय तो लेवुं नहि, तेज प्रमाणे ते साधु कोइपण जातिनु 'सरइअ' ते ठळीयो बंधाया विनानुं फळ होय, ते कोठ, दाडम, विल्लुं अथवा तेवु कोइपण जातिनुं फळ होय ते. शक्खथी परिणत नहोय ते साधुए लेवुं नहि, तेज प्रमाणे साधु उंवरनुं मंथुं (चुरण) होय, वडनुं, पिळ्ळु, पीपळो अथवा तेवुं वीजानु चुरण होय तो, शक्खथी परिणत थया विनानुं होय तो लेवुं नहि, आमंथुं थोळुं पीसेळुं होय ते दुरक कहेवाय छे, साणुवीय ते तेनां वीज वथां कायम रथां होय, तो ते काचुं जाणवुं. ते न कल्पे.

से भिक्खू वा० से जं पुण० आमढाणं वा पूइपिनाणं वा महुं वा मज्जं वा सट्ठिं वा खालं वा पुराणनं वा इत्थ पाण अपुप-

स्यइं जायइं संबुद्धइं अबुक्कताइं अपरिणया इत्थ पाणा अविद्धन्था नो पट्टिगाहिज्जा ॥ (सू० ४६) ॥

वली ते साधु एम जाणे के काचां पान ते अरणीक तंहुलीय (तांदळा) विगोरेनां पांदळां अर्थ काचां अथवा तदन काचां छे, अथवा तेनो खल कर्यो छे, मय मांस जाणीतां छे, तथा वी तथा खोल दाखना नीचेनो कचरो आ वथा घणा वरसनां जुनां होय तो लेवां नहि, कारणके तेमां जीवो उत्पन्न यइ जाय छे, अने तेथी ते अचित्त होतां नथी, सूतपां संदुद्धा विगोरे एक अर्थवाळा छतां जुदा देसना शिष्योने समजाववा सूत्रकारे लीधा छे अथवा तेमां किंचित् भेद छे. (आमां मय अने दाह अमश्य छतां शास्त्र-कारे चोपडवा माटे कारण विशेष छूट एटला माटे आपी छे के हाथ पण उतरी गयो होय तो तेनो उपयोग करवो पडे, ते संबंधे साधुने महान् प्रायश्चित्त छे, माटे वत्तमानकाळमां पण वने त्यां सुधी चोळवा चोपडवामां तेवी चीज न वापरवी. पण वीजां उपायज न होय तो कदाच वापरवी पडे तो पुण तेहुं छेदसूत्र प्रमाणे महान प्रायश्चित्त लेवुं के दुर्गति न थाय.)

से भिक्खू वा से जं० उच्छुमेरंगं वा अंकरेलुगं वा कसेखं वा सिंघाडगं वा पूइआळुगं वा अन्नयरं वा० । सेभिक्खू वा० से जं० उपलं वा उपपलनालं वा भिसं वा भिस-मुणालं वा पुक्खलं वा पुक्खलविभंगं वा अन्नयरं वा तहपगारं०

॥ (सू० ४७) ॥

उच्छुमेरंग ते झोलेली शेरडीना टुकडा, अंके करेळुं कसेखा सिंगाडां पूइआळुग अथवा तेहुं वीजुं कंइ काचुं शस्त्रथी हणाय्या विनातुं होय, तो साधुए लेवुं नहि. तेज प्रमाणे लीळुं कमळ, तेनी नाल, अथवा पदमनुं कइ तेनी नाल, पोक्खल, पदमना

केसरा अथवा तैतुं कंद अथवा तैतुं कोइपण कंद रात्रिथी हणायाविनातुं काचुं होय तो कल्पे नहि.

से भिक्खू वा २ से जं पु० अणवीयाणि वा मूळवीयाणि वा खंथवीयाणि वा पोस्वी० अणजायाणि वा मूळजा० खं-
धजा० पोस्जा० नन्नत्थ तक्कलिमत्थए ण वा तक्कलिसीसे ण वा नालियेरमत्थएण वा खज्जरिमत्थएण वा तालम० अन्न-
यरं वा तह० । से भिक्खू वा २ से जं० उच्छुं वा काणगं वा अंगारियं वा संमिस्सं विगदूमियं वित (त्त) गगं वा कंद-
लीउसुगं अन्नयरं वा तहएणा० । से भिक्खू वा० से जं० लसुणं लसुणपत्तं वा ल० नालं वा लसुणकंदं वा ल० चोयगं
अन्नयरं वा० । से भिक्खू वा० से जं० अच्चियं वा कुंभिपकं तिंदुगं वा वेळुगं वा कासवनालियं वा अन्नयरं वा तहएण-
गारं आमं असत्थप० । से भिक्खू वा० से जं० कणं वा कणकुंडगं वा कणपूरयलिय वा चाउलं वा चाउलपिडुं वा तिलं
वा निलपिडुं वा तिलपण्णगइगं वा अन्नयरं वा तहएणारं आमं असत्थप० लाये संते नो प०, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स
सामगियं ॥ (सू० ४८) २-१-१-८ ॥ पिण्डैवणायामष्टम उद्देशकः ॥

ते भिष्णु भावुं जाणे, के जवा कुसुम विगेरे अग्रबीज छे, जाइ विगेरेनां मूळबीज छे, सहकी विगेरे स्कंधबीज छे, अथवा इष्णु
(शेरडी) विगेरेनां पर्वबीज छे, तेज प्रमाणे अग्रजात, मूळजात, स्कंधजात, पर्वजात ते तेमांथीज जन्मे छे, पण बीजेथी नहि,
तक्कली (कंदली) तुं मस्तक (वचलो गर्भ) अने कंदलीशीर्ष ते तेनो स्तवक ए प्रमाणे नाळियेर विगेरेमां पण समजतुं, अथवा
कंदली विगेरेना मस्तक समान जे कंद छेदवाथी तुर्तज ध्वंस पास छे, तैतुं बीजुं पण काचुं अन्नन्न परिणत होय ते लेवुं नहि, तथा
ते भिष्णु एवुं जाणे के शेरडी, रोग विगेरेथी छिद्रवाली भाय अंगारहित (रंगे बगडी गयेळ) होय, तथा जाल छेदाइ गयेली होय,

विगदमिय, ते वरगडे अथवा रियाळिण् थोडी खाधेल होय, आवा छिद्र विगेरेथी ते शेरडी विगेरे अचित्त थती नथी तथा वेत्राय तथा 'कंदली ऊससुयं' ते कंदलिनो मध्य भाग एतुं वीजुं पण काचुं अपरिणत होयं तो लेवुं नहि, आ प्रमाणे लसण संबंधी पण जाणवुं के अपरणिता होय ते न लेवुं, आमां 'चोयग' नो अर्य कोयिकाना आकारे लसणने बहार छाल होय, छे. ते ज्यांसुथी खीली होय त्यांसुथी सचित्त जाणवी, अख्छियं ते कोइ दृक्षतुं फल छे, तथा टीवर, वीळुं कासवनालियं ते श्रीपर्णीतुं फल छे, आ काचां फळो-ने एकदम पकववा खाडामां नाखीने पकवे ते पाकेलां पण सचित्त जाणवां, ते साधुने न कल्पे. (आमां जे पकवे ते कुंभीपाक करेवाय छे.)

तथा शालि विगेरेना कण ते कणिका छे, तेमां कोइ नाभि (सचित्तयोनि) होय, कणिककुंड ते कणकीमिश्रित कुकसा तथा कणपूयलिय ते कणकीथी मिश्रित पूपलिक करेवाय छे. आमां पण थोडुक पकवेल होयं तो नाभि (सचित्त योनि) संभवे छे. (वाकी तेमां तल, तलनो पीठ, तलनो पापड विगेरेमां कवते सचित्त योनि होय माटे काचुं लेवुं नहि, आवी चीज मळे तोपण लेवी नहि,) आज साधुनी संपूर्णता साधुता छे.

आठमो उद्देशो समाप्त थयो.

नवमो उद्देशो.

आठमो कहीने नवमो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां अनेपणीय विद्वनो त्याग बताव्यो, अहीं पण बीजे प्रकारे तेज बतावे छे.

इह खलु पार्शुणं वा ४ संतोगइया सङ्घा भवन्ति, गाहावई वा जाव काममकरी वा, तेसि च णं एवं वुत्तपुब्बं भवइजे इमे भवन्ति समणा भगवंतो सीलवंतो वयवंतो गुणवंतो संजया संबुद्धा बंधयारी उवरया मेहुणाओ धम्मआओ, नो खलु एएसि कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा ४ भुत्तए वा पायए वा, से जं गुण इमं अमहं अणो अट्टाए निट्ठियं तं असणं ४ सच्चमेयं समणाणं निसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो अट्टाए असणं वा ४ चेइस्सामो, एयप्पणारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तहप्पणारं असणं वा अफासुयं ॥ (भू० ४९)

‘इह’ शब्द वाक्यना उपन्यास माटे छे, अथवा मज्ञापकना क्षेत्र आश्रयी छे. खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे.) प्रज्ञापकनी अपेक्षाए पूर्व विगेरे दिशाओ छे, अर्थात् गुरु-शिष्यने कहे छे, के-गुरुषोमां केटलाक एवा श्रद्धालुओ श्रावक अथवा प्रकृतिभद्रक अन्य पुरुषो होय छे, ते गृहस्थ अथवा कर्म करी (काम करनारा) होय छे, तेमने मालीक कहे के, आ गाममां आ आवेला साधु भगवंतो १८००० भेदे शीलव्रत पाळनारा छे, तथा पांच महाव्रत तथा छटुं रात्रिभोजन विरमणव्रत धारनारा, तथा विंइविशुद्धि विगेरे उत्तरगुणयुक्त इंद्रिय मनने दमन करवाथी संयत छे, तथा आसन्नद्वार (पापस्थान) रोकवाथी संवृत छे, नवविध ब्रह्मचर्य गुत्ति पाळवाथी ब्रह्मचारी छे, मैथुन (कुसंग) थी दूर छे, १८ प्रकारतुं ब्रह्मचर्य पाळनारा छे, आवा साधुओने आधाकमी विगेरे

दोषित भोजन विगेरे कल्पतुं नथी, माटे आपणे आपणुं रांथेळुं बधुं तेमने बोहरावी दइए, आपणा माटे पळवाडे रांथी लइथुं. तेथी तेओ आहुं करे, तेम साधु पोते साक्षात् सांभळे अथवा बीजा पासे सांभळीने जाणीने तेहुं भोजन विगेरे अनेषणीय जाणीने मळवा उतां पोते ले नहि.

से भिकवू वा० वसमाणे वा गामाणुगामं वा दूजमाणे से जं० गामं वा जाव रायहारिं वा इमंसि खळु गामंसि वा रायहारिंसि वा संतेगइस भिकवूस पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा-गाहावई वा जाव कम्म० तहपणा-राई कुलाई नो पुन्वामेव भत्ताए वा निकस्वमिज्ज वा पविसेज्ज वा २, केवली बूया-आयाणमेयं, पुरा पेहाए तसस परो अट्टाए असणं वा ४ उकरिज्ज वा उवक्खवडिज्ज वा, अह भिकवूणं पुन्वोवइडा ४ जं नो तहपणाराई कुलाई पुन्वामेव भत्ताए वा पाणाए वा पविसिज्ज वा निकस्वमिज्ज २, से तमायाय एणंतमक्कमिज्जा वा २ अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, से तस्य कालेणं अणुपविसिज्जा २ तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं एसित्ता आहारं आहारिज्जा सिया से परो कालेण अणुपविट्ठसस आहाकम्मियं असणं वा उवकरीज्ज वा उवक्खवडिज्जा वा तं वेगइओ तुसिळीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चाइक्खिस्सामि, माइट्ठणं संफासे, नो एवं करिज्जा, से पुन्वामेव आलोइज्जा आउसोत्ति वा भइणि-त्ति वा ! नो खळु मे कणइ आहाकम्मियं असणं वा ४ सुत्तए वा पायए वा, मा उवकरेहि मा उवक्खवहेहि, से सेवं वयंतसस परो आहाकम्मियं असणं वा ४ उवक्खवडाविता आहुइ दलइज्जा तहपणारं असणं वा अफासुयं० ॥

ते भिक्षु आहुं जाणे के गामथी लहने राजधानी सुधीनी आ स्थानोमां अमुक साधुना पूर्वनां सगां ते काका विगेरे छे अने पलवाडेथी थपूला सगां सासरीयां विगेरे छे, ते त्यां घरवास करीने रहेलां छे, तेमां गृहस्थथी लहने काम करनार नोकर वाह सुधां छे, तेवां कुळो जे सगां-संबंधीना छे तेमां न जवुं, न आववुं, सुधर्मास्वामी कहे छे के. तेवुं केवळी प्रथु कहे छे, के तेमां अशुभकर्म बंधाय छे,

प०-शामाटे दोष छे ? उ०-ते घरमां साधुने माटे प्रथमथी विचार करी राखे, एटले प्रथमथी गृहस्थ ते साधु माटे उपकरण तैयार करावी राखे, तथा रसोइ विगेरे रंथावी तैयार करावे, तेथी साधुओ माटे आ प्रतिज्ञा विगेरे प्रथमथी कहेल छे, केतेवां सगां संबंधीनां कुलोमां भिक्षाकाळथी पहेलां जवुं आववुं नहि, त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे, ते आत्माथी साधुए ते गाममां पोतानुं कुळ जाणीने सगां न जाणे तेवी रीते पोते जाय अने त्यां घळवाळां न आवे, न देखे त्यां एकांतमां रहे, अने गोचरीनां वयते जुदां जुदां कुळमांथी एषणीय आहार वधेथी एटले सगां के बीजांनो भेद राख्या विना वेषमात्रथी मेळवे, एटले उत्पादन दोष विगेरे लागवा न दे. ते उत्पादन दोषो नीचे मुजव छे.

धाई दूइ निमित्ते, आजीव वणीमगे तिगिच्छा य । कोहे माणे माथा, लोभे य हवन्ति दस एए ॥ १ ॥
शुद्धिपच्छासंश्व-विज्जा मंते अच्युणु जोमे य । उत्पायणाय दोसा सोलसमे मूलकस्मे य ॥ २ ॥

गोचरी माटे गृहस्थनां लोकरां रमाडवा विगेरेतुं कृत्य करे, ते (१) धात्रीपिंड छे, (२) दूतीपिंड गोचरी माटे गृहस्थनो संदेशो दूतनी माफक लइ जाय (३) अंगुठी तथा पक्ष रेखा विगेरेतुं फळ वतावी आहार ले ते निमित्तपिंड छे. (४) आजीवपिंड ते पोतानी

पूर्वनी उत्तमजाति विगोरे वतावी पिंड ले ते, (५) वणीमगपिंड ते गृहस्थ जेनो धर्म पाळतो होय तेनी पशंसा करी गोचरी ले, (६) चिकित्सापिंड ते, गृहस्थने नानी मोटी दंवा वतावी गोचरी ले ते, (७) क्रोधथी, (८) अहंकारथी, (९) कपट करीने, (१०) लोभथी वेष विगोरे वदलीने गोचरी ले, (११) पूर्व पश्चात् संस्तवपिंड, ते गृहस्थ दान आपे ते पहेलां तेना संबंधीनी पशंसा करे के तमे अवा कुळमां जन्मयाहो, आवा कुळमां परण्याहो-इत्यादि बोलीने गोचरी ले, (१२) विद्यापिंड, ते विद्या वतावी जोकरां भणावीने पिंड ले, (१३) मंत्रपिंड, मंत्रनो जाप वतावीने गोचरी ले (१४) चुर्णपिंड, वशीकरण विगोरे माटे द्रव्य (सुगंधी) चुर्ण मंत्रीने आपीने गोचरी ले, (१५) योगपिंड-ते अंजन विगोरे आपीने गोचरी ले, (१६) जे अनुष्ठानथी गर्भपात विगोरे थाय तेवुं करीने गोचरी ले, आ सोळे दोषो साधुथी उत्पन्न थाय हे माटे उत्पादन कहेवाय हे. (ते न लग्नाडवा जोइए) शास एपणाना दोषो नीचे मुजब हे. १ संजोअणा २ पमाणे ३ इंगाले ४ धूम कारणे चेंव

(१) आहारना लोह्यपणथी दहिं, गोक, (साकर) मेळवीने शीवंड वनावीने स्वाय, ते संयोजना दोष हे, वत्रीश कोळीयाथी वधारे प्रमाणमां आहार स्वाय तो प्रमाण अतिरिक्त (वधारे) दोष कहेवाय, (३) सारी गोचरी राग करीने स्वाय तो चारित्रने अंगारा माफक वळवाथी अंगार दोष तथा (४) अंत प्रांत आहार मळतां आहार तथा आहार आपनारनी निंदा करतो स्वाय तो चारित्रने काळं करवाथी धुम्र दोष हे, (५) वेदना विगोरे कारण विना आहार करे तो कारण अथाव दोष हे.

आ प्रमाणे साधुना वेषमात्रथी प्राप्त करेलु ग्रांष एषणा विगोरे दोष रहित आहार लेइने वापरवो, कदाच एम थाय, के गृहस्थ गोचरीना समये साधु जाय तो पण आयाकर्मी अज्ञान विगोरे वनावे, ते वरवते साधु उपेक्षा करे, श्लाघाटे ? के ते लेतांज हुं

पचखाण करीया, अने हुं ते नहीं लडं एवुं धारे अने स्वादथी पछी कपट करे, अने छे, पण आबुं प्रथमज न करवुं, केवी रीते करवुं ? ते कहे छे, प्रथम गोचरी लेतां उपयोग राखे, अने तेवुं जाणे तो कहे, के हे शेट ! हे वाड ! अमने अमारा माटे बनावेळो आहार विगेरे खावापीवाने (आधाकर्मी) कल्पतो नथी ! माटे तेने माटे तमारे यत्न न करवो ! आबुं कहेवा छतां पण गृहस्थ आधाकर्मी आहार करे तो मळे छतां पण लेवो नहि.

से भिक्खू वा से जं० मंसं वा मच्छं वा भज्जिजमाणं पेहाए तिळपुयं वा आएसाए उवक्खवडिजमाणं पेहाए नो खळं
२ उवसंक्रमित्तु ओभासिज्जा, नन्नत्थ गिल्लणणीसाए ॥ (सू० ५१)

ते साधु जो आबुं जाणे के मांस अथवा माछलां अथवा तेलना पूडाओ ते गृहस्थना घरमां मेमान आववाना छे, तेथी तेवो आहार वनतो त्यां जुए, तो जीभनी लालचथी दोडतो दोडतो गीघ्र नः जाय अथवा त्यां जडने याचना करे नहि, पण पूर्व वताव्या प्रमाणे त्यां दवा विगेरे कारणसर मांदा माटे जवुं पडे तोपण संभालथी जाय.

से भिक्खू वा० अन्नयरं भोयणजायं पडिगाहिता सुब्धि सुब्धि भुच्चा दुब्धि २ परिद्वेइ, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा । सुब्धिं वा दुब्धिं वा सत्तवं भुंजिज्जा नो किंचिवि परिद्विज्जा, ॥ (सू० ५२)

ते भिक्षु कोइपण जातवुं भोजन लडने साहं साहं खाइ जाय, खराब खराब त्यजी दे, ते कपट छे, माटे तेवुं कुत्य साधुए न करवुं पण साहं माहुं जेवुं आवे तेवुं संतोषथी समभावे खाइ लेवुं पण परठववुं नहि.

से भिक्खू वा २ अन्नयरं पाणगजायं पडिगाहिता पुष्कं आविइत्ता कसायं २ परिद्वेइ, माइट्ठाणं संफासे, नोएवं करिज्जा

। पुष्कं पुष्पेइ वा कसायं कसाइ वा सव्वमेयं भुंजिज्जा, नो किञ्चिचि परि० ॥ (सू० ५३)
 आ प्रमाणे पाणीतुं पण समजतुं, सारा रंगतुं सारी गंधतुं होय तो पुष्प कहेवाय अने तेथी विपरीत ते कषाय; एटले सुगंधी
 पीणुं पीए, अने बीजुं फेकी दे, तेवुं कपट न करवुं. कारण के आहारना गृह्यपणाथी. सूत्रार्थनी हानि थाय अने कर्मबंध थाय—
 से भिक्खु वा० बहुपरियावनं भोयणजायं पडिगाहिता वहवे साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुत्ता अपरिहारिया
 अदूगया, तेसिं अणालोइया अणामंते परिइवेइ, माइठ्ठाणं संफासे, नो एवं करेज्जा, से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा, २
 से पुन्वोमेव आलोइज्जा—आउसंतो समाणा ! इमे मे असणे वा पाणे वा ४ बहुपरियावन्ने तं भुंजह णं, से सेवं वयंतं
 परो वइज्जा—आउसंतो समाणा ! आहारमेयं असणं वा ४ जावइयं २ सरइ तावइयं २ भुक्खामो वा पाहामो वा सव्व-
 मेयं परिसइइ सव्वमेयं भुक्खामो वा पाहामो वा ॥ (सू० ५४)
 ते साधु कोइ वरवत यणुं भोजन विगेरे आचार्य तथा मांदा तथा परोणा विगेरे माटे आणेछु वधाने आपतां यणुं वधी जवाथी
 न खवाय, तो पोताना माधर्मिक गोचरीना वहेवारवाळा संविन्न साधुओ जोडे होय, अथवा यणे दूर न होय, तेवा साधुने पूज्या
 विना फक्त जवाना प्रमादथी परठवोदे, तो साधुपणाने दोष लागे, माटे शुं करवु ? ते कहे छे, ते वधेलो आहार लइने ते साधु
 बीजा साधुओ पासे जइने वतावे अने कहे, के हे श्रमण ! आ मारे वधी गयुं छे, ते हुं खाइ वाकतो नथी, जेथी तमे किञ्चित्
 खाओ, त्यारे तेओ कहे, के अपाराथी वने तेटळं खाइशुं, देवीशुं, अथवा वहुं खाइशु, देवीशुं.
 से भिक्खु वा २ से जं० असणं वा ४ परं समुहिसस चहिया नीहडं जं परेहिं असमणुत्तायं अणिसिद्धं अफा० जाव नो

पडिगाहिज्जा जं परेहिं समणुणायं. समं णिसिद्धं फासुयं जावं पडिगाहिज्जा, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामणियं (सू० ५५) ॥ २-१-१-९ ॥ पिण्डैषणायां नवम उद्देशकः ।
ते साधु आचो आहार जाणे के, चार भट विगेरेने उद्देशीने घरमांथी काढेल हे, पण ते आहारने चार भट विगेरेए स्वीकार्यो नथी तो ते बहु दोषवाळो जाणीने लेवो नहि, पण जो ते आहार ते थणीए स्वीकारी पोतानो कर्यो होय, अने ते आपे तो लेवो, आ साधुनी सर्व साधुता हे.

नवमो उद्देशो समाप्त.

दशमो उद्देशो.

नवमो कहो, इवे दशमो कहे हे, तेनो आ प्रमाणे संबंध हे, नवममां पिंड ग्रहणविधि कहो, अहीया साधारण विगेरे पिंड मेळवीने वसतिमां गयेल साधुए श्रुं करवुं, ते कहे हे.

से एणइओ साहरणं वा पिंडवायं पडिगाहिता ते साहम्मिए अणाणुच्छिता जस्स जस्स इच्छइ तस्स तस्स खळं खळं दल्लं, माइट्टाणं संफासे, नो एवं करिज्जा । से तमायाय तत्थ गच्छिज्जा २ एवं वइज्जा—आउसंतो समाणा ! संति मम पुरेसंशुया वा पच्छा० तंजहा—आयरिए वा १ उवज्जाए वा २ पवित्तीवा ३ थेरे वा ४ गणी वा ५ गणहरे वा ६ गणा-वच्छेइए वा ७ अविचाइं एएसिं खळं खळं दाहामि, सेणेवं वयंतं परो वइज्जा—कामं खलु आउसो । अहापज्जचं निसि-

परं भोयणजायं पडिगाहिं ना भइयंर भुच्चा विवन्नं विरसमाहरइ, माइ० नो एव० (सू० ५७)
 ते साधु कोइ जण्याए गोचरी गयो हांय, त्यां सारं मिष्टान्न विगोरे भोजन मळयुं होय, ते लेइने तेना उपर तुच्छ ल्लुं भोजन
 विगोरे हांकी दे, के माहं आ सारं भोजन आचार्य विगोरे देखो तो लेइ लेओ, अने मारे तो आ थोडुं सारं भोजन कोइने आपहुं
 नथी, एम थारी छुपावे तो कपट कहेवाय, माटे तेवुं न करवुं, त्तारे थुं करवुं ? ते कहे छे.
 ते वयो आहार लइने छुपाव्या विना सारो माठो बतावी देवो, हवे गोचरी जतां कपट स्थान न करत्रांनुं बतावे छे, के रस्तामां
 वीजे गास गोचरी जतां सारं सारं भोजन मळे, तो त्यां खाइ जइने नवळुं नवळुं त्यां लइ जहुं ए कपट स्थान छे, ते न करवुं, वळी-
 से भिक्खू वा० से जं० अंतरच्छियं वा उच्छु गंडियं वा उच्छु चोयणं वा उच्छु मेरां वा उच्छु सालगं वा उच्छुदालगं
 वा सिवळिं वा सिवलयालगं वा अस्सिखलु पडिगाहियंसि अप्पे भोयणजाए बहुउच्चियधम्मिए तहप्पगारं अंतरच्छुयं
 वा० अफा० ॥ से भिक्खू वा २ से जं० बहुअट्टियं वा मंसं वा मच्छं वा बहुकटंथं अस्सिखलु० तहप्पगारं बहुअट्टियं
 वा मंसं० लाये संतो० । से भिक्खू वा० सिया णं परो बहुट्टिएणं मंसेण वा मच्छेण वा उच्चनिमंतिज्जा—आउसंतो
 समाणा ! अभिक्खवसि बहुअट्टियं मत्तं पडिगाहिच्चेए ? एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउ-
 सीत्ति वा २ नो खलु मे कपइ बहु० पडिगा०, अभिक्खवसि मे दाउं जावइयं तावइयं पुगालं दलयहि, मा य अट्टियाइं,
 से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्टु अंतो पडिगाहियंसि बहु० परिमाइत्ता निहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं पडिगाहं परहत्थसि वा
 परपायंसि वा अफा० नो० । से आहच्च पडिगाहिए सिया तं नोहित्ति वइज्जा नो अण्हित्ति वइज्जा, से तमायाय एगं-

रामकर्मिजना २ अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे जाव संताणए ःसंसं पच्छगं भुञ्जा अट्टियाइं कंटए गहाय
से तमायाय एयांतमवकर्मिजना, २ अहे ज्ञामथंइलंसि वा जाव पमज्जिय पमज्जिय परट्टविजना ॥ (सु० ५८)

ते गोचरी गयेलो साधु आवा प्रकारनो आहार जाणे के शेरडीना गांठोना वचला टुकडा, अथवा गांठोवाला टुकडा अथवा पीलेला
शेरडीना छोटिकां (छोटारा) मेरुक (त्यग्र) शेरडीना सालण ते दीर्घ शारवा (सांठो) डालण ते एक टुकडो सिंबली मग चोला
विगेरेनी अचित्त थएली सींग (फळी) 'सिंबली थालण' वालपाणडीनी थाली अथवा फलीओ रांथेळी होय, आवी वस्तु जो साधुए
खावा माटे लीथी होय तो शेरडी विगेरेना कुचा घणा नीकळे, खावानुं थोडुं, अने कुचामां कीडीओ विगेरे संख्याबंध जीवो बुरा
हाले मरे, माटे अपासुक होय तो पण न लेवी, अने पासुक होय तो पण न लेवा,

तेज प्रमाणे कोइ जग्याए ठळीया वाळां फळ ते फणस विगेरे अने कांटावाळां ते अननास विगेरे फळ पाकेळां टुकडा कर्या
होय, अने कोइ गृहस्थ ते साधुने आपे तो पण साधुए लेवा नहि, हवे कोइ गृहस्थ घणो भक्तिमान होय अने बहु आग्रह करे अने
पूजे के आप लेशो के ? आ प्रमाणे तेनी प्रार्थना सांभळीने साधु कहे के हे आशुष्यमन ! मने ते लेवुं कल्पतुं नथी, पण जो तारो
खास आग्रह होय तो ठळीया रहित कांटा रहित एवो जे वचलो फळनो गर्भ छे, ते आप, पण ध्यान राखजे के ठळीया के कांटा
न आवे. आ प्रमाणे सांभळीने पेळो गृहस्थ ठळीया विनातुं कांटा विनातुं शोथी शोथीने साधुने आपे, पण ते वरवते सचित्त भाग
तेना हाथमांथी के तेना वासणमांथी आवे तो पोते न ले, ते प्रमाणे अचित्त फळनो गर्भ आपे तो पोते नोहि बोले, तेम अणिहि
पण न बोले,

पढी ते छेइने ते बगीचांमां कोइ झाड नीचे अथवा मकानना छापरा नीचे बेसीने ज्या जीव जंतु एकैदियथी पर्चाद्रिय सुधा न होय त्यां पोने शांतिथी बेसीने फळनो गर्भ लीधेलो होय तेने फरीथी जोइले, अने पोताना के गृहस्थना प्रमादथी ठळीयो के कांटो रही गयो होय, तो तेने खातां वाजुए राखीने खाइ रखा पढी एकांतमां जइने अचिच जग्या कुंभारनो निभाडो विगेरे होय, त्यां जग्या पुंजी पुंजीने परठवे.

आ जग्याए केडलाक आचार्यनो एवो अभिप्राय छे के आगळ गळत कोड विगेरेमां ते साधुने अधिक पोडा थती होय, अने तेने संसारी न करी शकवाथी तेनी उमर जुवान होय, अने वैद एम सलाह आपे के आ रोगनी शांति माटे मरेला जनावर के माळलानो वचलो गर्भ तेना उपर बांधवो, आवा अपवादना कारणे छेदसूनना अभिप्राय प्रमाणे कदाच पेला साधुना रक्षण माटे लीधुं होय तो पण तेमां रहेल हाडकुं अथवा कांटो संभालथी एकांतमां लइ जइ परठवो अर्हो 'भुज' थातुनो अर्थ भोगववानो छे, पण खावा माटे नहि, जेप पदाति (पायदळ सेना) नो राजा भोग करे छे, अथवा साधु पाट पाटलाने भोगवे छे.

से भिक्खू० सिथा २से परो अभिहहु अंतो पडिगहे विलं वा लोणं उल्भियं वा लोणं परिभाइता नीहहु दलईज्जा, ते तहणगारं पडिगहं परहत्थंसि वा २ अफासुयं नो पडि०, से आहच्च पडिगाहिए सिथा तं च नाइदूरगए जाणिज्जा, से तमायाए तरथ गच्छिज्जा २ पुब्बामेव आलोइज्जा—आउसोचि वा २ इमं किं ते जणया दिन्नं, उयाहु अजाणया ? से य भणिज्जा—नो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया दिन्नं, कामं खलु आउसो ! इयाणि निसिरामि, तं भुजह वा णं परिभाए वा णं तं परेहि समणुनायं समणुसदं तथो संजयामेव भुंजिज्जा वा पीइज्जा वा, नं च नो संचाएइ भोत्तए वा पायए

का साहम्मिया तस्य वसन्ति संभोदया समणुजा अपरिहारिया अदरगया, तेसिं अणुपयायव्वं सिया, नो जरथ साहम्मिया जहेव बहुपरियावन्नं कीरइ तहेव कायव्वं सिया, एवं खलु० ॥ (सू० ६९) ॥ २-१=१-१-१० ॥ पिण्डैषणायां

दशम उद्देशकः ॥

ते भिक्षु वर विगेरेमां गोचरी जतां कदाच गृहस्थ पासे मांदा विगेरे माटे खांड विगेरे मांगतां बिड लवण खाणमां उरख थएल मीठुं तथा उद्भिज्ज ते समुद्रतुं मीठुं भूळथी आपे, ते वरते साधुए तेना हाथमां के वासणमांथी तपासीने लेवुं के भूळथी खांडने बदले मीठुं न आवे, पण कदाच वनेने उतावळ होवाथी साधुना पात्रमां आवी गधुं होय अने थोडे दूर गया पळी साधुने खबर पडे तो पाडो आवीने ते गृहस्थने कहे के, आ तमे खांडने बदले मीठुं आपेल छे ते जाणमां के अजाणमां ? जो अजाणमां आप्यातुं कहे अने पळी एम कहे के तपने जो खप होय तो वापरजो, आ प्रमाणे गृहस्थ जो रजा आपे तो मासुक होय तो साधुए वहेचीने खावुं, कदाच अपासुक आवे अने गृहस्थ पाहुं न छे तो परठववानो महान दोष जाणीने पोते खाय पीये, वधारे होय तो नजीक रहेला उत्तम साधुओने वहेची आपे, तेवा साधर्मिक न होय तो पोतानी शक्ति प्रमाणे वापरे, (बाकीतुं परठवी दे.) आ साधुतुं सर्वथा साधुपणुं छे. (एट्या माटे वने त्यां लग्गी गोचरी जनारे गोचरीमांज पुरतुं लक्ष्य राखीने वस्तु लेवी के पळवाडे आनी तकलीफ न पडे.)

दसमो उद्देशो समाप्त.

अग्यारमो उद्देशो.

दशमो उद्देशो कह्यो, हवे अग्यारमो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां मळेला पिंडनो (लेवा न लेवा तथा चापरवा परठववा संबंधी) विधि कह्यो, तेनेज अहीं विशेष्यी कहे छे.

भिक्रवाणा नामेगे एवमाहंसु समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं वा दूइजमाणे मणुनं भोयणजायं लभित्ता से भिक्रवू गिलाइ, से हंदइ णं तस्साहरइ, से य भिक्रवू नो भुंजिजा तुमं चेव णं भुंजिजासि, से एगइओ भोक्रवामित्तिकहु पळि-उंचिय २ आलोइज्जा, तंजहा-इमे पिंढे इमे छोए इमे तित्ते इमे कहुयए इमे कसाए इमे अंबिले इमे महुरे, नो खलु इत्तो किंचि गिलाणस्स सयइत्ति माइठ्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा, तहाठियं आलोइज्जा तहाठियं गिलाणस्स सयइत्ति, तं तित्तयं तितएत्ति वा कहुयं कसायं कसायं अंबिलं अंबिलं महुरं महुरं (सू० ६०)

(भिक्षा माटे विहार करे शुद्ध गोचरी छे माटे भिक्षण शील) ते साधुओ समान आचार विचार व्यवहारवाका एकज जग्या-ए रखा होय, अथवा बहार गामथी विहार करता आव्या होय, (वा शब्दथी असमान आचारवळा पणा भेळा समजवा) तेमां कोइ साधु मांदो पडे, तो भिक्षायां फरनारा साधुओ गोचरीयां मनोज्ञ भोजननो लाय थतां बीजा सोबती साधुने कहे के आ सारं भोजन तमे लेइने मांदा साधुने आपो, अने जो ते न खाय, तो तमेज खाइ छे जो, आ प्रमाणे मांदानी क्यावच्य करनार ने कहेतां ते साधु मांदा माटे आहार लेइने विचार करे के, आ सारं मिष्टान विगेरे स्वादिष्ट वस्तु हुं खाइश, पुढी ते मांदा पासे जइने सारो

आहार रुपवीने मांदाने कहे के आ आहार तमने आपतां वायु विगेरे वधी जशे माटे तमारे खावा योग्य नथी, फारण के आ अपथ्य हे. एटले तेना आगळ आहारतुं पात्र मुकी कहे के तमारे माटे साधुए आहार आप्यो हे, पण आ तो लखो हे, तीखो हे, कडवो हे, कषायेलो खाटो मधुर हे. ते अमुक रोग उत्पन्न करे तेवो हे. माटे तमने तेनाथी उपकार थाय तेम नथी, आ प्रमाणे कठी मांदाने डरवीने—ठगीने पोते खाड जाय ते माटे कपट कर्युं कहेवाय, तेवुं पाप साधुए न करवुं, त्यारे तेणे शुं करवुं ? ते कहे हे—

जेवुं होय तेवुं मांदाने देखाडवु, अर्थात् कपट कर्यांविना तींने अनुकूल होय ते वधो आहार समजावीने. आपी देवो. भिक्वणा नामेगे एवमाहंसु—समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दृड्जमाणे वा मणुनं भोगणजायं लभित्ता से य भिक्खू गिलाइ से हदइ णं तस्य आहरइ, से य भिक्खू नो भुंजिज्जा आहारिज्जा, से णं नो खल्ल मे अंतराए आहरिस्सामि, इच्चेयाइं आइत्तणाइं उक्कम्म ॥ (सू० ६१)

ते साधुओ सुंदर आहार लावीने पोताने त्यां रहेला अथवा नवा परेणा आवेला साधुओने मांदाने उद्दशीने कहे के, आपां-थी मांदाने योग्य सारं सारं भोजन लो अने ते न खाय तो पाहुं लावजो, पळी लेवा वाळो कहे के हुं तेने अंतराय पाड्या विना नेने योग्य आपीने चाकीतुं वधेळुं पाहुं लावीश. पळी आहार लइने मांदाने आहार गया मूत्रमां वताव्या प्रमाणे खोडुं समजावी तेने ठगी ते पोते वधुं खाइ हे, अने आहार आपनार साधुओने मोडेथी जइने कहे के, ते साधुए कंइ लीधुं नहि. तो ते पाहुं लावता मने वेयावच्च करतां गोचरी योग्य समये न वापरवाथी शूळ उठी, तेथी तमारी पासे पाळो आहार न लाव्यो, (पण मे

जेम तेम दुःस्वेषी खाइ लीधो !) आहुं कपट न करहुं. माटे भुं करहुं ते कहै छे—
तेहुं कपट कर्या विना मांदाने बधो आहार बतावी सत्य समजावीने ते जेदळो आहार ले; ते आपवो, अने न छे ते वीजा
साधुओने पाछो अपी आववो.

पिंडना अधिकारथीज सातपिंडैषणाने आश्रयी सूत्र कहे छे.

अह भिक्खु जाणिज्जा सत्त पिंडैसणाओ सत्त पाणेसणाओ, तत्थ खलु इमा पढमा पिंडैषणा—असंसद्वे हत्थे असंसद्वे मत्ते
तहपणारेण असंसद्वेण हत्थेण वा मत्तेण वा असणं वा ४ समयं वा णं जाइज्जा परो वा से दिज्जा फासुयं पडिगाहिज्जा,
पढमा पिंडैसणा १ ॥ अहावरा दुच्चा पिंडैसणा—संसद्वे हत्थे संसद्वे मत्ते, तहेव दुच्चा पिंडैषणा २ ॥ अहावरा तच्चा पिंडै-
सणा—इइ खलु पार्हणं वा ४ संतेगयाइ सहुँ भवंति—गाहावई वा जाव कम्मकरी वा, तेसिं च णं अन्यरेसु विरवरवेसु
भायणजाएसु उवनिक्खित्तपुन्वे सिया, तंजहा थालंसि वा पढरंसि वा सरंगंसि वा परंगंसि वा वरंगंसि वा, अह पुणेवं
जाणिज्जा—असंसद्वे हत्थे संसद्वे मत्ते, संसद्वे वा हत्थे असंसद्वे मत्ते, से य पडिगहभारी सिया पाणिपडिगहिण वा, से
पुन्वामेव०—अ उसोत्ति वा ! २ एएण सुभं असंसद्वेण हत्थेण संसद्वेण मत्तेण संसद्वेण वा हत्थेण असंसद्वेण मत्तेण अस्सि
पडिगहंगंसि वा पाणिंसि वा निहहु उच्चित्तु दळयाहि तहपणारं भोयणजायं समयं वा णं जाइज्जा २ फासुयं० पडिगाहि-
ज्जा, तइया पिंडैसणा ३ ॥ अहावरा चउत्था पिंडैसणा—से भिक्खु वा० से नं० पिहुयं वा जाव चाउलपलंवं वा अस्सि
खलु पडिगहियंसि अप्पे पच्छाकम्ममे अप्पे पज्जवजाए, तहपणारं पिहुयं वा जाव चाउलपलंवं वा समयं वा णं० जाव

पडि०, चत्त्या विंडेसणा ४ ॥ अहावरा पंचमा विंडेसणा—से भिक्खू वा २ उगाहियमेव भोयणजायं जाणिज्जा, तंजहा सारावंसि वा डिडिमंसि वा कोसगंसि वा, अह पुणेवं जाणिज्जा बहुपरियावने पाणीसु दगलेवे, तहप्पगारं असणं वा ४ सयं० जाव पडिगाहि०, पंचमा विंडेसणा ५ ॥ अहावरा उट्टा विंडेसणा—से भिक्खू वा २ पगहिमेव भोयणजायं जाणिज्जा, जं च मयद्वाए पणहियं, तं पायपरियावन्नं तं पाणिपरियावनं फासुयं जं च परट्ठाण पगहियं पंडि०, उट्टा विंडेसणा ६ ॥ अहावरा सत्तमा विंडेसणा—से भिक्खू वा० बहुउच्चियथम्मियं भोयणजायं जाणिज्जा, जं चउत्ते बहवे दुपयचउपयसमणमाहणअतिहिकिक्कणवणीमगा नाक्कंवंति, तहप्पगारं उच्चियथम्मियं भोयणजायं सयंवाणं जाइज्जा परो वा से दिज्जा जाव पडि०, सत्तमा विंडेसणा ७ ॥ इक्केयाओ सत्त विंडेसणाओ, अहावराओ सत्त पाणेसणाओ, तस्य खल्ल इमा पदमा पाणेसणा—असंसट्ठ हस्ये असंसट्ठे मत्ते, तं चेव भाणियवं, नवरं चउत्थाए नाणत्तं । से भिक्खू वा० से जं पुण० पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा—तिलोदगं वा ६, अस्सि खल्ल पडिगाहियंसि अप्प पच्छाकम्ममे तहेव पडिगाहिज्जा ॥ (सु० ६२)

अथ शब्द अधिकारना अंतरमां आवे छे. प्र०—युं अधिकार वतावे छे ? उ०—सातविंडेवणा. अने पान (पाणी) नी एसणा अर्थात् भिक्षु एम जाणे के नीचे वतावेली विंड एसणा तथा पान एसणा छे,

१ असंसट्टा २ संसट्टा ३ उट्टा ४ अप्पेत्तना ५ उगाहिया ६ पगहिया ७ उट्ठथम्मा.

साधुओना वे भेदो छे, गच्छमां रहेल स्यविर कल्पी अने गच्छयी नीककेला जिनकल्पी, उपरनी साते विट्ठएषणः स्यविर

कल्पीने लेवाय. पण जिनकल्पीने प्रथमनी बे छोडीने पाळ्ळनी पांचलेवाय छे.

प्रथमनी पिंड प्षणानुं स्वरसु—

अससुं ह्यथ, अससुं वासण, अने व्होरान्या पळी वासणपां द्रव्य रहे अथवा न रहे, तेपां जो बीलकुल द्रव्य न रहे तो तुर्त वासण थोवानो पश्चात् कर्मनो दांष लग्ने, छतां पण गळ्ळभां बालक, बूढो, तपस्वी विगोरेना आकुळपणाना कारणे निषेध नथी, तेथीज सूत्रपां तेनी चिंता करी नथी, न खरडेळो हाथ, न खरडेळुं वासण, तेथी असन विगोरे चार प्रकारनो आहार याचे, अथवा गृहस्थ पोते याच्या विना पण आपे, तो स्वप हांय ते प्रमाणे फासु आहार ग्रहण करे.

बीजी पिंडप्षणा.

खरडेळो हाथ, खरडेळुं वासण, गृहस्थ पोताना माटे ते वस्तु लेवा हाथ अने वासण खरडे—

बीजी पिंडप्षणा.

प्रज्ञापकनी अपेक्षाए पूर्वं विगोरे दिशापां केदलाक श्रद्धाळु श्रावको के भद्र गृहस्था रहेता होय, ते शैथथी लइने नोकरडी सुधी होय छे, तेमना घरपां अनेक जातिना वा गणोपां अन्न विगोरे प्रथम नांखेळुं होय छे, ते थालमां पिठर सरग ते शारिका (सरकीया) ना वासनुं वनावेळुं संपुंडुं विगोरे परग ते वांसनी वनावेळी छात्रडी विगोरे छे, 'वरग' ते मणि विगोरे रत्नो जडीने वनावेळुं किंमती वासण होय, तेपां कोइ बीज काडीने सुती हांय, तो हाथ न खरडेळो होय अने वासण खरडेळुं होय, तो पातरां धारण कानार स्थविर कल्पी अथवां पात्रां छोडीने हाथपां खानार जिनकल्पी होय, तो गृहस्थने प्रथमज कहे हे आशुष्मन् ! अथवा हे चाइ !

तमे न खरडेला हाथे, खरडेला वासणे अथवा खरडेला हाथे, खरडेला वासणे आ पातरासां के आ हाथसां संभाल्थी लइने आपो अथवा पोते जे कस्तु जोइती होय, तेहुं नाम कहिने गाचे अने ते गृहस्थ आपे तो फांसु आहार ले.

अहीं खरडेलो हाथ, खरडेहुं वासण अने थोहुं द्रव्य पल्लाहे रहे एवो आठमो भांगो जिनकल्पीने कल्पे, स्थविर कल्पीने तो सूत्र अर्थनी 'हानि' विनोरेना कारणोने लइने बंधा भांगा कल्पे हे—

अल्पलेपा नामनी चोथी पिंडिषणा,

कुरमुरा ममरा पृथुक विनोरे चोखा रोकीने वनावेला होय, तो ते लेतां वासण हाथने लेप लागतो नथी तथा अल्प ते चोखानी कणकी विनोरेना वनावेल होय तो अल्पपर्यय कहेवायो ते वनेने लेवाय हे. तेम वाल, चणा विनोरे पण कल्पे.

अवगृह्यिता (५)—एटले गृहस्थे पोताने खावा माटे वासण थोयुं होय के हाथ थोया होय, तेजा वासणसां जो पणीनी लेप देवातो होय तो लेहुं न कल्पे. पण बहु सुकाइ गयुं होय तेजा शरात्रला, डिडिम (कांसानुं वासण) तथा कोशक मां खावानुं काढेहुं हाथ तो साधुने लेहुं कल्पे

प्रगृहीता—गृहस्थे स्वार्थ माटे के बीजा माटे चर, हांडी विनोरे रांधवाना वासणसांथी चाटवा विनोरेथी लइने बीजाने वस्तु आपी होय ते बीजाए न लीधी होय, अथवा साधुने अपावी होय तो प्रगृहीता कहेवाय, ते गृहस्थना वासणसां के हाथसां वस्तु होय तो फासु होय ते ले.

उज्जिमीत धर्मा—ते घरनी अंदर घणा नोकर चोपणां के अन्य साधु ब्रह्मण अतिथि मागण इच्छे नहि तेवी लखी सादी रसोइ

होय ते परठववा योग्य होय तेवुं भोजन पोते याचे अथवा गृहस्थ आपे तो ले, हवे सात पाणीनी एषणाओ कहे छे.—तेमां प्रथमनी त्रण तो भोजन माफक छे अने चोथीमां भेद छे, कारण के ते पाणी स्वच्छ होवाथी तेमां अल्प लेपपणुं छे, तेथी संसृष्ट वीनेरेतो अभाव छे, आ पळीनी त्रण पाणीनी एषणाओ वयारे विशुद्ध होवाथी एवोज क्रम छे. (अत्र माफक पाणीतुं पण जाणवुं).

हवे आ वतावेला अथवा पूर्वे वतावेला सूत्र वहे शुं करवुं ते कहे छे.

इच्चयासिं सत्तण्हं पिंडेसणाणं सत्तण्हं पाणेसणाणं अन्नयरं पडिमं पडिवज्जमाणे नो एवं वहज्जा—मिच्छापडिववा खल्ल एए भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवत्ते, जे एए भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जिन्ता णं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जत्ताणं विहरामि सन्वेऽवि ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति, एयं खल्ल तस्स तस्स भिक्खुणीए वा सामणियं ॥ (सू० ६३) २-१-१-११ पिण्डैषणायामेकादश उद्देशकः ॥

आ सात पिंडेवणा अथवा पान एषणामांनी कोइपण प्रतिमाने साधु स्वीकारिने आवुं पळीथी न बोले, के—“बीजा साधु भगवंतो सारी रीते पिंडेवणा विनेरे अभिग्रहो पाळता नथी, हुंज ए हलो बरोबर पाळं छुं.” तेथी भेंज विशुद्ध अभिग्रह लीथो छे, पण बीजाओए नथी लीथो, आ उपरथी गच्छमांथी नीकळे टाए के गच्छमां रहेलाए परस्पर समट्ठिथी देखवा, पण उत्तम रीते पिंडेवणा पाळनारा चडती अवस्थाए पहोंचेला गच्छमां रहेला साधुए पण पोतानाथी नीका साधु जेओ प्रथमनी पिंडेवणांमां रखा होय तेमने पण दोष देवो नहि.

प्र०—त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे.

आजे साधु भगवंतो पिडेपणा धिगेरे विशेष अभिग्रहोने धारण करीने गाम गाम चिचरे छे, अने हुं जे प्रतिमाने धारण करीने विचरं छुं. तेथी अमे वधा जिनेश्वरनी आज्ञापां छीए, अथवा जिनाज्ञाप विचरे छे, तेथी अशुद्यत विहार करनार संवरवाळा छे, तेओ वधा एक बीजाने समाधिबदे जे गच्छपां जेने जे समाधि बतावी होय तेने 'ते' कारणके गच्छवासिओने उपर बतावी तेसाते यथाशक्ति पाळवानी छे. गच्छथी नीककेलाओने पाळकनी पांचनो अभिग्रह छे, ते बदे तेओ प्रयत्न करे, ते प्रमाणे ते पाळीने विचरता होय ते वधा जिनेश्वरनी आज्ञा उलंघता नथी, ते संबंधपां पूर्वे बतावेली गाथा कहे छे.

जोऽपि दुस्वस्थ निवत्यो, बहुवस्थ अचेल्भोविरंश्रइ, न हु ते हीलिति परं, सच्चैविभ ते जिणाणाए ॥ १ ॥

कोइ धे कोइ श्रण कोइ वधारे कोइ बीलकुल वस्त्र न पहेरे, तो पण ते परस्पर निंदा न करे, कारण के ते वधा जिनेश्वरनी आज्ञापां छे. आज ते साधुनुं समग्र साधुपणुं छे, (आ हेवटना सूत्रनो परमार्थ ए छे के स्व परने दुःख न थाय, तेम विचारपूर्वक गोचरी विगेरे लेवुं वापरवुं, पण ते प्रमाणे निर्वाह न थाय, तो बने तेदछुं निर्मळ भावथी पाळना प्रयत्न करवो. पण वधारे उत्कृष्ट मार्ग पाळनारे पण पोते अहंकार करीने बीजानी निंदा न करवी, तेम पोतानी शक्ति वधतां समान्य पाळनारे पण उत्कृष्ट पाळना प्रयत्न करवो.)

श्रय्याएषणा नामनुं बीजुं अध्ययन—बीजा श्रुत स्कंधनुं प्रथम अध्ययन कहीने हवे बीजुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया अध्ययनपां धर्मना आधार रूप शरीरनी प्रतिपालना माटे प्रथमज पिंड ग्रहणनो विधि बताव्यो अने ते षड (आहार पाणी) करने ज्यां ग्रहस्यो न होय तेना स्थानपां वापरवुं. तेथी ते स्थानना गुण दोष बतावना आ बीजुं अध्ययन कहे छे. आ संबंध

आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वारे कहेवा, तेथी नाम निष्पन्न निक्षेपामां “शर्य एवणां” नाम छे, तेनां निक्षेपा करवामां “पिंडैषणा निर्युक्ति” ज्यां संभवे त्यां टुंकाणमां पथम गाथा वढे अने बीजी एषणाओनी निर्युक्तिओने यथायोग संभवता बीजी गाथा वढे प्रकट करीने बीजी गाथा वढे “शर्या” शब्दना ‘छ निक्षेपा’ ना विचारमां नाम स्थापना छोडीने निर्युक्तिकार कहे छे.

दृव्वे खित्ते काले भावे, सिज्जाय जा तहिं पणयं केरिसियासिज्जा खळु संजय जोगत्ति नायव्वा ? ॥ २१८ ॥

द्रव्य शर्या क्षेत्र शर्या काला शर्या अने भाव शर्या ए चार प्रकारे शर्या छे, तेमां द्रव्य शर्यानी जरूर छे, तेथी संयतोने केवी शर्या यांय छे. तेज हवे वतावरो. द्रव्य शर्यानी हवे व्याख्या करे छे.

तिविहा य दृव्वसिज्जा सचित्ताडचित्त मीसंगा चेव । खित्तंमि जंमि खित्ते काले जा जंमि कालंमि ॥ २१९ ॥

त्रण प्रकारनी द्रव्य शर्या छे, सचित्त अचित्त अने मिश्र. तेमां सचित्त ते पृथ्वीकाय विगेरे उपर, अने अचित्त ते प्रासुक पृथ्वी विगेरे उपर, अने मिश्र ते जे अर्धपरिणत पृथ्वी विगेरे उपर जे शर्या होय ते अथवा सचित्त शर्यातुं वर्णन निर्युक्तिकार हवे पछीनी गाथामां पोतेज कहे छे, क्षेत्र शर्या ते जे गाम विगेरे क्षेत्र (स्थान)मां शर्या कराय ते. कालशर्या ते जे ऋतुबद्ध काल विगेरेमां जे शर्या कराय, ते काल शर्या छे, तेमां सचित्त द्रव्य शर्यातुं दृष्टांत वतावे छे.

उक्कल कलिंग गोअम वणुमइ चेव होइ नायव्वा । एयं तु उदाहरणं नायव्वं दृव्वसिज्जाए ॥ ३०० ॥

आ गाथानो भावार्थ कथाथी जाणवो.

एक अटवीमां वे भाइओ उक्कल अने कलिंग नामना विषम (विकट) पदेशमां पल्लि वनांवीने चोरी करे छे. तेमनी वेन

बल्युमती नामनी हे, त्यां गौतम नामनो निमित्तिओ आव्यो, वे भाइओए तेनो सत्कार कर्यो, पण बल्युमतीए खानगीमां कहुं के आ आपणुं भळुं करनार भद्रक नथी, आ अहीं रहीने आपणी पल्लीनो विनास करणे, माटे तेने काढवो जोइए, तेथी ते वे भाइओए तेना वचनथी तेने काढ्यो, वेला निमित्तिआए पण तेना उपर देषी बनीने आ प्रतिज्ञा करी के “जो हुं बल्युमतीना उदरने चीरीने तेमां न सुउ तो माहं नाम गौतम नहि.” बीजा आचार्यो कहे के हे के ते समये तेने बालको नाना होवाथी बल्युमती पोजेज पल्लीनी मालीक हती, अने त्यां उत्कल अने कर्त्रिग नामना वे नवा निमित्तिया आवेल हता, तेथी पूर्वे आवेल गौतम निमित्ति-याने पोते काढयो, तेथी गौतमे देवथी प्रतिज्ञा करीने मार्गमां सरसव वावतो गयो, चोमासामां सरसवो उग्या. ते उगेला सरसवोने आधारे बीजा राजानो प्रवेश करावी ते वथी पल्लीने छुंटावीने बाळी नांवी, गौतमे पण बल्युमतीने केद पकडी तेतुं पेट चीरावीने थोडी जीवती तरफडती हती, ते समये तेना पेट उपर मूर्तो, आ सच्चित द्रव्यशय्या जाणवी.

भावशय्यातुं वर्णन.

दुविहा य भावसिज्जा कायणए छविवहे य भावंपि । भावे जां जत्थ जया सहदुहगल्पाइसिज्जासु ॥ ३०१ ॥

वे प्रकारनी भावशय्या हे. (१) काय विषय संबंधी अने छ भाव संबंधी तेमां जे जीव औदयिक विगेरे भावमां जे काळे वर्त्ते, ते तेनी छ भावरूप भावशय्या हे, कारण के शयन ते शय्या स्थिति हे, तेज प्रमाणे जे जीव स्त्री विगेरेनी काय (उदर)मां गर्भपणे रहेलो होय, ते जीवने स्त्री विगेरेनी काया भावशय्या हे. कारण के स्त्री विगेरेनी कायमां सुखमां दुःखमां सुता उठतां दरेक वखते ते जीव तेनी अंदर रहेली वथी अवस्थावाळो थाय हे, माटे ते काय संबंधी भावशय्या हे.

आ अध्यननो बधो अर्थीधिकार शय्या विषय संबंधी हे, अने हवे उद्देशानो अर्थीधिकार बताववा। निर्युक्तिकार कहे हे.
सन्वे चि य सिज्जविसोहिकारणा तहवि अत्थि उ विसेसो । उद्देशे उद्देशे बुच्छामि समासओ क्विचि ॥ ३०२ ॥
आ बधा एट्ठे तणे उद्देशा जो के शय्या विशुद्धि करनारा हे, तोण तेमां दरेकमां काइक विशेष हे, तेने हूं टंकाणमां
कहीश, ते कहे हे—

उगगपदोसा पढमिल्लुंमि संसत्त पच्चवाया य १ । वियंमि सोअवाइ बहुविदसिज्जाविवेगो २ य ॥ ३०३ ॥

तेमां प्रथम उद्देशामां वसतिना उद्गम दोषा आधा कर्म विगेरे हे, तथा गृहस्थ विगेरेना संसर्गयी अपायो चित्तवेला हे, तथा
वीजा उद्देशामां शौचवादि (गृहस्थो) ना बहु प्रकारना दोषो तथा शय्यानो विवेक (त्याग) बतावे हे. आ अर्थीधिकार हे.—

तहए जयंतल्लणा सज्जायस्सऽणुरोहि जइयन्वं । समविसमाइएसु य समणेणं निज्जरटाए ३ ॥ ३०४ ॥

त्रीजा उद्देशामां जयणा पाळनार उद्गम विगेरे दोषो त्यजनार साधुने जे छलना थाय, ते दूर करावा प्रयत्न करवा, तथा
स्वाध्यायने अनुकूल ए समविषम विगेरे उपाश्रयमां निर्नराना अर्थी साधुए रहेवुं, ए विषय हे, निर्युक्ति अनुगम कळो हवे
सूत्राडुगममां सूत्र कहे हे—

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्जा उवस्सयं एसित्तए अणुपविसित्ता गाभं वा जाव रायहाणिं वा, से जं पुण उवस्सयं जाणि-
ज्जा सअंडं जाव ससंताणयं तहप्पगारे उवस्सए नो टाणं वा सिज्जं वा निसीद्धियं वा वेइज्जा ॥ से भिक्खू वा० से जं
पुण उवस्सयं जाणिज्जा अप्पंडं जाव अप्पसंताणयं तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहिता पमडिज्जा तओ संजयामेव टाणं वा

३ चेज्जा ॥ से नं पुण उवस्सस्यं जाणिज्जा अस्सि पडिआए एगं साहम्मियं समुहिसस पाणाइं ४ समरंभ इस्समुहिसस-
कीयं पामिच्चं अच्चिज्जं अणिसट्टं अभिहंडं आहट्टुं चेएइ, तहणगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा जाव अणासेविए वा नो
ठाणं वा ३ चेइज्जा । एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण उ०
बहवे समणवणीमए पणणिय २ समुहिसस तं चेय भाणियवं ॥ से भिक्खू वा० से जं० बहवे समण० समुहिसस पाणाइं
४ जाव चेएति, तहणगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ३, अह पुणेवं जाणिज्जा
। पुरिसंतरकडे जाव सेविए पडिलेहिता २ तओ संजयामेव चेइज्जा ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण अस्संजए भिक्खुपडि-
याए कडिए वा उक्कंविए वा छने वा लित्ते वा घट्टे वा मट्टे वा सेषयूमिए वा तहणगारे उवस्सए अपुरिसंतर-
कडे जाव अणासेविए नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा चेइज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडे जाव आसेविए
पडिलेहिता २ तओ चेइज्जा ॥ (सू० ६४)

ते भिक्षु उपाश्रयमां रहेवाने जो इच्छतो होय तो गाम विगेरेमां जाय, त्यां जइने सायुने योग्य वसति शोधे, त्यां जो इंडां
विगेरे, जंतु युक्त मकान होय, त्यां वास विगेरे न करवो, ते वतावे छे स्थान ते काउससग शय्या ते संथारो करवो. निपीधिका
ते स्वाध्याय (भणवातुं) आ त्रण न करवां, (अर्थात् जीव जंतुवाळा मकानमां उतरवुं नहि.) पण जेमां जतु न होय त्यां
उतरी ते काउससग विगेरे करवो. हवे उपाश्रय संबंधी उद्गम विगेरे दोषो वतावे छे.

ते भिक्षु एवुं जाणे के कोइ श्रावके आ उपाश्रय करान्यो छे, पण ते एक्क सायु जे जिनेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे अनुष्ठान करे छे,

तेने उद्देशीने जीषोन्नो आरंभ करीने वनावेलो छे, अथवा ते साधुने उद्देशीने वंचातो लीषो छे, अथवा अन्य पासेथी उळीको लीषो छे, अथवा नोकर विगेरे पासेथी वळ—नवरीथी लीषो छे, वधानो सामटो होय, तेमां वधानी रजा लीषा विना लीषो होय अथवा तैयार थयेळुं मकान के तंतु विगेरे बीजी जग्याथी लवेळ होय, आवा स्थानने श्रावक साधुनी पासे आनीने आपे, तो तेवा उपाश्रयमां ज्यां सुधी बीजो पुरुष तेवा मकानने न वापर, त्यां सुधी पोते तेमां काउसग विगेरे के रहेवास न करे, आ एरु साधु आश्रयी कळुं. ते प्रमाणे घणा साधु एक साध्वी के घणी साध्वीने उद्देशीने ते आश्रयी पण समजवुं, वळी न्यारपळी श्रमण वणी-मगआश्रयी सूत्रमां पण पिंडैपणा सूत्र प्रमाणे जाणवुं, एरुले ते सूत्रमां समजवुं के प्रथम पोते न उतरवुं पण साधु सिवाय बीजो कोइ गृहस्थ उतरे, न्यारपळी पोते उतरे तथा साधु जाणे के आ उपाश्रय साधुने माटे गृहस्थे चांसनी कांवी (स्वापटो) विगेरेथी चांथेल छे, दर्भ विगेरेथी छायेळ छे, छाण विगेरेथी लींयो छे, खड्डो विगेरे खडवचडा पदार्थथी घस्यो छे, अने तेने कळि विगेरेना लेपथी कोमळ वनाव्यो छे, तथा जमीन साफ करी संस्कार्यो छे, दुर्गथी दूर करावा धुप विगेरेथी धुपाव्यो छे, आहुं जो साधु माटे करेळुं होय तो ज्यां सुधी कोइ गृहस्थ न वापर, त्यां सुधी ते मकानमां पोते काउसग विगेरे न करे, पण ज्यारे बीजो वापर, तेवुं जाणे न्यार पळी ते मकान पडिलेही प्रमाजीने काउसग विगेरे करे.

से भिक्खू वा० से जं० पुण उवस्सयं जा० अस्संजए भिक्खुपडियाए खुडियाओ दुवारियाओ महलिलयाओ कुज्जा, जहा पिंडेसणाए जाव संथारगं संथारिज्जा वहिया वा निन्नक्खु तहएगारे उवस्सए अपु० नो टाणं ३ अह पुणेवं० पुरिसंतरकडे आसेविए पडिलेहिच्चा २ तओ संजयामेव आव वेहज्जा ॥ से भिक्खू वा० से जं० अस्संजए भिक्खुपडियाए उदग्गाप-

सूत्राणि कंद्राणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुष्पाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरइ
 वहिया वा निणवखू तं अपुं नो ठाणं वा चेइजा, अह पुणं पुसिंतरकडं चेइजा ॥ से भिक्खू वा से जं अस्संजं
 भिं पीढं वा फलं वा निस्सेणिं वा उद्वल्लं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ वहिया वा निणवखू तहपगारे उं अपुं नो
 ठाणं वा चेइजा, अह पुणं पुसिं चेइजा, ॥ (सुं ६५)

ते भिक्षु आवा प्रकारनो उपाश्रय जाणे के ते गृहस्थ साधुने उद्देशीने नानी बारीतुं मोडुं बारणुं कर्हुं छे, तेवा मकानमां ज्यां
 सुधी गृहस्थ विगोरे बीजां पुरुष ते मकान न वापर तयां सुधी साधु तेने न वापरे. आ वंने सूत्रमां पण उत्तर गुणो वर्णव्या छे, ते
 पूर्वे चतावेला दोषधी दुष्ट शय्या होय तो पण बीजा पुरुषे स्वीकार्या पळी कल्पे छे, पण मूल गुणयी दुष्ट होय तो बीजा पुरुषे स्वी-
 कार्या पळी पण कल्पती नथी, मूल गुणना दोषो नीचे मुजव छे, “पट्टी वंसोदो धारणा उचचारि मूलवेलीओ” एटले प्रष्ट वांस
 विगोरेथी साधु विगोरे माटे जे वसति तैयार करावाय, ते मूल गुणयी दुष्ट छे.

पीठनो वांसडो, वे धारण करनारा, तथा चार मूल वेलीओ होय—(साधु माटे वांसडा उभा करीने मकान बनाने ते साधुने
 कल्पे नहि) वळी ते साधु आवो उपाश्रय जाणे के गृहस्थ साधुने उद्देशीने पाणीथी तैयार थयेलां कंद विगोरे बीजा मकानमां (ते
 खाली करावा माटे) लइ जाय छे, अथवा तेनो बहार ढगलो करे छे, तेवा मकानमां ज्यां सुधी बीजां माणस आवीने न रहे त्यां
 सुधी साधु तेमां न उत्तरे, पण बीजाए वापर्या पळी साधु तेमां रहे, तेज प्रमाणे अचि व वस्तु पण घरमांथी बहार काढे तोपण
 पुरुषांतर थया पळी साधुए ते मकान वापरवुं; कारण के तेमां पण फेरफार करतां तस जीवनी वध थवानो संबंन छे. वळी—

से भिक्खु वा० से जं० तंजहा—खंधंसि वा मंचंसि वा भालंसि वा पासो० हम्मि० अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलि-
कवजाथंसि, नन्नत्थ आगाढाणागादेहिं कारणेहिं ठाणं वा नो चेइज्जा ॥ से आहच्च वेइए सिया नो तत्थ सीओदगाविय-
हेण वा २ हत्थाणि वा पायाणि वा अच्छीणि वा दंताणि वा सुहं वा उच्चोलिज्ज वा, पहोइइज्ज वा, नो तत्थ ऊसहं
पकरेज्जा, तंजहा—उच्चारं वा पा० खे० सिं० वंतं वा पित्तं वा पूयं वा सोणियं वा अन्नयरं वा सरीरावयवं वं, केवली
बूया आयाणमेयं, से तत्थ ऊसहं पगरेमाणे पयलिज्ज वा २, से तत्थ पयलमाले वा पवडमाणे वा हत्थं वा जाव सीसं वा
अन्नयरं वा कायंसि इंदियजालं ल्हसिज्ज वा पाणिं ४ अभिहणिज्ज वा जाव ववररोक्खिज्ज वा, अथ भिक्खूणं पुव्वोवइइहा-

४ नं तहप्पगारं उवस्सए अंतलिकवजाए नो ठाणंसि वा ३ चेइज्जा ॥ (सू० ६६)

ते भिक्खु आबो उपाश्रय जाणे, के ते एक थांभाना उपर वनावेळुं मकान छे, अथवा मांचडा उपर छे, अथवा माळा उपर छे,
प्रासाद ते वीजे मजले मकान आपुं छे, (प्रासाद ते साहं पाकुं मकान वांधुं होय ते छे)—हर्म्यतल ते भोंयरवाळुं मकान छे,
आवा मकानमां वने त्यांसुधी साधुए निवास न करवो, पण वीजा मकानना अभावे तेवुं मकान वापरवुं पडे तो शुं करवुं ते कहे छे.
त्यां ठंडा पाणीं विगेरथी हाथ धुवे नहि, तथा त्यां रहीने टट्टी जवा विगेरनी क्रिया न करे, कारण के केवळी प्रभु तेमां कर्म बंध
अने संयमनी विराधना बतावे छे, त्यां त्याग करतो पडी जाय, अने पडतां हाथ पण विगेरे शरीरना अवयवने नुकशान थाय तथा
पोते पडतां वीजा जीवोने पीडे, अथवा जीवथी हणे, आ.प्रमाणे नुकशान जाणोने साधुए कांते तेवा अथरना के भोंयराना स्था-
नमां उतरवुं नहि, (अथवा उतरवुं पडे तो संभाळीने चडवुं—उतरवुं के जग्या वापरवी.) वळी—

से भिक्खु वा० से जं० सइत्थियं सखुइं सपसुभत्तपाणं तहत्थगारे सागारिए उवस्सए नो ठाणं वा ३ चेइज्जा । आया-
णमेयं भिक्खूसस गाहावइकुलेण सद्धिं संवसमाणस्स अलसगे वा विस्सइया वा छुड्डी वा उव्वाहिज्जा अब्बयरे वा से दुक्खे
रोगायंके ससुपत्तिज्जा, अस्संजए कळुणपट्टियाए तं भिक्खूसस गायं तिल्लेण वा यएण वा नवणीएण वा वसाए वा अ-
ब्भंगिज्जा वा मक्खिज्ज वा सिणाणेण वा कक्केण वा लुद्धेण वा वणणेण वा चुणणेण वा पउमेण वा आर्यंसिज्ज वा पयं-
सिज्ज वा उव्वलिज्ज वा उच्चइज्ज वा सीओदगवियट्ठेण वा उरिणोदगवियट्ठेण वा उच्छोलिज्ज वा पक्खालिज्ज वा
सिणाविज्ज वा सिंचिज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्टु अगणिकायं उज्जालिज्ज वा पज्जालिज्ज वा उज्जालिच्चा कायं

आयाविज्जा वा प० अह भिक्खुणं पुव्वोवइट्ठा० जं तहत्थगारे सागारिए उवस्सए नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ॥ (सू० ६७)
ते भिक्षु वली आवो उपाश्रय जाणे के तेमां स्त्रीओ रहेली हे, अथवा ते बालकोवाळुं हे, अथवा ते मकान बिह कुत्तरो बिलाडी
विगेरे क्षुद्र प्राणीथी रोकायेळुं हे, पशुओ रक्ताय हे, तथा भोजन पणी हे, अथवा पशुओने चारो पणी आपवासां आवे हे, आवा
गृहस्थथी आकुल उपाश्रयसां साधुए स्थान विगेरे न करवुं, कारणके तेमां नीचे सुजब दापो हे, तथा आ 'कर्म' बंधननां कारणो
हे. (१) गृहस्थना कुटुंब साथे वसतां त्यां शंका रहित भोजन विगेरेनी क्रिया न थाय, अथवा कोइ पण जातनो व्याधि थाय, ते
वतावे हे, 'अलसग' ते हाथपग विगेरेनो अद्रकाव, अथवा श्वययु ते लक्रमनो रोग थाय, विशूचिका (शूक) छर्दी नो रोग थाय
आवी व्याधिओ साधुने उत्पन्न थाय अथवा तेवा बीजो ताव विगेरे कोइ रोग थाय, अथवा तुर्त प्राण तेनारो शूक विगेरे रोग
थाय, तेवा रोगथी पीडायेला साधुने देखीने कारणथी अथवा भक्तिथी गृहस्थ ते भिक्षुना शरीरने तेल विगेरेथी चोके, अथवा

थोडुं मसळे, पळी सुगंधी द्रव्यथी उवटण करे, कल्क ते कषाय द्रव्यनी कवांथ (नाशक जीलामां शीखाखाह विगेरे पाणीमां उकाळी नाहावामां उपयोग करे छे,) लोथ ते सुगंधी द्रव्य छे, वर्णक ते कपीलो विगेरे छे, जब विगेरेतुं चूर्ण—पदमक जाणीतुं छे, विगेरे द्रव्य वढे थोडुं थोडुं वसे अने चोळीने तेतुं उद्वर्तन करे, पळी टंडा के उंता पाणीथी थोडुं स्नान करावे, अथवा वारं-वार स्नान करावे, अथवा माथा विगेरेमां के नाभिना उपरना अंगमां पाणी सींचे; अथवा लाकडाथी अथवा लाकडां मांहोमांहे घसीने अग्नि वाळे, भडको करे, तेम करीने पळी साधुना शरीरने एकवार तपावे, के वारंवार तपावे, आवा दोषो जाणीने साधुने आ प्रतिज्ञा विगेरे छे. के तेवा गृहस्थना रहेवासवाळा मकानमां काउसग विगेरे न करवुं, (तेम निवास पण न करवा.)

आयाणमेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरी वा अन्नमन्नं अक्कोसंतो वा पचंति वा संभंति वा उद्विंति वा, अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं नियंछिज्जा, एए खलु अन्नमन्नं अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु जाव मा वा उद्विंतु, अह भिक्खूणं पुव्वं जं तहएणारे सां नो टाणं वा ३ चेइज्जा ।। (सू० ६८)

गृहस्थना रहेवासवाळा घरमां उतरतां साधुने कर्मतुं उपादान छे, तेथी त्यां बहु दोषो छे, तेज वतावे छे, के आवा घरमां गृहस्थ मांहोमांहे आक्रोश विगेरे करे, ते कलेश करतां देखीने साधु कदाच उंचुं नीचुं मन करे, (उंचुं मन ते आहुं न करे तो टीक, अने अवच ते भले करे,) तेवीज रीते मांहोमांहे गृहस्थना घरमां घरवाळां परस्पर कलेश उपद्रव विगेरे करे तो पण साधुने असमाधि थाय, माटे त्यां न उतरवुं.

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावई अप्पणो समट्ठाए अगणिकायं उज्जालिज्जा वा

पञ्जालिज्ज वा विज्जविज्ज वा, अह भिक्खु उच्चावयं मणं नियंछिज्जा, एए खल्ल अगणिकायं उ० वा २ मा वा उ० पज्जा लित्तु वा मा वा प०, विज्जवित्तु वा गा वा वि०, अह भिक्खूणं पु० जं तहपणगारे उ० नो टाणं वा ३ वेइज्जा ॥

(सू० ६९)

गृहस्य ज्ञाथे एक मकानमां रहतां गृहस्य निश्चयथी पोताना माटे अत्रिकाय वाळरो, भडको करथे, अथवा बुझावरो, ते समये सायुजा मनमां गया सूत्रमां कहा प्रमाणे उंचा निचा भाव पणट थरो अने व्यर्थ कर्म वंध थरो, माटे तेवा स्थानमां सायुए उतरहुं नहि, आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धि संवत्समाणस्स, इह खल्ल गाहावइस्स कुंडले वा गुणे वा मणी वा मुत्तिए वा हिरण्येसु वा सुवण्णेषु वा कडगाणि वा तुडियाणि वा तिसराणि पालंवाणि वा हारे वा अद्धहारे वा एगावली वा कणगावली वा मुत्तावली वा रायणावली वा तरुणीयं वा कुमारि अलंकिविभूसियं पेहाए, अह भिक्खु उच्चाव० परिसिया वां सा नो वा एरिसिया इय वा णं बूया इय वा णं मणं साइज्जा, अह भिक्खूण पु० ४ जं तहपणगारे उवस्सए नो०

टा० ॥ (सू० ७०)

वकी गृहस्य साथे वसतां नीचला दोषो छे, परमां गृहस्यने माटे वनावेला दागीना कुंडल, सोनानो दोरो, मणी, मोती चांदी सोनानां कडां वाजुबंध त्रणसेर वाळो हार शुभखां हार अर्धहार एकावलि कनकावलि मुक्तावलि रत्नावलि विगेरे जुए, अथवा तेवा दागीना पहेरेली सुंदर कुमारिकाने जुए, तेने देखीने ते सायु उंचा नीचां वचन बोले के आ सारो दागीनो के सुंदर कन्या छे, अथवा आ स्वामीवाळो दागीनो के कन्या छे, तेज प्रमाणे मनमां रागद्वेष करे,

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावइयूयाओ वा गा० सुण्हाओ वा गा० धा०ओ वा गा० दासीओ वा गा० कम्मकरीओ वा तासिं च णं एवं वुत्तपुढवं भवइ-जे इमे भवंतिसमणा भगवंतो जाव उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसिं कण्णइ मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टित्तए, जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टाविज्जा पुत्तं खलु सा लभिज्जा उयस्सिं तेयस्सिं वच्चस्सिं जसस्सिं संपराइयं आलोयणद-रसणिज्जं, एयएणारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तासिं च णं अन्नयरी सट्ठा तं तवस्सिं भिक्खुं मेहुणधम्म पडियारणाए आउट्टाविज्जा, अह भिक्खूणं पु० जं तहएणारे सा० उ० नो टा ३ चेइज्जा एयं खलु तस्स० ॥ (सू० ७१) पढमा सिज्जा सम्मसा २-१-२-१ ॥

वळी गृहस्थ साये वसतां आ दीषो छे, गृहस्थनी स्त्री, दीकरी, दीकरानी बहु, धावमाता, दासी, नोकरडी बोले अथवा तेमना आगळ पूर्वे कोइ बोळ्युं होय, के जे आ जैनता साधु भगवंतो महाव्रत पाळनारा भैशुन (संसार संग) थी विरत थएला छे, तेमने निश्चयथी भैशुन सेवन करहुं कल्पतुं नथी, अने तेथी जे कोइ स्त्री तेमनी साये संबंध करे, अने पुत्र संपादन करे तो ते पुत्र वळवान दीसिमान रूपवान कीर्तिवाळो थाय, आहुं सांभळीने तेओ विचारीने कोइ पुत्र बांळक (बांझणी) स्त्री साधुने कुसंग करवा पार्थना करे, आवा दीषो जाणीने साधुओने तेवा मकानमां उतरवानी मना करेली छे, आज भिक्षुतुं सर्वथा साधुपणुं छे.

बीजो उद्देशो. (प्रकरण)

पहेलो उद्देशा कहीने बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, के गया उद्देशामां गृहस्थना घरमां वास करां यता दीषो बताव्या, अहींया पण तेवां विशेष दीषो बसति संबंधी बतावे छे.

गाढावई नामेमे सुइसमांयारा भवंति, से भिक्खू य अस्सिणाणए मोयसमायारे से तणंधे दुगंधे पडिहूले पडिलोमे यावि भवई, जं पुवं कम्मं तं पच्छा कम्मं जं पच्छा कम्मं, तं पुरे कम्मं, तं भिक्खुपट्टियाए वइमाणा करिज्जा वा नो करिज्जा वा, अह भिक्खूणं पु० जं तहणगारे उ० नो टाणं ॥ (सू० ७२)

केटलाक गृहस्थो शुचि समाचारवाळा भागवत विगेरेना भक्त अथवा योगीओ (वारंवार स्नान करनारा अथवा सुगंधी चंदन अगर केसर कर्पूर विगेरे वस्तुनो लेप करनार शोखीनो) होय छे, अने साधुओ तेवी रीते वारंवार के एकवार खास कारण विना फासु पाणीथी पण ब्रह्मचर्यना भंगना दीषने लीधे स्नान करनारा नथी, तथा कारण प्रसंगे मोया (पेशाव) नो पण उपयोग करनारा छे, (ज्यारे जंगलमां उतर्या होय अथवा उजड जग्यामां उतर्या होय, त्यां ओर्चीतो साप करडे तो तेना शेरथी बचवा रातना वैदनी खटपट न वनी शके, माटे पेशावनो उपयोग पूर्वे थतो, सांपळवा प्रमाणे ओर्चीतो रवीलो के टोकर लागि लोही पुष्कळ नीकळुं होय, तो पेशावनी धारा करवाथी बंध पडे छे, तेवा कोइ पण कारणे बखते कोइ साधुए उपयोग कर्यो होय तो वारंवार स्नान करनारा गृहस्थने दुगंच्छा थाय) माटे भिक्षु तेनी गंधवाळा छे, तथा कोइनो पेशाव गंधातो होय, परसेवो वास मारतो होय,

तो ते गृहस्थने खोटुं लागे, अने गृहस्थने ते गमे नहि. (वंनेना रस्ता उलटा छे.) माटे फावे नहि. (सूत्रपां पडिक्कल पडिलोमा एक अर्थवाळा छतां वने सुंकवानुं कारण फकत अतिशय विरुद्धता वतावी छे.) तथा ते गृहस्थ साधुना कारणेज भोजन तथा जपवानां स्थानमां तेमने स्नान पूर्वे करवुं होय, ते पळीथी करे छे, अने पाळक करवानुं होय ते पहेळुं करे एम आगळ पाळक घरमां कार्य थतां साधुओने अधिकरण दोष थाय छे, अथवा ते गृहस्थोने जपवानो काल थयो होय तो पण साधुने लीथे न खाय, तेथी अंतराय कर्म वंधाय, मननी पीडा विगेरेनो संभव थाय, अथवा ते साधुओ गृहस्थनी शरमथी पूर्वे पडीलेहणा करवानी ते पळी करे, अथवा काळ वीती गया पळी करे, अथवा न पण करे, माटे साधुओनी आ प्रतिज्ञा छे, के तेवा गृहस्थना वापरता घरमां निवास न करवो.

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइहिं सद्धि सं०, इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरुक्खे भोयणजाए उवक्खडिए सिया, अह पच्छा भिक्खुपडियाए असणं वा४ उवक्खडिज्ज वा उवक्खरिज्ज वा, तं च भिक्खू अभिकंखिज्जा भुत्तए वा पायए वा वियट्ठिए वा, अह भि० जं नो तह० ॥ (सू० ७३) आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धि सं० इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरुक्खवाइं दाख्याइं भिन्नपुब्बाइं भवंति, अह पच्छा भिक्खुपडियाए चिरु-वस्खाइं दाख्याइं भिदिज्ज वा किणिज्ज वा पामिच्चेज्ज वा दाख्या वा दाखुरिणासं कट्टु अगणिकायं उ० प०, तस्य भिक्खू अभिकंखिज्जा आयावित्तए वा पयावित्तए वा, अह भिक्खू० जं नो तहपणारे० ॥ (सू० ७४) वळी जो गृहस्थ साथे साधु उतरे ता तेने आवां पण कर्म वंधन छे, के गृहस्थ प्रथम पोताना माटे जुदी जुदी जातनुं रांधे, अने पाळळथी साधु माटे अज्ञान विगेरे चारे प्रकारनो आहार रांधे, अथवा भोजननुं वासण आगळ मूके ते देखीने भिक्षुक तेने

खावा पीवानी इच्छा करे, अथवा त्यां बेसंत्रानी साधु इच्छा करे, नेटला माटे रहेवाना घरमां न उतरवुं (७३)

एज प्रमाणे गृहस्थे पोताना माटे जुदी जुदी जातिनां लाकडां चीरीने सुत्र्यां होय छे, अने पोळ्ळथी साधु माटे जुदां जुदां लाकडां चीरावे, खरीद करे, बद्दलो करे, अथवा ठंडीना दिवस होय तो तापणा माटे अग्निकाय सलगावे, भडनो करे, त्यांघुधी तापवांनी एकवार इच्छा करे, वारंवार तापवानी इच्छा करे, अथवा त्यां जडने बेसे, माटे तेवा स्थानमां कर्मबंधनतुं कारण जाणीने साधुए उतरवुं नहि. (सू-७४) वळी

सेभिवखु वां० उच्चारणासंत्रणेण उच्चाहिजमाणे राओ वा वियाले वा गाहावईकुलसस दुवारवाहं अवंगुणिजा, तेणे य तस्संभिवचारी अणुपविसिंजा, तस्स भिवखुसस नो कणइ एवं बइतए-अयं तेणो पविसइ वा नो वा पविसइ उवलिक्यइ वा नो वा० आत्रयइ वा नो वा० वयइ वा नो वा० तेण इहं अन्निण इहं तस्स इहं अन्नस्य इहं अयं तेणे अयं उवचरण अयं हंता अयं इत्थमकासी तं तवस्सि भिवखुं अतेणं तेणंति संकइ, अह भिवखुणं पु० जाव नो टा० ॥ (सू० ७५)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां साये रहेलो स्थंडील विगोरेना कारणे रात्रे के परोड्डीये उपाश्रयतुं द्वार उघाडे, त्यां छिद्र शोधनारो चोर पेसी जाय, ते देखीने साधुने आहुं बोलवुं न कल्पे, के आ चोर घरमां पेसे छे, तथा चोर पेसतो नथी, ते प्रमाणे छुपी जाय छे के छुपातो नथी, अथवा कुट्टी आवे छे, अथवा नथी आवतो, ते बोल्ले छे, अथवा नथी बोलतो, ते अमुक माणसे चोरुं, अथवा बीजे चोरुं, तेनुं चोरुं, के बीजातुं चोरुं, आ चोर छे अथवा तेने सहायता करवा पाळळ चालंनारो छे, आ शख धारक छे, आ मारनारो घातक छे, एणे आ अहो कर्णुं छे, विगोरे न बोल्लुं कारण के तेगी चोरने पीडा थाय, अथवा ते चोर साधु उपर द्वेष

करीने तेनेज मारको, विभेरे दोषो छे, अने जो साधु तेप्रमाणे चोरी करनारा चोरने न बतावे तो ते घरवाळाने आ साधु नथी पण चोर छे एवी शंका थाय माटे आवा दोषो जाणीने साधुए गृहस्थने रहेवाना घरमां न उतरवुं. फरीथी वसतिना दोषो बतावे छे. से भिक्खू वा से जं० तणपुंजेसु वा पलाळपुंजेसु वा सअंडे जाव ससंताणए तहएणारे उ० नो टाणं वा० ॥ ३ ॥ से भिक्खू वा० से जं० तणपुं पलाळ० अण्ठे जाव चेइजजा ॥ (सू० ७६.)
ते साधु वासनो ढगलो होय, पराळनो पुंज होय, पण न्यां इंडां पढेळां होय, तेवा मकानमां साधु न रहे, पण उपर बतावेला वास के पराळमां इंडां न होय तेवा मकानमां उतरवुं, (अहए शब्दनां अर्थ अभाववाची छे.)

हवे वसतिना परित्यागना उदेशानो अर्थाधिकार कहे छे—

से आगंतरेसु आरापाणारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा अभिक्खण साहीमएहिं उन्नप्रमाणेहिं नो उवइजजा ॥ (सू० ७७.)

लोकोने उतरवानां मुसाफरवानां के बगीचानी अंदरनां घरो के मठो अथवा ज्यां पोताना सरखी समाचारीवाळा साधुओ वारंवार आवीने उतरता होय, तेवा स्थानमां मासकल्प विभेरे न करवो. (के बीजाने उतरतां संकोच न थाय)

हवे कालातिक्रान्त वसतिना दोषो कहे छे—

से आगंतारेसु वा ४ जे भयंतारो उडुबडियं वा वासावासियं वा कणं उवाइणिता तत्थय भुज्जो संवसंति, अयमाउसो!

कालाइकंतकिरियावि भवति १ ॥ (सू० ७८.)

जे साधु भगवंतो ते सुसफरखाना विगेरेमां शीतोष्ण स्तुमां मासकल्प करीने पाछा चोमासुं ते मकानमां करीने फरीथी कारण विना रहे, तो (गुरु विषयने कहे छे) हे आधुष्मन् ! काल अतिक्रम दोष संभव छे, तेज प्रमाणे स्त्री विगेरेनो प्रतिबंध अथवा स्नेहथी उद्दाम विगेरे दोषोनो संभव थाय छे, माटे तेंबुं स्थान साधुने न कल्पे. हवे उपस्थानं दोषने बनावे छे—

सें आगंतारेस्तु वा ४ जे भयंतारी उडु० वासा० कर्षं उवाङ्गाविचा तं दुगुणा दु (ति) गुणेण वा अपरिहरित्ता तत्थेव

शुर्जो० अयमाउसो ! उवट्टणकि० २ ॥ (सू० ७९)

जे साधुओ सुसाफरखाना विगेरेमां शीयाळा उनाळामां मासकल्प करीने अथवा चोमासुं करीने अथवा बीजे एक मास रहीं बमणो जणगणो कल्पवट्टे न छोडीने अर्थात् वे जण मास सुधी ते मकानमां न वसवुं तेवो कल्प उलंघीने पाछा त्यांज वसे छे, माटे आनो उपाश्रय उपस्थान क्रिया दोषथी दुष्ट थाय छे, माटे तेजाउपाश्रयमां साधुने उत्तरवुं कल्पवुं नथी.

हवे अभिक्रान्तं वसति बलाववा कहे छे—

इह खलु पार्श्वेण वा ४ संतेगइया सट्टा भवंति, तंजहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा, तेसिं च णं आयारगोयरे नो सुनिसेते भवइ, तं सहहमाणेहिं पत्तियमाणेहिं रोयमाणेहिं बहवे समण माहण अतिहिकिचणवणीमए समुहिस्स तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं वेइयाइं भवंति, तंजहा—आएसणाणि वा आयतणाणि वा देवकुलाणि वा सहाओ वा पवाणि वा पणि-यगिहाणि वा पणियसालाओ वा जाणनिहाणि वा जाणसालाओ वा सुहाकम्मंताणि वा दम्भकम्मंताणि वा वट्टकंवा० वक्कयकं० इंजालकरमं० कट्टकं० सुसाणक० सुणानारगिरिकंदरसंतिसेलोवट्टाणकम्मंताणि वा भवणनिहाणि वा,

जे भयंतारी तहपगाराहं आपसगाणि वा जाव गिहाणि वा तेहि उत्रयमाणेहि उत्रयंति अग्रमाउसो ! अभिकंतकिरिया यावि भवइ ३ ॥ (सू० ८०)

(अहीं प्रज्ञापक विगोरेनी अपेक्षाए) पूर्व विगोरे दिशामां श्रावको अथवा प्रकृतिमद्रक अन्य गृहस्थो नोकरडी सुधी होय, तेओने साधुनो "आवो उपाश्रय कल्पे" एवी स्वयर न होय पण उपाश्रय आपवाथी स्वर्ग विगोरेनुं फळ प्राप्त थाय, तेवुं कयांयथी जाणीने श्रद्धा करीने हृदयमां ते ऋचवाथी घणा साधु विगोरेने उद्देशीने त्यां आराम विगोरेमां यानशाला विगोरे पोताना माटे करतां साधु विगोरेने जग्या आपवा माटे ते मकानो मोटां करान्यां होय, ते मकानोनां नाम कहे छे, आदेशन (लुत्तारनी शाला) आयतन (देवकुळनी जोडे वनावेल ओरडाओ) देवकुळ (देवळ) सभा (चारवेदने भगवानी पाठशाला) परव पुण्य (हुकानो) पुण्यशाला (बंधशाला) यान ग्रह (रथ विगोरे राखवानुं स्थान) यानशाला (रथ विगोरे वनाववानुं स्थान) सुधाकर्म ते (ज्यां खडीनुं परिकर्म थाय) आ प्रमाणे दर्भ वर्ध वलकन अंगार काष्ठ कर्म विगोरे छे, पटले जेमां यास चापडां झाडनी छाल के कोयला के लाकडांना कामनुं कारखानुं होय, मसाण होय, शून्य घर होय, शांतिकर्ननुं घर होय, पर्वत उतरनुं घर होय, सुधारेली पहाडनी गुफा होय, शैल उपस्थान (पाषाणनो मंडप) होय, आवां घरो चरक ब्राह्मणो विगोरेथी पूर्व वपरायां होय, पळी खाली पडेलां होय, तो पळवाडे साधु तेमां उतरे, तो तेमां अल्प दोष (निर्दोष) होय, छे, आहुं गुरु शिष्यने कहे छे, (अर्थात् तेवा मकानमां उतराय छे.)

इह खलु पार्श्वे वा जाव रोयमाणेहि वदने समणमाहणअतिहिकिवणवणिमए समुहिसस तस्य तस्य अगारिहि अगाराहं

चेइयाइं भवंति, तं०—आएसणाणि वा जाव भवणनिहाणि वा, जे भयंताणो तहए० आएसणाणि जाव निहाणि वा तेहिं अणोच्यमाणेहिं उचयंति अयमाउसो ! अणभिकंतकरिया यावि भवइ ॥ (सू० ८१) विशेष उपरना सूत्र प्रमाणे पूर्व विगोरे दिशामां गृहस्थथी ते कर्म करी सुधीनां माणसोए साधुने मकान उतरवा आपवानुं विगोरे न पुण्य फळ जाणीने श्रमण ब्राह्मण अतिथि विगोरेने आश्रयी आदेशन घर विगोरे वनाव्यां होय, तेमां पूर्व श्रमण ब्राह्मणो विगोरे न उतरया होय, तेमां साधु उतररे, तो ते दोषवाकी जग्या छे, माटे ते उतरवा योग्य नथी.

इवे न उतरवा योग्य वसति कहे छे—

इह खलु पार्हणं वा ४ जाव कम्मकरीओ वा, तेसिं च णं षवं वुत्तपुवंवं भवइ—जे इमे भवंति समणा भगवंतो जाव उतरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एणसिं भयंतारणंकएइ आहाकस्मिए उवस्सए वत्थए, से जाणिमाणि अन्हं अप्पणो सहट्टाए चेइयाइं भवंति, तं०—आएसणाणि वा जावनिहाणि वा, सव्वाणि ताणि समणाणं नित्तिरामो, अविद्याइं वयं पच्छा अप्पणो सयट्टाए चेइस्सामो, तं०—आएसणाणि वा जाव०, एयप्पणारं निणयोसं सुच्चा तिसम्म जे भयंतारो तहए० आएसणाणि वा जाव निहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं वट्ठंति, अयमाउसो ! वज्जिकरियावि भवति ५ ॥ (सू० ८२)

आ पूर्व विगोरे दिशामां गृहस्थ अथवा नोकरडी होय, अने तेओने पूर्व एवुं कहेवापां आवुं होय, के आ साधु भगवंतो पोते ब्रह्मचर्य पाळनार छे, तेओने साधु माटे वनावेळं मकान उतरवाने क्लपतुं नथी, एटला माटे आपणे आपणा माटे वनावेळं घर छे,

ते रहेवा आपी दृश्य, अने आपणे माटे नहुं वनावी लइशुं, आवी रीते गृहस्थे वनावेलुं मकान सूत्र ८० मां बतावेल विगतवाळुं होय, ते सुंदर के मध्यम होय, तो पण साधुओंने रहेवा आपे, तो ते वैज्य क्रियावाळुं (त्याज्य मकान) होवाथी तेमां उतरवुं नहि.

हवे महावज्या नामथी वसतिवुं वर्णन करे छे.

इह खलु पार्श्विणं वा ४ संतेगइआ सट्टा भवंति, तेसिं च षं आयारगोयरे जाव तं रोयमाणेहिं वहवे समणमाहण जाव वणीमगे पगणिय २ समुहिसस तस्य २ अगारीहिं अगारइं चेइयाइं भवंति, तं०—आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा, जे भयंतारी तहप्यगाराइं आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं०, अयमाउसो ! महावज्जकिरियावि भवइ ६ ॥ (सू० ८३)

आ वयुं सुगम छे, के श्रावके श्रमणमाहण वणीमग माटे मकान बंधावयुं होय, तेमां जो साधुओ स्थान करे, तो महावज्य नामनी वसति थाय छे, माटे आ विशुद्ध कोटी अकल्प्य छे, तेमां उतरवुं नहि, ६ ॥

हवे सावध अभिधान (नामनी) वसति कहे छे.

इह खलु पार्श्विणं वा ४ संतेगइया जाव तं सदहमाणेहिं तं पत्तियमाणेहिं तं रोयमाणेहिं वहवे समणमाहणअतिहिकिबणवणीमगे पगणिय २ समुहिसस तस्य २ अगाराइं चेइयाइं भवंति तं—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा जे भयंतारी तहप्यगाराणि आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं, अयमाउसो ! सावज्जकिरियायावि भवइ ७ ॥ (सू० ८४)

आ प्राये सुगम छे, फकत विशेष आ छे के, पांच प्रकारना निर्ग्रथो जाक्य तापस गैरीक अने आजीविकएवा अमणो माटे कल्पीने बनाबेल वसति होय, तो ते सावद्य अभिधान वसति थाय, छे, आ अकल्पनीय छे, पण विशुद्ध कोटी छे, आपां स्थान करनां सावद्य क्रिया थाय छे.

हवे महासावद्य वसतिनुं वर्णन करे छे.

इह खलु पाइणं वा ४ जाव तं रोयमाणेहि एगं समणजायं समुद्दिस्स तत्थ २ अगांरीहि अगाराइं चेइयाइं भवन्ति, तं आएसणाणि जाव गिहाणि वा महया पुढविकायसमारंभेणं जाव महया तसकायसमारंभेणं महया विरुवरुवेहि पावकम्म-किच्चेहि, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथारहुवारपिहणओ सीसोदए वा परद्विवियुव्वे भवइ अगणिकाये वा उज्जालि-ययुव्वे भवइ, जे भयंतारो तहं आएसणाणि वां उवागच्छंति इयराइयरेहि पाहुवेहि दुपक्खं ते कम्मं सेवति, अयमा-

उसो ! महासावज्जकरिया यावि भवइ ८ ॥ (सू० ८५)

अहीं एक साधर्मिक (साधु) ने उद्देशीने कोइ गृहपति विगेरेए पृथ्वीकाय विगेरेनो संरंभ सम्पारंभ आरंभ विगेरे कंइ पण महान आरंभ करीने जुदा जुदा पाप कृत्योवढे एटले छापहं टांकवुं, लींपावबु, संथारा माटे बारणुं टांकवां माटे, विगेरे प्रयोजनने उद्देशीने प्रथम काचुं पाणी नांखे, अथवा अग्नि प्रथम बाले, विगेरेथी आरंभ करेला मकानमां स्थान विगेरे करतां वे पक्षनुं कर्म सेवन करे छे. ते आ प्रमाणे-आधाकर्मि वसतिना सेवनथी गृहस्थपणुं अने तेमां ममत्त्वना कारणे राग द्वेषणुं छे, तेथी तथा इर्या-पथ अने सांपरायिक इत्यादि दोषो छे. तेथी ते महासावद्य क्रिया अभिधान वसति छे.

हवे अल्प क्रियावाली वसति के।

इह खलु पार्श्वं वा० रोयमाणेहिं अप्पणो सयद्दाए तत्थ २ अंगारीहिं जाव उज्जालियणुव्वे भवइ, जे भयंतारो तहएप०
आएसणाणि वा० उवागळंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं एणपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! अप्पसावज्जकिरिया यावि
भवइ ९ ॥ एवं खलु तस्स० (सू० ८६) ॥ २-१-१-२-२ ॥ चत्थैपणायां द्वितीयोद्देशकः ॥

प्रथम वताव्या प्रमाणे ते घरमां गृहस्थेए पोताना मादे ते घरमां कंइ पण सावद्य क्रिया करी होय, तेवा मकानमां पाळळ्थी
साधुओ आवी उतरे तो ते एक पक्षतुं कर्म सेवन करे छे, आवा मकानमां उतरतां साधुओने अल्प (दोष विनानी) क्रिया छे,
अर्थात् ते मकानमां उतरतां दोष नथी. आज साधुतुं सर्वस्व छे.

“ कालइकंतु १ वटाण २ अभिकंता ३ वेव अणभिकंता ४ य १ वज्जा ५ महावज्जा ६ सावज्ज ७ महं ८ उप-
किरिआ .९ य ॥ १ ॥ ”

१ काल अतिक्रांत २ उपास्थान ३ अभिक्रांत ४ अनभिक्रांत ५ वर्ज्य ६ महावर्ज्य सावद्य ८ महासावद्य ९ अल्पक्रिया. एम
नव प्रकारे नव सूत्रोमां वसति वतावी. तेमां अभिक्रांत अने अल्पक्रिया ए वे वसति योग्य छे, वाक्कीनी अयोग्य छे.

आ प्रमाणे बीजा अध्यननो बीजो उद्देशो पूरो थयी.

श्रीजो उद्देशो,

बीजो कथा पछी बीजो उद्देशो करे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां अल्पक्रियावाळी शुद्ध वसति बतावी. अही पण मथम सूत्रथी तेथी विपरीत शय्या बतावे छे.—

से य नो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे नो य खलु सुद्धे इमेहिं पाहुडेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथारदुवारपिहणओ पिंडवाएसणाओ, से य भिक्खू चरियारए टाणसहे निसीहियारए सिज्जासंथारपिंडवाएसणारए, संति भिक्खूणो एवमक्खवा-इणो उज्जुया नियागपट्टिवन्ना अमायं कुवमाणो वियाहिया, संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं निक्खित्त-पुव्वा भवइ, परिभाइयपुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ परिट्टिवियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे सपियाए वियागरेइ ? , हंता भवइ ॥ (सू० ८७)

अहिं कोइ वखत कोइ साधु वसति शोधवा माटे अथवा भिक्षा लेवा माटे गृहस्थने घरे जतां कोइ श्रद्धालु श्रावक आ प्रमाणे करे, के आ गाममां घणुं अन्न पाणी मळे छे, माटे अहियां आपे वसति याचीने रहेवुं योग्य छे,—

आ प्रमाणे करेवाथी साधु करे, के हे श्रावक ! पिंड (अन्न पाणी) पासुक (निर्दोष) दुर्लभ नथी पण ते मळवा उतां ज्यां बेसीने गोचरी करीए ते आधाकर्मादि दोष रहित उपाश्रय मळवो दुर्लभ छे, तेम ' उं छ' एटले छादना चिनोरे उत्तर गुणना दोषथी पण रहित होय (ते मळवो दुर्लभ छे) तेज बतावे छे—

‘अहिसण्डिज्ज’ एटले मूळ उत्तर गुणोमां दोष न लग्गडे ते एण्णिय उपाश्रय होय छे, तेवो मळवो दुर्लभ छे. ते मूळ उत्तर गुणो आ प्रमाणे छे.

पट्टी वंसो दो धारणाओ चत्तारि मूळवेलीओ । मूळगुणेणं विमुद्धा एसा आहागडा वसही ॥ १ ॥

पीठतो वांस वे धारण चार मूळवेलीओ आहुं कांइ ण स्थान गृहस्ये पोताना माटे वनावेळुं होय, तो मूळ गुण विशुद्ध वसति जाणवी.

वंसगकडणोकंपण छायण लेवण दुवारभूमीओ परिक्रमविषमुक्का एसा मूळतरगुणेसु ॥ २ ॥

वांसने कपाववा, टोकठाक करवी, धारणांनी भूमिने आच्छादन करवुं, लेपन करवुं, आ परिकर्मथी विप्रमुक्तमूळ उत्तर गुणो वढे विशुद्ध छे.

दुमिअधूमिअवासिअउज्जोवियवलिकडा अ वत्ता य । सिवा सम्पट्टावि अ विसोहिकोहीगया वसही ॥ ३ ॥

थोळेती, धुप करेली, सुगंधीवाळी वनावेली, उद्योत करेली, वलिपूजन करेली खुल्ली मुकेली, पाणीथी सिंचेली, संस्पृष्ट करेली, आ विद्योधी कोटीयां गयेली वसति छे.

आ जग्याए प्राये उत्तर गुणोनी संभव होवाथी तेनेज वतावे छे, अने आ वसति आ कर्मना उपादान कर्त्तोवढे शुद्ध थती नथी ते वतावे छे.—

दर्भ विगेरथी छायेल होय, छाण विगेरथी लीपेल होय, अपवर्त्तक ने आश्रयी संस्कारक कर्त्तो होय, तथा चारणुं नाहुं मोडुं

कर्युं होय, तथा कपाटने आश्रयी टांकवुं, उपादवुं विगेरे छे. बकी— पिंडपाल पृषणाने आश्रयी दीपो कहि छे.

कोइ स्थानमां साधु रहेला होय तो तेमने ते घरनो मालिक शय्यातर पीताना घरमां आहार लेवा प्रार्थना करे, तेना घरमां आहार लेबो न कल्पे. तेथी ना पाइवाथी तेने द्वेष याय, विगेरे कारणे उत्तर गुणो युक्त उपाश्रय मळबो दुर्लभ छे, माटे बने त्यां सुधी साधुए शुद्ध उपाश्रय जोइने उत्तरवुं तेथी कहुं छे के,—

मूलुत्तरगुणसुद्धं शीपसुपंडगविविज्जियं वसहि । सेवेज्ज सव्वकालं विवज्जए हुंति दोसा उ ॥ १ ॥

मूळ उत्तर गुणथी शुद्ध तथा स्त्री पशु नपुंसकथी वर्जित मकान सर्व काल सेवे, अने दीपोने दूर करे.

मूळ उत्तर गुण शुद्ध मळवा छंतां भणवा विगेरेनी सगवडता युक्त तथा खाली मळबो मुद्दकेल छे, ते कहि छे—तेमां भिक्षुवच-
चर्मां रत्त, निरोधना असाहिणुंक्काथी संकभणना स्वभाववाळा (योग्य विहार करनेसरा) तथा स्थानरत ते कारणेत्सर्ग करनेसरा,
निधीधिकारत ते स्वाध्याय करनासरा, शय्याने सर्वांग बडे सुखथी सुवाय, ते संस्तरक २॥ हाथ प्रमाणवाळो, अथवा शयन ते शय्या
छे, तेने माटे संस्थारक (संथारो) ते शय्या संस्तरक रत ते मंदवाड विगेरेना कारणे सूता होय, तथा गोचरी मळेथी शास पृष-
णारत छे, आ प्रमाणे केटलाक साधुओ यथास्थित वसतिना गुण दीपो वतावनारा थाय छे, तेओ ऋजु छे, तथा निपागत संयम
के मोक्ष छे, तेने पामेला छे, तथा तेओ माया (कपट) रहित दोषाथी उत्तम गुणवाळा साधुओ छे. आ प्रमाणे गृहस्थोने वसतिना
गुण तथा दीपो वतावीने साधुओ जाय, त्यारपछी निर्दोष वसति साधुओने आपवा योग्य न होय, तो श्रावको साधु माटे वसति
बनावे, अथवा पूर्वे करेली अपूर्ण होय तो छादन विगेरेथी रहेवा योग्य बनावे, पछी उपदेश आपनारा अथवा बीजा साधुओ

आवधी केटलाक श्रावको छळ करे छे, अने कहे के (प्राथुतिकामी पेठे प्राथुतिक वसति होय तेनी अर्थ आ छे के, दानने माटे कल्पेली राखेल छे.) वसति तेवी वसति पूर्वे साधुओने बतावेली होय, के तमे डंगारे आओ त्त्यारे अहि उतरजो, ते उखिसत पूर्वा वसति छे, तथा एम कहे के अमे पूर्वे आ मारे रहेवा माटे वनावी छे, ते निखिसत प्रपूर्वा छे, तथा 'परिभाइ यणुन्व' ते अमे आ वसति पहेलांथा अमारा भजिजा विगेरे माटे कल्पेली छे, तथा बीजा गृहस्थोए पण आ रहेवातुं मकान वापरुं छे, तथा ते गृहस्थ कहे छे के अमे एने प्रथमथी पाडी नांखवा राखेल छे, जो तमारे आ उपयोगमां न आवे तो अमे एने पाडी नाखीशुं, आ प्रमाणे भक्तिथी कोइ गृहस्थ छलना करे तो साधुए टगवातुं नहि; पण दोषोने दूर करवा प्रयत्न करवो.

प०—आ प्रमाणे छलनाना संभवमां पण यथावस्थित वसतिना गुण दोषो गृहस्थे पूछतां साधु कहे तो शुं सम्यकज पकट करसो? अथवा एतुं पकट करतो साधु शुं सम्यक् पकट कहेनारो थको? आचार्य कहे हा! (हंत! अव्यय श्रियता आमंत्रणमां छे) ते सम्यकज कहेनारो थाय छे. हवे तेवा कार्यना वशथी चरक कार्पटिक विगेरे साथे उतरवुं पहे तो तेनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा खुड्डियाथा खुड्डुवारियाओ निययाओ संनिरुद्धाओ भवन्ति, तहत्थणा० उवस्सए राओ वा वियाले वा निक्खममाणे वा प० पुरा हत्थेण वा पच्छा पाएण वा तओ संजयामेव निक्खमिज्ज वा २, केवली बूया आयाणमेयं, जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा मत्तए दंडए वा लड्डिया वा भिसिया वा नालिया वा चेलं वा चिलिमिली वा चम्मए वा चम्मकोसए वा चम्मभेयणए वा दुब्बद्धे दुचिक्खित्ते अपिकंपे चलाचले भिक्खू य राओ वा वियाले वा निक्खममाणे वा २ पयलिज्ज वा २; से तत्थ पयलमाणे वा० हत्थं वा० लसिज्ज वा ४ जाव

ववरोविज्ज वा, अह भिक्खुणं पुत्रोवइदं जं तह० उवस्सए पुरा इत्थेण निक्ख० वा पच्छा पाएणं तओ संजयामेव नि० पत्तिस्सिज्ज वा ते भिष्णु आवो उपाश्रय जाणे, के नानी वसति छे, अथवा दरवाजा नाना छे, अथवा ते नीची छे, अथवा गृहस्थथी भराइ गइ छे, अने ते वसतिपां—साधुने उत्तरवानी जग्यामां शय्यातरे बीजा केटलाक दिवस रहेनार चरक विगेरेना साधुने उत्तरवा आपेल छे, अथवा साधुना आव्या पहेलां ते जग्यामां चरक विगेरे उत्तरेला छे, अने पाळळथी साधुने तेमां जग्या आपेल छे, तो राजे के परोडीए कारण वयो बहार जतां आवतां जेम चरक विगेरेनां साधुना उपकरणने उपघात न थाय, अथवा तेना शरीरना अवयवतो उपघात न थाय, तेम प्रथम हाथ फेरवताजवुं अने यतनाथी जवा आववानी क्रिया करवी, जो तेम न करतां अयतनाथी चाले तो केवली तेमां कर्म आदन बतावे छे. एटले त्यां श्रमण ब्राह्मणोना छत्रने मात्राने दंडने लाकडीने भिसिकां नालिका वत्तने चिलिपिली (यमनिका—पडदो) ने चापडाने चर्मकोश पगमां तलीये पहेरवानी चापडानी खलुक विगेरे चर्मछेदनक दुर्बल दुर्निश्चित वस्तु पडी होय, त्यां अनिर्क्य होय ते चलाचल थतां दोष लग्गे तेथी पोते न अथहाय तेम साधुए चालवुं, नहि तो तेना उपकरणने नुकसान थाय अथवा तेना हाथ पगने नुकसान थाय, माटे संभाकीने जवुं आववुं, से आगंतारेसु वा अणुवीय उवस्सयं जाइजा, जे तस्य ईसरे जे तस्य समहिटाए ते उवस्सयं अणुकाविज्जा—कानं खलु आउसो! अटालंदं अहापरिआयं वसिस्सामो जाव आउसंतो! जाव आउसंतस्स उवस्सए जाव साहम्मियाइं ततो उवस्सयं गिण्हिस्सामो तेण परं विहरिस्सामो ॥ (सू० ८९) हवे वसतिनी याचनानी विधि कहे छे. ते भिष्णु पूर्व बतावेला आगंतार विगेरे स्वरूपवाला रहेवा योग्य प्रकारमां प्रवेश करीने अने विचार करीने आ उपाश्रय

केवो छे? एनो मालिक कोण छे? विगोरे पूछीने उपाश्रयने याचे.

हवे जे घरनो स्वामी छे, अथवा घरना मालिके तेनी रक्षा माटे जेने सोंप्युं होय, तेनी पासे उपाश्रयनी याचना करे, ते आ प्रमाणे हे आशुष्मन्! तारी इच्छाथी तुं आज्ञा आपे तो अमुक दिवस आटला भागमां असे रहीशुं. त्यारे ते वखते गृहस्थ कहे, के तमने केटला दिवस जर पढरो? त्यारे साधुए कहेवुं, के शीयाळे, उनाले खास कारण विना एक मास अने चोपासुं होय तो चार मासनी जरर छे, एम याचना करवी, त्यारे कदाच गृहस्थ कहे, के मारे तेदलो काल अहीं रहेवुं नथी, अथवा तेदलो काल वसति अपाय तेम नथी, त्यारे साधुए ते मकान लेवानुं कांइ खास कारण होय तो कहेवुं के ज्यां सुधी आप रहो त्यां सुधी अथवा आपना कवजासां होय त्यां सुधी असे एसां रहीशुं, त्यार पळी असे विहार करी जरशुं, पण गृहस्थ सूछे, के साधुनी संख्या केटली छे? तो कहेवुं, के अमारा आचार्य समुद्र जेवा छे, तेंथी परिमाण नक्की नथी, कारण के कार्याना अर्थीओ केटलाक आवे, अने भणवा विगोरेसुं कुल्य थइ रहेतां केटलाक जाय छे, तेंथी जेटला हाजर हरो, तेदला माटे याचना छे, अर्थात् साधुए घरधणी साथे साधुतुं परिमाण नक्की न करवुं, वकी—

से भिक्वव् वा० जस्सुवस्सए सवसिज्जा तस्स पुव्वामेव नामयुतं जाणिज्जा, तओ पच्छा तस्स गिहे निमंतेमाणस्स वा

अनिमंतेमाणस्स वा असणं वा ४ अफासुयं जाव नो पटिगाहेज्जा ॥ (मू० १०)

ते साधु जेना घरमां निवास करे तेतुं प्रथम नाम गोत्र जाणी ले, त्यार पळी तेना घरमां निमंत्रणा करे, अथवा न करे तो पण चारे प्रकारनो अपासुक आहार ग्रहण न करे (नाम-गोत्र पूजवानुं कारण ए छे के आवेला साधु परोणाओ सुखेथी घर पूजता आवी शके.)

से भिक्खू वा० से जं० ससागारियं सागजियं सउदयं नो पन्नस्स निकवमणपवेसाए जावऽणुचित्ताए तहपणारे उवस्सए नो टा० ते भिक्षु एवुं जाणे के आ उपाश्रयमां गृहस्थ रहे छे, अथवा अपि बळे छे, अथवा पाणी (सचित) रहे छे, त्यां आणक (त्यां निवास न करवो)

पद्मसाधुए काउसगा करावा के ध्यान करावा के भणवा रहेवुं नहि. (त्यां निवास न करवो)

से भिक्खू वा० से जं० गाहावद्दकलस्स मज्झमज्झेणं गंतुं पंथए पडिबद्धं वा नो पन्नस्स जाव चिंत्ताए तह उ० नो टा० ॥ (सू० ९२

जे उपाश्रयमां उतर्यां होय त्यां गृहस्थना घर मध्येनो मुख्य रस्तो होय त्यां बहु अपायनो संभव दोवाथी तेवी जयाए न रहेवुं

से भिक्खू वा० से जं०, इह खलु गाहावद्दं वा० कम्मकरीओ वा अन्नमन्नं अक्रोसंति वा जाव उद्वंति वा नो पन्नस्स०,

सेवं नच्चा तहपणारे उ० नो टा० ॥ (सू० ९३)

ते बुद्धिमःन साधु एम जाणे, के आ जयामां गृहस्थ अथव नेना घरमां काइपण नोकर विगेरे परस्पर कडे छे. एक बीजाने

उपद्रव करे छे, तेवुं जाणीने ते घरमां साधुए निवास न करवो, कारण के त्यां रहेतां गणवामां के समाधिमां विद्र भय छे.

से भिक्खू वा० से जं० पुण० इह खलु गाहावद्दं वा कम्मकरीओ वां अन्नमन्नस्स गायं तिल्लेण वा नव० य०

वसाए वा अंभंगेति वा मक्खंति वा नो पणस्स जाव तहपण० उव० नो टा० (सू० ९४)

ते साधु एम जाणे के आ घरमां गृहस्थ अथवा नोकरडी विगेरे कोइपण परस्पर एक बीजाना शरीरने तेस, माखण, घी

के चरवीथी चोळे छे, अथवा कल्क विगेरेथी उद्वर्त्तन करे छे, त्यां पद्मसाधुने निवास करवो न कल्पे.

से भिक्खू वा० से जं पुण०—इह खलु गाहावद्दं वा नाव कम्मकरीओ अन्नमन्नस्स गायं सिणारणेण वा क० छु० चु०

प० आधंसति वा पधंसति वा उब्बलंति वा उब्बद्धिंति वा नो पन्नस्स० ॥ (सू० ९५)
 ते भिक्षु एम जाणे के आ घरमां गृहस्थो के घरनां माणसो परस्पर स्नान करे हे, अथवा घरीरे सुगंधी पदार्थो तेल चूर्ण
 विगरे एकवार घसे हे, अथवा चारंवार घसे हे, तेवा मकानमां बुद्धिमान् साधुए न उतरहुं.

से भिक्षू० से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, इह खलु गाहावती वा जाव कम्मकरी वा अणमणस्स गायं सिओदग०
 उसिणो० उब्बो० पदोयंति सिंचंति सिणावंति वा नो पन्नस्स जाव नो ठाणं० ॥ (सू० ९६)

तं भिक्षुने एम माल्लप पढे के आ उपाश्रयमां गृहस्थना घरनां माणसो दंडा पाणीथी के उना पाणीथी परस्पर छंदि हे,
 धुए हे, सिंचे हे, स्नान करावे हे, तेवा स्थानमां बुद्धिमान् साधुने उतरहुं न कल्पे.

से भिक्षू वा० से जं० इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा निणिणां टिया निणिणा उद्धीणा मेहुणधम्मं विजविति
 रहस्सियं वा मंतं मंतंति नो पन्नस्स जाव नो ठाणं वा ३ वेइज्जा ॥ (सू० ९७)

जे घरमां स्त्रीओ कपडां काढीने वेपर्यादि पणे बेसे, अथवा संसारसंग संबंधी कंड पण छानी चात एक बीजाने रात्रि संबंधी
 कहे अथवा कांडपण खानगी चात अकार्य संबंधी चिंतवे, तेवा स्थानमां साधुए निवास न करवो, कारण के त्यां रहेवाथी स्वाध्या-
 यमां विद्व भाय, अने चित्तमां कुवासना विगरेना दोषो भाय हे. बळी—

से भिक्षू वा शे जं पुण उ० आइन्नसंखित्वं नो पन्नस्स० ॥ (सू० ९८)

ते भिक्षु एम जाणे के आ घरमां उत्तम गंगाररसनां चित्रो हे, त्यां पद्मसाधुए न उतरहुं, कारण के त्यां उतरवाथी भीतानां

विनातुं पाटीयुं मळे तो साधुए लेहुं. हवे संथाराने उद्देशीने अभिग्रहोतुं विशेष कहे छे

इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम—अह भिक्खू जाणिज्जा इमाइं चउहिं पडिमाहिं. संथारगं एसित्तए, तत्थ खल्ल इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा २ उदिसिय २ संथारगं जाइज्जा, तंजहा—इक्कडं वा कटिणं वा जंतुयं वा परगं वा मोरगं वा तणगं वा सोरगं वा कुसं वा कुच्चगं वा पिप्पलमं वा पळालंमं वा, से पुव्वामेव आलीइज्जा—आउसोति वा भ० दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं संथारगं? तह० संथारगं सयं वा वाणं जाइज्जा परो वा देज्जा फासुयं एसणिज्जं जाव पडि० पढमा पडिमा सू० १०० पूर्वे वतावेला घराना दोषो तथा संथाराना दोषो दूर करीने तथा हवे पळीना पण संथाराना दोषो टाकीने संथारो लेवो. ते कहे छे ते भिक्षु एम जाणे, के आचार अभिग्रहनी प्रतिमाओ वडे संथारो शोधवानो छे, वतावे.

(१) उद्विष्ट २ प्रेक्ष्य ३ तेना घरानोज ४ यथासंस्तुत छे. तेमां उद्विष्टमां फलहक विगरेमांथी कोइ पण एक लइश, पण बीजो नहि. आ प्रथम प्रतिमा छे,

(२) जेवी मनमां पूर्वे धारी छे, तेवी आंखे देखीश तोज लइश पण बीजी नहि.

(३) ते पण ते शय्यातरना घरमां तैयार हशे तोज लइश; पण बीजेथी लावीने सुइश नहि,

(४) ते पण संस्कारक फलहक विगरे जेवो हशे तेवोज वापरीश. आ चार प्रतिमाओमां गच्छमांथी निकळेला जिन कल्पी विगरेने प्रथमनी वे कल्पती नथी, पाछली वेमांथी कोइपण कल्पे छे, पण स्थविर कल्पीने चारे कल्पे छे, ते सूत्र वडे वतावे छे, तेमांनी पहलीने उद्देशी उद्देशीने इक्कड विगरे कोइपण लइश, तेने ते मल्या पळीथी बीजुं मळहुं होय तो प्रण छे नहि, इक्कड तथा

नीचलां पाथरणां घणी शरदी (भीनाश) वाळां देशर्षां साधु साध्वीर्षोने पाथरचानी आशा छे, ते इक्कड, कटिण (सादडी) जंतुक ने एक जातनां घासतुं पाथरणुं छे, परक जेनावडे फुलो गुंथाप तेनुं बनावेळुं अथवा मोरनां पीळां गुंथीने बनावेल, तथा घासतुं, तथा शरना सांठानुं, दर्भना घासतुं, कूचडाना रेसातुं, पीपळाना पानतुं, तथा पराकना घासतुं होय, तेवुं कोइ पण पाथरणुं याचे, तेर्षांतुं कोइ पण पाथरणुं आपे, तो ते लेइने वापरे.

अहावरा दुष्ठा पडिमा—से भिक्खू वा० पेहाए संथारणं जाइजा, तंजहा—गाहावई वा कम्मकरिं वा से पुब्बामेव आलो-इजा—आउ०! भइ०! दाहिसि मे? जाव पडिगाहिजा, दुष्ठा पडिमा २ ॥ अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा० जस्सु-वरसए संबसिजा जे तत्थ अहासमन्नागए, तंजहा—इक्कडे इ वा जाव पळाले इ वा तस्स लाभे संबसिजा तस्सालाभे उक्कडुए वा नेसजिए वा विहरिजा तच्चा पडिमा ॥ ३ (सू० १०१)

प्रथमनी प्रतिमा करतां आ बीजीमां आटळुं विशेष छे, के आ संस्कारक नजरे देखे, तोज मागे, ते गृहस्य स्वयं आपे, अथवा साधु याचना करे, अने आपे तो लइने वापरे.

त्रीजी प्रतिमा—जेने त्यां उतर्षो होय, तेना घरमांज तेवुं कइं आसन मळे तो लेइने वापरे, पण जो न मळे तो ते गच्छमां र्हेल अथवा जिनकल्पी विगेरे होय ते उक्कडुक आसने बेसीने अथवा पच्चासन (पलांठी वारीने) विगेरेथी राजी पूरी करे अहावरा चउत्या पडिमा—से भिक्खू वा अहासंथइमेव संथारणं जाइजा, तंजहा—पुढविंसिलं वा कट्टसिलं वा अहासंथइमेव, तस्स लाभे संते संबसिजां, तस्स अलाभे उक्कडुए वा. २ विहरिजा, चउत्या पडिमा ४ ॥ (सू० १०२)

आ प्रतिमा धारी साधु ज्यां उतर्यां होय, त्यां परशरनीं विलां अथवा लाकडातुं सुवा योग्य पाटीडं विगेरे मळे अने गृहस्थ पासे याचतां मळे तो वापरवुं, नहि तो उत्कटक अथवा पर्जाठीं वारीने रात पूरी करवी.

इच्छेया णं चउण्हं पडिमाणं अन्नयरं पडिभं पडिक्कजमाणे तं चेव जाव अन्नोऽन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥ (सू० १०३)
 आ चारे प्रतिमाओमांनी कोइ पण प्रतिमाने स्वीकारनारो साधु होय ते बीजी प्रतिमा स्वीकारनारने निंदे नहि, कारण के ते बधा जिनेभरनी आज्ञाने अवलंबीने समाधिथी रहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्जा संथारं पच्चपिणित्तए, से जं पुण संथारं जाणिज्जा सअंढं जाव ससंतणयं तहपु० संथारं नो पच्चपिणित्तजा ॥ (सू० १०४) हवे संथारो पाळो आपवानी विधि कहे छे.

मिथु पाळो आपवानो संथारो ज्यारं पाळो आपवा चाहे न्यारे तेमां देखे के गरौळी विगेरेनां इंडांथी ज्यास होय अने पडिले- हण करां योग्य न होय तो ते पाहुं आपे नहिं.

से भिक्खू० अभिकंखिज्जा सं० से जं० अण्डं० तहपुणारं० संथारं पडिलेहिय २ प० २ आयानिय २ विहुणिय २ तओ संजयामेव पच्चपिणित्तजा ॥ (सू० १०५)

पळी ते अंशुक वखत पळी जाणे के ते संस्थारमांतुं इंडुं जीव रहित थयुं छे तेचा संथारानी पतिलेखना करीने पुंजीने तडके तपावीने सेज साज जयणाथी झटकाने गृहस्थने पाळो आपे. हवे वसतिमां वसवानी विधि कहे छे,

से भिक्खू वा० समाणे वा वसमाणे वा गामाणुशामं दइजमाणे वा पुन्वामेव पन्नस उच्चारपासवण भूमिं पडिलेहिज्जा;

केवली बूया आयाणयेयं—अपडिलेहियाए, उच्चारणासवणभूमीए, से भिकखू वा० राओ वा वियाले वा उच्चारणासवणं परिद्वेषमाणे पयलिज्ज वा २, से तत्थ पयलमाणे वा २ दत्थं वा पायं वा जाव लसेज्ज व पाणाणि वा ४ ववरोविज्जा, अह भिकखू णं-पु० जं पुव्वामेव पन्नस्स उ० भूमिं पडिलेहिज्जा ॥ (सू० १०६)

ते साधु-साध्वीए एक जग्याए रहेतां के विहार करतां प्रथमथी स्थंडिल मात्रानी जग्या जोइ लेवी, जो दिवस छतां जोइ न राखे तो केवली प्रभु तेमां दोष बतावे छे, कारण के ते भिक्षु के साध्वी रात्रे के विकाले तेवा स्थानमां स्थंडिल मात्र परठवतां पग खसी जतां तेना हाथ पग भांगे, अथवा इंद्रियोने नुकसान थाय अथवा अन्य प्राणीना प्राण पण ले, एटला मादे साधु-साध्वीए प्रथमथी ठळा मात्रानी जग्या दिवस छतां जोइ लेवी.

से भिकखू वा २ अभिकंसिज्जा सिज्जासंथारगभूमिं पडिलेहितए नन्नत्थ आयरिण वा उ० जाव गणावच्छेएण वा बालेण वा बुद्धेण वा सेहेण वा गिलाणेण वा आप्सेण वा अंतेण वा मज्झेण वा समेण वा विसमेण वा पवाएण वा निवाणए वा, तओ संजयामेव पडिलेहिय २ पपज्जिय २ तओ संजयामेव बहुफासुयं सिज्जासंथारगं संथरिज्जा॥(सू० १०७)

ते साधुए प्रथमथी आचार्य उपाध्याय विनेरेथी गणावच्छेदक सुधीना अथवा बाल वृद्ध नवा शिष्य, मांदा अथवा परोणानी जग्या छोटी दइने छेडेनी जग्या अथवा मध्यमां अथवा सम के त्रिषम (खट्टवचडी) जग्या होय, पवन आवे न आवे, तो पण तेमां संतोष राखी पडिलेहणा प्रमार्जन करीने संथारो पाथरवो.

हवे शयननी विधि कहे छे.

से भिकखू वा० बहु संथरिता अभिकंखिज्जा बहुफासुए सिज्जासंथारए दुक्खितए ॥ से भिकखू० बहु० दुक्खमाणे पुव्वामेव

ससीसोवस्त्रियं कायं पाए य पमञ्जिनय २ तथो संजयामेव बहु० दुर्लहिता तथो संजयामेव बहु० सइज्जा ॥ (सू० १०८)
 ते साधु-साध्वीए बहु पासुक (निर्दोष) जण्यामां संथारो पाथरीने तेमांज पोते यतनाथी शयन करवुं पण ते साधु-साध्वी
 प्रथमथी ते शय्यामां सुवा पहेलां पगथी माथा सुधीनी जग्या पूंजीवी तथा पोताहुं आहुं शरीर तथा पग प्रमाज्जिने बहु संभाळीने
 यतनाथी सुवुं.
 हवे सुतेलानी विधि कहे छे,

से भिक्खू वा० बहु० सयमाणे नो अन्नमन्नरस हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाइज्जा, से अणासायमाणे
 तथो संजयामेव बहु० सइज्जा ॥ से भिक्खू वा उरसासमाणे वा नीसासमाणे वा कासमाणे वा छीयमाणे वा जंभायमाणे
 वा उड्डोए वा वायनिसणं वा करेमाणे पुन्वामेव आसयं वा पोसियं वा पाणिणा परिपेहिता तथो संजयामेव ऊससिज्ज
 वा जाव वायनिसणं वा करेज्जा ॥ (सू० १०९)

ते साधु विगोरेए पोते संथारामां सुता एक बीजा साधुने हाथ पगथी के कायाथी अडकवुं नहिं. ते प्रमाने अडक्या विना
 सुवुं (आमां सूचवुं के साधुए वंनेना हाथ न पहेत्ति तेदळे दूर संथारो करवो) तथा साधुए भ्रासोभ्रासलेतां, खांसी आवतां,
 छीक खातां, बगासुं आवतां, ओडकार आवता अथवा वायु संचार थतां प्रथम पोताना हाथ वडे यतनाथी मोहुं के ते जग्याने सहेज
 दांकीने करवुं (आ सूत्रमां मोहुं उयाहुं राखी बगासुं खातां उडतां जंतु घुसी जवावाथी उलटी थाय, अथवा पोतानो खराब वास
 जोरथी नीकळतां बीजाने कलेश थाय, नी वली जग्या दांकवाहुं कारण जोरथी वा संचार थतां रोगादि कारणे कपडां खराब थतां अटके,
 हवे समान्यथी शय्याने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खु वा० सर्पा वेगया सिज्जा भविज्जा विसमा वेगया सि० पवाया वे० निवाया वे० ससरक्खा वे० अप्पससक्खा वे० सदंसमसगा वेगया अप्पदंसमसगा० सपरिसाडा वे० अपरिसाडा० सउवसणा वे० निरुवसणा वे० नहण्णाराहि सिज्जाहि संबिज्जमाण्णाहि पणहियतराणं विहारं विहरिज्जा नो किंचिवि गिलाइज्जा, एवं खलु० नं सव्वदंदिं सहिए सया जणत्तिवेमि (सू० ११०) २-१-२-२ ॥

ते साधुने संथारा माटे कोइ बरवते सरखी कोइ बरवते खरवचडी कोइ बरवते पवनवाली कोइ बरवते हवा विनानी कोइ बरवते धूळवाली कोइ बरवते विना धूळनी डांस मच्छरवाली के डांस मच्छर विनानी अथवा रहेवाने उचित अथवा अनुचित उपसर्गवाली के विना भयनी एवी विचित्र जातिनी जग्या मळे तो पण तेमां समभाव धारण करीने रहेहुं, पण मलानि के दीनताभाव के अहंकार लाववो नहि. आज साधुनुं सर्वस्व छे, माटे तेमां जयणाथी सदाए वर्त्ते.

शय्या नामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

ईयां नामनुं बीजुं अध्ययन.

बीजुं अध्ययन कहीने बीजुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, प्रथम अध्ययनमां धर्म शरीरनुं पालन करवा पिंड बताव्यो, ते पिंड आ लोक परलोकना अपायना रक्षण माटे अवश्ये वसति (प्रकान)मां वापरवो, तेथी बीजा अध्ययनमां वसतिनुं स्वरूप

वताव्युं, हवे ते पिंड तथा वसतिने शोधवा माटे गमन करवुं, ते आ प्रमाणे न करवुं, ते अर्धी वताववावुं छे, आ संवंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुगममां नाम निक्षेपण माटे निर्युक्तिकार कहें छे.

नामं १ दवणाइरिया २ दव्वे ३ खित्ते ४ य काल ५ भावे ६ य । एसो खळु इरियाए निक्खेवो छविवहो होइ ॥३०५॥

नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काल अने भाव एम छ प्रकारे इर्यानी निक्षेपो छे, तेमां नाम स्थापना सुगम छोडीने द्रव्य इर्या वताववा माटे कहे छे.

दव्वइरियाओ तिविहा सच्चित्तमीसगा चेव । खित्तंमि जंमि खित्ते काले कालो जहिं होइ ॥ ३०६ ॥

तेमां द्रव्य इर्या सच्चित्त अतित्त मिश्र एम त्रण भेदे छे, अर्थात् इर्या, इरण, गमन त्रणे एक अर्थमां छे, तेमां सच्चित्त एवो वायु अथवा पुरुष होय तेनुं गमन ते सच्चित्त इर्या जाणवी, एज प्रमाणे परमाणु आदि द्रव्यनुं गमन ते अचित्त गमन छे. तथा मिश्र द्रव्य इर्या ते रथादि (जेमां अचित्त रथ सच्चित्त वळथ के माणस) नुं गमन जाणवुं, क्षेत्रइर्या ते जे क्षेत्रमां गमन कराय, अथवा इर्यानुं वर्णन कराय ते क्षेत्रइर्या, तेज प्रमाणे जे कालमां गमन थाय. अथवा इर्यानुं वर्णन थाय ते कालइर्या जाणवी.

हवे भाव इर्या वताववा कहे छे.

भावइरियाओ दुविहा चरणरिया चेत्र संजमरिया य । समणस्स कहं गमणं निदोसं होइ परिसुद्धं ॥ ३०७ ॥

भाव विषयनी इर्या बे प्रकारनी छे, चरण इर्या, अने संयम इर्या तेमां संयम इर्या १७ प्रकारनुं संयम अनुष्ठान छे, अथवा असंख्य संयम स्थानमां एक संयम स्थानथी बीजा संयम स्थानमां जतां संयम इर्या थाय छे, पण चरण इर्या तो ‘अञ्ज वज्र मञ्ज

चर” धातुनो गति अर्थ छे, चरतिनो भाव ल्युट रूप चरण तेज रूपे इयाँ ते चरण इयाँ छे. अर्थात् चरणनो अर्थ गति अथवा गमन छे. अने ते श्रमणनुं चरण कया प्रकारे भावरूप (निर्दीष) गमन थाय ? ते कहे छे.

आलंबणे य काले मगो जयणाइ चेव परिसुद्धं । भंगोहिं सोत्तसविहं जं परिसुद्धं पसत्थं तु ॥ ३०८ ॥

प्रवचन संघ गच्छ आचार्य विगेरेना माटे प्रयोजन आवतां साधु गमन करे, ते आलंबन छे, तथा साधुने विहरण योग्य अवसर छे, ते काल छे, तथा जनो (माणसो) ए पनावडे खुंदेला मार्गे यतना ते युगमात्र दृष्टि राखवी तेज आलंबन कालमार्ग यतनानां पदोवडे एकेक पद व्यभिचारथी जे भंगो थाय ते प्रमाणे गणतां १६ भांगा थाय, तेमां जे परिशुद्ध होय तेज प्रशस्त छे, अने हवे ते बलावे छे.

चउकारणपरिसुद्धं अहवावि (हु) होज्ज कारणजाए । आलंबणजयणाए काले मगो य जइयवं ॥ ३०९ ॥

चार कारणोए साधुनुं गमन शुद्ध थाय छे, आलंबन वडे दिवसे मार्गवडे यतनाथी जाय छे, अथवा अकालमां पण जलान विगेरेभा आलंबने यतनाथी जतां शुद्ध गमन होय छे, अने आवे मार्गे साधुए यत्न करयो, नामनिष्यन्न निक्षेपो कहां, हवे उद्देश अर्थधिकारने आश्रयी कहे छे,

सव्वेवि ईरियविसोद्धिकारणा तहवि अत्थि उ विसेसो । उद्देसे उद्देसे बुच्छामि जहकमं किंचि ॥ ३१० ॥

सर्वे षट्ठे आ त्रणे पण जो के इयाँ विशुद्धकारक छे, तो पण त्रणे उद्देशामां कांडक विशेष छे, ते दरेकने यथाक्रमे किंचित् कहीशुं हवे प्रतिज्ञा प्रमाणे कहे छे.

पढमे उवागमण निगमो य अद्धण नावजयणा या विइए आरूढ छळणं जंघासंतार पुच्छा य ॥ ३११ ॥

पहेला उदेशामां वर्षाकाळ विगेरेमां उपागमन ते स्थान लेवुं, तथा निर्गम ते शारत्काळ विगेरेमां विहार जेभो होय, तेवो अत्रे कहेवाय छे, अने यतनाधी मार्गमां चालवुं आ त्रणे वातो पहेला उदेशामां छे, बीजा उदेशामां नाव विगेरेमां चडनारवुं छळन (पक्षेपण) वर्णवशे, अने जघासंतार पाणीमां यतना राखवी, तथा जुदा जुदा पश्रपां साधुए शुं करवुं ते अहीं कहे छे,

तइयमि अदायणया अप्पडिवंधो य होइ उवहिंमि । वज्जेयच्चं च सया संसारियरायनिहगमणं ॥ ३१२ ॥

बीजा उदेशामां जो कोइ पाणी वगेरे संबंधी पूछे, ते जाणतो होय छतां न जाणवापणुं वताववुं ते अधिकार छे, तथा उपाधिमां अपतित्वंधपणुं राखवुं, ते कदाच चोराइ जाय तो पण स्वजन पासे अथवा राजग्रहमां फरीयाद करावा न जवुं, हवे सूत्रानुगममां अस्वलित विगेरे गुणोवाळुं सूत्र उच्चारवुं ते आ ममाणे छे.

अब्धुवगए खलु वासपासे अभिपवुडे बहवे पणा अभिसंभूया बहवे बीया अहुणभिजा अंतरा से मगा बहुपाणा बहुबीया जाव ससंताणगा अणभिकंता पंथा नो विजाया मगा सेवं नच्चा नो गामणुंगामं दूइज्जिजा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा ॥ (सू० १११)

मुख्यत्वे वर्षासितु आवे छते अने वरसाद वरसे छते साधुए शुं करवुं, ते कहे छे. अहीं वर्षाकाळ अने दृष्टि आश्रयी चार भांगा थाय छे, तेमां साधुओने आज समाचारी छे. एटले निवर्षियात ते अषाढ चोमासुं आत्र्या पहेलांज वास, फलक, दगल, भस्म मात्रकादिनो परिग्रह करवो, अर्थात् चोमासुं वेसतां पहेलां पण वगारे वरसाद पढतां घगां नाना प्राणीओ इंद्रयोगक बीयावक गर्द-

भक्त विगोरे (संभूद्धिम जंतुओ) उत्पन्न थाय छे, तथा घणा नवा घासना अंकुरा पकट थाय छे, तेथी तेवे मागे जतां ते प्राणीओ तथा घासना अंकुराथी ते करोळीयाना समूह सुधी मार्गमां पथरायेळा होय, तेथी ररतो मोभओ मुहकेळ पडे. तेथी ते जीवोना रक्षण भाटे एक गापथी बीजे गाप न जाय, तेथी संयंत (साधु) पोतेज समय जोइने अवसर आनतां चोमासुं करी छे. (आने माटे कल्पमूत्रमां खुलासो करे छे के अषाढ चोमासा पहेळां बरसाद आवी जाय तो एक मास प्रथमथी पण चोमासुं करे, पण असाढमां तो अवश्ये स्थिरता करवी)

हवे अपवाद मार्ग करे छे.

से भिक्खू वा० सेजं गांमं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गांमंसि वा जाव राय० नो महई विहारभूमी नो महई विचारभूमी नो सुलभे पीढफल्लगसिज्जासंथारणे नो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे जत्थ वहवे समण० वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य अच्चाइवा वित्ती नो पन्नस्स निकवमणे जाव चिंताए, सेवं नच्चा तहण्णारं गांमं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा नो वासावासं उवल्लिज्जा ॥ भि० से जं गांमं वा जाव राय० इमंसि खलु गांमंसि वा जाव महई विहार-भूमी महई विचार० सुलभे जत्थ पीढ ४ सुलभे फा० नो जत्थ वहवे समण० उवागमिस्संति वा अप्पाइवा वित्ती जाव रायहाणिं वा तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिज्जा ॥ (मू० ११२)

ते भिक्षु तेवी राज थानी विगोरे कोइपण स्थानमां आव्या पळी एम जाणे के विहार (स्वाध्याय) भूमी तथा विचार (स्थंडिल) भूमि उचित मळे तेवी नथी, तथा साधुने योग्य पीढ फलक थया संथारो विगोरे चोमासामां खास वापरवा योग्य उपकरणो के वस्तुओ मळवी दुर्लभ छे, तथा प्रासुक गोचरी मळवी दुर्लभ छे, तथा एषणीय आहार न मळे, तेज कहे छे-एटले साधुने उद्गम

विगेरे दोषरहित गोचरी लेवानी छे, ते न मळे, तथा ते नगर विगेरेमां घणा श्रमण, ब्राह्मणो, कुपण, वणीमग विगेरे आवीने भरायेला छे, अने बीजा आववाना छे, तेथी घणा माण भरावाथी आकीर्ण वृत्ति छे, एटले भिक्षा माटे अटन तथा स्वाध्याय ध्यान करावा वहा जतां आवतां ते घणा भिक्षुक माणसोना भरावाथी ते गाम विगेरे संकोचायेल छे, त्यां जैनसाधुने जहुं आवहुं तथा धर्म चिंतवन विगेरे क्रिया उपद्रव रहित न थाय. जो आवी अगवडो होय, तो तेवा क्षेत्रमां चोमासुं न करे, पण जो उपर वतावेली अगवडो न होय एटले भणवानी अने स्थंडिलनी जग्या होय, उचित उपकरण मळतां होय, पिंड शुद्ध मळतो होय, अन्य भिक्षुको सामान्य प्रमाणमा होय, जतां आवतां घणो समय न लगतो होय, तो त्यां चोमासुं करहुं. हवे वर्षाकाल पुरो थये. क्यारे विहार न करवो ते कहे छे.

अह पुणेवं जाणिजा—चत्तारि मासा वासावासाणं वीइक्कंता हेमंताण य पंचदसरायकल्पे परिवुत्सिए, अंतरा से मग्गे बहु-
पाणा जाव ससंताणगा नो जत्थ बहवे जाव उवागमिस्संति, सेवं नच्चा नो गामणुगामं दूइज्जिजा ॥ अह पुणेवं जाणिजा
चत्तारि मासा० कल्पे परिवुत्सिए, अंतरा से मग्गे अण्डा जाव ससंताणगा बहवे जत्थ समण० उवागमिस्संति सेवं नच्चा
तथो संजयामेव० दूइज्जिजा ॥ (सू० १५३)

हवे आ प्रमाणे साधुओ जाणे, के चोमासा संबंधी, चारमास पूरा थाय छे, अर्थात् कार्तिकी चोमासुं पूरं थयुं छे, त्यां जो उत्सर्गथी वृष्टि न होय, तो एक मेज बीजे स्थळे जइने पारणुं करहुं. पण जो वृष्टि चाळु होय तो हेमंत रतुना पांच-दस दीवस गये थके विहार करवो, तेमां पण जो बीजे गाम जतां मार्गमां नानां जंतुनां इंडां पड्यां होय, गारो होय, करोळीयाना जाळां बाझी

गयेल्यां होय, अने ब्राह्मण श्रमण विगोरे मार्गण न आवेल्यां होय, अथवा थोडा कळतपां आवताना न होय तो मागसर शुद् १५
 सुधी त्यां रहेवुं. त्यारपळी गमे तेम होय तोपण त्यां रहेवुं नदि, पण जो वृष्टि न होय, कादव न होय, मार्ग इंडां विनातो होय,
 श्रमण ब्राह्मण आव्या होय, आववाना होय, तो कार्तिकी पुर्णिमा पंछी तुर्त विहार करवो. हवे मार्गनी यतना कहे छे—

से भिक्खू वा० गामणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ जुगमायाए पेहमाणे दडूण तसे पाणे उद्धु पादं रीइज्जा साहडु पायं
 रीइज्जावितिरिच्छं वा कटु पायं रीइज्जा, सइ परक्रमे संजयामेव परिकमिज्जा नो उज्जुयं गच्छिज्जा, तओ संजियामेव
 गामणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से पाणाणि वा वी० हरि० उदए वा मट्टिआ वा
 अविद्धए सइ परक्रमे जाव नो उज्जुयं गच्छिज्जा, तओ संजया० गामा० दूइज्जिज्जा ॥ (मू० ११४)

ते भिक्षु बीजे गाम जतां मोढा आगळ युगमात्र (चार हाथ प्रमाण) गाढाना उर्दि (यसारा) ना आरारे भूभाग (जमीन)
 देखतो चाले, त्यां मार्गमां तस जीवो जे पतंग विगोरे छे, ते पगने अडकीने नीकळे, अथवा पगना तळीयां नीचे अडकीने नीकळे तो
 ते जीवोनी रक्षा खातर शरीरपां शक्ति होय त्यां सुधी बीजे मार्गे जवुं, पण बीजो रस्तो के जवाननी शक्ति न होय, तो ते रस्ते जतां
 ज्यारे तेवां जंतुओ पग पासे आवे त्यारे ते त्यां पग संमालीने मुकवो के ते चगडाइ न जाय, एदळे ज्यारे सामे आवे त्यारे तेने
 पग पग साथे अथडावा देवां नहीं, पण जो पग नीचे दवाइ जायं तेम होयतो नीचे देखीने ते जग्याए पग न मुकवा, अथवा पगनी
 एडी मुकीने चालवुं, अथवा पग वांको करीने चालवुं, आं प्रमाणे एक गामथी बीजे गाम जीव जंतुनी रक्षा करतां जवुं.

वळी साधुने एक गामथी बीजे गाम जतां मार्गमां नाना जीव जंतु बीज हरियाणी (लीळं घास) पाणी, माटी अथवा रस्तो

न पड्यो होय, तो तेवा सीधा मार्ग न जवुं, पर्ण जीव-जंतुं विनांना तथा कादव माटी पाणी विनाना मार्गें चक्रावो खाइने ज्यांथी लोको जतां होय तेवा रस्ते साधुए जवुं, पण बीजो रस्तो न होय, अथवा जवानी शक्ति न होय, तो ते मार्गें यतनाथी चालवुं. वकी से भिक्खू वा० गामा० दूइजमाणे अंतरा से विरुवरूवाणि पञ्चतिगाणि दसुगाययाणि भिक्खूणि अणायरियाणि दुस-चप्याणि दुपन्नवणिज्जाणि अकालालपडिचोहीणि अकालपरि मोईणि सद लाडे विहाराए संथरमाणेहिं जाणवएहिं नो विहारवडियाए पवजिज्जा गमणाए, केवलो वूया आयाणमेयं, तेणं बाला अयं तेणे अयं उवचएए अय ततो आगएटि-कहुं तं भिक्खुं अकोसिज्ज वा जाव उद्विज्ज वा वरयं प० कं० पाय० अञ्चिदिज्ज वा भिदिज्ज अवहरिज्ज वाप रिद्धिविज्ज वा, अह भिक्खूणं पु० जं तहपगाराइं विरु० पञ्चतिगाणि दसुगा० जाव विहारवत्तियाए नो पवजिज्ज वा गमणाए तओ संजया गा० दू० ॥ (सू० ११५)

ते भिक्षुने बीजे गाम जतां एम माळुम पदे, के आ मार्गे जतां वचमां विरुप रुपवाळा महादुष्ट एवा चोरोनां स्थान छे, तथा बर्बर शवर गुलिंद विगेरे मलेच्छथी प्रधान एवा अनार्य लोकां जे गंगा सिंधुनी वचमाना २५॥ आर्य देश छोडीने बीजा देशोमां रहेला छे, तेओ दुःखेथी आर्योनी संज्ञा समजे छे, तथा महा कष्ट णि आर्य धर्मने समजे अने अनार्य संकल्पने छोडे, तथा अकालमां पण भटकनारा छे, कारणके अहयोरत्रे पण शिकार विगेरे माटे जाय छे, तथा अकाले (बलव विना) भोजन करनारा छे, माटे ज्यां सुधी बीजा देशोना सारां गामो विचरवाना होय त्यां सुधी तेवा अनार्य देशोना क्षेत्रमां हुं नइश, एमी प्रतिज्ञा साधुए न करवी, (अर्थात् त्यां जवुं नहि) त्यां जवाथी केवलीप्रभु तेमां दोष वतावे छे, कारण के त्यां जवाथी संयमनी विराधना थाय,

हे, तथा त्यां आत्मानी विराधनभां संयमनी विराधना पण शाय हे, ते बतावे हे, ते मजेच्छ विगेरे अनार्यो आ प्रमाणे बोले हे, “ आ चोर हे ! आ शत्रुतां चर तेना गामथी आवेलो दूत हे ! एम कहीने वचनथी तिरस्कार करे, दंडनी ताडना करे, अने छेवटे जीव पण छे, तथा वखो विगेरे पण खुंचवी छे, पळी साधुने काढी सुके, माटे साधुआंने आ शीखायण छे, के तेमणे तेवा मार्गे जवुं नहि, पण तेवा मार्गेने छोडीने संयत सारे मार्गे विहार करी ने बीजे गाम जाय.

से भिक्खू० दूइजभाणे अंतरा से अरायाणि वा गणरायाणि वा जुवरायाणि वा दोरजाणि वा वेरजजाणि वा विरुद्धर-
जजाणि वा सइ लाडे विहारए संथ० जण० नो विहारवडियाए० केवली बूया आयाणमेयं, तेणं वाला तं चेव जाव
गमणाए तओ सं० गा० दू० ॥ (मू० ११६)

ते भिक्षुने विहार करतां एम माळुम पडे के ते मार्गे राजा मरीगयो छे, सामंतोए राज्य ते वहंची लीधुं छे, अथवा सुवराजने गादी मळी नथी, वे राज्य थयां होय, वैर वड्यां होय, विरुद्ध (शत्रु) राजानुं जोर होय, तो तेवा लडाइ तोफाननां उपद्रववाळा मार्गे बीजो सारो देश अथवा गामो विचरवानां होय तो तेवा मार्गे विहार न करवो, केवळीपशु तेमां कर्मादान वतावे छे, त्यां जलां ते विरुद्ध पक्षना माणसो ते साधुने चोर के जसुस मानीने पूर्वना मूत्रमां कहाा मुजव पीडा पमाडशे, उपद्रव करशे अथवा जीवथी पण हणशे, कपडां खुंचवी बुरा हाले काढी सुकशे, माटे तेवा मार्गे न जवुं,

से भिक्खू वा गा० दूइजभाणे अंतरा से विह सिया, से जं पूण धिहं जाणिज्जा एगाहेण वा दुआहेण वा तिआहेण वा चउआहेण वा पंचाहेण वा पाउणिज्ज वा नो पाउणिज्ज वा तहपगारं धिहं अणेगाहगमणिज्जं सइ लाडे जाव गमणाए,

केवली ब्रूया आयाणमेयं, अंतरा से वासे सिया पाणेसु पणएसु वा वीएसु वा हरि० उद० मडियाए वा अविद्धथाए,
अह भिक्खू जं तह० अणेगाह० जाव नो पवं० तथो सं० गा० दू० ॥ (सू० ११७)
ते भिक्षु ग्रामांतर जतां एम जाणे के ते मार्गमां जतां मेदान उलंघवापां केटलाक दिवसो लागसो, एदले एक आखो दिवस
अथवा वे त्रण चार पांच दिवसे ते मार्ग उलंघासे, तेवा मार्गो बीजो हुंको मार्ग मळजो होय तो तेवा उनड रसे जवुं नहि. कार-
णके तेवा मार्गो जतां केवली ज्ञानीए अनेक दोषो बताव्या छे, जेमके वसते वरसाद आवे, तो पाणी भराइ जाय, लीलग फूलण
इय जाय, लीलाघासनां बीज अंकुरा फुटी नीकळे, रस्तो कादथयी (गाराथी) भराइ जाय, मार्ग सूक्षे नहि, माटे तेवा अनेक
दिवसना मेदानवाळा मार्ग जवुं नहि. हवे नावने आश्रयी कहे छे—

से भि० वा गामा० दूहजिज्जा० अंतरा से नावासंतारिमे उदए सिया, से जं पूण नावं जाणिज्जा असंजए अ भिक्खु-
पडियाए किणिज्ज वा पामिच्चैज्ज वा नावाए वा नावं परिणामं कट्टु थालाओ वा नावं जलंसि ओगाहिज्जा जलाओ वा
नावं थलंसि उकसिज्जा गुण्णं वां नावं उरिसिचिज्जा सन्नं वा नावं उपीलाविज्जा तहएणारं नावं उट्टुगामिणिं वा अहेगा०
तिरियगामि० परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए अप्पतरे वा भुज्जतरे वा नो दूरुहिज्जा गमणाए ॥ से भिक्खू वा०
पुव्वामेव तिरिच्छसंपाइमं नावं जाणिज्जा, जाणिजा से तमयाए एगंतमवकमिज्जा २ भण्डगं पडिलेहिज्जा २ एगओ
भोयणमंडगं करिज्जा २ ससीसोवरीयं कायं पाए पमज्जिज्जा सागारं भत्तं पच्चाक्खइज्जा, एगं पायं जले किच्चा एगं पायं
थले किच्चा तथो सं० नावं दूरुहिज्जा ॥ (सू० ११८)

ते भिक्षु ग्रामान्तरं जतां मार्गमां एष नाणे के आ वचनमां आवेली नदी नाव विना उतराय तेम नथी तो नाव संबंधी तपास करे के गृहस्य खास भिक्षुक माटे नाव खरीद करे अथवा उखीती छे, अथवा अदलो नदलो करे, अथवा स्थळथी जळमां के जळथी स्थळमां लावे, भरेला वहणने खाली करे, अथवा खुंची गधुं होय तो साधु माटेजं बहार कटावे, तेवी नावने उंचे लइ जवा नीचे लइ जवा अथवा तीरछी दिशायां अथवा कोइपण दिशायां लइ जवी पडे तो एक जोजन मर्यादा माटे अदथा जोजन (बे गाड) माटे अथवा थोडे घणे दूर जवा माटे साधुए तेवी नावमां बेसवुं नहि, पण साधु एष जाणे के नाव तेना मालिके पोतान प्रयोजनने तीरछी दिशायां हंकारी छे, तो ते वहणमां जतां पहेळां पोताना उपकरणोने एकांतमां जइने पहिलेहवां गोचरीनां पात्रां तपासी लेवां तथा पोताना शरीरने पगथी माथा सुधी पुंजवुं, तथा सागारी अणसण करवुं (एटले आ जळथी बहार नीकळं तो मने आहार पाणी वापरवुं कल्पे, नहितो नहि.) पछी एक पग जळमां एक पग थळमां (पाणीनी उपर) सुकी साधुए नाव उपर चढवुं (आ सूत्रमां साधु माटे जो नाव पेल्यार लइ जाय तो बने त्यांसुधी तेवी नावमां न बेसवुं. पण गृहस्थोने माटे जवा आववा माटे नाव चाळु थइ होय तेमां बेसवुं) हवे कारण पडे नावमां बेसवुं पडे तो नावमां चढवानी विधि कहे छे.

से भिक्खु वा० नावं दुइहमाणे नो नावाओ गुरओ दुइहिजा नो नावाओ मणओ दुइहिजा नो नावाओ मज्झओ दुरू-
हिजा नो बाहओ पणिच्चिय २ अंगुलियाए उदिसिय २ ओणमिय २ उन्नमिय २ निज्झाइज्जा । से णं परो नावागओ
नावागयं वइज्जा—आउसंतो ! सपणा एयं ता तुमं नावं उक्कसाहिजा वा उक्कसाहि वा उक्कसाहि वा खिवाहि वा रज्जूयाए वा गहाय
आकासाहि, नो से तं परिचं परिजाणिजा, दुसिणीओ उवेहिजा । से णं परो नावागओ नावाग० वइ०—आउसं० नो

संचाएसि तुभं नावं उकसितए वा इ रज्जूयाए वा गहाय अंकसिं वए वा आहार एयं नावाए रज्जूयं सयं केव णं वयं
 नावं उकसिस्सामो वा जाव रज्जूए वा गहाय आकासिस्सामो, नो से तं प० तुसि० । से णं प० आउसं० एअं ता तुभं
 नावं आलित्तेण वा पीढएण वा वंसेण वा वळएण वा अवळएण वा वाएहि, नो से तं प० तुसि० । से णं परो० एयं ता
 तुभं नावाए उदयं हत्थेण वा पाएण वा मत्तेण वा पडिग्गहेण वा नावाउस्सिं वणेण वा उस्सिं वाहि, नो से तं० से णं
 परो० समणा ! एयं तुभं नावाए उत्तिंभं हत्थेण वा पाएण वा वाहुणा वा ऊरुणा वा उदरेण वा सीसेण वा काएण वा
 उस्सिं वणेण वा चेलेण वा मट्ठियाए वा कुसपत्तएण वा कुविंदएण वा पिहेहि, नो से तं० ॥ से भिक्खू वा २ नावाए
 उत्तिं गेण उदयं आसवपणं पेहाए उवस्वरिं नावं कज्जलावेपाणिं पेहाए नो परं उवसं कमित्तु एयं बूया—आउसंतो ! गहा-
 वइ एयं ते नावाए उदयं उत्तिं गेण आसवइ उवस्वरिं नावा वा कज्जलावेइ, एयपगारं मणं वा वायं वा नो पुरओ कट्ठु
 विहरिज्जा अप्पुस्सुए अवहिह्लेसे एगंतगएण अप्पणं विउसेज्जा समाहीए, तओ सं० नावासं तारिमे व्यउदए आहारियं
 रीइज्जा, एयं खळु सया जइज्जासि त्तिवेमि ॥ इरियाए पढमो उद्देशो (सू० ११९) २-१-३-१ ॥

ते साधुए नावमां वेसतां नावना अग्र भागे वेसहुं नहि, कारण के तेथी निर्गमिक (खलासी) ने पोताना कार्यमां हरकत थाय;
 तथा बीजा लोकोने चडवा पहेलां पोते चढी न वेसे; कारण के वहाणने चालववाना अधिकरणनो दोष लगे, तेम नावना बरोबर
 मध्य भागमां चढी न वेसे, तेम वहाणनां (पडवां) पकडीने आंगळीओवडे ताकी ताकीने उंचा नीचा थइने जोहुं नहि.
 नावमां चढेला साधुने नाववाळा कहे, के हे साधुओ ! आ नावने तमे खेचो, आ दिशा तरफ वळां, अमुक वस्तु दरियामां

फँको, अथवा दोरदेथी पकळीने खेंचो, ते प्रमाणे कहै तोपण साधुए तेम न करवुं, पण चूप बेसी रहेंवुं.

वळी ते नाविक साधुने कहे, के हे साधुओ ! जो तमे नाव न खेंची शको, के समान न फँकी शको, तो दोरहुं लावीने अमने आणे, पटले दोरहुं हाथमां आवतां अमे नावने खेंचीशुं, ते वचन पण सुनिए स्वीकारवुं नहि,—पण चूप रहेंवुं.

ते नावमां चढेला साधुने नाविक कहे के हे साधु ! तमे नावने आलिच वडे पीढ हलेसांवडे वांसवडे वलावडे अवळकवडे आणळ चलावो, ते वात पण साधुए स्वीकारवी नहि, पण चूप बेसी रहेंवुं.

ते नावमां चढेला साधुने नाविक एम कहे, के—आ नावमां भराएला पाणीने हाथवडे पणवडे वासणथी के पांतरांथी अथवा नावना हथीआरथी काढी नांखो, पण ते साधुए करवुं नहि, पण मौन धारण करीने बेसवुं.

ते नावमां वेढेला साधुने नाविक कहे, के हे साधुओ ! तमे नावमां पढेला नांगाने हाथ, पण, बाहु, नांघ, उरु, पेट, माथा के कायावडे अथवा वहाणमां रहेला उस्सिचणवडे अथवा वल्ल, माटी, कमळपत्र के कुरुविंद नामना घासवडे टांकी, पण. ते स्वीकारवुं नहि, मौन बेसी रहेंवुं

ते भिक्षुए अथवा सांक्वीए नावमां छिद्र पडतां पाणी भराहुं देखीने—उपर उपर नावमां पाणी चडवुं देखीने बीजा माणसोने एम कहेवुं नहि के हे गृहस्थ ! आ वहाणमां पाणी भराय छे, अने नाव डुवी जसो, आ प्रमाणे मनथी अने वचनथी संकल्प—विकल्प न करतां बरडा न पाडतां ज्ञांत रहेंवुं, शरीर उपकरणनी उत्सुक्ता तथा बहारवुं ध्यान छोडीने एकांतमां आत्माने समधिमां राखवो, अने जे प्रमाणे नाव पाणीमां चाले तेम चालवा देइ किनारे पहुँचवुं, आ प्रमाणे सदा यत्न

करनो अर्थात् नाचना उपर ध्यान न राखतां आत्ममसाधिप वर्तवुं आज भिक्षुनी सर्व सामग्री छे.

बीजा अध्ययननो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजा उद्देशो.

पहेलो उद्देशो कहीने हवे बीजा उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां नावमां बेठेला साधुनी विधि कही. अहीं पण तेज कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानु आ प्रथम सूत्र छे.

से षं परो णावा० आउसंतो ! संमणा एयं ता तुमं छत्तगं वा जाव चम्मज्जेयणगं वा गिणहादि, एयाणि तुमं विस्वरूपाणि सत्थजायाणि धारेहि, एयं ता तुमं दारगं वा पज्जेहि, नो से तं० ॥ (सू० १२०)

ते नावमां बेठेला साधुने नाविक विगोरे गृहस्थ कहे, के तमे मारा छवने पकडो, अथवा चापडुं छेदनातुं हथीआर अथवा बीजा हथीआर पकडो, अथव आ मारा बाळकने पाणी पीवडावो, आवी पार्थना नाविक विगोरे करे तों ते स्वीकारवी नहि, पण मौन रहवुं, उपर प्रमाणे नाविकतुं कहेवुं न करवार्था ते क्रोधी थइने साधुने नावमांथी फेकी दे तो थुं करवुं ते कहे छे:—

से षं परो नावाणए नावगयं वएजा—आउसंतो ! एस षं समणे नावाए भंढभारिए भवइ, से षं वाहाए गहाय नावाओ उदगंसि पक्खविज्जा, एयणारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से य चीवरधारी सिया खिण्णमेव चीवराणि उन्वेहिज्जा का निवे, छज्जा का उपकेसं वा करीज्जा; अह० अधिकंत करकम्मा खलु वाला वाहाहिं गहाय, ना० पक्खविज्जा से पुन्नामेव वइज्जा

आउसंतो ! गाहावर्द् मा मत्तो बाहाए गद्ययं नावाओ उदंगंसि पक्खिवद्द, सयं चैव णं अहं नावाओ उदंगंसि ओगाहि-
 स्साम्मि, से णेवं वयंतं परो सहसा बलसा वाहाहि ग० पक्खिविज्जा तं नो सुमणे सिया नो दुम्मणे सिया नो उच्चावयं
 मणं निषंछिज्जा नो तेसिं बालणं धायए वहाए सहुद्विज्जा, अप्पुरुए जाव समाहीए तथो सं० उदंगंसि
 पविज्जा ॥ (सू० १२१)
 ते साधुने उदगीने नाविक बीजा माणसोने कहे, के आ साधु काम कर्या त्रिना बहाणमां मात्र भांड अथवा उपकरणवद्दे
 बीजा रूप वेद्यो छे, माटे तेने बाहुथी पकडीने नदीमां फेंकी दे, आ प्रमाणे तेमनी पासै सांभळे, अथवा बीजा पासैथी ते वात
 जाणीने जिनकल्पी के स्थवीरकल्पी मुनि होय, तेमां स्थविरकल्पी मुनिए दुर्त पोतानी पासै बीजाबालां नकामां कपडां उतरिने
 जरूर जागां हलकां बल्ल उपधि विरोरेने करीरे वींटी लेवां, अथवा माथे बांधी लेवां, आ प्रमाणे उपकरण वींटी लीधेलो साधु
 निर्व्याकुलताथी सुखेथो पाणीमां तरे छे, पछी तैयार थइ तेमने धर्मोपदेश आपे, साधुनो आचार समजावे, उतां एम नक्की जाणे के
 आ दुष्टो मने बाहुथी पकडीने पाणीमां नांखवानांज छे, तो नांखे ते पहेलां मुनिए कहेवुं के तमार गने बाहुथी पकडीने पाणीमां नाखी दे,
 नांखवानी जरूर नथी. हुं जातेज पाणीमां भ्रंषलावुं छुं आवुं बोलवा उतां पण ते दुष्टो बाहुथी पकडीने साधुने पाणीमां नाखी दे,
 तो मुनिए मनमां रागद्वेष न करवो, तथा दीनता के संकल्प—विकल्प पण न करवा, तेम तेमने मारवा के दुःख देवा तैयार न
 थवुं, पण उत्सुकता रहित पाणीमां पडवुं. हवे उदकमां पडेलानी विधि कहे छे.
 से भिक्खू वा० उदंगंसि पत्रामाणे नो हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कार्य आसाइज्जा, से अणासायणाए आणासाय-

पाणे तथो सं० उदगंसि पविज्जा ॥ से भिक्खु वा० उदगंसि पक्वमाणे नो उम्मुग्गानिमुत्थियं करिज्जा, माभेयं उदगं कवेसु वा भच्छीसु वा नक्कंसि वा सुहंसि वा परियावज्जिज्जा, तथो० संजयाभेव उदगंसि पविज्जा ॥ से भिक्खु वा उदगंसि पक्वमाणे दुब्बलियं पाउणिज्जा खिप्पामेव उवहिं विगिंचिज्जा वा विसोहिज्जा वा, ना केव णं साइज्जिज्जा, अह पु० पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणितए, तथो संजयाभेव उदउल्लेण वा ससिणद्धेण वा काएण उदगतीरे चिद्धिज्जा ॥ से भिक्खु वा० उदउल्लं वा २ कायं नो आमज्जिज्जा वा णो पमज्जिज्जा वा संलिहिज्जा वा नलिहिज्जा वा उवल्लिज्जा वा उवद्धिज्जा वा आयाविज्जा वा पया०, अह पु० विगओदथो मे काए छिबसिणेहे काए तहपगारं कायं आमज्जिज्जा वा पयाविज्जा वा तथो सं० गामा० दूइज्जिज्जा ॥ (सू० १२२)

ते मुनिए पाणीमां पड्या पड्डी हाथ साथे हाथ, पग साथे पग के शरीरवडे कोइ पण भागमां अपकाय विगेरेनी रक्षा माटे स्वर्ध करवो नहि, तथां पाणीमां तणातां डुवकीओ भारवी नहि, कारण के डुव नी न भारवाथी कान आंख नाक मोटा विगेरेमां पाणी न भराय तेम पोते डुवी जाय नहि, पण ज्यारे पोताने डुववा वलत आवे अने थाकी गयो होय, तो उपायिनो मोह छाडी देवो, अथवा भारवाळी उपाधि छोडी देवी, पड्डी पोते जाणे के हुं किनारे जवा समर्थ हुं, त्यारे किनारे नीकळी आवे, अने पाणी टपकला शरीरे कीनारा उपर उभो रहे, अने इयावही पडिकमे.

पण ते मुनिए भिना शरीरने पाणी रहित करवा आमळहुं घसहुं दाबहुं छांटहुं के तपावहुं नहि, पण पाणीने पोतानी मेळे नीतरवा देवुं पण ज्यारे जाणे के पाणी नीतरी गयुं छे, भीनाश ओळी थइ गइ छे, त्यारपड्डी कायाने शरदी रहित करवा तडके

तपावती, अने त्यां सुधी किनारेज उभा रहेहुं, अने शरीर सूकाया पळीज बीजा गाम तरफ विहार करवो, पण त्यां उभा रहेबाधी जोरनो भय लागतो होय तो तुर्त कायाने स्वर्ग कर्या विनाज हाथ लांबा राखी गाम तरफ चाल्या जवुं.

से भिक्खू वा गामपुंगांमं दूइजमाणे नो परेहिं सदिं परिजविय २ गामां दूइ०, तओ० सं० गामां दूइ० ॥ (सू० १२३)
मुनिष् विहार करतां मळेला गृहस्थो साथे बहु वक्ककाट करता जवुं नदि, पण गांतिथी चालवुं, हवे जंघा सुधीना पाणीमां उतरवानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा गामां दू० अंतरा से जंघासंतारिमे उदगे सिया, से गुन्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिज्जा २ एगं पायं जळे किच्चा एगं पायं थळे किच्चा तओ सं० उदगंसि आहारियं रीएज्जा ॥ से भि० आहारियं रीयमाणे नो हत्थेण हत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए आहारियं रीइज्जा ॥ से भिक्खू वा जंघासंता-
रिमे उदए आहारियं रीयमाणे नो श्यावादिद्याए नो परिदाहपडियाए महइमहालयंसि उदयंसि कायं चिउसिज्जा, तओ संजियामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा, अह गुण एवं जाणिज्जा पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा २ काएण दगतीरए चिडिज्जा ॥ से भि० उदउल्लं वा कायं ससि० कायं नो आमज्जिज्ज वा नो० अह पु० विगओदए मे काए छिन्नसिणेहे तहणगारं कायं आमज्जिज्ज वा० पायविज्ज वा तओ सं० गामां दूइ० ते साधु विहार करी बीजे गाम जतां मार्गमां जांय ह्वे तेटलु पाणी होय. तो उपरवुं शरीर मुहुपत्तिथी तथा नग्गी निचेहुं अहयुं शरीर ओघाथी पुंजीने पाणीमां मवेश करे, अने पाणीमा पेठा पळी एक्क जलमां सुकावो, बीजो पग उंचो करीने जवुं, पण

वे. पण वहे पाणी डोळता जवुं नहि, पण जयणाथी पाणी उतरवुं, जेम सरलताथी जवाय तेम जाय, पण विकार करतो आम तेम जोतो न चाले.

ते भिक्षु जंघासुथीना पाणीमां उतरी जतां हाथ साथे हाथ पण साथे पण विगेरे, अपकायनी रक्षा माटे लगाडवां नहि, तेज प्रमाणे सुख मेकववा दाह मटाडवा. उंडापाणीमां—छाती सुथीना पाणीमां उतरवुं नहि, फकत जंघा सुथीना पाणीमांज उतरवुं, पण पाणीमां उतर्यां पळी उपकरण सहित चालवा पोताने असपर्यं जुए अने डुववानो वक्त आवे तो बोजावळां उपकरण त्यजी देवा. पण शक्तिवान होय तो उपकरण सहित उतरे, पळी किनारे जइने इर्याविहि करी पाणी नीतरी गया पळी कायानी भीनाश ओळी थाय पळी शरीर तपावीने विहार करे. हवे पणीमांथी नीकळ्या पळीनी गमन विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० गामा० दूइजमाणे नो. मट्टियाणएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय २ विक्कुलिय २ विफालिय २ उम्पणेण हरियवहाए गच्छिजा, जमेयं पाएहिं मट्टियं रिवणामेव हरियाणि अवहसंतु, माइट्टाणं संफासे, नो एवं करिजा, से पुच्चा-मेव अप्पहरियं मगं पटिलेहिजा तओ० सं० गामा० ॥ से भिक्खू वा २ गामणुगामं दूइजमाणे अंतरा से वपणाणि वा फ० प्रा० तो० अ० अगलपासाणाणि वा गड्डाओ वा दरीओ वा सह परकमे संजयामेव परिकमिजा नो उज्जु०, केवली०, से तत्थ परकममाणे पयल्लिज वा २, से तत्थ पयलमाणे वा २ रुक्खाणि वा शुच्छाणि वा गुम्माणि वा लयाओ वा वल्लीओ वा तणाणि वा गहणाणि वा हरियाणि वा अवलंबिय २ उत्तरिजा, जे तत्थ पाट्टिपहिया उवागच्छंति ते पाणी ज्ञाहज्जा २, तओ सं० अवलंबिय २ उत्तरिजा तओ सं० गामा० दू० ॥ से भिक्खू वा० गा० दूइजमाणे अंतरा से

जवसाणि वा सगडाणि वा रशाणि वा मवक्राणि वा परचक्राणि वा से णं वा विरुक्खवं सनिरुद्धं पेहाए सह परक्कमे सं० नो० उ० से णं परो सणागओ वइजा आउसंतो ! एस णं समणे सेणाए अभिनिवारियं करेइ, से णं बाहाहे गहाए आगसह, से णं परो बाहाहि गहाय आगसिजा, तं नो सुमणे सिया जाव समाहीए तओ० सं० गापा० दूइ० ॥ (सू० १२५)

ते भिक्षु नदीना पाणीयांथी नीकळेओ होय, ते वखते जो उन्मार्गे जइने गाराथी खरडेला पगे लीला घासने छेदीने के बांहुं वाळीने तथा खेंची काढीने पोताना पण साफ करवाना इरादाथी वनस्पतिने दुःख दे तो ए कपटनुं निर्दित कार्य छे, माटे तेम न करवुं, पण प्रथमथी तहन ओछा घासवाळो मार्ग जोवो, अचित्त जग्यामां जइ प्रथम बताव्या प्रमाणे गारो दूर करवो पळी बीजे गाम विहार करवो.

साधुने विहार करतां मार्गमां वप्र (किल्लो) फलिह (खाइ) प्राकार (कोट) तोरण अर्गल अर्गलपासक खाडा गुफा (कोतर) ओळंगवाना आवे तो छती शक्तिए तेवा सीधा मार्ग न जवुं; पण दूरना खाडा विनाना रस्ते जवुं, कारणके त्यां जतां खाडा विगेरेमां पडतां सचित्त झाड विगेरेने पकडे, तो केवळी प्रभुए तेमां दोषो बताव्या छे, पण बीजो रस्तो न होय अने खास कारणे ते मार्गे जवुं पढे अने पण खसे तेवुं होय, तो झाड गुच्छा गुल्मलता वेला घास छोडवा अथवा जे पकडवा जोग दाथमां आवे, ते लइने उतरवुं, अथवा रस्तामां जता मुसाफरनी मदद मागीने शाय पकडीने उतरवुं, पळी गाराथी के खाडाथी बहार आवी संभाळथी बीजे गाम विहार करवो.

ते भिक्षुने विहार करतां मार्गमां घटं जवनां खेतर आवे, गाडां रथ होय, के ते गामना राजाहुं के बीजा राजाहुं लइकर

पहेलुं होय, तो बीजो रस्तो मळतां ते रस्ते न जवुं, कारणके त्यां जतां बहु अपायो छे, पण बीजो रस्तो न होय, शक्ति न होय, तो ते मार्गो जतां सेनानो अजाण्यां माणस साधुने न ओळखवाथी बीजा माणसोने कहे के “आ जासुस आवेलो छे, माटे धको मारीने बाहुमांथी पकडीने वहार काढो” अने ते प्रमाणे कदाच करे, तो पण तेमना उपर क्रोध न लावतां समाधिर्थो विहार करे, से भिक्खू वा० गासां० दूज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिजा ते णं पडिवहिया एवं वइजा-आउ० समणा ! केवइए एस गासे वा जाव रायहाणी वा केवइया इत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुससा परि वसंति ! बहुयत्ते बहुउ-दए बहुजणे बहुजवसे से अप्पयत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ? एयत्पगाराणि पसिणाणि पुच्छिजा, एयत्प० पुट्टो वा अप्पुट्टो वा नो वागरिज्जा, एवं खड्ड० जं० सव्वटठेहिं० (सू० १२६) ॥ २-१-३-२

ते साधु साध्वीने मार्गो चालतां मुसाफरो मळे, तेओ आ प्रमाणे पूछे के हे साधुओ ! तमारा विहारसां आवेलुं गाम के राज्य-धानी केवी मोटी छे ! तथा अहीं केटला घोडा हाथी गामना भीखारीओ के माणसो वसे छे, अथावा वणुं रांधेलुं अन्न प्राणी के अनाज मळे छे ? के ओलुं भोजन पाणी के अनाज मळे छे ? एवा प्रकारना प्रश्नो पूछे, अथवा न पण पूछे, तो पण पोते बोलवुं नहि, (भाषातर वाळा आचारंगसूत्रयां याठ विशेष छे. एतथा गाराणि पसिणाणि णो पुच्छेज्जा आवा प्रश्नो मुनिए पण मुसाफरने पूछवा नहि,)

आज साधुनुं सर्व साधुपणु छे.

त्रीजो उद्देशोः

त्रीजो उद्देशो कहीने दवे त्रीजो कहे छे, तेनो आ पमाणे संबंध छे. गयामां गमनविधि बतावी, अही पण तेज कहे छे. आ संबंध आवेला उद्देशतुं आ प्रथम सूत्र छे.

से भिक्खू वा गामा० दूइजमाणे अंतरा से वप्याणि वा जाव दरीओ वा जाव कडागाराणि वा पासायाणि वा नुमणि-
हाणि वा सक्खणिहाणि वा पव्वयणि० सखलं वा चेइयकडं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा नो वाहाओ पणिञ्जिय
२ अंगुलिआए उहिसिय २ ओणमिय २ उन्नमिय २ निडझाइज्जा, तओ सं० गामा० ॥ से भिक्खू वा० गामा० दू०
माणे अंतरा से कच्छाणि वा दवियाणि वा नुमाणि वा बलयाणि वा गहणाणि वा गहणविदुग्गाणि वणाणि वा वणवि०
पव्वयाणि वा पव्वयवि० अगडाणि वा तलगणाणि वा दहाणि वा नईओ वा वावीओ वा पुक्खरिणीओ वा दीहियाओ
वा मुंजालियाओ वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा नो वहाओ पणिञ्जिय २ जाव निडझाइज्जा, केवली०,
जे तस्य मिगा वा पसू वा पंखी वा वा सरीसिवा वा सीहा वा जलचरा वा थलचरा वा सहचरा वा सत्ता से उत्तसिज्ज
वा वित्तसिज्ज वा वाडं वा सरणं वा कंखिज्जा, चारित्ति मे अयं समणे, अह भिक्खू णं पु० जं नो वाहाओ पणिञ्जिय २
निडझाइज्जा, तओ संजयामेव आयरिउवञ्जाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइजिज्जा ॥ (सू० १२७)

ते भिक्षु वीजे गाम जतां वचमां जुए के साइ, कोट, मेडावाकां घर, पर्वत उपरनां घर, भांयरां, वृक्षशी प्रधान घर, अथवा

झाड उपरनां निवासस्थान, गुफाओ, झाडना नीचे द्यंतरनां स्थळ, द्यंतर माटे करेली देरडीयो, मढो, भवनमूह विगेरे जे कंइ रमणीय स्थान होय, ते हाथ उंचा करी करीने अंगुलीथी उहेथी उहेथीने उंचा नीचा थइने जोधां नहि, तेम वीजाने वतावचां पण नहि, तेमां दोषो आ छे के, ते स्थानमां आग लागे के चोरी थाय तो ते साधु उपर शंका आवे, तथा मूहस्थो एम जाणे के, आ उपरथी त्यागी छतां अंदरथी इंद्रियोथी परवश छे, तथा त्यां वेठेलो पक्षीनो समुदाय चास पासे, माटे साधु तेहुं न करतां शीतिथी विहार करे, तथा मार्गे विहारमां नीचली वावतो होय, नदीना नीचाण भागमां वसेला (कच्छ) देशो अथवा मूला बालोकनी वाहीओ; दवियाणि (नीड) जेमां राजा तरफथी घास माटे जमीन रोकेली होय छे ते, तथा नीचाणना वाडा (खीण) बलयो (नदीए वीटला भूमीभागो) गहन उजाड पदशे, अथवा पाणी विनातुं रण अथवा उजाड पहाळी किल्ला वन मोटां वन पर्वत पर्वतसमूह होय, तथा कुवा तलाव कुंड नदीओ वावडीओ कमळवाळी तथा लांबी वावडीओ गुंजालिका वांकी वावडीओ सरोवर सरोवरनी श्रेणि होय, जोडे जोडे तलावो होय, आ बधुं देखवा योग्य होय, छतां पण हाथ उंचा करीने के आंगळीथी इशारत करीने वतावतुं नहि, तथा देखतुं नहि, केवळी पशु तेमां नीचला दोषो वतावे छे, कारण के तेमां रहेला मृगो वीजां पशु पक्षी साप सीह जलचर थलचर खेचर विगेरे जीवो होय, ते चास पासे, भडके, अथवा शरण लेवा आम तेम दोडे, तेथी तेनी नजीकमां रहेनार लाकोने साधु उपर शक आवे माटे साधुए मार्गमां चालतां तेम न करतुं, माटे शाल्ल जाणनारा एवा आचार्य उपाध्याय विगेरे गीतार्थ साधुओ साथे पोते विचरे. हवे आचार्य विगेरे साथे चालतां साधुनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा २ आयरिउवज्झा० गामा० नो आयरियउवज्झायस्स इत्येण वा इत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव

आयरिउ० सदिं जाव दइजिजा ॥ से भिन्नखू वा आय० सदिं दइजमाणे अंतरा से पाडिवहिया जगगच्छिजा, ते णं जा एवं वइजा—आउसतो! समणा! के तुन्धे? कओ वा एह? कहिं वा गच्छिहह?, जे तत्थ आयरिए वा उवज्जाए वा से भासिजा वा वियागरिजिजा वा, आयरिउवज्जायसस भासमाणसस वा वियागरेमाणसस वा नो अंतरा भासं करिजा, तथो० सं० अहाराइणिए णा० दइजिजा ॥ से भिन्नखू वा अहाराइणियं गामा० दू० नो राइणियसस हत्थेण हत्थं जाव अणारायमाणे तओ सं० अहाराइणियं गामा० दू० ॥ से भिन्नखू वा २ अहाराइणिअं गामाणुगामं दइजमाणे अंतरा से पाडिवहिया उभागच्छिजा, ते णं पाडिवहिया एवं वइजा—आउसतो! समणा! के तुन्धे? जे तत्थ सव्वराइणिए से भसिजा वा वागरिजिजा वा, राइणियसस भासमाणसस वा वियागरेमाणसस वा नो अंतरा भासं भासिजा, तओ संजयामेव अहाराइणियाए गामाणुगामं दइजिजा ॥ (मू० १२८)

ते भिक्षु आचार्य विगेरेनी साथे विहार करतां गुरु विगेरेथी एटलो दूर उभां रहे, के दाय विगेरेनो स्वर्षं न थाय, तथा ते भिक्षु आचार्य विगेरेनी साथे जतां मुसाफरो पूछे के हे साधुओ! तमे कोण छो? क्यांशी आवां छो? क्यां जवाना छो? ते समये जे आचार्य उपाध्याय विगेरे जे मोटा होय, ते उत्तर आपे, अथवा खुलासाथो समजावे, पण आचार्यादि उत्तर आपे, तेमां पीते वचमां कंइ पण न बोले, तेमज जे रत्ताधिक (चारित्रपर्याये के ज्ञाने मोटा होय ते) आगळ चाले, पीते पछवाडे चाले, अने चार हाथनी दृष्टि राखी चाले, ते भिक्षु वळी जे आचार्यने बदले रत्ताधिक साथे चालतो होय, तेमने पण हाथ विगेरेथी स्वर्षं न करे, अने रस्तामां मुसाफरो मळतां ते पूछे तो रत्ताधिके उत्तर आपवो, एटले सौथी मोटाए उत्तर आपवो, पण ते मोटा साधु बोलता होय,

त्यारे वचमां अन्य साधुए बोलवुं नहि, तेज प्रमाणे संयतोए मोटा रत्नाधिक साधुने आगळ करीने विहार करवो, वळीः—
 से भिक्खू वा० दूइजमाणे अंतरा से पाडिबहिआ उवागच्छिजा, ते णं पा० एवं वइजा—आउ० स०! अविआइं इत्तो
 पडिवहे पासह, तं०—मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा पसुं वा पक्खिं वा सिरीसिवं वा जलयरं वा से आइक्खह दंसेह, तं
 नो आइक्खिज्जा नो दंसिजा, नो तस्स तं० परिन्नं परिजाणिज्जा, तुसिणिए उवेहिज्ज, जाणं वा नो जाणंति वइज्जा,
 तओ स० गामा० दू० ॥ से भिक्खू वा० गा० दू० अंतरा से पाडि० उवा०, ते णं पा० एवं वइजा—आउ० स०!
 अविआइं इत्तो पडिवहे पासह उदगपसूयाणि कंदाणि वा मूलाणि वा तथा पत्ता पुप्फा फला वीया हरिया उदगं वा
 संनिहियं अगणिं वा सनिखित्तं से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से पाडि०
 उवा०, ते णं पाडि० एवं आउ० स० अविआइं इत्तो पडिवहे पासह जवसाणि वा जाव से णं वा विरुक्खवं संनिविट्ठं से
 आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा पा० जाव आउ० स० केवइए इत्तो गामे वा
 जाव रायहाणिं वा से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, अंतरा से पाडिपहिआ
 आउसंतो समणा! केवइए इत्तो गामस्स नगरस्स वा जाव रायहाणीए वा मग्गे से आइक्खह, तहेव जाव दूइज्जिज्जा॥(सू० १२९)
 ते साधुने मार्गमां जतां कोइ सुसाफर पूछे के, हे साधु! तमे रस्तामां आवातां कोइ माणस जोयो? वळय भेस पशु पंखी सरीसृप
 जलचर जे कंइ देखुं होय ते कर्हो, अथवा बतावो, तो ते समये साधुए कंइ पण बोलवुं नहि, तेम बतावुं नहि, तेनी ते वात
 साधुए कबुल राखवी नहि, मौन रहेवुं, अथवा जाणतो होय. तो पण नथी जाणतो, एम कहेवुं, तेज प्रमाणे समाधिधी विहार करवो.

तेज ममाणे साधुने मार्गमां पूढे, के जळमां धनारां कंद मूळ छाल पांदडां फूल फळ बीज हरित (भाजी) पाणी अथवा स्थापेला अग्नि होय तो न्तावो, ते समये पण मौन रहेवुं, जाणवा छतां, 'नयी जाणतो' एम कहेवुं, अथवा पूढे के मार्गमां जब घटनां खेतर अथवा जुदुं जुदुं जे जोयुं होय ते कहेत, तोपण मौन रहेवुं, तेज ममाणे पूढे के अर्हीथी गाम अथवा राजधानी केदली दूर छे? तो पण मौन रहेवुं, अथवा अमुक गाम अथवा नगर के राज्यधानीए क्यो रस्तो जाय छे? विगरे पूढे तो मौन रहेवुं, पण ते संबंधी उत्तर आपवो नहि.

से भिक्खू० गा० दू० अंतरा से गोंणं वियालं पडिवहे पेहाए जाव चित्तचिह्णं वियालं प० पेहाए नो तेसि भीओ उम्मज्जेणं गच्छिज्जा नो मग्गाओ उम्मज्जेणं संक्रमिज्जा नो गहणं वा वणं वा दुग्गं वा अणुपविसिज्जा नो रुक्खंसि दूरुहिज्जा नो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसिज्जा नो वाडं वा सरणं वा सेणं वा सत्थं वा कंखिज्जा अपपुरुसुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू० गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं पुण विहं सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा इमंसि खलु विहंसि वहवे असोसगा। उवगरणपडियाए संपिडिया गच्छिज्जा, नो तेसि सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा इमंसि खलु विहंसि वहवे असोसगा। उवगरणपडियाए संपिडिया गच्छिज्जा, नो तेसि भीओ उम्मज्जेण गच्छिज्जा जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥ (सु० १३०)

ते भिक्षुने विहार करतां मार्गमां बळय के साप उन्मत्ता थएलो जुए, सिंह चीतरो अथवा तेहुं बच्चुं जुए, तो तेना भयथी दरीने उन्मार्गे जवुं नहि, तेम उज्जड अरण्यमांजुसवुं नहि, तेम झाड उपर पण चडवुं नहिं, तेम पाणीमां पण पेसवुं नहि, तेम वाढामां पेसवु नहि, बीजाहुं शरण चाहवुं नहीं, पण उत्सुकता राख्या चिना शांतिथी जवुं आ मूत्र जिनकल्पी आश्रयी छे, पण

स्थविर कल्पीए तो साप विगेरेने बाजुए टाळी नीकळवुं, वळी ते मर्णे चालतां लांबी उजाड अटवी आवे, अने तेमां चोरो रहेता हीय, अने ते चोरो उपधि लेवा आवता होय, तो पण तेना दर्या उन्मार्गे जवुं नहि, पण सीधे रस्ते गांतिशी विहार करता जवुं. से भिवखू वा० गा० दू० अंतरा से आमोसगा संपिडिया गच्छिज्जा ते णं आ० एवं वइज्जा—आउ० सं० ! आहार एयं वत्थं वा० ४ देहि निक्खिवाहि, तं नो दिज्जा निक्खिविज्जा, नो वंदिय २ जाइज्जा, नो अंजलि कटु जाइज्जा, नो कळुणपडियाए जाइज्जा, धम्मियाए जायाणए जाइज्जा, सुस्सिणीयभावेण वा ते णं आमोसगा सयं करणिजंति कटु अकोसंति वा जाव उद्विंति वा वत्थं वा ४ अच्छिदिज्ज वा जाव परिट्टिविज्ज वा, तं नो गामसंसारणियं कुज्जा, नो राय-संसारियं कुज्जा, नो परं उवसंकमित्तु वूया—आउसंतो ! गाहावई एए खळु आमोसगा उवगरणपडियाए सयं करणिज्ज-तिकटु अकोसंति वा जाव परिट्टवंति वा एयणगरं मणं वा वायं वा नो पुरओ कटु विहरिज्जा, अपुस्सुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामा० दइ० ॥ एय खळु० सया जइ० (सू० १३१) त्तिवेमि ॥ समाप्पमीयत्थियं तृतीयमध्ययनम् ॥ भिक्षुने विहार करतां चोरो भेगा थइने उपकरण यावे, तो तेमने हाथमा अर्पण करावा नहि, बळयी ग्रहण करं तो जमीन उपर नांखी देवां, अने चोरे लीधा पळी तेने बंदन करीने याचवां नहि, तेम हाथ जोडीने दीनताथी पण याचवो नहि, पण धर्म समजावीने याचवां अथवा चुप रहीने उपेक्षा करवी, तथा ते चोरो पोताना कर्त्तव्य प्रमाणे आक्रोश करे, दंडथी मारे अथवा जीव ले, तो पण तेना सामे थवुं नहि, पण तेओ माल विनानां समजी पाळां फेकी दे, फाटी नखे तो पण तेमनी चेष्टा गाममां के राजकळमां कहेवी, नहि, अथवा बीजा गृहस्थने पण एम न कहेवुं के आ चोरोए आ प्रमाणे करुं छे. तथा मनथी के वचनथी तेना

उपर दुर्भाव बताववो नहि, पण उत्सुकता छोडी समाधिथी विहार करी बीजे गाम जवुं. आज साधुनी साधुता हे.

बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

बोधुं अध्ययन भाषा जातम्

बीजुं अध्ययन कहुं, इवे बोधुं कहे हे, तेनो आ प्रमाणे संबंध हे, बीजा अध्ययनमां पिंडविशुद्ध माटे गमनविधि कशी त्यां गयेलाए मार्गमां आ प्रमाणे बोलवुं आम न बोलवुं, ते बताववो, आ संबंधे आवेळा आ भाषा जात अध्ययनना चार अनुयोगद्वारा थाय हे, तेमां निक्षेपनिर्युक्ति अनुगममां भाषाजात शब्दोना निक्षेप माटे निर्युक्तिकार कहे हे.

जह वक्तं तह भासा जाए छकं च होइ नायवं । उत्पत्तीए ? तह पञ्चवं २ तरे ३ जायगहणे ४ य ॥ ३१३
वाक्य शुद्धि नामना अध्ययनमां जेम वाक्यनो पूर्वे निक्षेप कर्यो हे, ते प्रमाणे भाषानो पण करवो.

जात शब्दना निक्षेपाहुं वर्णन.

पण जात शब्दतो छ प्रकारे निक्षेपो करवो, नाम स्थापना क्षेत्र काळ अने भाव हे, एमां नाम स्थापना सुगम हे, द्रव्य जात भागप्रथी अने नो आगप्रथी हे, तेमां व्यतिरिक्तमां निर्युक्तिकार पाळळनी अडथी गाथाथी कहे हे, ते चार प्रकारे उत्पत्तिजात, पर्यवजात, अंतरजात, अने ग्रहण जात हे. (१) तेमां उत्पत्तिजात ते जे द्रव्यो भाषा वर्णणानी अंदर पहेलां काययोगथी ग्रहण करेलां

ते वाग्योगवदे निस्पृष्ट धयेलां भाषा पणे उत्पन्न थाय, ते उत्पत्तिजात हे, अर्थात् जे द्रव्य भाषापणे उत्पन्न थाय ते. (२) तेज वाचाथी निस्पृष्ट भाषा द्रव्योवदे जे विश्रेणीमां रहेला भाषा कर्मणांनी अंदर रहेलां निस्पृष्ट द्रव्यना पराघात वडे भाषा पर्यायपणे जे उत्पन्न थाय हे, ते द्रव्योपर्यवजात करेवाय हे, (३) जे द्रव्यो अंतराले समश्रेणिमांज निस्पृष्ट द्रव्यनी साथे मिश्रित भाषा परिणामने भजे, ते अंतरजात हे. (४) वळी जे द्रव्यो समश्रेणिमां रहेला भाषापणे परिणमेलां कर्ण शक्कुली (काननी अंदर)ना काणामां पेठेलां ग्रहण कराय हे, ते अनंत पदेशवाळां द्रव्यथी हे, तथा असंख्यमदेशवाळा अवकाशमां अवागाढेलां क्षेत्रथी हे, काळथी एक वे त्रणथी मांडीने असंख्यात समय सुधीनी स्थितिवाळां हे, भावथी वर्ण गंध रस स्पर्शवाळां हे, ते आवां द्रव्यो 'ग्रहणजात' हे, द्रव्यजात कथें,

क्षेत्रादिजात तो स्पृष्ट होवाथी निर्धुक्त्तिकारे कलां नथी, ते आ प्रमाणे हे, जे क्षेत्रमां भाषाजानतुं वर्णन चाले, अथवा जेदड्डुं क्षेत्र स्पर्श करे, ते क्षेत्रजात हे, एज प्रमाणे जे काळमां वर्णन चाले ते काळजात हे, भावजात तो तेज उत्पत्ति पर्यव अंतर ग्रहण द्रव्य सांभळनारना कानमां जणाय, के "आ शब्द" हे, एवी बुद्धि उत्पन्न करे, पण अहि अधिकार द्रव्य भाषाजात वडे हे कारण के द्रव्यनी पर्यांन विवक्षा हे, द्रव्यनो विशिष्ट अवस्था भाव हे, ते माटे भाव भाषा जात वडे पण अधिकार हे,

उद्देशाना अर्थाधिकार माटे कहे हे:—

सव्वेचि य वयणविसोहिकारणा तहवि अत्थि उ विसेसो । वयणविभन्नी पढमे उप्पत्ती वज्जणा बीए ॥ ३१४ ॥

जो के बे उद्देशा पण वचन विशुद्धि करनारा छे, तो पण ते दरेकमां विशेष छे, ते आ छे, प्रथमना उद्देशासां वचननी विभक्ति छे, एटले एकवचनधी लइने सोक प्रकारना वचननो विभाग छे. तथा आहुं वचन बोलहुं, आहुं नहि, तेनुं वर्णन छे बीजा उद्देशासां क्रोध विगेरेनी उत्पत्ति जेप न थाय, तेम बोलहुं, हवे सूत्र अनुगममां अस्वल्लितादि गुणयुक्त सूत्र छे, ते आ प्रमाणे छे:—

से भिक्खू वा २ इमाइं वयायाराइं सुच्चा निसभम इमाइं अणायाराइं अणारियपुन्वाइं जाणिज्जा—जे कोहा वा वायं विउंजति जे माणा वा० जे मायाए वा० जे लोभा वा वायं विउंजति जाणओ वा फरसं वयंति अजाणओ वा फ० सब्बं केयं सावज्जं वल्लिज्जा विवेगमायाए, युवं केयं जाणिज्जा अयुवं केयं जाणिज्जा असणं वा ४ कभिय नो कभिय भुंजिय नो भुंजिय अदुवा आगओ अदुवा नो आगओ अदुवा एइ अदुवा नो एइ अदुवा एहिइ अदुवा नो एहिइ इत्थवि आगए इत्थवि नो आगइ इत्थवि एइ इत्थवि नो एति इत्थवि एहिति इत्थवि नो एहिति ॥ अणुवीइ निट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा, तंजहा—एगवयणं १ दुवयणं २ बहुव० ३ इत्थि० ४ पुरि० ५ नपुंसगवयणं ६ अउन्नत्थव० ७ उवणीयवयणं ८ अवणीयवयणं ९ उवणीयअवणीयव० १० अउवणीयउवणीयव० ११ तीयव० १२ पट्ठपक्खव० १३ अणायव० १४ पक्खववयणं १५ परक्खव० १६ से एगवयणं वईस्सामीति एगवयणं वइज्जा जाव परक्खववयणं वईस्सापीति परक्खववयणं वइज्जा, इत्थी वेस पुरि सोवेस नपुंसगं वेस एयं वा केयं अन्नं वा केयं अणुवीइ निट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा, इच्चेयाइं आययणाइं उवातिकम्म ॥ अह भिक्खू जाणिज्जा चत्तारि भासज्जायाइं, तंजहा—सक्खमेगं पढमं भासज्जायं १ बीयं मोसं २ तईयं सक्खामोसं ३ जं नेव सत्तं नेव मोसं नेव सक्खामोसं असक्खामोसं नाम तं

चउत्थं भासजायं ४ ॥ से बेमि जे अईया जे य पडुपपना जे अणागया अरहता भगवंतो सर्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु वा भासंति वा भासिस्संति वा पत्तविंसु वा ३, सच्च्याइं च णं एयाइं अचित्ताणि कणमंताणि गंध-मंताणि रसमंताणि फासमंताणि चओवचइयाइं विपपरिणामधम्ममाइं भवंतीति अक्खवायाइं ॥ सू० १३२)

साधुने आ अंतःकरणमां उत्पन्न थएला (इदम् आ मत्पक्ष समीप वाची शब्द बढे बलाबेल होवाथी) तथा जोडाजोड वाणी संबंधी आचार ते वागाचार (वाणीना आचार) सूत्रकार नतावे छे, ते सांभळीने तथाहृदयमां जाणीने भाषा समिति बढे ते साधुए वचन बोलवुं. ते हवे विगत कार कहे छे.

तेमां प्रथम आवी भाषा न बोलवी, ते अनाचरित भाषाहुं वर्णन करे छे, ते न बोलवा योग्य अनाचार कहे छे, एटले, जे क्रोधथी वाचा बोले छे, जेमके तुं चोर छे दास छे ! तथा केटलाक मानथी बोले छे, जेमके हुं उत्तम जातिनो हुं तुं अधम जातिनो छे, तथा मायाथी बोले छे जेमके हुं मांदो छुं. (पण मांदो होय नहि) अथवा बीजानो सावध (पापबळो) संदेशो कोइ उपाय बढे कहीने पछी मिथ्यादुक्कृत करे छे, आ तो माराथी सहसा (उतावळथी) बोलइ गयुं छे! तथा कोइ लोभयो बोले के आ वचन बोलवाथी हुं कइक मेळवीच. तथा कोइनो दोष जाणता होय, तेनो दोष उघाडवा बढे कठोर वचन बोले छे, अथका अजाण पणे बोले छे, आ बधु उपर कहेछं सयळं क्रोधादिमुं वचन पाए सहित होवाथी (सावध छे माटे) ते वर्जवुं, अर्थात् विवेकी बनीने साधुए तेहुं वचन न बोलवुं.

तथा कोइ साधे साधुए बोलतां निश्चायात्मक वाचा न बोलवी के “ अमुक वरसाद् विगरे वनशेज ” तेवीज रीते अधुव पण

जाणवुं, (के आमं नह्जि वने) अथवा क्रोह साधुने भिक्षा माटे क्रोह ज्ञाति के कुलमां प्रवेश करतो जोइने तेने उद्देशीने बीजा साधुओं आबुं बोले के आपणे खाइ लो, ते लइनेज आवशे, अथवा तेने माटे राखी मुक्तो ते कंइ पण लीधा विनाज आवशे अथवा त्यांजं खाइने अथवा खाधा विनाज आवशे, तेवुं निश्चयात्मक वचन पण न बोलवुं, तथा आवी वाणी न बोलवी, के राजा विगरे आब्यो छेजं, तथा ते नथीज आब्यो, अथवा आवेछेज, आववानो नथीज, तथा ते आवशेज, अथवा आवशेज नहि, ए प्रमाणे पत्तनं मटे विगरे आश्रयी पण भूत भूत विगरे त्रणे काल आश्रयी योजवुं, ते बयानो सार आ छे के जे अर्थने पोते वरोबर न जाणे त्यां आगळ आ 'एमज छे' एम न बोलवुं,

सामान्यथी साधुने कथी जग्याए लाणु पढतो आ उपदेश छे के विचारीने, सम्यग् रीते निश्चय करीने अथवा श्रुत उपदेश वढे प्रयोजन वढे साधारण 'निश्चय आत्मक' वनीने भाषा समिति वढे अथवा रागद्वेष छोडीने सोळ वचननी विधि जाणीने भाषा बोले, जेवी भाषा बोलवी ते सोळ प्रकारना वचननी विधिवाळी भाषा बतावे छे. सोळ प्रकारनी भाषा.

(१) एक वचन जेमके 'दृशः' (२) द्वि वचन 'दृक्षौ' (३) बहु वचन 'दृक्षाः' आ त्रण वचन थयां.

त्रण प्रकारना लिंग आश्रयी कहे छे.

- (४) स्त्री वचन वीणा, कन्या, (५) पुं वचन 'पदः', पदः (६) नपुंसक वचन पीठं, देवकुलं (देवक) अख्यात्म वचन. (७) आत्मायां रहेलुं ते अख्यात्म (हृदयमां रहेलुं) तेना परिहार करवावढे अन्य बोलवा जसां बीजुंज (खरं) सहसात्कारे बोलइ जाय. (८) उपनीत वचन ते प्रशंसानुं वचन जेम सुंदर स्त्री (९) कथी उलटुं अपनीत निंदावाळं वचन कुरपवाळी स्त्री. (१०)

उपनीत अपनीत वचन कंडक पशंया योग्य गुण वतावी निदा आत्मकगुण वतावे जेपके आ स्त्री सुंदर छे, पण कुलटा छे. (११) अपनीत उपनीत वचन ते पथमथी उलटुं छे, जेपके आ स्त्री कुरपा छे पण शीलव्रत पाळनारी सती छे. (१२) अतीत वचन कृतवान् कर्युं. (१३) वर्तमान वचन करे छे, (१४) अनागत वचन 'करशे' (१५) पन्त्यक्ष वचन आ देवदत्त छे. (१६) परोक्षवचन ते देवदत्त छे, आ प्रमाणे सोळ वचनो छे, आ सोळ वचनोमां साधुने जरूर पढे, त्यारे एक वचननी विविक्षायां एक वचन बोले, ते परोक्ष वचन सुधीयां ज्यां जहुं योग्य होय त्यां तेहुं बोले, तथा स्त्री विगरे देखे छते आ स्त्रीज छे, अथवा पुरुष अथवा नपुंसक छे, जेहुं होय तेहुं बोले, आ प्रमाणे विचारी निश्चय करीने सत्य बोलनारो समितिबहे अथवा समपणे संयत भाषा बोले, तथा पूर्वे कहेलां अथवा हवे पछी कहेवाता दोषोनां स्थान छोडीने भाषा बोले, ते भिक्षु चार प्रकारनी भाषाओ जाणे, ते आ प्रमाणे—

- (१) सत्यभाषाजात—ते यथार्थ वचन अर्चितथ (खरेखरं) बोलवुं. गाय होय तो गाय अथ्व होय तो अथ्व कहेवो.
- (२) एथी विपरीत ते मूषा (जठ) बोलवुं—एटले गायने अथ्व कहेवो, अथ्वने गाय कहेवी.
- (३) सत्यमूषा—जेमां थोडुं सत्य थोडुं असत्य. जेपके—देवदत्त घोडा उपर बेसीने जतो होय तो उंट उपर : बेसीने देवदत्त जाय छे एम कहेवुं.

(४) बोलोयेली भाषायां सत्य, जुठ के मिश्रपणुं न होय, ते आभंजण आज्ञापन विगरेमां सत्य जुठ नथी ते असत्यामूषा चोथी भाषा छे, आ नहुं सुधर्मास्वामीए पोतानी बुद्धिथी नथी कहुं तेथी कहे छे, के जे पूर्वे तीर्थंकर थाय, वर्तमानमां छे अने भविष्यमां थशे ते वधा तीर्थंकरोए कहुं छे, हमणां कहे छे अने कहेशे, के आ वधाए भाषाद्रव्य अचित्त छे, वर्ण गंध रस फरस-

वाळां, चयं, उपचय विगेरे विविध परिणाम धर्मवाळां हे, एतुं तीर्थकरे कहेल्ले हे, अहीं वर्ण विगेरे गुणो वताववाथी शब्दतुं सूच पणुं वतावतुं, पण अन्यलोक एतुं माने हे, के 'शब्द आकाशना' गुण' हे, ते आकाशने वर्ण विगेरे नथी माटे शब्द रूपी नहि पण अरुपी हे, तेम जैनां मानता नथी, तथा चय—उपचय धर्म वताववाथी शब्दतुं अनित्यपणुं वतावतुं; कारण के शब्दद्रव्योतुं विचित्रपणुं सिद्ध थाय हे. हवे शब्दोतुं कृतत्व प्रकट करवा कहे हे.

से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा गुठिं भासा अभासा भामिज्जमाणी भासा भासा भासासपयवीहकंता च णं भासिया भासा अभासा ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा जा य भासा सच्चा १ जा य भासा मोसा २ जा य भासा सच्चा मोसा ३ जा य भाषा असच्चमोसा ४, तहपगारं भासं सावज्जं सकिरियं ककसं कडयं निदुरं फरुसं अण्हयकरिं हेयणकरिं भेयणकरिं परिचावणकरिं उदवणकरिं भूओवघाइयं अभिकंखं नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण जाणिज्जा, जा य भासा सच्चा सहमा जा य भासा असच्चामोसा तहपगारं भासं असावज्जं जाव अमूओवघाइयं

अभिकंख भासं भासिज्जा ॥ (म० १३३)

ते भिक्षु आ प्रमाणे शब्दने जाणे, के भाषा द्रव्य वर्णनाओना वाक्ययोग निसरवार्थो पूर्वे जे आ भाषा हती, ते वाक्योगवदे निसरवार्थीज भाषा कहेवाय हे, आ कहेवार्थी तालतुं ओठ विगेरेना व्यापारथी पूर्वे जे शब्द नहाता, ते ते उत्पन्न करवाथी खुलेखुले (प्रकट) कृतक (वनाववा) पणुं सूचवतुं हे. जेम माटीना पिंडमां प्रथम घडो नहातो, ते कुंभारे प्रयोजन आवतां दंडचक्रवदे घडाने वनावयो, तेम ते भाषा बोलाया पछी नाय पामती होवार्थी शब्दोतुं बोलाया पछीना काळमां अभाषापणुं हे, जेमके घडो फुटवार्थी

टीकरां थयां, त्यारे ते कणाल (टीकरं—टीव) नीअवस्थामां घडो ते अघडो थयो छे, आ वाक्योवडे शब्दोनो पूर्व अभाव तथा पध्वंस) (नाश थवाथी) अभाव वताव्यो छे, हवे चारे भाषामांथी न बोलवा योग्य भाषाने कहे छे, ते भिक्षु आ प्रमाणे जाणे के १ सत्य २ मृषा ३ सत्यामृषा ४ असत्यामृषा एम भाषा चार भेदे छे. तेमां मृषा सत्यामृषा तो बोलवा योग्य नथी, पण सत्य वचन पण कर्कश विगेरे दुर्गुणवाळुं न बोलवुं, ते वतावे छे.

(१) अवद्य (पाप) सहित वर्त्ते, ते 'सावद्य भाषा' सत्य होय तो पण न बोलवी, (२) सक्रिय—ते जेमां अनर्थ दंडनी क्रिया पवर्त्ते, ते पण भाषा साधुए न बोलवी (३) कर्कश ते चावेला अक्षरवाळी (४) कटुक—ते चिराने उद्वेग करनारी (५) निष्ठुर ते हक प्रधान (ठपका रूप) (६) परुषा ते पारकानां मर्म उघाडवा रूप (७) कर्मास्त्रव करनारी, तेज प्रमाणे छेदन भेदन ते ठेठ अप-द्रावण करनारी सुधी जे जीवोने उपताप करनारी होय, ते मनथी विचारिने सत्य होय तो पण न बोलवी, हवे बोलवानी भाषा कहे छे. ते भिक्षु आ प्रमाणे जाणे, के जे भाषा सत्य छे, तथा कोमल विगेरे गुणोवाळी जीवोने उपताप न करनारी भाषा छे, ते बोलवी, तथा कुशाग्रहृद्धिवडे विचारिने जे सूक्ष्म भाषा बोलाय, ते बरवते मृषा पण सत्य जेवी गुणकारी थयां, जेम के मृग देखुं होय, छतां शिकारी आगळ ते मृगनी रक्षा खातर 'न देखुं' कहे, तो सत्य जेवुंज गुणकारी छे, कहुं छे के.

अलिधं न भासिअवं अस्थि हु सखंपि जं न वत्तवं । सखंपि होइ अलिधं जं परपीडाकरं वयंणं ॥ १ ॥

जेम जूठ न बोलवुं, तेम सत्य पण जे परने पीडाकारक वचन होय ते जूठा जेवुं जाणीने बोलवुं नहि, तथा जे असत्यामृषा छे ते आमंत्रणी (आवो) आज्ञापकनी (आम करो) विगेरे पण जे असावद्य अक्रिय अमजोर जीवने दुःख न देनारी होय, ते मनथी

विचारीने हमेशां साधुए बोलवी—

से भिक्खू वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अप्पडिसुणेमाणे नो एवं वइज्जा-होल्लिति वा गोल्लिति वा वंसुलेत्ति वा कुप्पक्खेत्ति वा वडदासिति वा साणेत्ति वा तेणित्ति वा चारिएत्ति वा माईत्ति वा; सुसावाइत्ति वा, एयाइं तुमं ते जणगा वा, एअप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं जाव भूआवयाइयं अभिकंख नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अप्पडिसुणेमाणे एवं वइज्जा-अमुणे इ वा आउसोत्ति वा आउसंतारोत्ति वा सावणेत्ति वा उवासणेत्ति वा धम्मिएत्ति वा धम्मिएत्ति वा, एयप्पगारं भासं अंसावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ इत्थि आमंतेमाणे आमंतिए य अप्पडिसुणेमाणे नो एवं वइज्जा-होली इ वा गोल्लिनि वा इत्थीणमेणुं नेयवं ॥ से भिक्खू वा २ इत्थि आमंतेमाणे आमंतिए य अप्पडिसुणेमाणी एवं वइज्जा-अउसोत्ति वा भइणित्ति वा भोईत्ति वा भगवईत्ति वा साविणेत्ति वा उवासिएत्ति वा धम्मिएत्ति वा धम्मिएत्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ॥ (सू० १३४)

ते साधु जरर पडतां कोइ माणसने बोलवे, अथवा पूरे बोलान्यो होय, पण ते माणसे लक्ष्य न आपुं होय, तो तेने आवा कठोर शब्दो न कहेवा, के तुं होल, गोल (आ वंने शब्दो बीजा देवमां अपमान रूपे छे,) तथा दुषल अथवा कजात घटदास कुत्तो चोर, अथवा चारिकमायी मृपावादी अथवा तुं ! आबो अथवा तारां माबाप आवां छे ! आ भाषा कठोर होवाथी साधुए न बोलवी, पण तेथी विपरीत ते अकठोर भाषा बोलवी, एटले आमंत्रण कर्यां छतां पेला पुरवणुं लक्ष्य न होय, तो शान्तिथी कहेवुं के हे भाइ ! आयुष्मन् ! अथवा बहु आयुष्मन्त श्रावक धर्म प्रिय—अर्थात् तेने प्रिय लगो, तेवुं वचन कहेवुं, तेज प्रमाणे स्त्रीने

आश्रयी पण होली गोली विगेरे कटोर वचन न कहेवा, पण तेतुं लक्ष्य रेंचवा आयुष्यती, वाइ भोगी भगवती श्राविका उपासिका धार्मिका धर्म प्रियो इत्यादि असावद्य वचन विचारीने बोलवुं. एज प्रमाणे अभाषणीय भाषाना बीजा प्रकारो वतावे हे.

से.मि० नो एयं वइज्जा—नभोदेविति वा गज्जदेविति वा विज्जुदेविति वा पवुद्धदे० निवुद्धदेविति वा पइउ वा वासं मा वा पइउ निफज्जउ वा सस्सं मा वा नि० विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ उदेउ वा सरि ए मा वा उदेउ सो वा राया जयउ वा मा जयउ, नो एयणगारं भासं भासिज्जा ॥ पववं से भिक्खु वा २ अंतलिकखेत्ति वा गुड्ढाणुचरि- एत्ति वा संसुच्छि ए वा निवइए वा पओ वइज्जा वुद्धबलाहगेत्ति वा, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामणियं जं सव्वदेहिं समिए सहिए सया जाइज्जासि त्तिवेमि २-१-४-१ ॥ भाषाध्ययनस्य प्रथमः ॥ (सू० १३६)

वळी ते साधु असंतने योग्य आवी जे भाषा हे तेने न बोले, जेमके नभोदेव, गर्जतोदेव, विजळादेव पवुद्धदेव निवुद्धदेव (आमां वर्षाद बीजळी विगेरेने देव न कहेवो ते सूचव्युं हे.) तथा वर्षाद पडो अथवा न पडो, सूर्य उगो, अथवा न उगो, आ राजा जीतो अथवा न जीतो, आवी भाषा पण न बोले, पण कारण पडे वरसादने अंगे बोलवु पडे, तो संयत भाषाए आ प्रमाणे बोलवुं के अंतरीक्षमांथी वरसाद पडे हे. अथवा गुर्यानुं चरित हे, संसुद्धिम हे अथवा वादळां वरसे हे, आ प्रमाणे साधु साध्वीए खुशामत विनानुं साहुं वचन बोलवुं, तेज साधुनी साधुता हे, ते सर्व अथांवडे समजीने समिति सहितपणे बोलवामां प्रयत्न करवो. चोथो अध्ययननो १ लो उद्देशो पूरो थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेलो कहीने बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गेया उद्देशापां वाच्य अवाच्यनुं विशेषणुं वतावुं, अहीं पण तेज वाकीनुं कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम मंत्र छे,

से भिक्खू वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा तहांवि ताइं नो एवं वइज्जा, तंनहा—गंडी गंडीति वा कुट्टी कुट्टीति वा जाव मेहुमेहुणीति हत्थच्छिन्नं वा हत्थच्छिनेति वा एवं पायच्छिनेति वा नक्कच्छिणेइ वा कण्णच्छिनेइ वा उट्टच्छिनेति वा, जेयावने तहपगारा एयपगाराहिं भासाहिं बुइया कुपंति माणवा ते यावि तहपगाराहिं भासाहिं अभिकंख नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा तहांवि ताइं एवं वइज्जा—तंनहा—ओयंसी ओयंसिति वा तेयसि तेयंसिति वा जसंसी जसंसीइ वा वच्चसी वच्चसीइ वा अभिरुयंसी २ पडिरुवंसी २ पासाइयं २ दरिसणिज्जं दरिसणीयति वा, जे यावने तहपगारा तहपगाराहिं भासाइं बुइया २ नो कुपंति माणवा तेयवि तहपगारा एयपगाराहिं भासाहिं अभिकंख भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा, तंनहा—वप्याणि वा जाव निहाणि वा, तहांवि ताइं नो एवं वइज्जा, तंनहा—सुकडे इ वा सुट्टुकडे इ वा साहुकडे इ वा कळाणे इ वा करणिज्जे इ वा, एयपगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा, तंनहा—वप्याणि वा जाव निहाणि वा तहांवि ताइं एवं वइज्जा, तंनहा—आरंभकडे इ वा सावज्जकडे इ वा पयत्तकडे इ वा पासाइयं पासाइए वा दरीसणीयं दरसणीयति वा अभिरुवं अभिरुवंति वा पडिरुवं पडिरुवंति वा एयपगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ (मू० १३६)

ते भिक्षु कोइ पण रूपो जुए, तो पण तेवां रूपो बोले नहि, जेमके कोइने गंडमाळनो रोग ययो होय गंडीपद (गुमडांवाळा) तथा कोटीया अथवा पूर्व वताव्या प्रमाणे १६ रोगवाळाने ते रोगवाळा कही चीडाववो नहि, ते छेवटे मधु मेही सुथी छे. आ रोगाओ सित्राय कोइने पाळळथी अंगमां खोड आवी होय, हाथ छेदायेळो होय, तेम पण नाक कान होठ विगोरे छेदायळा होय, तथा काणो होय कुंट होय, तेवाने तेवा शब्दोए बोलाववाथी तेओ कोपायमान थाय छे, माटे तेवाने तेवां वचनथी बोलाववो नहि, तेवाने जरूर पडतां केवी रीते बोलाववा ते कहे छे, ते भिक्षु कदाच गंडीपद विगोरे व्याधिवाळा माणसने जुए, अने तेने बोलाववो होय, तो तेनो कोइपण सारो गुण जोइने तेने उद्देशीने हे ओजस्वी ! हे तेजस्वी ! इत्यादि आभंत्रणे बोलाववो.

आ संबंधमां कृष्णावासुदेवनुं दृष्टांत छे.

एक सडेलो कुतरो राजपार्गमां पडेलो तेनी दुर्गंधथी कृष्णना माणसो आडे रस्ते उतर्या, पण कृष्णे पोते तेज रस्ते जइ तेनी दुर्गंधीनी उपेक्षा करी फक्त तेना मोढामां सुंदर दांतनी श्रेणी जोइ तेनी प्रशंखा करी, तेज प्रमाणे साधुए तेवा रोगामांथी कोइपण गुण शोधी तेने बोलाववो, एडले पराक्रमी तेजस्वी वक्ता यशस्वी सुरूप मनोहर रमणीय देखवा योग्य अथवा तेवो जे गुण होय, तेने उद्देशीने बोलाववो, के तेनाथी ते नासुश न थाय.

तथा मुनिए कोट किल्ला घर विगोरे जोइने एम न कहेवुं. के आ रडा वनावेला छे, खुब वनाव्या छे, फायदाकारक छे, अथवा तपारे आवा करवा लायक छे, एवा प्रकारनी बीजी पण अधिकरणने अनुमोदनारी सावध भाषा बोळवी नहिं.

छतां जरूर पडे, तो कहेवुं, के महा आरंभथी आ करेल छे, तथा बहु महेनते करेल छे, तथा मासाद विगोरे रमणिक देखावा

गोप्य छे, सरखी बांधणीवाळा शोभीता छे, विगेरे निरवद्य भाषा बोलवी.

से भिक्खू वा २ असणं वा० उक्कवडियं तहाविहं नो एवं वइज्जा, तं० सुकडेत्ति वा सहुकडे इ वा साहुकडे इ वा कळ्हाणे इ वा करणिज्जे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ असणं वा ४ उक्कवडियं पेहाए एवं वइज्जा, तं०—आरंभकडेत्ति वा सावज्जकडेत्ति वा पंयत्तकडे इ वा भदयं भवेत्ति वा ऊसहं ऊसडे इ वा रसियं २ मणुवं २ एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ (सू० १३७)

साधुए कोइ जग्याए रस्सोइ तैयार थएली जोइ होय तो एम न कहेवुं के पकवान सारां कर्यां छे, सारां तळ्यां छे, सुंदर वनाव्यां छे, कल्याण करनारां छे, बीजाए आवां करवा योग्य छे, आवुं सावद्य वचन साधुए बोलवुं नहि.

एण जस्स पढतां तेवुं चारे पकारनुं अन्नन विगेरे जोइने कहेवुं के आरंभथी सावद्य प्रयासे वनावेळुं छे, तथा सारां होय तो सारां ताजां होय तो ताजां रसवाळां मनोन्न एम निर्दोष भाषा बोलवी. फरीथी अभाषणीय वतावे छे—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा भिगं वा पसुं वा पक्खिं वा सरीसिबं वा जलचरं वा से तं परिवूढकायं पेहाए नो एवं वइज्जा—थूखे इ वा पामेइले इ वा वडे इ वा पाइमे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं वा जाव जलयरं वा सेतं परिवूढकायं पेहाए एवं वइज्जा परिवूढकाएत्ति वा उवचियकाएत्ति वा थिरसंययणेत्ति वा चियमंससोणिएत्ति वा बहुपडिपुबइंदिइएत्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ विरुवस्सवाओ गाओ पेहाए नो एवं वइज्जा, तंजहा—गाओ दुज्झाओत्ति

वा दम्भेति वा गोरहति वा वाहिमिति वा रहजोमिति वा, एयप्यगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भि०
 विरुवख्वाओ गाथो पेहाए एवं वइज्जा, तंजहा—जुवंगविसि वा येणुत्ति वा रसवइति वा हस्से इ वा महल्ले इ वा महन्वए
 इ वा संवहणित्ति वा, एअप्यगारं भासं असावज्जं जाव अभिक्खं भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्व-
 याइं वणणि वा रक्खा महल्ले पेहाए नो एवं वइज्जा, तं०—पासायजोमिति वा तारणजोगाहं वा निहजोमगाइ वा
 फल्लिहजो० अणलज्जो० नावाजो० उदग० दोणजो० पीढंणवेरंगलकुलियजंतलट्टीनीभिगंडीआरणजो० सयणजणउन्न-
 स्सयजोगाहं वा, एयप्यगारं नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० तहेव गंतु० एवं वइज्जा तंजहा—जाइमंता इ वा दीहवट्टा
 इ वा महालया इ वा पाययसाला इ वा विडिमसाला इ वा पासाइया इ वा जाव पडिरुवाति वा एयप्यगारं भासं असा-
 वज्जं जाव भासिज्जा ॥ से भि० बहुसंभूया वणफला पेहाए तहावि ते नो एवं वइज्जा, तंजहा—पक्का इ वा पायखज्जा
 इ वा वेळोइया इ वा टाला इ वा वेहिया इवा, एयप्यगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू० बहुसंभूया
 वणफला अंवा पेहाए एवं वइज्जा; तं०—असंथटा इ वा बहुनिवट्टिमफला इ वा बहुसंभूयां इ वा भूयखचित्ति वा, एय-
 प्यगारं भा० असा० ॥ से० बहुसंभूया ओसही पेहाए नहावि ताओ न एवं वइज्जा, तंजहा—पक्का इ वा नीलीया इ वा
 छवीइया इ वा लाइया इ वा भजिमा इ वा बहुखज्जा इ वा, एयप्यगा० नो भासिज्जा ॥ से० बहु० पेहाए तहावि
 एवं वइज्जा, तं०—रूढा इ वा बहुसंभूया इ वा थिरा इ वा ऊसंढा इ वा गडियया इ वा पसूया इ वा ससारा इ वा,
 एयप्यगारं भासं असावज्जं जाव भासि० ॥ (१३८)

ते साधु के साध्वी-रस्तामां माणस बळद मृग पशु पक्षी सरीसृप जलचर कोई पण पुष्ट शरीरवाळं देखें तो आहुं न बोलवुं, के "आ, स्थूल ममेदुर, वृत्त अथवा वध करवा योग्य अथवा वहन करवा योग्य है, अथवा मारीने रंधंका योग्य है, अथवा देवताने बळी आपवा योग्य है."

पण माणसधी लडने जलचर सुधीहुं कोई पण पशु-पंखी के जंतु परिहृद्ध (जाडा) शरीरवाळं देखीने जरूर पडतां आवी रीते बोलवुं के आ जाडा शरीरनो है, उपचित (पुष्ट) कायवाळो है, स्थिर संघयणवाळो है, अथवा लोही मांसे पुष्ट है, अथवा पांच इंद्रयो पुरी है, आवी निर्दोष भाषा बोले.

तेज प्रमाणे जुदा जुदा रूपवाळी गायोने साधु देखे, तो तेणे आहुं न कहेवुं, के आ गायो दोहवा योग्य है, अथवा दोहवानो बरवत है, अथवा आ गोधळो (जुवान बळद) वाहन करवा जेवो है, अथवा रथने योग्य है, आवी सवाद्य भाषा न बोलवी, पण जरूर पडतां जुदी जुदी गायोने जोइ आ प्रमाणे बोलवुं के आ युवान गाय है, अथवा रसवती येतु है, आ नानो बळद है, आ मोटो है, अथवा महालयय (मूल्य) वाळो है, संवहन है, आबो निरवध भाषा बोले.

तेज प्रमाणे साधु उद्यनमां जतां पर्वत वन विगेरेमां मोटां झाड देखीने आहुं न बोले के, आ महेल बनाववा योग्य, तोरण योग्य है, घर योग्य, फलिहाने योग्य, अर्गला नाव के पाणी लाववाने परनाळ बनववा योग्य अथवा द्रोण बनाववा योग्य पीढं चंगवेर हळ कुलिकयंत्रनी लाकळी (घाणी) नाभि गंडि असाण विगेरे ओजारनी वस्तुओ बनाववा योग्य है, तथा सुवानां पाटीआं गाडी गाडां उपाश्रय बनाववा योग्य है. अथवा तेवुं कंइ पण बीहुं सावद्य वचन न बोले.

पण जरूर पडतां तेवां दृशो बतावचां पडे, तो आ उत्तम जातिनां दृशो हे, जाडा शडभाका हे, मोटां झाड त्रिशाल गाखावाळां विस्तीर्ण झाखावाळां देखावा योग्य रमणीय हे, आची निरवध भाषा बोल्ले.

ते साधु मार्गमां घणां फळवाळां झाडो देखे, तो आबुं न बोल्ले के आ पाकां फळ हे, गोटली बंधायेळां फळ हे. ते खाळामां नाखीने कोद्रव के पराळना यासथी पकावीने खावा योग्य हे. ताथ बरोबर पाकेलां होवाथी झाड उपरथी तोडी लेवा योग्य हे, कारणके हवे वधारे बरवत उपर रही शके तेम नथी. 'टाल' ते गोटली बंधाया त्रिनानां कोमळ फळ हे, तथा आ फळोए पेशी संपादन करवाथी चीरवा योग्य हे, आची फळ संबंधी सावध भाषा साधुए न बोलवी, पण जरूर पडतां नीचे प्रमाणे बोलवुं—आ फळना भारथी असमर्थ झाडो हे, घणां फळवाळां हे, बहु संभूत हे, तथा भूतरूप ते कोमळ फळो हे, आवां आंवांनां झाड प्रधान होवाथी तेनो दृष्टांत आपेल्ले हे, आची निरवध भाषा साधुए बोलवी.

तथा पाकेली औषधि देखीने एम न बोलवुं, के आ पाकी हे, अथवा नीली आर्द्रा पाणीवाळी छालवाळी घाणी वनावा योग्य रोपवा योग्य, आ रांधवा योग्य भंजन करवा योग्य बहु खावा योग्य अथवा पुंख वनाववा योग्य हे. पण जरूर पडतां आम बोल्ले के आ रुढा औषधि हे, आची निरवध भाषा बोलवी. बळी—

से भिक्खू वा० तहणगाराइं सदाइं सुणिज्जा तहावि एयाइं नो एवं बहज्जा, तंजहा—सुसहेत्ति वा दुसहेत्ति वा, एयणगारं भासं सावज्जं नो भासिज्जा ॥ से भि० तहावि ताइं एवं बहज्जा, तंजहा—सुसहं सुसहेत्ति वा दुसहं दुसहेत्ति वा, एयण-गारं असावज्जं जाव भासिज्जा, एवं ख्वाइं किण्हेत्ति वा गंधाइं सुरभिणंधित्ति वा २ रसाइं तित्ताणि वा ५ फसाइं-

लेतां कहेवुं के हुं ते वखने वधे जोइ लडुं, पण तेनी समक्ष एक डेडाथी बीजा डेडा सुधी जोया विनां लेवुं नहि, कारण के जाया विना लेतां केवळी प्रभु तेमां दोष बतावे छे, कारण के तेमां कांइ पण कुंडळ, दोरो, चांदी, सोनुं, मणी, रत्नावळी विगेरे आभारण बांध्युं होय, अथवा सचित्त वस्तु, जंतु, बीज, भाजी होय तो दोष लग्गे, माटे साधुनी आ पतिज्ञा छे, के वख देखीने लेवुं से भि० से जं० सअंडं० ससंताणं नहरप० वत्थं अफा० नो प० ॥ से भि० से जं० अषंडं जाव संताणं अनलं अथिरं अयुवं अथारणिजं रोइजंतं न रखाइ तह अफा० नो प० ॥ से भि० से जं० अषंडं जाव संताणं अलं थिरं युवं थारणिजं रोइजंतं रखाइ, तह० वत्थं फासु० पडि० ॥ से भि० नो नवए मे वत्थेत्तिकहुं नो बहुदेसिएण सिणाणेण वा जाव पयं-सिज्जा ॥ से भि० नो नवए मे वत्थेत्तिकहुं नो बहुदे० सीओदगावियदेण वा २ जाव पदोइज्जा ॥ से भिक्खू वा २ दुब्बिगंधे मे वत्थित्तिक्हुं नो बहु० सिणाणेण तहेव बहुसीओं उस्सि० आलावओ ॥ (सू० १४७)

ते भिक्षु लेवाना वखने नाना जंतुनां इंडावाळु समजे, अथवा करोळीयाना जाळावाळुं समजे तो मळवा छतां पण छे नहि.

कदाच इंडा विनाजुं होय, पण प्रणुं हीन (नाजुं) होय तो काम पुरतुं न थाय, माटे अनल कहेवाय ते लेवुं नहि.
तथा अस्थिर (जीर्ण) होय, अथवा अयुव ते स्वल्पकाळनी अनुज्ञापना होय, तथा अपशस्त मदेशवाळुं होय, अथवा खंजर

विगेरे कलंकवाळुं होय तो लेवुं नहि, तेज बतावे छे.

वत्थारि देविया भागा, दो य भागा य माणुसा । आसुरा य दुवे भागा, मज्झे वत्थस्स रक्खसो ॥ १ ॥
चत्तारि देविया भागा, दो य भागा य माणुसा । आसुरेसु अ गेळनं, मरणं जाण रक्खसे ॥ २ ॥
देवीएसुत्तापो लामो, माणुसेसु अ मज्झिमो । आसुरेसु अ गेळनं, मरणं जाण रक्खसे ॥ २ ॥

चार देवता संबंधी भाग है, अने वे भाग मनुष्य संबंधी है, वे भाग असुर संबंधी है, वस्त्रना मध्य भागसां राक्षसना भागो है. (१) दैविकमां उत्तम लाभ है, मनुष्यमां मध्यम है, आसुर भागसां मांदापणुं है, अने राक्षस भागसां मृत्यु है, एवुं जाण-तेनी स्थापना आ प्रमाणे हे—

लक्षण हीणां उवही, उवहणई नाणदंसण चरिं

लक्षणधी हीन जे उषधि है, ते ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने हणो है, तेथी हीन होय ते लेवुं नहि, तथा प्रज्ञस्य मानवाळं होय, पण ते आपतां दाता [देनार] जुं मन नाराज थतुं होय, तो ते साधुने कल्पे नहि.

आ प्रमाणे अनल अधिर अशुब आधारणीय ए चार पदोथी सोळ भागा थाय है, तेमां प्रथमना पंदर अशुद्ध है, पण चारे भागे शुद्ध एवो सोळमो भांगोज काम लागे, माटे सूत्रमां अलं (समर्थ) स्थिर, शुब धारणीय ए चार गुणवाळं वस्त्र मळे तो लेवुं कहुं है. हवे ते भिक्षु एम जाणे के माहं वस्त्र नतुं नथी, माटे थोडा घणा पाणीथी सुगंधी द्रव्यथी थोडुं मसळीने के वणुं मसळीने सुगंधीवाळं वनावे, अथवा माहं वस्त्र नतुं न होवाथी थोडा पाणीथी थोइ लडं, एवुं पण न करे. अर्थात् आ वने पाटो जिनकल्पीने आश्रयी है. के भिक्षुने कपडुं मेलना लीथे भंधाहुं होय तो पण ते मेल दूर करावा सुगंधी द्रव्यवडे के पाणीवडे थुवे नहि, पण स्थविरकल्पीने एटळुं विशेष है के सुगंधीवाळुं वनाववा माटे नहि, पण लोकोनी तिंद दूर करावा तथा रोगादिना कारणो दूर करावा प्रासुक पाणी विगोरेथी मेल दूर करावा यतनार्था थुवे पण खरा.

हवे थोयेलां कपडाने यतनाथी सुकाववानी विधि कहे है.

से भिक्षवू वा० अभिकंखिज्ज वत्थं आयाचित्तए वा प०, तहपणारं वत्थं नो अणंतरहियाए जाव शुढवीए संतणए आया-

विज्ज वा प० ॥ से भि० अभि० वत्थं आ० प० त० वत्थं भूणंसि वा निहेलुंगंसि वा उमुयालंसि वा कामजलंसि वा अन्नपरं तहणगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निकित्ते अणिकपे चलाचले नो आ० नो प० ॥ सेक्खू वा० अभि० आयावित्तए वा तह० वत्थं कुकियंसि वा भित्तंसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अन्नपरं वा तह० अंतलि० जाव नो आयावित्त वा प० ॥ से भि० वत्थं आया० प० प० तह० वत्थं खंधंसि वा मं० मा० पासा० ह० अन्नपरं वा तह० अंतलि० नो आयावित्त वा० प० ॥ से० तमायाए एगंतमवक्कमिज्जा २ अहे क्षामथंडिल्लंसि वा जाव अन्नपरंसि वा तहणगारंसि थंडिल्लंसि पडिल्लेहिय २ पमज्जिय २ तओ सं० वत्थं आयावित्त वा पया०, एवं खलु० सया जइज्जासि (सू० १४८) निवेमि ॥ २-१-५-१ वत्थेसणस्स पढमो उदेसो समत्तो ॥

ने भिक्षु अव्यवहित जग्यामां वल्ल न सुकवे, वली सुकववा इच्छे, तो थांभा उपर. उंवरर उपर, ऊखली उपर तथा स्नान पीठ (नावाहना ओटला) उपर न सुकवे, तथा कुकिय भित्त, त्रिकला, लेलु अथवा तेवा अथर स्थान उपर पडवाना भयथी सुकावे नहि, पण जो सुकाववानी खास तथा स्कंध मांचो प्रासाद हवेली अथवा तेवा बीजा कोइ अथर भागमां पडवाना भयथी सुकावे नहि, पण जो सुकाववानी खास जखर हो तो, एकांतमां जइने अचिरा जग्या जोइने ओयाथी पुंजीने आतापना विरोरे करे, आज भिक्षुनी सर्व सामग्री छे. (आपां कपडां सुकववानुं स्थान अचित्त जग्या बतावी, तथा अथर लटकतां राखवानी ना पाटी, तथा जमीन पर पडतां यतना न रहे, माटे जग्या पुंजीने एकांतमां सुकववां वथारे साहं छे.)

पहेलो उदेशो कहीने बीजो कहे छे, तेजो आ ममाणे संबंध छे. गया उदेशामां वल्ल लेवानी विधि बतावी, अने आ उदेशामां

पहेरवानी विधि कहे छे, आ संबंधे आवेला उहेवानुं आ प्रथम सूत्र छे,

से भिक्खु वा० अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाइज्जा अहापरिगहियाइं वत्थाइं धारिज्जा नो धोइज्जा नो रएज्जा नो धोयर ताइं वत्थाइं धारिज्जा अपल्लिउंचमाणो गामंतरेसु० ओमचेलिए, एवं खलु वत्थंधारिस्स सामभियं ॥ से भि० गाहावइकुलं पविसिउकामे संव्वं चीवरमायाए गाहावइकुलं निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा, एवं बहिय विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा गामणुगामं वा दइज्जाज्जा, अह पु० तिउवदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए नवरं सव्वं चीवरमायाए ॥

ते साधु साधुपणाने योग्य कपडां याचे अने जेवां लीयां होय तेवांज पहेरे, पण तेमां कंइ पण शोभा करे नहि, ते कहे छे, लीथेला वस्त्रने धुए नाह, रंगे नहि तथा वकुशपणुं धारण करीने धोइने रंगेलां कपडां काह आपे तो पण लेइने नहि तथा तेवां साधुने योग्य कपडां पहेरीने बीजे गाम जतां वस्त्रोने ह्युपाव्या विना सुखशीज विहार करे, कारणके प्राये आ असार वस्त्रनो धारण करनारो छे, आज साधुनुं संपूर्ण साधुपणुं छे, के आयां सादां कल्पनीय वस्त्र पहेरवां.

वळी ते भिक्षु गोचरी जाय तो वस्त्रो वयां साथे लेइ जाय तेज प्रमाणे रगंडिल जाय अथवा अभ्यास करवा बहार जाय तो पण लेइने जाय, पण एटलुं ध्यान राखवुं के पिंडएपणामां कत्ता मुन्नव वरसद के धुपस वरसतां होय तो जिनकल्पी बहार न जाय अने स्थविरकल्पी जोइए तेटलांज वस्त्र बहार लइ जाय, (आ सूत्रो जिनकल्पी आश्रयी छे, तेम वस्त्रधारीनुं विशेषण होवाथी स्थविरकल्पीने पण लाणु पडे, तो तेमां विरुद्ध नथी, पिंडैपणामां उपयिने लेइ जवानुं कहुं. आ सूत्रमां वस्त्रोने आश्रयी कहुं छे,)

हवे वापरवा लीथेळें वख्न वगळतां थुं करवुं ते कहें छे.
 से एगइओ सुहुत्तगं २ पाडिहारिय कत्यं जाइज्जा जाव एगाहेण वा दु० ति० चउ० पंचाहेण वा त्रिपवसिय २ उवाग-
 च्छिज्जा, नो तह कत्यं अप्पणो गिण्हिज्जा नो अन्नपन्नसस दिज्जा, नो पामिच्चं कुज्जा, नो वत्थेण कत्यपरिणामं करिज्जा,
 नो परं उवसंक्कमित्ता एवं वइज्जा—आउ० समणा ! अभिकं वसि कत्यं धारिणाए वा परिहरिणाए वा १, धिरं वा संतं नो
 पलिच्छिदिय २ परद्विज्जा, तहप्यगारं कत्यं ससंधियं कत्यं तरस केव निसिरिज्जा नो णं साइज्जिज्जा ॥ से एगइओ-
 एयप्यगारं निपयोसं सुच्चा नि० जे भयंतारो तहप्यगाराणि कत्याणि ससंधियाणि सुहुत्तगं २ जाव एगाहेण वा० ५ त्रिप-
 वसिय २ उवागच्छंति, तह० कत्याणि नो अप्पणा गिण्हंति नो अन्नपन्नसस दलयंति तं केव जाव नो साइज्जंति, बहुव-
 यणेण वा भाणियच्चं, से हंता अहमवि सुहुत्तग पाडिहारियं कत्यं जाइत्ता जाव एगाहेण वा ६ त्रिपवसिय २ उवाग-
 च्छिस्सामि, अविगाइं एयं ममेव सिया, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करिज्जा ॥ (सू० १५०)
 कोइ साधु वीजा साधु पासे वे घडी वापरवा माटे वख्न मागेतो अने मागीने कारण प्रसंगे वीजे गाम विगेरे स्थळे गयो त्यां
 एकथी पांच दिवस सुधी रहो अने त्यां एकलो होवाथी सुवामां ते वख्न वगडी गयुं, पाळळथी ते वख्न लावीने जेनुं हतुं तेने
 तेवुं वख्न पाहुं आपे, तो तेना पूर्वना स्वामीए लेवुं नहि, लइने वीजाने पण आपहुं नहि, तेम कोइने उळीतुं पण आपहुं नहि, के
 हुं आ हमणां ले अने थोडा दिवस पळी वीजुं मने पाहुं आपजे. तथा ते वख्ननो ते समये पण बदलो न करे, तेम वीजा साधु पासे
 जइने आहुं वोळवुं पण नहि—के हे आयुष्यमन् ! श्रमण ! तुं आवा वख्नने पहेरवा के वापरवा इच्छे हे के ? पण ते वख्न जो कोइ

बीजो साधु कारण प्रसंगे एकछो जवा इच्छतो होय तो तेने ते वस्त्र आपहुं, कदाच ते वस्त्र जो जीर्ण थइ गयेळुं होय, तो तेना श्रीणा श्रीणा टुकळा करीने परठवी देवुं, पण फाटेला वस्त्रने तेनो पूर्वना स्वामी पहेरे नहि, पण ते वगाळनार साधुनेज पाळुं आपी देवुं अथवा कोइ एकलो जतो होय तो तेने आपी देवुं, आ प्रमाणे घणां वस्त्र आश्रयी (बहुवचनमां पण) जाणी लेवुं.

वळी ते साधुने आवीरीते वस्त्र पाळुं मळतुं जोइ बीजो साधु तेवी लालचयी उपरनो विषय समजीने हुं पण बीजाहुं वस्त्र सुहूर्त माटे याचीने पांच दिवस सुधी वहार जइ वापरी आवीने वगाडी आवुं के ते वस्त्र पळी मांसज थइ जाय ! आ कपट छे, माटे साधुए तेवुं न करवुं.

से भि० नो वणमंताइं वत्याइं विवणाइं करिज्जा विवणाइं न वणमंताइं करिज्जा, अब वा वत्यं लभिरसामिचिकट्टु नो अबम वस्स दिज्जा, नो पामिच्चं कुज्जा नो वत्येण वत्यपरिणामं कुज्जा, नो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा-आउसो० ! समभिकंत्वसि मे वत्तं धारितए वा परिहरित्तए वा ?, थिरं वा संतं नो पळिच्छिदिय २ परिट्टिविज्जा, जहा मेयं वत्थं पावगं परो मन्नइ, परं च णं अदत्तहारी पट्टिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स नियाणाय नो तेसिं भीओ उम्मणेणं गच्छिज्जा, जाव अप्पु-स्सुए, तओ संनियामेव गामाणुगामं दइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामणुगानं दइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं णुण विहं जाणिज्जा इमंसि खलु विहंसे बहवे अमोसगा वत्यपडियाए सर्पिडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मणेणं गच्छेज्जा जाव नामा० दइज्जेज्जा ॥ से भि० दइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा पडियागच्छेज्जा, ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउस० ! अहारेयं वत्थं देहि णिक्खिवाहि जहा रियाए णाणत्तं वत्यपडियाए, एयं खलु० सया जइज्जासि

(सू० १५१) चिबेपि वत्थेसणा समसा ॥ २-१-५५-२

ते भिक्षु रंगवाळां वस्त्र कारण विशेष्यथी लीधां होय, तो चोर विगेरेना भयथी रंग विनानां न वनावे, उत्सर्गथी तो एज अधिकार छे के तेवां वस्त्र लेवांज नहि अने लीधां होय तो तेने रंग उतरवापयत्न न करवो, अथवा वर्ण (स्वराव रंगनां) होय तो सारा रंगवाळां वनाववां नहि.

अथवा आ सादा वस्त्रने बदले सारं मेळवीया, एवी इच्छाथी बीजाने आपी देवुं नहि, तेम प्रामित्य करवुं नहि, तथा वस्त्रथी वस्त्रतुं परिणाम करवुं नहि, तेम बीजा पासे जइने एवुं वोळवुं नहि, के हे आशुष्यमन् ! आ सारं वस्त्र ओढवा पहेरवाने तुं इच्छे छे ? अथवा सारं होय तो टुकडा करीने फेंकी देवुं नहि, के जेथी सारं वस्त्र बीजो गृहस्थ एम जाणे के ए खराव वतुं (माटे फेंकी दीधुं छे) वकी मार्गमां चोरना भयथी वस्त्रना रक्षण माटे उन्मार्गे दरीने न जाय तथा दोडवानी उत्सुकता राखवा विना इर्यासिमिति पाळतो जाय अने गाम गाम विहार करे.

वकी रस्तामां जातां उज्जड मेदान जाणे, ज्या वस्त्र तुंटनारा बहु चोरो वसता होय, तो तेमना दुरथी पण उन्मार्गे न जाय, पण यतनाथी विहार करे, कदाच ते रस्ते जातां चोरो आवे अने वस्त्र मरगे, अथवा तुंटी ले, तो शांतिथी उपदेश आपवो. न माने तो बाजुए परठवी देवुं अने फरी उपदेश देतां आपे तो लेवुं, पण कोइने कहेवुं नहि, तेम चोरने पकडववा नहि, वगेरे वधुं पूर्व माफक जाणवु

पांचसुं अध्ययन समाप्त थयुं.

पात्राएषणा नामनुं छट्टं अध्ययन.

पांचसुं कहिने हवे छट्टं अध्ययन कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. प्रथम अध्ययनमां पिंडविधि बतावी, ते आगममां कहेल विधि वसतिमां आवीने वापरवुं, माटे बीजाणां वसतिनी विधि बतावी, ते शोधवा माटे बीजाणां इयांसमिति कही, पिंडैषणामां नीकलेलाए केवी भाषा वापरवी, तेथी भाषामिति कही, अने ते पढेला विना पिंड न लेवाय माटे पांचमां वल्लएषणा कही, ते पिंडने पात्र विना लेवाय नहि, माटे आ संबंधवडे पात्र एषणा अध्ययन आवुं, एना चार अनुयोगद्वारा थाय छे, तेमां नाम निष्पन्न निक्षेपामां पात्रएषणा अध्ययन छे, एनो निक्षेपो अर्थीधकार एना पूर्वना अध्ययनमांज टुंकाणमां बताववा माटे निर्युक्तिकारे कहेलो छे, सूत्रानुगममां अस्वल्लितादि गुणयुक्त सूत्र उच्चारवुं जोइए ते आ छे.

से भिक्खू वा अभिकंखिज्जा पायं एसित्तए, से जं पुण पादं जाणिज्जा, तजहा—अलाउयपायं वा दासपायं वा मट्टियापायं वा, तहएणारं पायं जे निगंथे तरुणे जाव थिरसयणे से एगं पायं धारिज्जा नो विइयं ॥ से भि० परं अद्धजोयणमेराए पायपट्टियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भि० से जं अस्सि पट्टियाए एगं साहम्मियं समुद्धिसस पाणाइं ४ जहा पिंडैषणाए चत्तारि आलावगा, पंचमे वडवे समण० पराणिय २ तहेव ॥ से भिक्खू वा० अस्संजए भिक्खुपट्टियाए वहवे समणमाहणे० वत्थेसणाऽऽलावओ ॥ से भिक्खू वा० से जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा विस्वरुवाइं महद्धणमुल्लाइं, तं०—अयपा याणि वा तउपाया० तंवाया० सीसगपा० ह्णिणपा० सुवणपा० रीरिअपाया० हारपुट्टपा० मणिकायकंसपाया०

संखसिगपा० दंतपा० चेलपा० सेलपा० चम्मपा० अक्षयराईं वा नह० विरुवरवाईं महद्वणसुछाईं पायाईं अफासुयाईं नो०
 ॥ से भि० से जाईं गुण पाया० विरुव० महद्वणबंधणाईं, तं०-अयबंधणाणि वा जाव चम्मबंधणाणि वा, अक्षयराईं
 तहण० महद्वणबंधणाईं अफा० भो प० ॥ इच्चेयाईं आयतणाईं उवाइ कम्म अह भिक्खुं जाणिज्जा चउहिं पडिमाईं
 पायं एसित्तए तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खुं उदिसिय २ पायं जाइज्जाः तंजहा—अलाउयपायं वा ३ तह०
 पायं सयं वा णं जाइज्जा जाव पडि० पढमा पडिमा ? । अहावरा० से० पेहाए पायं जाइज्जा, तं०-गाहावईं वा कम्म-
 करीं वा से पुत्तामेव अलोइज्जा, आउ० भ० ! दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं पादं तं०-लाउपायं वा ३, तह० पायं सयं वा
 पडि०, दुच्चा पडिमा २ । अहा० से भि० से जं गुण पायं जाणिज्जा संगइयं वा वेजइयंतियं वा तहण० पायं सयं वा
 जाव पडि०, तच्चा पडिमा ३ । अहावरा चउत्था पडिमा—से भि० उच्चियधम्मियं जाएज्जा जावउत्ते बहवे समणा जाव
 नावकंवंति तह० जाएज्जा जाव पडि०, चउत्था पडिमा ४ । इच्चेइयाणं चउण्हं पडिमाणं अन्नयरं पडिमं जहा पिंडेस-
 णाए से णं एयाए एसणाए एसमाणं पामित्ता परो बइज्जा, आउ० स० ! एज्जासि तुमं मासेण वा जहा वत्थेसणाए
 से णं परो नेत्ता व०-आ० भ० ! आहारेयं पायं तिष्ठेण वा० घ० वव० वसाए वा अन्नंणित्ता वा तहेव सीओदगाईं
 कंदाईं तहेव ॥ से णं परो ने०-आउ० स० ! सुहुत्तं २ जाव अच्चाहि ताव अम्हे असणं वा उवकरेसु वा उवकरवडेसु
 वा, तो ते वयं आउसो० ! सपाणं समोयणं पडिगाईं दाहामो हुच्छए पडिगाहे दिक्खे समणस्स नो सुहु साहु भवइ, से
 पुत्तामेव अलोइज्जा- आउ० भइ० ! नो खलु मे कणइ आहाकम्मिए असणे वा ४ सुत्तए वा०, मा उवकरेहि मा

उक्त्वद्वेहि, अभिकंत्वसि मे द्वातं एमेव दलयाहि, से सेव वयंतस्स परो असणं वा ४ उक्करिता उक्त्वद्वि ता सपाणं सभोयणं पडिग्गहं दलइज्जा तह ० पडिग्गहं अफासुय जाव नो पडिग्गाहिज्जा ॥ सिग्गा से परो उक्कणिता पडिग्गहं निसिरिज्जा, से पुब्बामे ० आउ ० भ ० ! तुमं चेव णं संतियं पडिग्गहं अतोअतेणं पडिलेहिस्सामि, केवली ० आयाण ० अतो पडिग्गहंसि पाणाणि वा वीया ० हरि ०, अह भिक्खुणं पु ० लं पुवामेव पडिग्गहं अतोअतेणं पडि ० सअंडाइं सज्जे आलावगा माणियव्या जहा वत्थेसणाए, नाणरां तिड्डेण वा घय ० नव ० वसाए वा सिणाणादि जाव अन्नयरंसि वा तहपग्गा ० थंडिलसि पडिलेहिय २ पम ० २ तथो ० संज २ आमडिज्जता, एवं सळु ० सया जएज्जा (सू ० १५२) त्तिवेषि ॥ २-१-६-१

ते भिक्षु पात्र शोधवानी इच्छा करे, तो आ प्रमाणे प्रथम जाणे, के आ प्रमाणे पात्रां छे, तुंब्हानां पात्र छे, लाकडानां पात्र छे, माटीनां पात्र छे, आमंथी कोइपण जातिनां पात्रां (मुख्यत्वे लाकडानां) होय, तो तरुण अने स्थिर संघयवाको बलवान साधु होय तो एक पात्र धारण करे, पण वे नहि, आ जिनकल्पी विगेरेने माटे छे, पण स्थविरकल्पी जुवान विगेरे शक्तिवान होय तोपण मात्र क सहित वीजुं पात्रं धारण करे, तेमां संघालमां रहेला साधुने एकमां आहार अने बीजामां पाणी लेवा काम लागे, अथवा आचार्य विगेरे माटे अशुद्ध वस्तु (मात्र विगेरे) लेवा काम लागे, पोताना रहेवाना स्थानथी जरूर पडतां वे गाड सुधी पात्रां लेवा जाय, पण वधारे नहि हवे ते गृहस्थ एक साधु घगी साध्वी एक साधु एक साध्वी, घणा साधु एक साध्वी, घणा साधु घणी साध्वीने उद्देशीने आरंभ करीने जो पात्रां तैयार कर्यां होय ते साधु साध्वीने सदोष होवाथी न कल्पे, पण जो श्रमण, माहण,

गमना भिखारी विगेरेने उदेवीने वनावेलां होय तो पुरुषांतर थया पळी कल्पे, आ वधुं पिडेवणांमां वताव्या प्रमाणे जाणी लेवुं, वळी ते भिक्षु एवी जातिनां जुदाजुदा रंतानां भारे मूल्यनां पात्रा जागे ते न ले, ते दतावे छे.

लोढानां तथा वृष्टु (कर्काइना जेवी धातु) नां पात्रां, तांवाना पातरां, सीसानां, हिरण्य (चांदी) नां, सोनानां पातरां रीरिय दारपुड (वीजी जातिना लोढां) नां, मणिरत्ननां जडेल्यां के कांसानां पातरां संखसिंग हाथीदांत चेल सेल चामडानां तेवां बीजां कोइ पण जातिनां भारे मूल्यनां पातरां शोभीतां होय तो ते अपासुक जाणीने लेबां नहि. तेज प्रमाणे पातरानां वंधन उपर वताव्या प्रमाणे भारे मूल्यनां लोढाथी ते चामडा सुधीनां होय ते न लेबां, (प्रासुक होय छतां पण भारे मूल्यनां होवाथी मप्रत्न थाय, तथा चोरवाना कारणे असमाधि थाय, माटे साधुने तेवां पात्र तथा पात्र वंधननी मना छे.)

आ प्रमाणे पापस्थान निवारिने चार प्रतिपाओथी पात्रां शोधे. (१) अमुक पात्रुंज तुंचातुं, लाकडातुं के माटीतुं लइश, (२) देखेलुंज पातरुं याचीइ (३) सगतिक ते पोते ते पात्राने वापर्युं होय तथा वेजयंतियं—ते वे त्रण पात्रांमां पर्यायवडे वापर्युं होय तेवुं याचे (४) कोइ पण तेने न चाहे, तेवुं पोते छे.

आ प्रमाणे चार प्रतिज्ञांमांनी कोइ पण प्रतिज्ञाए साधु पातरां शोधवा जाय त्यारे गृहस्थ कहे के हे साधु ! तमे पातरां लेवा एकमास पळी आवजो, पातरां तमने आपीश त्यारे साधुए कहेवुं के तेवु सुदत करेल्यां पात्रां न कल्पे, त्यारे वख एवणांमां वतान्या प्रमाणे ओछी सुदतनां वायदो करे, त्यारे पण तेज उत्तर आपवो, ते वे मडीनी सुदत सुधीनो पण वायदो न स्वीकारवो, त्यारे कहे, के आपणे आपणा माटे नवां वनावीशुं. तैयार तेमने आपी दो, भावुं थणी पोते पोताना वरना माणसोने—वेन दीकरीने

कहे स्थारे पण साधुए ना पाडवी.

बळी गृहस्थ पातानी बेन विगेरेने कहे के कोरं पातरं न आप, पण ते पात्राने तेल घी माखण छायवढे घसीने आप, तथा पाणीथी थोइने अथवा काचु पणी के कंद विगेरे खाली करीने आप, अथवा कहे के हे साधु ! तमे बे घडी पळी फरीने आबो, तो अमे भयानपान खादिम स्वादिम तैयार करीए छीए, अथवा संस्कारवाळं बनावीए छीए, तेथी हे आयुषमन् ! हे साधु ! तमने भोजन पाणी सहित पातरां आपीथुं, एकला खाली पात्रां साधुने आपवाथी शोभा न बधे. आ सांभळीने साधुए कहेवुं के हे भव्यात्मन ! अमने अमारा माटे वनावेळुं के बधारे रांधेळुं भोजन पाणी खावा पीवाने काम लागतुं नथी, माटे तैयार न करो, न संस्कारवाळं वनावो, जो पात्रां आपवानी इच्छा होय, तो एमने एमज आपो.

आहुं कहेवा छां गृहस्थ हठ करी साधु माटे रांधीने के संस्कारी वनावीने पात्रां भरी आपवा मांडे तो अप्राप्तुक जाणीने साधुए लेवां नहि, कदाच एमने एम पात्रां बहार लावीने मुके, तो तेने कहेवुं के हे गृहस्थ ! हुं तमारा देखतांज आ पात्रां देखी लडं के तेनी अंदर नानां जंतुओ के बीज के वनस्पति होय तो केवळी पशु तेमां दोष वतावे छे, माटे साधुए पथम जोइ लेवां, अने जंतु विगेरेथी संयुक्त होय तो ते जीवो दूर करी सकाय तेम न होय तो अप्राप्तुक जाणीने पात्रां लेवां नहि, पण जो तेवां जंतु विगेरे न होय तो लेवां, (ते बधुं ब्रह्मएषणा माफक जाणी छेवुं) आपां विशेष एटळुं छे के तेल घी नवनीत के वसा (छाया) थी थोइने ते चीकटवाळं पात्रांतुं थोवण कोइ अचीता जग्या जोइने पडिछेही प्रमाजिंने परठवे, आज साधुर्ना साधुता छे के जयणाथी दरेक कार्य करे.

बीजो उद्देशो.

१०४१॥

सूत्रम्
॥१०४१॥

पहेला उद्देशा साथे आतो संबंध आ छे, के गया सूत्रमां पात्रांतुं जोतुं बतावतुं, अने अहीं पण तेतुंज बाकीतुं बतावे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशांतुं आ पहेलुं सूत्र छे.

से भिक्खू वा २ गाहावइकुलं पिंडं पविट्टे समाणे पुन्वामेव पेहाए पडिगहं अवहट्ठुं पाणे पमज्जिय रयं तओ सं० गाहावइं० पिंडं० निक्खं प० प०, केवलीं, आडं ! अंतो पडिगहंसि पाणे वा बीए वा हरिं० परिपावज्जिजा, अह भिक्खूणं पुं० जं पुन्वामेव पेहाए पडिगहं अवहट्ठुं पाणे पमज्जिय रयं तओ सं० गाहावइं० निक्खमिज्ज वा २ ॥ ते भिक्षु गृहस्थना घरपां गोचरी लेवां जतां पहेलां वरोवर रीते पात्रां तपासे, अने गोचरी लेतां पहेलां पण तपासे, तेथी क्रीडी विगरे प्राणी चढेलुं जोए तो तेने संभालीने बाजुए मुके, तथा रज पूंजीने साधु गृहस्थना घरमां पेसे, अथवा नीकळे, तेथी आपणा पात्रांनीज विधि छे, कारण के अहीं पण प्रथम पात्रां वरावर तपासीने पूंजीने पिंड लेवो, तेथी ते पण पात्रां संबंधीज विचार छे, म०—पात्रां शामाटे पूंजीने गोचरी लेवी ? उ—केवली प्रथु पात्रां पूंज्या विना गोचरी लेतां कर्मबंध बतावे छे, ते आ प्रमाणे छे.

पात्रामां वेदंद्रिय विगरे जीवो चडी जाय छे, अथवा बीजो अथवा रज होय तेवां पात्रामां गोचरी लेतां कर्मंतुं उपादान थाय छे, माटेज साधुओंने आ पतिज्ञा विगरे पूर्व बतावेल छे के, प्रथम पात्रां देखीने जीव जंतु के रज होय तो दूर करीने गृहस्थना

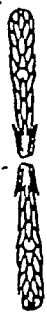
घरमां जवुं आववुं. वकी—

से भि० जाव सभणे सिया से परो आहहुं अंतो पडिगहंगसि सीओदंगं परिमाइत्ता नीहहुं दळइज्जा, तहए० पडिगहंगं परहस्थंसि वा परिपयांसि वा अफासुय जाव नो प०, से य आहच्च पडिगहिए सिया खिपामेव उदगंसि साहरिज्जा, से पडिगहमायाए पाणं परिद्विज्जा, ससिणिद्धाए वा भूमीए, नियमिज्जा ॥ से० उदउळं वा ससिणिद्धं वा पडिगहं नो आमजिज्ज वा २अह पु० विगओदए मे पडिगहए छिन्नसिणेहे तह० पडिगहं तओ० सं० आमजिज्ज वा जाव पाया- विज्ज वा से भि० गाहा० पविसिउकामे पडिगहमायाए गाहा० षिंड० पविसिज्ज वा नि० एवं वहिया विहाभूरपीं वा गामा० दूईज्जिजा, तिन्वदेसीयाए जहा विइयाए त्तथेसणाए नवरं इत्थ पडिगहे, एयं एळ तस्स० नं सन्वदेहिं सहिए सया जएज्जासि (सू० १५४) तिवेसि ॥ पाएसणा सम्मत्ता ॥ २-१-६-२ ।

उयारे ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी पाणी. माटे गयेज्जे होय, ते समये पाणी योञ्चतां कदाच ते गृहस्थ भूळथी अथवा द्वेष बुद्धिथी अथवा भक्तिना कारणे अथवा विमर्ष पाणाथी घरमां रहीने बीजा पात्रांमां के पोताना वासणमां थंडुं पाणी जुहुं लइने बहार काढीने बहोरावे, ते समये तेवुं काचुं पाणी पारका (गृहस्थ) ना हाथमां के वासणमां जाणे तो अ प्रासुक जाणीने न ले, पण कदाच भूळथी के ओचींतुं गृहस्थे नांवी दीधुं होय तो तेज समये पाणी आपनार गृहस्थना वासणमांज पाहुं नांवी देवुं, पण कदाच ते न ले तो, कुवा विगेरेमां ज्यां ते जातीनुं पाणी होय त्यां परठववानी विधिए परठववुं, पण तेवा पाणीनो अभाव होय अथवा दूर होय तो ज्यां ज्याया होय के खाडो होय त्यां परठववुं अथवा जो बीजो बडो होय, तो ते बडो के पाणीनुं वासण कोइने

ज्यां बाधा न थाय त्यां ते घडो पाणी सुधांज सुकी दे, पण पाणी पाहुं आष्यां पडीं के खाली कर्यां पडीं तेनें जल्दी सुकाववा लसवो नहि, पण पाणी नीतर्यां पडीं थोडो सुकातां तडके सुकावो के लुंही नाखवो.
 वली गृहस्थनां वरमां गोचरी पाणीं लेवां जतां पोतांनां बीजां पात्रां साथे लइ जां, तेजं प्रमाणे परगाम विहार करतां भणवा जतां स्थंडिल जतां पोतांनां पात्रां साथे लइ जवां ए वधुं वख एसणा माफक जाणवुं, पण फक्त अहीं पात्रां संबंधी जाणवुं.
 विशेष ए ध्यानमां राखवुं, के वरसाद के झाकळ पडतुं होय तो पात्रां साथे न जवुं. आज साधुनी सर्व सामग्री छे के हमेशां यतनाशी वर्तवुं. इति पात्र एषणा.

छटुं अध्ययन समाप्त थयुं.



सातमुं अध्ययन अवग्रह प्रतिमा.

छटुं अध्ययन कहीने सातमुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, पिंड शरया वख पात्र विगेरेनी एषणाओ अवग्रहने आश्रयी थाय छे, तेशी आवा संबंधे आवेला आ अध्ययनता चार अनुयोग द्वारा कहेवा जोइये, तेमां उपक्रमनी अंदर रहैल अर्थाधिकार आ छे, के साधुए आ प्रमाणे विशुद्ध अवग्रह लेवो, नामनिष्पन्न नियेपासां 'अवग्रह प्रतिमा' एतुं नाम छे, तेमां अवग्रहना नाम स्थापना निक्षेपा सुगम होवाशी छोडीने द्रव्य विगेरे चार प्रकारनो निक्षेपो निर्युक्तिकार बतावे छे.

द्वे खिते काले भावेऽपि य उगहो चउद्दा उ । देविंद १ रायउगह २ गिंहवह ३ सागरिय ४ साहमपी ॥ ३१६ ॥
द्रव्य अवग्रह क्षेत्र अवग्रह काल अवग्रह अने भाव अवग्रह एम चार प्रकारनो अवग्रह हे.

अवग्रहनुं वर्णन.

अथवा सामान्यथी पांच प्रकारनो अवग्रह हे.

- (१) देवेद्रनो अवग्रह—ते लोकना मध्य भागमां रहेल मेरु पर्वतना रुचक प्रदेशथी दक्षिणना अर्ध भागमां रहेल जग्यानो.
- (२) राजा—ते चक्रवर्ती महाराजा के बादशाहनो भरत विगेरे क्षेत्र आश्रयी जे जग्या तेना वंशमां होय तेमां साधु विचरे ते. (३) गृहपति—ते गामडामां रहेनार महत्तर (पटेल) विगेरेनी पासे गामना महेछा विगेरेनो अवग्रह. (४) शय्यातर (घरथणी) नो तेनी खाली पढेली घंघशाळा विगेरेमां ज्यां साधु उतरे छे, ते (५) साधर्मिक ते साधुओ—जेओ मास कल्पवढे त्यां रखा होय तेओनी पासे तेमनी मागेली जग्यामां उतरवुं ते वसति विगेरेनो अवग्रह १। जोजन छे, (वंने दिशापां २॥—२॥ गाड जतां) चार दिशापां जाय, आ प्रमाणे पांच प्रकारनो अवग्रह वसति विगेरे लेतां यथावसरे अनुज्ञां लेवा योग्य छे. हवे प्रथम बतावेल द्रव्यादि अवग्रह बतावना कहे छे—

द्रव्यनुगहो उ तिविहो सचिना॥चित्तमीसओ क्षेत्र । खितुगहोऽपि तिविहो दुविहो काळुगहो होइ ॥ ३१७ ॥

द्रव्यनो अवग्रह त्रण प्रकारनो छे. शिष्य विगेरेनो सचित छे, रजोहरण विगेरेनो अचित्त अने शिष्य रजोहरण विगेरे साथे स्वीकारतां मिश्र अवग्रह छे, क्षेत्र अवग्रह पण सचिना विगेरे त्रण प्रकारनोज छे, अथवा गाम नगर अरण्य भेदथी त्रण प्रकारनो छे,

काल अवग्रह ऋतुचक्र (आठमास) तथा वर्षाकाल (चारमास) नो अवग्रह एव वे भेदे छे-

हवे भाव अवग्रह वतावे छे-

महजगहो य महणुगहो य भावुगहो दृहा होइ । इंदिय नोइंदिय अत्यवंचणे उगहो दसहा ॥ ३१८ ॥

भाव भवग्रह वे प्रकारनो छे, मति अवग्रह अने ग्रहण अवग्रह छे, तेमां मति अवग्रह पण वे प्रकारनो छे, अर्थावग्रह अने व्यंजन अवग्रह छे, तेमां अर्थावग्रह इंदिय तथा नोइंदिय (मन) ना भेदशी छ प्रकारनो छे, अने व्यंजन अवग्रह चक्षु इंदिय अने मन छोडीने बाकी चार इंदियोनो अवग्रह छे, ते बधाए भेदवाळो दस प्रकारनो मतिभाव अवग्रह (मतिवर्द पदार्थानो जे समान्य बोध समजाय ते) छे, हवे ग्रहण अवग्रह वतावे छे-

गहणुगहमिप अपरिगहसस समणसस गहणपरिणामो । कह पाडिहारियाऽपाडिहारिए होइ ? जइयव्वं ॥ ३१९ ॥

अपरिग्रहवाळो ते मुनि छे, तेने ज्यारे षिंड [गोचरी] वसति [स्थान] वख पातरां लेवानो विचार थाय, त्यारे ते ग्रहण भाव अवग्रह छे. ते वखते साधुने एवी बुद्धि होवी जोइए के केवी सीते ते वसति विगेरे मने शुद्ध मळी शके ? तथा मातिहारिक पाछुं अपाय ते पाट पाटला विगेरे अपतिहारक (पाछुं न अपाय ते गोचरी विगेरे) मने शुद्ध मळे तेमां यत्न करवो, अने प्रथम पांच प्रकारनो इंद्र विगेरेनो अवग्रह बताव्यो ते आ ग्रहण अवग्रहमां समजवो. आ प्रमाणे नाम निष्पन्न निक्षेपो थयो, हवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे-

समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते ! अपमू परदत्तभोई पावं कम्मं नो करिस्सामिच्चि समुट्ठाए सव्वं भंते !

अदिनादाणं पञ्चवल्गामि, से अणुपविसिता गाभं वा जाव रायहाणि वा नेव मयं अदिनं गिण्हिज्जा नेवऽन्नेहि अदिनं गिण्हविज्जा अदिनं गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जेहिवि सद्धि संपवइए तेसिपि जाहं छत्तं वा जाव चम्मडेय-
णं वा तेसिं पुवामेव उगहं अणुन्नविय अपडिलेहियं २ अपमज्जियं २ नो उग्गिण्हिज्जा वा परिगिण्हिज्ज वा, तेसिं पुवामेव उगहं जाइज्जा अणुन्नविय पडिलेहियं पमज्जिय तओ सं० उग्गिण्हिज्ज वा प० ॥ (सू० १५५)

श्रम सहन करे ते श्रमण [तपस्वी] छे, ते हुं आवी रीते वनुं, एम साधु विचारे ते कहे छे, 'अनगार' अग ते वृक्ष छे, तेनाथी जे वेने ते अगार [घर] छे, ते जेने न होय ते अनगार अर्थात् घरनो फांसो (ममत्त्व) जेणे छोड्यो होय, ते छे, 'अकिंचन' जेनी पासे कइपण न होय ते अर्थात् निष्परिश्रह छे तथा 'अपुत्र' ते स्वजन वंशु रहित अर्थात् निर्मम छे एज प्रमाणे 'अपुत्र' ते वे पगवाळां चार पगवाळां विगेरेशी रहिन छे, तथा परदत्तभोजी (गोचरी लावी खानारो) हुं वनीने पाप कर्म करीश नहि, आ प्रमाणे दीक्षा लइने पछी आवी प्रतिज्ञावाळो थाय ते बतावे छे, शिष्य गुरुने कहे छे. हे गुरु ! हुं सर्वथा अदत्तादाननुं पञ्चस्वण करं छुं. अर्थात् दांत शोधवा [खोतरवा] माटे जाइती सकी के तणखंछुं पण परकाए नहि आपेछुं नहि लउं—

अवां विशेषणो श्रमणनां लेवाथी वौव वावा विगेरमां श्रमणपणुं बहारथी नाम मात्र होवा छतां गुणोना अभावे तेमनामां श्रमणपणुं लीहुं नथी, पण उपर बतावेल अदत्तादा न त्याग करनार जैन सांयुजं श्रमण छे.

एवो अकिंचण साधु गाम अथवा राजधानीमां जइने पोते अदत्त ग्रहण न करे, न बीजा पासे लेवडावे, अने बीजा ग्रहण करनारनी प्रशंसा न करे, वकी जे साधुओ साथे पोते दीक्षा लीधी होय अथवा उत्तरेल होय तेओनां उपकरण पण तेमनी आज्ञा

विना छे नहि ते बतावे छे,

छत्र ते माथातुं ढांकणुं बरसादमां स्थंडिल जतां माथा उपर वर्षाकल्प (कोबली) विगरे नाखे ते छत्रक छे, अथवा कुंकण देश विगरेमां घणो बरसाद पढे छे, तेवा देशमां कारण प्रसंगे छत्री वापरवानी आज्ञा छे, ते छत्र लेवुं होय अथवा चर्म छेदनक विगरे कोइ पण चीज विना पूछे छे नहि, एक बार पण नं छे, अनेकवार पण छे नहि.

साधना साधुओनी वस्तु लेवानी विधि—

प्रथम जेनी वस्तु होय तेने पूछी लेवुं, अने पछी आंखेमी जोइने अने रजोहरण विगरेथी पूंजीने एकवार के अनेकवार छे से भि० आगंतारेसु वा ४ अणुवीइ उगहं जाइजा, जे तत्थ ईसरे जे तत्थ संपहिद्वए ते उगहं अणुबिज्जा—कामं खल्ल आउसो० ! अहालंदं अहापरिजायं बसापो जाव आउसो ! जाव आउसंतस्स उगहं जाव साहम्मिया एइतावं उगहं उग्गिण्हस्सामो, तेण परं बिहरिस्सामो ॥ से किं पुणं तत्थोण्हंसि एवोण्हियंसि जे तत्थ साहम्मिया संभाइया समणुजा उवागच्छिजा जे तेण समयमेसितए असणे वा ४ तेण ते साहम्मिया ३ उवनिमंतिजा, नो चेर णं परचडियाए ओगिज्जाय २ उवनि० ॥ (सू० १५६)

ते मुनि मुसाफरखानामां प्रवेश करीने अने विचार करीने यतिने योग्य क्षेत्र जोइने साधुओने जोइए तेठली वसति विगरेना अवग्रह याचे, कोनी पासे याचवुं ते कहे छे, जे घरना मालिक होय अथवा मालिके जेने त्या काम करवा राहयो होय तेमनी पासे जइने क्षेत्र अवग्रह याचे, केवी रीते ? ते बतावे छे, साधु मालिक होय अथवा तेना गुमास्ता विगरेने उदेशीने कहे, हे आयुमन् !

तमारी इच्छा प्रमाणे तमे जेटलो काल आज्ञा आपो, जेटली जग्या वापरवा आपो, ते प्रमाणे अमे अहीं रहीए, एटले हे गृहस्थ तमे जेटली जग्या वापरवा आपशो, तेटलो समय अमे तथा अमारा साधुओ आ जग्या वापरथुं, तेथी आगळ (पळी) विहार करीथुं, पळी मालिके ते मकानमां उतरवानी जग्या आप्या पळी साधुए थुं करवुं ते कहे छे. ते जग्याए केटलाएक परीणा साधुओ एक समाचारी आचरनारा उग्रुक्त विहारी आवे, तेमने पूर्वना मोक्षभिलाषी साधुए उतरवा देवा, तथा विहार करता पोतानी मेळे त्यां तेवा उत्तम साधुओ आव्या होय तेमने अशन पान विगेरे चारे आहार लावीने तेमनी इच्छानुसार लेवा पार्थाना करवी के आ हु आहार विगेरे लाव्यो छुं, आपनी इच्छा प्रमाणे लइने मारा उपर अनुग्रह करो. पण बीजा साधुना लावेला आहारनी परभारी निमंत्रणा पोते न करे, पण पोते जाते लावीने तेमनी इच्छानुसार आपे.

से आगंतारेसु वा ४ जाव से किं पुण तत्थोगाहंसि एवोणाहियंसि जे तत्थ साहम्मिआ अन्नसंभोइआ समणुत्ता उवाग-
च्छिज्जा जे तेण सयमेसित्तए पीढे वा फलए वा सिज्जा वा संथारए वा तेण ते साहम्मिए अन्नसंभोइए समणुत्ते उवनि-
मंतिज्जा नो चेवणं परवडियाए ओगिड्झय उवनिमंतिज्जा ॥ से आगंतारेसु वा ४ जाव से किं पुण तत्थुगहंसि
एवोणाहियंसि जे तत्थ गाहावईण वा गाहा० पुत्ताणं वा सुई वा पिपलए वा कणसोहणए वा नहच्छेयणए वा तं
अवणो एगस्स अट्टाए पाडिहारियं जाइत्ता नो अन्नमन्नस्स दिज्ज वा अणुपइज्ज वा, सयंकरणिज्जंतिकहुं, से तमायाए
तत्थ गच्छिज्जा २ पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे कहुं भूमीए वा ठवित्ता इमं खल्ल २ चि अलोइज्जा, नो चेव णं सयं पाणिणा
परपरणिंसि पच्चप्पिणिज्जा ॥ (सू० १५७)

साधुए अवग्रह लेतां जोतुं के ते सचित्त जग्या नं होय, तथा अथर जग्यो होय त्यां न उतरे, बालक तथा पशुओंने स्वावा पीनातुं अपातुं होय, तेवी जग्यामां धर्म ध्यान विगोरे पंडित पुरुाने न थाय, माटे तेतुं मकान न याचतुं तेमनं ते मकानमां थइने जवानो रस्ता होय, अथवा यरनां माणसो नोकर—चाकर विगोरे त्यां लडतां होय तथा तेल मसळतां होय, तथा स्नान विगोरे ठंडा उना पाणीथी करतां होय, त्यां न उतरतुं. आ वधु पूर्व जग्याना अंगे कहुं छे, ते प्रमाणे जाणतुं, पण अहीं विषय वसति अवग्रह संबंधी जाणवो.

इति प्रथम उद्देशः

बीजो उद्देशो.

पहेलो उद्देशो कह्यो, हवे बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां अवग्रह वताव्यो अने अहीं पण तेतुंन बाकी रहेछु कहे छे. तेतुं आ सूत्र छे.

से आगंतारेसु वा ४ अणुवीड उगहं नारुज्जा, जे तत्थ ईसरे० ते उगहं अणुवविज्जा कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिचायं वसामो जाव आउसो ! जाव आउसंतसस उगहे जाव साहम्मिआए ताव उगहं उज्जिण्हस्सामो, तेण पं वि० से कि पुण तत्थ उगहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ समणाण वा माह० छत्तए वा जाव चम्मपळेदणए वा तं नां

अंतोहितो बाहिं नीणिज्जा बहियाओ वा नो अंतो पविसिज्जा, सुत्तं वा नो पडिवोहिज्जा, नो तेसिं किंविंवि अप्पचियं पडिणीयं करिज्जा ॥ (सू० १५९)
 ते साधु धर्मशाला विगेरेमां उत्तरेलो होय, त्यां पूर्वं ब्राह्मण विगेरे ते गृहस्थनी रजा लइ उत्तरीं होय, तेज स्थानमां वीजी जयाना अभांवे उत्तरवुं पडे, तो ते स्थानमां उत्तरेला ब्राह्मण विगेरेवुं छत्र विगेरे जे कइ उपकरण होय, ते मकाननी अंदर पडयुं होय तो बहार लइ जवुं नहि तेम बहारथी अंदर लाववुं नहि, तेम सूतेला ब्राह्मण विगेरेने जगाडवा नहि, तेमज तेमना मनमां पण अपीति थाय तेम न करवुं तथा तेमनी साथे विरोधभाव पण न करवो.

से भि० अभिकंखिज्जा अंबवणं उवागच्छित्ताए जे तत्थ ईसरे २ ते उगाहं अणुजाणाविज्जा-कानं खलु जाव विहरिस्सामो, से किं पुण० एवोणाहियंसि अह विक्खू इच्छिज्जा अंबं भुत्ताए वा से जं पुण अंबं जाणिज्जा सअंडं ससंताणं तह० अंबं अफा० नो प० ॥ से भि० से जं० अप्पंडं अप्पसंताणगं अतिरिच्छिन्नं अवोच्छिन्नं अफामुयं जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ से भि० से जं० अप्पंडं वा जाव संताणगं तिरिच्छिन्नं वुच्छिन्नं फा० पडि० ॥ से भि० अंबभित्तगं वा अंबपेसियं वा अंबवोयगं वा अंबगालगं वा अंबडालगं वा भुत्ताए वा पायए वा, से ज० अंबभित्तगं वा ५ सअंडं अफा० नो पडि० ॥ से भिक्खू वा २ से जं० अंबं वा अंबभित्तगं वा अप्पंडं० अतिरिच्छिन्नं २ अफा० नो प० ॥ से जं० अंबडालगं वा अप्पंडं ५ तिरिच्छिन्नं वुच्छिन्नं फासुयं पडि० ॥ से भि० अभिकंखिज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्ताए, जे तत्थ ईसरे जाव उगाहंसि० ॥ अह भिक्खू इच्छिज्जा उच्छुं भुत्ताए वा पा०० से जं० उच्छुं जाणिज्जा सअंडं जाव नो

प०, अतिरिच्छछिन्नं तर्हेव, तिरिच्छछिन्नेऽवि तर्हेव ॥ से भि० अभिकंखि० अंतरच्छुयं वा उच्छुगंदिंयं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुसा० उच्छुडा० शुत्तए वा पाय०, से जं० पु० अंतरच्छुयं वा जाव डालगं वा सअंडं नो प० ॥ से भि० से जं० अंतरच्छुयं वा० अषंडं वा० जाव पडि० अतिरिच्छछिन्नं तर्हेव ॥ से भि० लहसणवणं उवागच्छित्तए, तर्हेव तिन्निवि आलावगा, नवरं लहसुणं ॥ से भि० लहसुणं वा लहसुणकंदं वा लह० चोयगं वा लहसुणनाळगं वा शुत्तए वा २ से जं० लसुणं वा जाव लसुणवीयं वा सअंडं जाव नो प० एवं अतिरिच्छछिन्नेऽवि तिरिच्छछिन्ने जाव प० ॥ (सु० १६०)

ते भिक्षु कदाचित् आम्र वनमां गृहस्थ पासे अवग्रह याचे, त्यां उतरीने कारण पढे आंवा (केरी) खावाने इच्छे, तो सडेला के कीडावाळा के करोळीयाना जालांवाळा अपासुक होय ते लेवा नहि. तथा आंवा इंडां विनाना अने सड्या विनाना होय, पण जो तिरछा न छेद्या होय तथा अखंडित होय, तो तेने अपासुक जाणीने लेवा नहि, पण जो कीडा विनाना तीरछा चीरेल अने पासुक (अचित्त) होय तो कारण पढे ले, तेज प्रमाणे (अंबभित्ति) अळथां फाडीयां, (अंबपेसी) आंवानां नानां फाडीयां (अंबचोयग) आम्रछाल [सालग] रस, (डालग) केरीना. क्षीणा दुकडा होय ते अचित्त होय तो लेवा.

आ प्रमाणे इक्षु सूत्रना त्रणे आलावा लेवा तथा अंतरच्छु पर्वना मध्य भाग लेवा, आ प्रमाणे लसणनां त्रणे सूत्र लेवां, आपां जे वातो न समयाय ते निशीथ सूत्रना सोळमा उद्देशाथी जाणवी.

हवे अवग्रहना अभिग्रह संबंधी विशेष कहे छे.

से भि० आगांतारेसु वा ४ जावोगादियंसि जे तत्थ गाहवर्ण वा गाहा० पुत्ताण वा इच्चैयाइं आयतणाइं उवाइकम्म अह

भिक्खु जाणिज्जा, इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं उगहं उणिगिहत्तए, तत्थ खल्ल इमा पट्टमा पडिमा—से आगंतारेसु वा ४
अणुवीह उगहं जाइज्जा जाव विहरिस्सामो पट्टमा पडिमा १ । अहावरा० जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—अहं च खल्ल
अनेसिं भिक्खुणं अट्टाए उगहं उणिगिहत्तसामि, अपणेसिं भिक्खुणं उगहे उगहिए, उवल्लिस्सामि, दुक्खा पडिमा २। अहा-
वरा० जस्स णं भि० अहं च० उणिगिहत्तसामि अनेसिं च उगहे उगहिए नो उवल्लिस्सामि, तच्चा पडिमा ३। अहावरा०
जस्स णं भि० अहं च० ना उगहं उणिगिहत्तसामि, अनेसिं च उगहे उगहिए उवल्लिस्सामि, चउत्था पडिमा ४। अहा-
वरा० जस्स णं अहं च खल्ल अप्पणो अट्टाए उगहं च उ०, नो दुण्हं नो तिण्हं नो चउण्हं नो पंचण्हं पंचमा पडिमा ५।
अहावरा० से भि० जस्स एव उगहे उवल्लिइज्जा जे तत्थ अहासमन्नागए इक्कडे वा जाव पलाले तस्स लाभे संबसिज्जा
तस्स अलाभे उक्कुओ वा नेसज्जिओ वा विहरिज्जा, छट्ठा पडिमा ६। अहावरा स० जे भि० अहासंथइमेव व उगहं
जाइज्जा, तंजहा—पुढविस्सिलं वा कट्टसिलं वा अहासंथइमेव तस्स लाभे संते०, तस्स अलाभे उ० ने० विहरिज्जा, सरामा
पडिमा ७ । इच्चेयासिं सराण्हं पडिमाणं अन्नयरं जहा पिडेसणाए ॥ (सू० १६१)

ते सायु धर्मशाळा विगेरेमां अवग्रह मागीने उतर्या पछी त्यां रहेनारा गृहस्थो विगेरेना पूर्वे वतावेला दोषो त्यजीने तथा हवे
पछी जे कर्म उपादानना कारणो वतावसे ते छोडीने अवग्रह लेवाने समजे.

ते भिक्षु सात प्रतिमा [अभिग्रह विशेष] वडे अवग्रह ले, तेमां पहेली पडिमा आ छे के ते सायु धर्मशाळा विगेरेमां उतरवा
पहेलां चिंतवी राखे के मारे आचो उपाश्रय मळे तोज उतरववुं ते सिवाय नहि.

बीजा साधुने भावो अभिग्रह होय छे के हुं बीजा साधुओ माटे अन्नग्रह याचीश्र अथवा बीजाए याचेला अन्नग्रहमां रहीश्र. प्रथमनी प्रतिमापां सामान्य छे अने आ प्रतिमा तो गच्छमां रहेला उशुकत विहारीने होय, तेओ साथे गोचरी करता हाय अथवा न पण करता होय-तो पण साथे उतरता होवाथी एक बीजा माटे वसति याचे छे.

त्रीजी प्रतिमावाळो साधु एमो विचार करे के हुं पोते बीजाने माटे अन्नग्रह याचीश्र, पण बीजाना याचेक्रामां रहीश्र नहि. आ प्रतिमा आहाळंदिक साधुओने माटे छे. कारण के तेओ गच्छवासी आचार्य पासे सुन्न अर्थ भगता होवाथी आचार्य माटे मकान याचे छे.

चोथी प्रतिमापां ए अभिग्रह छे. के हुं बीजाने माटे अन्नग्रह याचीश्र नहि. पण बीजाए मागेला अन्नग्रहमां रहीश्र, आ अभिग्रह गच्छमां रहेला अभ्युदत विहारी गच्छमां रहीने जिनकल्पी यवाने माटेन अभ्यास करता होय नेमने माटे छे.

पांचमी प्रतिमा आ प्रमाणे छे के हुं पोतेभा माटे अन्नग्रह याचीश्र, पण बीजा त्रण, चार, पांच माटे अन्नग्रह नहि याचुं, आ जिनकल्पी यवाने माटे अभिग्रह छे.

हुं अन्नग्रह याचीश्र पण त्यांज उत्कट विगेरे संथारो लइश्र; नहि तो उत्कटुक अथवा वेठेलो के उभेलो आरवी रात पुरी करीश्र. आ छट्टी प्रतिमा जिनकल्पी विगेरेने छे.

सातमी प्रतिमा उपर प्रमाणे छे के हुं उपर वतावेल संथारो करवां शिखादिक विगेरे तैयार हशे तेज लइश्र. आपां विशेषेण एटछं छे के तैयार होय तोज छे, नहि तो वेठे वेठे के उभे उभे रात्री पुरी करे. आ पण जिनकल्पी विगेरेनी छे.

आ साते प्रतिमा वहेनारा साधुओ जिनकल्पी विगेरे जिनेश्वरनी आझापां होवाथी यथाशक्ति पाळता होवाथी वधारे पाळनारो होय ते पोताने उंचो न माने तेमं बीजानी निंदा न करे, ए वधुं पिट्ठेषणा माफक जाणवुं.

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु येरेहिं भगवंतेहिं पंचविहेउगहे पबेत्ते, तं०—देविंदउगहे ? रायउगहे
२ गाहावइउगहे ३ सागारियउंगहे ४ साहम्मियउगा० ५ एवं खलु तस्सा भिक्खुरस भिक्खुणीए वा सामणियं

(सू० १६२) उगहपडिमा सम्पत्ता ॥ अध्ययनं समाप्तं सप्तमम् ॥ २-१-७-२ ॥
सुधमस्त्रिामी जंबूस्वामीने कहे छे के भगवान महावीरे आ उदेश्यामां बतावेलो देवेद विगेरेनो अवग्रह सारी रीते समजीने साधुए पाळवो. (ए साधुनी साधुता छे) अवग्रह प्रतिमा नामनुं सातसुं अध्ययन समाप्त धनुं तथा आचारांगनी पहेली चूला समाप्त धर.

सप्तसप्तिकाख्या द्वितीया चूला ।

छे.

पहेली चूलिकानां सात अध्ययन कळां हवे बीजनी चूलिका कहे छे तेनो पहेली साये आ प्रमाणे संबंध छे.
गइ चूलापां वसतिनो अवग्रह बताव्यो, ते स्थानमां रहीने केवा स्थानमां कार्यात्सर्ग तथा स्वाध्याय उच्चार पेसाव विगेरे करवां ते अहीआ बतावे छे. आ चूलापां सात अध्ययन छे एवुं निरुक्तिकार बतावे छे.

सत्तिकगाणि इक्कसरगाणि पुट्टव भणियं तर्हि टाणं । उद्धटाणे पणयं निसीहिणाए तर्हि छकं ॥ ३२० ॥

सात अध्ययनोपां बीजा उदेश्या नथी, माटे एक सरवाळा छे. तेमां पहेळुं अध्ययन स्थान नामनुं छे. तेनी व्याख्या अही करे छे. आ संबंधे आवेळा आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वार थाय छे, [ए पूर्वे बतावेल छे] उपक्रममां अध्ययननो अर्थाधिकार आ छे,

के साधुए केवा स्थानमां आश्रय लेवो, नाम नित्पन्न निक्षेपामां स्थान ए नाम छे. एना नाम विगोरे चार निक्षेपा थाय छे, तेमां अहीं द्रव्यने आश्रयी उद्धर्वस्थानवडे अधिकार छे. ते निर्धुवितकार कहे छे. उद्धर्वस्थानमां प्रस्ताव छे. वीजुं अध्ययन निशीथिका छे. तेना छ प्रकारे निक्षेप छे, ते तेना स्थानमां कहीशुं. हवे सूत्र कहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखेज्जा ठाणं ठाहत्तए, से अणुपविसिज्जा गामं वा जाव रायहाणि वा, से जं पुण ठाणं जाणिज्जा सअंडं जाव मक्कडासंताणयं तं तह० ठाणं अफासुयं अणेस० लाभे संते नो प०, एवं सिज्जागमेण नेयव्वं जाव उदयपसुं याइति ॥ इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म २ अह भिक्खू इच्छिज्जा चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाहत्तए, तत्थिमा पढमा पडिमा—अचिन्तं खलु उवसज्जिज्जा अवलंबिज्जा काएण विषयिकम्माइ सवियारं ठाणं ठाइस्सामि पढमा पडिमा । अहावरा दुच्चा पडिमा— अचिन्तं खलु उवसिज्जजेज्जा अवलंबिज्जा काएण विषयिकम्माइ नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि दुच्चा पडिमा । अहावरा तच्चा पडिमा—अचिन्तं खलु उवसज्जजेज्जा अवलंबिज्जा नो काएण विषयिकम्माइ नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामिति तच्चा पडिमा । अहावरा चउत्था पडिमा—अचिन्तं खलु उवसज्जजेज्जा नो अवलंबिज्जा काएण नो परकम्माइ नो सवियारं ठाण ठाइस्सामिति वोसट्टकाए वोसट्टकेसमंमुलोमनहे संनिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामिति चउत्था पडिमा, इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं जाव पणाहियतरायं विहरिज्जा, नो किंचिवी वइज्जा, एयं खलु तस्स० जाव जइज्जासि चिबेमि (सू० १६३) ॥ ठाणासनिक्कयं सम्मत्तं ॥ २-२-८ ॥

पूर्व बलावेलो साधु जो स्थानमां रहेवाने इच्छे, तो गाम विगोरेमां प्रवेश करे. त्यां इहावाळं तथा करोकीयांना जाळावाळं

मकान जो अप्राप्तुक मळे, तो मळतुं होय तो पण न ले, तेज प्रमाणे बीजां सूत्रो पण शय्या माफक समजा लेंवां, ते ज्यां सुधी पाणी तथा कंदशी व्याप्त होय तो पण ते लेंवां नहिं, हवे प्रतिमाना उद्देशने आश्रयी कहे छे, एटले पूर्वे बतावेल्या दोषोवाळां तथा हवे पछी कहेवाला दोषोवाळां पण स्थानो जोडीने चार प्रतिमाओ वदे साधु रहेवा इच्छे, ते कारणभूत अभिग्रह विशेष चार प्रतिमाओ छे तेतुं स्वरूप अनुक्रमे बतावे छे.

(१) कोइ साधुने आवोज अभिग्रह होये के हुं अचित्त उपाश्रयतुं स्थान याचीश, तेज प्रमाणे कोइ अचित्त भीत विगेरेने कायावदे टेको लइश, वळी परिरपंद करीश, एटले हाथपण विगेरेशी आकुंचन विगेरे करीश, [लांवा पहोळा करीश,]

(२) बीजी प्रतिमायां विशेष आ छे, के आकुंचन प्रसारण तथा भीतनो टेको विगेरे लइश, पण पाद विहरण (पगेथी चालवातुं) मकानयां पण नहि करूं.

(३) बीजीयां आकुंचन प्रसारण करे, पण पाद विहरण के टेको लेंवानुं न करे.

(४) लांवा पहोळा हाथ विगेरे न बरे, तेम न चाले, न 'टेको' छे, पण ते कायातो मोह सर्वथा मुकनारो थाय, तथा वाळ दाढी मूळ लोप नख विगेरे पण न हळावे. आवी रीते संपूर्ण कारोत्सर्ग करनारो मेरु पर्वत माफक निरुपकंप रहे, ते बसवते जो कोइ आवीने तेना केश विगेरे खेंचे, तो पण स्थानशी चलायमान थाय नहि; आ चारमांजी कोइ पण प्रतिमा धारण करेलो बीजी प्रतिमा धारेलाने हळको न माने, तेम पोते अहंकारी न बने तेम एतुं वचन पण न बोले, के हुं श्रेष्ठ छुं, बीजो उतरतो छे.

आ प्रमाणे प्रथम अध्ययन समाप्त भयुं.

निषीथिका—'बीजुं अध्ययन'

पहेळुं अध्ययन कशीने वीजुं कहे छे, तेनो संबंध आ छे के गया अध्ययनमां स्थान बतावुं, ते केहुं होय तो भणवाने योग्य थाय, अने ते स्वाध्याय भूमिमां शुरु करवुं, शुरु न करवुं, ते अहीं कहेशे. आ संबंधे आ अध्ययन आवुं छे. एना चार अनुयागद्वार थाय छे, तेनुं नाम निष्पन्ननिक्षेपामां "निषीथिका" एवुं नाम छे, आ निषीथिकानो नाम 'स्थापना द्रव्य क्षेत्र काळ भाव छे प्रकारे निक्षेपो छे, नाम स्थापना पूर्व माफक छे, द्रव्य निषीथनो आगमथी इशरीर भव्यशरीर छोडीने जे द्रव्य पच्छन्न (छानुं) होय ते छे, [टीकाना संशोधके टीपणामां लखुं छे के निषीथ निषीथ वंनेनुं प्राकृतमां एक 'निसीह' शब्द वडे बोलुं होवाथी एज प्रमाणे निक्षेपाहुं वर्णन छे, तेज प्रमाणे निषीथिका निषीथिका वंने नामहुं एकपणुं छे. क्षेत्र निषीथ ते 'ब्रह्मलोक' नामना देवलोकमां रिष्ट विमाननी पास 'कृष्ण राजाशो' जे क्षेत्रमां छे, ते तथा जे क्षेत्रमां निषीथनुं वर्णन चाखे ते—काळनिषीथ ते कृष्ण [काळी अंधारी] रात्रिशो अथवा जे काळे निषीथनुं वर्णन चाखे,

भावनिषीथ 'नो आगमथी' आ कहेवाहुं सूत्रनुं अध्ययनज छे, कारण के ते आगमनो एक देश छे, नाम निष्पन्न निक्षेपो पुरो थयो, इवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे,

से भिक्खु वा २ अभिकं० निसीहियं फासुयं गमणाए, से शुण निसीहियं जाणिज्जा—सअंडं तहं० अफा० नो चेइस्सामि ॥ से भिक्खु० अभिकंवेज्जा निसीहियं गमणाए, से शुण नि० अण्यपाणं अण्यवीयं जाव संताणयं तहं० निसीहियं फासुयं चेइस्सामि, एवं सिज्जागमेणं नेयवंं जाव उदयणस्यए ॥ जे तत्थ दुवगगा तिवग्गा चउवग्गा पंचवग्गा वा अभिसंधा-

रिति निसीहियं गामणाए ते नो अब्रमन्नस्स कायं आलिगिज्ज वा विलिगिज्ज वा चुंविज्ज वा दंतेहि वा नहेहि वा
 अच्चिदिज्ज वा वुच्चिं०, एयं खलु० जं सव्वट्टेहिं सहिए सपिए सया जणज्जा, सेयपिणं मन्निज्जासि ति वेमि ॥
 (सू० १६४) निसीहियासत्तिकयं ॥ २-२-९ ॥

ते उत्तम साधु रहेला स्थानमां अयोग्यताना कारणे बीजे स्थळे भणवानी जग्याए जवा इच्छे, तो त्यां इंडां वगेरे पड्यां
 होय तो अप्रासुक जाणीने न जाय, पण इंडां वितानी फासु जग्या होय ते ग्रहण करे, आ प्रमाणे बीजां सुत्रो पण शय्या माफक
 समजवां ते पाणीथी उत्पन्न थयेलां कंद विगेरे पड्यां होय तो ते जग्याए पण भणवा न वेसे. त्या गया पड्डीनी विधि कहे छे—त्यां
 गयेला वे व्रण के वधारे साधु होय तो परस्पर एकेकनी कायानो स्पर्श न करे, तेम जेनाथी मोहनो उद्य थाय तेम वळंगे पण नहि,
 तथा कंदर्प प्रधान जेमां छे एवुं सुख चुंवन विगेरे न करे, (मोढाने मोहुं न लगाडे) आज वर्तन साधुनुं सर्वस्थ छे, अने तेथीज
 वधां परलोकना प्रयोजनवडे युक्त छे, तथा ते प्रमाणे वर्तनार पांच समिति पाळतो जीदगी सुधी संयम अनुष्ठान आचरे, अने
 आज परम कल्याण छे, एवुं उत्तम साधु माने.

निषीधिका नामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त भयुं

उत्तचार प्रश्नवण—बीजुं अध्ययन.

हवे बीजुं सत्त्वैकक अध्ययन कहे छे, तेनो पूर्वना अध्ययन साथे आ प्रमाणे संबंध छे, ते गया अध्ययनमां निषीधिका कही

सुत्रम्

॥१०५९॥

निषीथिका—'बीजुं अध्ययन'

पहेळुं अध्ययन कहीने बीजुं कहे छे, तेनो संबंध आ छे के गया अध्ययनमां स्थान बतावुं, ते केवुं होय तो भणवाने योग्य थाय, अने ते स्वाध्याय भूमिमां शुं करवुं, शुं न करवुं, ते अहीं कहेसो. आ संबंधे आ अध्ययन आवुं छे. एना चार अनुयागद्वार थाय छे, तेनुं नाम निष्यन्ननिक्षेपमां "निषीथिका" एवुं नाम छे, आ निषीथिकानो नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काल भाव छ पकारे निक्षेपो छे, नाम स्थापना पूर्व माफक छे, द्रव्य निषीथनो आगमथी शरीर भव्यशरीर छोडीने जे द्रव्य पच्छन्न (छानुं) होय ते छे, [टीकाना संशोधके टीपणामां लख्युं छे के निशीथ निषीथ वंनेनुं प्राकृतमां एक 'निसीह' शब्द बहे बोलतुं होवाथी एज प्रमाणे निक्षेपानुं वर्णन छे, तेज प्रमाणे निषीथिका निशीथिका वंने नामनुं एकपणुं छे. क्षेत्र निषीथ ते 'ब्रह्मलोक' नामना देवलोकमां रिष्ट विमाननी पासे 'कृष्ण राजाओं' जे क्षेत्रमां छे, ते तथा जे क्षेत्रमां निषीथनुं वर्णन चाले ते—कालनिषीथ ते कृष्ण [काळी अंधारी] रात्रिओ अथवा जे काळे निषीथनुं वर्णन चाले,

भावनिषीथ 'नो आगमथी' आ कहेवातुं सूत्रनुं अध्ययनज छे, कारण के ते आगमनो एक देश छे, नाम निष्यन्न निक्षेपो पुरो थयो, इवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे,

से भिक्खु वा २ अभिकं० निसीहियं फासुयं गमणाए, से पुण निसीहियं जाणिज्जा—सअंहं तह० अफा० नो चेइस्सामि ॥ से भिक्खु० अधिकंखेज्जा निसीहियं गमणाए, से पुण नि० अरण्यणं अथवीयं जाव संताणयं तह० निसीहियं फासुयं चेइस्सामि, एवं सिज्जागमेणं नेयव्वं जाव उदयपसूया ॥ जे तस्य दुवग्गा तिवग्गा चउवग्गा पंचवग्गा वा अभिसंधा-

रिति निसीहियं गामणाए ते नो अन्नमन्नसस कायं आलिगिज्ज वा विलिगिज्ज वा चुंविज्ज वा दंतैहि वा नहेहि वा अच्छिदिज्ज वा बुच्छिं, एयं खल्लुं जं सव्वट्टेहि सहिए समिए सया जणज्जा, सेयमिणं मञ्जिज्जासि चिबेमिं ॥

(सू० १६४) निसीहियासचिकयं ॥ २-२-९ ॥

ते उत्तम साधु रहलर स्थानमां अयोग्यताना कारणे बीजे स्थले भणवान्नी जग्याए जवा इच्छे, तो त्यां इंडां वगेरे पड्यां होय तो अप्रास्तुक जाणीने न जाय, पण इंडां विनानी फासु जग्या होय ते ग्रहण करे, आ प्रमाणे बीजां सुत्रो पण शर्या माफक समजवां ते पाणीथी उत्पन्न थयेलां कंद विगेरे पड्यां होय तो ते जग्याए पण भणवा न वेसे. त्या गया पडीनी विधि कहे हे-त्यां गयेला वे त्रण के वधारे साधु होय तो परस्पर एकेकनी कायानो स्पर्श न करे, तेम जेनाथी मोहनो उद्य थाय तेम वळगे पण नहि, तथा कंदर्प प्रधान जेमां हे एतुं मुख चुंबन विगेरे न करे, (मोढाने मोढुं न लगाडे) आज वर्तन साधुतुं सर्वस्य हे, अने तेथीज वयां परलोकना प्रयोजनवढे युक्त हे, तथा ते प्रमाणे वर्तनार पांच समिति पाळतो जीदगी सुधी संयम अनुष्ठान आचरे, अने आज परम कल्याण हे, एतुं उत्तम साधु माने.

निषीधिका नामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं

उच्चार प्रश्रवण—बीजुं अध्ययन.

हवे बीजुं सदैकक अध्ययन कहे हे, तेनो पूर्वना अध्ययन साथे आ प्रमाणे संबंध हे, ते गया अध्ययनमां निषीधिका कही

सुत्रम्

॥१०५९॥

हे, त्यां केवी जमीन उपर स्थंडील मात्रं (झाडां पेसाव) करवुं ते बतावे हे, एना नाम निषन्न निक्षेपामां उच्चार- पश्रवण एयुं नाम हे, तेनीं निरुक्तिने माटे निर्युक्तिरकार करे हे,

उच्चावह सरीराओ उच्चारो पसवइत्ति पासवणं । तं कइ आयसमाणस्स होइ सोही न अइयारो ? ॥ ३१२ ॥
 शरीरमांथी नोरथी दूर करे, अथवा मेल साफ करे [धरे] ते उच्चार (विष्टा) हे, तथा पकर्थी श्रवे (नीकळे) ते पेसाव एकिका (आ शब्द केदली जग्याए तेज रथे वपराय हे, एटले निशालमां जोकराने पेसाव करवा जवुं होय तो मास्टरने कहे के मास्टर एकी जाडं ?) आ स्थंडिल तथा मात्रं केवी रीते करे तो अतिचार न लागे ते पळीनी गायामां बतावे हे,

मुणिणा लक्कायदावरेण सुत्तभणियंमि आगासे । उच्चारवित्तमगो, कायन्वो अप्पमत्तेणं ॥ ३१२ ॥
 छ जीव निकांयना रक्षणमां प्रयत्न करनार साधुए हवे पळी कहेवाता सूत्र प्रमाणे स्थंडिलमां उच्चार पश्रवण अपमत्तपणे करवां. निर्युक्ति अनुगम पळी सूत्र अनुगम कहे हे,

से मि० उच्चारपासवणकिरियाए उब्वाहिज्जमाणे सयस्स पायपुंछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मियं नाइजा ॥ से मि० से जं पु० थंडिलं जाणिजा सअंडं० तह० थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिजा ॥ से मि० जं पुण थं० अप्पपाणं जाव. संतणयं तह० थं० उच्चा० वोसिरिजा ॥ से मि० से जं० अस्सिपडियाए एणं साहम्मियं समुहिसस वा अस्सि० बहवे साहम्मिया स० अस्सि प० एणं साहम्मिणिं स० अस्सिप० बहवे साहम्मिणीओ स० अस्सि० बहवे संसमण० पणं णियं २ ससु० पाणाइं ४ जाव उइसिथं वेएइ, तह० थंडिलं. पुरिसंतरकड जाव बहियानीइडं वा अनी० अन्नयरंसि वा

तद्व्यगारंसि थं० उच्चारं नो वोसि० ॥ से भि० से जं० वहने सम्पणमा० कि० व० अतिही समुद्दिस्म पाणाइं थूयाइं जीवाइं सत्ताइं जाव उदेसियं चेएइ, तह० थंङिलं पुरिसंतरगडं जाव वहियाअनीहडं अन्नयरंसि वा तह० थंङिलंसि नो उच्चारपासवण०, अह पुण एवं जाणिज्जा—अपुरिसंतरगडं जाव वहिया नीहडं अन्नयरंसि तद्व्यगारं० थं० उच्चार० वोसि० ॥ थं० जं० अस्सिपडियाए कयं वा कारियं वा पाप्पिच्चियं वा ज्जनं वा यट्टं वा मट्टं वा जित्तं वा संपट्टं वा संप- थुवियं वा अन्नयरंसि वा तह० थंङि० नो उ० ॥ से भि० से जं पुण थं० जाणेज्जा, इह खलु गाहावइ वा गाहा० पुत्ता वा कंदाणि वा जाव हरियाणि वा अंतराओ वा बाहि नीहरंति वहियाओं वा अंतो साहरंति वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उच्चा० ॥ से भि० से जं पुण० जाणेज्जा—वंधंसि वा पीढंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा अट्टंसि वा पासायांस वा अन्नयरंसि वा० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं पुण० अणंतरहियाए पुढवीए ससिण्णिद्धाए पु० ससरक्खाए पु० मडियाए मक्कहाए चित्तमंताए सित्ताए चित्तमंताए लेल्लुयाए कोलावासंसि वा दास्यंसि वा जीवपइड्डियंसि वा जाव

मक्कहासंताणयंसि अन्न० तह० थं० नो उ० ॥ (सू० १६५)
कोइ साधु कोइ वखते दट्टी पेसाव करवानी ताकीदे पीडातो होय अने रस्तामां तेवी छुटनी जग्ग्या न मळे तो तेणे कुंडी अथवा तेवु योग्य साधन समाधि पाटे मेकवी तेमां स्थंडिल जइ परठवी आववुं, पण जो पोनानी पासे हाजर न होय तो बीजा साधु पासे याचवुं अने तेनी प्रतिलेखना विगरे करीने ने उपयोगमां लेवुं, आथी एम सूचव्युं के स्थंडिल पेसावने रोकवा नहि, वकी शंका थाय पहेलांज वने त्यां लगी साधुए नीकळवुं, अने ज्यां स्थंडिल जाय त्यां प्रथम देखे के इंडा के नानाजंतु कीडीओ

के करोळीयानां जाळां वगिरे नथी, जो इंडां विगिरे होय तो त्यां दट्टी न जाय, हवे ते साधु एम जाणे के कोइ माणसे एक अथवा यणा साधु साड्डीने आश्रयी स्थंडिलनी जग्या वनावी होय, अथवा श्रमण माहण विगिरेने उद्देशीने वनावी होय, तो ते जग्याने बीजा पुरुषे स्वीकारी होय के न स्वीकारी होय तो पण मूल गुणथी दोषित होवाथी तेमां उच्चार पश्रवण न करवुं.

ते साधुए यावंतिक स्थंडिलमां अपुरुषांतर कृतमां स्थंडिल न जाय; पण बीजाए वावर्यी पळी तेनो उपयोग पोते पण करे, वळी उत्तर गुण अशुद्ध ते खरीद करी होय, वदले लीधी होय विगिरे कारणे दोषित होवाथी तेमां स्थंडिल न जाय, अथवा स्थंडिलनी जग्यामाथी कंद विगिरेने छोकरां विगिरे बहार काढे, अथवा, ते जग्यामां कंद विगिरे नांखे तो तेमां साधुए स्थंडिल न जवुं तथा स्कंध पीढ माचडो माळो अट्टभासाद विगिरेनी अथर जग्या के उंची जग्या के भीची जग्या ज्यां समाधथी न बेसाय तेवी जग्याए स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे सचित्त पृथ्वी विगिरे उपर स्थंडिल न जवुं भिनी होथ, सचित्त रजवाळी होय, माटा करोळीयानां जाळां, सचित्त पत्थरनी शिला, माटीनां देफां, शुळना कीडावाळं लाकडुं के नानां जंतुंथी. व्यास करोळीयाना जाळानां समुदायथी व्यास होय के तेवुं कंद पण अप्रासुक स्थान होय त्या स्थंडिल न जवुं.

से भि० से जं० जाणे०—इह खलु गाहावर्द वा गाहावइपुत्र वा कंदाणि वा जाव बीयाणि वा परिसाडिसु वा परिसा-
द्विति वा परिसाडिसंसति वा अन्न० तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० इह खलु गाहावर्द वा गा० पुत्रा वा सालीणि वा
वीदीणि वा मुगाणि वा मासाणि वा कुलत्थाणि वा जवाणि वा जवजवाणि वा पदरिसु वा पइरिसंसति वा
अन्नपरंसि वा तह० थंडि० नो उ० ॥ से भि० २ जं० आमोयाणि वा घासाणि वा भिळुयाणि वा वज्जुलयाणि वा

खाणुयाणि वा कड्याणि वा पगडाणि वा दरीणि वा पटुगाणि वा समाणि वा २ अन्नयंसि तह० नो उ० ॥ से भिक्खु०
 से जं० पुण थंडिळं जाणिजा माणुसरंथणाणि वा महिसकरणाणि वा वसहक० अस्सक० कुकुंडक० मक्कडक० हयक०
 लावयक० वट्टयक० तिचिरक० कवोयक० कर्बिजलकरणाणि वा अन्नयंसि वा तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे०
 वेहणसट्टाणेसु वा गिल्हपट्टा० वा तरुपट्टाणाेसु वा० मेरुपट्टा० विसमभक्खणयटा० अगणिपट्टा० अन्नयंसि वा
 तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० आरामाणि वा उज्जाणाणि वा वणाणि वा वणसंटाणि वादे वकुलाणि वा समाणि वा
 पदाणि वा अन्न० तह० नो उ० ॥ से भिक्खू० से जं० पुण जा० अट्टालयाणि वा चरियाणि वा दाराणि वा गोपुराणि
 वा अन्नयंसि वा तह० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० तिगाणि वा चउक्काणि वा चचराणि वा चउम्मुहाणि
 वा अन्नयंसि वा तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० इंगालदाहेसु खारदाहेसु वा मडयदाहेसु वा मडयधुभियासु
 वा अन्नयंसि वा तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० नइयायतणेसु वा पंकाययणेसु वा ओयाययणेसु
 वा मडयचेइएसु वा अन्नयंसि वा तह० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० नवियासु वा मट्टियखाणिआसु नवियासु
 वा सेयणवहंसि वा अन्नयंसि वा तह० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं० जा० हाणवच्चंसि वा सागव०
 गोप्पहेलियासु वा गवाणीसु वा खाणीसु वा अन्नयंसि वा तह० नो उ० वो० ॥ से भि० से जं० असणवणसि वा सणव० थायइव० केय-
 मूलगा० इत्थंकरवच्चंसि वा अन्नयंसि वा तह० नो उ० वो० ॥ से भि० से जं० असणवणसि वा सणव० थायइव० केय-
 इवणंसि वा अंबव० असोगव० नावग० पुत्तागव० चुल्लागव० अन्नयरेसु तह० पत्तोवेएसु वा पुप्फोवेएसु वा फलोवेएसु
 वा वीओवेएसु वा हरिओ वेएसु वा नो उ० वो० ॥ (सू० १६६)

साधु साध्वीए नीचली जग्याए स्थंडिल न जहुं—ते वतावे छे-जे जग्यापां गृहस्था अथवा तेना पुत्रो विगोरे कंद बीज विगोरे त्रणे काकमां नांखता होय, तथा गृहस्थलोक अथवा तेना पुत्रो विगोरेए शाली चोखा बीही मग अडद कलथी जब जबजव वाल्यां होय, वावता होय अथवा वाववाना होय; अथवा ज्यां आमोक ते कचराना ढगला (उकरड) मां घास भूमिराजीआ-भिभुक स्रस्मभूमिराजीओ विजल स्थाणु तथा कइय पगर्ती-मोटारवाडा, तथा दरीपहुर्ग भीतो तथा कीछा बुरज आ वतावेला स्थान वखते सम होय कोइ जग्याए विषम होय (माटी विगोरे पडवानो हर होय) तेशी तेवी जग्याए स्थंडिल जतां पोते पडी जाय तो आत्मविराधना थाय, अने बीजा जीवां नीचे चगादाइ जतां संयम विराधना थाय तथा माणसोने माटे रांथवानी जग्या (चूला) होय, अथवा भेस कळध योडा कुकडां माकडां (वांदरा) हय लावक वट्टय तितर कजुतर कर्पिजल विगोरे पशु पक्षी माटे खावा पीवाहुं अथवा शीखवाहुं के तेहुं बीजुं कंइ पण कार्य थहुं होय तथा ते स्थानमां तेमने रखातां होय ते जग्याए स्थंडिल जवाथी लोक विरुद्ध मवचननो उपघात विगोरे थाय माटे त्यां न जहुं, वळी आपघात करवानां स्थान जेमां झाडे फांसो खाय लोक मरतां होय, गीध विगोरे पक्षीओ पासे काया चुंथावी मरवा लोही चोपडी सुतां होय, झाड उपरथी नीचे कदीने मरतां होय, अथवा झाड माफक स्थिर थइ अनशन वडे मरतां होय, मेरु (पर्वत) उपरथी पडीने मरतां होय, तथा विषभक्षण करी मरतां होय, अथवा मरतां होय, अथवा तेवां बीजां मरवांनां स्थान होय, त्यां साधुए स्थंडिल न जहुं, तेज प्रमाणे आराम [जेमां काळां विशेष होय] उद्यान वन वनखंड देवल सभा परव विगोरेनी जग्यापां स्थंडिल न जाय, अड्डालक चरिय दरवाना गोपुर अथवा तेवा गाम काहेरना कोट कीछानां स्थान होय त्यां स्थंडिल न जहुं, तेज प्रमाणे त्रिकोण चतुष्क [ज्यां त्रण के चार रस्ता मळतां हाय] के चांतारो

होय तेवा स्थानमां पण स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे अंगारा पाळवानी जग्या, खारो तैयार करवानी जग्या अथवा मकदां बाळवानी जग्या, ज्यां मकदानां पणळां होय, देरीओ होय. अथवा कबरो होय अथवा तेवा बीजा कोइ पण स्थानमां स्थंडिल न जवुं, तथा जे जग्याए पाणी पवित्र मानी लोक नहातां होय तेवा लौकिक तीर्थ स्थानमां, तथा र्फकायतन ज्यां माटी पवित्र मानी लोक आळोटतां होय, ओघायतन एटले परंपराथी ज्यां लोको पवित्र स्थान मानता होय अथवा जे रस्तेथी तळावमां पाणीनी नीको होय त्यां स्थंडिल न जवुं, तथा माटी खोदवानी नवी खाण होय, अथवा गायोनी पहेली अथवा खवडाववानुं स्थान होय, अथवा बीजा खाणो होय त्यां स्थंडिल न जवुं तथा डाग (पांढडांवाळुं खाल,) तथा बीजा खाल तथा मूळा थवानी जग्यामां हत्यंकरनी जग्यामां स्थंडिल न जवुं, तथा अथान वन राणनुं वन धावडीनुं वन केतकीनुं वन आंबानुं, अयोक्रनुं नाग पुजाग चुळक विगेरेनुं वन होय, तथा पांढडां फूल फळ बीज भाजी विगेरेथी युक्त स्थान होय त्यां साधुए स्थंडिल न जवुं

प० त्यारे केवी रीते स्थंडिल जवुं ? ते कहे छे—

से भि० सयपायथं वा परपायथं वा गहाय से तमायाए एगंतमवक्रमे अणावाथंसि असंल्येयंसि अपपणांसि जाव मकडा-
संताणयंसि अहाराभंसि वा उवस्सयंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसरिज्जा, से तमायाए एगंतमवक्रमे अणावाहंसि
जाव संताणयंसि अहाराभंसि वा क्षामथंडिलंसि वा अन्नयरंसि वा तह० थंडिलंसि अचितंसि तओ संजयामेव उच्चारपास-
वणं वोसरिज्जा, एयं खलु तस्स० सया जइज्जासि (सू० १६७) चिचेथि ॥ उच्चारपासवणमत्तिकथो सम्मत्तो ॥
ते साधु पोतानुं के कारण प्रसंगे बीजानु पावुं (तृपणी के तुबडी पहाळा मोढानी) लइ जाय अने ज्या लोको न जुए अथवा

न आवे तथा जीवात् न होय, तेवा आगम के रहेवाना मकानमां एकांतमां बेसी माटीनी कुंडी विगोरेमां दट्टी के पेसाव करीने ते कुंडी विगोरेने लइ ज्यां निर्गीव स्थान होय त्यां परदवे, आन साधुनुं सर्वस्य अने समाधि हे के स्वरने पीडा न थाय, तेम स्थंडिल जवुं.

“शब्द सप्तक” — चोथुं अध्ययन.

बीजा साथे चोथानो आ पमाणे संबंध हे, के पहेलामां स्थान, बीजायां स्वाध्याय, बीजायां स्थंडिल विगोरेनी विधि बतावी. ते त्रणेमां रहेला माधुने अनुकूल के पतिकूल शब्दो संबळाय तो ते सांभकीने साधुए राग द्वेष न करवो, आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोग्यद्वारमां नाम निष्पन्न निक्षेपामां “शब्द सप्तक” एवुं नाम हे, एता नाम स्थापना सुगम निक्षेपाने छोडी द्रव्य निक्षेपो निर्युक्तिकार पाडली अद्वयी गाथावडे बतावे हे.

[द्रव्यं संटाणाई भावो वन्नकस्मिणं स भावो य] । द्रव्यं सहपरिणयं भावो उ गुण य किन्ती य ॥ ३२३ ॥

नो आगमथी द्रव्य व्यतिरिक्तमां शब्द पणे जे भाषा द्रव्यो परिणत थाय हे, ते अहिआं लेवां, भावशब्द तो आगमथी जेन शब्दोमां उपयोग होय, अने नो आगमथी अहिंसादि लक्षणवाळा गुणो समजवां, कारण के आ हिंसा जुठ विगोरेथी दूर रहेवुं, ते गुणोथी पत्रंसा पापे हे अने कीर्ति तो जे तीर्थकर पशुने चोत्रीश अतिशय प्रकट भतां बीजा करतां अधिक रूप संपदाधुक्त्व पोते थवाथी लोकमां आ अहंन देव हे, एम मसिद्ध थाय ते कीर्ति हे.

नियुक्ति अनुगम पढी तुत्त सूत्र आ अनुगममां सूत्र कहेतुं, ते छे.

से भि० मुद्दंगसदाणि वा नंदीस० झळरीस० अन्नयराणि वा तह० विरुवरुवाइं सदाइं वितताइं कन्नसोयणपट्टियाए नो अभिसंधारिजा गमणाए ॥ से भि० अहावेगइयाइं सदाइं सुणेइ, तं— वीणासदाणी वा विपंचीसं० पिथी (बद्धी) सगस० तूणयमदा० वणयस० तुंजवीणियसदाणि वा हुंकुणसदाइं अन्नयराइं तह० विरुवरुवाइं० सदाइं वितताइं कणसो- यपट्टियाए नो अभिसंधारिजा गमणाए ॥ से भि० अहावेगइयाइं सदाइं सुणेइ, तं—तालसदाणि वा कंसत्रालसदाणि वा लत्तियसदा० गोधियस० किरिकिरियास० अन्नयरा० तह० विरुव सदाणि कण० गमणाए ॥ से भि० अहावेग० तं० संवसदाणि वा वेणु० वंसस० खरमुहिस० परिपरियास० अन्नय० तह० विरुव० सदाइं झुसिराइं कन्न० ॥ (सू० १६८) पूर्व वतावेलो भिक्षु जो वितत, तत, यन पोकळ, एवा वाजीवना चार भेदवाला मयुर शब्दने सांपळे, (तो तेने राग थाय) ते सांभळवानी इच्छाथी पोते ते तरफ न जाय.

वितत एटले पृदंग नन्दी झालर विगेरे छे तथा वीणा विपंची बद्धीसक (सरणाइ) विगेरे तंजीनां वाजां छे. वीणा विगेरेने भेद तंजीनी संख्याथी जाणवो.

यन एटले हस्तताल कांसी विगेरे छे. लत्तिकानो अर्थ कांसी छे अने गोहिका एटले काख अने हाथमां राखीने वगालवानुं वाजुं छे. किरिकिरिया ते वांस विगेरेनी कांवीनुं वाजुं छे, भुषिर ते शंख, वेणु विगेरे पोकळ वाजां छे. पण खरमुही ते तोहादिक छे अने णिरिपरिचय ते कोलियकना पुटथी जडेजी वांस विगेरेनी नळी छे. आवां कोइ पण वाजीव वागतां होय तो साधुए ते तरफ

न जतुं. वली—

आचा०
॥१०६८॥

से भि० अहावेग० तं० वप्याणि वा फलिहाणि वा जाव सराणि वा सागराणि वा सरसरपंतियाणि वा अन्न० तह०
विरुव० सदाहं कण्ण० ॥ से भि० अहावे० तं० कच्छाणि वा पूमाणि वा गहणाणि वा वणाणि वा वणदुग्गाणि प्ववयाणि
वा पव्वयदुग्गाणि वा अन्न० । अहा० तं० गामाणि वा नगराणि वा निगमाणि वा र.यहाणाणि वा आसपट्ट णसंनिवेशाणि
वा अन्न० तह० नो अभि० ॥ से भि० अहावे० आरामाणि वा उज्जाणाणि वा वणाणि वा वणसंडाणि वा देवकुलाणि वा
सभाणि वा पयाणि वा अन्नयं तहांसदाहं नो अभि० ॥ से भि० अहावे० अट्टाणि वा अट्टालयाणि वा चरियाणि वा
दाराणि वा गोपुराणि वा अन्न० तह० सदाहं नो अभि० ॥ से भि० अहवे० तंजहा—तियाणि वा चउक्काणि वा चच्चराणि
वा चउरमुहाणि वा अन्न० तह० सदाहं नो अभि० ॥ से भि० अहावे० तंजहा—महिसकरणट्टाणाणि वा वसभक अससक०
हत्थिक० जाव कर्बिजलकरणट्टा अन्न० तह० नो अभि० ॥ से भि० अहावे० तंज० महिसजुद्धाणि वा जाव कर्बिजलजु०
अन्न० तह० नो ॥ से भि० अहावे० तं० ऊहियटाणाणि वा हयजू० गयजू० अन्न० तह० नो अभि० ॥ (सू० १६९)
ते साधु कदाच कोइपण जातना शब्दोने खांभळे के वप ते कयारा छे एट्टले तेनी सुंदरतातुं वर्णन सांभळे अथवा ते खेतरेना
कयारा विगेरेमा मधुर गायन विगेरे थतुं होय तो ते साभळवानी इच्छाथी त्यां न जाय वपथी जाणवुं के तेज प्रमाणे फलिह सरोवर
सागर तलावडीओ जोवा साधुए न जतुं तथा त्यां वाजीव वागतुं होय तो पण सांभळवा न जतुं. तेज प्रमाणे कच्छ,पूम गहन वन
अथवा वनमांना पर्वतो अथवा पर्वतनाकिळा किळा पण जोवा न जतुं तथा गाप नगर निगम राजधानी आश्रम पाटण सन्निवेश

सुप्रमू
॥१०६८॥

विगेरेमां मधुर शब्दो सांभळना न जवुं तथा आराम उग्रन वन वनखंड देरां सभा परव विगेरेमां वाजां सांभळना न जवुं तथा अद्द
अद्दालक चरित दरवाजा तथा नगरना दरवाजे शब्द सांभळना न जवुं तथा विक्र चौक चोतरो चोमुख स्थानमां न जवुं तथा
पाडा बळद योडा हाथी विगेरेनां.

ते कर्षिजल सुधीनां कळा शीखववाना स्थानमां जोवा न जवुं तथा ज्यां तेमहुं मैयुन थुं होय त्यां न जवुं, तेम तेमहुं सुद्ध
थुं होय अथवा तेमनी क्रिया थती होय ते जोवा न जवुं

से भि० जाव सुणेइ, तंजहा—अक्वाइयटाणाणि वा माणुममाणियट्टाणाणि वा महताऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालमुडिय-
पडुयवाइयट्टाणाणि वा अन्न० तह० सदाइं नो अभिसं० ॥ से भि० जाव सुणेइ, तं०—कलहाणि वा डिंवाणि वा इमराणि
वारज्जाणि वा वेर० विरुद्धर० अन्न० तह० सदाइं नो० ॥ से भि० जाव सुणेइ खुडियं दारियं परिशुचमंडियं अलंकियं
निवुज्जमाणिं पेहाए एगं वा पुरिसं वहाए नीणिज्जमाणं पेहाए, अन्नयराणि वा तह० नो अभि० ॥ से भि० अन्नयराइं
विरुव० महासवाइं एवं जाणेज्जा तंजहा—वहुसगडाणि वा बहुहरहाणि वा बहुमिलक्खुणि वा बहुपञ्चंताणि वा अन्न० तह०
विरुव० महासवाइं कन्नसोपडियाए नो अभिसंभारिज्जा गमणाए ॥ से भि० अन्नयराइं विरुव० महस्सवाइं एवं जाणिज्जा
तंजहा—इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा डहराणि वापज्जिमाणि वा आभरणविशुसियाणि वा गार्थताणि वा वायंताणि
वा नञ्चंताणि वा हसंताणि वा रमंताणि वा मोहताणि वा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुजंताणि वा परिभारंताणि
वा विच्छदियमाणणि वा विगोवयमाणणि वा अन्नय० नह० विरुव० महु० कन्नसोय० ॥ से भि० नो इहलोइएहिं

सहेहि नो परलोइएहि स० नो सुएहि स० नो असुएहि स० नो दिइहि सहेहि नो अदिइहि स० नो कंतेहि सहेहि सज्जिजा नो गज्जिजा नो मुज्जिजा नो अज्जावज्जिजा, एयं खलु० जाव० नएज्जासि (म० १७०) तिबेमि ॥ सहसत्तिकओ ॥ २-२-४ ॥

तेज प्रमाणे ज्यां कथाओ कहेवाती होय, मापा तोल विगेरे थतुं होय अथवा तेनुं वर्णन थतुं होय त्यां न जवुं तथा मोटा अवाजे नाटक गीत वाजीज तंत्री नीतल ताल नु जेतथी थतुं होय त्यां सांभळवा न जवुं तथा कजीआ वालकोना खेल डमर अथवा वे राज्यानी लडाइ होय अथवा वहारवटीया राज्य विरुद्ध फरता होय, तेवुं सांभळे तो त्यां न जाय.

अथवा ते साधु एम सांभळे, के कोइ सुंदर वालिकाने आखा करीरे रनान करावी वस्त्राभूषणथी राणगारी घोडा उपर बेसाडेकी हे तो त्यां न जवुं.

अथवा कोइ पुरूपने वध करवा लइ जता होय तेवुं अथवा दुःख देवा संबंधी बीजुं कंड सांभळवा मळे त्यां न जाय, अथवा ते साधु महा पाप आश्रवनां स्थान ते घणां गाडां रथो विगेरेथी युक्त मळेच्छो अथवा हलका प्रकारना भाणसो युक्त होय, त्यां कानने आनंद पमाडनार सांभळवानुं भळशे तेवी बुद्धिए न जाय,

तेज प्रमाणे ज्यां महोत्सवो होय के जेनी अंदर स्त्री पुरुष बुढा वालक अथवा मध्यम वयनां माणसो सुंदर वस्त्रालंकार पहरेने गायनो विगेरेनी क्रिया करे हे, त्यां सांभळवानी बुद्धिर्था न जाय. हवे वया परमार्थ टुंकमां समजावे हे.

ते साधु आळोक अने परलोकना महा दुःखना भयथी डरेलो एटले आ लोकां सांभळवाना रसमां मनुष्य विगेरेथी भय हे,

अने परलोकमां परमाधामी (जमडा) ना मार खावा पडशे एम त्रिचारीने मोह छोडे, अथवा आ लोक के परलोकना खीना के देवीना भद्रोमां न ललचाय, तथा तेवा शब्दो सांभळ्या होय, के नहि, अथवा साक्षात् मळ्या होय के नहि, तो पण तेमां राग न करे, तेमां गुद्धता न करे, तेमां संज्ञाय नहि, न तल्लीन थाय, अर्थात् जे कानने कवजामां राखी मयुरमां आनंद न माने, हितना कडवा शब्दोमां खेद न माने, तेज तेनुं पूर्ण साधुपणुं हे.

जो तेम इंद्रियोने कवजामां न राखी शब्दो सांभळ्या जाय, तो भणवुं गणवुं न थाय, तथा राग द्वेष थाय, ए प्रमाणे बीजा पण आ लोक परलोक संबंधी दुःखो जाणीने विचारवा.

रूप सप्तक नामनुं पांचसुं अध्ययन
 चोथुं सप्तक कहीने हवे रूप सप्तक कहे हे. तेनो आ प्रमाणे संबंध हे, गया उदेशामां श्रवण इंद्रिय आश्रयी रागद्वेषनी उत्पत्ति निषेधी. तेम अहीं आंखने आश्रयी निषेधरो, आ संबंधे आवेला अध्ययनना नाम नि—निक्षेपामां (रूप सप्तक एकक) नाम हे.

रूपना चार प्रकारे निक्षेप हे—

नाम स्थापना सुगमने छोडीने द्रव्यभाव निक्षेप कहेवा निर्मुक्तिकार गाथा कहे हे.
 द्रव्य संटाणाई भावो वन्न कसिणं सभावो य । [द्रव्यं सद (रूप) परिणयं भावो उ गुणा य किन्ती य] ॥ ३२४ ॥
 नो आगमथी द्रव्य व्यतिरिक्तमां पांचे स्थानो परिभंडक (पूर्ण गोळो) विगेरे आकारो हे, अने भावरूप वे प्रकारे वर्णथी तथा स्वभावथी हे, तेमां वर्णथी वथा (पांचे) वर्णो हे अने स्वभाव रूप ते अंदरमां रहेला क्रोध विगेरेशी भाषण चढावी कपाळमां सळ

पाडीने आंख लाल करीने अत्रुचित वंचन बोलवां, एथी विपरीत पसन्न भइने रागनां वचन बोलवां, कहुं छे के—

सटस खरा दिदी उणलथवंला पसन्नचितसस । दुद्वियसस ओमिलायइ गंतुमणससुआ होइ ॥ १ ॥

क्रोधीने आंख लाल होय, अने पसन्न थएलानी कमळ जेवी बांकी होय, दुःखी जीवनी मीचायला जेवी होय, अने जवा इच्छनारनी खांख उत्सुक होय.

से भि० अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं० गंधिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि वा संघाइमाणि वा कटुकम्माणि वा पोत्थकम्माणि वा चित्तक० मणिकम्माणि वा दंतक० पत्तल्लिज्जकम्माणि वा विविहाणि वा वेढिमाइं अन्नयराइं० विरू० चकखुदंसणपडियाए नो अभिसंयारिज्ज गमणाए, एवं नायवं वा जहा सहपडिभा सव्वा वाइत्तवज्जा ख्वपडिमावि ॥ (सू० १७१) पञ्चमं सत्तिकयं ॥ २-२-६ ॥

ते भाव साधु गोचरी विगोरेना कारणे बहार फरतां जुदी जुदी जातिनां रूपो जुए, तेषां मोह न करे, हवे ते रूपांनी विगत वतावे छे. फुलो विगोरेथी साथीओ विगोरे भुंथीने वनाव्यो हांय, तथा वस्त्र विगोरे वींटीने पुतळी विगोरे वनावेळ होय, तथा अमुक चीजो जुरीने पुरुष विगोरेनो आकार वनाव्यो होय, तथा कपडाना ककडा शीवीने कांचकी विगोरे वनावे—ते संघातिम छे, लाकडानां रथ विगोरे काष्ठ कर्म छे. तथा पुस्तको, लेपतुं काम, चित्रो, तथा जुदां जुदां मणि रत्नोवडे साथीआ विगोरे वनावेळ होय, हाथी-दांतनी पुतळी विगोरे होय, पांदां छेदीने आकार वनाव्यो होय, आ प्रमाणे अनेक मनोहर वस्तुओ देखीने आंखने पसन्न करवानी इच्छथी न जाय, अर्थात् जतुं तो दूर रहो पण मनमां अभिलाषा पण देखवानी न करे, तथा पूर्व शब्दोना अधिकारमां वतावतुं ते

प्रमाणे अहीं पण योजवुं के आलोक संबंधी के परलोक संबंधी सांभळ्युं होय के न सांभळ्युं होय, देख्युं होय के नहि देख्युं होय, तो ते ते दरेक जातिना रूपमां राग शृद्धता, मोह के तळ्हीनता न करची, जो रूपमां राग विगिरे करसो तो आ लोकमां मनुष्य विगिरेथी अने परलोकमां परमाधामीना मार पडसो.

परक्रिया नामनुं छटुं अध्ययन.

रूप अध्ययन कहीने परक्रिया नामनुं छटुं अध्ययन कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे.

गयां वे अध्ययनमां रागद्वेषनी उत्पत्तिनां निमित्त मथुर शब्द अने रूपनो निषेध बत्ताव्यो, तेनेज अहीं बीजे प्रकारे कहेसो, आवे संबंधे आवेला अध्ययनना नाम निष्पन्न निक्षेपामां परक्रिया एवुं आदान पदवडे नाम छे, तेमां पथम पर शब्दनो छ प्रकारनो निक्षेप अडधी गाथावडे कहे छे.

छकं परइक्किक त १ दत्त २ माप्स ३ कम ४ बहु ५ पहाणे ६ ।

‘पर’ शब्दनो छ प्रकारे निक्षेपो छे, नाम स्थापना सुगम छे, अने द्रव्यादि पर पण एकेक छ प्रकारे छे.

१ तत्पर २ अन्यपर ३ आदेशपर ४ क्रमपर ५ बहुपर ६ प्रधानपर छे. तेमां पथम द्रव्यपर तेजरूपे वर्तमानमां विद्यमान होय, जेमके एक परमाणुथी बीजो परमाणु जुदां छे अन्यपर ते अन्यरूपे पर छे, जेमके एक वे अणुवाळो, त्रण अणुवाळो तेमज वे अणुवाळो एक अणुवाळो के त्रण अणुवाळो छे, आदेशपर ते आदेश (आज्ञा) अपाय छे ते, जेमके कोइ कार्यमां मजुर विगिरेने रखाय छे ते आदेशपर छे, पण ‘क्रमपर’ तो चार प्रकारे छे, तेमां द्रव्यथी क्रम पर ते एक मदेक्षिक द्रव्यथी वे मदेक्षिक द्रव्य छे

ए प्रमाणे वे अणुकथी त्रण अणुक विगेरे हे, क्षेत्रना एक पदशापां रहेल तेनाथी वे पदेश अवाहाहमां रहेलुं हे, तथा काळथी एक समयनी स्थितिवाळाथी वे समयनी स्थितिवाळुं विगेरे हे, भावथी क्रम पर ते एक गुण काळथी वे गणुं काळुं विगेरे हे, ए प्रमाणे कथा रंगपां जाणवुं.

“ बहु पर ” ते बहुपणे पर एटले एकथी बीजुं बहु होय ते जाणवुं जेमके ॥ १ ॥

जीवा पुगल समया दव्व पएसा य पज्जवा चेव । थोवाणंताणंता विसेसअहिया दुवेणंता ॥ १ ॥
जीव सौथी थोडा हे तेवी पुद्गला अनंतगुणा हे, तेनाथी समयो दव्वयना पदेशो, अने तेनां पर्यायो अनंत तथा विरोध अधिक

हे. फक्त वेपां अनंतगणा हे. .

प्रधानपर ते वे पगवाळापां तीर्थकर हे तथा चोपगापां सिंह विगेरे अने अपदमां अर्जुन, सुवर्ण, फणम विगेरे झाडो हे, ए प्रमाणे क्षेत्रकाळ भाव पर विगेरेने पण तत्पर विगेरे ह प्रकारे क्षेत्र विगेरे प्रधानपणाथी पहेलांनी माफक पोतानी बुद्धिए, योजवां सामान्यथी तो जंबूद्वीपक्षेत्रथी पुष्कर विगेरे क्षेत्रो पर हे तथा काळ पर ते वरसादनी रतुथी शरद रतु हे, भावपर औदयिकथी औपशमिक विगेरे हे. हवे सूत्रानुगमपां सूत्र उच्चारवुं जोइए ते आ हे.

परकिरियं अज्झस्थियं संसेसियं नो तं सायए नो तं नियमे, सिया से परो पाए आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो पायाइं संबाहिज्ज वा प्रलिपहिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो पायाइं तिष्ठेण वा थ० वसाए वा वा मंकिवज्ज पायाइं कुसिज्ज वा रइज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो पायाइं तिष्ठेण वा थ० वसाए वा वा मंकिवज्ज

वा अभिगिज्ज वा नो तं २ । से सिय परो पायाइं लुद्धेण वा कक्केण वा चुत्तेण वा वणणेण वा अहोदिज्ज वा उव्व-
 लिज्ज वा नो तं २ । से सिया परो पायाइं सीओदगवि यडेण वा २ उच्छोलिज्ज वा पहोलिज्ज वा नो तं ० । से सिया
 परो पायाइं अन्नयरेण विलेक्कण जाएण आलिपिज्ज वा विलिपिज्ज वा नो तं । से सिया परो पायाइं अन्नयरेण धुक्कण-
 जाएण धुक्किज्ज वा पधू० नो तं २ । से सिया परो पायाओ आणुयं वा कंटयं वा नीहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं
 २ । से सिया परो पायाओ पूयं वा सोणियं वा नीहरिज्ज वा विसो० नो तं २ । से सिया परो कायं आमज्जेज्ज वा
 पमज्जिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो कायं लोडेण वा संवाहिज्ज वां पलिमदिज्ज वा नो तं ० २ ।
 से सिया परो कायं तिष्ठेण वा य० वसा० मक्खिज्ज वा अढभंगज्ज वा नो तं २ । से सिया परो कायं सीओ० उरिणा० उच्छोलिज्ज वा प० नो तं ० २ ।
 उहोदिज्ज वा उव्वलिज्ज वा नो तं ० २ । से सिया परो कायं सीओ० उरिणा० उच्छोलिज्ज वा प० नो तं ० २ । से कायं अन्नयरेण धुक्कणजाएण धुक्किज्ज
 से सिया परो कायं अन्नयरेण विलेक्कणजाएण आलिपिज्ज वा २ नो तं ० २ । से कायं अन्नयरेण धुक्कणजाएण धुक्किज्ज
 वा प० नो तं ० २ । से कायंसि वणं आमज्जिज्ज वा २ नो तं २ । से वणं संवाहिज्ज वा पलि० नो तं ० । से वणं
 तिष्ठेण वा य० २ मक्खिज्ज वा अढभं० नो तं ० २ । से वणं लुद्धेण वा ४ उहोदिज्ज वा उव्वलेज्ज वा नो तं ० २ ।
 से सिया परो कायंसि वणं सीओ० उ० उच्छोलिज्ज वा प० नो तं ० २ । से सि वणं वा गंडं वा अरइं वा पुल्लयं वा
 भगंदलं वा अन्नयरेण सत्थजाएण अरिदिज्ज वा विलिदिज्ज वा नो तं ० २ । से सिया परो अन्नं जाएण अरिदि-
 दिता वा विलिदिता वा पूयं वा सोणियं वा नीहरिज्ज वा वि० नो तं ० २ । से कायंसि गुंडं वा अरइं वा पुल्लयं

वा भगदलं वां आमजिज्ज वा २ नो तं० २ । से० गंडं वा ४ संवाहिज्ज वां पलि० नो तं० २ । से० कायं० गंडं वा ४ तिष्ठेण वा ३ मकिवज्ज वा २ नो तं० २ । से० गंडं वा लुद्धेण वा ४ उल्लोडिज्ज वा उ० नो तं० २ । से गंडं वा ४ सीओदग २ उच्छोलिज्ज वा प० नो तं० २ । से० गंडं वा ४ अन्नयरेणं सत्थनाएणं अच्छिदिज्ज वा वि० अन्न० सत्थ० अच्छिदिता वा २ पूयं वा २ सोणियं वा नीह० विसो० नो तं सायए २ । से सिया परो कायंसि सेयं वा जल्लं वा नीहरिज्ज वा वि० नो तं० २ । से सिया परो अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहम० नीहरिज्ज वा नो २ नो तं० २ । से सिया परो दीहाइं वालइं दीहाइं वा रामाइं दीहाइं भमुहाइं दीहाइं कक्खरोमाइं दीहाइं वत्थिरंमाइं कप्पिज्ज वा संठविज्ज वा नो तं २ । से सिया परो सीसाओ लिक्खं वा जूयं वा नीहरिज्ज वा वि० नो तं० २ । से सिया परो अंकंसि वा पलियंकंसि वा तुयट्ठवित्ता वा प्रायाइं आमजिज्ज वा पम०, एवं हिट्ठिमो गामो प्रायाइ भाणिय-
 ंवो । से सिया परो अंकंसि वा २ तुयट्ठवित्ता हारं वा अद्धहारं वा उरत्थं वा गेवेयं वा मउडं वा पालंवं वा सुवन्नसुत्तं वा आविहिज्ज वा पिणहिज्ज वा नो तं० २ । से० परो आरामंसि वा उज्जाणंसि वा नीहरित्ता वा पविसित्ता वा प्रायाइं आमजिज्ज वा प० नो तं साइए ॥ एवं नेयत्वा अन्नमदकिरियावि ॥ (सू० १७२) ॥

अर्ही साधुधी पर कोइपण गृहस्थ होय, ते कंरुण क्रिया साधुना अंग उपर करे, तो ते समये साधुए ते क्रियाने कर्मबंधनहुं कारण जाणीने तेने मनथी पण इच्छे नहिं. तेम वचनथी के कायाथी पण न करवा दे.

आ पर क्रियाने खुलासाथी समजावे छे, कोइ अन्य श्रावक धर्म श्रद्धायी साधुना पण उपर लागेखी धुक्कने कर्पट विनेसेथी दूर

करे अथवा तेवुं बीजुं कंइ प्रमार्जन विगोरे करे तेने साधु मन, वचन, कायाथी सारं न जाणे, तेम चोळे, मसळे, तो पण सारं न जाणे तेम तेल विगोरेथी के बीणा पदार्थथी अभ्यंगन करे अथवा लोथर विगोरेथी उद्वर्तन करे तथा टंडपाणी विगोरेथी छंदकाव करे तेम कोइ सुगंधी द्रव्यथी लेप करे तेम चिखिष्ट धुपथी शरीर सुगंधी बनावे अथवा पगमां लागेले कांटो काढे अथवा पगमांथी खराब परु के लोही काढे तो तेने सारं मन वचन कायाथी न जाणे जेवी रीते पगनुं कहूं, ते प्रमाणे अंगनां पण कृत्य जाणी लेवां. तेज प्रमाणे गुमडां आथी पण जाणवुं तथा शरीरमां नस्तर विगोरे मारीने के मलय विगोरे लंगाडीने गुमडां विगोरे सारां करे तो ते मन वचन कायाथी अतुपोदे नहिं.

अथवा शरीर उपरथी परसेवो के मेल दूर करे तो पण सारं न माने तथा आंखनो काननो दांतनो के नखनो मेल दूर करे तो सारं न माने, तेम माथाना के शरीरना बाल रोप के भांपणाना के काखना बाल के गुप्तभागना बाल कापे के सरखा करे तो सारं न माने बली ते साधुने अंकमां अथवा पहयंकमां तेज प्रमाणे हार अर्धहार कंठी गळचवो पहेरावे अथवा मुकुट के झुपखा पहेरावे. कंदोरो पहेरावे तेने सारं न जाणे, ते वखते साधु आराम अथवा उद्यानमां होय त्यां गृहस्थ आर्त्ताने उपरनी क्रिया करे तो साधु तेने सारं न जाणे.

से सिया परो सुद्वैणं असुद्वैणं वा बहवलेण वा तेइच्छं आवुडे से० असुद्वैणं बहवलेणं तेइच्छं आवुडे ॥ सेसिया परो गिलाणस्स सच्चिचानि वा कंदाणि वा मूलाणि वा तथाणि वा हरियाणि वा खणित्तु कंइ तु वाकडुवित्तु वा तेइच्छं आवुडेविवज्ज नो तं सा० बहुवेयणा पाणभयजीवसत्ता वेयण वेइत्ति, एयं रत्तु० समिए सया जए सेयमिपणं मन्निज्जासि

(सू० १७३) चित्रेभि ॥ छट्ठी सत्तिकेओ ॥ २-२-६ ॥

ते साधुने बीजा कोइ माणस शुद्ध अथवा अंशुद्ध वचनबळ ते मंत्र विगेरेथी रोग समावे (विंछु विगेरे उतारे) तो पोते साह जाणे नहिं तथा बीजा मांदा साधुनी दवां माटे कंदमूळ विगेरे खोदीने खोदावीने लावीने दवा करे तो तेने साहं न जाणे बनी शके तो दुःख भोगवतां आबी भावना भाववी के पूर्व जीवे कर्म कर्मां छे अने तेनां फळ भोगवे छे माटे बीजा कंदमूळ विगेरेन दुःस्य दइने तथा बीजा पाणीओने शरीर मन संबंधी पीडा आपीने पोते फरीथी दुःख भोगवणे, कारणके पाणी भूत जाव सत्त्वो छे, ते हाल दरेक पोताना पूर्व करेला कृत्यना विपाकने भोगवे छे कहुं छे के

पुनरपि सहनीयो दुःखपाकस्तत्रायं न खलु भवति नाशः कर्मणां सञ्चितानाम् । इति सहगणयित्वा यद्यदायाति सम्यक्,

सदसदिति विवेकोऽप्यत्र भूयः क्लृप्तते ? ॥ १ ॥

हे साधु! तारे आ दुःखनो विपाक सहेवो जोइए; कारणके पूर्व करेला कर्मोने संचय करेलो छे ते समजीने इवे पछी जे जे सुख दुःख आवे ते समभावे सहन कर, ए सिवाय बीजे तारो विवेक कर्मांथी होय? आ प्रमाणे छट्ठाथी तेरमा सुधी सात अध्ययन समाप्त छे. पूर्व कहा प्रमाणे बीजाए करेली क्रिया अनुभोदवी नहिं. तेम अहीं सातमा अध्ययनमां अन्य क्रिया पण करवानी निषेध करे छे. आ प्रमाणे छट्ठा सातमा अध्ययननो संबंध छे, नाम नि. निक्षेपमां अन्यो अन्य क्रिया एहुं नाम छे तेनी बाकी रहेली अट्ठी गाथाने निर्युक्तिकार कहे छे.

अन्ने उक्कं तं पुण तदन्नमाप्सओ चेव ॥ ३२५ ॥

अन्यना छ प्रकारे निक्षेपा छे. नाम-स्थापना सुगम छे. द्रव्य अन्य निक्षेपमां पर शब्दमां जे खुलासो कर्यो छे तेम अहीं पण जाणवुं. अहीं परक्रिया के अन्य क्रिया कारण प्रसंगे गच्छवासीने करवी पढ़े तेमां जयणा राववी, गच्छमांथी नीकलेलाने आपध विगेरे क्रियानुं पयोजन नथी, तें निर्मुक्तिकार बतावे छे.

जयमाणस्स परो जं करेइ जयणाए नत्थ अट्टिगारो । निव्यडिकमस्स उ अन्नमन्नकरणं अजुतं तु ॥ ३२६ ॥

सत्तिक्राणं निज्जुत्ती समत्ता ॥

साधुए जयणाथी काम करवुं करानवुं रागद्वेष न करावा, पण जीनकल्पीने ते घटतुं नथी, तेओ दवा विगेरेथी, दूर छे, से भिक्खू वा २ अन्नमन्नक्रियं अज्झत्थियं संसेइयं नो तं सायए २ ॥ से अन्नमन्नं पाए आमज्जिज्ज वा० नो तं०, सेसं ते चैव, एयं खलु० जइज्जासि (सु० १७४) च्चिचेमि ॥ सममम् ॥ २-२-७ ॥

अन्यो अन्य एट्ठे परस्पर क्रिया ते साधुए मांही मांहे पण खास कारण विनां चोळवुं चापवुं दाववुं विगेरे न करवुं. जर पढ़े करतां राग द्वेष न करजो.

आप्रमाणे बीजी चूलिका समाप्त भइ.

भावना नामनी बीजी चूलिका.

बीजी कहीने हवे बीजी चूलिका कहे छे, तेनां आ प्रमाणे संबंध छे, के आ आचारांग सूत्रनो विषय प्रथम वर्धमान स्वामिए कहाँ, ते उपकारी होवाथी तेनां वक्तव्यता खुलासाथी कहेवा तथा पंचमहात्रत तीर्थेला साधुए पिंड शय्या विगेरे (संयम शरीर

रक्षार्थे) लेवा, ते वे चूलिकायां वताव्युं, तेज प्रमाणे महाव्रताने वरावर पाळवा माटे भावना भावनी, ते आ बीजी चूलिकायां कहेणे. तैथी आवा संबंधे आवेली आ चूलिका (चूडा) ना चार अनुयोग द्वार कहेवा, तैमां उपक्रम द्वारमां रहेलो आ अर्थाधिकार हे, के अपशस्त भावना त्यागिने प्रशस्त भावना भावनी, नामनि-निक्षेपायां 'भावना' ए नाम हे, तेना नाम स्थापना विगेरे चार प्रकारानो निक्षेप हे, नाम स्थाना सुगमने छोटी द्रव्यादि निक्षेपो निर्युक्तिकार कहे हे.

दत्तं गंधंगतिलाइणसु सीजणहविसहणाईसु । भावंमि होइ दुविहा पसत्थ तह अपसत्था य ॥ ३२७ ॥

नो आगमथी, द्रव्य भावना व्यतिरिक्तयां जोइ वगेरेना फूलो विगेरे गंधवाळा द्रव्यथी जे तेल वगेरे द्रव्य (पदार्थ) मां जे वासना (सुगंधी) लावे, ते द्रव्य वासना हे, तथा शीतमां उखरेलो माणस शीत (ठंड) सहे, उष्ण देशमां उखरेलो ताप सहे, तथा करारत करनारो अनेक कायकष्ट सहे, तेज प्रमाणे बीजा कोइ पण पदार्थ वडे अथवा पदार्थनी जे भावना (धर्म समज्या विनानी) होय ते द्रव्य भावना हे, अने भाव संबंधी जे प्रशस्त अ प्रशस्त भेद वडे वे प्रकारनी भावना हे, तैमां प्रथम अपशस्त कहे हे,

पाणिवहसुसावाए अदत्तमेदुणपरिगहे च्चैव । कोहे माणे माया लोभे य हवति अपसत्था ॥ ३२८ ॥

जीवहिंसा जूढ चोरी मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया अने लोभ ए नव पापेमां प्रथम शंकाधी अने पळी चारंवार निश्चुर थइने निःशंकपणे वर्ते, ते अपशस्त भावना कहूं हे केः—

करोत्यादौ तावत्सदृणहृदयः किञ्चिदशुभं, द्वितीयं सापेक्षो विमृशति च कार्यं च कुरुते । तृतीयं निःशङ्को विगतदृणम-
न्यत्प्रकुरुते, ततः पापाभ्यासात्सततमशुभेषु परमते ॥१॥

सुत्रपुरषो भव्यात्माओने ब्रह्माववा उपदेश आपे हे के जीवहिंसा विगोरे पापे बाळक बुद्धिना माणसो प्रथम दरीने सुषां करे हे. के रखेने मारी लोकमां निंदा भरो, प्रणत्यां कुट्टेन न छुटे तो पछी अपेक्षा विचारी कुयुक्ति लगाडीने जाहेर पाप करे हे, त्पार पछी निःशंक भइने लज्जा दयाने छोडी नत्रां नत्रां पाप करे हे, अने हेवटे पापना अभ्यासथी हमेशां पापमांज रमे हे.

दंसणनाणचरित्ते त्रववेरगो य होइ उ पसस्था । जाय जहा ता य नहा लक्खण बुच्छं सलक्खणओ ॥ ३२९ ॥

दर्शन ज्ञान-चारित्र तप वैराग्य विगोरेमां जे प्रशस्त भावना होय हे, ते पत्यकने लक्षणथी कहीशः

दर्शन भावना.

तित्थगराणं भगवओ पवयणपानयणिअइसइड्ढाणं । अभिगमणनमणदरिसणकित्तणसंपूअणाथुणणा ॥ ३३० ॥

तीर्थकर पशु वार अंग (जेन सिद्धांत) जेनुं बीजुं नाम गणिपिटक (भगवंतना वचन रूप रत्नोने राखवानो पेटारो) तथा पावचनि ते गणधरो तथा महान् प्रभाविक आचार्यो युग प्रधानो तथा अतिशय ऋद्धिवाळा केवलज्ञानी मनःपर्यव तथा अवधिज्ञानी तथा चौदपूर्वी तथा आमर्ष औषधि लब्धिधारक मुनिओ विगोरेनुं बहु मान करावा सामे जइने दर्शन करवुं तेमना उत्तम गुणोने प्रशंसवा. सुगंधथी पूजन स्तोत्र वडे स्तवन करवुं, (आमां देव मनुष्यने जे उचित होय ते करवुं)

आ प्रमांणे हमेशां करवाथी दर्शन शुद्धि थाय हे,

जम्माभिसेयनिकवपणत्तरणनाणुत्थया य त्तिव्वाणे । दियलोअमवणमंदरनंदीसरभोमनगरसुं ॥ ३३१ ॥

अद्वाययमुल्लिखते गणगणपयगणयए य धमचक्रेय । पासरहावन्ननगं चमरुत्थायं च वंदापि ॥ ३३२ ॥

तीर्थकरेनी जन्मभूमि, दीक्षा लेवाना वरयोडामां, चारित्र लीधुं ते जग्या, तथा केवल ज्ञान तथा निर्वाण भूमि, तथा देवलोकमां मेरु पर्वत, नंदीश्वर द्वीप विगेरे तथा प्राताळनां भवनोमां जे शाश्वता जिनेश्वरनां विरो छे, तथा अष्टापद गिरनार दशाणर्णकूटमां तथा तक्षशिलामां धर्म चक्रना स्थानमां, तथा अहिच्छत्रा नगरीमां ज्यां धरणेद्रे पार्श्वनाथं मधुनो महिमा कर्यो छे, तथा रथावर्त पर्वत ज्यां वज्र स्वामिए पादपांगमन अणशण कर्युं छे, तथ ज्यां वर्धमान स्वामीने आश्रयी चमरेद्रे उत्पत्तन कर्युं छे, आ वथा स्थानोमां जइने यथायोग्यपणे वंदन पूजन स्तवन ध्यान करवाथी दर्शन शुद्धि थाय छे.

गणियं निमित्त जुत्ती संदिष्टी अविहहं इमं नाणं । इय एंगांमुचगया गुणपच्चइया इमे अत्था ॥ ३३३ ॥

गुणमाहर्ष्यं इतिनामकित्तणं सुरनरिदपूया य । पोरणचेइयाणि य इय एसा दंसणे होइ ॥ ३३४ ॥

जैन सिद्धांतने जाणनारा जे महान साधुपुरुषो छे. तेमनामां गुणने आश्रयी आ वावतो छे, जेमके बीजगणित विगेरेमां कोइ पार पाभेलो होय तथा ज्योतिषना आठे अंगमां प्रवीण होय तथा दृष्टिवाद नामना वारमां अंगमां ब्रतावेल तमाम दर्शनोनी ब्रतावेली जुदी जुदी शुक्तिओने पोते जाणे अथवा द्रव्यना संयोगोने अथवा हेतुओने जाणे.

तथा सम्मया (“अविपरीत”) दृष्टि होय के जेथी देवताओथी पण पोते चलयमान न थाय.

तथा अचितथ जेतुं ज्ञान होय आवा पवित्र आचार्य विगेरेना गुणोनी प्रशंसा करतां पोताना आत्मानी श्रद्धा निर्मळ थाय छे, तेज प्रमाणे कोइ पण गुणतुं वर्णन करतां ते पवित्र पुरुषना गुणो मळे छे, तथा मंदबुद्धिबालाने तेवा गुणोतुं कीर्तन न थाय तो

तेवा पूर्व महर्षिनां नामो लेखाधी-पण धर्ममां श्रद्धा भाय छे, अथवा तेवा पुरुषने सुरनेरना स्वामिओए पूज्या ते कथा सांभळतां अथवा पुराणां चैत्येने पूजवाथी के तेवी बीजी क्रिया करवाथी तेओने गुणोनी वासना मळवाथी दर्शन शुद्धि भाय छे, ते दर्शननी प्रशस्त भावना छे.

ज्ञान भावना.

तत्तं जीवाजीवा नायव्वा जाणणा इहं दिष्टा । इह कञ्जकरणकारागसिद्धी इह बंधमुक्त्वो य ॥ ३३५ ॥

बद्धो य बंधहेउ बंधणबंधफलं सुकहियं तु । संसारपबंधोऽवि य इदं कहिओ जिणवरेहि ॥ ३३६ ॥

नाणं भविस्सहं एवमाइया वायणाइयाओ य । सज्झाए आउत्तो गुरुकुलवासो य इय नाणे ॥ ३३७ ॥

जीनेश्वरनुं वचन जेवी रीते पदार्थो छे तेवी रीते संपूर्ण पदार्थोनुं वर्णन करे छे, तेथी ते प्रवचन कहेवाय छे. अने ते ज्ञान भणवाथी मोक्षनुं प्रधान अंग सम्यकदर्शन प्रगट करे छे. कारण के तत्त्वोनुं स्वरूप जाणीने तेमां श्रद्धा करवी तेज सम्यग दर्शन छे. जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, संसर बंध, निर्जसा अने मोक्ष ए नव तत्त्वो छे, ते नव पदार्थोने नवतत्व ज्ञानना अर्थीए वरोवर जाणवा जोइए अने ते जाणवानुं साधन जिनेश्वरना वचनमांज छे.

बळी आ जिनवचनमांज परमार्थ रूप छेवटनुं कार्य मोक्ष छे ते मोक्ष मेळववानी क्रिया करवामां महान उपकारक सम्यगदर्शन ज्ञान—चारित्र मुख्यपणे छे,

कारक (क्रिया करनारो) साधु सम्भग दर्शन विगेरेनुं अनुष्ठान वरोवर करनार छे अने ते प्रमाणे क्रिया करवाथी आज जैन दर्शनमां छेवटे मोक्षनी प्राप्ति छे तेज क्रियासिद्धि जाणवी तेने वतावे छे.

पथम कर्मबंधनतुं स्वरूप जाणतुं अने तेमां विरक्त थतुं तैथी कर्मक्षय यतां मोक्ष पासि थाय, आची क्रिया बौद्ध विगेरे दर्शनमां न होवाथी मोक्षनी क्रियासिद्धि पण अशक्य छे.

आ प्रमाणे पथम ज्ञान भणवार्थी अने ते प्रमाणे वर्तवाथी ज्ञान भावना थाय छे तथा आठ प्रकारना कर्मना पुद्गलेशी जीव दरेक पदशे बंधाएला छे, तथा मिथ्यात्व अचिरति प्रमाद कषाय अने योगी कर्म बंधनता हेतुअं छे अने आठ प्रकारना कर्मवर्गणांतुं रूप पूर्व कला प्रमाणे बंधन छे अने ते उदय आवतां एतुं फळ चार गतिवाला संसारमां भ्रमण करीने सुख दुःखने भोगववानुं छे. आ वयुं जिनवचमांज कहेछुं छे.

अथवा दुनियामां जे कंड सुभाषित हितकारक वचन छे ते अहीं प्रवचनमां कहेछुं छे ते ज्ञानभावना छे. वळां आ जिनवचनमां आ संसारतुं जे विचित्र स्वरूप छे ते विस्तारथी कहुं छे.

तथा हुं निर्मल भावे भणीश तो मारं ज्ञान वधारं निर्मल थरो एवी ज्ञानभावना भाववी अर्थात् रोज रोज नहुं नहुं ज्ञान संपादन करतुं, आदि शब्दथी एकाग्रचित्त विगेरे गुणां आ ज्ञानथी थाय छे. वळी अज्ञानी जे कर्म करोडी वरसे स्वर्पावे छे तेने ज्ञानी एक भ्वासोभ्वासमां स्वर्पावे छे.

आवां कारणेशी ज्ञान भणतुं, एटले ज्ञाननो संग्रह थाय. कर्मनी निर्जरा थाय पूळी न जवाय अने स्वाध्याय करतां चित्तमां आनंद रहे आ कारणेशी ज्ञानभावना वडे दरेक साधुने गुरुकुलवास थाय छे ते वतावनासी गाथा कहे छे.

६६ पाणस्स होइ भागी थिरयरओ दंसणे चरित्ते य । धत्ता आवकहाए गुरुकुलवासं न मुञ्चन्ति ॥ १५ ॥

ज्ञानतो भागी थाय, श्रद्धा अन्ने चारीत्रमां स्थिर चित्तवाळो थाय, आवां कारणोथी जेओ गुरुकुळवास नथी सुकता, तेवा पुरुषोने धन्य छे. आवी ज्ञाननी भावना जाणवी. हवे चारित्रनी भावना कहे छे.

साहुमहिसाधनमो सखमदत्तविरई य वंभ च । साहु परिगढविरई साहु तमो वारसंगो य ॥ ३३८ ॥

वेरगमप्यभाओ एगत्ता (जे) भावणा य परिसंगं । इय चरणमणुगयाओ भणिया इत्तो तवो बुच्छं ॥ ३३९ ॥

अहिसादि लक्षणवाळो जैनधर्म श्रेष्ठ छे. आ पहेला व्रतनी भावना छे तथा आ जिनेश्वर वचनमां निर्मळ सत्य छे तेवुं बीजे नथी. आ बीजा महाव्रतनी भावना छे, बीजा व्रतनी भावनामां अहीं पारको माल न लेवानुं वरोवर वतावुं छे, चोथा महाव्रतनी भावनामां ब्रह्मचर्यनी नववाडो पाळवानुं अहीं वतावुं छे, पांचमां महाव्रतनी भावनामां जशनां उपकरण सिवाय परिग्रहनुं त्यागपणुं सर्वोत्तम जिन वचनमां वतावुं छे

बार प्रकारनो तप पण अहीं इंद्रियोना विजय माटे तथा कर्मो खपाववा माटे अहीं वताव्यो छे.

वैराग्य भावनामां संसारनां देखीतां सुखो परिणामे तथा अंतरदृष्टि ए जेतां दुःखरूप छे माटे विष्टा समान जाणीने दूरथी त्यागवा योग्य छे एम भावतुं.

अप्रमाद भावनामां जाणतुं के जे जीवो दार विगेरेना कुब्जसनथां के क्रोधादि करीने के इंद्रियोने वश थइ केवां दुःख भोगवे छे ते विचारी पांचे प्रमादोने छोडवानुं अहीं छे. एकाग्रभावनामां आ गाथा विचारवी.

“ एको मे सासओ अप्पा, पाणदंसणसंजुओ । सेसा मे वहिरा भावा, सत्त्वे संजोगळकलणा ॥ १ ॥ ”

जे कोइ संसारी जीव के साधु देखीता मनोहर विषयोधी सुभाइने विह्वलथाय अथवा तेवा सुंदर विषयोना वियोगमां बेळो थाय तेवा पुरुषने चितामां अर्ध्व शान्ति प्राप्त करावा आ उपदेश छे के तुं तारा हृदयमां आ प्रमाणे विचार, के मारो आत्मा निरंतर रहेनारा जन्म मरणथी सुवन ज्ञान दर्शनना लक्षणवाळो छे, वाकीतुं जे कइ शरीर विगोरे चलायमान देखाय छे ते कर्मना संयोगधी मने मळेछं छे, हुं तेनाथी जुदो हुं मारुं स्वरूप चेतन छे अने शरीर विगोरे जड छे. (आ निश्चय नयनी भावना जाणवी.)
आ भावनाओ रुपिओतुं अंग छे अने चारित्रिने आश्रयी (देसो आपनार) छे.

(हवे तपनी भावमां कहे छे.)

किह मे हविज्जडबंझो दिवसो ? किं वा पदू तवं काउं ? । को इह दन्वे जोगो खिते काले समयभावे ? ॥ ३४० ॥

साधुए निर्भंक चारित्र पाळवा हंमेशां चितवनकरतुं के विगइओ विगोरे त्यागीने मारो दिवस हंमेशां कयारे सफल थरो ? तथा हुं कयो तप करवाने शक्तिवान छु ? तथा कया द्रव्य विगोरेमां मारो निर्वाह थरो ? आतुं चितवतु, तेमां वने त्यासुधी साधुए द्रव्यमां उत्सर्गधी बाल चणा विगोरे वापरवा, क्षेत्रमां ज्यां पी दुध मळे के लखा रोटला मळे तो पण संतोषधी विहार करवो, कालमां ठंडीमां के उनाळामां विहार करवो तथा भवमां हुं साजो होवाथी आ तप करवाने शक्तिवान छुं आवी रीते द्रव्य क्षेत्र काल भावधी विचारी यथाशक्ति उपकरण विगोरे जोइतांज राखीने परिसहो सहैवा तप करवो. तत्त्वार्थसूत्रना छठ्ठा अध्यायमां २३ मां सूत्रमां कहुं छे के यथाशक्ति त्याग अने तप करवो.

उच्छाहपाळणाए इति (एव) तवे संजमे य संययणे । वेरगोऽणिच्चाई होइ चरिते इहं पगयं ॥ ३४१ ॥

તથા અણસર વિગેરે તપસ્યામાં પોતાનું વલ અને વીર્ય ન ગોપવતાં ઉત્સાહ રાલવો અને લીધેલા તપને પુરો પાલવો.

“ તિલ્થયરો ચઙનાળી સુરમહિઓ સિદ્ધિઅવ્યયુલમ્મિ । અળિગહિઅલલવિરિઓ સલ્વત્યામેસુ ડલ્લમદ ॥ ૧ ॥ ”

કિં પુણ અલસેસેહિં દુલ્લવલ્લયકારણા સુલિહિદ્દિહિં । હોદ ન ડલ્લમિઅલ્લં સપલ્લવાયંમિ માણસે ? ॥ ૨ ॥ ”

તીર્થકર દિક્ષા લેતાંજ ચાર જ્ઞાની થાય છે, દેવતા પૂજે છે, નિષ્કેમોક્ષમાં જવાના છે, આટલું હતાં. પણ પોતાનું યાતીકર્મ સ્વપા-
વવા લલ વીર્યને ન ગોપાવતાં અધોર તપશ્ચર્યા કરે છે. તો તે સિવાયના વીજા સારા સાધુઓ દુઃખલો ક્ષય કરતા અને મનુલ્લ્ય ઝીલવન
અનેક વિલ્લનોલાલું છે તો તેમણે જ્ઞામાટે પુરો ડલ્લમ ન કરવો જોદ્દે ? આવી તપની માવના માવવી, સંયમ માવના દંદ્રિયો અને
મનને વશ રાલવવા માટે છે તથા સંયયણ તે વર્જે રૂપમ વિગેરેમાં તપનો નિર્વાહ થદ શકે તેવી માવના માવવી.

આ મમાળે વાર માવનાઓ માવવાથી આત્મ નિર્મલ્ક થાય છે, ઇમ માવનાનું સ્વરૂપ અનેક મકારે થાય છે ને ચિ યોને જાળવવા
માટે લલ્લયું છે. ઇણ ચાલુ વાતમાં તો વારિલ માવના સાથે મયોજન છે, માટે વીર મશ્ચનું ચરિલ નિર્મુલ્લિતનો અનુગમ કહીને મૂલ્લવનું
મદ્દાવીર મશ્ચનું ચરિલ.

ઉલ્લચારણ કરતાં કહે છે.

તેળં કાલેળં તેળં સમણ સમણે મગલં મદ્દાવીરે પંલહલ્લુચરે યાલિ હુલ્લથા, તંજદ્દા—દલ્લુચરાદં સુલ્લ ચદ્દરાા ગલ્લમં વલ્લકંને
દલ્લુચરાદિં ગલ્લમાઓ ગલ્લમં સાહિરુલ્લ દલ્લુચરાદિં જાલ્લ દલ્લુચરાદિં મુંદે મલિલા આગારાઓ અળગારિયં પલ્લવદ્દલ્લ દલ્લુચરાદિં
કસિણે પદિલ્લુનને અલ્લવાપાલ્લ નિરાલ્લરણે અળંતે અળુલ્લરે કેલ્લલલ્લરનાળદંસણે સમુલ્લપને, સાદ્દળા મગલં પલ્લિલ્લુલ્લ (મ્મ ૦ ૧૭૫)
તે કાલ તે સમય ઇટલે લિલ્લમ સંલ્લવના ૪૭૦ વરસ પદ્દેલાં મદ્દાવીર મશ્ચનો જન્મ થયો ઇત્તી હાલની ગળતરી છે અને નલ

महिना अने साडासात दिवस परहेलां महावीर स्वामि माताना उदरमां आवा हाता तेने जैनमतपां पशुनुं चपवन पशुं विगेरे बावतो कहे छे. जैनोपां दरेक तीर्थकरनां पांच कल्याणक छे एदले चपवन जन्म दिक्षा केवलज्ञान अने मोक्ष छे महावीर पशुने एक माताना गर्भपांथी बीजी माताना गर्भमां शुक्रया तेने गर्भापहार कहे छे टुंकाणमां समजाववा प्रथम चद्रनक्षत्र कहे छे.

महावीर पशुने चपवन गर्भापहार जन्म दिक्षा केवलज्ञान ए उत्तराफाल्गुनीमां थयां छे अने भगवाननो मोक्ष स्वाति नक्षत्रमां थयो छे. ते विस्तारथी पढीना सूत्रमां छे.

समजे भगवं महावीरे इमाए ओसपिणीए सुसमसुसमाए समाए वीइकंताए समाए वीइकंताए सुसमदुस्समाए समाए वीइ-
कंताए दूसमसुसम ए समाए बहु विइकंताए पन्नहत्तरीए वासेहिं मासेहिं व अद्रनत्रमेहिं सेसेहिं जे से गिरहाणं चउत्थं
मासे अट्टमे पक्खे आसाहसुद्धे तस्स णं आसाहसुद्धस्स छंट्टीपक्खेण हन्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं महाविजयसि-
द्धत्थपुत्तारवरपुंडरीयदिसांसांवात्थिपक्खमाणां महाविमाणाओ वीसं सागरोवमाइं आउयं पाळ्ळत्ता आउकवएणं ठिइ-
कववएणं भवकववएणं चुए चरत्ता इह खल्लं जंबुद्वीवे णं दीवे भारहे वासे दाहिणहूमरहे दाहिणमाहकुंडपुरसंनिवेसंमि
उसमदत्तस्स महाणस्स कोडालसगोत्तस्स देवाणंदाए साहणीए जालंधरस्स गुत्ताए सीहुब्भंवरभूएणं अंपाणोणं कुच्छिसि
गळभं वक्कते; समणे, भगवं महावीरे तिजःणोवगए या चि हुत्था, चइस्सामिति जाणइ चुएमिति जाणइ चयमाणे न
याणइ, सुहुमे णं से काले पन्नत्ते तयो णं समणे भगवं महावीरे हियाणुकंपएणं देवेणं जियमेयतिकट्टं जे से वासाणं तच्च
मासे पंचमे पक्खे आसोयवहुल्ले तस्स णं आसोयवहुल्लस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं वासेहि

राइंदिएहिं वइकंतेहिं तेसीइप्रस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेशाओ उन्नरखचियकुंडपुरसंनि-
 वेसंसि नायाणं खत्तियाणं सिद्धथस्स खत्तियस्स कासवयुत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसुत्ताए असुभाणं पुगालाणं
 अवहारं करिता सुभाणं पुगालाणं पक्खेवं करिता कुच्छिसि गब्भं साहरइ, जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि
 गब्भे तंपि य दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेशेसि उत्तस० का० देवा० जालंभरायणगुत्ताए कुच्छिसि गब्भं साहरइ, सपणे भगवं
 महावीरे तिस्राणिन्नगए यावि दोत्था—साहरिज्जिस्सामिच्चि जाणइ साहरिज्जमाणे न याणइ साहरिएमिच्चि जाणइ सपणा-
 उत्तसो ! । तेण कालेणं तेणं सपएणं तिसलाए खत्तियाणीए अहउन्नया कयाइं नवणं मासाणं बहुपट्टिपुत्ताणं अट्टमाण-
 राइंदियाणं वीइकंताणं जे से मिग्गहाण पट्टमे मासे दुक्खे पक्खे चित्तंमुद्धे तस्स णं चित्तंमुद्धस्स तेरसीपक्खेणं इत्थुं जोग०
 सपणं भगवं महावीरं अरोगा अरोगं पम्भया । जणं राइं तिसलाव० सपणं० महावीरं अरोगा अरोगं पम्भयात णं राइं
 भवणवट्टवाणमंतरजोइसियविमाणवासिदेवेहिं देवीहिं य उवयंतेहिं उप्पयंतेहिं य एगे महं दिव्वे देवसत्तिवाए
 देवकक्कहए अप्पिजलगभूए यावि हुत्था । जणं रयणिं० तिसलाव० सपणं० पम्भया तणं रयणिं बहवे देवा य देवीओ
 य एगं महं अपयवासं च १ गंधवासं च २ चुन्नवासं च ३ पुष्पवा० ४ हिरन्नवासं च ५ रयणवासं च ६ वासिसु, जणं
 रयणिं तिसलाव० सपण० पम्भया तणं रयणिं भवणवट्टवाणमंतरजोइसियविमाणवासिणो देवा य देवीओ य सपणस्स
 भगवओ महावीरस्स सुइक्कम्माइं तिश्यराभिसेयं च करिसु, जओ णं पभिसइ भगवं महावीरे तिसलाए ख० कुच्छिसि गब्भं
 आगए तओ ण पभिसइ त कुलं विपुलेणं हिरत्तेणं सुवत्तेणं धत्तेणं माणिकेणं सुत्तिएणं संवसिलपवालेणं अद्वैव २

परिवर्द्धाह, तत्रो णं सम्पणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मपियरो एयमहं जणिता निव्वतदसाहंसि बुक्कंतसि सुइभूयंसि
 विपुलं असणप्राणवाहमसाइसं उवववडाविति २. ता मित्तानाइसयणसंबंधित्तमं उवनिमंतति मित्तं उवनिमंतिता बहवे
 सम्पणसाहणकिवणवणीमगाहिं भित्तुंङ्गपडरगाईण विच्छडुंति विगोविति विस्साणिति दायरेसु पज्जभाईति विच्छ-
 ड्ढिता विगो० विसाणिता दायारं पज्जभाइता मित्तनाह० भुंजाविति मित्तं० भुंजावित्ता मित्तं० वणेण इममेयारूवं नाम-
 धिज्जं कारवितिन्नओ णं पभिइ इमे कुमारे ति० ख० कुच्चिञ्जसि गन्धे आहूए तत्रो णं पभिइ इमं कुल विपुलेणं हिरत्तेण०
 संवसिल्लपवाल्लेण अतीव २ परिवर्द्धाह ता दोंड णं कुमारे बद्धमाणे, तत्रो णं सम्पणे भगवं महावीरे पंचथाइपरिवुडे, तं-
 खीरथाईए १ मज्जणथाईए २ मंडणथाईए ३ खेलावणथाइए ४ अंक्रथा० ५ अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रस्से मणिकुट्टि-
 मत्तले गिरिकंदरसमुट्ठीणेविव चंपययावे अहाणुपुव्वीए संबद्धे, तत्रो णं सम्पणे भगवं० विनायपरिणय (मित्ते)
 त्तिणियवत्तालभावे अप्पुत्तुयाइं तरालाहं माणुसगाइं पंचलक्खणाणाइं कामभोगाइं सद्धफरिसरस्खरंगंथाइं परियारेमाणे
 एवं च णं विहरइ ॥ (सू० १७६)

श्रमण भगवान महावीर आ अवसर्पिणीना चोथा आराने उडे पंचोतेर वरसने साडाआठ पहिना बाकी रहे छे, ते श्रीधम्मरुतुना
 चोथे महिने आठमे परववाहीए अप्राह शुद्ध छट्टने दिवसे महाविजय सिद्धार्थ पुष्पोपत्तर वर पुंडरिकद्विशा सौवस्त्रिक वर्धमान नामना
 महाविमानमांथी देवता संवंधी बीस सागरापमदुं आयु पुं करीने भव तथा स्थितिनो क्षय यतां चवीसे आ उंबूढीपना भरत
 क्षेत्रना दक्षिण अर्धभरतमां दक्षिण ब्राह्मणकुंडस्थानमां कांडालगांती रूषमदत्त ब्राह्मणना यरमां जालंधर गोवनी देवानंदा ब्राह्मणीनी

कुलमां सिंहना बच्चानी माफक अवतर्यां ते समये श्रमण भगवान् महावीर त्रण ज्ञान सहित हता तेषी देवलोकमां जाणुं के हुं च्यवीश गर्भमां अवतर्यां पछी जाणे के हुं चळ्यो, पण चक्रवानो काल थोडो होवाथी तेनुं ज्ञान थतं नथी के हुं चवुं छुं.

त्यार पछी महावीर पशुने स्वरी भक्तिथी देवताए पोताना हमेशाना आचार प्रमाणे ८२ दिवस थया पछी आसो (गुजराती भादरवो) तेरसनो ते ब्राह्मणीना कुल मांथी त्यांथी थोडे दूर आवेला क्षत्रियकुंड नगरमां ज्ञातवंशीय काश्यप गोत्रना सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानी थार्यां वाशिष्ठ गोत्रनी त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुलमां अशुभ पुद्गल्यो दर करीने शुभ पुद्गलो सुकीने भगवानने आ गर्भमां सुक्या अने त्रिशला क्षत्रियाणीनो गभ देवानंदानी कुलमां सुकयो.

पशुने ज्यारे एक गर्भमांथी बीजे सुकवाना हता त्याहे त्रण ज्ञानवाळा होवाथी पाते जाणे के मने लइ जरो तेम लइ जतां न जाणे के लइ जाय छे. अने त्यां लइ गया पछी सुके ते पण जाणे के मने सुकयो. (अवधि ज्ञानीने आज जणाय छे. के आ प्रमाणे असुक देवता करे छे. करसो के करुं.) वंकी गणधरो पोताना शिष्योने कहे छे, हे आशुष्यमन् श्रमण ! ते काल ते समयने त्रिबे ९ मास ने साडासात दिवसनी बंने गर्भ स्थानमां गर्भ स्थिति पुरी करीने श्रीधरस्तुमा पहेलो मास बीजुं परववाडीयुं चैत्र शुद्ध

१३ ना दिवसे निरोगी त्रिशला माताए निरोगी पुत्र श्रमण भगवान् महावीरने जन्म आय्यो. पशुना जन्म समये मथरात पछी सुवनपति वानव्यंतर जयोतिषी वैमानिक देवदेवीओना आववाथी आकाशमां एक महान्

द्रव्य प्रकाश अने कोकाहळ थया.

अने ते समये देवदेवीओए आवीने सुगंधी नळ, सुगंधी वस्तु, चुर्ण फुल सोनारुपानी अने रत्ननी दृष्टि करी.

जे रात्रीए भगवान जन्म्या ते समये देवदेवीए महावीर प्रभुनुं जन्म संबंधी स्ततिकर्म विगेरे कर्युं अने मेरु पर्वत उपर प्रभुने लह जइने जन्माभिषेक कर्यो.

वळी प्रभु माताना गर्भमां हता ते समये प्रभुना पुन्योदयथी देवताए तेमना माताप्रिताना घरमां नवारसीयुं धन लावीने नाख्युं तथा बीजी दरेक रीते मातपितानुं धन, सोनुं चांदी रत्न शंख माणेक मोती परवाळां बंधी रीते बंध्यां तेथी पूर्वे करेला विचार प्रमाते पुत्र जन्मनुं दस दिवसनुं स्तति कार्य कर्या पछी वारमे दिवसे चार प्रकारनो आहार तैयार करावीने मित्र ज्ञाति स्वजन तथा संबंधी वर्गने बोलावीने तथा श्रमण ब्राह्मण भिक्षुक विगेरेने तथा आंधळां पांगळां विगेरे दरदीभोने बोलावी तेमने इच्छित आपीने मन संतुष्ट करीने मातापिता ए बंधांनी समक्ष पोताना पुत्रनुं नाम तेना गुण प्रमाणे ष्टले आ पुत्र वृद्धि करतार छे पूवुं अनुभवेल्ले अने विचार करी राख्या प्रमाणे जाहेर करीने वर्षमान राख्युं, तयार पळो महावीर प्रभु माटे दुष बंधरावनार रत्नान करावनार शखगार करावनार खेळावनार खोळापां बेसाडनार एवी पांच धावमाताओ राखी अने ए पांच माताओ उपरात तेमना पुन्योदयथी मनोहर शान्त मुद्रावाळा प्रभुने जोइने प्रसन्न थइने अनेक स्त्रीओ पोताना खोळापां रमाडवा लेती आ प्रमाणे लोकाने आनंद पमाडता मणीरत्नोथी विभूषित घरमां जेम पर्वतनी गुफामां चंपकनुं झाड उछरे तेम मोटा थाय.

प्रभुनी युवावस्था.

धीरे धीरे वाळ अवस्था दूर थतां विशेष ज्ञान पापीने अनुभववाळा प्रभु उत्सुकता छोडीने मनुष्य संबंधी पांचे इंद्रियोनां सुंदर कामभोगने भोगवतां शब्द स्पर्श रस रत भंय विगेरेने अनुभवे छे अने काळ सुखे निर्गमन करे छे.

समणे भगवं महावीरे कासवगुत्ते तस्स पं इमे तिन्नि नामधिज्जा एवमाहिज्जंति; तंजहा—अम्मापिउसंति बद्धमाणे १
 सहसमुद्दए समणे २ भीमं भयभेरवं उरालं अवेलयं परीसह—सहत्तिकट्टु देवेहिं से नामं कायं समणे भगवं महावीरे ३,
 समणस्स पं भगवओ महावीरस्स पिया कासवगुत्तेणं तस्स पं तिन्नि नाम० तं०—सिद्धत्थे इ वा सिज्जसे इ वा जसंसे
 इ वा, समणस्स पं० अम्मा वासिद्धस्सगुत्ता तीसे पं तिन्नि ना० तं०—तिसला इ वा विदेहदिन्ना इ वा पियकारिणि इ
 वा समणस्स पं भ० पित्तिअए सुपासे कासवगुत्तेणं, समण० जिडे भाया नंदिवद्धणे कासवगुत्तेणं, समणस्स पं जेड्डा
 भइणी सुदंसणा कासवगुत्तेणं, समणस्स पं भग० भज्जा जसोया कोड्डियागुत्तेणं, समणस्स पं० धूया कासवगो त्तेणं
 तीसे पं दो नामधिज्जा एवमा०—अणुज्जा इ वा पियदंसणा इ वा, समणस्स पं भ० नत्तइ कोसीया गुत्तेणं तीसे पं
 दो नाम० तं—सेसवई इ वा जसवई इ वा, (मू० १७७)

प्रयुक्ता अने तेमना कुट्टुवना नामो.

काश्यप गोत्रीय प्रयुक्तं मातापिताए वर्धमान नाम पाडयुं, स्वभावीक गुणोथी श्रमण नाम पाडयुं अने भयंकर भूत विगेरेना

तथा बीजा देव मनुष्योना बधाए परिसहो सहा माटे देवोए श्रमण भगवान महावीर एवुं नाम पाडयुं.

भगवान महावीरना पिता काश्यप गोत्रना तेमनां त्रण नाम हतां—सिद्धार्थ, श्रेयांस, यज्ञस्वी.

भगवाननी माता वज्रिष्ठ गोत्रनी; तेनां त्रण नाम छे, त्रिबाला, विदेहदिन्ना प्रियकारिणि.
 भगवानना काका सुपाश्व, मोटा भाइ नंदिवर्धन, मोटी वेहेन सुदर्शना ए बधा काश्यप गोत्रीय हता. भगवाननी भार्या यज्ञोदा

कौटिल्य गोत्रनी हती, भगवाननी पुत्री काष्यप—गोत्रीनी तेना वे नाम छे—अनवधा, प्रियदर्शना। भगवाननी दौहित्री कौशिक गोत्रनी तेना वे नाम—शेषवती, यशोमती।

समणस्स णं० ३ अम्मपियरो पासवच्चिज्जा समणोवासगायात्रि हुत्था, ते णं बहूदं वासाइं समणोवासगपरियाणं पालइत्ता इण्हं जीवनिकायाण सारक्खनिपित्तं आलोइत्ता निदिता गरिहिता पडिकमिज्जा अहारिहं उत्तरगुणपायच्छिचाइं पडिव-
ज्जित्ता कुससंथारणं वा दुरुहित्ता भत्तं पच्चक्खायंति २ अपच्छिमाए मारणंतियाए संलेइणासरीए झुसिथसरीरा कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विरपजहिता अच्चुए कल्पे देवताए उववत्ता, तथो णं आजक्खण भव० ठि० चुए चइत्ता महा-
विदेहे वासे चरणेणं उस्सासेणं सिद्धिस्संति बुद्धिस्संति मुच्चिस्संति परिनिवाइस्संति सव्वदुक्खवाणभंतं करिस्सति (सू० १७८)

भगवानना मा बाप पार्थ्व परंपरान्ना श्रमणेना उपासक हता, तेओ यणां वर्ष श्रमणोपासकपणुं पाणी छ कायना जीवनी रक्षणार्थे (पापनी) आलोचनना करी निंदी गहीं पडिकमी यथायोग्य प्रायश्चित लइ दर्भ संस्तारक उपर बेसी भक्त मत्याख्यान करी डेही मरण पर्यंतता शरीर—संलेखना बडे शरीर शोषी काल समये काल करी ते शरीर छोडी अच्युत कल्पमां देवपणे उमन थयां त्यांथी आयु क्षय थतां चवीनेमहाविदेह क्षेत्रमां छेले उसासे सिद्धबुद्ध मुक्त थइ निर्वाण पापी सर्व दुःखना अंत करशे, तेणं कालेणं २ समणे भ० नाए नायपुत्ते नायकुलनिवत्ते विदेहे विदेहजच्चे विदेहसुमाले तीसं वासाइं विदेहंसित्तिकहुं अगारमज्जे त्रसित्ता अम्मापिऊहिं कालापुहिं देवलोगमणुपदाहिं समत्तपइने चिच्चा हिरत्तं चिच्चा सुवत्तं चिच्चा बलं चिच्चा वाहणं चिच्चा धणकणगरयणसंतसारसावइज्जं निच्छड्ढित्ता विग्गोविता विसाणित्ता दायारेसु णं दाइत्ता परिभाइत्ता संवच्छरं

द्वयत्वात् जे से हेमंताणं पदमे मासे पदमे पक्वत्वे प्रगसिरवहुत्वे तस्स णं मंगसिरवहुत्तस्स दसमीपक्वत्वेणं इत्थुत्तरा० जोगा०
 अभिनिक्रममणाभिष्याए यावि हुत्था, संवच्छरेणं होहिदं अभिनिक्रमणं तु जिणवरिदस्स । तो अत्यसंपयाणं पक्वत्वं
 पुब्बमराओ ॥१॥ एया हिरक्कोडी अट्टेव अपूणगा सयसहस्सा । मूरोदयमार्यं दिज्जइ जा पायरासुति ॥ २ ॥ तिनोव
 य कोटिसया अट्टासीइं च हुंति कोडीओ । असिइं च सयसहस्सा एयं संवच्छरे दिवं ॥ ३ वेसमणकुंडयारी देवा लोगं-
 तिया मंहिंया । बोद्धिंति य तित्थयरं पवरससु कम्मभूमिसु ॥ ४ ॥ वंभसि य कपंमी बोद्ध्वा कत्तराहणो मझे ।
 लोगतिया विमाणा अट्टसु वत्था असंखिजा ॥ ५ ॥ एए देवनिकाया भगवं बोद्धिंति जिणवरं वीरं । सन्वजगज्जीवहिंयं
 अरिहं ! तित्थं पक्वत्वेहि ॥ ६ ॥ तओ णं समणस्स भ० म० अभिनिक्रममणाभिष्यायं जाणित्ता भवणवइवा० जो० विमा-
 णवासिणो देवा य देवीओ य सएहिं २ रूवेहिं सएहिं २ नेवत्थेहिं सए० २ चिधेहिं सन्विह्णाए सन्वज्जुइए सन्ववत्तस-
 सुदएणं सयाइं २ जाणविमाणाइं दुरुहंति सया० दुरुहित्ता अहावायाइं पुणालाइं परिसाडंति २ अहासुहमाइं पुणालाइं
 परियाइंति २ उट्ठं उप्पर्यति उट्ठं उप्परत्ता ताए उकिट्टाए सिग्गाए चत्ताए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहे णं ओव यमाणा
 २ तिरिएणं असंखिजाइं दीवसमुहाइं वीइकममणा २ जेणेव जंबुदीवे दीवे तेणेव उवागच्छंति, २ जेणेव उत्तरत्तत्ति य
 कुंडपुरसंनिवेशे तेणेव उवागच्छंति उत्तरत्तत्तियकुंडपुरसंनिवेशे उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए तेणेव झति वेणेण ओवइया,
 तओ णं सक्के देविदे देवराया सणियं २ जाणविमाणं पट्टवेति सणियं २ जाणविमाणं पट्टवेत्ता सणिय २ जाणविमाणाओ
 पञ्चोरुहइ सणियं २ एगंतपक्वकमइ एगंतपक्वकिंत्ता महया वेउत्तिवएणं समुग्गाएण समोहणइ २ एगं महं ताणामणिकणग-

रणभत्तिचित्तं सुभं चारु कंतरुवं देवच्छंदयं विडम्बनं तस्मिन् देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसभाए एगं महं सपायपीठं
नाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरुवं सीहासणं विउच्चइ, २ जेणेव सपणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ
२ सपणं भगवं महावीरं तिकवुत्तो आयाहिणं पायाहिणं करेइ २ सपणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ सपणं भगवं
महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदइ, तेणेव उवागच्छइ सणियं २ पुरथाभिमुहं सीहासणे निसीयावेइ सणियं २ निसीयाविना
स्यपागसहस्सपाणेहिं तिच्छिहियंमेइ गंधकासाईएहिं उल्लोखेइ २ सुद्धोदएण मज्जावेइ २ जस्स णं मुहं सयसहस्सेणं तिपटो-
लत्तिटिणं साहिणं सीतेण गोसीसरत्तचंदणेणं अणुत्तिपइ २ ईसिं निससासवायवोत्तं वरनयरपइणुणयं कुसलनरपसंसियं
अस्सलालापेलवं डेयारियकणगवइयंतकम्मं हंसञ्जवणं पट्टजुयलं नियंसावेइ २ हारं अद्धहारं उरत्थं नेवत्थं एगावलिं
पालंबसुत्तं पट्टमउडरयणमालाड आविधावेइ आविधाविना गंथिमबेहिमपूरि मसंवाइमेणं मल्लेणं कण्ठरुक्खमिव समलंकरेइ
२ ना दुच्चंप्पि महया वेडवियसमुयाएणं समाइणइ २ एगं महं चंदपहं सिवियं सहस्सवाइणियं विउच्चति, तंजहा-
ईहासिगउसभतुरनरमकरविहगवानरकुंजररुक्खसमभचमरसदलसीहवणलयमत्तिचित्तलयविज्जाहरमिहुणजुयलंतजोगजुत्तं अ-
क्षीमहस्समालिणीयं सुनिलविय मिसिमिसितरुक्खगसहस्सकलिय ईसिं भिसमाणं चकखुल्लोयणलेसं मुत्ताहलहु-
त्ताजालंतरोवियं तवणीयपवरलंहुसपलंततमुत्तदागं हारद्वहारभूसणसपोणयं अहियपिच्छणिज्जं पडमलयमत्तिचित्तं असोगल-
यभत्तिचित्तं कुंदलयभत्तिचित्तं नाणालयमत्ति० विरइयं सुभं चारुकंतरुवं नाणामणिपंचवन्नचंटापडायपडिभंडियगसिहरं
पासाइयं दरिसणिज्जं सुखवं-सीया उवणीया जिणवरस्स जरमरणविपमुक्कस्स । ओसत्तमल्लदामा जलयलयदिच्चकुसुमेहिं

॥ १ ॥ सिवियाह मज्झयारे दिव्वं वररणरुवच्चिचंद्रयं । सीहासणं महरिहं सपायपीढं जिणवररस ॥ २ ॥ आलइय
 मालमडडो भासुरबुंदी वराभरणधारी । खोमियवत्थ नियत्थो जस्स थ सुळं सयसहस्सं ॥ ३ ॥ छट्टेण उ भत्तेणं अज्झव-
 साणेण सुंदरेण जिणो । लेसाहिं विसुद्धंतो आरुहई उत्तमं सीयं ॥ ४ ॥ सीहासणे निविट्टो सकीसाणाः य दोहि पासोहिं
 । वीयंति चांमराहिं मणिरयणविच्चिचंद्राहिं ॥ ५ ॥ सुट्ठिं वक्खित्ता माणुसेहिं साहट्ट रोमक्रेवेहिं । पच्छा वहंति देवा
 सुरअसुरा गरुडनादिदा ॥ ६ ॥ पुरओ सुरा वहंती असुरा पुण दाहिणंमि णासंमि । अवरं वहंति गरुडा नागा पुण उत्तरे
 पासो ॥ ७ ॥ वणसंडं व कुसुमियं पउमसरो वा जहा सरयकाले सोइइ कुसुमपर्रेणं इय गणणयलं सुरगणेहिं ॥ ८ ॥
 सिद्धत्थवणं व जहा काणायारवण व कंपयवणं वा । सोइइ कु० ॥ ९ ॥ वरपडहभेरिद्धल्लरिसंखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं ।
 गयणयले धरणिपयले तूरनिनाओ परपरम्मो ॥ १० ॥ ततविततं यणद्धुसिरं आउज्जं चउत्तिवहं बहुविहीयं चाहंति तस्य
 देवा वहुहिं आनइगसएहिं ॥ ११ ॥ तेण कालेणं तेणं समएणं जे से हेयताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गसिरवहुले
 तस्स णं मग्गसिरवहुलस्स दसमीपक्खेणं सुव्वएणं दिवसेणं त्रिजएणं सुहुरेणं इत्थुत्तरानक्खत्तेणं जोगोवगएणं पार्इणगा-
 भिणीए छायाए बिइयाए पोरिसीए छट्टेणं भत्तेणं अपाणएणं एगसाइगमायाए चंदप्पभाए सिवियाए सहस्सवाहिणियाए
 सदेवमणुयासुराए परिसाए समणिज्जापाणे उत्तरखत्तियकुंडपुरसंनिवेसस्स मज्झंमज्झेणं निगच्छइ २ जेणेव नायसंडे उज्जाणे
 तेणे व उवागच्छइ २ ईसिं रयणिप्पमाणं अच्छोप्पेणं भूमिभाएणं सणिय २ चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणि ठवेइ २
 सणियं २ चंदप्पमाओ सीयाओ सहस्सवाहिणिओ पच्चोपरइ २ सणियं २ पुरत्थाभिमुहे सीहासणे निसीयइ आभरणाळंकारं

ओमुअद् तओ णं वंसमणे देवे भसुव्वायंपडिओ भगवओ महावीरस्स हंसलक्खिणोणं पट्ठेणं आभरणालंकारं पडिच्छइ, तओ णं समणे भगव महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं नामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, तओ णं संके देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स ज्ञानवायपडिए वइरामणं थालेण केसाइं पडिच्छइ २ अणुजाणेसि भतेत्तिकट्टु स्वीरोयसागरं साहरइ, तओ णं समणे जाव लोयंकरिता सिद्धाणं नमुकारं करेइ २ सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मंतिकट्टु सामाइयं चरिं पडिव-
 ज्जइ २ देवपरिसं च मणुयपरिसं च आलिकखचित्तभूयमिन्न ठवेइ—दिवो मणुस्सयांसो तुरियनिनाओ य सक्कवणोणं । खिप्पासेव निळुको जाहे पडिवज्जइ चरिं ॥ १ ॥ पडिवज्जितुं चरिं अहोनिंसं सव्वपाणभूयहियं । साहट्टु लोमपुलाया सव्वे देवा निसामिति ॥ २ ॥ तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइय खओवसमियं चरिं पडिवज्जस्स मणपज्जवनाणे जामं नाणे समुपपत्ते अट्टाइज्जेहि दीवेहि दाहि य समुदेहि सवीणं पचिंदियाणं पज्जत्ताणं त्रियत्तमणसाणं मणोगयाइं भावाइं जाणेइ । तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइए समणे मित्तावाइं सयणसंघिवरणं पडिविसज्जेइ, २ इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिणहइ—वास्स वासाइं वोसट्टुकाए चियत्तदेहे जे केइ उअसगा समुपपज्जति, तंजहा—दिव्वा वा माणुस्सा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवससो समुपपत्ते समणे सम्भं सहिस्सामि खमिस्सामि अहिभासंस्सामि, तओ णं स० भ० महावीरे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिता वोसिट्टवत्तदेहे दिवसे सुहुत्तसेसे कुम्मारगामं समणुपत्ते, तओ णं स० भ० म० वोसिट्टवत्तदेहे अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं एवं संजमेणं पग्गहेणं संवरेणं तवेणं वंभचेरवासेणं खंतीए सुत्तीए समिईए गुत्तीए तुट्ठीएठाणेणं क्रमेणं सुत्तरियफलनिव्वाणुमुत्तिमग्गेण अत्थाणं भावेमाणे विहरइ, एवं वा

विहरमाणस्स जे केइ उवसणा समुपज्जति— दिव्वा वा माणुस्सा वा तिरिच्छिथा वा, ते सव्वे उवसणे समुपत्ते संमाणे अणाज्जले अन्नहिए, अहीणमाणमे, तिविहमणवयणकायणुत्ते सम्मं सहइ यमइ तितिकवइ अहिआसेइ, तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स वारस वासा वीइकंता तेरसमस्स य वासस्स परियाए वइमाणस्स जे से णिन्हणं दुब्बे मासे चउत्थे पक्खे वइसाइसुद्धे तस्स णं वेसाइसुद्धस्स दसमीपक्खेणं सुववएणं दिवसेणं विजएणं सुहुत्तेणं हत्थुत्तराहि नक्खत्तेणं जोगोवणएणं पाईणगामिणीए जयाए वियत्ताए पोरीसीए जंभियगामस्स नगरस्स वहिया नईए उज्जुवालिगाए उत्तरकळे सामागस्स गाशावइस्स कट्टकराणिसि उड्डंजाणुअहोसिरस्स ज्ञाणकोट्टेवगयस्स वेयावत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरच्छिमे द्विसीभाने सालक्खवस्स अदूरसामंते उक्कुट्टयस्स गोदाहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेण भत्तेण अपाणएणं सुक्कझाणंतरियाए वइमाणस्स निव्वाणे कम्मिणे पडिपुत्ते अन्वाहए निरावरणे अणंते अणुत्तारे केवलवरनाण-दंसणे समुपत्ते, से भगवं अरहं जिणे केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पज्जाए जाणइ, तं-आगाइं गइं ठिइं चयणं उववायं भुत्तं पीयं कइ पडिसेवियं आविकम्मं रशोकम्मं लवियं कट्ठियं मणोमाणंसियं सव्वत्ताए सव्वजीवाणं मव्वभावाइं जाणमाणे पासमाणे एवं च णं विहरइ, जणं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स निव्वाणे कस्सिणे जाव समुपत्ते तणं दिवसं भवयवइवाणमंतरजोइसियविमाणवासिदेवेहि य देवीहि य उवयवेहि जाव उप्पिजलग-वभूए याति इत्था; तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्नवरनाणदंसणधरे अट्ठाणं च लोणं च अंभिसम्मिक्ख पुत्तं देवाणं धम्ममाइक्खइ, ततो पच्छा मणुस्सणं, तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्ननाणदंसणधरे गोयमा णं समणाण पंच महव्व-

याइं समावणाइं छज्जीवनिकाय अंतिकत्वति भासाइ पल्लवइ, तं—पुढवीकाए जाव तसकाए, पढनं भंने ! महत्त्वयं पक्कवामि सत्त्वं पाणाइवायं से सहुभं वा बायरं वा तसं वा थायरं वा नेव सयं पाणाइवायं करिज्जा इ जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं पणसा वयसा कायसा तस्स भंने ! पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि अण्णं वोसिरामि, तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थिमा पढमा भावणा—

ते काले ते सपये जगत्त्वयात्, ज्ञात् (सिद्धार्थ) पुत्र, ज्ञात्वंशोत्पन्न, विशिष्ट देहधारी, (त्रीशक) पुत्र, कंदर्पजेता, पुढवासथी उदास एवा अमण भगवान् महावीरे त्रीश वर्षं यत्वात्समां वसी, मावाप कालगतं भइ देवलोकं पहरेंचतां पोतानी प्रतिज्ञा समाप्त भइ जाणी सोनुं, रूधुं, सेनावाहन, धनधान्य, कनकरत्न, तथा दरेक कीमती द्रव्यं छोडी (दानार्थ) अर्पण करी, दान दइ, शीयाळाना वेला मासमां पेले पक्षे मागसर वदि १०त्ता दिने उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रता योमे दीक्षा लेवानो अभिमाय कर्मो.

ते पछी भगवान्नो निष्क्रमणाभिमाय जाणीने चारे निकायना देवो पोतपोताना रूप, वेप तथा चिन्हो धारण करी सयळी रळि, छुति, तथा वळ साथे पोतपोताना विमानोपर चडी यादर पुढल्लो पल्लवावी सुद्धम पुढल्लोमां परणमावी उंचे उपडी अत्यंत त्रीध्रता अने चपळतावाळी दिव्य देवगतिथी नीचे उतरता तिर्यक्लोकमां असंख्याता द्वीप समुद्र उळंधीने ज्यां जंबूद्वीप छे, त्यां आवी क्षत्रियकुंड नगरना इशान कोणमां उतावळा आवी पर्वीच्या.

त्यारवाद शक्र नामे देवना इंद्रे धीमे धीमे विमानने त्यां थापी, धीमे धीमे तेमांथी उतररी, एकांते जइ मोहोटी वैक्रिय समु-
दघात करी एक महान् मणि—सुवर्ण तथा रत्नजडित, शुभ मनोहर रूपवाळं देवच्छंद्रक (ओरडो) विष्णुच्यु (वनाच्यु) ते

आथारस भगवओ चउत्थ—चूलाइ एस निज्जुत्ती । पंचमचूलनिसीहं तस्स य उन्नरिं भणीहासि ॥ ३४४ ॥
 सत्तहिं छहिं चउत्तउहिं य पंचहिं अट्ट चउत्तहिं नायन्ना । उहेसएहिं पढमे सुयत्तंये नत्र य अज्झयणा । ३४५ ॥
 इकारस तिति दोदो दोदो उहेसएहिं नायन्ना । सत्तय अट्टयनवमा इक्करा हुंति अज्झयणा ॥ ३४६ ॥
 तथा महापरिन्ना नामतुं अट्टयन त्रिच्छेद जत्ताथी तेनी निर्युत्तनुं विवरण टीकाकारे न करत्ताथी नीचे सुकी छे—
 पाहणे महासदो परिमाणे चेत्र होइ नायन्ना । पाहणे परिमाणे य छविहो होइ निकलेवो ॥ १ ॥
 दंवे खिते काले भावंपि य होती या पहाणा उ । तेसि महासदो खलु पाहणेणं तु निष्फओ ॥ २ ॥
 दंवे खेत्ते काले भावंपि यजे भवे महंता उ । तेसु महासदो खलु पमाणओ होति निष्फओ ॥ ३ ॥
 दंवे खेत्ते काले भावपरिणा य होइ बोद्धन्ना । जाणणओवन्नकवणओ य दुविहा पुणेक्केका ॥ ४ ॥
 भावपरिणा दुविहा मूलगुणे चेत्र उत्तरगुणे य । मूलगुणे पंचविहदुहाविहा पुण उत्तरगुणेसु ॥ ५ ॥
 पाहणेण उ पणयं परिणाएय तहय दुविहाए । परिणाणेसु पहाणे महापरिणा तओ होइ ॥ ६ ॥
 देवीणं मणुइणं तिरिकवजोणीगयाण इत्थीणं । तिविहेण परिचाओ महापरिणाए निज्जुत्ती ॥ ७ ॥

आचाराहुसूत्र समास थयुं

इति श्रीशिवारिगसूत्रं समाप्तम्

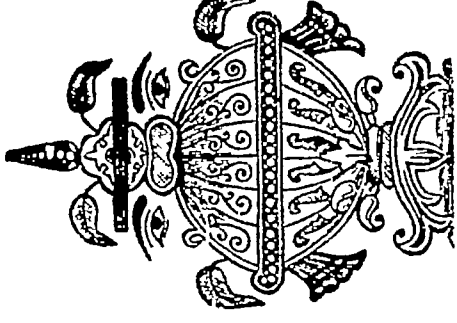
श्रीमती आगमोदयसमितिः

श्रीमज्जनसिद्धान्तवाचनाप्रकाशनकारिका

शेठ दे० ला० जै० पु० फडना ग्रंथो.

स्थापनाः—श्रीमल्लीतीर्थे वीर सं० २४४१ माघ शुक्लदशम्याम् ।

सं. १९८२



०००५६

प्रातिस्थानः—

मास्तर विजयचंद्र मोहनलाल.

टे० दे० ला० धर्मशाळा, गोपीपुरा—मुरत.

आगमोदय समितिना ग्रंथो.

नदीमूत्र	२-४-०
अनुयोगद्धार	२-८-०
स्थानांग उत्तरार्ध	४-०-०
भगवत्सूत्र तृतीयभाग.....	३-४-०
विचारसार प्रकरण	०-८-०
निरयावलो सूत्र	०-१२-०
विशेषावश्यक गाथा	०-५-०
विषयाकारादि क्रम	०-६-०
गच्छाचार पयनो ..	०-१२-०
धर्मविदु प्रकरण	२-०-०
विशेषावश्यक भाष्य मूल	१-८-०
त्या टिकानु गुजराती	१-०-०
भाषान्तर भा. १ लो.	०-१४-०
रायपसेणी.....	०-१२-०
जैन फीलोसोफी...	०-१२-०
योग	०-१४-०
कर्म	०-१२-०

आनंद काव्य म० मौ०	४ यु	०-१२-०
”	५ मुं	०-१०-०
”	६ टुं	०-१२-०
श्राद्ध प्रतिक्रमण सूत्र		२-०-०
सेन प्रश्न (प्रश्नोत्तर रत्नाकर)		१-०-०
आवश्यक टीप्पण		१-१२-०
जैबुद्धीप प्रज्ञप्ति सटीक उत्तरार्ध		२-०-०
श्रीपालचरित्र संस्कृत		०-१४-०
मूक्त मुक्तावली		२-०-०
प्रवचन सारोद्धार सटीक पूर्वार्ध		३-०-०
तंदुल वैयालीय पयनो सटीक		१-८-०
विशति स्थानक चरित पद्यवद्ध		१-०-०
कल्पमूत्र सुबोधिका		२-०-०
सुबोधा समाचारी		०-८-०
श्रीपालचरित्र-प्राकृत-सावचूर्णिक		१-४-०